

हिन्दुस्तानी कोष

हिन्दी और उर्दू में आमतौर से प्रचलित संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, अँग्रेजी और पोर्चुगीज आदि भाषाओं तथा युक्तप्रात के देहातों के शब्दों का संग्रह ।



सम्पादक

रामनरेश त्रिपाठी

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग



पहला संस्करण
२०००

अगस्त, १९३३

{ मूल्य दो रुपये

पहला संस्करण २०००, अगस्त, १९३३

प्रारंभ के सवा दो फाम हिन्दी मन्दिर प्रेस, इजाहाबाद म और
शेष समय कायस्थ पाठशाळा प्रेस, इजाहाबाद में मुद्रित हुय ।

भूमिका

इस समय तक हिन्दी में जितने कोष, चाहे वे हिन्दुस्तानियों के लिखे हों, चाहे अँग्रेजों के, प्रकाशित हो चुके हैं, उनको शुद्ध हिन्दी का न कहकर अवधी, व्रजभाषा और खड़ीबोली या मिश्रित कोष कहना अधिक सार्थक होगा। क्योंकि उनके निर्माताओं ने अवधी और व्रजभाषा के पद्य और वर्तमान हिन्दी (जिसे खड़ीबोली भी कहते हैं) के गद्यपद्य दोनों में प्रचलित शब्दों को एक ही कोष द्वारा सर्वसाधारण को दिया है। उन्होंने हिन्दी की स्वतंत्र सत्ता का ध्यान नहीं रखा है।

हिन्दी, जो केवल हिन्दुआ की भाषा न कहलाकर सम्पूर्ण हिन्दु अर्थात् हिन्दुस्तान की भाषा के अर्थ में व्यवहृत हो रही है और जो राष्ट्रभाषा और हिन्दुस्तानी के नाम से भी प्रसिद्ध है, अपना एक स्वतंत्र रूप रखती है और एक ऐसा कोष चाहती है जो केवल उसी का हो। हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा होने के कारण अब अवध और व्रज का सङ्घित क्षेत्र ही नहीं, बल्कि विशाल भारत उसके विकास का क्षेत्र हो गया है। उसका रूप, उसका साहित्य, उसका प्रभाव अब सब कुछ स्वतन्त्र है, अतएव उसके कोष से उसका काम नहीं चल सकता। मैंने इस भाव से प्रेरित होकर यह कोष तैयार किया है। इस कोष में जहाँ सस्कृतके वे तमाम तत्सम और तद्भव शब्द आये हैं जो हिन्दी की पुस्तकों और पत्रों में चल रहे हैं, वहाँ अरबी, फारसी, तुर्की और अन्य विदेशी भाषाओं के वे शब्द भी साथ साथ फेर दिये गये हैं जो उर्दू की दुनिया में चलते हैं। यहाँ यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि मैं हिन्दी और उर्दू को भिन्न भाषायें नहीं मानता।

अंगरेजों राज के प्रभाव से हिन्दी में अँग्रेजी शब्दों की सख्या भी काफी बढ़ गई है। मैंने उनको भी हिन्दुस्तानी मानकर उनको अपनी सेवा का भार सौंपना मुनाविब समझा है।

साथ ही कुछ देशी शब्दों को भी, जिनके पर्यायवाची शब्द प्रचलित हिन्दी में प्रायः नहीं हैं, पर जिनकी नितांत आवश्यकता है, मैंने इसमें स्थान दिया है। हमें अपने आभीष्ट शब्दों को अपने मान-कोष में प्राप्त स्थान देना ही चाहिये क्योंकि वे हमारे अपने हैं और उनका द्वारा हम समाज के अतन्त्र में अधिक व्यापक होकर, अपने लाकोपकारी विचारों से, अधिक विस्तृत सामाजिक अन्तर्, अधिक सत्यक जागृकों के ब्यापक साधन में सफल प्रयत्न हो सकने हैं। यद्यपि दहाता शब्द अभी विज्ञापित नहीं है, क्योंकि भिन्न भिन्न स्थानों में उनका रूप और अर्थ में बड़ी भिन्नता मौजूद है, इससे मना ही दिया हुआ उनका रूप और अर्थ प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, पर मैं विचार के लिये ही उन्हें विद्वानों के समक्ष रखना है कि ये भी हिन्दी का सामा में क्यों न आने दिये जायँ और उनसे हम काम क्यों न लें ? जैसा आजकल टीकों में मुस्तक़ा कमाता पाशा पर रहे हैं।

सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीयता का भाव भरने और उसे स्थायी रखने के लिये एक राष्ट्रभाषा का नितांत आवश्यकता है और हिन्दी प्रातगतों के लिये यह रूप की बात है कि उनका हिन्दी ही भारतवर्ष का राष्ट्रभाषा स्वीकार की गई है। ऐसा दशा में हिन्दी के लिये यह पदका अवश्य होजाता है कि वह अपनी हिन्दी को अधिक से अधिक व्यापक होने का शक्ति प्रदान करें और वह व्यापकता तथा समग्र ह जगह हम देशभर में प्रचलित शब्दों को हिन्दी का रूप देकर अधिक से अधिक सराया में इसमें भर लें जैसा अंग्रेज़ी भाषा में सदा होता रहता है।

मेरा यह विचार नया नहीं है। अब स पन्द्रह वर्ष पहले मेरे पास कुछ मद्रासी विद्यार्थी हिन्दी सीखने के लिये रहते थे। उनको जो साहित्यिक हिन्दी सिखाई जाना था, उसमें अवधा और ब्रजभाषा का अत्यधिक होना था जिससे वह राष्ट्रभाषा हिन्दी से पूर्ण परिचित नहीं हो पाते थे। हमने मैंने उनके लिये उर्दू में प्रचलित बहुत से

विदेशी शब्द समग्र फरके उन्हें याद कराये थे। उसी समय से विदेशी शब्दों का समग्र में कर रहा है, और आज सचमुच मुझे दार्दिक हृष है कि मैं उनको एक कोष में बँटाकर विचार धारा में प्रवाहित कर पाया हूँ।

मैं हृदय से चाहता हूँ कि हिन्दी उर्दू का अन्तर मिट जाय। हिन्दी उर्दू में केवल लिपि का अन्तर है। लिपि के सम्बन्ध में इलाहाबाद हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस सर मुजेमान का यह कथन काफ़ी होगा, जिसे हिन्दी और उर्दू दोनों के हिनायतियाँ को सदा स्मरण रखना चाहिये—

“नागरी और उर्दू लिपि का विवाद भाषा से उतना सम्बन्ध नहीं रखता जितना कि राजनीति से। किसी विशेष प्रकार की लिपि का व्यवहार विशेषकर भिन्न भिन्न व्यक्तियों की प्रवृत्ति या इच्छा पर निर्भर है। इसलिये लिपि को अधिक महत्त्व न देना चाहिये। किसी विशेष लिपि का अपनाना विरक्त लोगो की इच्छा पर निर्भर है। कोई विशेष लिपि गढ़ी जा सकती है, कहीं से ली जा सकती है तथा दृढात् बदल या त्याग भी दी जा सकती है। इस प्रकार के परिवर्तन सत्तार में सभी जगह हो चुके हैं। परन्तु टर्की को छोड़कर इस प्रकार के परिवर्तन अधिकतर क्रमशः और धीरे धीरे इस तरह हुये हैं कि लोग जल्दी ही उन्हें भूल भी गये हैं। किसी भी लिपि की कृत्रिमता हम उस समय गुरन्त जान सकते हैं जब कि हम देखते हैं कि कुछ भाषाएँ भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न रीति से लिखी गई हैं। इस बात का अर्थ पता लग गया है कि मेक्सिकन चित्र लिपि नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती थी। चीनी लिपि ऊपर से नीचे की ओर, सेमिटिक भाषाएँ दाहिने से बायें ओर की लिखी जाती हैं। संस्कृत तथा हमसे उत्पन्न भाषायों से बायें ओर की लिखी जाती हैं। यद्यपि संस्कृत भी जब परोक्षी लिपि में लिखी जाती थी तब दाहिने से बायें की लिखी जाती थी। ग्रीक भाषा

एक समय थाय न दाहिने को लिखा जाता थी, पर बाद में यह उस ढंग से लिखी जान लगी, जैसे चक्र से हल चोता जाता है; अर्थात् क्रम से एक बार दाहिने से बायें और फिर बायें से दाहिने । यदि एक पंक्ति दाहिने से बायें लिखी गई तो उसके बाद की पंक्ति वहीं न आरम्भ होगी वरदा पहला पंक्ति समाप्त हुई था और वहा क्रम बराबर चलता रहगा । बाद में यह प्रथा छोड़ दी गई और फिर बराबर बायें से दाहिने का लिखन की प्रथा चल गई । उपरोक्त बरान से यह स्पष्ट होजाता है कि किसी विशेष लिपि का अपनाना संस्कृता पर निर्भर है । जय चाह तय हम इसमें परिवर्तन या इसका त्याग कर सकन ह ।

हिन्दी के सिवा दूसरी काइ भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकता । अंग्रेजी, न बँगला, न मराठी । क्योंकि इन भाषाया का प्रचार हिन्दी का अपेक्षा कम है और इसमें हिन्दी के समान व्यावहारिक शब्दों का हजम करने का शक्ति भी नहीं है । अंग्रेजी में शक्ति है अक्षरय पर वह भाषा हिन्दुस्तान की स्वाभाविक भाषा नहीं । अतएव उसको राष्ट्रभाषा मानने या बनाने का प्रयत्न समय के अक्षरय के सिवा और कुछ नहीं ।

The significance of this aspect of the matter has however been considerably obscured by an unfortunate controversy over the characters in which this dialect may be written. But the quarrel over the nature of the script whether it should be Urdu or Nagari character is sometimes more a political than a linguistic one. The kind of script that is to be used is a matter of lesser importance depending to a large extent on individual feelings and inclinations. The adoption of a particular script is a purely arbitrary act. A particular script can be newly invented can be freely borrowed can be suddenly changed or deliberately abandoned. Changes of this type have taken place all over the world. Just except in the case of Turkey the transformation has often been so gradual as to be almost forgotten. One can easily appreciate the artificialities of a script by reflecting the different ways in which some languages have been written and the

मार्च, मन् १९३२ में हिन्दुस्तानी एकेडेमी (युक्तप्रान्त) के वार्षिकोत्सव में पदों के लिये मैं ने 'हिन्दी या हिन्दुस्तानी' रिपपक एष लेखों लिखा था; यह लेख एकेडेमी की तिमाही पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' में प्रकाशित हुआ था। उमे लेख हिन्दी के पत्रों में बड़ा शोर मचा। मेरी जानकारी में योंवियों लेख हिन्दी के साप्ताहिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों में मेरे उस लेख के विरोध में निकले। मैं ने दुःख के साथ यह अनुभव किया कि प्रायः उन सभी लेखों के लेखकों ने मेरे लेख को धादि से धात तक पूरा पढ़े बिना ही जो कुछ जी में आया, लिख मारा था। किसी ने लिखा, मैं एकेडेमी के प्रभाव से प्रेरित होकर हिन्दी, उर्दू को एक करना चाहता हूँ। किसी ने लिखा, मैं सस्कृत के तत्सम और सङ्घ शब्दों के पहिष्कार करने का पाप कर रहा हूँ। किसी ने लिखा,

changes effected in them from time to time. It is now known that the Mexican picture writing was written from bottom to top that is going upward. The chinese characters are arranged in vertical columns to be read from top to bottom. The semitic languages are written from right to left. The Sanskrit language and its descendants are written from left to right. But even Sanskrit when written in kharoshti script was written from right to left. Creek was at one time written from right to left and then it followed a method corresponding to the ploughing of a field by oxen that is alternately from right to left and then left to right. If one line was written from right to left the next began close to the end of the first line and was written from left to right and so on. Thus system was later on changed to one of writing from left to right all along the page. This furnishes a good illustration how arbitrary is the choice of a particular form of a script and how it can be altered or abandoned.

हिन्दुस्तानी एकेडेमी के वार्षिकोत्सव में पठित।

सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह लेख भी इस कोप में थलग दे दिया जा रहा है।

मैं हिन्दी की मस्कृति को नष्ट करने पर मुझा हूँ विचारणीय विषय को महत्व न देकर कइया ने सुन्नपर व्यक्तिगत हमले भी किये; पर यदि वे मेरे खेप को पूरा पढ़कर कुछ निम्नने बैठने तो मुझे पूरा विद्याम है कि वे मेरा ही परिधि में होते मुझे हिन्दी के एक अच्छे मयक के रूप में स्मरण करते और मेरे विरुद्ध जनता में गलतफहमी फैलाने की साजिशें स्वीय न करत। मय का अलग अलग उत्तर देने का अपेक्षा मैं न यह उचित समझा कि मैं अपने उत्तर को इस काय क रूप में अधिन राट करके शिक्षितवर्ग के सामने रक्षूँ; ताकि मेरे हिन्दी भाषा विषयक विचारों के सम्बन्ध में फैला हुआ या फैलाया हुआ भ्रम दूर हो जाय।

यद्यपि यह कोप पूरा नहीं कहा जा सकता और मैं अकला इमे पूरा बना भी नहीं सकता था पर मैंन अपनी शक्तिभर शब्दों के समुह में कोर कमर उठा रहा रकी। लगातार एक वर्ष के परिश्रम से मैं इसे इस रूप में कर पाया हूँ।

इस कोप का तैयारी में मुझे हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी हिन्दी के सुप्रसिद्ध कोषों में अनेक बार गहायता लेना पड़ी है उनके लिये मैं उनक सम्पादकों को हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इस कोप के बाद मेरे मन में यह बालसा है कि इसी तरह मैं प्रजभाषा और अवधी के शब्दों का भी एक काय तैयार करूँ और उस प्रकाशित करके उनक सरस और जाकोपयोगी काय मादिक को जनता के जीवन में पहुँचाकर सुख अनुभव करूँ।

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

श्रावण शुद्ध ७ १९६०

रामनरेण त्रिपाठी

हिन्दी या हिन्दुस्तानी

वह भाषा जो आन्ध्र प्रदेश, उत्तरप्रान्त, बिहार, मध्यप्रदेश, देहली और उसके आसपास के दूसरे प्रांतों के वास्तविक स्वरूपों में आमतौर से पढ़ायी जाती है, और जिसमें कितने ही मासिक, साप्ताहिक और दैनिक अखबार निकल रहे हैं, कोई एक प्रारूप स्वरूप नहीं रखती। कम से कम वह तीन स्वरूपों में आसानी से तर्जुमी की जा सकती है। एक वह जिसका नाम हिन्दी है, और जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द ही ज्यादा हैं, दूसरी वह जो उर्दू कहलाती है, और जिसमें अरबी, फारसी और तुर्की के अल्फाज़ भरने हुए हैं, तीसरी वह जो इन दोनों के बीच की भाषा है, और जिसमें सिर्फ बोलचाल के वे ही अल्फाज़ आने पाते हैं जो आमलोगों की ज्ञान पर हैं, चाहे वे संस्कृत से आये हों, चाहे अरबी या फारसी या तुर्की से। यह हिन्दी और उर्दू की सिचुई है। इसे हिन्दुस्तानी कहते हैं। एडमिंड ग्रिन्स साइन्स ने अपने 'हिन्दी ग्रामर' की भूमिका में हिन्दुस्तानी की यह व्याख्या की थी—

“हिन्दुस्तानी नाम कुछ यथार्थता के साथ उस प्रकार के साहित्य का दिया जा सकता है जिसे कुछ ऐसे लेखक अपना रहे हैं जिनका शब्दकोष अधिकतर उर्दू है, परन्तु जो अपनी रचनाएँ नागरी लिपि में छपाते हैं।”

Hindustani might with some measure of fitness be used of one class of literature affected by certain writers who employ a vocabulary which is largely Urdu but have the works printed in the Nagari character

शानकल हमरी याख्या में धोड़ा अंतर पढ़ रहा है। अब केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू तथा वो हिन्दुस्तानी नहीं कहते बल्कि अब तो उनमें अंग्रेज़ी के भाषण युक्त मिल गये हैं। जैसे—

“मैंने कई दफ़े यह आवश्यकता महसूस की कि मैंने जोग विवादाग्रस्त मामलों में अच्छी तरह विचार करने तथा पाठ दिया करें।”

हमें 'दफ़े', 'महसूस', 'मामला', और 'तरह' शब्द फ़ारसी या उर्दू व, 'मैंने' और 'पाठ' अंग्रेज़ी व, और बाकी सब हिन्दी के हैं।

हमें अपना ज्ञान कौन सा रूप पर अलग अलग विचार करना है। पहले हिन्दी को जागिये—

हिन्दी

हिन्दी का मध्यम पुराने कवि, चिनकी कविता अथवा सबसे पुराना माना जाता है, अमोर सुमरो है। अमीर सुमरो का समय सन् १३१२ से १३८० तक है। यह वह समय है जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी हुकूमत का प्रारंभ हो रहा था। उस वक्त उर्दू का कदा नामोनिशान भी नहीं था। सुमरो ने अवन समय का आम्रहम ज्ञान में बहुत से दोहे टुमरियाँ, पहलियाँ, दो मख्तुने और ढकोसले कहें हैं। उन्हें देखने से यह साफ़ मालूम होता है कि सुमरो की ज्ञान ही हमारी आजकल का हिन्दी है। सुमरो की एक पत्नी है—

धीसों का मिर काट लिया।

ना मारा ना खन किया ॥

इसमें और आजकल का हिन्दी में क्या अंतर है ?

सुमरो ने अरबी, फारसी और तुर्की शब्दों को हिन्दी में भरने

का सबसे पहला उद्योग किया था। उसके नाम से 'खालिज़ शारी' नाम का एक पद्य कोष भी मिलता है, जिनमें हिन्दी और फारसी के पर्यायवाची शब्द जमा किये गये हैं। यह पुराने टर्कों के मकतबों (मदरसों) में बहुत दिनों तक पढ़ाई जाती रही है। 'खालिज़ शारी' की बदौलत ममकिये या जीवन सवप के कारण, अब तो हिन्दी में सुसलमानी शब्द हूतों अधिक् भर गये हैं जितने 'खालिज़-शारी' में भी नहीं हैं।

सुसरो की भाषा पर विचार करने से हिन्दी का आदिनाल विषम की छठी मातृगी शताब्दी से इधर का तर्का पढ़ता। सुसरो ने उस समय की हिन्दुओं की भाषा का नाम 'हिन्दवी' लिखा है। जैसे—

अरवी बोले आईना, फारसी बोले पाईना।

हिंदवी बोले आरसी आये, मुँह देगे जो इसे बताये ॥

इस के बाद जायसी ने अपने समय की भाषा का नाम हिन्दवी लिखा है, जैसे—

अरवी तुर्की हिंदवी, भाषा जेती आहि।

जामे मारग प्रेम का, सत्रै सराहैं ताहि ॥

हमसे हिन्दी का पुराना नाम 'हिन्दवी' जान पड़ता है, जिसका अर्थ है हिन्दुओं की भाषा। सुसरो और जायसी दोनों सुसलमान थे, इससे उन्होंने हिन्दुओं की भाषा का एक अलग नाम दिया है, जो उचित ही था। पर आजकल हिन्दी इस अर्थ में नहीं ली जाती। आजकल वह एक स्वतन्त्र भाषा है जिसे हिन्दू सुसलमान और अँग्रेज तीनों सीखते और काम में लाते हैं। पहले उसका अर्थ चाहे जो कुछ रहा हो, पर आजकल उसका मतलब सिर्फ हिन्दुओं की भाषा से नहीं, पर तमाम हिन्द की ज्ञान से है।

शाजकल इसकी व्याख्या में धोड़ा अन्तर पढ़ रहा है। अब केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू ज्ञान को हिन्दुस्तानी कहा करते, बल्कि अब तो उसमें अंग्रेजी के भाषाज्ञा धुल मिल गये हैं। जैस—

“मैंने यह दफ्ते यह आवश्यकता महसूस की कि मेरे लोग विनादग्रस्त मामलों में अच्छी तरह विचार करके यह बोट दिया करें।”

इसमें ‘दफ्ते’, ‘महसूस’, ‘मामलों’, और ‘तरह’ शब्द फ़ारसी या उर्दू के, ‘मेरे’ और ‘वाट’ अंग्रेजी के, और बाकी सब हिन्दी के हैं।

हमें अपनी ज्ञान के तीनों रूपों पर अलग अलग विचार करना है। पहले हिन्दी को जानिये—

हिन्दी

हिन्दी के सबसे पुराने कवि, चिनकी कविता अतक सबसे पुराना माना जाती है, अमोर खुसरो है। अमीर खुसरो का समय सन् १३१२ से १३८० तक है। यह वह समय है जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी हुकूमत का प्रारम्भ हो रहा था। उस वक्त उर्दू का कहा नामोनिशान भा नहीं था। खुसरो ने अपने समय का आम्फदम ज्ञान में बहुत से दोहे, ठुमरियाँ, पहलियाँ, दो सज़ुन और इकोसले कहें हैं। उन्हें देखने से यह साफ़ मालूम होता है कि खुसरो का ज्ञान ही हमारा शाजकल की हिन्दी है। खुसरो की एक पहली है—

धीसों का सिर काट लिया।

ना मारा ना मृत किया ॥

इसमें और शाजकल का हिन्दी में क्या अन्तर है ?

खुसरो ने अरबी, फ़ारसी और तुर्की शब्दों को हिन्दी में भरने

का मरने पहला उद्योग किया था। उसके नाम से 'खालिफ़ गरी' नाम का एक पद्य कोष भी मिलता है, जिनमें हिन्दी और फारसी के पर्यायवाची शब्द जमा किये गये हैं। यह पुराने टर्र के मकतबों (मदरसों) में बहुत दिनों तक पढ़ाई जाती रही है। 'खालिफ़ गरी' की बंदोस्त समझिये या जीवन संघर्ष के कारण, अब तो हिन्दी में मुसलमानी शब्द इतने अधिक भर गये हैं जितने 'खालिफ़ गरी' में भी नहीं हैं।

खुसरो की भाषा पर विचार करने से हिन्दी का आदिकाल विक्रम की छठी सातवीं शताब्दी से इधर का नहीं पड़ता। खुसरो ने उस समय की हिन्दुओं की भाषा का नाम 'हिन्दवी' लिखा है। जैसे—

अरबी बोले आईना, फारसी बोले पाईना।

हिंदवी बोले आरसी आये, मुँह देखे जो इमे बताये ॥

इस के बाद जायसी ने अपने समय की भाषा का नाम हिन्दवी लिखा है, जैसे—

अरबी तुकी हिंदवी, भाषा जेती आहि।

जामे मारग प्रेम का, सनै सराहैं ताहि ॥

इससे हिन्दी का पुराना नाम 'हिन्दवी' जान पड़ता है, जिसका अर्थ है हिन्दुओं की भाषा। खुसरो और जायसी दोनों मुसलमान थे, इससे उन्होंने हिन्दुओं की भाषा का एक अलग नाम दिया है, जो उचित ही था। पर आजकल हिन्दी इस अर्थ में नहीं ली जाती। आजकल वह एक स्वतन्त्र भाषा है जिसे हिन्दू, मुसलमान और अंग्रेज़ दोनों सीखते और काम में लाते हैं। पहले उसका अर्थ चाहे जो कुछ रहा हो, पर आजकल उसका मतलब सिर्फ हिन्दुओं की भाषा से नहीं, पर तमाम हिन्द की ज्ञान से है।

हममें से कुछ लोग हिन्दी के कट्टर हिमायती हैं, जो अपनी भाषा में विदेशी शब्दों के आने देने के गत विरोधी हैं। मैं समझता हूँ वे अपनी भाषा-संपर्धो मौजूदा हागत स वाञ्छित कम हैं। हमारी रक्षा महान पर मुसलमानों सभ्यता की गहरी छाप पड़ चुकी है इसे ये नहीं देखते। विदेश से आये हुए कितने ही शब्द हमारे घरों में मौजूद की तरह हमारी विदमत बना रहे हैं। उन्हें हम अज्ञान नहीं कर सकते। पता नहीं, वे क्या आये और किनके साथ आये। मसूर के लिये 'रोटी' शब्द को लीजिये। यह १ मुसलमानों का शब्द है, न हिन्दुओं का। फिर भी हिन्दू मुसलमान किम्बोधी भी हिम्मत नहीं कि इय अहिन्दू गुलाम का घर में बाहर निकालें। यह हमारे घरों में दरबान लेकर बुझे तक का जवाब पर है और इस। जिसका गहरी जो, उस जेवा नेरतनायक विया कि हमें शक होने जगा है कि हमारे पुराने रोटी खाते थे या केवल दाल भात और मीठ पर गुजर करने थे। छापन प्रकार के व्यञ्जना में 'रोटी' भा था या नहीं, यह कौन कह सकता है? हमारे राम, कृष्ण बुधिशिर, विष्णुमादिश्र, चन्द्रगुप्त, अशोक, भीम और हनुमान आदि वारों न क्या भाग या रानर चर के इतने हरिमे दिखलाये थे? यदि ये भी रोटियाँ खाते थे, तो उसका पुराना नाम क्या था?

'रोटी' ही नहीं, 'तरो' भी विदेशी शब्द है। यह फारसी का 'तारा' है, जो धिम धिपाकर 'तरो' होगया है। जब राटियाँ रही होगी तब तरो भा रहा होगा पर 'तरे' ने जिस हिन्दू घरतन को निराश कर चुके पर कजा किया, उसका नाम क्या था? यह अथ शायद कोई हिन्दीदाँ नदा जानता। क्या हिन्दुई या हिन्दुी थे कट्टर हिमायती रोटी और तरे का छाइन को तैयार है?

'पगड़ी और 'पेट' भा अनाय शब्द हैं। पेट तो शागरज दिमार पर चढ़ा हुआ है, और उसने पगड़ी का पैरों पर डाल रक्खा

है। 'पेट' का स्थान यदि 'उदर' को दे दें, तो क्या 'पेट' चल सकता है ?

हमारे घरों में कितने ही ऐसे शब्द हैं जो अपने मुद्रक का नाम अर्थात् तक अपने साथ रखते हुए हैं। जैसे—

'चीना'—चीन देश की शहर को कहते हैं। पहले लोग बाजार में जब इसे खरीदने जाते रहे हागे तब कहते रहे होंगे, 'चीनी शहर दो', अब शहर उद गया, चीनी रह गया।

'मिथ्री'—मिथ्र देश का निवासी है। मिथ्री शहर का 'शहर' निकल गया, मिथ्री बाकी रह गया।

'सुरती'—यह पहले सुरती तम्बाकू था। जिसका अर्थ था सुरत शहर (बम्बई प्रांत) से आया हुआ तम्बाकू। तम्बाकू निकल गया, सुरती का 'सुरती' हो गया। अब जो तम्बाकू पिया नहा जाता, वह निकल आया जाता है, उसे सुरती कहते हैं।

ऊपर मैं कह आया हूँ कि मुसलमानी सभ्यता ने हिन्दू समाज पर अपनी गहरी छाप लगा दी है। ऐसे बहुत से शब्द दिये जा सकते हैं जिनसे इस बात का सबूत मिलेगा। उनमें के लिये कुछ शब्द आगे दिये जाते हैं—

आमा—(तुर्की) माँ।

बाबा—(फ़ारसी) पिता। हिन्दुओं में पितामह को भी बाबा कहते हैं। पर ग्रामगातों में 'बाबा' पिता के अर्थ में आया है।

हमशीरा—(फ़ारसी) बहन, संस्कृत के समचीरा का अपभ्रंश जान पड़ता है।

बाळिशा—(अरबी) बचक।

अबोर—(अथा)

गुताल—(पारमा)

यूनानी धार्मिक ग्रन्थों में सुमलमाना का साथ आया है । उनके नाम भी यहाँ के लिये रह गये और शहरों में लक्ष्मण नामों से पूजे गये । यह हमारा राज्यांग जस्टिसियन में एम शमिन्त शायद है कि एम शमिन्त आग यहाँ पर रहते । जैसे—

पायजामा, इजायत, नमाल, शाल, दुसाला, घेंगा, युगा, पुना, जूना, कुमा, अवार, रक्षा, तद्वरी, चमचा, मातुन, शशा, शारा, पानुम, हुका, नैचा, चिदम यन्त्र इत्यादि ।

सुमलमाना न यहाँ की बहुत सा धार्मिक नाम यथेष्ट रूप में है । व इस प्रचलित हुए कि अब उनके दिन्दू नाम का पता सिद्ध रूप ही में मिल सकता है । जैसे

दिम्ता, यानाम, मुनका, शहनूत, मदाना, गूशाना, अजीर, मध, पिशा, नाशपाता, अनात, मज्जदूर, वकात, जल्लाद, मरात्र, ममगरा, लिशार, चादर, तकिया, तवाथत, मर्र, युलतुन, दवात, इमम, म्याही, गुलाय, एनक, मर्रक, कुमी, नर्र, जगाम, ज्ञान, तग, केतल, जहाज, मन्नुच, वादमान, पदा, दालान, ताग्राह, मर्राह, रमाद, रमर, कलागर, ताज्जू, म्सावेज, म्याला, चाप, तारात, अदालत, ताप, कात, कैतल इत्यादि ।

सुमलमाना के बाद पाँचु गीत आये । उनके भी कुछ शब्द यहाँ दृष्टे हुए हैं, जैसे—

श्रंगरेज, पिम्तोत, पल न, फसान, फमरा, मोलाम, इजिनियर, चा, काफा, गोदाम, चाशी, इत्यादि ।

श्रमज्ञा के ध्यान पर बहुत से श्रमज्ञा शब्द शामिल हो गये जैसे—

कोट, अशील, गिफ, इलगर, डुगर, टेविल, पैमिल, पैशन, घु,

फाम, बोर्डिंग, डिग्री, ग्लास, फड, रेल, ट्रेन, वारंट, रजर, लालटेन, पतलून, मील, इच, फुट, वान्क्रेट, केट, म्युनिभिपेलिटी, मेचिगार्थक, होटल, मोडावाटर, हाम्पिल, चोतल, पास, रजिस्ट्री, नोटिस, मसन, स्टूल, फमेगी, फीम, स्लेट, टिन, प्रेस, इन्स्पेक्टर, बेरिस्टर, माम्टर, काम्प्रेन्ल, चोटर, मोटर, कौंसिल, एसेंब्ली, मीटिंग, मजर, फमिलो, म्पिरिट धाहसिकल, लाइन, बटन, हंट, निब, पालिश इ यादि ।

ऊपर जितने शब्द दिये गये हैं, वे प्रायः सब विदेशी हैं और हमारे घर में रसाइधर से लेकर ब्रेठक तक खुदशाम काम दे रहे ह । ये हमारे जीवन के ऐसे साथी होगय हैं कि इनको निकालकर इनक स्थान पर अगर हम सम्कृत के नौकर रखते, तो एक दिन भी काम चलना मुश्किल हो जायगा । हम लोग 'काका' का घर से निकाल नहीं सकते न 'बाबा' को छोड़ सकने ह, और लाला और चाचा भा निकाले नहीं जा सकते ।

जितने मिले हुये कपडे हमारे घरों में ह, उन सब के नाम विदेशी हैं । इससे मालूम होता ह कि हमार वहाँ मिले हुये कपडे विदेश से आये । यहाँ सिफ श्राद्धने का रिवाज रहा होगा । इन कपडों के सम्कृत नाम कहाँ से मिलेंगे ?

गहने प्रायः सब विदेशी ह । 'बान्धुबन्द' की जगह 'थगद' कहिये तो हिन्दू लोग सुश्रीव के भतीजे तक जा पहुँचेंगे । 'नूपुर' की जगह 'पागोब' ने ले लो । जितने गहने आजकल हिन्दू स्त्रियाँ पहनता ह, उनमें से अधिपारा मुसलमानी हैं । क्या पहले हिन्दुप्रा में अधिक गहने पहनने का रिवाज नहा था ?

मेरों के नाम बिलकुल ही विदेशी हैं । उनके सम्कृत नाम चाहे लो हों, थब उाका प्रचार नहीं । कोपा की सहायता से उनक पुराने नाम रखें तो बाजार में वे चल नहा सकग ।

मिथ्या का नाम भी मिथ्या है। हलवा जलवा, बरफ़ी, समोसा, सुरमा, राजा कलाकद, खस्ता, सभी तो विदेशी हैं।

कामकाज और लेन देन के बहुत से शब्द मिथ्या हैं जो ऐसे स्वतंत्र हो गये हैं कि वे हटाय नहा जा सकें जैसे—पुजाँ पात आदि।

बाने बिरकुत ही मिथ्या है। डोल अरब में आया है। अब वह हमारे मंदिरों तक में पहुँच चुका है। बहुत से मंदिरों में डोल बनाकर ही ठाकुरजी जगाये जाते हैं।

सबसे अधिक आश्चर्य तो अंधार और गुलाल के लिये है। 'अंधार' अरब का है, और 'गुलाल' फ़ारस का। पर वह हिन्दुस्तान में इतना गयन हुआ कि हमारे एक मुख्य याहार हाली का यह एक नाम अंग हा गया और उस जनभाषा के कवियों ने ऐसा महत्त्व दिया कि अगर उसे उनका कविता में मिला दिया जाय तो जनभाषा को तालिमा ही कम हो जाय। पता नहीं, अंधार-गुलाल के पहले हिन्दुआ में होली का कौन-सा रंग चलता था।

इनसे अधिक विदेशी शब्द हमारे घरों में घुसे हुए हैं और वे हमें तुड़ुम्बी का तरह रहने लगे हैं कि पराये नहीं जान पड़ते। वे निकाले न जा सकें। और जब तक वे निकाले नहा जायें तब तक हिन्दी के कट्टर हिमायतियों का यह दावा कि हिन्दी में संस्कृत के ही शब्द रहने पाय, पूरा नहा होता।

मुसलमानों के ध्यान से हज़ारों वर्ष पहले शक, इंग्र और यूनानी आदि जातियाँ हम देश में आ चुकी हैं। यद्यपि अब उनका अस्तित्व यहाँ नडा है, पर उनका शब्द किसी न किसी पोशाक में उनकी आदतों का तरह बने ही हुए हैं। मेहरा शान्दीपी, मिथ (मिथदेशी ब्राह्मण) पाट आदि हम ही शब्द तो हैं। अतएव कोई सबब नडा कि हम कुछ और शब्दों को भी चाहे न किमा देश के क्या न हों और हमारी विदमत के लिये तैयार ह अथवा घर में नगह न हों। अगर हम परी

उदारता दिखाएँ, तो हिन्दी उर्दू का झगडा उची आसानी से दूरतम हो जा सकता है। कुछ मुसलमानी शब्दों के आ जाने से हिन्दी ही को उर्दू करार देकर उसे हिन्दू मुसलमानों के बीच घेदनस्य का एक कारण बना रखने में हमें तो कोई बुद्धिमानी नहीं दिव्याइ पड़ती। उर्दू के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय उर्दू को हज़म कर लेना ज्यादा लाभदायक है। अगर हम ब्रजभाषा, अवधी और छत्तीसगढ़ी को हिन्दी मानने दें तो भाषा की दृष्टि से तो इनकी अपेक्षा उर्दू फहीं अधिक हमारे निकट है। ब्रजभाषा जन की भाषा है, और अवधी अवध में बोली जाती है। इन भाषाओं या बोलियों में एक साहित्य उच्च कोटि का है, इसी लोभ से हिन्दीवाले इन्हें अपनाय दुए ह। भिन्न प्रांतवालों को जब हिन्दी सीखनी पड़ती है, तब प्रचलित हिन्दी के साथ उन्हें ब्रजभाषा और अवधी के शब्द भार करने पड़ते हैं क्योंकि ब्रजभाषा और अवधी ये दोनों बोलियाँ हिन्दी से उतने ही अन्तर पर हैं जितने अन्तर पर गुजराती, मराठा, मारवाड़ी और बँगला है। इन सबकी अपेक्षा उर्दू कड़ा अधिक हिन्दी के निकट है। हिन्दीवाले अभी साहित्य में गरीब ह, इसमें वे ब्रज और अवध से लाया हुआ धन दिखलाकर किसी तरह अपने मान की रक्षा करते हैं। उर्दू का भी हम इसी तरह अपनाएँ तो हमारे मान सम्मान की वृद्धि ही होगी। उसमें कोई कमी नहीं आयेगी।

गुजराती के भी दो रूप हैं—एक पारसियों की गुजराती, जिसमें मुसलमानी अलफ़ाज़ ज्यादा रहते हैं, दूसरे हिन्दुओं की गुजराती जिसमें संस्कृत के तमम और तद्भव शब्द अधिक रहते हैं। पर पारसी या हिन्दू किसी के लिये कोई रुकावट नहीं कि वह कौन-सा शब्द इस्तेमाल करे, कौन मान करे। बँगला में भी ऐसा ही हाल है। बंगाली मुसलमान जो बँगला बोलते या लिखते हैं, उसमें मुसलमानी शब्द ज्यादा होते हैं, और हिन्दू बंगाली जो भाषा बोलते हैं उसमें

कासदी ७५ शब्द सञ्जन क हाते है । फिर हिन्दी में एक भाग्ये की जग
 क्या वायम ई मनक म नहीं आता । उन् में इस्नेमात्र हागवाल बुय
 एम शब्द है निन् हिन्दा में मन्त्रग्रना म ल लना चाहिय । मैं ने एय
 शब्दों का एक सूचा तैयार का है ।

इय शब्द-समूह म १००० म अत्रिक शब्द है । इनमें से
 नान चौथान् म अत्रिक शब्द आमतौर म शहरों आर गाँवों म, कहीं
 कडा अमला मूलत म थीर कहीं-कडा देहाता मनर रहने के
 एक चौथाई म भा कम शब्द एसे है निह हिन्दावाला का ल लना,
 उन् का हज़म कर लना और भगइ का मतम कर दना है । इन
 शब्द का बिना जान काइ "यति हिन्दी का जानकार माना हा नहीं
 जाना चाहिय ।

हिन्दीवालों से मरा नम्र निरदन है कि उ अग्रना सकाएता तक
 कर द और वज और अग्र क दायर म बाहर निरतकर सरना
 ज़वान को भारतपर भर म व्यापक घनान का उद्योग करे
 गय और पद्य दोनों में ऊँच दाने का माहित्य पैदा करे, और
 राजमरा का आम जालचाल म अपने विचार ज़ाहिर करे, जिसम
 उनके देगवामा मनर विचार का पूरा ताम टग मर्क, पैसा नथोर
 आर तुलसीदास म अपने समय के समाज क जिये किया था ।

उर्दू

उर्दू का म्त्र भाया नहीं वह हिन्दा हा का एक रूप है ।
 मुमलमान वादशाहा क तरनरा बाज़ार में जहाँ तुना तुदा मुक्के
 और कीनों के विपाहा मीदा लन क लिय जमा हात आर
 हिन्दू बनियों का समक में आने लायक हिन्दी में अपना अपना मातृ
 भाषा क कुछ गुणा को भिलाकर यालने थे उसका उत्पत्ति हुइ

हि दुस्ताना काय में ये मभा शब्द न दिय गय है ।

थी ज़रूर, पर उसके तमाम अंग प्रयोग हिन्दी हैं। उर्दू फ़र्सी के थपले उसे 'मुमलमानी हिन्दी' कहा जाता तो अधिक मायका होता। ऊपर मैं यह ध्याया हूँ कि गुजराती ज़बान की भीतर ही भीतर ये सूत्र हैं, पर याहर वह एक है। ठीक यही हाल हिन्दी का है। पर फिर इतना है कि यहाँ हिन्दू-मुमलमानी का लड़न के लिये या लड़ाने के लिये एक क़दम पहला रक्खा गया है कि हिन्दी और उर्दू का ज़बान है।

कहा जाता है कि ग़ाहनाई बादशाह के ज़माने में उर्दू की उत्पत्ति हुई। यह बात शकत है। उर्दू याज़ार तो मुहम्मद गोरी के गुलाम तुतुतुदीन क लश्कर में भी रहा होगा और उसमें सौदा बेचने और ख़रादनेवालों के बीच की कोई थोली भी रही होगी और यह हिन्दी के सिवा दूसरी हो नहा सकती। क्योंकि हम मुल्क के हिन्दू बनिये लश्कर में साथ रक्खे जाते थे। सिपाहियों को मज़ूर हाकर बणियों की थाली में सौदा मॉगना पड़ता था। उसीमें ये कुछ अपनी ज़बान के शब्द भी मिला देते थे। उम सिचड़ा हिन्दी का एक नया नाम देने की ज़रूरत यदि पड़ी भी हो तो वह 'लश्करी हिन्दी' कहला सकता है। आजकल मैं, टेढ़े मो वपों में हम मुल्क में अंग्रेज़ी राज है। हाइम्बूला और कालेजों में जाइये तो वहाँ की हिन्दी में आपने सैकड़ा अंग्रेज़ी बड (शब्द) काम करते हुए सुनाइ पड़ेंगे, मगर उस हिन्दी का कोई अलग नाम नहीं। इसी तरह अरबी, फ़ारसी या तुर्की के कुछ लफ़्ज़ों के आ जाने से हिन्दी का दूसरा नाम क्या होना चाहिये ?

आर्यावत और इरान का बहुत पुराना संबंध है। दोना दशों में शब्दी ब्यापक तर्क के प्रमाण पाये जाते हैं। इरान की पुरानी भाषा में तो वेद के मात्र तक ज्यो के त्या मिलते हैं। पर आजकल की फ़ारसी में भी सैकड़ों सरकृत के शब्द इरानी पोशाक पहने हुये मौजूद

है, जा इस बात के समूत है कि फ्रांसीसी और स्पेन के थोलेनेवाले कियो बक्त एक ही घर में भाइ भाइ का तरह रह चुके ह। पट ने उन्हें जुदा किया और उनका ज़माना को ज़मान न थलग अलग पोशाक पहना दी। यहाँ फारसी म आमतौर से प्रचलित स्पेन के कुछ शब्द दिये जाने हैं, जिनके अदर कियो ज़माने म इरान और आयावन के एक शब्द होने का सुन्दर दृश्य अभी तक मौजूद है—

फारसी	स्पेन
दूर	सूर, सूय
माह	मास
तारा	तारा
रात	रपा (रात)
गान	नाय
बाद	वान (हवा)
गरमा	ओरम
सर्द	सग्
न्द	धूम
आब	थाप (पानी)
आहार	आहार
गराम	आस (कौर)
गन्धुम	गोधूम (गेहू)
नी	यय
माश	माप (उदद, सूग)
धिरन	धादि (घान)
गाली	जाला (घान)
शार	शार (दूध)
करपाम	वपाग (कपाम)

फारमो	मशूम
नर	मार, तन्तु
सुम	कुम्भ (घड़ा)
चरम	धम (घनदा)
द्वार	नार (लकड़ी)
शाग्र	शाग्या
दूर	दर
संज्ञेद	ज्यन
इयाह	याम
जन	नी (खा)
नर	नर
गात्र	गो
प्ररप	अरत
मेग	मप (भेद)
इवर	वर
उम्त्र	उष्ट्र
मग	शुनक (कुत्ता)
शगाल	शृगाल
शूक	शूकर
मगिन	मक्षिका
दृताः	काक
यक	एक
ने	दि
चहार, चार	चतु
पन	पच
शश	पष्ट

फारसी	सम्कृत
दृष्ट	सप्त
दृशत	अष्ट
तु	नव
द	दश
मद सत	गत (सौ)
कुन्नाल	फलाल (कुम्हार)
जगज	जङ्गल
शात	शाल
मारी	मारा (हिंदा)
नाम	नाम
नाल	नाल
जाल	जाल
हलाहिल	हलाहल
मिठर	मिठिर (मूय)
काम	कम
वन	वन
माल	माल
रोम	रोम, लोम
सुमन (ष्च नाम वृत्त)	सुमन (वृत्त)
राम	राम (रम्मा)
अगारह	अगार
जदाल	चारपाल
अफायून	अहिफेन (अफाम)
आफत	आपत्ति
नालोपर	नीलोत्पल

फारसी	सस्यन
फान	रानि (रान)
फुग	कुग
मूश	मूपध
नाज	नालिफा
गर्म	घम (घाम)
शगुन	शकुन
पालाग	प्रयाग, पनागन
दर	द्वार
पुर	पूरण
टुकच	द्विषा (द्विचकी)
क्रोह	क्रोश (क्रोस)
आमल	आमलक (आम्रवला)
मुदा	मृत्तक
रज (थलगनी)	रज्जु (रस्सी)
यार	जार
पेय	बधू (बह)
मे	मद्य (शराब)
कार	काय
फिरम	कृमि (कीड़े)
दहुल	दोल (हिन्दी)
तिग्ना (प्यासा)	तृपा, तृप्या (प्यास)
शकर	शकरा
आक	अक (मदार)
अरक	अश्रु
गाम	ग्राम (गाँव)

पारमा	मसृत
जलोक	जलीका (चोंक)
कृज	कुज (कुयडा)
जीरा	जीरफ
मूजन	मूची (सुइ)
श्रुकुज	श्रुकुश
मरार	शरीर
माँ	मान घन् (तुलनात्मक)
कशफ	कन्दुप
शना	स्नान
ग दश	ग घक्
वारिश, वरमात	वाग
विग्न	क्षेत्र, खत
मग	मेघ
मरशफ	मशफ (मरमा)
बालसिरा	मान्निश्रा, यकुल
पन्नाम	पलाच (पाफ)
आस्तौ	स्थान
थाराम बन	थारान (उपना)
इत्तराज	द्य तफाल
इत्तरवार	अधिकार
तरम	त्राम
मह	महा
पार	पर
पारान	प्राचीन
नाज	नी, नीका

फारसी	संस्कृत
आस्त , हस्त	अस्थि (हड्डी)
अगोजह	दिग
ईंदर	अत्र (इधर)
आदरक	आद्रक (आदी)
आतिश	दुताशा (आग)
यॉग	वाक्
बार	वार
ताब	तप,ताप
वेय	विधया
यन्द	बन्ध
मादर, माम	मातृ
पिदर, पाय	पितृ (हिन्दा—बाप)
बिरादर	भ्रातृ
पोर	पुत्र
दुदतर	दुहिता
दामाद	जामाता
सर	शिर
तारु	तालुक
अयू	भ्रु
दद	दन्त
गरे	ग्रीवा
बाहू	बाहु
दरत	हस्त
मुशत	मुष्टि
५	अंगुष्ठ

प्रारम्भी	सस्कृत
पुरत	पृष्ट
नाम	नाभि
नुरान	श्रणि
ज्ञानू	जालु
पाय	पाद
गून	शोण, शोणित
अध्र	अध्र (बादल)
घार	भार
वूम	भूमि
कतूतर	कपोत
तथाम	तपस्था
वाइ	वापा (वाजदी)
नाक	द्राक्षा (दाग)
नवान	युवा
मगर मच	मकर मन्म
खुद	स्वत
खुरक	शुष्क
चशपाश	ससपस
नाखुन	नग
टुगप्रगर	दुष्कर
अ दर	अंतर
ज्ञात	जात (पैना हुआ)
वेद	वत्र
अज्ञद	अपगर
नाया	धाय

फारसी	सस्कृत
नोत्र	ढोल (हिन्दी)
शक	शङ्ख
बदन (शरीर)	घटन (मुद्द)
इमरथर	अमर
बन्द	वन्त
बान	वान्

ये शब्द क्या इस बात के सूचक नहीं हैं कि सस्कृत और फारसी बोलनेवाले एक ही माँ-बाप की सन्तान हैं ?

मुसलमान लोग जब हिन्दुस्तान में आये तब इन शब्दों की बदौलत वे हिन्दुओं के लिये नये नहीं थे । हमारे भेदिये—य शब्द—का उनका साथ ये ही । उनके लिये म यहाँ की ज्ञान सीमा का आद धी, ज्ञान का लड़ाई लाने की उनकी इच्छा दृष्टा त । इतना उन्होंने अपने लक्ष्मी के हिन्दी-याकरण के साँचे में शब्द गाभ दिया । जैसे —

वकील का बहुवचन हिन्दी का वकीला हुआ त कि	वफला
विज्ञान " " निशाना "	मिथानाग
मेरा " " मेरा "	मयाजाग

इत्यादि ।

फारसी शब्दों से बहुत सी क्रियाएँ हिन्दी के शब्दों पर बन गयी हैं ।

जैसे—

वृत्त म श्रुतना

गुजर म गुजरना

घरत म श्रुतना इत्यादि ।

बहुत म प्रारम्भ शब्दों के साथ होगा, फरना, उगागा आदि हिन्दी शब्द जोड़कर क्रियाएँ बना लीं गया हैं। जैसे—

खुश होना जिम्मे फरना मिल लगाना, इत्यादि।

पुस्तक में एक नया शब्द बन गये, भिनका धड़ हिन्दी है और मिर फारसी। जैसे—

चिट्ठा रमा, समझदार, पान दान, गाड़ी-खाना इत्यादि।

दोना भाषाया के बहुत म पर्यायवाची शब्द एक साथ होंगे। जैसे—

फागुन पत्र धन शीलत, शादी ब्याह, इत्यादि।

जिम भाषा का लिंग, वचन, क्रिया, कारक, सर्वनाम और अभ्यय हिन्दी का है उसे भेडे स विशेषी शब्दों के मिश्रण म एक अलग नाम क्यों देना चाहिये? यदि—

‘यह आन्दोलन शक लिय बहुत हा लाभदायक है’ यह वाक्य हिन्दी का है और—

‘यह तहराक मुक्तक लिये निहायत मुफाद है,’ यह जुमला उर्दू का हुआ तो—

यह पत्रिशन कड़ा के लिये मोस्ट बेनेफिशल है।’ यह सेंटेंस किम भाषा का कहा जायगा? मैं तो पहले को हिन्दुओं का हिन्दी, दूसरे को मुसलमानों हिन्दी, और तीसरे का अंग्रेज़ों हिन्दी कहूँगा। बंगाल, पंजाब, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रास म जो हिन्दी बोला जाता है उसमें बहुत स स्थानीय शब्द मिल जात हैं। केवल उनके कारण से नयी नया भाषाएँ नहा ईगार का जा सक्ता।

शक लिय वन हा तुभाष की बात है कि कुछ दिनों म हिन्दू मुसलमानों को मज़हब लबाद के साथ ज़बान की भी लबाद छिड़ रही

हिन्दुस्तानी

पुराना हिन्दा उर्दू और अंग्रेज़ी के मिश्रण से जो एक नयी भाषा आयस थाय बन गया है वह हिन्दुस्तानी के नाम से मशहूर है। बहुत से ऐसे प्रिदशा शब्द हैं जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दोशब्दों में पाये नहीं हैं। जैसे— 'हमरत' शब्द का लाजिये—

दरो दीवार प हमरत से ननर करते हैं,
सुरा रहो अहले-बतन हम तो सफर करते हैं।

'हमरत' के लिये 'लालमा' शब्द का प्रयोग नैग करते हैं, पर 'हमरत' में प्रेम करुणा और आकर्षण का जो भाव है वह 'लालमा' में नहीं है। लालमा में केवल आकर्षण है परछा नहीं।

'अमान' शब्द का लाजिये। हिन्दा में इसके लिये ठीक-ठीक शब्द नमाला कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। इसी तरह अंग्रेज़ी का 'फालिंग' (Feeling) शब्द है। कुछ लोग 'अनुभव' का इसका पर्यायवाची बतायेंगे, पर 'अनुभव' 'फालिंग' की गहराई तक नहीं पहुँचता। 'फालिंग' में जो तन्प क्षिपी है, वह 'अनुभव' में नाम मात्र की भी नहीं है। हाँ, 'महसूस' में है। अतएव नये भाषों का चयन करनेवाले शब्दों को हम अपने घरों में चगह देना ही पगा।

आजकल का समाज अपनी खोलखोल की ज़बान की एक ऐसी सुरत का ज़रूरत महसूस कर रहा था जिसमें अंग्रेज़ी खयालात भी मिले हो सकें, वह उसे 'हिन्दुस्तानी' के नाम से हासिल हुई। मगर फिर भी घमा बहुत से लफ्ज़ों के लिये गुज़ाहश निकालनी है। जैसे, पेशावा के शब्द। किसानों के घरों में, गेना में और खलियानों में या शब्द काम देने हैं, हिन्दुस्तानी में वे नहीं आने पाते। कुम्हार, लुहार, मुनार, बहई, घोवा, रंगरेज़ तेखा, तमोला, जुजादा, पुनिया, नाइ, रान, मोचा, चमार, ट्रेरा, भडभूजा, आतशवाज़, दफ्तरी,

नालबन्द और बर्राह जा शब्द काम म लाते ह, हिन्दी, उर्दू ह
हिन्दुस्तानी, ताता भाषाओं के लोग उन् नही जानते और न उ
शब्द को अपनी भाषा म आने देने ह । नतीजा यह हुआ है कि अप
मुल्क के पेशावरा को तरफ कमी हमारा ध्यान भी नहा जाता । हम
जानते हा नही कि कित्मान और कुम्हार को उनके पेशे में कामयाग
हासिल करने के सम्ते में क्या क्या कठिनाइयाँ मौजूद ह, और ये केम
हटाड जा सकता ह । शब्द हो नही है, तो विचार धारा वहाँ म पैग
हा ? अतएव जहाँ हम अपनी ज़बान में विदेशी शब्द को जगह देने जा
रहे ह वहाँ अपने चेहात के प्रामाण्य दोस्ता के लिये भी काफ़ी जगह
साली रखनी चाहिय । हमें पेशावरों क सभी शब्दों को एक मूर्छा
बना लेनी चाहिये और स्कूली रीटों में और प्रिन्सिपलानिया या
लेखों में उनका उपयोग करना चाहिये । इसमें हम अपने प्रामाण्य
भाइया के बहुत नज़दीक पहुँच जायेंगे । मात्र न हम पेशावरों का
दुनिया की नयी रोशनी से भी परिचित करने गेंगे ।
मैं ने ग्राम गीतों के दौर में पेशावरों क हज़ारों शब्द जमा किये
। उनक इस्तेमाल म मयमे बढ़ी निफ्त जो है यह यह है कि
क हो काम या चीज़ के नाम भिन्न भिन्न जिलों म जुदा-जुदा ह ।
उमे किमी एक जिल के शब्द को दूर के दूसर जिलेवाले प्राय न
सकते । इसके लिय यह बहुत जरूरी है कि युत्काम्य का
वर्गसिटीयाँ या हिन्दुस्तानी प्केडेमी उद्दि विद्वानों का एक पना
बना दे जो सर शब्दों को जमा कर क यह शब्दों क संग्रह करे कि
या शब्द अधिक मरज, अधिक साधक और अधिक ध्यानक ह ।
ये शिषित समाज में आने देने के कर्तव्य समझें उनके
। कर दें । इससे हिन्दी भाषा का बहुत काम पहुँचने
पक बहुत बढ़ा कमी पूरा हो जायगी ।

मङ्गल

अ०	=	अंगरेजी भाषा
अ०	=	अरबी भाषा
अनु०	=	अनुकरण
अत्र	=	अत्रय
त्रि०	=	त्रिया
त्रि० त्रि० अ०	=	त्रिया विशेषण अत्रय
तु०	=	तुर्का भाषा
पु०	=	पुल्लिंग
पुर्न०	=	पुर्तगाली भाषा
फा०	=	फारसी भाषा
वद्म०	=	वह्नचन
त्रि०	=	त्रिशेषण
स०	=	सस्मृत
सर्व०	=	सर्वनाम
स्त्री०	=	स्त्रीलिंग
हि०	=	हिन्दी

हिन्दुस्तानी कोष

अ

अ

अजली

अ—ससृष्ट और हिन्दी वणमाला
का पहला अक्षर । नहीं ।

अङ्क—(पु० स०) चिन्ह । भाग्य ।
दाग । गोठ । नौ तक की
गिनती । नाटक का एक
खंड । शरीर । मत्तवा ।

—गणित = वह विद्या जिससे
सरपाद्या का ज्ञान हो,
हिसाब । —न = चिन्ह करना ।

लिपना । —नीय = चिन्ह
करने के योग्य । अकित =
चिन्हित । लिखित ।

अक्षुर—(पु० स०) शँखुआ ।
दाम । —ना = दाम निक-
लना । शँखुआ फेंकना । अकु-
रित = शँखुआया हुआ ।

अक्षुरा—(पु० स०) धाँकुस,
जिससे हाथी के मस्तक में

गोदकर उसे चलाया जाता
है ।

अँकार—(पु० हि०) रिशवत ।
धूस । भँट ।

अंग—(पु० स०) शरीर । तन ।
जिस्म । अवयव । भाग ।
दुक्का । भेद । भाँति । यत्न ।
सहायक । साधन । प्रिय ।

—चालन = शरीर हिलाना-
दुलाना । —दाइ = देह टूटना ।

अगीकार—(पु० स०) स्वीकार ।

अगूर—(पु० फा०) दास ।

अंजन—(पु० स०) फाजल ।
सुरमा ।

अजर पजर—(पु० हि०) पसली ।

अजली—(खी० स०) दोनों
हथेलिया के मिलाने से बनती
है ।

अजाम—(पु० फा०) अत ।
परिणाम ।

अजीर—(पु० फा०) एक प्रकार
का दस्त वा अफगानिस्तान,
त्रिबिचिस्तान और कारमार
में अधिक पाया जाता है ।

अजुमन—(पु० फा०) ममिति ।

अँटिया—(स्त्री० हि०) अंगी ।

घाम का बधा हुआ छोटा
गद्दा । अँटियाना = हथेली में
रखना । हजम करना ।

अडबड—(स्त्री०, अनु०) चर्च
का बात । घुरी बात ।

अडस—(स्त्री० हि०) सकट ।

अडाकार—(वि० स०) लम्बाई
लिये हुये गाल । अडाकृति =
अडे की शरू ।

अडी—(स्त्री० स०) परबट ।
रंदा । एफ प्रकार का दस्त ।

अँनडी—(स्त्री० हि०) अँत ।
अत्र = अँत । अत्रवृद्धि =
अँत उतरने का एक रोग ।

अनरग—(वि० स०) निकट
वर्ती । भीतरी ।

अतर—(पु० स०) भेद । मध्य ।

दूमरा । अलग । हृदय । भीतर ।
—धामा = जीव । अँत
राना = अलग करना । भीतर
करना ।

अतरा—(पु० स०) अतर ।
नागा । ज्वर की एक द्रिस्म ।

अदग्मा—(पु० फा०) एक
प्रकार की मिर्गई ।

अन्दरूनी—(वि० फा०) भीतरी ।

अन्दाज—(पु० फा०) अनु-
मान । डगा भाव । —न =
अन्दाज से । लगभग ।
अन्दाजा = अनुमान ।

अन्देशा—(पु० फा०) चिन्ता ।
सशय । खटका । हानि ।
दुविधा ।

अन्दोर—(पु० स०) हलचल ।

अवार—(पु० फा०) समूह ।

अवड—(स्त्री० हि०) ताव ।
घमड । डिगाई । हठ ।
—ना = फँटना । सुक होना ।

तनना । अभिमान करना ।
अदना । मिजाज बदलना ।
—बाइ = फँटना । —बाज =

अभिमानी । अकर्वैत = अकर्ववात् ।

अश—(पु० सं०) हिस्सा ।

अकवक—(पु० हि०) निरर्थक वाक्य । विन्ता । अछो-बछो । होश-इवास । भीषणा ।

अकवकाना = चकित होना ।

अकस—(पु०, अ०) शयुता ।

अकसर—(क्रि० वि० अ०) बहुधा । अकेले ।

अइलीश—(अ०) बुझबुझ । हज़ार हास्तान ।

अकसीर—(स्त्री० अ०) एक रस जो धातुओं को सोना चाँदी बनाता है । अत्यन्त लाभ कारी ।

अकइस—(अ०) पवित्र । उद्य ।

अकरवा—(अ०) निकट के । शिश्तेदार । स्वजन ।

अकसाम—(अ०) बिस्म का बहुवचन । डुकड़े । विभिन्न । सांगर खाना ।

अकवाम—(अ०) कौम का बहुवचन । वचन जातिर्याँ । जामें ।

अकवर—(अ०) महाव्रत । बहुत बड़ा ।

अफीद—(अ०) विरनाम । गत । अफीदत = विधाय खाना ।

अकस्मात्—(क्रि० वि० सं०) अचानक । एकवाणी । अश से घाय ।

अकाटण्ट—(पु०, अ०) दिवाक दिताव । अशरट्ट = मुक्ति ।

अकाट्य—(क्रि०) अचर सके ।

अकाल—(अ०) अत्यन्त दुर्मिड । अशरट्ट = अशरट्ट ।

अनाग—(अ०) बिना अनाग—(अ०) बिना

अशरट्ट—(अ०) अशरट्ट । अशरट्ट—(अ०) अशरट्ट ।

अशर—(अ०) अशर । अशर—(अ०) अशर ।

अशर—(अ०) अशर । अशर—(अ०) अशर ।

अफखड—(वि० हि०) अफा
 वाला । अफखालू । उजड़ू ।
 एरा । —पन=कड़ाहं ।
 निःशक्तता ।
 अफतोर—(पु० अ०) अंगरत्नी
 साल का दसवाँ माह, जो ३१
 दिन का होता है ।
 अफल—(छा० अ०) बुद्धि ।
 —मद=बुद्धिमा । (छी०
 अफलमदी) ।
 अफस—(स० पु० अ०) धाया ।
 अफमी तसवार=जाटो ।
 अखड—(वि० स०) पूरा । जगा
 तार । निर्निम्न ।
 अदरा—(रि०) । भूमी मिला
 हुआ जो का आटा ।
 अलार—(अ०) शिष्टाचार ।
 सदगुण ।
 अफरोट—(पु०, म० अफोट)
 एक दरदत का नाम । यह
 कई प्रकार के प्रयोगों में
 आता है ।
 अखवार—(पु० अ०) समा
 चार पत्र । खबर की जमा ।
 अखडा—(पु० हि०) कुरती

खदने का स्थान । साधुओं
 की मदनी । दरवार । मैदान ।
 अफज—(पु० अ०) खेना ।
 अगति—(छी० म०) दुगति ।
 शृयोपरान्त की बुरी दशा ।
 अगत—(हि०) महापतों की
 बोली निमया भाव आगे
 चलने का है ।
 अगम—(वि० पु० स० अगम्य) म
 जानने योग्य । कठिन ।
 दुलम । बहुत । बुद्धि के पर ।
 बहुत गहरा । अगम्य=
 मुश्किल । अपार । बुद्धि के
 बाहर ।
 अगर—(पु० स०) एक दरदत
 जिसकी लकड़ी पुगघित
 होती है । यदि ।
 अगरचे—(अच्य० प्रा०) अघपि ।
 अगला—(वि० म० अगली) सामने
 का । प्रथम । अगामी ।
 दूसरा । (छी० अगली) ।
 अगवाइ—आगे से जाकर खेना ।
 अगवाडा—घर द्वार के सामने
 की भूमि ।
 अगवानी—पेशवाइ ।

अग्यार—(अ०) शेर का बहुवचन, दुरमग । पराया ।

अगराज—(अ०) सराज का बहुवचन । उद्देश्य । मतलब ।

अगस्त—(पु० अ०) अगरेज़ी का एक महीना ३१ दिन का, जो जुलाई के बाद पड़ता है ।

अगहन—(पु० स० अग्रहायण) एक महीने का नाम । अगह-नियाँ = अगहन में जो फलसल पैदा हो । अगहनी = अगहन में जो तय्यार हो जाय ।

अगाऊ—पेशगी । आगे का ।

अगाड़ी—भविष्य सं । घोड़े की आगेवाली रस्ती ।

अगिनबोट—(स्त्री०, स० अग्नि अ० बोट) बड़ बड़ी गाड़ जो भाप के द्वारा चलती है ।

अगुआ—(पु० स० अग्र) आगे चलने वाला । नेता । रास्ता दिखाने वाला । विवाह ठीक करनेवाला । —ई = सरदारी । —ना = आगे करना । अगोला = हाथों में पहाने का कड़ा ।

अग्र—(पु० स०) सिरा । अग्र-गामी = अग्रसर ।

अग्राह्य—(पु० स०) १ खेने के योग्य । त्याग्य ।

अग्रिम—(पु० स०) पेशगी ।

अगोरना—(क्रि० स० हि०) राह देसना ।

अग्रभा—(पु० हि०) आश्चर्य । अचरज, विस्मय ।

अग्रकन—(पु० हि०) एक प्रकार का तम्बा अगा ।

अग्रूक—(वि० हि०) जो खाली न जाय । ठीक । अवश्य ।

अचेत—(वि० स०) बेहोश । ब्याकुल । बेपरवाह । अन-जान । सूढ़ ।—न = निसको चेत न हो ।

अच्छा—(वि०) बढ़िया । (स्त्री० अच्छी) ।

अच्छूत—(वि० हि०) जो छुआ न गया हो । जो काम में न लाया गया हो । नया । पवित्र ।

अजगर—(पु० स०) एक बहुत बड़ा और मोटा साँप, जो बड़े

यदे पशुओं को समूचा निगल
 जाता है। (फा० अ० द०)।
 अजय—(वि० अ०) अज्ञत।
 अजय—(अ० अ०) तलवार।
 अनल—(घो० अ०) मौत।
 अजहद—(त्रि० वि० फा०) बहुत
 अधिक।
 अजाव—(पु० अ०) पीडा। पाप।
 अजमत—(स्त्री० अ०) महानता।
 अजीम = महान।
 अजायब—(पु० अ०) अजय
 का अटुवचन। विचित्र वस्तु।
 —खाना = वह घर जिसमें
 अज्ञत पदार्थ रक्ते जाते हैं।
 —घर = अजायब खाना।
 अजीज—(वि० अ०) प्यारा।
 अजीश—(वि० अ०) विलक्षण।
 अन्या।
 अनीण—(पु० स०) अपव।
 अटन—(सज्ञा पु०) अदचन।
 सकोच। एक शहर। अनाज।
 —ना = ठहरना। फँसना।
 प्रीति करना। रुगदना।
 अटकाना = ठहराना। फँसाना।
 अटकाव = ठहराव। फँसाव।

अटमल—(या० स०) अनु
 मान। अदान। तलमीना।
 —गा = अनुमान करना।
 —पचू = कपोलकल्पित।
 —या = अनुमान करनेवाला।
 अटपट—(वि० हि०) टेढ़ा। गूढ़।
 घेठिकान। लक्ष्मणाता।
 अटपटाना = घबड़ाना। हिचक
 ना। अटपटा = घबड़ाहट।
 हिचकिचाहट।
 अटरनी—(पु० अ०) एक प्रकार
 का मुद्रतार।
 अटलस—(पु० अ०) नश्रों की
 पुस्तक।
 अटागी—(स्त्री० हि०) कोठा।
 अटालिका = कोठा। अटा =
 अटालिका।
 अटाला—(पु० हि०) डेर। अस
 वाप। मुहल्ला ब्रह्महर्षों का।
 अठकोमल—(पु० हि० + अ०)
 पचासत।
 अठखेली—(स्त्री० हि०) फल्लोली।
 मस्तानी चाल।
 अठपहला—(वि० हि०) आठ
 केने वाला।

अडचन—(स्त्री० हि०) रूपायुत ।

अडवग—(त्रि० पु० हि०) घटपट ।

घटि । घनोत्ता । अडवड ।

अडचो फट—(पु० अ०) जो यकाल

यकालतनामा दादिरल नही

करता । यकील ।

अडूना—(पु० हि०) एक शौचधि ।

अडोस-गडोस—(पु० हि०)

शरीर ।

अडूना—(पु० हि०) टहरने का

स्थान । प्रधान स्थान ।

चौकडा ।

अडूम—(स्त्री० अ०) अभिनन्दन

पत्र । ठिकाण ।

अडुतिया—(पु० हि०) आइत

या घ्यउसाग करने वाला ।

आ—(क्रि० वि० अ०) इस

कारण से । अतप्य = इसलिये ।

अतर—(पु० हि०) फूला या

सार ।—दान = जिसमें इत्र

रक्खा जाता है ।

अतलम—(स्त्री० अ०) बहुत

मुलायम रेशमी वस्त्र ।

अताई—(वि० अ०) प्रवीण ।

धूर्त । बिना पदा बिसा ।

अनीर—(पु० अ०) पुराना ।

आजाद ।

अत्तार—(अ०) गधी, इत्र

वेचने वाला ।

अतारीक—(पु० अ०) उम्ताद ।

अतवार—(अ०) तौर या बन्दु

घषन । तरीशा । दग ।

अति—(वि० अ०) ज्यादा ।

अतिकाल—(पु० अ०) विलम्ब ।

अतिधि—(पु० अ०) मेहमान ।

सन्धासी ।

—पूजा = मेहमानदारी ।

—यज्ञ = अतिधि पूजा ।

अनीर—(वि० अ०) अत्यन्त ।

अनुल—(वि० अ०) जो तोखा

या फूला न जा सके । अवार ।

वेजोड़ । —गीप = जिसका

अन्दाज न हो सके । अनुपम ।

अता—(अ०) भेंट । देन ।

वागशिश ।

अत्याचार—(पु० अ०)

अन्याय । पाप । पाउड ।

अत्याचारी = दुराचारी । डका-

सले पात्र ।

यदे पशुओं को समूचा निगल
जाता है। (फा० अज्ञदश)।

अजव—(वि० अ०) अद्भुत।

अजव—(عجب अ०) तलवार।

अजल—(स्त्री० अ०) मौत।

अजहद—(मि० वि० फा०) बहुत
अधिक।

अजाव—(पु० अ०) पीटा। पाप।

अजमत—(स्त्री० अ०) महानता।

अजीम = महान।

अजायब—(पु० अ०) अजब
का यदुचन। विचित्र वस्तु।

—खाना = वह घर जिसमें
अद्भुत पदार्थ रखे जाते हैं।

—घर = अजायब खाना।

अजीज—(मि० अ०) प्यारा।

अजीर—(मि० अ०) विलक्षण।

अनूत।

अनीण—(पु० म०) अपच।

अटम—(सज्ञा पु०) अद्वचन।

सकाच। एक शहर। अकान।

—ना = ठहरना। फँसना।

प्राप्ति करना। रूगड़ना।

अटकाना = ठहराना। फँसाना।

अटकाव = ठहराव। फँसाव।

अटमल—(स्त्री० स०) अनु

मान। अदाज। तखमीना।

—ना = अनुमान करना।

—पच्चू = कपोलकल्पित।

—बाज = अनुमान करनेवाला।

अटपट—(मि० हि०) टेढ़ा। गूढ़।

घेटिकान। लड़खड़ाता।

अटपटाना = घबड़ाना। हिचक

ना। अटपटी = घबड़ाहट।

हिचकिचाहट।

अटरनी—(पु० अ०) एक प्रकार-
का सुलतार।

अटलस—(पु० अ०) नत्रियों की
पुस्तक।

अटारी—(स्त्री० हि०) कोठा।

अटालिका = कोठा। अटा =

अटालिका।

अटाला—(पु० हि०) ढेर। अस

वाच। मुइरला ब्रसाइर्यों का।

अठकोसल—(पु० हि० + अ०)

पचायत।

अठखेली—(स्त्री० हि०) कल्लोल।

मस्तानी घाल।

अठपहला—(वि० हि०) आठ

केने वाला।

अडचन—(खी० हि०) रसायत ।

अडवग—(वि० पु० हि०) अटपट ।

कठिन । अनेखा । अडयद ।

अडचोकेट—(पु० अ०) जो वकील

वकालतनामा दाखिला नही

करता । वकील ।

अड्सा—(पु० हि०) एक औपधि ।

अडोम-गडोस—(पु० हि०)

करीष ।

अड्डा—(पु० हि०) ठहरने का

स्थान । प्रधान स्थान ।

चौकटा ।

अड्डेस—(खी० अ०) अभिमान

पत्र । ठिकाना ।

अड्डतिया—(पु० हि०) आदत

का व्यवसाय करने वाला ।

अत—(क्रि० रि० स०) हम

कारण से । अतएव = इसलिये ।

अतर—(पु० हि०) फूलों का

सार ।—दान = जिसमें हय

रक्का जाता है ।

अतलस—(खी० अ०) बहुत

मुलायम रेशमी वस्त्र ।

अताई—(वि० अ०) प्रतीण ।

धूत । बिना पदा लिखा ।

अतीक—(पु० अ०) पुराण ।

आज्ञाद ।

अत्तार—(अ०) गन्धी, इय

वेचने वाला ।

अतालीक—(पु० अ०) उम्ताद ।

अतवार—(अ०) तौर या बहु

वचन । तरीका । ढग ।

अति—(वि० स०) ज्यादा ।

अतिकाल—(पु० स०) विलम्ब ।

अतिथि—(पु० स०) मेहमान ।

सयासी ।

—पूजा = मेहमानदारी ।

—यज्ञ = अतिथि पूजा ।

अनीय—(वि० स०) अत्यन्त ।

अतुल—(वि० स०) जो सोला

या कृता न जा सरे । अपार ।

चेजोद । —नीय = जिसका

अन्दाज न हो सके । अनुपम ।

अता—(अ०) भेंट । देन ।

घप्रशिश ।

अत्याचार—(पु० स०)

अन्याय । पाप । पातद ।

अत्याचारी = दुराचारी । ढके-

सले बाज़ ।

अत्युक्ति

अत्युक्ति—(स्त्री०, स०) यद्वापा ।

एक अलकार ।

अथ—(अच्य० म०) किमी

वस्तु का आरम्भ । अन्तर ।

—थ = और भी ।

अथाह—(स्त्री० हि०) धैर्य

का स्थान । म डला ।

अदाग—(वि० हि०) निष्कलक ।

निर्दोष । साफ ।

अदना—(वि० अ०) तुच्छ ।

मामूलो । (स्त्री० अदना)

अदय—(पु०, अ०) ज्ञायदा

अद्वयदानर—(कि० वि० हि०)

टेक बाँधकर ।

अदमपैरवी—(स्त्री०, पा०)

किमी मुद्रा में से ज़रूरी वार

रखाई न करना । अदम सधून =

प्रमाण का न हाना । अदम

हाज़िरी = अनुपस्थिति ।

अदरफ—(पु०, हि०) एक

पीधा । आदा ।

अदहन—(हि०) पीलता हुआ

पानी ।

अदा—(वि० अ०) दिया हुआ ।

(सत्ता, स्त्री०) भाव । दण ।

—इ = चालवाज़ ।

अदालत—(स्त्री० अ०) न्याया

लय । अदालती (वि० अ०)

जो अदालत करे ।

अदावत—(अ०) दुरमनी ।

अदावती = जा दुरमनी रखे ।

अदूरदर्शी—(वि० स०) जा

दूर तक न सोचे ।

अदभुत—(वि० स०) आश्चर्य-

जनक । अदभुतालय = अज्ञा-

यत्र घर ।

अध—(हि०) आधा । अधकथा =

अधूरा । अधकपारी = आधे

गिर का दूध । अधगिला

= आधा खिजा हुआ ।

अधखुला = आधा खुला हुआ ।

अधझा = डबल पैसा । अधपह

= एक बाट जो १ पाव का

आधा होता है । अधर = सींच

अधमेरा = आधा मरा हुआ

अधसेरा = एक बाट, जो दो

पाँचे का होता है । अधावट =

जो आधा बाँग हो । अधि-

==आधा हिस्सा । अधद=
आधी उध्र का । अपेला=
आधा पैसा । अधमुआ=
आधा मरा पुआ ।

अधाधुन्ध—(वि० वि०)

अधाधुआ अधेर । येदिसाय ।

अधिन्—(वि० म०) विशेष ।

सिना । —ता=बहुतायत ।

—माम=मत्तमाय ।

—तर=प्राय ।

अधिनार—(पु० म०) प्रभुत्तर ।

द्वर । दाया । शक्ति । जान

कारी । प्रकरय । अधि

कारी=मालिक । द्वरदार ।

याग्यता रखी याजा । अधि

द्वर=अधिनार में आया हुआ ।

अधीन—(वि० स०) मातहत ।

लाचार ।

अधीर—(वि० पु० म०)

घबडाया हुआ ।

अनकारीय—(वि० वि० अ०)

लगभग ।

अनधिकार—(स० पु० स०)

इत्तिधार का न हाना ।

लाचारी । —

धियारिता=अधिकार का न
होना । अधिकारी=जिमको
अधिकार न हो । अयोग्य ।

अनवास—(पु०) रामपाम
को तरह पत्र पीधा ।

अनय—(वि० स०) (खी०
अनन्या) एक ही में लीन ।

—गति=जिमको दूसरा
सहारा न हो । —चित्त=

जिमका चित्त दूसरी जगह न
हो । —ता=एक ही में लगा

रहना ।

अनमिल—(वि० हि०) बेजोड ।

अनमेल=बेजोड । बिना

मिलापट का ।

अनमेल—(वि० हि०) अमूय ।

उत्तम ।

अनर्व—(पु० स०) टलटा

मतलब । बिगाड़ । पापमार्ग ।

बेमत्तलब । —कारी=टलटा

मतलब निकालनेवाला ।

उत्पाती । —दर्शी=पुराई

परनेवाला ।

अनसुनी—(वि० हि०) बिना

सुनी हुई ।

अनहोनी

अनहोनी—(वि० स्त्री० हि०)

शमम्भव ।

अनाचार—(पु० स०) दुराचार ।

कुघाल ।

अनाज—(पु० हि०) अन्न ।

अनाड़ी—(वि० पु० हि०) गँवार ।

जो चतुर न हो ।

अनाथ—(वि० स०) ने मालिक

का । लागरिस । जिमका

सहायता करने वाला कोई न

हो । दुखी । अनायालय =

दुखियों का घर । जहाँ अस

हाया का पालन पोषण हो ।

अनादर—(पु० स०) निरादर ।

अपमान । —णीय = जो

आदर के लायक न हो ।

दुरा । अनादरित = जिसका

आदर न हुआ हो ।

अनाप शनाप—(पु० हि०)

अवबड । व्यर्थ बरवाद ।

अनायास—(क्रि० वि० म०)

बिना परिश्रम । अचाक ।

अनाग—(पु० प्रा०) दादिम ।

अनावश्यक—(वि० स०) जिसकी

जरूरत न हो ।—ता =

जरूरत का न होना ।

अनाहत—(वि० स०) बिना

तुलाया हुआ ।

अनियमित—(वि० स०) चे

त्रापदा । अनिश्चित ।

अनिर्वचनीय—(वि० स०)

निमशा वर्णन न हो सके ।

अनुकरण—(पु० स०) नकल ।

पीछे आने वाला । अनुकर

णाय = नकल करने लायक ।

अनुकूल—(वि० स०) मुधाश्रिक ।

हितकर ।—ता = अविरोधता ।

पक्षपात ।

अनुकूलिणी—(स्त्री० स०)

सखी । सखी ।

अनुगृहीत—(वि० स०) जिस

पर कृपा की गयी हो ।

कृतज्ञ । अनुग्रह = कृपा ।

अनुप्राहक = कृपा करनेवाला ।

उपकारी ।

अनुचित—(वि० स०) दुरा ।

अनतर—(क्रि० वि० स०) पीछे ।

जगातार ।

अपद—(वि० स० + हि०)
बेपना ।

अनभिज्ञ—(वि० स०) मूर्ख ।
नादाङ्गिक ।—ता = मूर्खता ।

अभ्ययन—(पु० स०) पढ़ाई ।
अध्यापक = पढ़ानेवाला ।
अध्यापकी = मुदरिंसी । अध्या
पन = पढ़ाने का कार्य ।
अध्याय = पाठ । अनध्याय
= छुट्टी का दिन ।

अभ्यवसाय—(पु० स०)
लगातार परिश्रम । उत्पाद ।
—यी = परिश्रमी । उत्पाही ।

अनुनय—(पु० स०) विनती ।
मनाना ।

अनुप्रास—(पु० स०) शब्द
का थलकार ।

अनुभव—(पु० स०) वह
ज्ञान जो प्रत्यक्ष करने से प्राप्त
हो । जो ज्ञान परोक्षा करने पर
प्राप्त हो । अनुभवी = अनु
भव रखनेवाला । अनुभाव—
महिमा । अनुभाषी = जिसको
अनुभव हो । जिसने सब
बातें स्वयं देखी सुनी हों ।

अनुभूत = जिसका अनुभव
हुआ हो । तजराया किया
हुआ । अनुभूति = अनुभव ।

अनुमति—(खी० स०) आज्ञा ।
सम्मति ।

अनुमान—(पु० स०) अन्दाज़ा ।
अनुमित = अन्दाज़ा हुआ ।
अनुमिति = अनुमान । अनु
मेय = अनुमान करने लायक ।

अनुमोदन—(पु०, स०)
समर्थन ।

अनुरक्त—(वि० स०) प्रेम से
मिला हुआ । लीन ।

अनुराग—(पु० स०) प्रेम ।
अनुरागी = प्रेमी ।

अनुरोध—(पु० स०) रजावट ।
दशाय । सिफारिश ।

अनुवाद—(पु०, स०) दोह-
राना । अनुमा ।—क = अनु
वाद करने वाला । अनुवादित
= अनुवाद किया हुआ ।

अनुशीलन—(पु० स०)
मनन । धार-धार अध्यास ।

अनुसन्धान—(पु० स०)

अनुसरण

- राज । केशिज ।—ना =
 योजना । सोचना । अनुमधि
 = मातरी यातचीत ।
 अनुसरण—(पु० स०) पीड़े
 चलना । नडल ।
 अनुसार—(क्रि० वि० स०)
 समान ।
 अनूठा—(वि० हि०) अनोखा ।
 अन्टा ।—पन = विविधता ।
 सुन्दरता ।
 अनेक—(वि० म०) बहुत ।
 अन्न—(पु० म०) अनाज ।
 —कू = अन्न वा ढर । एक
 उत्मन जो कार्तिक शुक्ल
 प्रतिपदा का होता है ।—गता
 = अन्न दान करनेवाला ।
 परवरिश करनेवाला ।—
 पूणा = अन्न की अधिष्ठात्री
 देवी ।—प्राशन = चढ़ान ।
 —मयकाश = स्थूल शरीर ।
 अन्य—(वि० स०) दूसरा ।
 —ञ = और भी । त = क्रिया
 और से । कहा और से ।
 —त्र = दूसरी अगद ।

- अन्यथा—(वि० स०) उल्टा ।
 मूठ ।
 अन्याय—(पु० स०) अनीति ।
 अधेर । अन्यायी = अनुचित
 काम करनेवाला ।
 अन्योक्ति—(स्त्री० स०) वह
 कथन निम्न मतलब कथित
 वस्तु के सिवा दूसरी वस्तुओं
 पर घटाया जाय ।
 अन्वेषक—(वि० स०) खोजने
 वाला ।
 अन्वेषण—(पु० स०) खोज
 अपंग—(वि० हि०) अगहीन
 लूला । असमथ ।
 अपकार—(पु० म०) बुराई
 अपकीर्ति—(स्त्री० स०)
 बर्णनामी ।
 अपनाना—(क्रि० हि०) अ
 वश में करना ।
 अपमंश—(पु० स०) पतन
 विगाद । विगडा हुआ शब्द
 अपमान—(पु० स०) अन
 वेद् जती ।—अपमानित
 घनादर किया हुआ ।

अपमृत्यु

अपमृत्यु—(पु० म०) धुममय
शय्यु ।

अपयश—(पु० म०) गुराई ।
फलक ।

अपरच—(अत्य० म०) फिर
भी ।

अपरपार—(वि० हि०) वेदद ।

अपगाय—(पु० म०) दाप ।
भूल । अपराधी = दोषी ।

अपरिमित—(वि० म०) वेहद ।
बहुत । अपरिमेष = बे
अदाग । अमध्य ।

अपवेशन—(पु० अ०) चीर-
पाइ ।

अपयांत—(वि० स०) जो पाक्री
ग हो । अपयाति = कमी ।

अपवाद—(पु० स०) निन्दा ।
गुराई । पाप । अपवादी =
गुराई करनेवाला ।

अपाहिज—(वि० हि०) लूला
लंगडा । जो काम ग कर
सक ।

अपील—(स्त्री० अ०) निवेदन ।
फिर विचार के लिये माथग ।

अपील = अपील करनेवाला
आदमी ।

अपूर्ण—(वि० म०) जो पूरा ग
हो । असमाप्त ।

अपूय—(वि० स०) जो प्रथम
न रहा हो । अलौकिक ।
उत्तम । —ता = आग्रापन ।
—विधि = उस वस्तुको प्राप्त
करने का तरीका जिसका ज्ञान
अल्प अथवा अनुमाग इत्यादि
प्रमाणों से ग होसके ।

अप्रजाशित—(वि० स०) अंधेरा ।
गुप्त । जो छापकर प्रचलित
ग गया था ।

अप्राप्य—(वि० स०) जो प्राप्त
न हासक ।

अप्रेत—(पु० अ० णमिल) अगरेजी
माइ जा ३० दिग का माना
गया है ।

अप्तरा—(स्त्री० स०) वेश्याओं
की एक जाति । स्वग की
वेश्या ।

अफगान—(पु० अ०) अफगा
निरतान का रहनेवाला ।

अफजू—(पु० फा०) अधिकता ।

अफमूँ

अफसूँ—(तु०) लालू टोना ।
मत्र-यत्र ।

अफयून—(स्त्री० फ०) अफीम ।
अफीमचा = अफीम का नशा
करने वाला ।

अफरीदी—(पु० अ०) पठानों
का एक जाति ।

अफलातून—(अ०) यूनान
का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जा
अरस्तू का गुरु था ।

अफगाह—(स्त्री० अ०) उदती
खबर । गण्य ।

अफजल—(अ०) कृपा करने
वाला । दान और आशिर्वाद
 देनेवाला ।

अफसर—(पु० अ० आफिपर)
प्रधात । हाकिम ।

अफसागा—(पु० प्रा०) डिस्मा ।

अफसुरना—(फा०) मुन्नावा
हुथा । दुःखित ।

अरुसास—(स्त्री० फा०) शोक ।
खेद ।

अफीडेविट्—(स्त्री० अ०
एफी-विट) शपथ ।

अरजरवेटरी—(स्त्री० अ०
शावजरवेटरी) वैद्यशाला ।

अरतर—(वि० फा०) घुरा । गिरा
हुथा । अरतरी = घटाव ।
रगयी ।

अरर—(पु० हि०) एक प्रकार
की धातु ।

अररी—(सजा स्त्री० फ्रा०) एक
प्रकार का चिकना कागज ।
पीते रंग का पत्थर ।

अरलक—(फा०) घोड़े की एक
जाति ।

अरलखा—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार का पत्थर ।

अरला—(स्त्री० स०) स्त्री ।

अरवाव—(पु० अ०) बड़
ज्यादा कर जो सरकार
मालगुजारी पर लगाती है ।

अरा—(पु० अ०) अगे के
घरावर का एक पहनावा ।

अरादान—(वि० अ०) बसा
हुथा ।

अराजाल—(स्त्री० फा०) काले
रंग की एक चिड़िया ।

अरीर—(पु० अ०) एक पुकन

जिस को होली पर इस्तेमाल
 किया जाता है। चुका।
 अरु—(स्त्री० फा०) भौं।
 अरुवा—(पु० फ्रा) बाप।
 अरुवास्त—(पु० अ०) एक प्रकार
 का पौधा।
 अरु—(पु० फा०) यादल।
 अभिनन्दन—(पु० स०) आनन्द।
 प्रशसा। उत्तेजना। अभिन-
 न्दनीय = प्रशसा के योग्य।
 अभिनदित = प्रशसित।
 अभिनय—(पु० स०) र्वग।
 नाटक का खेल।
 अभिन्न—(वि० स०) जो पृथक
 न हो। मिला हुआ।
 अभिप्राय—(पु० स०) मत
 लय।
 अभिभावक—(वि० स०)
 सपरस्त।
 अभिमान—(पु० स०) गर्व।
 अभिमानी = गर्व करनेवाला।
 घमडा।
 अभिप्रेरु—(पु० स०) दिङ्काव।
 मगल केलिये कुश या दूष से
 मग्न पड़कर जल धिक्कना।

अभीष्ट—(वि० स०) चाहा
 हुआ। पसंद का।
 अमचूर—(पु० हि०) फस्चे
 आम का चूर्ण।
 अमजद—(अ०) बड़े बूढ़े।
 गुरुजन।
 अमन—(पु० अ०) चैन।
 अमर—(वि० स०) जो मरे
 नहीं। देवता।
 अमराई—(स्त्री० हि०) धाम
 का धारा।
 अमरुत(द)—(पु० फा०) एक
 तरह का फल।
 अमलदारी—(स्त्री० अ०)
 अधिकार। रुहेलखट में एक
 प्रकार की फारसकारी।
 अमानत—(स्त्री० अ०) धरोहर।
 —दार = जिसके पास अमा-
 नत रखी जाय।
 अमरा—(पु० अ०) धाम। व्यव
 हार।
 अमाल—(पु० अ०) हाकिम।
 —नामा = एकरजिस्टर, जिस
 में कर्मचारियों की

अफसू

अफसू—(पु०) जादू टाना ।
मंत्र-यंत्र ।

अफसून—(स्त्री० प०) अफीम ।
अफीमचा = अफीम का नशा
फरने वाला ।

अफरीरी—(पु० अ०) पठानों
की एक जाति ।

अफलातून—(अ०) यूनान
का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जा
अरस्तू का गुरु था ।

अफनाह—(स्त्री० अ०) उड़ती
खबर । गप ।

अफजल—(अ०) कृपा करने
वाला । दान और आशिर्वाद
 देनेवाला ।

अफसर—(पु० अ० अफिपर)
प्रधान । हाकिम ।

अफमाता—(पु० प्रा०) त्रिस्ता ।

अफसुरदा—(फा०) सुर्माया
हुआ । दुःखित ।

अफमोम—(खा० फा०) शोक ।
खेद ।

अफीडेविट्—(स्त्री० अ०
अफीडेविट) शपथ ।

अत्ररवेदरी—(स्त्री० अ०
आत्ररवेदरी) वेधशाळा ।

अत्रर—(वि० फा०) घुरा । गिरा
हुआ । अत्ररी = घटाव ।
सरायी ।

अत्रक—(पु० हि०) एक प्रकार
का धातु ।

अत्री—(मञ्जा, स्त्री० फा०) एक
प्रकार का चिकना कागज ।
पीले रंग का पत्थर ।

अत्रक—(फा०) घोड़े की एक
जाति ।

अत्रक्या—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार का पत्थर ।

अत्रला—(स्त्री० स०) स्त्री ।

अत्रवाव—(पु० अ०) वह
ज्यादा धर जो सरकार
मालगुजारी पर लगाती है ।

अत्रा—(पु० अ०) अगे के
वरावर का एक पहनावा ।

अत्रदान—(वि० अ०) बस
हुआ ।

अत्राल—(स्त्री० फा०) का
रंग की एक चिड़िया ।

अत्रीर—(पु० अ०) एक सुक

- त्रिस के हाली पर इस्तेमाल किया जाता है । सुका ।
- प्रवरु—(स्त्री० फा०) भौं ।
- प्रवरा—(पु० प्रा०) बाप ।
- प्रवरास—(पु० अ०) एक प्रकार का पीधा ।
- प्रत्र—(पु० पा०) यादल ।
- प्रमिनन्दन—(पु० स०) आनन्द । प्रशमा । उत्तेजना । अभि न्दनीय = प्रशसा के योग्य । अभिनन्ति = प्रशसित ।
- प्रमिनय—(पु० स०) र्वांग । नाटक का खेत्त ।
- प्रमिन्न—(वि० स०) जो पृथक् न हो । मिला हुआ ।
- प्रमिप्राय—(पु० स०) मत लक्ष ।
- प्रमिभावक—(वि० स०) सरपरस्त ।
- प्रमिमान—(पु० स०) गव । अभिमानी = गव करनेवाला । घमडा ।
- प्रमिपेरु—(पु० स०) दिहकाव । मगल केलिये कुश या दूध से मत्र पड़कर
- अभीष्ट—(वि० स०) चाहा हुआ । पसंद था ।
- अमचूर—(पु० दि०) पत्थे धाम का चूर्ण ।
- अमज्जव—(अ०) बड़ बूढ़ । गुरजन ।
- अमन—(पु० अ०) धैर ।
- अमर—(वि० स०) जो मरे नहीं । देवता ।
- अमराई—(स्त्री० दि०) धाम का घास ।
- अमरुत(द)—(पु० पा०) एक तरह का फल ।
- अमलदारी—(स्त्री० अ०) अत्रिफार । रंजेलगढ़ में एक प्रकार की कारखाना ।
- अमानत—(स्त्री० अ०) धरोहर । —दार = जिसके पास अमानत रक्थो जाय ।
- अमल—(पु० अ०) धाम । व्यवहार ।
- अमान—(पु० अ०) दाकिम । —नामा = एक अत्रिफार में धर्मवारियों की स्त्री

रवाइयां दज की जाती हो ।

कम-पर ।

अम्मारी—(अ०) अम्मारी ।

हाथ का हौला ।

अमावट—(स्त्री० हि०) अम

क सुलाये रम का रोटा ।

अमीन—(पु० अ०) अदालत

का एक कमधारी ।

अमीर—(पु० अ०) सरदार ।

धनाध्य । उदार । अज्ञान

नरेश की उपाधि ।

अमृतदान—(पु० हि०) मिट्टा

का ऋद्धिदार बरतन ।

अमोनिया—(पु० अ०) एमो

निया, गैयादर ।

अमोलक—(वि० हि०) अमूल्य ।

अम्मामा—(पु० अ०) मुमल

मानों का साक्ष । अमाम

= अम्मामा ।

अम्र—(पु० अ०) मात ।

अम्हारी—(स्त्री० हि०) बहुत

छाटी छोटी वृत्तियाँ जो गर्मी

के दिनों में पसीने के कारण

होती हैं ।

अर्या—(वि० अ०) आदिर ।

रूप ।

अर्यानत—(स्त्री० अ०) सदायता ।

अर्यार—(अ०) चालाक

आदमी । चलता पुर्जा ।

अर्याका—(अ०) बिलासी ।

विषयी ।

अर्याल—(पु० स्त्री०) घोड़े

तथा मिहादि के गदन के

वाल ।

अर्यि—(आ० मं०) हे ।

अर्योग्य—(वि० मं०) जो योग्य

न हो । नालायक । नामुना

सिध ।

अरड—(स्त्री० हि०) हाँकिने

की छद्दा ।

अरक ताना—(पु० अ०) एक

अरक जो पुदीना और

सिरका मिलाकर निकाला

जाता है । अरक वादियान =

सौंरु का अर ।

अरगन—(पु० अ०) अरगन

एक अरगरेजी बाजा ।

अरगनाती—(पु० प्रा०) अर

रग । अरगनी ।

- अरगल—(पु० स० अर्गल)
व्याघ्र ।
- अरज—(स्त्री० अ० अर्जा) निवेदन ।
- अरथी—(स्त्री० हि०) टिपटी ।
विमान ।
- अरब—(पु० हि०) सौ परोड ।
घाघा । एर रेतीला मुक्क ।
- अरबी—(वि० फा०) अरब देश
का ।
- अरमनी—(पु० फा०) आरमे
गिराँ देश का निवासी ।
- अरमान—(पु० तु०) खालसा ।
- अरर—(अ० हि०) एक शब्द,
जो अचमे की दशा में निवाला
जाता है ।
- अरवा—(पु० हि०) बिना उवाले
हुये धान का चावल ।
- अरवी—(पु० हि०) एक कद ।
- अरवाव—(अ०) रथ का बहु
वचन । मालिक । इश्वर ।
- अरसा—(पु० अ०) समय । देर ।
- अरजाँ—(क्रा०) सस्ता । मदा ।
- अरज—(क्रा०) चौड़ाई ।
- अग्हर—(स्त्री० हि०) एक
अनाज । सूधर । ढाल ।

- अराक—(पु० अ०) अरब में एक
देश ।
- अरस्तू—(पु० यू०) यूना का
एक दार्शनिक विद्वान् ।
- अराजक—(वि० स०) जहाँ राजा
न हो । —ता = प्रशाति ।
- अरारुट—(पु० अ० एरोम्ट) एक
पौधा, जो दूसरे देश से भारत
में आया है ।
- अरी—(अ० स्त्री०) हे । सरोधना
थक आरय ।
- अरोचक—(पु० स०) एक
राग जिस में अक्षर आदि का
स्वाद नहीं मिलता ।
- अरोडा—(पु० हि०) पनाच में
एक जाति ।
- अर्क—(पु० स०) सूर्य ।
मदार ।
- अर्ज—(पु० अ०) विनती ।
—दारत = निवेदन-पत्र ।
अर्जाँ = निवेदन पत्र । अर्जाँ-
टावा = वह प्रार्थना पत्र जो
दीवानी या माल के मुहकमे
में दिया जाय ।

अर्थ—(पु० स०) शब्द का अभिप्राय । मतलब । काम । निमित्त । सपत्ति । —सचिव = अथ-मन्त्री ।

अर्थ-शास्त्र—(पु० स०) यह शास्त्र जिसमें धन की प्राप्ति और रक्षा का उपाय बतलाया गया हो ।

अर्थात्—(अ० स०) यानी ।

अर्थी—(वि० हि०) इच्छा रखने वाला । शर्मी । मुद्दई । दास । धनाढ्य ।

अर्द्धाङ्गिणी—(स्त्रा० सं०) पत्नी ।

अर्ल—(अ०) इगर्बड का एक उपाधि ।

अरिटिमेंटम—(अ०) अतिम सूचना ।

अर्पाचीन—(वि० सं०) आधुनिक । नया ।

अलमार—(पु० स०) गहना ।

शब्द तथा अर्थ की यह युक्ति जिससे काव्य की शोभा हो ।

अलवृत्त = गहना पहना हुआ ।

सजाया हुआ । अलकारयुक्त ।

अलग—(पु० हि०) धोर ।

अलवतरा—(पु० हि०) पाथर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ पदार्थ ।

अलग—(वि० हि०) जुदा ।

अलगनी—(म्त्री० हि०) अरगनी ।

अलगरजी—(वि० अ०) वेपरवा ।

अलगरज—(अ०) निदान ।

अतिम कथन । भावार्थ ।

अलत्रिस्मा = अलतारज्ञ ।

अलगाना—(क्रि० स० हि०)

अलग करना । दूर करना ।

अलगोजा—(पु० अ०) एक प्रकार की चाँसुरी ।

अलपाका—(पु० स्पे०) ऊँट के जैसा एक जानवर । अल

पाका का ऊन ।

अलफ—(पु० अ० अलिक्र)

घोड़े का आगे के दोनों पाँव उठाकर पिङ्गली टाँगों के बल खड़ा होना ।

अलवत्ता—(अ० अ० अ०) बेशक !

बहुत ठीक । लेकिन ।

अलवम—(पु० फ्रा०) तसवीर रखने की एक किताब ।

अलपेला—(वि० द्वि०) घनाटना ।

घनोपा । ये परवाह ।

अलम—(पु० अ०) दुग्ध । ऋद्ध ।

अलमनक—(पु० अ०) र्ध्वरेणो
दग का पत्रा ।

अलमस्त—(वि० प्रा०) मत-
वाला । योगम ।

अलमारी—(स्त्री० पु०) एक
प्रकार का लडा सन्दूष ।

अललटप्पू—(वि० देश०) ये
ठिकाने का ।

अलपान—(पु० अ०) ऊनी चादर ।

अलताफ—(अ०) लृप्त का
बहुवचन । कृपा । दया ।

अला—(अ०) ऊपर ।

अलसी—(स्त्री० द्वि०) तीसी

अलहदा—(वि० अ०) अलग ।

अलानिय—(अ०) दके की
घोट । सुल्लमसुल्ला ।

अलापना—(क्रि० अ० द्वि०)
गाना । तान लगाना ।

अलामत—(पु० अ०) निशानी ।

अलाव—(पु० द्वि०) भाग का
वेर ।

अलावा—(क्रि० अ०) सिवाय ।

अलील—(वि० म०) बीमार ।

अलुमीनम—(पु० अ०) एक
प्रकार की धातु ।

अलोता—(वि० द्वि०] विना
नमक का । प्रीका ।

अलौकिक—(वि० स०) जो इस
लोक में न दिखाई दे ।
अच्युत ।

अल्पवयस्व—(वि० सं०) थोड़ी
उम्र का । अरपायु = थोड़ी
आयुवाला ।

अल्लमगल्लम—(पु० अ०)
शद्वद ।

अलहड—(वि० द्वि०) मनमौजी ।
विना अनुभव का । उजडू ।
गँवार । —पन = वेपरवाही ।
लक्षपन । अनाड़ीपन ।

अवकाश—(पु० स०) स्था ।
आकाश । अतर ।

अवगुण—(पु० स०) दोष ।
पुराई ।

अवतरण—(पु० स०) नकल ।

अवतार—(पु० स०) जन्म ।
शरीर रचना । अवतारी =
अलौकिक ।

- अप्रप्र—(पु० द्वि०) एक एक
त्रिमूर्ती साधना अथवा
था ।
- अप्रनत—(वि० स०) नाथा ।
पतित । अवनति = हान
परा । मुक्ता ।
- अप्रयय—(पु० म०) गग । अग ।
अयया = अगा । सनूचा ।
- अप्रगोध—(पु० म०) दृष्टाप्रद ।
घेर लना । यद करना ।
—क = रोपन वाला । अथ
रोधित = रोका हुआ ।
- अप्रलय—(पु० म०) आधार ।
—न = महाग । —ना =
अवलवन करना । अथ
लपित = आधित । निभर ।
- अप्रलेह—(पु० स०) अग्नी ।
- अप्रशिष्ट—(वि० म०) अथा
हुआ । अवशेष = बचा हुआ ।
- अप्रसर—(पु० स०) समय ।
पुरमत । —शस = धाम से
छुटी ल लेनेवाला ।
- अप्रस्था—(स० स्त्री० म०) दशा ।
समय । उग्र । स्थिति ।
- अप्रस्थिति—(स्त्री० स०) स्थिति ।
- अप्रहेलता—(पु० म०) आग
ग मानता । अथवा । वेद
वादी ।
- अप्राण—(वि० द्वि०) सुप ।
चक्रित ।
- अप्रविनय—(पु० म०) शिष्ट ।
- अप्रविनीत—(वि० म०) जो
विनीत न हो । सरकर ।
हुय । अविनागा = कुलगा ।
यदगलन स्त्री ।
- अप्रिम्त—(वि० स०) निरंतर ।
लगा हुआ ।
- अप्रिगम—(वि० स०) दिना
विधाम लिय हुआ । अगाता ।
- अप्रियय—(पु० म०) अज्ञान ।
अन्याय । —सा = अज्ञा
नता । अविपरी = अज्ञानी ।
अविचारा । मूर्ख ।
- अप्रिष्टवाम—(पु० स०) वि
रवास का अभाय । अत्रिय
सनीय = जो विष्टवाम योग्य
न हो ।
- अप्रितनिक—(वि० स०) जो विना
तादृशह के काम करे ।
धौतरेरी ।

अव्यय—(वि० स०) जो रचने न हो। सदा एकरस रहने वाला। परब्रह्म। व्याकरणानुसार एक शब्द। अव्ययीभार = समास का एक भेद।
 अव्यवसाय—(पु० स०) उद्यम का कर्म। अव्यवसायी = उद्यमहीन। आलसी।
 अव्यवस्था—(स्त्री० स०) नियम का न होना। मर्यादा का न होना। गडबड़। अव्यवस्थित = बेमर्यादा। बे ठिकाने का। चंचल।
 अव्यय—(वि० अ०) पहिला। उत्तम।
 अराजुन—(पु० स०) बुरा शत्रुन।
 अशरफी—(स्त्री० पा०) सोने का एक पुराना सिक्का जो प्राय १६) का होता था।
 अशिया—(अ०) चाड़।
 अशराफ—(वि० अ०) शराफ। भला मनुष्य। अशराफ = बहुत भला मानस। बड़ा युजुगं।
 अशशर—(अ०) बहुत मो शेरें।

अशशास्—(अ०) शशा का जमा। बहुत से शादमी।
 अशात—(वि० स०) जो शात न हो। चंचल। अशाति = चंचलता। हलचल।
 अशिक्षित—(वि० स०) बेपढ़ा लिखा। गँगर।
 अशिष्ट—(वि० स०) असभ्य। बेहूदा। —ता = असभ्यता। डिठाई।
 अश्लील—(वि० स०) गदा। —ता = गदापन।
 अश्वमेध—(पु० स०) एक बड़ा यज्ञ जिसमें दिग्विजय के लिये घोड़ा छोड़ा जाता है।
 असभव—(वि० स०) जो न हा सके। नामुमकिन।
 असास—(अ०) जड़। बुनियाद।
 असातीर—(अ०) कदापियाँ। त्रिस्ने।
 अस्प—(पु० क्रा०) घोड़ा।
 अश्व—(का०) शॉस्।
 असभ्य—(वि० स०) गँगर। —ता = गँगरपन।

असमजस—(पु० म०) भागा
पीछा । कग्निर्ह ।

असर—(पु० थ०) प्रभाव ।
दिन का चौथा पहर ।

असरार—(त्रि० रि० हि०)
लगातार ।

असल—(वि० थ०) गरा ।
शुद्ध । असलियत = बुनिपाद ।
सार । अमला = सचा ।
शुद्ध । अम्ल = मूल । बीज ।

अम्ला—(थ०) कदापि ।

असहयोग—(पु० सं०) सरकार
के साथ मिलकर काम न करने
का सिद्धांत । तर्कमवादात ।
नान-बोधापरशन ।

असहनशील—(वि० सं०)
जिसमें सहन करने की शक्ति
न हो । चिड़चिड़ा । —ता =
सहने का शक्ति का अभाव ।
असहिष्णु = जो न सह सके ।
असह्य = न सहने योग्य ।

असहाय—(त्रि० सं०) जिसे
कोई सहारा न हो । अनाथ ।

अमा—(पु० थ०) सोंटा ।

असाढ़—(पु० हि०) वर्ष का

चौथा महीना । अमादी = जो
फरस्र असाढ़ में बोह जाय ।

असामयिक—(वि० म०) जो
समय पर न हो । अवेक ।

अनामान्य—(रि० म०) असा
धारण ।

असामी—(पु० थ०) भाखी ।
जिससे किसी प्रकार का लोदेन
हो । कारतकार । देनदार ।
अपराधी । जिसमे किसी प्रकार
का मतलब गाँठना हो ।

असालतन—(त्रि० वि० थ०) स्वयं ।

असीर—(प्र०) अँदी । बन्दी ।

असावधान—(रि० सं०) जो
सावधान न हो । —ता = बेपर
वाही । असावधानी = खेल्बरो ।

असिस्टेंट—(वि० थ०) सहायक ।

असुर—(पु० सं०) राक्षस । नीच
काम करने वाला आदमी ।

असेसमेंट—(थ०) जमीन के
लगान का बन्दोबस्त ।

असेसर—(पु० थ०) वह आदमी
जो फौजदारी के मामले में
जज का राय देने के लिये
चुना जाता है ।

असोसियेशन—(पु० अ०)
समिति ।

अस्तबल—(पु० अ०) धुदसाल ।

असहाव—(अ०) माइय का
बहुबचन ।

अस्तर—(पु० फा०) नीचे की
तह ।

अस्तकारी—(स्त्री० फ्रा०) चूने
की लिपाईं । पलस्तर ।

अस्तु—(अव्य० स०) जो हो ।
गौर । अच्छा ।

अस्तुरा—(पु० फा०) बाल
बनाने का छुरा ।

अस्त्र—(पु० स०) फेंककर
चलाया जाने वाला हथियार ।

अस्त्रचिकित्सा—(स्त्री० स०)
वैद्यक-शास्त्र का यह हिस्सा
जिसमें चीरफाड़ का रोग
थतलाया गया हो । जरांही ।

अस्थि—(स्त्री० स०) हड्डी ।
—सचय = भस्मात के बाद
की एक क्रिया, जिसमें जलने
से बची हुई हड्डियाँ एकत्र की
जाती हैं ।

अस्थिर—(वि० स०) जो स्थिर

न हो । जिसका कुछ ठीक न
हो ।

अस्पताल—(पु० अ०) हौस्पि-
टल । दवाप्राना ।

अस्थाभाविक—(वि० म०) जो
स्थाभाविक न हो, बनावटी ।

अस्वीकार—(स०, पु० स०)
इन्कार । अस्वीकृत = नामजूर
क्रिया हुआ ।

अहक—(पु० हि०) इच्छा ।

अहकाम—(पु० अ०) नियम ।
आज्ञायें ।

अहवाच—(पु० अ०) हवीय
का बहुबचन । मिश्रण ।

अहतमाल—(अ०) खतरा ।

अहसन—(अ०) बहुत नेक ।

अहकर—(अ०) अति तुच्छ ।

अहल—(अ०) घर के जोग ।
मालिक । योग्य ।

अय्याम—(अ०) यौम का
बहुबचन । दिन । रोज ।

अहद—(पु० अ०) प्रतिज्ञा ।
—नामा = प्रतिज्ञापत्र । सुलह-
गमा ।

सू

- सू—(पु० हि०) आँसु के भीतर का पानी ।
- आइन्दा—(वि० फा०) घाने वाला । घाने । फिर ।
- आइन—(पु० फा०) नियम । कानून ।
- आइना—(पु० फ०) दर्पण ।
- आउस—(पु० अ०) एक र्थग रेज़ी पैमाना । यह दो प्रकार का होता है एक ठोस वस्तुओं के तोलने का, दूसरा द्रव पदार्थों के नापने का ।
- आउट—(वि० अ०) रोज़ में हारा हुआ । बाहर ।
- आकृत—(स्त्री० अ०) मरने के पीछे की दशा ।
- आकर—(पु० सं०) खानि । खज़ाना ।
- आकण—(पि० सं०) कान तक फैला हुआ ।
- आकषक—(पि० सं०) खींचने वाला । खिंचाव । आकषण शक्ति = खींचनेवाला शक्ति । आकर्षित = खींचा हुआ ।
- आस्मिक—(वि० सं०) जो

बिना किसी कारण के हो । अचानक होनेवाला ।

आकाशा—(स्त्री० सं०) इच्छा । आकाशी = इच्छा करनेवाला ।

आका—(पु० अ०) मालिक । धनी ।

आकार—(पु० सं०) स्वरूप । सुरत । वृद्ध । घनावट । निशान । चेत । बुलाग ।

आकाश—(पु० सं०) आसमान । वह स्थान जहाँ हवा के अति रिक्त कुछ भी न हो । शून्य स्थान । —कुसुम = आकाश का फूल । अनहोनी बात । —गगा = बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह, जो आकाश में उत्तर दक्षिण फैला है । —वृत्ति = अति रिचत जीविका ।

आकिल—(वि० अ०) बुद्धिमान ।

आकिल = बुद्धिमती स्त्री ।

आकुल—(वि० सं०) घबराप हुआ । कातर । व्याकुल ।

—ता = घबराहट ।

आवृत्ति—(स्त्री० सं०) घनावट

आकृष्ट—(वि० स०) खींचा हुआ ।
 आक्रमण—(पु० स०) हमला । घेरना । आक्रांत=जिस पर आक्रमण किया गया हो । विरो हुआ । विवश ।
 आक्षेप—(पु० म०) दोष लगाना । निंदा । —क=फेंकनेवाला । निन्दक ।
 आफ्लाइट—(पु० अ०) मोरचा ।
 आक्सिजन—(पु० अ०) एक प्रकार की गैस ।
 आवृत्ता—(वि० फा०) बधिया ।
 आखिर—(वि० क्र०) अन्तिम । नतोजा । रौर । —कार=अंत में । आखिरी=सबसे पिछला ।
 आखिरत—(अ०) परिणाम । अन्त । क्रयामत ।
 आखेट—(पु० स०) शिकार ।
 आखोर—(पु० प्रा०) कूड़ा-करकट । सबी-गली चीज़ ।
 आख्यात—(पु० म०) वृत्तान्त । कथा । उपवास्य का एक मेद ।

—क=बयान । कहानी । पूरा वृत्तान्त । आख्यायिका=हिस्सा । उपदेशप्रद कल्पित कथा ।
 आगंतुक—(वि० स०) जो आये । आगत=आया हुआ ।
 आग—(स्त्री० द्वि०) तेज । जलन । राह । अग्नि ।
 आगा—(तु०) मालिक । साहब । प्रतिष्ठित । बड़ा भाई ।
 आगाज—(फा०) प्रारम्भ । शुरू ।
 आगत स्वागत—(पु० स०) आदर सत्कार ।
 आगम—(पु० सं०) अवाई । आनेवाला समय । होनहार । —न=अवाई । प्राप्ति । —सोच=आगे का भला पुरा सोचनेवाला । —वत्ता=भविष्यवत्ता । —विधा=भविष्य की बात बताना ।
 आगापीछा—(पु० द्वि०) दिक्क । नते जा ।
 आगार—(पु० सं०) घर । जगह । प्रज्ञाता ।

श्रागाह

श्रागाह—(फा०) परिचित ।

खबरदार ।

श्राघात—(पु० स०) ठाकर ।

मार । चाट ।

श्राचमन—(पु० स०) शुद्धि

के लिये मुँह में जल
लेना ।श्राचरण—(पु० स०) चल
चलन । व्यवहार ।

श्राचार—(पु० स०) चलन ।

चरित्र । शील । सफाई ।

—वान = सफाई से रहने
वाला । श्राचारा = श्राचार
वान ।

श्राचाय—(पु० स०) गुरु । वेद

पढ़ानेवाला । पूष । ध्या

पक । वेद का भाष्यकार ।

श्राचाय = श्राचार्य का
श्रो ।

श्राज—(त्रि० त्रि० हि०) जा

दिनबीत रहा है । इन

दिनों । —कन = इन दिनों ।

श्राजन्म—(त्रि० त्रि० स०)

जीवन भर ।

श्राजमाइरा—(स्त्री० प्रा०)

परल । श्राजमाना = परलना ।

श्राजमूदा = श्राजमाया हुआ ।

श्राजा—(पु० हि०) पितामह ।

दादा ।

श्राजाव—(वि० प्रा०) स्वतंत्र ।

नेरवाह । स्वाधीन । निर्भय ।

उद्धत । श्राजादी = स्वार्थी

नता ।

श्राजार—(पु० प्रा०) रोग ।

श्राजमा—(फा०) श्राजमाने

वाला । परीक्षा करनेवाला ।

श्राजमद्—(प्रा०) लालची ।

लोभी ।

श्राजिज—(वि० अ०) जन

तग । श्राजिजी = दीनता ।

श्राजीवन—(त्रि० त्रि० सं०)

जिन्दगी भर ।

श्राजाविका—(स्त्री० सं०) रोज

श्राजुर्दगी—(स्त्री० प्रा०) र

श्राजुदा = हुआ ।

श्राज्ञा—(स्त्री० सं०) हुष

यनुमति । —कारी =

माननेवाला । दास । —प

हुषमनामा । —पाल

श्रापानुसार काम क

—भग=श्राद्ध न मानना ।

—नुती=पमासदार ।

श्राद्ध—(पु० हि०) पितृ ।

श्राद्धोक्त—(अ०) निरकुश राजा

या स्वेच्छाचारी शम्भक ।

श्राद्धोक्ती=स्वेच्छाचारिता ।

श्राद्धम्बर—(पु० स०) तद्वत्

भङ्ग । डोंग । श्राद्धम्बरी=

श्राद्धम्बर करनेवाला ।

श्राद्ध—(स्त्री० हि०) परदा ।

श्राद्धा—(पु० हि०) एक धारी

दार फगड़ा । शहतीर । तिर्था ।

श्राद्धत—(स्त्री० हि०) किसी

व्यापारी का माल रख कर

तुड़ कमीशन लेकर उसको

बिकवा देने का कार्य । जहाँ

श्राद्ध का माल रहता है ।

श्राद्ध—(पु० म०) रोष । भय ।

श्राद्धतायी—(पु० स०) धाग

लगानेवाला । विप देनेवाला ।

जो शस्त्र लेकर मारने को

तैयार हो । धन हरनेवाला ।

स्त्री हरनेवाला ।

श्राद्धशक—(स्त्री० क्रा०) गर्मी

का रोग ।

श्राद्धशज्जा—(स्त्री० क्रा०)

धाग लगाने का काम ।

श्राद्धशदाग=चोरखी । श्राद्धश

परस्त=धमिन की पूजा करने

वाला । पारसी । श्राद्धशभाज

श्राद्धशभाजा बनाएवाला ।

श्राद्धशभाजा=वारुदक का

दुध तिलोना के जलने का

द्वय । श्राद्धिश=धाग । तेज ।

गुस्मा ।

श्राद्धज्ञान—(पु० म०) अपने

की जागरण । श्राद्धज्ञ=जो

अपने को जान गया हो ।

श्राद्धजिज्ञासा=अपने को

जानने की इच्छा । श्राद्ध

जिज्ञासा=अपने का जानने

की इच्छा रखने वाला ।

श्राद्धमत्याग—(पु० स०) दूसरों

के हितार्थ अपना स्वार्थ

छोड़ना । श्राद्धनिवृत्त=

अपने आप को अपने इष्ट देव

पर चला देना । श्राद्धलोक=

अपनी रक्षा करने वाला ।

श्राद्धविद्या—(स्त्री० स०) ब्रह्म-

विद्या ।

आत्म-श्लाघा

आत्मश्लाघा—(पु० स०) अपनी तारीफ़ ।

आत्महत्या—(स्त्री० स०) अपने को मार डालना । अपने को अपने ही से दुःख देना । आत्मा को दुःखी रखना ।

आत्मानुभव—(पु० स०) अपना तजर्बुहा ।

आत्माभिमान—(पु० स०) मानापमान का ध्यान । आत्माभिमानि—जिसको अपने मानापमान का ध्यान हो ।

आत्मावलम्बी—(पु० स०) जो किसी काय के बिये दूसरे की सहायता का भरोसा न रखे ।

आत्मिन्—(वि० स०) आत्मा-सम्बन्धी । अपना । मानसिक । आत्मीय—अपना । रिश्तेदार । आत्मीयता—मैत्री ।

आत्मीत्सग—(पु० स०) परोपकार के लिये अपने को दुःख में डालना ।

आदत्—(स्त्री० अ०) स्वभाव । देव ।

आदम—(पु० अ०) अरबी लेखकों के अनुमार मनुष्यों का आदि पिता । आदम की सन्तान ।—जाद = आदम की सन्तान । मनुष्य । आदमी = आदम की सन्तान । मनुष्य । आदमियत = इंसानियत । मानवता ।

आदमी—(पा०) आदम की सन्तान ।

आदर—(पु० सं०) सत्कार ।—शीघ्र = आदर करने के योग्य ।

आदर्श—(पु० स०) दर्पण । टीका । नमूना ।

आदान प्रदान—(पु० स०) लेना देना ।

आदि—(वि० स०) प्रथम आरम्भ । इत्यादि । यगौरह ।

आदिम—(वि० स०) पहले का

आदिल—(वि० पा०) न्यायी

आदी—(वि० अ०) अग्र्यस्त ।

आदेश—(पु० स०) आज्ञा उपदेश ।

आद्यत—(स०) आदि से अन्त

आघोपात—शुरू से आखिर तक ।
 श्राघा—(वि० हि०) किसी चीज़ के दो बराबर भागों में से एक ।
 श्राधार—(पु० स०) सहारा । पात्र । मूल ।
 श्राघासीसी—(स्त्री० हि०) आधे सिर की पीड़ा ।
 श्राधिपत्य—(पु० स०) अधिकार ।
 श्राधिभौतिक—(वि० स०) जीव या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त ।
 श्राधुनिक—(वि० स०) हाल का । नया ।
 श्राभ्यात्मिक—(वि० स०) आत्मा सम्बन्धी ।
 श्रानन्द—(पु० स०) प्रसन्नता । सुख । श्रानन्दित=सुखी ।
 श्रानतान—(स्त्री० हि०) ये सिर पैर की यात ।
 श्रानन फानन—(क्रि० वि० अ०) झटपट ।

श्रानवान—(स्त्री० हि०) ठाटयाट । ठसक ।
 श्रानर—(पु० अ०) प्रतिष्ठा । श्रानरेशुज=माननीय ।
 श्रानरेरी—(वि० अ०) अत्रै-सन्निक ।
 श्राना—(पु० हि०) धार वैसा । प्रारम्भ होना । किसी भाग का उत्पन्न होना ।
 श्रानाकानी—(स्त्री० हि०) हीला हवाला ।
 श्रानुपगिष—(वि० स०) बड़े काम के घलुये में हो जाने वाला कार्य ।
 श्रान्वीक्षिकी—(स्त्री० स०) आत्मविद्या । तर्कविद्या ।
 श्राप—(सव० हि०) स्वयं ।
 श्रापत्काल—(पु० स०) विपत्ति । कुसमय । श्रापत्ति=दुःख । सकट । षष्ट का समय । दोषारोपण । एतराज । श्रापद्=श्रापत्ति । विघ्न । श्रापदा=दुःख । सकट । जीविका का कष्ट । श्रापद्म=वह धम

श्रामना श्रामना

व्यापार की वस्तु जो दूसरे देशों से अथवा देश में आये।

—रस्त = आना जाना।

श्रामना श्रामना—(पु० हि०) मुद्राबन्धा।

श्रामन श्रामने—(त्रि० वि० हि०) एक दूसरे के समान।

श्रामरण—(त्रि० वि० स०) मृत्यु समय तक।

श्रामयत—(पु० स०) एक रोग जिसमें आँव गिरता है और जोड़ों में पादा तथा पैर में सूजा हो जाता है।

श्रामातिसार—(पु० स०) आँव। मुरडे के दस्त।

श्रामादा—(वि० पा०) तैयार। तैयार।

श्रामाल—(पु० अ०) करनी।

श्रामालनामा—(पु० अ०) वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के घालघलन और कार्य करने की योग्यता आदि का विवरण रहता है।

श्रामाशय—(पु० स०) पेट के

भातर का वह धैला जिसमें आये न्युये पदाय दृक्छे होने और पघते है।

श्रामान—(फा०) गृहण। घरम।

श्रामाहल्दी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का गंधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह होती है।

श्रामिल—(पु० अ०) काम करनेवाला। कतय-परायण।

कमधारी। हाकिम। मिद्ध

श्रामीन—(वि० अ०) तथागु। मगजान ऐसा ही करे।

श्रामूदा—(पा०) सना हुआ। आरास्ता।

श्रामेज—(वि० पा०) मिठा हुआ। श्रामेजिश = मिठावट।

श्रामागता—(पु० क्रि०) उद्धरणी।

श्रामोद—(पु० स०) आनन्द। दिलबहलाव। —प्रमोद = मोग विलास। श्रामादित = प्रसन्न।

श्राय—(स्त्री० स०) श्रामदनी।

आयत—(वि० स०) विनृत ।
 (अ०) कुरान का वाक्य ।
 आयद—(वि० अ०) जगाया
 हुआ ।
 आयव्यय—(पु० स०) जमाग्रथ ।
 आमदनी और म्रच ।
 आया—(क्रि० अ० हि०) घाटा
 का भूतवातिक रूप ।
 आयात—(पु० स०) वह वस्तु या
 माल जो व्यापार के लिये
 विदेश से अपने देश में लाया
 या मँगाया गया हो ।
 आयास—(पु० स०) मेहनत ।
 आयु—(स्त्री० स०) उम्र ।
 आयुध—(पु० स०) हथियार ।
 आयुर्वेद—(पु० स०) चिकित्सा
 शास्त्र ।
 आयुष्मान—(वि० स०) चिर
 जीवी ।
 आयुष्य—(पु० स०) उम्र ।
 आयोजन—(पु० स०) प्रबंध ।
 उद्योग । सामान ।
 आयोजित—(वि० स०) ठीक
 किया हुआ ।
 आरम्भ—(पु० स०) उपान ।

आरचेष्टा—(पु० अ०) थियेटर
 यादि में धँठकर धाजा पजाने
 वालों का दल ।
 आग्जा—(पु० अ०) योमारी ।
 आरजू—(स्त्री० फा०) इच्छा ।
 विनय । —मद = इच्छुक ।
 आरिज—(अ०) उद्यति-
 गीज । प्रगतिशील ।
 आरती—(स्त्री० हि०) किसी
 मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाना ।
 आरपार—(पु० हि०) यह तट
 और वह तट ।
 आरफनेज—(पु० अ०) अना-
 धालय ।
 आरज—(पु० स०) शब्द ।
 आहट ।
 आरसी—(स्त्री० हि०) दण्ड ।
 एक गहना जिसके स्त्रियाँ
 दाहिने हाथ के थँगूठे में
 पहनती हैं ।
 आरा—(पु० स०) लोहे की
 दाँतीदार एक पट्टी जिससे
 रेतकर लकड़ी खीरी जाती है ।
 सुवारी ।
 आराइश—(स्त्री० फा०) सजा

आर्हरी—(वि० अ०) आर्ह
सम्बन्धी । आर्ह का ।

आर्हिनरी—(वि० अ०) मामूली ।

आर्हिनैस—(पु० अ०) अस्यायी
व्यवस्था या कानून ।

आर्थोडाक्स—(वि० अ०)
पट्टर । सनातनी ।

आर्म—(पु० अ०) हथियार ।

आर्म पुलिस—(स्त्री० अ०) हथि
वार-युद्ध पुलिस ।

आर्मडंकार—(पु० अ०) पट्टर
नार गाड़ी ।

आर्मी—(स्त्री० अ०) श्रौज ।
सेना ।

आर्त्त—(वि० स०) पीड़ित ।
दुखी । अस्वस्थ । —ताद =

दुःख-सूचक शब्द । —स्तर

= दुःख सूचक शब्द । आर्त्ति

= पीड़ा । दुःख ।

आर्थिक—(वि० स०) धन
सम्बन्धी ।

आर्थ्य—(वि० स०) श्रेष्ठ । बड़ा ।
मान्य । —समाज = श्रेष्ठ

समाज, जिसके सस्थापक

स्वामी दयानन्द थे ।

आर्या—(स्त्री० सं०) दासी ।

आर्यावर्त्त—(पु० सं०) आर्यों
का देश । उत्तरी भारत

जिससे उत्तर में हिमा
लय, दक्षिण में विष्णुपर्वत,

पूर में बंगाल की खाड़ी और
पश्चिम में अरब सागर हैं ।

आर्लंमारिय—(वि० सं०) अल-
कार युक्त । अलकार जाने
वाला ।

आल—(पु० सं०) इस्ताल ।
(फा०) खालसा । खोमा ।

एक प्रकार की मदिरा ।
(अ०) सन्तान । विरोपकर

पेटी की थीलाद ।

आलपीन—(स्त्री० पुस्त०) एक
घुंभीदार सूई जिसे अँगरेजी

में पिन कहते हैं ।

आराम—(पु० अ०) दुनिया ।
अवस्था । बड़ी जमात ।

आलमनक—(पु० पुस्त०) पचास ।

आलमारी—(स्त्री०) आलमारी ।

आलस—(वि० सं०) सुस्ती ।
आलसी = सुस्त । आलस्य =
सुस्ती ।

आलाइश

आलाइश—(स्त्री० फ्रा०) गद्दी वस्तु । घाव वा गदा खून पीनादि । पेट के भीतर की अतडा आन्ति ।

आलात—(ध०) श्रौजार । हथियार तोहे का ।

आलाप—(पु० स०) बातचीत ।
—क = बातचीत करनेवाला ।

आलिगन—(पु० स०) गले स लगाना ।

आलिम—(वि० ध०) पढित । गुना ।

आलीजाह—(वि० ध०) ऊँचे दर्जे का । आलाहज़रत = महिमा मय । बडे मतये का आदमी ।

आलीशान—(रि० ध०) भद्र कीजा । विशाल ।

आलू—(पु० हि०) एक प्रकार का कद्द ।

आलूचा—(पु० फ्रा०) एक पेड़ ।
आ नुब्वारा = आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल ।

आनूदा—(फ्रा०) लिपटा हुआ ।
लिपटा हुआ ।

आलूशफनालू—(पु० हि० + फ्रा०) लडकों का एक खेल ।

आलोक—(पु० स०) प्रकाश । चमक । आलोचना = गुण-रोप निरूपण । आलोचित = विचार किया हुआ ।

आरहा—(पु० देश०) ३१ मा-घ्राष्ट्रों के एक छुद का नाम जिस वार छुट भी कहते हैं । महोत्सव के एक पुरप का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था । बहुत लम्बा चौड़ा वणन ।

आवभगत—(पु० हि०) आदर-सकार ।

आवरण—(पु० स०) ढकना । बैठन । परदा । अज्ञान ।
—पत्र = कवर ।

आवदा—(वि० फ्रा०) लाया हुआ । कृपा पात्र ।

आवश्यक—(वि० स०) जरूरी । काम का । —ता = जरूरत । मतलब । आवश्यकीय = जरूरी ।

आवागमन—(पु० हि० स०)

आना जाना । जान और
मरण ।

आवाज—(पु० प्रा) जनि ।
बोली । ऋषीरों या सौदा
बेचनेवालों की पुकार ।
आवाजा = ताना ।

आवाजाही—(स्त्री० हि०) आना
जाना ।

आवाग—(पा०) चरित्रहीन ।
निकम्मा ।

आवारगी—(स्त्री० क्रा०)
आवारापन । आवारा =
निकम्मा । उठखलू । आवारा-
गद = निकम्मा । आवारागदी
= व्यथ इधर उधर घूमना ।
बदमाशी ।

आवाहन—(पु० स०) मंत्र द्वारा
किसी देवता का बुलाने का
कार्य । बुलाना ।

आविर्भाव—(पु० स०) प्रकाश ।
उत्पत्ति । आविर्भूत = प्रक-
टित । उत्पत्त ।

आविष्कर्त्ता—(वि० स०) आ
विष्कार करनेवाला । आ
विष्कार = इजाद । किसी तत्व

का सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्त
करना । आविष्कारक = आवि-
ष्कर्त्ता । आविष्कृत = प्रकटित ।
पता लगाया हुआ ।

आवृत्त—(वि० स०) द्विपा
हुआ । लपेटा हुआ । घिरा
हुआ ।

आवृत्ति—(स्त्री० स०) बार बार
किसी बात का अभ्यास ।
पाठ काग ।

आवेग—(पु० स०) झोंक ।

आवेदक—(वि० स०) निवेदन
करनेवाला । आवेदन =
निवेदन । आवेदन-पत्र =
चर्जी ।

आवेश—(पु० स०) प्रवेश ।
झोंक ।

आशका—(स्त्री० स०) डर ।
सदेह ।

आशकार—(पा०) प्रकट ।
ज्ञाहिर । खुला होना ।

आशाना—(क्रा०) जिससे जान-
पहचान हो । प्रेमी । प्रेम-
पात्र । —ई = जान पहचान ।
प्रेम । अनुचित सम्बन्ध ।

आशय—(पु० सं०) मतलब ।
 इच्छा । आधार ।
 आशा—(स्त्री० सं०) अप्राप्त के
 पान की इच्छा और थाहा
 बहुत निरचय ।
 आशिक—(पु० अ०) प्रेम करने
 वाला मनुष्य । अनुरक्त पुरुष ।
 आशिकाना = आशिकों की
 तरह का ।
 आशियाँ, आशियाना—(पु०
 प्रा०) घोंमला । झोपड़ा ।
 आशुक्ला—(पा०) परेशान ।
 —आशुप्रतगा = परागना ।
 हाल बेहाल ।
 आश्चर्य्य—(पु० म०) अचभा ।
 विस्मय । अचरन ।
 आश्रम—(पु० सं०) तपोवन ।
 कुटी या मठ । रहने की
 जगह । आश्रमी = आश्रम
 सम्बन्धी । आश्रम में रहने
 वाला ।
 आश्वास—(पु० सं०) तसल्ली ।
 आश्वासन = दिलासा । आशा
 प्रदान । —नीय = दिलासा
 देन योग्य ।

आश्विन—(पु० सं०) धार का
 महीना ।
 आषाढ—(पु० सं०) ज्येष्ठ मास
 के पश्चात और श्रावण के
 पूर का महीना । आषाढी =
 आषाढ मास की पृष्णिमा ।
 आस—(स्त्री० हि०) उम्मेद ।
 लालमा । महारा ।
 आस—(स्त्री० प्रा०) आटा
 पीसने की चट्टी ।
 आसक्त—(पु० हि०) मुस्ती ।
 आसक्त—(वि० सं०) लोन ।
 मोहित । आसक्ति = लीनता ।
 चाह ।
 आसन—(पु० सं०) बैठक ।
 टिकना । निवास । साधुओं
 का डेरा या निवास-स्थान ।
 आसनी = छोटा आसन ।
 आसन्न—(वि० सं०) निकट
 आया हुआ । —भूत = वह
 भूतकाल जो वर्तमान से
 मिला हुआ हो ।
 आसपास—(क्रि० वि० हि०)
 चारोंधोर । प्रारंभ ।

आसमान—(पु० फा०) आकाश ।
 आसमानी—(फा०) नीला रंग ।
 आतशयाजी की एक किस्म ।
 आसरा—(पु० हि०) सहारा ।
 भरोसा ।
 आसव—(पु० म०) मद्य जो
 भपके से न बुझाई जाय ।
 औषध का एक भेद । अत्र ।
 आसाइत—(पु० फा०) आराम ।
 सुख । समृद्धि ।
 आसान—(त्रि० फा०) भीषा ।
 सहल । आसानी = सरलता ।
 आसार—(पु० अ०) निशान ।
 आसी—(अ०) शक्ति । वैद्य ।
 तबीय ।
 आसूदगी—(स्त्री० फा०)
 सताप । आसूदा = सतुष्ट ।
 भरापूरा । बेफिक्र । निश्चिन्त ।
 आसेव = (फा०) दुःख । धक्का ।
 खतरा ।
 आस्तिरु—(वि० स०) वेद ईश्वर
 और परलोकदि पर विरवास
 करनेवाला, ईश्वर के अस्तित्व

के मानेवाला । —पा =
 आस्तिकता । आस्तिक्य =
 वेद ईश्वर और परलोक पर
 विरगम ।

आस्तीन—(स्त्री० फा०) बॉही ।

आह—(अ० हि०) पीडा,
 शोक, दुःख, श्लानि-सूचक
 अव्यय ।

आहट—(स्त्री० हि०) सड़का ।

आहत—(वि० स०) चोट खाया
 हुआ ।

आहन—(पु० फा०) लाडा ।

आहार—(पु० स०) भोजन ।
 —विहार = खाना पीना सोना
 आदि शारीरिक व्यवहार ।
 रहन सहन ।

आहिस्ता—(क्रि० वि० प्रा०)
 धीरे धीरे ।

आटुति—(स्त्री० स०) हवन ।
 हवन में डालने की सामग्री ।

आह—(पु० फा०) मृग ।

आहत—(वि० स०) बुलाया
 हुआ ।

इ—वणमाला में म्हर का तोसरा वण । इसका स्थान तालू है ।

इक्—(स्त्री० थ०) म्याडी ।

—टेबुल = छापेपान में स्याही देने का चौकी । —मैन =

छापेपाने में स्याही देनेवाला मनुष्य । —रोत्तर = छापेखाने

में म्याही देने का चलन ।

इग्लिश—(नि० थ०) अंगरेज़ी ।

इगलिस्तान = इगलैण्ड ।

इगलिस्ताना = इगलैण्ड देश का ।

इगित—(पु० म०) इशारा ।

इच्च—(स्त्री० थ०) एक पुत्र का बारहवाँ हिस्सा । बहुत थोड़ा ।

इजन—(पु० थ०) फल । भाप वा बिजली से चलनेवाला यंत्र । रलने ट्रेम वह गाड़ी या सयस आग होती है और भाप के जोर से सब गाड़ियों को खींचती है ।

इजीनियर—(पु० थ०) यंत्र की विद्या जाननेवाला । विरव

कर्मा । वह अक्सर जिनकी देखभाल में मरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं ।

इजील—(स्त्री० यू०) ईसाइयों की धर्म पुस्तक ।

इट्रेंस—(पु० थ०) दरवाजा । अंगरेज़ी स्कूलों का एक दजा ।

इंडस्ट्रियल—(वि० थ०) उद्योग धंधा सम्बन्धी ।

इंडस्ट्री—(स्त्री० थ०) उद्योग धंधा । शिल्प ।

इडिया—(पु० थ०) भारतम् ।

इडेक्स—(पु० थ०) पुस्तक के विषयों की सूची । विषयानुक्रमिका ।

इडेण्ट—(पु० थ०) माल मँगाने वाले के पास भेजी जानेवाली माल की वह सूची, जो किसी व्यापारी के पास माल की माँग के साथ भेजी जाती है ।

- इडोर्स—(क्रि० स० अ०) हुंटी या घेरु आदि पर रखे देने या पाने के सवध में इस्ताफर करना ।
- इतकाल—(पु० अ०) मौत । एक जगह से दूसरी जगह जाना । किसी सम्पत्ति का एक के अधिकार में से दूसरे के अधिकार में जाना ।
- इतजाम—(पु० अ०) प्रबन्ध ।
- इतजार—(पु० अ०) रान्ना देवना । प्रतीक्षा ।
- इतहा—(पु० अ०) अत ।
- इष्ट—(वि० स०) पेशवर्यवान । श्रेष्ठ ।
- इष्टजाल—(पु० स०) जादूगरी ।
इष्टजाली=जादूगर ।
- इष्टधनुष—(पु० स०) सात रंगों का घना हुआ एक शब्द घृत, जो वर्षाकाल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है ।
- इन्द्रिय—(स्त्री० म०) वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों या

ज्ञान प्राप्त होता है । —निग्रह
=इन्द्रियों का दबाना ।

- इधन—(पु० स०) जलाने की क्षमता ।
- इसाफ—(पु० अ०) न्याय ।
- इस्तिस्वूट—(स्त्री० अ०) मभा ।
- इम्पूमेंट—पु० अ०) चौजार ।
साधन ।
- इम्पेन्टर—(पु० अ०) निरीपण ।
- इन्स्टा—(वि० हि०) जमा ।
- इस्तारा—(पु० हि०) एक याजा, जिसमें एक ही तार होता है ।
- इक्तीस—(वि० हि०) तीस और एक ।
- इकदाम—(पु० अ०) किसी अचराय के करने की तैयारी ।
हरादा ।
- इकामत—(स्त्री० अ०) स्थिर होना । एक स्थान पर रहना ।
बसना ।
- इकजाता—(पु० अ०) भाग्य ।
पेशख्य । भाग्योदय होना ।
सम्पन्न होना ।
- इकतिदा—(स्त्री० अ०) पौरवी करना ।

इकृतिसाम—(पु० अ०) तजमीम
करना । आपस में घोंट देना ।

इकराम—(पु० अ०) दान ।
आदर ।

इकरार—(पु० अ०) प्रतिज्ञा ।
काई काम करने की स्वाकृति ।

इकलौता—(पु० हि०) वह लड़का
जो अपने माँ बाप का अकेला
हो ।

इक़ा—(वि० स० एक) अकेला ।
एक प्रकार की या पहिये की
घोड़ा गाड़ी जिसमें एक ही
घोड़ा जोता जाता है । तारा
का वह पत्ता जिसमें किसी रंग
की एक ही सूती हो ।

इक़ा दुक़ा—(वि० हि०) अकेला
दुकेला ।

इक्षुप्रमेह—(पु० स०) एक प्रकार
का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ
मधु या शक्कर आती है ।

इखफाये वारदात—(पु० फ़ा०)
शान्ति में किसी पुंस्य का
किसी ऐसी घटना का छिपाना
जिसका प्रकट करना नियमा
नुसार उसका कतल्य हो ।

इखलास—(पु० अ०) मिश्रता ।
प्रेम । सम्यग्ध ।

इम्निताम—(वि० स० अ०) पूरा
करना ।

इम्तियार—(पु० अ०) अधिकार ।
अधिकार क्षेत्र । शत्रु ।
प्रभुत्व ।

इश्वराजात—(पु० फ़ा०) अनेक
व्यय ।

इस्तिलाफ—(पु० अ०) विरोध ।
अन्तर । बिगाड़ ।

इच्छा—(स्त्री० स०) लालसा ।
इच्छित—(वि० स०) चाहा
हुआ । इच्छुक = चाहनेवाला ।

इजराय—(पु० अ०) जारी
करना । काम में लाना ।

इजलास—(पु० अ०) बैठक ।
फचहरी ।

इजतिराव—(पु० अ०) घबराहट ।
बेचरारी । चिन्ता ।

इजहार—(पु० अ०) जाहिर
करना । गवाही ।

इजाजत—(स्त्री० अ०) आज्ञा ।
मज़ूरी ।

इजार—(स्त्री० अ०) पायजामा ।

सूचना । —र्यद = कमरबंद ।

इजारदार, इजारेदार—(वि०
प्रा०) अधिकारी ।

इजारा—(पु० अ०) किसी पदार्थ
को किराये पर देना । ठेका ।
अधिकार ।

इज्जत—(स्त्री० अ०) मान ।
आदर । —दार = माननीय ।

इटालियन—(पु० अ०) एक
प्रकार का कपड़ा जो पहले
पइल इटली से आया था ।

इटैलिक—(पु० अ०) एक प्रकार
का छापा वा टाइप जिसमें
अक्षर तिरछे होते हैं ।

इठलाना—(क्रि० अ० हि०)
इतराना । नफ़रा करना ।

इतना—(वि० हि०) इस ऊँदर ।

इतमाम—(पु० अ०) इन्तजाम ।

इतमीनान—(पु० अ०) विश्वास ।

इतमीनागी = विश्वासपात्र ।

इतराना—(क्रि० अ० हि०) घमंड
करना । ठसक दिखाना इत-
राइट = घमंड ।

इतवार—(पु० प्रा०) रविवार ।

इताश्रत—(स्त्री० अ०) तायेदारी ।

इत्तिहाद—(पु० अ०) एक होना ।
मिग्रता । सगठन ।

इति—(अर्थ० स०) समाप्ति
सूचक अव्यय ।

इतियुत्त—(पु० स०) पुरानी
कथा । कहानी ।

इतिहाम—(पु० स०) बीती हुई
प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे
सम्बन्ध रखनेवाले पुरुषों का
काल क्रम से वर्णन । यह
पुस्तक जिसमें बीती हुई प्रसिद्ध
घटनाओं और भूत पुरुषों का
वर्णन हो ।

इत्तफाक—(पु० अ०) मेल ।
एका ।

इत्तफाकन—(क्रि० वि० अ०)
अचानक । इत्तफाकिया =
आकरिमक ।

इत्तला—(स्त्री० अ०) प्रवर ।

इत्तिहाम—(पु० अ०) दोष ।

इत्यादि—(अर्थ० स०) इसी
प्रकार । वगैरह ।

इत्र—(पु० अ०) अंतर ।
—परोश = इत्र बेचनेवाला ।

इधर

- इधर—(क्रि० वि० हि०) इम
धर । आसपाम । चारोंधोर ।
- इनकम—(स्त्री० अ०) आमदनी ।
—कम = आमदनी पर मह
मूल ।
- इनकार—(पु० अ०) नकारना ।
नहीं करना ।
- इनफामर—(पु० अ०) गोइदा ।
भेदिया ।
- इनफ्लुपजा—(पु० अ०) सरदी
का बुन्दार ।
- इन्स्टिट्यूशन—(पु० अ०)
सस्था । समान । मदन ।
- इन्टरनशनल—(वि० अ०) सब
राष्ट्राय ॥
- इन्टरमीडिएट—(वि० अ०)
बीच का । मध्यम ।
- इन्टरव्यू—(पु० अ०) भेंट ।
मुलाक़ात । वार्तालाप ।
- इतकाल—(अ०) एक स्थान से
दूरे स्थान पर जाना ।
- इन्तग्राय—(पु० अ०) निवाचन ।
जुनाव । पसन्द करना ॥
- इन्तजाम—(अ०) प्रबन्ध ।
प्यवस्था । बन्दोबस्त ।
- इन्तजार—(अ०) रास्ता जोड़ना ।
प्रताप करना ।
- इन्तशार—(पु० अ०) फैलना ।
उगरेना ।
- इन्तहा—(अ०) अन्त । सामो
ल्लघन । अति । परिणाम ।
- इन्दराज—(अ०) दज होना ।
दाखिल होना ।
- इन्प्राइम—(पु० अ०) बीजक ।
चलान का कागज़ ।
- इन्श्योरेंस—(पु० अ०) बीमा ।
- इन्क्लाव—(अ०) प्राति ।
परिवतन ।
- इन्क्विशर—(अ०) नम्रता ।
आनिष्ठी ।
- इन्स्तान—(पु० अ०) आदमी ।
इंसानियत = आदमियत ।
मज्जनता ।
- इन्स्ताफ—(अ०) न्याय । उचित ।
निर्णय ।
- इन्सालवेंट—(वि० अ०) दिवा
लिया ।
- इनाम—(पु० अ०) पुरस्कार ।
- इनायत—(स्त्री० अ०) दया ।
पहसान ।

इनेगिने—(वि० हि०) कुछ ।
 चुने चुनाये ।
 इफगत—(स्त्री० श०) अधिकता ।
 फसरत ।
 इफलास—(पु० अ०) शरीरी ।
 इवरत—(अ०) शिष्टा लेना ।
 इवरायनामा—(पु० फ्रा०)
 त्यागपत्र ।
 इवरानी—(वि० अ०) यहूदी ।
 इवन—(अ०) पुत्र । घेठा ।
 इरलीस—(पु० अ०) शैतान ।
 इवादत—(स्त्री० अ०) पूजा ।
 धाराधना ।
 इवारत—(स्त्री० अ०) लेख ।
 लेखन शैली ।
 इवितदा—(स्त्री० अ०) धारम्भ ।
 जन्म । निवास ।
 इमकान—(पु० अ०) शक्ति ।
 काबू ।
 इमदाद—(स्त्री० अ०) मदद ।
 इमदादी = मदद पानेवाला ।
 वह मददसा जिसको सरकार
 से द्रव्य की कुछ सहायता
 मिलती है ।

इमगती—(स्त्री० हि०) एक
 मिठाई ।
 इमरोज—(फ्रा०) आज का दिन ।
 धान ।
 इमला—(अ०) लिखने का
 थम्पास ।
 इमली—(स्त्री० हि०) एक बड़ा
 पेड़ ।
 इमसाल—(फ्रा०) अब की साल ।
 इस साल ।
 इमाम—(पु० अ०) । अगुया ।
 पुरोहित । मुसलमानों का
 धार्मिक कृत्य करानेवाला
 आदमी । अजी के घेटों की
 उपाधि ।
 इमामदस्ता—(पु० फ्रा०) एक
 प्रकार का लोहे वा पीतल का
 खलत्रहा ।
 इम्तियाज—(अ०) विवेचन ।
 भेद-बुद्धि । तमीज़ करना ।
 इम्तिहान—(अ०) परीक्षा ।
 आजमाइश ।
 इमामबाडा—(पु० अ० + हि०)
 वह हाता जिसमें शिया लोग

ताजिया रखते और उमे दफन करते हैं।

इमारत—(स्त्री० अ०) बड़ा और पक्का मकान।

इम्पीरियल—(त्रि० अ०) राजकीय। शाही।

इम्पीरियल गवर्नमेंट—(स्त्री० अ०) साम्राज्य सरकार। बड़ा सरकार।

इम्पीरियल प्रेफरेंस—(पु० अ०) साम्राज्य का बनी वस्तुओं का प्रशस्तता देना।

इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स—(स्त्री० अ०) वह सेना जो भारतीय राजशाही भारत सरकार की सहायताथ अपने यहाँ रखते हैं और जिसकी देखभाल ब्रिटिश सरकार करते हैं।

इम्पोर्ट—(पु० अ०) वह माल जो व्यापार के लिय विदेश से अपने देश में मँगाया गया हो।

इयत्ता—(स्त्री० अ०) सीमा।

इरशाद—(अ०) हिदायत करना। आज्ञा और अनुमति देना। माग घताना।

इराकी—(वि० अ०) इराक देश का। घोड़े की एक जाति।

इरादा—(पु० अ०) विचार।

इलकाव—(पु० अ०) एक करना। कोई अपराध करना।

इर्दगिर्द—(क्रि० वि० फा०) चारोंथोर। आसपास।

इरगाल—(क्रि०स०अ०) भेजना। पत्र भेजना।

इलजाम—(पु० अ०) दोष। अभियोग।

इलहाक—(पु० अ०) सम्यथ। किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के साथ मिला देने का काय।

इलहाकदार—(पु० अ०) वह मनुष्य जिसके साथ बन्दोबस्त के वक्त मालगुजारी थदा करने का इत्तार-नामा हो। नम्बरदार।

इलदाम—(पु० अ०) इश्वर का शब्द। देव वाणी।

इल्ला—(अ०) नहीं तो। अन्यथा।

इलाका—(पु० अ०) सबथ। राज्य।

इलाज—(पु० अ०) दवा ।

चिष्टिमा । सदबीर ।

इलायची—(स्त्री० हि०) एक

पौधा जिसमें इलायची तान का एक लगता है । जो ममालों में पड़ता है ।

इलाही—(पु० अ०) इश्वर ।
मुदा ।

इलाहीगज—(पु० अ०) अरब का खलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ५१ अंगुल (३३ इंच) का होता है, और जो अब तक इमारत आदि बनाने के काम आता है ।

इलेक्ट्रो—(वि० अ०) बिजली
जान तैयार किया हुआ ।

इतिज्ञा—(स्त्री० अ०) प्राथना ।

इतिमास—(अ०) निवेदन ।
सोच । सलाह ।

इलम—(पु० अ०) विद्या ।

इल्लत—(स्त्री० अ०) रोग ।
दोष । कारण ।

इली—(स्त्री०) शूँठी आदि के पहला रूप जो

छटे से निकलने के उपरान्त
मुरत होता है ।

इमारत—(स्त्री० अ०) मुरा ।
भाग । विजात ।

इमारा—(पु० अ०) मकेत ।
गणित कथन ।

इण्य—(पु० अ०) मुद्रयत ।
जगत् ।

इश्वरवेर्चा—(पु० अ०) एक
प्रकार का बेल जिसकी पत्तियाँ
मृत की तरह पाराक होती
हैं ।

इशफाफ—(अ०) मिहरपानी
करना । टराना ।

इश्तिहार—(पु० अ०) विज्ञापन ।
पज्ञान ।

इश्तियानक—(स्त्री० अ०)
पढ़ावा ।

इष्ट—(वि० अ०) चाहा हुआ ।

इष्टदेव—(पु० अ०) पूज्य देवता ।

इसपज—(पु० अ० स्पज) मुर्दा
यादल ।

इसपात—(पु० हि०) एक प्रकार
का फड़ा लोहा ।

इसपिरिट

इसपिरिट—(स्त्री० अ० स्पिरिट)

किमी वस्तु का मत। एक प्रकार की खालिस शराब।

इस्पेशल—(वि० अ० स्पेशल) ख़ाम।

इसरार—(पु० अ०) इठ। आग्रह। ताकीद।

इसलाम—(पु० अ०) मुसलमाना धर्म।

इसलाह—(पु० अ०) सशोधन।

इस्तहकाम—(वि० अ०) मज़बूत। दृढ़ता।

इस्तिस्नाग—(अ०) परमात्मा से मंगल-कामना। भवितव्यताय जानेच्छा।

इस्तिस्नाल—(अ०) स्वागत करना। अगवानी करना।

इस्तिस्नाल—(अ०) धैर्य। दृढ़ता। किसी वस्तु को कम समझना।

इस्तमरारी—(वि० अ०) सब दिन रहने वाला। नित्य।

इस्तिजा—(पु० अ०) पेशाब

करने के बाद मिट्टी के ढेले से इद्रिय में लगी हुई पेशाब की धूँदों को सुखाने की क्रिया।

इस्तिरी—(स्त्री० हि०) घोड़ी का एक थौज़ार जिसमें वह घाने के पाँधे बपड़े की तरह की जमा कर उसकी शिकनें मिटाता है।

इस्तीफा—(पु० अ०) त्याग पत्र।

इस्तेदाद—(स्त्री० अ०) लिया-कृत।

इन्तेमाल—(पु० अ०) उपयोग।

इस्म—(पु० अ०) नाम।

इहाता—(पु० अ०) चहारदीवारी के बीच की भूमि। घेरना।

इहसान—(अ०) कृतज्ञता।
—मद = कृतज्ञ। आभारी।

इहकाम—(अ०) मज़बूत करना।

इहतियात—(स्त्री० अ०) सावधानी। बचाव।

इहतिमाम—(अ०) प्रयत्न। कोशिश। परिश्रम।

ई—हिन्दी-शर्मांमाला का चौथा अक्षर । इसके उच्चारण का स्थान तालू है ।

ईगुर—(पु० हि०) एक खनिज पदार्थ । हिन्दू सौभाग्यवती स्त्रियों शोभा के लिये इसकी विन्दी माथे पर लगाती है ।

ईट—(स्त्री० हि०) साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँग जम्हा टुकड़ा जो पजावे में पकाया जाता है ।

ईधन—(पु० हि०) जलावन ।

ईर—(स्त्री० हि०) शर जाति की एक घास जिसके ठठल में मीठा रस भरा रहता है । इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है ।

ईजा—(स्त्री० अ०) हुँग । पीड़ा ।

ईजाद्—(स्त्री० अ०) आविष्कार । नया निर्माण ।

ईथर—(पु० अ०) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और जचोला पदार्थ जो समस्त शून्य में

व्याप्त है । एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो थलकोहल और गंधक के तेजाब से बनता है ।

ईद—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का एक त्यौहार ।

ईमन—(पु० क्रा०) एक रागिनी ।
—कल्याण = एक मिथित राग का नाम ।

ईमान—(पु० अ०) विश्वास । अच्छी नीयत । —दार = विश्वास पात्र । सच्चा ।

ईरान—(पु० फा०) फारस देश ।

ईर्पा—(स्त्री० हि०) डाह । —लु = ईर्पा करने वाला । इर्प्या = ईर्पा ।

इशान—(पु० स०) पूरव और उत्तर के बीच का कोना ।

ईश्वर—(पु० म०) मालिक । भगवान । ईश्वरीय = इश्वर संबंधी । इश्वर का ।

इसवी—(वि० क्रा०) ईसा से संबंध रखने वाला ।

इमा—(पु० थ०) ईसाई धर्म के
आचार्य । —ई=इमा को
माननेवाला ।

इस्ट—(पु० थ०) पूव दिशा ।
ईस्टर—(थ०) एक अंग्रेजी ल्यो
हार ।

उ

उ

उग्राड

उ—हिन्दी-वर्णमाला का पाँचवा
अक्षर । इसका उच्चारण
ग्यान शोध है ।

उँगली—(स्त्री० हि०) हथेली के
छोरों से निकले हुये फलियों
के शब्द के पाँच अवयव जो
वस्तुओं को ग्रहण करते हैं ।

उँचा—(स्त्री० हि०) अद्वान ।
उँचना=अद्वान सानना ।
उचन कसना ।

उँचाद—(स्त्री० हि०) उँचापन ।
वदपन ।

उड़—(स्त्री० हि०) सीला बीनना ।
उग्राण—(वि० स०) अक्षरहित ।

उकड़—(पु० हि०) घुटने
मोड़कर बैठने की एक मुद्रा
जिसमें दोनों सल्ले ज़मीन
पर पूरे बैठते हैं, और चूतड़
पदियों से जगे रहते हैं ।

उकताना—(क्रि० हि०) ऊबना ।
धराना ।

उकसना—(क्रि० हि०) उभरना ।
निकलना । सीपन का
खुलना । उकसाता=ऊपर
को उठाना । उत्तेजित करना ।
हटा देना । समकना ।

उकाउ—(पु० थ०) गरुड ।

उकैलना—(क्रि० हि०) उघाड़ना ।
उधेड़ना ।

उकूँदिस—(यू०) रेखागणित ।
ज्युमेरी ।

उकडना—(क्रि० हि०) रुदना ।
ओड़ से हट जाना । ग्राहक
का भद्रक जाना । उठ जाना ।
हटना । टूट जाना । सीपन
का खुलना ।

उग्राड—(पु० हि०) यह
शुक्ति जिससे कोई पेंच रद

किया जाता है। —ना =
किमी जमी, गड़ी या पैठी
हुइ वस्तु को स्थान से अलग
करना। भड़काना। तितर
धितर कर देना। हटाना। नष्ट
करना।

उगना—(क्रि० हि०) निकलना।

जमना। उपजना।

उगलना—(क्रि० हि०) कैं
करना। मुँह में गइ वस्तु को
बाहर धूक देना। पचाया
माल विवश होकर यापम
करना। किमी बात को पेट
में न रचना। विवश होकर
कोइ भेद खोल देना।

उगाल—(पु० हि०) यूक।

—दान = पीकदान।

उगाहना—(क्रि० हि०) वसूल
करना। उगाही = रुपया पैमा
वसूल करने का काम। जमीन
का लगान। एक प्रकार का
रपये का लेन-देन।

उचकना—(क्रि० हि०) ऊँचा
होने के लिये पैर के पजों के
बल पड़ी उठाकर खड़ा

होना। धूदना। उचकना =
उचककर वस्तु ले भागोवाला
आदमी। ठग। यद्गारा।

उचटना—(क्रि० हि०) अन्न
होना। हटना।

उन्नित—(वि० हि०) योग्य।
याज्ञिक।

उच्छ्वास—(पु० हि०) ऊपर फें
खींची हुई साँस।

उच्छ्रित—(वि० स०) कमवि
हीन। मनमाना काम करने
वाला। अकतइ।

उजड़ु—(वि० हि०) अमध्य।
गँवार। जिसे घुरा काम करने
में कोइ धागा पीछा न हो।

उजयक—(हि०) उजड़ु। ताता
रियों की एक जाति।

उजरत—(पु० अ०) गजदूरी।
भाड़ा।

उजलत—(स्त्री० अ०) उतावली।

उजागर—(त्रि० हि०) प्रका
शित। प्रसिद्ध।

उजाड़—(पु० हि०) उजड़ा
हुआ। शून्य स्थान।

उजाला—(पु० हि०) प्रकाश।

उज्ज्वल—(पु० स०) प्रकाशमान।

स्वच्छ। वेदासा। —ता=

धमक। स्वच्छता। सश्रेणी।

उज्ज—(पु० अ०) षाषा।

—दारी=किम्पा ऐसे मामले में उज्ज पेश करना जिसके विषय म अदालत से किमी ने कोई आजा प्राप्त की हो या प्राप्त करने की तरफ वास्त दी हो।

उभक्तना—(क्रि० हि०) उधूलना।

उटग—(वि० हि०) वह कपड़ा जो पहनने में ऊँचा या छोटा हो।

उठँगन—(पु० हि०) आड़।

बैठने में पीठ को सहारा देनेवाला धस्तु। उठँगना=टेक लगाना। छोटना। उठँगाना=मिढ़ाना या बन्द करना। मिढ़ाना।

उठना—(क्रि० हि०) ऊँचा होना।

उठल्लू—(वि० हि०) आचारा।

उडाका—(पु० हि०) उड़नेवाला।

उड्ढासना—(क्रि० हि०) बिस्तर

उठाना। किसी को स्थान से हटाना।

उडिया—(वि० हि०) उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उडकट—(पु० अ०) छपाई के काम में धानेवाला एक प्रकार का ठप्पा।

उडेलना—(क्रि० हि०) ढालना। किमी द्रव पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उढकाना—(क्रि० हि०) मिढ़ाना।

उढरना—(क्रि० हि०) विवाहिता स्त्री का किमी अन्य पुरुष के साथ निम्नल जाना। उदरी=वह स्त्री जिसे कोई निकाल ले गया हो।

उतराई—(स्त्री० हि०) नदी के पार उतरने का महसूल। नाव आदि पर से उतरने का स्थान।

उतराना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर आना। प्रकट होना।

उतान—(वि० हि०) चित।

उतार—(पु० हि०) ढालुवाँ।

उतारना—(त्रि० हि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना । गोंवना (चित्र) । खेप की प्रतिक्रिया लेना ।

उतारना—(पु० हि०) घेरा डालने का काम । पदार । नदीपार करने की क्रिया ।

उतारू—(त्रि० हि०) तैयार ।

उताप्रला—(त्रि० हि०) जलद था । घबड़ाया हुआ । उताप्रली = जश्दी । घबराता ।

उत्फटा—(स्त्री० म०) लालता । उत्फटित = उत्सुक ।

उत्फट्ट—(वि० स०) विफट्ट । प्रवृत्त ।

उत्कर्ष—(पु० स०) बढ़ाई उत्तमता । —ता = श्रेष्ठता । बढ़ाई । समृद्धि ।

उत्कृष्ट—(वि० म०) उत्तम । —ता = बढ़प्पन ।

उत्कौच—(पु० म०) रिशवत ।

उत्तप्त—(त्रि० म०) सूख तथा हुआ । दुखी । मोहित ।

उत्तम—(वि० स०) सब से श्रेष्ठ ।

उत्तमता—(स्त्री० म०) श्रेष्ठता । भलाई ।

उत्तर—(पु० म०) दक्षिण दिशा के मानने की दिशा । जगप । बढ़ना ।

उत्तर कोशल—(पु० स०) अयाप्या के आसपास का देश ।

उत्तर-दाता—(पु० हि०) जिम्मेदार । उत्तरदायित्व = जिम्मेदारी । उत्तरदायी = उत्तर देने वाला ।

उत्तरा गड—(पु० म०) हिमालय के पास का उत्तरी भाग ।

उत्तराधिकार—(पु० म०) विरासत । उत्तराधिकारी = वह जो किसी के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति या मालिक हो ।

उत्तरायण—(पु० म०) वह छ मास का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चल कर धरावर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है ।

उत्तरार्द्ध—(पु० स०) पिछला भाग ।

उज्ज्वल—(पु० म०) प्रकाशमान।

स्वच्छ। वेदांग। —ता =

चमक। स्वच्छता। सरदी।

उज्र—(पु० अ०) बाधा।

—दारी = किसी ऐसे मामले

में उज्र पश करना जिसके

विषय में अदालत से किमा

ने काइ आशा प्राप्त की हो

या प्राप्त करने की प्रसवार्थ

दी हो।

उभ्रना—(क्रि० हि०) उड़लना।

उटग—(वि० हि०) वह कपड़ा

जो पन्नने में ऊँचा या छोटा

हो।

उठँगन—(पु० हि०) आइ।

बैठने में पीठ का सहारा

देनेवाला वस्तु। उठँगना = टेक

लगाना। लेटना। उठँगना =

भिड़ाना या यद् करना।

भिड़ाना।

उठना—(क्रि० हि०) ऊँचा होना।

उठल्लू—(वि० हि०) आवाज।

उडाका—(पु० हि०) उड़नेवाला।

उड़ासना—(क्रि० हि०) विस्तार

उठाना। किमी को स्थान से
हटाना।

उडिया—(वि० हि०) उदीसा
श का रहनेवाला।

उडकट—(पु० अ०) छपाई के
काम में आनेवाला एक प्रकार
का ठप्पा।

उडेलना—(क्रि० हि०) डालना।
किमी द्रव पदार्थ को गिराना
या फेंकना।

उढ़काना—(क्रि० हि०) भिड़ाना।

उढ़रना—(क्रि० हि०) विवा

हिता स्त्री का किमी अन्य

पुरुष के साथ निकल जाना।

उढ़री = वह स्त्री जिसे कोई

निकाल ले गया हो।

उतराइ—(स्त्री० हि०) नदी के

पार उतरने का महसूल।

नाव आदि पर से उतरने का

स्थान।

उतराना—(क्रि० हि०) पानी के

ऊपर आना। प्रकट होना।

उतान—(वि० हि०) चित।

उतार—(पु० हि०) ढालुवाँ।

उतारना—(वि० हि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना । खींचना (चित्र) । लेख की प्रतिलिपि लेना ।

उताग—(पु० हि०) डेरा डालने का काम । पड़ाव । नदीपार करने की क्रिया ।

उतारू—(वि० हि०) तैयार ।

उतावला—(वि० हि०) जल यात्रा । घबड़ाया हुआ । उतावली = जद्दी । घबलता ।

उत्कटा—(स्त्री० सं०) लालसा । उत्कटिम = उत्सुक ।

उत्कट—(वि० सं०) विकट । प्रबल ।

उत्कर्ष—(पु० सं०) बढ़ाई । उत्तमता । —ता = श्रेष्ठता । बढ़ाई । समृद्धि ।

उत्कृष्ट—(वि० सं०) उत्तम । —ता = यद्गुण ।

उत्फोत्र—(पु० सं०) रिशवत ।

उत्तम—(वि० सं०) सूय तथा हुआ । दुखा । क्रोधित ।

उत्तम—(वि० सं०) सब से श्रेष्ठ ।

उत्तमता—(स्त्री० सं०) श्रेष्ठता । भलाई ।

उत्तर—(पु० सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा । गयाय । बढ़ला ।

उत्तर कोशल—(पु० सं०) अयोध्या के आसपास का देश ।

उत्तर दाता—(पु० हि०) ज़िम्मेदार । उत्तरवायित = ज़िम्मेदारी । उत्तरगामी = उत्तर देने वाला ।

उत्तरा खड्ग—(पु० सं०) हिमालय के पास का उत्तरी भाग ।

उत्तराधिकार—(पु० सं०) विरासत । उत्तराधिकारी = वह जो किसी के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति का मालिक हो ।

उत्तरायण—(पु० सं०) वह छ मास का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है ।

उत्तरार्द्ध—(पु० सं०) पिछला आधा ।

उत्तरीय—(पु० स०) उत्तर
दिशा का ।

उत्तरोत्तर—(क्रि० वि० स०)
एक के पाड़े एक । दिनोंदिन ।

उत्तान—(वि० स०) बित ।
सीधा ।

उत्ताप—(पु० स०) गर्मी । कष्ट ।
दुःख । शोभ ।

उत्तीर्ण—(वि० स०) पार गया
हुआ । मुक्त । पामशुद्ध ।

उत्तेजन—(वि० स०) उभाङ्गने
वादा । वेगों का तीव्र करने
वाता । उत्तेजन = बढ़ावा ।
उत्तेजना = बढ़ावा ।

उत्थान—(पु० स०) उठान ।
बढ़ती ।

उत्पत्ति—(स्त्री० स०) पैदाइश ।
सृष्टि । आरम्भ । उत्पन्न =
पैदा ।

उत्पात—(पु० स०) उपद्रव ।
अशांति । टगा । उत्पाती =
उत्पात मचाने वाला ।

उत्पादक—(वि० स०) उत्पन्न
करने वाला । उत्पादन =

उत्पन्न करता । उत्पादित =
उत्पन्न किया हुआ ।

उत्पीडन—(पु० स०) दपाना ।
पीड़ा देना ।

उत्पन्न—(पु० स०) स्वाग ।
न्योछावर ।

उत्सव—(पु० स०) धूम-धाम ।
जलसा । मंगल समय ।

उत्साह—(पु० स०) उमग ।
साहस । उत्साही = उमग
वाला ।

उत्सुक—(वि० स०) अत्यन्त
ड-डुक । चाही हुई बात में
देर न सहकर उसके उत्थोग में
तय्यार । —ता = आकुल
इच्छा ।

उत्थल-पुथल—(पु० वि०) उल्ट-
पुनट ।

उदत्त—(वि० स०) जिसके दांत
न जमे हों ।

उद्वृ—(पु० स०) दुरमन । धैरी ।
शत्रु ।

उदूल—(स०) धरना करना ।
फिर जाना ।

उदय—(पु० स०) उपर आना ।

उदर—(पु० म०) पेट । मध्य ।
भीतर का भाग । —ज्वाला
= जठराग्नि । भ्रूय ।

उदरना—(कि० हि०) पटना ।
नष्ट होना ।

उदार—(वि० स०) दाता । यद्वा ।
ऊँचे दिल का । स्मरल । अनु
कृत् । —चरित = जिसका
चरित्र उदार है । —चेता
जिसका चित्त उदार हो ।
—दा = दानशीलता । उच्च
विचार । उदारशय = जिसका
उद्देश्य उच्च है ।

उदारना—(प्रि० हि०) फाड़ना ।
गिराना ।

उदास—(वि० स०) विरक्त ।
रूगड से अलग । दुःखी ।
उदासी = त्यागो पुरप । नानक
पथी साधुओं का एक भेद ।
पिन्नता । उदासीन = जिसका
चित्त हट गया हो । निष्पक्ष ।
रूपा । उदासीनता = त्याग ।
उदासी ।

उदाहरण—(पु० स०) दृष्टान्त ।
मिसाल ।

उदित—(वि० म०) जो उदय
हुआ हो । प्रकट । उज्ज्वल ।
प्रमत्त । कथित ।

उदुलटुफमी—(स्त्री० प्रा०)
थापा ७ माना ।

उद्गार—(पु० म०) उवाच ।
किसी के विरुद्ध बहुत दिा
म मन में रखी हुई बात को
एकवारगी कहना ।

उद्घाटन—(पु० स०) खोलना ।
प्रकट करना ।

उद्दंड—(वि० स०) अस्वस्थ ।

उद्देश्य—(वि० स०) लक्ष्य ।

उद्देश—(पु० स०) अभिलाषा ।
मतलब । कारण । अनुस-
धान ।

उद्धत—(वि० स०) उग्र ।
प्रगल्भ । —पन = उग्रता ।

उद्धरण—(पु० स०) किसी
पुस्तक वा लेख के किसी अंश
को दूसरी पुस्तक वा लेख
में ज्यों का त्यों रखना ।

उद्धार—(पु० स०) मुक्ति ।
सुधार ।

उद्धत—(वि० स०) उद्दंड ।

उद्भव

उद्भव—(पु० स०) उत्पत्ति ।
 बढ़ता । उद्भवन = कल्पना ।
 उत्पत्ति ।
 उद्यत—(वि० स०) तैयार ।
 उत्तार ।
 उद्यम—(पु० स०) मेहनत ।
 काम । उद्यमा = काम करने
 वाला । उद्योगा । उद्योग =
 केशिश । काम धरा ।
 उद्यागा = उद्योग करनेवाला ।
 मेहनती ।
 उद्यान—(पु० स०) बगीचा ।
 उद्विग्न—(वि० स०) घबराया
 हुआ । —ता = घबराहट ।
 उधटना—(क्रि० हि०) मुलना ।
 बिम्बना ।
 उधराना—(क्रि० हि०) उधम
 मचाना ।
 उधार—(पु० हि०) ऋण ।
 उधेडना—(क्रि० हि०) उचा
 हना । सिलाई खोलना ।
 विभ्राना ।
 उधेड-बुन—(पु० हि०) सोच
 विचार । सुक्ति धाँवना ।
 उन्नत—(वि० स०) ऊँचा ।

यदादृशा । यदा । उन्नति =
 उँचाई । बढ़ती ।
 उन्नावी—(वि० श्र०) कालापन
 लिये हुये लाल ।
 उन्स—(श्र०) मुहब्बत । प्यार ।
 लगन ।
 उपक्रम—(पु० स०) प्रथमारम्भ ।
 —ण = धारम्भ । तैयारी ।
 उपक्रमरिका = भूमिका ।
 किमी पुस्तक के शुरू में दी
 हुई विषय सूची ।
 उपग्रह—(पु० स०) छोटा ग्रह ।
 उपचार—(पु० स०) प्रयोग ।
 द्रव्य । मेवा । —क = दवा
 करनेवाला ।
 उपज—(पु० हि०) उत्पत्ति ।
 पैदावार । उपचारक = उर्वर ।
 उपटना—(क्रि० हि०) निशान
 पडना । उरडना ।
 उपत्यका—(स्त्री० म०) तराई ।
 घागे ।
 उपदश—(पु० स०) गरमी ।
 आतशक ।
 उपद्रव—(पु० स०) उत्पात ।
 हलचल । दगा । गड़बड़ ।

उपालभ—(पु० स०) शिवायत ।

दिदा ।

उपेक्षा—(स्त्री० स०) उदासी
नता । तिरस्कार । उपेक्षक =
उपेक्षा करनेवाला । पृष्ठा
करनेवाला । उपवर्णीय = पृष्ठा
योग्य । त्यागने योग्य । उप
चित्त = जिमकी उपस्था की
गद्द हो ।

उपोद्घात—(पु० स०) प्रस्ता
वना ।

उफ—(अव्य० अ०) आह ।
अफसाम ।

उफक—(पु० अ०) चित्तित्त ।

उफनादा—(वि० प्रा०) परती
पना हुआ (गेत) ।

उफनादगी—(फा०) नघता ।
शील । धानिज्ञी ।

उफनना—(क्रि० अ०) उबलना ।
उफान = उबाल ।

उबकना—(क्रि० हि०) कैं करना ।
उबकाई = कैं ।

उबटन—(पु० हि०) बटना । शरीर
पर मलन के क्रिय विमा हुआ

सरसों । उबटना = उबटन
मलता ।

उवरा—(क्रि० हि०) उदार
पाना । शेष रहना । उवरा =
यचा हुआ । जिमका उदार
हुआ हो ।

उवलना—(क्रि० हि०) ऊपर को
ओर जाना । उमडना ।

उवहा—(स्त्री० हि०) पानी
निवालन की धारी ।

उवहना—हवियार र्गाना ।
पानी फेंकना ।

उवाल—(पु० हि०) उफान ।
जोश । —ना = खीलाना ।
जो दना ।

उमडना—(क्रि० हि०) किमो
मतह का आसपाम की मतह
स ऊँचा होना । सुतना ।
बढ़ना । वृद्धि को प्राप्त होना ।
उभाडना = उकमाना । उत्ते-
जित करना ।

उमग—(स्त्री० हि०) चित्त का
उमाड । अधिकता । जोश ।

उमदा—(वि० अ०) उत्तम ।

उमर—(स्त्री० अ०) अगस्त्या ।
जीवन का समय । उमू =
उमर ।

उमूम—(अ०) साधारण ।

उमरा—(पु० अ०) अमीर का
यदुवचन । सरदार । —व =
सरदार ।

उमस—(स्त्री० हि०) गरमी ।

उम्मेदवार—(पु० क्ता०) आशा
करने वाला । नौकरी पाने
की आशा करने वाला ।
काम सीपने के लिये और
नौकरी पाने की आशा से
किसी आग्रेस में बिना वेतन
काम करने वाला मनुष्य ।
प्रार्थी । उम्मेदवारी = आशा ।
उम्मेद = आशा । भरोसा ।
उम्मीद = आशा ।

उम्दा—(वि० अ०) अच्छा ।
पढ़िया ।

उम्मत—(स्त्री० अ०) जमायत ।
समाज । फिराज । सतान ।
पैरोकार ।

उरद—(पु० हि०) एक प्रकार का
जिसके बीज की दाल

होती है । (स्त्री० उरती)
छोटा उरद ।

उरुज—(पु० अ०) पदती ।

उर्दू—(स्त्री० पु०) यह हिन्दी
जिममें अरबी फारसी भाषा
के शब्द अधिक मिले हों
और जो फारसी लिपि में
लिखी जाय । (पा०) माट
शाही लखकर क बाजार की
पाली ।

उर्दू बाजार—(हि०) लखकर का
बाजार ।

उफ—(पु० अ०) पुकारन का
दुमरा नाम ।

उर्वरा—(पु० स०) उपनाड
भूमि ।

उर्स—(पु० अ०) मुसलमानी
मतानुसार किसी फकीर के
मरने के दिन का कृष ।
मुसलमान साधुओं की
निर्वाण तिथि ।

उलचना—(क्रि० हि०) उलीचना ।
पानी फेंकना ।

उलमान—(पु० हि०) अटकाव ।
गाँठ । पेंच । चिता । उल-

भना = फँसना । उल्लास =
अन्यास । भगदा । चकर ।
उल्लसना = अतृप्त । बखेड़ा ।
झँझाना ।

उलटना—(क्रि० हि०) ऊपर नीचे
हाना । झँझाना ।

उलटना-पलटना—(क्रि० हि०)
नाच ऊपर करना । अड्डा
करना । झार का झार
करना । उलट-पलट = हेर
फेर । गड़बड़ी । उलट-पेर =
परिवर्तन । अल-यदल ।
उलगा = झँझाना । उलट पुलट,
उलटा-पलटा = इधर का उधर ।
थ सिर-पंर का ।

उलटी—(स्त्री० हि०) वमन ।
उलटे = वे ठिकाने ।

उलथा—(पु० हि०) उलटा ।
धरवट बदलना ।

उलफत—(स्त्री० अ०) प्रेम ।
प्राप्ति ।

उलरना—(क्रि० हि०) कूदना ।
नीचे ऊपर हाना ।

उलहना—(क्रि० हि०) उभड़ना ।
हुलसना ।

उलार—(वि० हि०) जो पीछे की
ओर मुका हो । —ना =
नाचे ऊपर फँसना ।

उलारा—(पु० हि०) वह पद जो
चौताल के अन्त में गाया
जाता है ।

उलाहना—(पु० हि०) किमी
की मूत को उसे दु ख-पूक
जताना । शिकायत ।

उल्ला—(स्त्री० स०) तारा टूटना
या लूक टूटना । —पात =
तारा टूटना । उत्पात ।

उल्लघन—(पु० स०) लाँघना ।
न मानना ।

उल्लेख—(पु० स०) लिखना ।
वर्णन । —नीय = लिखने
योग्य ।

उपशाक—(पु० अ०) आशिक
का बहुवचन ।

उशारा—(पु० अ०) एक पेड़
जिसकी जड़ रक्त-शोधक होती
है ।

उपा—(स्त्री० म०) प्रभात ।
अरुणोत्पत्त की लालिमा ।
—फाल = प्रभात ।

- उष्ण—(वि० स०) गरम । पुर-
 सीला । —फणियथ=पृथ्वी
 का वह भाग जो एक धौर
 मकर रेखाओं के बीच में
 पड़ता है । —ता=गरमी ।
 उष्मा=गरमी । धूप ।
 उसनना—(क्रि० दि०) चावल
 उयालना । पशाना ।
- उसूल—(पु० ध०) सिद्धात
 उस्तग—(पु० पा०) उस्तुरा
 उस्ताद—(पु० प्रा०) गुर । मा
 उस्तादा=मास्टरी । चतुर
 विज्ञता । चालाकी । उस्त
 =गुरधानी । चालाक स्त्री
 उहदा—(पु० ध०) पट । रतब
 उहार—(पु० पा०) परदा ।

ऊ

ऊ

ऊन्विलाव

- ऊ—हिंदी-वणमाला का छठाँ
 स्तर ।
 ऊँघ—(स्त्री० हि०) मपसी ।
 —ना=रूपसी लेना ।
 ऊँचा—(वि० हि०) उठा हुआ ।
 श्रेष्ठ । ऊँचे=ऊपर की धार ।
 ऊँकटारा—(पु० हि०) एक
 कौटीली भाड़ी जिसको ऊँट
 बड़े घाव से खाते हैं ।
 ऊँह—(अन्य० देश०) नहीं ।
 ऊँथावाइ—(वि० हि०) अडबड ।
 ऊँकना—(क्रि० हि०) चुकना ।
 छाड़ देना ।
 ऊँ—(पु० हि०) गत्ता ।
- ऊन्वल—(पु० हि०) फाट वा पत्थर
 का बना हुआ एक गहरा बतन
 जिसमें धानादि रखकर मूसल
 से धूरा जाता है ।
 ऊजड—(वि० हि०) उजड़ा
 हुआ । बिना बस्ती का ।
 ऊटपटांग—(वि० हि०) घटपट ।
 व्यर्थ ।
 ऊत—(वि० ध०) गँवार ।
 ऊद—(स्त्री ध०) अगर की लकड़ी
 जो जलाने पर सुगन्ध देती
 है । ऊदी=ऊद का रंग ।
 ऊदविलाव—(पु० हि०) नेवले
 के आकार का एक जंतु ।

- भूना = फँसना । उलझाव = अटकाना । भगदा । चकर । उलझेदा = अटमाना । यत्नेदा । खींचतानी ।
- उलटना—(क्रि० हि०) ऊपर नीचे होना । खींचा होना ।
- उलटना पलटना—(क्रि० हि०) नाच ऊपर करना । अटपट करना । धार का धीर करना । उलट-पलट = हेर फेर । गड़बड़ी । उलट-फेर = परिवर्तन । अल-बदल । उलगा = आधा । उलट पुलट, उलगा पलटा = इधर का उधर । ये मिर-मिर का ।
- उलटी—(स्त्री० हि०) वमन । उलटे = ये ठिकाने ।
- उलथा—(पु० हि०) उलटा । फरपट बदलना ।
- उलफत—(स्त्री० अ०) प्रेम । प्रीति ।
- उलरना—(त्रि० हि०) कूटना । नीचे ऊपर होना ।
- उलहना—(क्रि० हि०) उभड़ना । हुलसना ।
- उलार—(वि० हि०) जो पीछे की ओर झुका हो । —ना = नीचे ऊपर फँकना ।
- उलारा—(पु० हि०) वह पद जो चौताल के अन्त में गाया जाता है ।
- उलाहना—(पु० हि०) किम्वी की भूल को उसे दुःख-सूचक बनाना । शिक्कायत ।
- उलमा—(स्त्री० सं०) तारा टूटना या लूक टूटना । —पात = तारा टूटना । उत्पात ।
- उल्लघन—(पु० सं०) लींघना । न मानना ।
- उल्लेख—(पु० सं०) लिखना । बखान । —नीय = लिखने योग्य ।
- उश्राक—(पु० अ०) आशिक का बहुवचन ।
- उश्रा—(पु० अ०) एक पेड़ जिसकी जड़ रक्त-शोधक होती है ।
- उपा—(स्त्री० सं०) प्रभात । अरण्योदय की क्षणिकता । —काल = प्रभात ।

उष्ण—(त्रि० स०) गरम । पुर-
 लोला । —कण्ठिष्य=पृष्ठी
 का वह भाग जो एक धीरे
 मकर रेखाओं के बीच में
 पड़ता है । —ता=गरमी ।
 उष्मा=गरमी । धूप ।
 उमनना—(क्रि० हि०) धामल
 उवाजना । पशाना ।

उसूल—(पु० घ०) सिद्धांत ।
 उस्तरा—(पु० पा०) उस्तुरा । धुरा ।
 उस्ताद्—(पु० ऋ०) गुर । मास्तर ।
 उस्तादी=मास्ती । पतुराद् ।
 विशता । चालाकी । उस्तानी
 =गुप्तानी । चालाक स्त्री ।
 उद्दा—(पु० घ०) पद । रतया ।
 उद्धार—(पु० पा०) परदा ।

ऊ

ऊ

ऊन्विलाच

ऊ—हिन्दी-वणमाला का छठा
 स्वर ।
 ऊँघ—(स्त्री० हि०) मपत्ती ।
 —ना=मपकी लेना ।
 ऊँचा—(वि० हि०) उठा हुआ ।
 श्रेष्ठ । ऊँचे=ऊपर की धार ।
 ऊँट-कटारा—(पु० हि०) एक
 पँटीली भाड़ी जिसको ऊँट
 बड़े घाव से खाते हैं ।
 ऊँहँ—(अव्य० दश०) नहीं ।
 ऊँआगई—(वि० हि०) शब्दबद्ध ।
 ऊकना—(क्रि० हि०) चूकना ।
 छाप देना ।
 ऊर—(पु० हि०) गला ।

ऊमल—(पु० हि०) काठ का पत्थर
 का बना हुआ एक गहरा घतन
 जिसमें धानादि रखकर मूसल
 से धुना जाता है ।
 ऊजड़—(वि० हि०) उजड़ा
 हुआ । मिना यस्तो का ।
 ऊटपटाँग—(वि० हि०) थटपट ।
 ध्वधं ।
 ऊत—(वि० थ०) गँवार ।
 ऊद—(स्त्री घ०) अगर की लकड़ी
 जो जलाने पर सुगंध देती
 है । ऊदी=ऊद का रग ।
 ऊदविलाच—(पु० हि०) नेबले
 के आकार का एक जलु ।

ऊ

ऊदा—(वि० श०) बैगनी रंग का।

ऊधम—(पु० हि०) उपद्रव।

दगा फसाद। ऊधमी=ऊधम
करनेवाला। फसादी।ऊन—(पु० हि०) भेद बररी
श्राप्ति का राश्यां।ऊपर—(वि० स्त्री० हि०) ऊँचे
स्थान में। आघार पर। उच्च
श्रेणी में पढ़ने। अधिक।ऊब—(स्त्री० हि०) घबराहट।
—ना=घबराना।ऊमी—(स्त्री० हि०) जौ या गेहूँ
की हरी बाली।ऊलनलुता—(वि० हि०) बे
सिर पैर का। शनाड़ी। बे
अदब।ऊदापोह=(पु० म०) सोच
विचार।

ऋ

ऋ

ऋषि

ऋ—हिन्दी व्यंजना का सातवाँ
स्वर। इसका उच्चारण
स्थान मूर्द्धा है।ऋज्जद—(पु० म०) चार वेदों
में से एक।ऋण—(पु० स०) ऋण। ऋणी=
ऋणदार। उपकार मानने
वाला। —ऋस्त=ऋणदार।
—शोधन=ऋण चुकाना।ऋतु—(स्त्री० म०) मौसम।
—काल=रनोत्थान के उप
रात के १६ दिन तिनमें
स्त्रिया गभ वारण के योग्यहाती है। —ऋष्या=ऋतुओं
के अनुसार आहार विहार की
यत्न। —दान=गमा
धान। —मती=रजस्वला।
निम्न ऋतुकाल हो।

ऋतुराज—(पु० सं०) बसंत ऋतु।

ऋत्विज—(पु० स०) यज्ञ करने
वाला।

ऋद्धि—(स्त्री० स०) धन। लक्ष्मी।

ऋद्धि सिद्धि—(स्त्री० स०)
समृद्धि और सफलता।ऋषि—(पु० स०) वेद मंत्रों का
प्रकाश करनेवाला।

ए—हिन्दी-वर्णमाला का आठवाँ
स्वर । इसका उच्चारण फट
और तालु से होता है ।

एजिन—(पु० अ०) इजन ।

एँडावँडा—(वि० हि०) अड-अड ।
सोधे तिरछे ।

एँडी—(पु० हि०) पैर का पिड़ला
हिस्सा ।

एक—(वि० स०) इकाइयों में
सब से छोटी और पहली
संख्या । अकेला । कोई ।
एकही प्रकार का ।

एकद्वय—(वि० स०) निष्कटक ।

एकजीम्युटिव—(वि० अ०)
प्रत्यय विषयक । प्रत्यय करने
वाला । —आक्रिसर = नियमों
का पालन करनेवाला राज
कर्मचारी । —कमेटी = प्रथम
कारिणी समिति ।

एकटवी—(छो० हि०) टफटकी ।

एकर—(पु० अ०) पृथ्वी की एक
३२ बिस्व के बराबर
। एकड़ ।

एकतरफा—(वि० प्रा०) एक
थोर का । जिनमें एकपात
किया गया हो । एक रुखा ।

एकता—(छो० स०) मेल ।

एकतारा—(पु० हि०) एक तार
का सितार वा बाजा ।

एकदेशीय—(वि० स०) एक
देश का ।

एकफर्दा—(वि० फा०) एक
कमला ।

एकवारगी—(वि०फा०) विरकुल ।
एक ही दफ्ते में । अचानक ।

एकपाल—(पु० अ०) प्रताप ।
भाग्य । स्वीकार ।

एकरग—(वि० हि०) समान ।

एकरस—(वि० हि०) एक डग
का । समान ।

एकरार—(पु० अ०) स्वीकार ।
वाद ।

एकलौता—(वि० रि०) अपने
माँ याप का एक ही लड़का ।

एकसत्तावाद—(पु० स०
एकाधिपत्य का सिद्धान्त ।

एक्स

एक्ससाँ—(वि० प्रा०) बराबर ।

हमवार ।

एक्सहग—(वि० हि०) एक परत
का ।एक्कात—(वि० सं०) अत्यन्त ।
अलग । —ता = अकेलापन ।

—वाम = अकेले में रहना ।

सत्र से चारे रहना । —वामी

अकेले में रहने वाला । निजन

स्थान में रहन वाला ।

—स्वरूप = असंग । एकातिक

= जा एक ही स्थल के लिये

हो ।

एक्का—(स्त्री० सं०) मेल । —इ
इना* ।

एक्काएक—(वि० हि०) अचानक ।

एक्काएकी = अकस्मात् ।

एक्कामार—(पु० सं०) एकमय
होना ।

एक्काकी—(वि० हि०) अकेला ।

एक्काग्र—(वि० सं०) अचलता

रहित । —चित्त = जिनका

ध्यान बँधा हो । —ता =

चित्त का स्थिर होना ।

एक्कात्मता—(स्त्री० सं०) एकता ।

एकमय होना ।

एक्कादशी—(स्त्री० सं०) ग्याहवीं
तिथि ।एक्काधिपत्य—(पु० सं०) एक
व्यक्ति के हाथ में पूर्ण अधि
कार ।एक्कीकरण—(पु० सं०) मिला
कर एक करना ।एक्केडेमी—(स्त्री० अ०) शिक्षा-
लय । वह सभा या समान
जो शिक्षकता या विज्ञान की
उन्नति के लिये स्थापित हुआ
हो ।एक्का—(वि० हि०) अकेला ।
ताश का पत्ता जिनमें एक ही
घूमे होता है ।एक्कासर्चेंज—(पु० अ०) बदला ।
वह स्थान जहाँ नगर के ध्या
पारी और महाजन परस्पर
लेन-देन वा क्रय विप्रय के
लिये हकट्टे होते हैं ।

एक्कासपट—(पु० अ०) विशेषज्ञ ।

एक्कासपोर्ट—(अ०) निकला
हुआ । बाहर भेजना । निर्यात ।

एक्कासलोरिद—(पु०, अ०)

भमक उठनेशाला पदार्थ ।
गधक, बारूद आदि ।

एम्साइज—(पु० अ०) महसूल ।
धुंगी ।

एजामिनेशन—(पु० अ०)
परीक्षा । इम्तिहान ।

एग्जिविट—(पु० अ०) प्रदर्शनी
आदि में दिखाई जाने वाली
वस्तु । वह वस्तु जो अदालत
में प्रमाण स्वरूप दिखाई जाय ।

एग्जिडिशन—(पु० अ०) प्रद
शनी । नुमाइश ।

एगानगी—(स्त्री० क्रा०) एका ।
मिश्रता ।

एजुकेशन—(पु० अ०) शिक्षा ।
तालीम ।

एजुकेशनल—(वि० अ०) शिक्षा
सम्बन्धी ।

एजेंट—(पु० अ०) मुत्तार ।
वह आदमी जो किसी कोठी,
कारखाने या व्यापारी की
ओर से माल बेचने या खरी
दने के लिये नियुक्त हो । वह
अक्सर जो अँगरेज सरकार
की ओर वि के रूप

में किसी देशी राज्य में रहता
हो ।

एजेंट-गवर्नर-जनरल—(पु०
अ०) वह राजपुरुष या अफ-
सर जो बड़े ज़ाट के प्रतिनिधि
रूप से वह देशी रियासतों
की राजनीतिक दृष्टिसे देस
भाल करता हो ।

एजेंडा—(पु० अ०) किसी सभा
का कार्य-क्रम ।

एजेंसी—(स्त्री० अ०) आइत ।
वह स्थान जहाँ एजेंट या
गुमारते किसी कम्पनी या फार
खाने के लिये माल खरीदते
हो । वह स्थान जहाँ सरकार
या बड़े ज़ाट का प्रतिनिधि
रहता हो या उसका कार्या-
लय हो । वह प्रात जो राज-
नीतिक दृष्टि से एजेंट के
अधिकार में हो ।

एडीनाग—(पु० अ०) सेनापति
का सहायक कर्मचारी ।

एडेस—(पु० अ०) पता । चिट्ठी
पहुँचने का ठिकाना । अभि-
नन्दन पत्र ।

एतकाद—(पु० अ०) विश्वास ।
 एतदाद—(अ०) गिनना । शुमार
 करना ।
 एतराज—(अ०) आपत्ति ।
 एतमाद—(अ०) निसा पर
 भरोसा करना । विश्वास
 करना ।
 एतदाल—(पु० अ०) बराबरी ।
 एतदार—(पु० अ०) विश्वास ।
 एन्डोर्स—(पु० अ०) हुंडा पर
 दस्तखत करना । सकारना ।
 एनामेल—(पु० अ०) एक प्रकार
 का लेप जो धातुओं आदि
 की वस्तुओं पर लगाया जाता
 है । यह कई रंग का होता
 है और सूखने पर यदा मज
 बूत और चमकदार होता है ।
 एतराज—(पु० अ०) आपत्ति ।
 एप्रूपर—(पु० अ०) इक्याली
 गवाह । सरकारी गवाह ।
 एफिडेविट—(पु० अ०) शपथ ।
 हखत । हखतनामा ।
 एमिग्रेशन—(पु० अ०) एक देश
 से दूसरे देश या राज्य में
 बसने जाना ।

एम्बुलेंस—(पु० अ०) मैदाना
 अस्पताल । एक प्रकार की
 गाड़ी जिसमें घायलों या
 बीमारों को लेटाकर अस्पताल
 पहुँचाते हैं ।
 एम्बुलेंस कार—(पु० अ०)
 अस्पताल में घायलों या
 बीमारों को ले जाने वाली
 मोटर ।
 एरोप्लेन—(पु० अ०) वायुयान ।
 हवाई जहाज ।
 एलकोहल—(पु० अ०) एक
 प्रसिद्ध मादक तरल पदार्थ ।
 फूल-शराब ।
 एलचो—(पु० अ०) राजदूत ।
 एतार्म—(पु० अ०) विपद् या
 खतरे का सूचक शब्द या
 संकेत । —बेल = खतरे का
 घटा । —चेन = खतरे की
 जंजीर ।
 एलेक्टर—(पु० अ०) मतधि
 कार प्राप्त मनुष्य । निर्वाचक ।
 एलेक्टरेट—(पु० अ०) उन लोगों
 का समूह जिन्हें वोट देन का
 अधिकार हो ।

एलेक्स्टेड—(वि० अ०) चुनाव
हुआ । निर्वाचित ।

एलेक्शन—(पु० अ०) निर्वाचन ।
चुनाव ।

एलडरमैन—(पु० अ०) म्युनि
सिपल कारपोरेशन का सदस्य ।

एन—(वि० स०) जेमाही ।

एनज—(पु० अ०) बदला । परि
वर्तन । एनजी = स्थानापन्न
आदमी ।

एनेन्यू—(पु० अ०) कुत्र । रास्ता ।

एशिया—(पु०) एक महाद्वीप,
जिसमें भारत, फारस, चीन,
महा आदि अनेक देश सम्मि
लित हैं । —ई = एशिया
का । —ई रुम = एशिया का
एक देश । —ई रुस =
एशिया का एक देश ।

एनिड—(पु० अ०) तेजाब ।

एसैब्ली—(स्त्री० अ०) सभा ।
परिषद् । मजलिस । समूह ।
जमाव ।

एनम्—(पु० अ०) पुष्प-मार ।
अंतर । धरक । मुगधि ।

एम्पराटो—(स्त्री० अ०) यूरोप
में प्रचलित एक नवीन कल्पित
भाषा ।

एस्टिमेट—(पु० अ०) अंदाज़ ।
अनुमान ।

एहतमाम—(पु० अ०) प्रबन्ध ।
जाँच ।

एहतियात—(स्त्री० अ०) साव
धानी । बचाव । परहेज़ ।

एहसान—(पु० अ०) निहोरा ।
—मद = निहोरा मानने
वाला । कृतज्ञ ।

ऐ—हिंदी-व्यंगमाला ज्ञानधौं स्वर।
इमका उच्चारण-स्थान कठ
और तालु है।

ऐं—(अ० हि०) एक अक्षर
जिसमें आदेश्य सूचित होता
है। जैसे क्या कहा? फिर तो
कहा!

ऐचना—(कि० हि०) सींचना।
अपन जिम्मे लेना।

ऐचाताना—(प्रि० हि०) जिसकी
पुतली तारुने में दूमरी और
को पिचनी है। ऐचातानी =
भ्रांथा-खोबी।

ऐठ—(पु० हि०) अहकार की चेष्टा।
घमड़। विराध। —न =
धुमाव। ऐंघ। ऐंठा = रस्ता
बटने का एक यंत्र। ऐंठू =
अकड़वाज। टर्ग। ऐंठ =
गर्ग। ऐंठदार = ठसकवाला।
शानदार। ऐंठा = टड़ा।

ऐकट—(पु० अ०) जानून।
नाट्यकला। ऐक्टर = नाटक
का कोई पात्र।

ऐक्टिंग—(खी० अ०) रूपाभि
नय। चरित्राभिनय।

ऐक्ट्रेस—(खी० अ०) अभिनेत्री।
रगमच पर अभिनय करने
वाली स्त्री।

ऐक्य—(पु० म०) मेल।

ऐजन—(अ० अ०) तथा।

ऐट्रिब्यूटिंग आफिसर—बोट लिखे
जाने के समय साक्षी स्वरूप
उपस्थित रहनेवाला अफसर।

ऐडवोकेट—(पु० अ०) अदालत
में किमी का पक्ष लेकर बोलने
वाला। —जनरल = सरकारी
वकील जो हाईकोर्टों में सर
कार का पक्ष लेकर बोलता है।

ऐडमिनिस्ट्रेटर—(पु० अ०)
वह जिसके अधीन किमी
राज्य या बड़ी जमींदारी का
प्रबंध हो।

ऐडमिनिस्ट्रेशन—(बु० अ०)
प्रबंध। व्यवस्था। शासन।
राज्य।

ऐडमिरल

ऐडमिरल—(पु० अ०) जल
सेनापति ।

ऐडवाइजर—(पु० अ०) सलाह
देनेवाला ।

ऐडवाइजरी—(स्त्री अ०) सलाह
देनेवाली ।

ऐडिशनल—(वि० अ०)
अतिरिक्त ।

ऐमेचर—(पु० अ०) शौकीन ।

ऐतिहासिक—(वि० स०) इति-
हास सम्बन्धी । जो इतिहास
जानता हो ।

ऐन—(पु०) ठीक । बिल्कुल ।

ऐनक—(स्त्री अ०) चरमा ।

ऐव—(पु० अ०) दोष । कलक ।

ऐवी = खोटा । दुष्ट । विशेषत
फाना । —जोई = दोष निका-
लना ।

ऐयाम—(पु० अ०) दिन ।
वक्त । मौसम ।

ऐयार—(पु० अ०) चालाक ।
धोखेबाज़ । ऐयारी = चालाकी ।
धोखेबाज़ी ।

ऐयाश—(वि० अ०) विपयी ।
ऐयाशी = भोग विलास ।

ऐरा-गैरा—(वि० अ०) बेगाता ।
इधर उधर का ।

ऐराब—(पु० अ०) शतरज में
बादशाह की किस्त बचाने के
लिय किसी मोहरे को बीच
में डाल देना ।

ऐरिस्टोक्रेसी—(स्त्री अ०) एक
प्रकार की सरकार । सरदार-
तंत्र । कुलीन समाज ।

ऐश—(पु० अ०) धाराम । भोग-
विलास ।

ऐश्वर्य्य—(पु० स०) धन सम्पत्ति ।
अधिकार । —वान = वैभव
शाली ।

ऐसा—(वि० हि०) इस प्रकार
का । ऐसे = इस ढंग से ।

ओ—हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ स्वर । इसका उच्चारण-स्था शोष्ठ और षड् है ।
 ओंकार—(पु० स०) “ आ ” शब्द ।
 ओंठ—(पु० हि०) लय, होंठ ।
 ओखली—(खा० हि०) काँची ।
 ओगरना—(क्रि० हि०) निचुड़ना ।
 ओगारना = कूआँ मारना करना ।
 ओछा—(दि० हि०) बुरा । हलका । छोटा । —पन = नीचता । छुद्रता । —इ = छोटापन ।
 ओज—(पु० म०) बल । उचाहा । कविता का एक सर्वोत्तम गुण जिमसे सुनने वाले के चित्त में आरोग्य उत्पन्न हो । —स्वित्ता = तेज । प्रभाव । —स्वी = तेजमान । प्रतापी ।
 ओम्हा—(पु० हि०) मादहियों की एक जाति । भूतप्रेत भावने

वाला । —इ = भाइ-भूँक ।
 —इ = ओम्हा की छी ।

ओट—(स्त्री० हि०) आद । शरण । एक प्रकार का घुघु ।

ओटा—(क्रि० हि०) कपास का चरपी में दबाकर रई और जिनालों को अलग करना । धार धार कड़ना । ओटनी = कपास ओटने की धरखा । बेलनी । ओटा = कपास ओटनेवाला आदमी । पन्डे की दीवार । जूत के पास पिमनहरियों के धेन्ने का चतूतरा । सोनारोंका एक औजार ।

ओठँगना—(क्रि० हि०) महारा लेना । टेक लगाना ।

ओढ़ना—(क्रि० हि०) कपड़े या किमी वस्तु से देह ढकना । अपने तिर लेना । ओढ़नी = उपरैनी ।

ओढ़र—(पु० हि०) बहाना ।

के काम की मज़दूरी ।
 ओसारा = दाँये हुये गल्ले को
 हवा में उड़ाना जिससे दाना
 और भूमा अलग हो जाय ।
 ओसारा—(पु० हि०) बालान ।
 सायदान ।
 ओह—(अ० हि०) धारचय्य
 सूचक शब्द । दुःख-सूचक

शब्द । बेपरवाही का सूचक
 शब्द ।

ओहदा—(पु० अ०) पद । ओहदे
 दार = पदाधिकारी । हाकिम ।
 ओहार—(पु० हि०) परदा ।
 ओहो—(अ० स० अ०) धारचय्य सूचक शब्द ।
 आनन्द-सूचक शब्द ।

औ

औ

औदार्य

औ—हिन्दी-वर्णमाला का ग्यार
 हवाँ स्वर । इसके उच्चारण का
 स्थान फट और आष्ट है ।

आघा—(आ० हि०) हलकी
 नौद ।

औड—(पु० हि०) गड्डा खादने
 वाला ।

औघना—(कि० हि०) उलट
 जाना । औघा = उलटा ।
 औघाना = उलट देना ।

औस—(पु० अ०) आठस । एक
 धमती धौल ।

औकात—(पु० बहु०) समय ।
 हैसियत ।

औघड—(पु० हि०) अघोरी ।
 मनमौजी ।

औचक—(कि० वि० हि०)
 अचानक । औघट = अचानक ।

औज—(अ०) उँचाई ।

औजार—(पु० अ०) हथियार ।

औटना—(कि० हि०) बूध वा
 किमी पतली चीज़ को आग
 पर रखकर धीरे धीरे गाढ़
 करना । खैलाना ।

औटार्य—(पु० अ०) बहारवा

श्रौद्योगिक—(वि० म०) उद्योग सम्बन्धा । घघे-सम्बन्धा ।

श्रौपनिपेदिक—(पु० म०) उपनिवेश सम्बन्धा ।

श्रौपन्यासिक—(वि० म०) उपन्यास में वर्णन करने योग्य । विलक्षण ।

श्रौर—(अल्प० हि०) सयोजक अल्पय । दूसरा । अधिक ।

श्रौरत—(स्त्री० अ०) स्त्री । पत्नी ।

श्रौरस—(पु० स०) अपनी ज्ञास धमपत्नी से उत्पन्न पुत्र ।

श्रौरेव—(पु० हि०) तिरछी घात । कपड़े का तिरछी घाट । उल-का । घात की बात ।

श्रौलाव—(स्त्री० अ०) सतात । नस्त ।

श्रौलिया—(पु० अ०) पहुँचे हुये कत्रीर ।

श्रौपघ—(सो० स०) दया ।

श्रौमत्—(पु० अ०) बराबर का पड़ता । साधारण ।

श्रौसाफ—(अ०) वस्तु का बहुत घघन । सद्गुण ।

क

क

कँगला

क—हिन्दी-वर्णमाला का पहला व्यंजन । इसका उच्चारण मूठ से होता है ।

ककड—(पु० हि०) एक सजीव पदार्थ जिसमें चूना और चिकनी मिट्टी का अंश मिजा होता है । पत्थर का छोटा टुकड़ा । ककड़ी = छोटा ककड़ । कण । ककड़ीला = ककड़ मिजा हुआ ।

ककण—(पु० सं०) कषा । कगा ।

ककरीट—(स्त्री० अ० नातोड) फरा ।

ककाल—(पु० सं०) ठरती ।

कँगनी—(स्त्री० हि०) कौश कँगला । दगदागेदार लफार । एक अन्न का नाग ।

कँगला—(वि० हि०) कँगला । दरिद्र । शुष्क ।

कसरवेटिज—(वि० थ०) पुरानी
खडीर का प्रकीर । इगलैयड
देश के पालामेंग में यह राज
शैनिक दल जो निर्धारित
राज्य प्रणाली में कोड परिव
तन वा प्रनातत्र । मदा-तों
वा प्रमार नहा चाडता ।

कमट—(पु० थ०) कई एक
बाजो का एक साथ मिलाकर
बजाना । वा कई एक गायों
का मिलकर गाना-बजाना ।

कड़—(वि० हि०) अनेक ।

ककड़ी—(स्त्री० हि०) ज़मीन
पर फैलनवाला एक बेर
जिममें बम्बे-बम्बे फल लगत
हैं ।

ककली—(स्त्री० हि०) ददानेदार
चकर । एक मिठाई ।

कगर—(पु० हि०) किनारा ।
मेंद । कगार = ऊँचा किनारा ।
नदी का करारा । ऊँचा टीला ।

कचकच—(पु० हि०) बकवाद ।

कचनार—(पु० हि०) एक छोटा
पेड़ ।

कचर कचर—(पु० हि०) कच्चे
फल के राने का शब्द ।
बषवाद ।

कचर कूट—(पु० हि०) एक
पाटना । मारकूट ।

कचग्ना—(क्रि० हि०) पैर से
ठुथलना । खूष खाना ।

कचरा—(पु० हि०) ककड़ी ।
सेमल का टोंद । रहीं चीज़ ।
रुई का बिनौला जो पुनने
पर अलग पर दिया जाता
है । कचरी = ककड़ा का जाति
की एक बेल जा खेतों में
फैलती है । कचरी वा कच्चे
पेंडटे के सुखाये हुए टुकड़े ।

कचर्वासी—(स्त्री० हि०) खेत
भापने का एक मान ।

कचहरी—(स्त्री० हि०) जमा
बड़ा । दरवार । अदालत ।
दफ़्तर ।

कचारना—(क्रि० अनु०) कपड़ों
को पटककर धोना ।

कचालू—(पु० हि०) एक प्रकार
की चाट । कमरख, अमस्त
खीरे बकड़ी आदि के छोटे

छोटे टुकड़े जिनमें नमक मिर्च मिली रहती है।

कचूमर—(पु० हि०) कटूमर।
गूदा।

कचौरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की पूरी जिसमें उरद आन्त्रि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा—(वि० हि०) जो पका न हो। कमजोर। जो कायदे के मुताबिक न हो। गीली मिट्टी या बना हुआ। जिसे अभ्यास न हो। दूर दूर पड़ा हुआ तागे का डोभ। —असामी = वह असामी जो किसी खेत को दे ही एक फसल जोतने के लिये ले। जो अपना वादा पूरा न करता हो। जो अपनी बात पर दृढ़ न रहे। —बागज = एक प्रकार का फागज जो छोटा हुआ नहीं होता। जिस दस्तावेज की रजिस्टरी न हुई हो। —काम = कूड़ा काम। —घड़ा = जो आवें में पकाया न गया हो। सेवर घड़ा। —चिट्टा = पूरा और

ठीक ठीक ब्यौरा। —जोड़ = कच्चा टाँका। —तागा = पता हुआ तागा जो बटा न हुआ हो। —माल = वह रेशमी कपड़ा जिम पर फलक न किया गया हो। कूड़ा गोटा पट्टा। —शोरा = वह शोरा जो उबाला हुई नोनी मिट्टी के चारे पानी में जम जाता है। —हाथ = वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। (स्त्री० कच्ची) कच्ची फली = सुलवंधी फली। कच्ची बही = वह बही जिसमें किसी दुकान या कारखाने का पैसा हिसाब लिखा हो जो पूरा रूप से निश्चित न हो। कच्ची मित्ती = पकी मित्ती के पहले आनेवाली मित्ती। कच्ची रसोई = केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। कच्ची रोक्द = जिसमें प्रतिदिन के शाय-व्यय का कच्चा हिसाब दर्ज रहता है। कच्ची सिबाई = दूर दूर पड़ा हुआ

कच्ची कुर्की

ठोंका । कित्तारों का वह मिलाई जिसमें सब फरमे एक साथ हाशिय पर से सी दिये जात हैं । कच्चे बच्च = बटुत मे लड़के बाले ।

कच्ची कुशा—(स्त्री० हि०) वह कुर्की जो प्राय महाजन मुकदमें के फैसला होन के पदल कराते हैं ।

कच्छप—(पु० म०) कछुआ । एक श्रमदार ।

कदनी—(स्त्री० हि०) घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती ।

कद्वार—(पु० हि०) समुद्र वा नदा के किनारे की भूमि जो तर और नीचा होती है ।

कदुआ—(पु० हि०) एक जत जगु जिसके ऊपर यदी कड़ी ढाल का तरह की खोपड़ी होती है ।

कज—(पु० पा०) टेढ़ापन । दोष ।

कजली—(स्त्री० हि०) कालिख । एक प्रकार का गात ।

कजा—(स्त्री० अ०) मीत ।

कजाक—(पु० तु०) सुटेरा ।

कजाकी = सुटेरापन । दल

कपट । श्रजिया = मगदा ।

श्रज्यात्र = दारू । चालाक ।

श्रज्यात्री = दारूपन ।

कटरु—(पु० म०) सेना ।

कटकटाना—(क्रि० हि०) दाँत पीसना ।

कटघरा—(पु० हि०) पाठ का घर । यदा भारी पिजदा ।

कटती—(स्त्री० हि०) बिक्री । छूटना । समय का बीतना । एक मस्या का दूसरी सण्या के साथ ऐसा भाग खाना कि शेष न बचे । चलती गाड़ी में से माल चोरा होना ।

कटनी—(स्त्री० हि०) काटने का औजार । कटपीस = नये कपड़ों का वह डुरुदा जो थान बड़ा होने के कारण उसमें से काट लिया जाता है । कटाइ = काटने का काम । फूसल काटन की मजदूरी ।

कटरा—(स्त्री० हि०) छोटा

बीमार बाजार । मैंस का नर
बधा ।

कटहल—(पु० हि०) एक सदा
बहार बना पेड़, जो भारत
में प्रायः सभी स्थानों में जहाँ
गामों पड़ती है, हाता है ।
निसके फल बहुत बड़े बड़े हाने
हैं । फल के अन्दर गुठली
होता है । भीतर में रेशे की
कपरियो में बंधे होते ह,
जो पत्रने पर बहुत मीठे हाते
हैं । कचे का सरकारी बनता
है ।

कटाकटो—(स्त्री० हि०) मार
काट ।

कटाक्ष—(पु० स०) तिरछी
नज़र ।

कटार—(पु० हि०) एक बालिशत
का छोटा सा हथियार ।
कटारो = छाटा कटार ।

कटि—(स्त्री० स०) कमर । —बध
= कमरबन्द । गरमी सरदो
के निवार से किये हुये पृथ्वी
के पाँच भागों में से कोई
एक । —बद्ध = कमर बांधे

हुये । तैशर । —सूत्र = सूत
को बरधनी ।

कटीना—(वि० हि०) काट करने
वाला । गहरा धसर करने
वाला । मोहित करनेवाला ।
काटेदार । चुकीला ।

कटोरदान—(पु० हि०) पीतल
का एक टकनदार बतन ।
कटारा = धातु का प्याला ।
कटोरा = छोटा कटारा ।

कटौनी—(स्त्री० हि०) किसी
रकम का देते हुये उसमें से
कुछ बैंग हक धर्माथ निकाल
लेना । कमीशन ।

कट्टर—(वि० हि०) कट्टहा । अथ
विरासी । हठी ।

कट्टा—(वि० हि०) मोटा ताज़ा ।
बलवान ।

कट्टा—(पु० हि०) ज़मीन की एक
नाप जो २ हाथ ४ अंगुल की
होती है ।

कठिन—(वि० स०) सप्रत ;
दुखिल । सकट । —ता =
सप्रता । कठोरता । कट्टता ।
कठिनाई = सप्रती । कठोर =

कटुला

सम्रत । निदम । घेरदम ।
कगेरता = सम्रता ।

कटुला—(पु० हि०) गले की
माला जो बच्चों का पहनाइ
जाती है । हार ।

कठौत—(स्त्री० हि०) छोटा
कठौता । कठौता = काट का
थना हुआ एक बड़ा बतन ।
कठौती = जोटा कठौता ।

कडक—(स्त्री० हि०) तड़प ।
—ना = गड़गड़ाना । चिटकने
का शब्द होना । फटना ।
घामाज के साथ टूटना ।

कडवा—(पु० हि०) वीरों की
तारीख में भरे युद्ध के गीत ।
आवहा । कडसैत = भाट ।
कडखा गानेवाला पुरुष ।

कडवी—(वि० हि०) कटु ।
तीखी ।

कडा—(पु० हि०) हाथ या पाँव
में पहनने का गहना । कठोर ।
सम्रत । रुखा । उम्र । कसा
हुआ । तेज । दुष्कर । तेज
असर रखनेवाला । सुरा
लगनेवाला । ककश ।—का

किमी बड़ी वस्तु के टूटने का
शब्द । उपवास । घोन =
चाँद मुँह की बन्दूक । छोटा
बन्दूक जिसका नाम भौंका
भी है । —ई = सम्रती ।

कडादा—(पु० हि०) छोटे का
बहुत बड़ा गोला बतता ।
कडाही = छोटा कडादा ।

कडो—(स्त्री० हि०) जर्जर या
सिक्कों का लकी का एक
छद्मा । कठार ।

कडुवा तेल—(पु० हि०) सरसों
का तेल । कडुमाइट = कडु था
हट = कडु आपन ।

कट्टी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का सामान ।

कण—(पु० सं०) जरी ।

कतइ—(वि० अ०) नितोत ।
विलकुल ।

कतराना—(स्त्री० हि०) किसी
वस्तु या व्यक्ति को बचाकर
किनारे से निकल जाना ।

कत—(अ०) बस । कत्रत
समाप्त ।

कतरा—(पु० अ०) बूँद ।

कतरी—(स्त्री० हि०) फोन्ट का पाट जिम पर बैठकर तेली धैत्र को हाँवगा है ।

कतल—(पु० थ०) हत्या । कृत काम = मर्यसाधारण का कथ ।

कन्याग—(पु० हि०) पूजा करकट ।

कता—(स्त्री० थ०) यन्त्रापट । डग । कपड़े को काट छाँट ।

कनार—(स्त्री० थ०) पत्ति । समूह ।

कतारा—(पु० हि०) एक प्रकार की स्याल रंग की ऊप जा बहुत लम्बी होती है ।

कनिपय—(वि० स०) कह एक । बुद्ध ।

कनोत्री—(स्त्री० हि०) कातने की क्रिया या भाग । कातने की मजदूरी । निरर्थक श्रम तुच्छ काम ।

कथइ—(वि० हि०) रैर के रग का । कथा = रैर के पेड़ की लकड़ियों को उपालकर निकाला हुआ रस ।

कथक—(पु० हि०) नाचने गाने

धर्मानेवालो एक जाति ।

कथक = कथा कहनेवाला ।

कथकइ = बहुत कथा कहने

वाला । कथन = कहना ।

कथनीय = कहने योग्य । निद

नीय । कथा = बात ।

धर्मा । समाचार । वाद

विवाद । कथानक = कथा ।

छोटी कथा । कथा प्रबन्ध =

कथा की गठन या चन्द्रिश ।

कथा प्रमग = अनेक प्रकार

की बातचीत । कथागार्ता-

अनेक प्रकार की बात चीत ।

कथित = कहा हुआ । कथो-

पकथन = बातचीत । वाद

विवाद ।

कल्ल—(थ०) हत्या । मार डालना ।

कल्लश्राम—(पु० थ०) सब लोगों

की बह हत्या जा पिना किमी

छाटे बड़े अपराधी या निरपराध

का विचार किये की जाय ।

कदा—(पु० स०) पदम का पेड़ । —क = समूह ।

कद—(पु० थ०) ऊँचाई ।

कदम

कदम—(पु० अ०) पैर । चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर । घोड़े को एक धाल । —चा=पैर रखन का स्थान । सुइदी ।

कदर—(स्त्री० अ०) मान । प्रतिष्ठा । —दान=कदर करने वाला । —दानी=गुण माहकता ।

कदामन—(स्त्री० अ०) प्राचीनता । सातन । कदमी=पुराना ।

कद—(पु० फा०) घर गाँव ।

कदीम—(पु० अ०) पुराना । प्राचीन ।

कदुरत—(पु० अ०) रजिश । मैल ।

कदुदु—(पु० फ्रा०) लौकी ।

कनकटा—(वि० हि०) जिसका कान फटा हो । कनकटी=कान के पीछे का एक रोग ।

कनफनाना—(अ० हि०) सूजन आदि घन्तुओं के स्पर्श से मुख हाथादि अंगों में एक प्रकार का चुनचुनाहट मालूम

होना । चुनचुनाहट उत्पन्न करना । नागवार मालूम होना । चौकड़ा होना । रामाचित होना ।

कनकृत—(पु० हि०) बँटाई का एक ढग जिसमें रोत में खड़ी फूसल का अनुमान किया जाता है ।

कनकौवा—(पु० हि०) गुहा ।

कनकजुरा—(पु० हि०) गोजर ।

कनटोप—(पु० हि०) कानों को ढकनेवाला टोपी । कनपटी=कान और आँसु के बीच का स्थान । कनफटा=गोरखनाथ के अनुयायी यागी जा कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर, मिट्टी, लकड़ी आदि की मुद्रायें पढ़नते हैं । कनफुँका=कान फूँकनेवाला गुर । कनफुसका=कान में धीरे से बात कहनेवाला । चुगलखोर । कनफुसकी=कानाफूसी । कनरसिया=कान का जो रमिया हो । संगीत प्रिय ।

कनवास—(पु० थ०) एक मोटा कपड़ा जिससे नावों के पाल और जूने आदि बनते हैं।

कनवासर, कनवैसर—(पु० थ०) वह जो 'घोट' 'आडर' माँगता या समझ करता हो।

कनवासिंग, कनवैसिंग—(स्त्री० थ०) घाट पाने के लिये उद्योग करना।

कनयोकेशन—(स्त्री० थ०) यूनी-वर्सिटी का वह सालाना जलसा जिसमें परीक्षा में उत्तीर्ण ग्रैजुएटों को डिपलोमा आदि दिये जाते हैं।

कनस्तर—(पु० थ० कनिस्टर) टीन का चौखूँटा पीपा जिसमें घी तेल आदि रक्खा जाता है।

कनान—(स्त्री० तु०) मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किधी को घेरकर आड़ करते हैं।

कनाश्न—(थ०) सन्ताप। सम।

कन्द—(स्त्री० थ०) सक्रोध शकर।

कनिष्ठ—(वि० स०) उमर में

छोटा। कनिष्ठा = सब से छोटी। कनिष्ठिका = कानी उँगली।

कनी—(स्त्री० हि०) छोटा टुकड़ा। हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा। चावल के छोटे-छोटे टुकड़े।

कनीज—(फा०) बाँदी। चेरी। लोँडी।

कनीत्रिका—(स्त्री० स०) आँख की पुतली का तारा। रन्या।

कनेर—(पु० हि०) एक फूल का नाम।

कनोजिया—(वि० हि०) कनौज-निवासी। जिसके पूज्य कनौज के रहनेवाले रहे हों या कनौज से आये हो।

कनोती—(स्त्री० हि०) पशुओं के कान या उनके कानों की नाक। कानो के उठाने या उठाय रखने का ढग।

कनौज—(पु० हि०) फर्रुखाबाद जिले का एक नगर।

कन्या—(स्त्री० स०) लड़की। पुत्रो। बारह राशियों में से छठी राशि। —दान = विवाह

में वर को कन्या देने की रीति । —धन=स्त्री धन ।
—रामी=निसके लाम के समय चन्द्रमा कन्या-राशि में हो । चौपट । निरम्मा ।

कन्याकुमारी—(स्त्री०) रास कुमारी ।

कन्सरवेनी—(स्त्री० श्र०) सर फारा निराधुण या दस रेख ।

कन्सरवेटर—(पु० श्र०) निरी चक्र । देख-रेख करनेवाला ।

कन्सरवेटिव—(पु० श्र०) वह जो प्रजा-सत्तात्मक शासन प्रणाली का विरोधी हो । टारा ।

कपट—(पु० स०) छल । द्विपाव । —ना=धीरे से निकाल लेना । कपटी=धोये बाज़ । धान की फसल को भष्ट करनेवाला एक कीड़ा । तमाखू क पौधे में लगनेवाला एक राग । —श=दृष्ट देश ।

कपाट—(पु० स०) किबा ।

कपाल—(पु० स०) ध्वापदी । मस्तक । भाग्य । —क्रिया=मृगक-संस्कार क अतगत

एक काम निम्नमें जलते हुए शय की रोपदी को धाँस से पाइ देते हैं ।

कपास—(स्त्री० हि०) एक पौधा जिम्मेके डेंड से रूढ़ निफलती है ।

कपूत—(पु० हि०) घुग लडका ।

कपूर—(पु० हि०) एक सफ़ेद रंग का जमा हुआ सुगन्धित द्रव्य जो हवा में उड़ जाता है ।

कपाल—(पु० स०) गाल ।

कपोल-कल्पना—(स्त्री० स०) बनावटी बात । कपोल-कल्पित=बनावटी ।

कप्लान—(पु० श्र० कैप्टेन) जहाज वा मना का अफसर । दल का नायक ।

कफ—(पु० श्र०) कमोज़ या बुर्त की आस्तान के आगे की वह दाहरी पट्टा जिम्मेमें बदन लगात है । (श्र०) लहे का वह शब्द चन्द्राकार लुकदा जिम्मेम टोककर चक्रमक से आग निकालत है । (श्र०) शरार के तीन तर्कों में स

एक लवण । जैसे घात, पित्त,
कफ ।

कफगीर—(पु० पा०) दूधेली
या तरद की लवण उर्दी की
कच्चा जिसमें दाज, घी आदि
का माग निकालते हैं ।

कफन—(पु० अ०) यह कपड़ा
जिसमें मुरदा छपेटकर गाढ़ा
या सूँका जाता है ।
—खसोट=कफूम । कफन
खसोती=इधर-उधर से भले
या घुरे दग से घमोपार्जन
करने की श्रुति । कफनी=
मुरदे या कफ़ीरों के गले में
ढालनेवाला कपड़ा ।

कफस—(पु० अ०) पिंजरा ।
दरवा । कैदखाना । बहुत
तग और सकुचित जगह ।

कफंध—(पु० स०) बिना सिर का
घड़ ।

कफ—(वि० हि०) किम
समय । कदापि नहीं ।

कवडुी—(स्त्री० हि०) लडकों के
एक खेल का नाम ।

कवजा—() शाय ।

कवर—(स्त्री० अ०) क्रम ।

—स्तार=क्रम की जगह ।

मुर्दा गाढ़नेवाला गद्दा ।

—गाह=कवरस्तान ।

कवरग—(वि० दि०) चित्तज्ञ ।

कवल—(वि० वि० अ०) पहले ।
पेरतर ।

कवलस—(अ०) बुझाई । पेट
का दर्द ।

कवा—(पु० अ०) एक प्रकार का
पहनारा जो घुटनों के नीचे
सक जग्या और फुड़ ढीला
होता है ।

कवाड—(पु० दि०) रद्दी चीज़ ।

कवाड़ा=व्यथ की बात ।

कवाड़िया=टूटी-फूटी सबी

गली चीज़ें बेचनेवाला

आदमी । तुच्छ व्यवसाय

करनेवाला पुत्र्य ।

कवाव—(पु० अ०) सीसों पर
भूना हुआ मांस ।

कयाव चीनी—(स्त्री० अ०)

मिर्च की जाति की एक

लिपटनेवाली भाड़ी ।

कमाला—(पु० अ०) वह दस्ता
वेज़ जिसके द्वारा काई जाय
दाद एक के अधिकार से
दूमरे के अधिकार में चला
जाय ।

कमाहत—(स्त्री० अ०) मुश्किल ।
कमट ।

कवीर—(पु० अ०) गुरजन । चढा
शुजग । एश्यरवादो । मत
का नाम । एक प्रकार का
गीत वा पद जो हाली में
गाया जाता है । —पग =
कवीर का मतानुयाया ।

कवीला—(स्त्री० अ०) स्त्री ।

कनुलपाना—(स० हि०)
स्वाकार करवाना । कबूल =
स्वीकार । कनुतना = स्वीकार
करना । कबूलियत = वह
दस्तावेज़ जो पटा लनेवाला
पट्टे की स्वीकृति में टेका वा
पटा देनेवाले को लिख दे ।

कवूतर—(पु० फा०) एक पत्नी ।
कबूतरा = कवूतर की मादा ।
नाघनेवाली । सुन्दर स्त्री
(बाज़ार) ।

कबूद—(पि० फा०) आममानी ।
कत्र—(अ०) मुर्दा गाढ़ने का
गदा ।

कज्ज—(पु० अ०) पकड़ । दस्त
का सफ न हाना । कज्जा =
अधिकार । मूँठ । कज्जादार
= वह अधिकारा जिसका
रज्जा हो । दरीलका
असामी । कज्जियत = पाय
खान वा साफ़ न धाना ।
कजाविज्ज = अधिकार करने
वाला । कज्ज करनेवा
वस्तु । गरिह । कज्जा =
झावू । अधिकार ।

कज्जुलवसूल—(पु० फा०) वह
कागज़ जिस पर चेतन पाने-
वालों की भरपाई लिखी हा ।

कभी—(वि० हि०) किसी
समय । —कभी कभी =
बाज़ बाज़ दिन । कभी के =
बहुत पहले ही ।

कमगर—(पु० फ़ा०) कमान-
साज़ । इष्टियों के बैठाने-
वाला । चितेरा । कमनैत =
कमान चञ्चानेवाला ।

कमचा—(पु० प्रा०) बड़ई का
कमान का तरह का एक टेढ़ा
धौंजार ।

कमडल—(पु० स०) सन्यासियों
का जज्ञपात्र । कमडली =
साधु । पाखंडी ।

कमद—(पु० फा०) रेशम, सूत
वा कमड का फदेदार रस्ती
जिस फँकर चौर डाकू आदि
ऊँचे मफानों पर चढ़ते हैं ।

कम—(वि० फा०) थोड़ा ।
बुरा । —थसल = रोगला ।
—तर = छोटा । —तरीन =

बहुत छोटा ।

कमाव—(पु० फ्रा०) एक
प्रकार का मोग और गफ

पेशमी कपड़ा जिस पर कला
रत्तू के बेलबूटे बने होते हैं ।

कमी—(स्त्री० पु०) तीली ।

कमली लचदार छड़ी । काटा ।
बुका ।

कमल—(वि० फा०) दुबल ।

कमल—(फा०) बहुत कम ।

कमल—(स्त्री० फा०) कमली ।

कमली—(स्त्री० फ्रा०) कमी ।

थोड़ा । —कमतर (फा०)
बहुत कम । थति न्यून ।

कमनीय—(वि० स०) सुन्दर ।

कमदहन—(वि० फा०) श्रमागा ।

कमयदती = श्रमाग्य ।

कमयाव—(वि० फा०) दुलभ ।

कमर—(स्त्री० फ्रा०) कटि ।

—तोड़ = कुश्ती का एक
पेंच । —बद = पटुका ।

पेटी । इजारबद । —बस्ता =

तैयार । हथियारबद ।

कमर—(पु० फ्रा०) चाँद ।

कमरख—(पु० हि०) एक पेड़
का नाम ।

कमरा—(पु० लै० कैमेरा)

कोठी । फाटोप्राप्ता का एक

धौंजार । कबल । कमरी =

कमली । कमरी शँगरखा =
छोटा शँगरखा ।

कमल—(पु० स०) एक प्रसिद्ध
पूल ।

कमलमभी—(स्त्री० फा०)
मृत्तता ।

कमसरियट—(पु० थ०) कौज
के मोदीखाने का मुहफमा ।

कमसिन

कमसिन—(वि० फा०) कम
उन्नत का ।

कमर्शर—(वि० अ०) व्यापार
सम्बन्धी । व्यापारिक ।

कमाडर—(पु० अ० कर्मठर)
कमान अफसर । —इन
चाफ = प्रधान सेनापति ।

कमाइ—(छा० हि०) कमाया
हुआ धन । कमाऊ = कमाने
वाला । कमाना = कामकाज
करके रुपया पैदा करना ।
कमासुत = कमाने वाला ।
टपमी । कमेरा = काम करने
वाला आदमी ।

कमान—(स्त्री० फा०) धनुष ।
भङ्गाय । —अफसर = कमा
नियर । कमानी = लाहे को
तोली तार अथवा हमी प्रकार
की कोट लचीली यस्तु जो
इस प्रकार बँटाई हो कि दाव
पहन से लथ जाय और फिर
अपनी जगह पर धा जाय ।
कमानोत्तर = जिसमें कमानी
लगी है ।

कमाल—(पु० अ०) परिपूर्णता ।

धनुरता । अनोखा कार्य ।
कबीर के पुत्र का नाम ।

कमिटो—(स्त्री० अ०) समा
समिति ।

कमिश्नर—(पु० अ०) माल का
बहुत बड़ा अफसर जिसके
अधिकार में कई जिले हों ।

कमिश्नरी—(स्त्री० अ०) वह
भूभाग जो किसी कमिश्नर के
प्रबन्धाधीन हो । डिप्टिन ।
कमिश्नर की कचहरी । कमि
श्नर का काम या पद ।

कमी—(स्त्री० फा०) न्यूनता ।
नुकसान ।

कमीज—(स्त्री० अ०) एक
प्रकार का कुर्ता । जिसमें कली
और चौबगले नहीं होते ।
कमीस = कमीज ।

कमीना—(वि० फा०) नीच ।
—पन = नीचता ।

कमीशन—(पु० अ०) कुछ चुने
हुये विद्वानों की वह समिति
जो कुछ समय के लिये किसी
गुप्त विषय पर विचार करने
के लिये नियत की जाती है ।

कोई ऐसी सभा जो किसी कार्य की जाँच के लिये नियत की जाय। किसी दूर रहने-वाले आदमी की गराही लने के लिये एक वा अधिक वकीलों का नियत होना। दलाली।

कमेटी—(स्त्री० थ० कमिटी) समिति।

कमोड—(पु० थ०) एक प्रकार का शेंगरेज़ी ढग का पात्र जिसमें पापाना फिरते हैं। गमला।

केरा—(पु० हि०) मिट्टी का एक यतन। कड़वा।

कमोरी = मटका।

निक—(पु० प्रा०) सरकारी वेजसि या सूचना।

नेजम—(पु० थ०) वह आद्वान्त जिसमें सम्पत्ति का धेवार समाज का भाग है, व्यक्ति विशेष का।

नट—(पु० थ०) कग्गु

निजम के सिद्धान्त के माननेवाला।

कय—(स्त्री० थ०) घमन। उल्टी।

कयाम्—(पु० थ०) अनुमान। ध्यान।

कर—(पु० स०) हाथ। माल-गुजारी। टैक्स।

करई—(स्त्री० हि०) पानी रखने का एक वर्तन।

करक—(पु० स०) रक-रककर होनेवाली पीड़ा। रक-रककर जदान के साथ पेशाब का रोग। → ना = तड़कना। सालना।

करकन्व—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक जो समुद्र के पाना से निकाला जाता है।

करकट—(पु० हि०) कूडा।

करगह—(पु० फा०) वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं, और कपड़ा धुनते हैं। जुलाहों का कपड़ा धुनने का यंत्र।

जुनाहों या कारग्याता ।

करघा = करगह ।

करदुला—(पु० हि०) कलछा ।

भभूँजा की बड़ा कनधा ।

करतल—(पु० म०) हाथ का

गदारी । करतली = हथेली ।

ताला । करताल = नागों

हथलियों के परस्पर आगत

या शब्द । तक्की कोंस

प्राप्ति का एक वाक्ता । मँचोरा ।

करद—(त्रि० म०) मानगुजार ।

टैकम देवगाला ।

करदा—(पु० हि०) शिफा की

चन्नु म मिला हुआ कूड़ा ।

किपी बानु क विशने के समय

उपमें मिले हुये कूड़े कक

का घनी रुद्ध दाम कम कर

या मान अत्रिक देकर परा

करना । करौता । उदाहाइ ।

करजनी—(स्त्री० हि०) भोने

या चादा का कमर में पहनने

का एक गहना ।

करनफूल—(पु० हि०) म्त्रियों

के कान में पहनने का सोन

चाँदा का एक गहना ।

करनाटक—(पु० हि०) मद्रास

प्रांत का एक भाग । करना

टनी = करनाटक का निवासी ।

कलाबाज़ । जादूगर ।

करनी—(स्त्री० हि०) मृतक-

क्रिया । एक थीज़ार । करनी ।

करनैल—(पु० अ० काल) फौज

का बड़ा अफसर ।

करवता—(स्त्री० अ०) धरष

का उठ उजाड़ मेदान जहाँ

हुमैन मारे गये थे । जहाँ

ताज़िय दफ़न किये जायें ।

जहा पाना न मिले ।

करम—(पु० स० कर्म) काम ।

भाग्य । (अ०) मिहरवानी ।

उदारता ।

करमज्जला—(पु० अ० + हि०)

पातगोभी ।

करवट—(स्त्री० हि०) हाथ के

बल लेटने की मुद्रा ।

करवा—(पु० हि०) निंदी का

छोटा परतन ।

करश्मा—(पु० प्रा०) चमत्कार ।

कराइत—(पु० हि०) एक

प्रकार का काला साँप ।

कराइन—(पु० हि०) छप्पर के
उपर का फूस ।

कराइ—(स्त्री० हि०) दाल का
दिलका । कालापन ।

करावत—(स्त्री० अ०) समी
पता । सम्बन्ध ।

करावा—(पु० अ०) काँच का
छाटे मुँह का बड़ा पात्र ।

करामात—(स्त्री० अ०)
चमत्कार ।

करार—(पु० अ०) ठहराव ।
बादा ।

करारा—(पु० हि०) नदी
का वह ऊँचा किनारा जो
जल के घटने से बने । ऊँचा
किनारा । खूब सँका हुआ ।
—पन = फडाई । कराल =
जिसके घटे दाँत हों । करामती
शक्रे का । ऊँचा । दाँतों का
एक रोग । कराला = करामती ।

कराइ—(पु० हि०) पीडा का
शब्द । —ना = पीडा का
शब्द मुँह से निवाहना ।

कराही—(स्त्री० हि०) कदाश ।

करीना—(पु० अ०) दग । तर
ताव । गीति । व्यवहार ।

कराइ—(स्त्री० हि० अ०) समाप ।
लगभग ।

करीम—(अ०) दयालु । समा
कर्मनेता ।

करुण—(पु० स०) न्यायुक्त
शाक । करुणा = दया । शाक ।
करुणानिधान = दयालु ।
करुणानिधि = दयालु । करुणा
मय = दयालु ।

करनी—(स्त्री० अ०) हाथों हाथ
चलनेवाला । नोट ।

करवे—(स्त्री० अ० अ०) एक
झीना रेशमा कपड़ा ।

करेवत्रा—(पु० हि०) एक
कँगली बेल ।

करेला—(पु० हि०) एक तर-
कारी ।

करोड़—(वि० हि०) सौ लाख
की मर्यादा ।

करोटना—(स्त्री० हि०)
रराचना । करोना = रुर-
चना । करोनी = एक हुये वृक्ष
का वही नाम है जो

घटन में विपत्ता रह जाता है
और सुरचन से निश्चलता है ।
सुरचन नाम का मिठाई ।

फर्सादा—(पु० हि०) एक छारी
कनेली माही जो जगत्तों में
हाती है ।

फर्सा—(पु० म०) बारह रागियों
में से चौथी रागि ।

फर्कश—(पु० स०) फरार । तेज ।
अधिक । दूर । —ता = फटा
रता । फकशा = फगडा करने
वाली स्त्री ।

फर्ज—(पु० अ०) फर्जा । उधार ।

फर्जखाह—(पु० अ० + पा०)
वह जो किसी से कर्ज लेना
चाहता हो ।

फण—(पु० म०) फान ।
—फट्ट = फान का अप्रिय ।
—वेत्र = फनवेदन ।

फर्णधार—(पु० म०) मन्नाह ।
पतवार धामनेवाला । माँझ ।
पतवार ।

फत्तय्य—(वि० स०) करने
वाग्य । उचित कर्म । —मूढ़,
—विमूढ़ = जो कतव्य स्थिर

न कर सके । मौबडा ।
कर्त्ता = करनेवाला । रचो
वाला । कर्त्तार = करनेवाला ।
विधाता ।

कर्नल—(पु० अ०) एक फौजी
अक्रमर ।

कराया—(पा०) सुराही । शराब
का शीशा ।

कुर्य—(अ०) नज़दीकी । घाम
पास के ।

कुरान—(अ०) बलिदान होना ।
कुर्यानी = बलिदान ।

कर्म—(पु० स०) कार्य्य । भाग्य ।
मृतक संस्कार । —फाड =
यज्ञादि कर्म । यन्त्रादि कर्मों के
विधानवाला शास्त्र । —फाँडी
= यन्त्रादि कर्म करानेवाला ।
—क्षेत्र = कार्य्य करने का
स्थान । —चारी = कार्य्य
कर्त्ता । अमला । —ठ = काम
म चतुर । कर्मनिष्ठ । —
शा = कर्म से । —निष्ठ =
क्रियावान । —योग = चित्त
शुद्ध करनेवाला शास्त्र विहित
कर्म । —रेख = कर्म की रेखा ।

—वाद=मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान माना गया है। कर्मयोग। —विपाक=पूर्व जन्म के किये हुए शुभ और अशुभ कर्मों का मला और पुरा फल। —शाल=कर्म बान। उद्यागा। —शूर=उद्योगी। —मंन्याम=कर्म का त्याग। कर्म के फल का त्याग। —साक्षा=जा कर्मों का देखनेवाला हो। —हान=जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। अभागा। कर्मी=कर्म करनेवाला। फल को इच्छा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। कर्माद्रिय=काम करनेवाली इंद्रिय। यर्रा—(पु० हि०) जुलाहों का सूत केजाकर तानने का काम। कदा। कठिन। —ना कदा होना। कक्षा—(क्रा०) बन्दगोभी। एक शाक। कलङ्क—(पु० सं०) दाग। बन्दरमा पर काळा दाग।

बदनामी। ऐव। कलकित्त=जिसे कलक जगा हो। कलकी=दापी।

कलडर—(पु० अ० कैलेन्दर) वह अँगरेजी यत्री या तिथि पत्र जिसका प्रारम्भ पहली जनवरी से होता है।

कलदर—(पु० अ०) एक प्रकार का सुसलमान साधु जो सत्ता से विरक्त होता है। रीछु थी यन्दर नचानेवाला।

कल—(पु० सं०) सुदर। धा वाला दिन। शीता-हुष दिन। यत्र। पंच। बन्दूक। घोड़ा। आराम।

कलई—(स्त्री० अ०) रौंका सुलग्ना। —गर=कृत करनेवाला। —द्वार=वि पर कलई की गई हो। चुन

कलङ्क—(पु० अ० कलङ्क) बँसी-हुष। कलकानि=हैरा-बेकरारी।

कलमल—(पु० सं०) भैरव के जब गिरने का शोर। भगदा।

फलस्टर—(पु० अ० फलेस्टर)

यहा हाकिम, जिनके अधिनार

में जिले का प्रबन्ध होता है।

फलकरो—जिले में माल के

मुहम्मद की कचहरा। फलकरो

का पद।

फलजुआ—(पु० हि०) बड़ी

फलछी। फलजुआ=बड़ा डाँदी

का वह चम्मच जिनमें घट

लोई की दाब आदि चलाते

या निकालने हैं। फलजुल =

फलछी। फलजुला = लोहे या

लम्बा छड नियक सिर पर

एक कंगरा सा लगा रहता

है। इससे भाट में से चालू

निकाजकर भटमूँले दाना

भूतते हैं।

फलत्र—(पु० स०) स्त्री।

फलदार—(वि० हि०) पंचदार।

सरकारी हथिया।

फलप—(पु० फा०) त्रिज्ञाय।

फलक = पके चावल वा

धराराट आदि को पतली

लेद जिसे कपड़े पर उनका

सद कदा धीर चरावर करने
के लिये लगात है।

फलपना—(क्रि० स० करपना)

विलाप करना। फलपाना

=दुःखा करना।

फलम—(स्त्री० प्रा०) खेतनी।

किमी पेड़ का टहनो जो

दूरी जगह धैठाने या दूरी

पड़ में पैवद लगाने के लिये

काटी जाय। वह पौधा जो

फलम लगाकर तैयार किया

गया हो। —तराय = कलम

धनाने की सुरी। —दान =

काठ का एक पतला लम्बा

सन्दूक जिसमें कलम दयात,

पेसिल, चाकू आदि रखने के

जाने बने रहते हैं। —यद =

लिखित। लिप लेना।

फलमलाना—(क्रि० अ०) कुल-

धुलाना।

फलमा—(पु० अ०) वाक्य।

‘जाइलाह इल्लिहाह मुहम्मद

उर् रसूलिहाह।’

फलमो—(वि० फा०) लिखा

हुआ। जो फलम लगाने से

शरा

उत्पन्न हुआ हो । —शोरा =

साक्र किया हुआ शोरा ।

कलश—(पु० म०) घड़ा ।

कलशी = गगरी ।

कलह—(पु० म०) झगडा ।

—पारी = झगडालू । —प्रिय

= नारद । —प्रिया = झग

डालू खी । —कलहा =

झगडालू ।

कलौ—(वि० क्रा०) बड़ा ।

कला—(स्त्री० स०) धरा । चंद्रमा

का सोलहवाँ भाग । सूर्य का

बारहवाँ भाग । किमा कार्य

को भली भाँति करने का

कौशल । तेज । शोभा ।

ज्योति । खेल । छल ।

बहाना । ढग । यत्र । —घर =

चंद्रमा । —नाथ = चंद्रमा ।

—निधि = चंद्रमा । —बाज़

= नट क्रिया करनेवाला ।

—बाज़ी = सिर नीचे करके

डलट जाना । —धत =

सगीत-कला में निपुण व्यक्ति ।

नट । —धती = जियमें कला

हो । शोभावाली । —धीरज

= दस्तकारी । शिष्य ।

कलाजग—(पु० हि०) कुरती का

एक पंच ।

कलाप—(पु० स०) मोर की

पूँछ । मोर की - वाली ।

कलापो = मोर ।

कलावत्तू—(पु० तु०) सोने

चाँदी का तार ।

कलाम—(पु० थ०) वाक्य ।

वचन । पतराज ।

कलि—(पु० स०) चार युगों में से

चौथा युग । —कर्म = युद्ध ।

—वाल = कलियुग । —प्रिय

= झगडालू । —मख = पाप ।

—युगी = धुरे युग का ।

कलिया—(पु० थ०) पकाया

हुआ मास ।

कलियाना—(थ० हि०) कली

बना । कली = बिना खिला

पूज ।

कलीन—(पु० थ०) घोड़ा ।

कलीसा—(क्रा०) हमारे और

यहूदियों का मन्दिर । गिरजा-

घर ।

कल्टा—(वि० हि०) बाला ।

कलेझ—(पु० डि०) जलपान ।

कलेझ = जलपान ।

कलेक्टर—(पु० अ०) ज़िले का बड़ा हाकिम ।

कलेजा—(पु० डि०) प्राणियों का एक भीतरा अंगवत् । छाती । मांस । कलेजी = कलज का मांस ।

कलवर—(पु० म०) शरार । डोंघा ।

कनौर—(स्त्री० डि०) जो गाय बरदाई या व्याह न हो ।

कलोल—(पु० टि०) झाडा । —ना = झाड़ा करना ।

कलाजी—(पु० डि०) एक पौधा । एक प्रकार की तरकारी ।

कल्टीवेशन—(अ०) खेती ।

कल्पतरु—(पु० स०) कल्पवृक्ष ।

पुराणानुसार देवताओं का एक कल्पवृक्ष जो समुद्र-मंथन करने के समय समुद्र से निकला हुआ थीर चौदह रत्नों में माना जाता है ।

कल्पना—(स्त्री० स०) रचना ।

प्रनुमान । भावना । मनगढ़त बात । कल्पित = मनमाना ।

कल्पवास—(पु० म०) माघ के महीने भर गंगातट पर सयम के साथ रहना ।

कल्पान—(पु० म०) प्रलय । नित्य ।

कल्प—(पु० स०) पाप । मैत्र । मत्राद ।

कल्याण—(पु० म०) मंगल । कल्याण = कल्याण करने वाली ।

कल्ला—(पु० डि०) अक्षुर ।

कल्लोल—(पु० स०) पाना की लहर । मौज । कल्लो लिनो = कल्लोल करनेवाली नदी ।

कवच—(पु० स०) लोहे की कदियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसको योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे ।

कवर—(पु० हि०) घास । (अ०) पुस्तकों के ऊपर का वह कागज़ जिस पर नाम

धादि क्षया रक्षता हे ।
लिङ्गात्रा ।

फयरी—(स्त्री० स०) घोरी ।

फडवाल—(पु० अ०) लीवाली
गानेशना ।

फुचत—(पु० अ०) शक्ति ।
ताकृत । —त्रया = (अ०)
कृतवाला ।

फयायद—(स्त्री० अ०) नियम ।
व्याकरण । सेना के युद्ध करने
के नियम । लड़नेवाले विपा-
दियों के युद्धनियमों के
अभ्यास की क्रिया ।

फयानोन—(पु० अ०) जानून
का जमा ।

फयि—(पु० सं०) काव्य करने-
वाला । शुभाचार्य । —ता
= काव्य । —त = कविता ।
दण्डक के अन्तगत ३१ अक्षरों
का एक छंद । —र =
काव्य-रचना-शक्ति । काव्य का
गुण । —पुत्र = शुभाचार्य ।
—राज = श्रेष्ठ कवि । भाट ।
बंगाली वीरों की एक उपाधि ।

फश —(स्त्री० क्रा०)

ग्रीवागानो । भाट । आगा
पाधा ।

फशिरा—(पु० क्रा०^१) शिंघार ।

फशीदा—(पु० प्रा०) तागे
भरकर फपड़े में निपाखे दूध
बेजवृत्ते ।

फशती—(स्त्री० प्रा०) नौछा ।

फशमीर—(पु० स०) पन्नाव के
उत्तर हिमाक्षय से बिरा हुआ
एक पहाड़ी प्रदेश । फरमीरी =
फरमीर का । फरमीर देश का
भाषा ।

फयाय—(वि० सं०) फसैला ।

गेरू रंग का रँग हुआ फया ।

फए—(पु० स०) तद्वत्ताक ।

सकट । —करणा = विचारों

का घुमाव फिरोर । —पाप्य

सुरिच्छ से जानवाला ।

फसक—(स्त्री० दि०) पुराना

घेर । दीमला । हमदर्दा ।

—ना = दर्द परना ।

फमकुट—(पु० दि०) एक

मिठा हुई घातु जो ताँबे की

जस्ते के बराबर भाग से मिठा

कर बनाई जाती है ।

- कसव—(क्रि० अ०) पाटना ।
कसाई का काम ।
- कसव—(पु० अ०) पेशा ।
दिनाला । कसवी=वेश्या ।
व्यभिचारिणी स्त्री ।
- कसवा—(पु० अ०) बड़ा
गाँव । —ती=ब्रसवे या ।
ब्रसवे या रहनेवाला ।
- कसम—(स्त्री० अ०) शपथ ।
- कसमसाना—(क्रि० अनु०)
कुलजुलाना । घबराना ।
आगा पीड़ा करना । कसमसा
हट=वेचनी ।
- कसर—(स्त्री० अ०) कमी ।
बैर । घाटा ।
- कसरत—(स्त्री० अ०) व्यायाम ।
अधिकता । कसरती=कस
रत करनेवाला ।
- कसरयानी—(पु० हि०) बनियों
की एक जाति । कसरहटा=
कसरोँ का बाज़ार ।
- कसाई—(पु० अ०) बधिक ।
गोघातक । निर्दय ।
- कसाला—(पु० हि०) कष्ट ।
कठिन ।
- कसाव—(पु० हि०) कमलापन ।
- कस्नी—(स्त्री० हि०) पृथ्वी नापने
की एक रस्सी जो दो इंच
या ४ इंच की होती है ।
एक पौधा ।
- कस्तीदा—(पु० अ०) उर्दू या
फ़ारसी भाषा की एक प्रकार
की कविता ।
- कसीर—(पु० अ०) मूल करने
वाला । बेताही करनेवाला ।
- कसीस—(पु० हि०) लोहे का
एक प्रकार का विकार जो
खानों में मिलता है ।
- कसूर—(पु० अ०) अराध ।
—मन्द=दोषी । —वार
=अपराधी ।
- कसेरु—(पु० हि०) एक प्रकार
के मोथे की बड़ ।
- कसैली—(स्त्री० हि०) सुपारी ।
- कसोटी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का काला पत्थर जिस पर
रगड़कर सोने की पाख की
जाती है । परीचा ।

कस्टम ड्यूटी

कस्टम ड्यूटी—(स्त्री० अ०)

कर । महसूल । चुंगी ।

कस्टम हाउस—(पु० अ०) वह

स्थान जहाँ विदेश से आने
जाने वाले माल का महसूल
देना पड़ता है ।

कस्तूरी—(पु० हि०) एक सुगंधित

द्रव्य जो हिरन की नाभि से
पैदा होता है । —मृग = वह
हिरन जिसका नाभि से कस्तूरी
निकलती है ।

कस्तू—(पु० अ०) इरादा ।

कस्तुरी—(पु० अ०) कसाई ।

कस्ती—(स्त्री० हि०) मालियों
का छोटा फावड़ा । ज़मीन की
एक नाप जो दो इंच के
बराबर होती है ।

कहफहा—(पु० अ०) जोर की
हँसी ।

कहकहादीवार—(पु० प्रा०)
चीन की दीवार ।

कहत—(पु० अ०) दुर्भिक्ष ।

—साबी = दुर्भिक्ष का समय ।

कहर—(पु० अ०) विपत्ति ।

मगहर ।

कहरवा—(पु० हि०) पाँच

मासों का एक साल ।

दादरा गीत जो कहरवा साल

पर गाया जाता है ।

कहलघाना—(स० हि०) सदेण

भोजना ।

कहवा—(पु० अ०) एक वेद का

घोड़ा ।

काँइरों—(त्रि० अनु०) धूल ।

काउसिल—(स्त्री० अ०) व्यव

स्थापिका सभा ।

काँख—(स्त्री० हि०) बाल ।

काँखना—(क्रि० अनु०) किसी

थम का पीरा स डँड, घाँह

आदि शब्द मुँह से निकल

जाना ।

काँखासोती—(स्त्री० हि०) जनेक

की तरह दुपटा डालने का

रंग ।

काँगडी—(स्त्री० हि०) एक छोटी

धौली जिससे कस्तूरी खोज

गले में लटकाये रहते हैं ।

काँगड़—(पु० अ० कंगारू) एक

धनु जो आस्ट्रेलिया महाद्वीप

में होता है ।

काप्रेस—(खी० अ०) वह महा सभा जिसमें भिन्न भिन्न स्थानों के प्रतिनिधि एकत्र होकर किसी भावजनिक वा विद्या सम्बन्धी विषय पर विचार करते हैं।

काप्रेसमेन—(पु० अ०) वह जो काप्रेस का सदस्य हो।

काँच—(खी० हि०) गुदेंद्रिय के भीतर का भाग।

काची—(खी० स०) करधनी।

काची—(खी० हि०) एक प्रकार का गूदा रस जो वह प्रकार से बनाया जाता है। मूठ और दही का पानी।

काँजीहाउस—(खी० अ० काइन हाउस) वह मकान जहाँ गेती आदि को कानि पहुँचानेवाले चौपाये बन्द किये जाते हैं। मन्त्रीखाना। पौड।

काँटा—(पु० हि०) कणक। खाँगा। काँटा वा मैना आदि पक्षियों के गले में निकलता है। लाहे का यही कील चाहे वह मुका हो या साधो हो। मछली

पकड़ने की मुकी हुई छँडुही या कँटिया।

मुकी हुई छँडुहियों का जिसे कुँ में डालकर यतन निकाले जाते हैं।

वाकील को तरद कोई नु वस्तु। एक मुका हुआ

का काँटा जिसमें तागे फँसाने पटार वा

गुहने का काम करते हैं।

सूई जो लोह की तराजू पीठ पर होता है

जिससे दोनों पलकों के ब

पर होने की सूचना मिल

है। वह लोहे की तरा

जिसकी डोंडा पर काँटा होता

है। नाक में पहनने का

लोग। पजे के आकार का धातु का बना हुआ एक

शीज़ार जिससे अग्रज लोग खाना खाते हैं। लकड़ी का एक टाँचा जिससे किसान घाम भूसा उठाते हैं। सूजा।

- घड़ी की सूई।

काड—(पु० स०) किसी ग्रन्थ

का वह विनाश विषमें एक
पूरा प्रमद है।

कांडना—(क्रि० डि०) कुचड़ना।

कूटना। खान खगाना।

काँदी = अखला का वद

गहड़ा विषमें शानति हाकर

मूलत में कूने हैं। मूमे में

गढा हुआ खड़ा या पथर

का टुकड़ा विषमें धान कूटन

के लिये गढ़ा बना रहता है।

हाथी का एक रोग विषमें

उसके पैर के तखे में एक

गहरा घाव हो जाना है

और उसका चलन फिरन में

बड़ा कष्ट होता है।

पाति—(स्रा० सं०) प्रधरा।

शाभा। धरना का मालद

पजाधों में से एक।

काँदना—(क्रि० डि०) गाना।

काँदा—(पु० डि०) प्यात्र।

काँय काँय—(पु० धनु०) काँय

काँय। काँय = काँय

काँय काँय।

कासल—(पु० धनु०) सज्जकार।

काँसा—(पु० हि०) एक मिश्रित
घानु जो ताँब और जस्ते के
संयोग से बनता है।

कान्सेबल—(पु० ध०) पुलीम
का विषाही।

कान्स्ट्रुएनी—(खी० ध०)
निर्वाचक-सच।

काई—(स्रा० डि०) जल वा सीढ़
में होनेवाली एक प्रकार की
महान घाम।

काकानुश्रा—(पु० हि०) एक
प्रकार का बड़ा ताता जो प्राय-
सकृद रंग का होता है।

काकुल—(फा०) थलक। लट।

कागज—(पु० ध०) सन, रुई,
पट्टर थदि को सड़ाकर

बनाया हुआ महीन पत्र जिस

पर धस्तर लिखे या छापे जाते

हैं। समाचार पत्र। कागजात

= कागज पत्र। कागजा =
जिमका कागज की तरह पतला

दिलका हो। कागज बेचने
वाला।

कागजी वादाम—(पु० ध०)

फागजी सघृत—(पु० श०)

लिखित प्रमाण ।

काड़—(पु० हि०) पेड़ और

बाँध के जोड़ पर का तथा

उससे बुद्ध नाचे तक का

स्थान । लॉग । —ना=कमर

में लपेटे हुये वस्त्र क उटसने

भाग का जड़ों पर से लेजाकर

पड़ कसकर बाँधना ।

—नी=कड़नी ।

काड़ी—(पु० हि०) तरकारी

याने और बेचनेवाला ।

काजी—(पु० थ०) मुसलमानों

राज का "यायाध्यक्ष ।

काजू—(पु० हि०) एक मेरा ।

काट—(खा० हि०) काटने का

ढंग । घाव । चालवाजी ।

तेल घी का तलछट । —न

—कतरन । —ना=शरत

दि की धार घँमाकर किसी

चीज के खसट करना ।

घाव करना । किसी भाग को

अलग करना । बध करना ।

कतरना । छाँटना । समय

दिताना । दूरी ले करना ।

कलम की बाकीर से किसी

लिखावट को रद्द करना । एक

सख्या या दूसरी सख्या के

साथ ऐसा भाग लगाना कि

शेष न बचे । ताश की गड़ी

को इस प्रकार फँटना कि उस

का पहले का लगा हुआ क्रम

न बिगड़े । क्रैद भोगना ।

डसना । किसी तीक्ष्ण वस्तु का

शरीर के किसी भाग से लग

कर चुननी लिये हुये जलन

और छरछराहट पैदा करना ।

काटन—(पु० थ०) कपाम ।

रुई । सूती कपड़ा । रुई का

कपड़ा ।

काठ—(पु० हि०) लकड़ी ।

बजाने की लकड़ी । शहतीर ।

काठ नवाड—(पु० हि०)

लकड़ियों आदि के टूटे-फूटे

और निकम्मे टुकड़े ।

काठमाडू—(पु० हि०) नैपाल

की राजधानी ।

काठियावाड—(पु० हि०) भारत

वप का प्रान्त जो अब गुजरात

देश का पश्चिमी भाग है ।

काठी—(स्त्री० हि०) घोड़ों की पीठ पर कसन की एक ज़ीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। ऊँट की पीठ पर रखने की एक गद्दी जिसके नीचे काठ रहता है। शरीर की गन्त।

काढ़ना—(क्रि० हि०) निकालना। चित्रित करना। उधार लेना।

काड़ा=शौचधियों को पानी में डबाल या थौटाकर बनाया हुआ शर्क।

काटना—(क्रि० हि०) रड से सूत काटना।

काँ—(वि० सं०) अधीर।

काँटुआ। डरपोक। दुःखित।

काँटु में लकड़ी का वह तरत।

स पर हाँकनेवाला चैठता

और जो काँटु की कसर

तगा हुआ उसके चारों

धूमता है। इसी में चैल

जाते हैं। —ता=

ता। दुःख की व्याकुल

डरपोकपन।

(पु० अ०) खेखक।

कातिल—(वि० अ०) माण खेने वाला। हत्यारा।

कान—(पु० हि०) मुनने की हृदिय।

कानून—(पु० अ०) राज्य में शांति रखने का नियम। —

गो=माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के उन कागज़ों की जाँच करता है जिनमें खेतों और उनके लगानादि का हिमाय किताब रहता है।

—दों=कानून जानावाला।

कानूनिया=कानून जानने वाला। हुज्जती। कानूनी=

जो कानून जाने। अदालती।

नियमानुसूल। तकरार करने वाला।

कानूनन्—(वि० अ०) कानून के अनुसार।

कान्यकुब्ज—(पु० सं०) प्राचीन

समय का एक प्रान्त जो

आजकल के कन्नौज के आस

पास था। कान्यकुब्ज देश

का निवासी। कान्यकुब्ज

देश का आबादी।

कान्शान्न—(थ०) अन्न। शुद्धि।

कान्सन—(पु० अ०) वाणिज्य
दूत। राजदूत।

कान्सोलेट—(पु० अ०) नूता
घाम।

कान्फिडेंस—(थ०) विश्वास।

कान्स्ट्रिट्यूशन—(पु० अ०)
किसी देश का सरकार का
व्यवस्थित रूप। व्यवस्था।

कान्स्परेन्सी—(स्त्री० अ०)
पश्यत। साजिश।

कापर प्लेट—(पु० अ०) छापे
खाने में काम आनेवाला
तापे की पदर का एक टुकड़ा
जिस पर अक्षर खुद होते हैं।

कापालिन—(पु० म०) शैव
मतानुसार एक तांत्रिक साधु
जो मनुष्य की खोपड़ी लिये
रहते हैं। एक प्रकार का वेद
जिसमें शगर की खचा रखी,
कठार फाली वा लाल होकर
फट जाता है। दद भी
करती है।

कापो—(स्त्री० अ०) नकल।
लिखने की सादा पुस्तक।

—राइट=कानून के अनुसार
वह शय जो मन्थकार वा
प्रकाशक को प्राप्त होता है।

कापीनवीस—(पु० अ० फ्रा०)
लेखक। कापी लिखनेवाला।

कापुरुष—(पु० सं०) कायर।

काफिया—(पु० अ०) तुक।

काफिर—(पि० अ०) मुसलमानों
के कथानुसार उनसे भिन्न
धर्म का माननेवाला। ईश्वर
को न माननेवाला। निन्द्य।
गुरा। काफिर देश का रहने
वाला।

काफिला—(पु० अ०) यात्रियों
का मुण्ड जो तीर्थ व्यापारा
दि के लिये एक स्थान से
दूसरे स्थान को जाता है।

काफी—(पु० अ०) ब्रह्मा।

काफी—(वि० अ०) मतलब भर
के लिये।

काफ्र—(पु० फ्रा०) कपुर।

काधा—(पु० अ०) शरब में मक्के
शहर का एक स्थान।

काविज—(वि० अ०) जिसका
किसी वस्तु पर अधिकार हो।

काविल—(वि० अ०) योग्य ।
विद्वान् । काविलीयत =
योग्यता । विद्वत्ता ।

काबुल—(पु० हि०) एक नदी ।
अफ़गानिस्तान की राजधानी ।

काबुली = काबुल का ।

कावृ—(पु० तु०) अधिकार ।
बल ।

काम—(पु० स०) इच्छा । मनो
रथ । कामदेव । वह जा किया
जाय । प्रयोजन । गरज ।
उपयोग । रोजगार । कारी-
गरी । बेलबूटा वा नक्काशी
जा कारीगरी से तय्यार हो ।

—चलाऊ = जिससे किसी
प्रकार काम निकल सके ।—

चोर = काम से जी चुराने
वाला ।—दानी = वह कपड़ा

जिममें सबमे सितारे के बेल
बूटे बने हों । —दार =

कारिदा । —देव = स्त्री पुरुष
के संयोग की प्रेरणा करनेवाला

एक पौराणिक देवता, जिसकी
स्त्री रति, साथी वसव, वाहन
कोकिल अथ पृथ्वी का धनुष

वाण है । वीर्य । —धाम
= कामका । —धनु = पुरु

गाय जो समुद्र के मथन से
निकली था । वगिष्ठ की

नन्दिनी नाम की गाय । दान
के लिये सोने की बनार्ह हुई

गाय । —ना = मनोरथ ।
—याव = सफल । —याव

= सफलता । —शास्त्र =
वह विद्या वा धर्म जिममें

स्त्री पुरुषा के सम्पर्कनात्म
आदि के व्यवहारों का बतान

हो । (अ०) कामा =
एक विराम । कामानुर =

काम के योग से व्याकुल ।
कामिनी = कामवता स्त्री ।

एक पेड़ । कामा = विपरी ।
कामुक = इच्छा करनेवाला ।

विपरी । वानाहीपक = काम
का उद्घाटन करनेवाला ।

कानोद्घाटन = सहवास की
इच्छा का उत्तेजन ।

कामत—(पु० अ०) शब्द ।
कामनयन—(पु० अ०) शब्द ।

कामन सभा

कामन सभा—(ख्री० अ० हि०)
ब्रिटिश पार्लमेण्ट का वह
शाखा या सभा जिसमें जन
साधारण के निर्वाचित प्रति
निधि होते हैं। हाउस ऑफ़
कॉमन्स।

कामर्स—(पु० अ०) व्यापार ।
कारोबार । लग देन ।

कॉमेडियन—(पु० अ०) प्रादिरम
या हास्य रम का अभिनेता ।
सुखान नाटक लिखनेवाला ।

कॉमेडी—(ख्री० अ०) सुघात ।
नाटक ।

काम्रेड—(पु० अ०) सह
यात्री । साथी ।

कायदा—(पु० अ०) नियम ।
चाल । विधान । प्रम ।

कायफल—(पु० हि०) एक धृत ।

कायम—(वि० अ०) ठहरा हुआ ।
मुजरर । —मुत्तम = पवजो ।

कायर—(वि० हि०) डरपोक ।
—ता = डरपोकपन ।

कायल—(वि० अ०) जो दूसरे
की बात की सघार्यता को
स्वीकार कर ले ।

काया—(पु० स०) शरीर ।
—पलट = हेर फेर । परि
वतन ।

कार—(पु० प्रा०) काम ।
—करदा = तत्रस्थकार ।
—कुन = प्रबन्धकर्ता । का
रिन्दा । —प्राणा = जहाँ
व्यापार के लिये काइ वस्तु
बनाइ जाय । —गार = अमर
परनेवाला । उपयोगी ।
—गुजार = काम को अच्छी
तरह करनेवाला । —गुजारी
= कृत-य पालन । होशियारी ।
कर्मस्यता । —नी = करने
वाला । —परदाज = काम
करनेवाला । प्रबन्धकर्ता ।
—परदाजी = दूसरे का काम
करने की वृत्ति । काय्यपटुता ।
—घार = कामकाज । —घारी
= कामवाणी । —रचाई =
काम । काय्यतत्परता । चाल ।
—वाँ = यात्रियों का मुख
जो एक देश से दूसरे देश की
यात्रा करता है । —साज
= काम बनानेवाला ।

- साज़ी = काम पूरा उतारने का युक्ति । चालसाज़ी ।
- स्तानी = काररघाई । चालसाज़ी । फारी = करनेवाला ।
- फारीगर = शिल्पकार । फारीगरी = निर्माण कला । मनाहर रचना । फारागार (स०) = ब्रह्मणा । फारागूढ़ = ब्रह्मदाना । फारावास = ब्रह्म ।
- फारिन्दा = फमचारी । फार = (थ०) मोटर गाड़ी ।
- कारचोवी — (वि० फ्रा०) ज़रदोज़ी का । क़सीदा ।
- कारटून — (पु० थ०) वह उपहासपूर्ण कल्पित चित्र जिनमें किसी घटना या व्यक्ति के संबन्ध में किसी गूढ़ रहस्य का ज्ञान होता है ।
- कारट्रिज — (पु० थ०) कारतूस ।
- कारण — (पु० स०) समय । प्रमाण ।
- कारतूस — (पु० पुर्त०) एक लम्बी नली जिसमें गोली छुरी और बारूद भरी रहती है और

- जिसके एक सिरे पर टा लगी रहती है ।
- कारनिस — (खो० थ०) दीवारों की कँगड़ी ।
- कारपेंटर — (पु० थ०) बढ़ई ।
- कारपोरल — (पु० थ०) पलटा का छाटा अफसर । जमादार ।
- कारपोरेशन — (पु० थ०) बड़े शहरों की म्युनिसिपैलिटी ।
- कारेस्पाडेंट — (पु० थ०) सवाददाता ।
- कारेस्पाडेंस — (पु० थ०) पत्र-व्यवहार ।
- कारबन — (पु० थ०) रसायन शास्त्रानुसार एक तत्व । कोयला । कारबोनिक = कारबन से मिला हुआ ।
- कारबोलिक — (वि० थ०) अलफतरा सम्बन्धी । एक सार पदार्थ जो कोयले के तेल या अलफतरा से निकाला जाता है ।
- कारीगर — (फ्रा०) काम करनेवाला । हुनर जाननेवाला ।
- कारुणिक — (वि० स०) दयालु ।
- कारुण्य = दया ।

कारुं

कारुं—(पु० अ०) हज़रत मृग का चचेरा भाइ । यथा मालदार ।

कारुरा—(पु० अ०) जीशी निसमें रागी का मूत्र वैद्य का दिखाने के लिये रक्खा जाता है ।

कारोनर—(पु० अ०) यह अफसर जिमका काम जूरी का सहायता से दगा फसाद या हत्या-सम्बन्धी मामलों की जाँच करना है । कारानेशन = रायतिलक । राज्याभिषेक ।

कारुं—(पु० अ०) एक प्रकार की बहुत ही हल्की लकड़ी की छान जिमकी छोट्टे बोटलों में लगाई जाती है । काग ।

काड—(पु० अ०) मोटा कागज़ । छोटे तथा मोटे कागज़ पर लिखा हुआ खुला पत्र । पते का कागज़ ।

कार्तिक—(पु० स०) एक चाद्र नाम जो कार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

कार्य—(पु० स०) काम ।
—कर्ता = कामचारी । कार्याधिकारी = अफसर । कार्याध्यक्ष = अफसर । कार्यालय = दफ्तर ।

काल—(पु० स०) समय । नाश का समय । यमराज । नियत समय । अवसर । अकाल ।
—कूट = एक प्रकार का अत्यन्त भयङ्कर विष ।
—कोठरी = जेलखाने की एक बहुत लम्बी और अँधेरी कोठरी जिममें कैद तनहाईनाले कैदी रक्खे जाते हैं ।
—क्षेप = समय बिताना ।
—क्र = समय का हेर फेर ।
—ज्ञा = समय की पहचान ।
मृत्यु का समय जान लेना ।
—निशा = अँधेरी भयावनी रात ।

कालम—(पु० अ०) पुस्तक का अक्षरधार के पृष्ठ की चौड़ाई में बिये हुये विभागों में से एक ।

कालर—(अ०) पटा जो गले में लगाया जाता है ।

कालरा—(पु० ध०) हैजा या
विशुचिका नामक रोग ।

काला—(वि० स०) स्याह ।

शुरा । —कलूटा = बहुत

काळा । —घोर = बड़ा घोर ।

पुरे स शुरा आदमो । —जारा

= एक प्रकार का जारा जो रोग

में स्याह होता है । एक प्रकार

का धान जिसके चावल बहुत

दिनों तक रह सकते हैं । —

तिल = काल रोग का तिल ।

—तोत = जिसका समय यीत

गया हो । —पानी = दश

निकाल का दूध । एडमन-

घोर नाकोयार आदि द्राप ।

—भुजग = बहुत काळा ।

काळे साँप जैसा ।

कालिंजर—(पु० स०) एक पर्वत

जो कावे से ३० मील पूरब की

घोर है ।

कालिंदी—(स्त्री० स०) यमुना

नदी ।

कालिक—(ध०) पेट की मरोड़ ।

कालिब—(पु० ध०) साँचा ।

शरीर । बदन ।

कालान—(पु० ध०) गलीचा ।

कालेज—(ध०) अम्ली विद्या

लय ।

कालोनियल—(धि० ध०) औप-

निवेशिक ।

कालोना—(स्त्री० ध०) उप-

निवेश ।

काल्पनिक—(पु० स०) कल्पों ।

प्रायाली ।

कावा—(पु० का०) घोड़े को एक

घृत्त में चकर देने की क्रिया ।

काव्य—(पु० स०) कविता ।

कास—(पु० हि०) एक प्रकार की

घास ।

काश—(प्रा०) हग्यर करे

वाग्वा यह है ।

काशान—(पु० का०) कोपवा ।

छाटा घर ।

कास्त—(स्त्री० का०) सेती ।

—कार = किसान । —कारी

= कियानी ।

काश्मीर—(पु० स०) एक देश

का नाम । —कारमीरा = एक

प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा ।

काश्मीरी—कश्मीर देश का ।

कश्मीर देश निवासी ।

कापाय—(वि० म०) कमैली
वस्तुओं में रेंगा हुआ । गेरुआ
वस्त्र ।

कातिद—(पु० अ०) हस्कारा ।
दूत । कृत्स्न करनेवाला ।
सीधी राह चलनवाला ।

कास्केट—(पु० अ०) पेटी ।
सन्दूरदो । डिब्बा ।

कास्टिक—(वि० अ०) पत्र प्रकार
का तेजाब ।

कास्टिंग बोट—(पु० अ०) किम्बा
सभा या परिषद् के सभापति
का वाट ।

काइकरा—(पु० रा०) आकाश
गगा ।

काहिल—(वि० अ०) आलसी ।
काहिली = सुस्ता ।

काही—(वि० हि०) घास के रंग
का । एक रंग का कालापन
लिय हुय हरा हाता है ।

किम्बर—(पु० स०) दास ।

किर्त्तन्यविमूढ़—(वि० स०)
धवराया हुआ ।

किन्त्रिणी—(स्त्री० स०) परधनी ।

किंगिरी—(स्त्री० हि०) छोटी
सारगी ।

किंतु—(अव्य० स०) लेकिन ।
यत्कि ।

क्रियदती—(स्त्री० स०) अक्र-
घाह ।

क्रिया—(अव्य० स०) या ।
अथवा ।

किचकिच—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ
को बकवाद । भगटा । किच
किचाना = दाँत पीसना ।
दाँत पर दाँत रखकर दवाना ।

किता—(पु० अ०) काट-झाँट ।
सक्या । विस्तार का एक
भाग । प्रदेश ।

किताब—(स्त्री० अ०) पुस्तक ।
रजिस्टर । —त (अ०)
लिखा ।

किधर—(क्रि० हि०) किम तरफ ।

किनका—(पु० हि०) छाया
दाना । सुहा ।

किनारा—(पु० प्रा०) तट ।
थाल । किनारी = सुनहला
या रपहला पतला गाटा जो

कर्णों क द्विजारे पर लगाया
 जाता है ।
 क्रियायत—(स्त्री० घ०) कम
 लक्ष्मी । यचत । क्रियायती =
 कमलपत्र करनेवाला ।
 क्रियाता—(पु० घ०) मक्का ।
 पूज्य व्यक्ति । पिता । —गाह,
 गाही = पिता । —नुमा =
 पश्चिम दिशा को धतानेवाला
 एक यंत्र ।
 क्रिमारखाणा—(पु० घ०)
 जुमार । क्रिमारयाज्ञी = जुमे
 का खेज । क्रिमार = जुमा ।
 क्रिमाण—(पु० घ०) तर्जं ।
 गंजीके का एक रग जिसे
 ताज भी कहते हैं ।
 क्रियारी—(स्त्री० द्वि०) क्यारी ।
 क्रिरच—(स्त्री० द्वि०) एक सीधी
 तलवार जो नोक के बल
 सीधी भोंकी जाती है ।
 क्रिरण—(पु० स०) किरन ।
 राशनी की लकीर ।
 क्रिरम—(क्रा०) कृमि । कीड़ा ।
 क्रिरमिजी—(त्रि० द्वि०) क्रि
 मिज के रग का ।

क्रिरीची—(स्त्री० घ०) दो या
 चार पहियों की गाड़ी जो
 माल थमबाय टोने के कास
 में धाती है । मालगाड़ी का
 टन्वा ।
 क्रिराया—(पु० घ०) भाषा ।
 क्रिरायेदार = जो क्रिमी की
 कोई वस्तु भाड़े पर ले ।
 क्रिरास्तिन—(पु० घ० केरोसा)
 मिट्टी का तेल ।
 क्रिली—(स्त्री० द्वि०) एक घटुत
 ही छाटा बीदा जो पशुओं के
 लगता है ।
 क्रिला—(पु० घ०) गढ़ ।
 —बन्दी = दुग निर्माण ।
 व्युद्-रचना । शतरंज में बाय
 शाह को सुरक्षित पर भं
 रखा ।
 क्रितोमीटर—(पु० घ०) घूरी की
 एक माप ।
 क्रिहत—(स्त्री० घ०) कमी ।
 संकोच ।
 क्रिचाड—(पु० द्वि०) कपाट ।
 क्रिशमिश्र—(पु० त्रा०) मुसाई
 दुई छोटी दाण । क्रिश-

मिश्री = किशमिश का । किश
मिश के रंग का ।

किशोर—(वि० स०) ११ वष
से १५ वर्ष तक की अवस्था
का । पुत्र । —क = छोटा
या लक ।

किशत—(स्त्री० प्रा०) शतरंज के
खेद में शतरंज का किसी
शोहरे के घात में पड़ना ।

किशतवार—(पु० पा०) पट
धारियों का एक धाराज जिसमें
छेतों का तम्बर, रकवा आदि
दृश्य रहता है ।

किशनी—(स्त्री० प्रा०) नाय ।
—सुमा = नाय के आकार का ।

किस्त—(सर्व० हि०) 'कौन'
का वह रूप जो उस विभक्ति
लगने के पहले प्राप्त होता है ।

किस्तवत—(स्त्री० अ०) एक
धैली जिसमें नाई अपने उस्तरे
कधी आदि रखते हैं ।

किस्तमिश—(पु० पा० किश
मिश) किशमिश ।

किस्तान—(पु० हि०) सेतिहर ।
किस्तानी = वृषि ।

किस्ती—(सर्व० हि०) "कौई"
का वह रूप जो उसे विभक्ति
लगने से पहले प्राप्त होता है ।

किस्त—(स्त्री० अ०) ऋण वा
देन चुकाने का वह ढग जिसमें
सब रूपया एक धारणी न दे
दिया जाय बल्कि उसके कई
भाग करके प्रत्येक भाग के
चुकाने के लिये अलग अलग
समय निश्चित किया जाय ।
—बढ़ी = थोड़ा थोड़ा करके
रुपया धरा करने का ढग ।
—वार = किस्त किस्त करके ।
हर किस्त पर ।

किस्तमत—(स्त्री० अ०) भाग्य ।
कमिशनरी । —वर = भाग्य-
वाला ।

किस्ता—(पु० अ०) कदानी ।
समाचार । ऋगदा ।

की—(अ०) वह पुस्तक जिसमें
किसी पुस्तक के कठिन शब्दों
के अर्थ या उनकी व्याख्या की
गई हो । कुंजी ।

कीच—(पु० हि०) कीचड़ ।
—ट = गीली मिट्टी ।

कीट—(पु० सं०) कीड़ा। जमी हुई मूल।

कीमत—(पु० अ०) दाम।
हीमती=अधिक दामों का।

कीमा—(पु० अ०) बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ भाग (खाने के लिये)।

कीमिया—(स्त्री० फा०) रसायन। —गर=रसायन बनाने वाला।

कीमुत्त—(पु० अ०) गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर्त्तन—(पु० सं०) पथन।
कृष्ण लीला-मग्गधी भजन और कथा आदि। कीर्त्तनिया =कात्तन करने वाला।

कीर्त्ति—(स्त्री० सं०) बढ़ाई।

कीर्त्ति स्तम्भ—(पु० सं०) वह स्तम्भ जो किमी की कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय।

कील—(स्त्री० सं०) काँटा। नाक में पहनने या एक छोटा-सा आभूषण जिसका आकार

लौंग के समान होता है।
कुँदासे की कील। जूँते के बीचोबीच का एक लूँटा जिसके आधार पर वह गढ़ा रहता है। यह लूँगे जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है। —ना=मेल जड़ना। किमी मग्न या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। वश में करना। कीला=बढ़ी कील। कीली=किमी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील या दंड जिस पर वह चक्र घूमता है।

कोस—(अ०) पैड़ी।

कुँश्रा—(पु० हि०) कुँघा। कूर।
कुँश्राँ=छोटा कुँघा।

कुँश्रारा—(वि० हि०) बिन व्यादा।

कुँई—(स्त्री० हि०) कुमुदिनी।

कुँकुम—(पु० सं०) केसर।
लाल रंग की बुकनी जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं।

कुंज

कुंज—(पु० स० पा०) वह स्थान जिसके चारोंध्वार घनी लता छाई हो।

कुंजगली—(स्त्री० हि०) घनीचों में लता से छाया हुआ पथ। पतली लता गली।

कुंजडा—(पु० हि०) एक खाति जो अथ तरकारी बेचती है।

कुंजा—(पु० अ०) पुरवा। सुराही।

कुंजी—(स्त्री० हि०) चाभी। टीका।

कुंठित—(वि० स०) जिसका धार तेज न हो। मंद।

कुंड—(पु० स०) पानी को रोक रखन के लिये पक्का गढ़ा। खेत में वह गहरी रेखा जो हल जोतने से पड़ जाती है।

कुंडमुँदनी—(स्त्री० हि०) कुछ खेत को खुकने पर अतिम खेत घोना।

कुंडल—(पु० सं०) मुरली। पहिये के आधार का एक आभूषण। जिसे गोरखनाथ के अनुयायी

काफटे कानों में पहाने हैं। रस्मी आदि का गोळ पदा।

कुंडलाकार—गोळ। कुंड

लिनी—सत्र और उसके अनुयायी दृष्ट-योग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूला

घार में सुपुत्रा नाभी की जड़ के नीचे मानी गई है। कुंड

लिया—एक मायिक छन्द।

कुंडा—(पु० हि०) बहुरा। दरवाजे की चौखट में लगा हुआ फोंदा जिसमें साकल पँसाई जाती है।

कुंजा—(अव्य० पा०) कहाँ? किस जगह?

कुंतव—(अ०) एक बार लिखना। लिखी हुई चीज।

कुंद—(पु० स०) जूँ की तरह का एक पौधा। इसमें सकंद फूल खगते हैं। —न=बहुत

अच्छे और साक सोने का पतला पत्तर। बढ़िया सोना। स्वच्छ। निरोग। (पा०)

मन्द।

कुंदरू—(पु० हि०) एक खेज

जिसमें चार पाँच अंगुल लेंगे
पत्र लगने हैं ।

कुंदा—(पु० फा०) लक्ष्मण । लक्ष्मी
का दुकड़ा जिस पर रथकर
बढ़ई लरही गदते हैं । यदूर
में यह पिछला लरही या
तिठोना भाग जिसमें घोंटा
और नली आदि जड़ी हाती
है और जो बन्दूक चलाने की
ओर होता है । वह लक्ष्मी
जिसमें अपराधी के पैर ठोंके
जाते हैं । मूँठ । लक्ष्मी की
बही भोगरी । कुरती का प्य
पत्र । कुरती में एक प्रकार
का आगत ।

कुदी—(स्त्री० हि०) धुले या
रँग हुये कपड़े की तरह करके
उाकी सिक्किन और रंगाई
दूर करने तथा तह जमाने के
लिये उमे लरही की भोगरी
से बूटने की क्रिया । खू
भारना ।

कुँवर—(पु० हि०) पुत्र । राज-
पुत्र । कुँवरि=कुमारी । राज
कन्या । कुँवारा=बिन प्याहा ।

कुँदटा—(पु० हि०) कुम्हड़ा
एक फल है ।

कुशार—(पु० हि०) आरिख
या मडीना । कुशारा=कुशार
या ।

कुरुडी—(स्त्री० हि०) कच्चे सूत
का लपेटा हुआ लच्छा ।
सुलही ।

कुम्हड़ा—(पु० हि०) छोटा
पौधा ।

कुर्म—(पु० स०) बुरा काम ।
कुर्मा=पापी ।

कुकर—(पु० म०) कुत्ता ।
—खाँसी=वह खाँसा जिसमें
कफ न गिरे । ढाँसी । —दत्ता
=जिसके मुख में कुकरदत्त हो ।

कुकुरौंड़ी—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार की मत्सी जो पशुधों
के बदन पर लगती है ।

कुगनि—(स्त्री० म०) दुर्दशा ।

कुञ्ज—(पु० स०) छाती ।
स्तन ।

कुचकुचाना—(त्रि० अनु०)
धोड़ा कुचलना ।

कुचक्र—(पु० स०) पद्मत्रय ।

कुचलना

कुचलना—(क्रि० हि०) पाँव से दबाना ।

कुचला—(पु० हि०) एक प्रकार का वृक्ष और उसका बीज ।

कुचाल—(स्त्री० हि०) बुरा आचरण । दुष्टता । कुचालिया—कुचाली । दुष्टता करनेवाला ।

कुजाति—(स्त्री० स०) नीच जाति ।

कुञ्जा—(पु० क्रा०) मिट्टी का प्याला । मिट्टी की ढकी गोल ढली ।

कुटना—(पु० हि०) चुगलघोर । छियों का दराल । —पन = कुत्तो का काम । मगवा लगाने का काम । कुटनी = कुत्ती । इधर उधर की लगानेवाली । (स०) कुटनी = कुटनी ।

कुटेनहारी—(स्त्री हि०) धान कूटने का काम करनेवाली स्त्री । कुटाइ = कूटने का काम । कूटने की मजदूरी । कुटौनी = धान कूटने का काम । धान कूटने की मजदूरी ।

कुटिया—(स्त्री० हि०) छोटी झोंपड़ी । कुटी = कुटिया । कुटीर = कुटी ।

कुटिल—(वि० स०) टेढ़ा । दगाबाज़ । शठ । —कीट = साँप । —ता = टेढ़ापन । ग्याटाइ । —पन = कुटिलता ।

कुटुम्ब—(पु० स०) परिवार । कुटुम्बी = परिवार वाला । कुटुम्ब के लोग ।

कुटेव—(स्त्री० हि०) घुरी आदत ।

कुट्टी—(स्त्री० हि०) छोटे गँडासे से बारीक फटा हुआ चारा । लदकों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे एक दूसरे से मिश्रता तोड़ने के लिये दाँतों पर नाखून खुट से मुलाकर करते हैं । मैत्री-भग ।

कुठला—(पु० हि०) धनाज रखने का मिट्टी का एक बड़ा बतन । कूने की भट्टी ।

कुठाँय—(स्त्री० हि०) घुरी जगह ।

कुडकुडाना—(क्रि० अनु०) मन ही मन कुटना ।

- कुड़कुड़ी—(स्त्री० अ०) घोड़े का एक रोग ।
- कुडौल—(वि० हि०) घेड़गा ।
- कुडग—(पु० हि०) घुरा डग ।
कुडगा=घुरी घाल का घेड़गा ।
- कुडना—(स्त्री० अ०) भीतर ही भीतर क्रोध करना । लजना । मसोसना ।
- कुतरना—(क्रि० हि०) दाँत से छोटा-सा टुकड़ा काट लेना ।
- कुतर्क—(पु० स०) बकवाद ।
कुतर्की=बकवाव करनेवाला ।
- कुतर—(अ०) व्यास, जो परिध के दो भाग करता है ।
- कुतिया—(स्त्री० हि०) कुत्ता ।
कुत्ता=कुत्त ।
- कुतुब—(पु० अ०) धुवतारा ।
किताब का जमा । —त्राना = पुस्तकालय । —क्रोश = किताब बेचनेवाला । —नुमा = दिग्दर्शन यत्र । कुतबा = (अ०) एक बार लिखना ।, लिखी हुई चीज ।
- कुतूल—(पु० स०) उल्कठा ।
कौतुक । खिलवाड़ । अचभा ।
- कुत्सा—(स्त्री० सं०) निन्दा ।
कुत्सित=निन्दित । अघम ।
- कुयूरु—(पु० हि०) आँस का एक रोग ।
- कुदकना—(क्रि० हि०) कूदना ।
कुदक्वा=उछल-कूद ।
- कुदरत—(स्त्री० अ०) शक्ति । प्रकृति । कारीगरी । कुदरती=प्राकृतिक । धैवी ।
- कुदूरत—(पु० फा०) मलिनता । हृदय का मैल ।
- कुदान—(पु० स०) कुपात्र को दान । कूदने की क्रिया । कूदने का स्थान ।
- कुदिन—(पु० स०) चापसि का समय ।
- कुदृष्टि—(स्त्री० सं०) घुरी नज़र ।
- कुनकुना—(वि० हि०) आधा गर्म पानी ।
- कुनवा—(पु० हि०) परिवार ।
घ्रान्दान ।
- कुनवी—(पु० हि०) हिन्दुओं की एक जाति ।

कुनाई—(स्त्री० हि०) बुरादा ।

कुनैन—(पु० थ० वि०नि०)

एक ओपधि ।

कुपुंथ—(पु० हि०) बुरा रास्ता ।

कुचाल । बुरा मत । कुपय =

कुपय ।

कुपुध्य—(पु० स०) घद-परहेजी ।

कुपाठ—(पु० स०) बुरा सलाह ।

कुपात्र—(त्रि० स०) अयोग्य ।

कुपित—(वि० स०) क्रोधित ।

नाराज ।

कुप्पा—(पु० हि०) चमड़े का

बना हुआ घड के आकार का

एक बड़ा बतन । (स्त्री०)

कप्पी ।

कुफ़—(पु० थ०) मुसलमानी

मत से भिन्न अन्य मत या

शास्त्र ।

कुफूल—(थ०) ताला ।

कुबडा—(पु० हि०) निसर्ग पीठ

देना हो गई हो । (स्त्री०)

कुबही ।

कुबुद्धि—(त्रि० स०) मूर्खता ।

बुरी सलाह ।

कुवेला—(स्त्री० स०) बुरा

समय ।

कुमत्रणा—(स्त्री० म०) बुरी

सलाह ।

कुमक—(स्त्री० तु०) सहायता ।

पक्षपात । कुमकी = कुमक से

सम्बन्ध रखनेवाला ।

कुमकुम—(पु० हि०) बेशर ।

कुमकुमा ।

कुमरी—(स्त्री० थ०) पट्टक की

जाति की एक चिड़िया ।

पिंड़की ।

कुमार—(पु० म०) पाँच वष की

श्रायु का बालक । पुत्र ।

युवराज । युवावस्था वा

उससे प्रथम की अवस्थावाला

पुरुष ।

कुमारिका—(स्त्री० स०) कुमारी ।

कुमारी = १० वष तक की

अवस्था की बच्ची ।

कुमेरु—(पु० स०) दक्षिणी ध्रुव ।

कुम्भेत—(पु० तु० कुम्भेत) घोड़े

का एक रंग जो स्याही लिये

जात होता है ।

कुम्हडा—(पु० हि०) एक पैल्लो
पाली घेज । कुम्हड़े वा पल ।

कुम्हलागा—(क्रि० हि०) ताज़गी
वा जाता रहना ।

कुम्हार—(पु० हि०) मिट्टी के
वर्तन बनाने वाली जाति ।
मिट्टी वा वर्तन बनानेवाला
आदमी ।

कुरता—(पु० तु०) एक पहनावा
जो किर ढालकर पहना जाता
है । कुरती=स्त्रियों का एक
पहनावा जो फनुही की तरह
का होता है ।

कुरवान—(त्रि० अ०) बलिदान ।
कुरवानी=बलि ।

कुरमी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार
की चीन्ही जिमके पाये कुछ
ऊँचे हाते हैं, और जिसमें
पीछे की ओर सहारे के लिये
पट्टा वा इन्ही प्रकार की
और काँइ चौड़ा लगी रहती
है ।

कुरसीनामा—(पु० प्रा०) वश
वृत्त ।

कुरात—(पु० अ०) अरबी भाषा
की एक पुस्तक जो मुसल
मानों का धर्मग्रन्थ है ।

कुराह—(स्त्री० प्रा०) पराव
रास्ता । कुराही=बदचलन ।
दुराचारी ।

कुरिया—(स्त्री० लि०) मँडई ।

कुरीति—(स्त्री० स०) पुरी रीति ।
बुचाव ।

कुरुइ—(स्त्री० हि०) मौनी ।
मूँज की बनी छोटी डलिया ।

कुरुव—(वि० स० प्रा०)
नाराज ।

कुरुप—(वि० स०) बन्सूरत ।
बेढगा । —ता=बदसूरती ।

कुरेदना—(क्रि० हि०) ररों-
चना ।

कुर्क—(त्रि० तु०) जन्त । —
अमीन=एक सरकारी वम-
चारी जो जायदाद की कुर्की
करता है । —नामा=जन्ती
का परवाना । कुर्की=देन
सुकान या भागे हुये अपराधी
को अदालत में हाजिर कराने

कुर्मी

के लिये फर्जदार था अपराधी की जायदाद का सरकार द्वारा जूझत किया जाना ।

कुर्मी—(पु० हि०) कुनबी ।

कुलग—(पु० फा०) एक पक्षी ।

मुर्गी ।

कुलजन—(पु० स०) पान की जड़ या हड्डल ।

कुल—(पु० स०) वंश । जाति ।

समूह । —कटर = अपनी

बुचाल से अपने वंश को दुबली

करनेवाला आदमी । —बलक

= वंश की कीर्ति में धब्बा

लगानेवाला । —तारन = कुल

को परित्र करनेवाला । —देव

= कुल का प्राचीन देवता ।

—पति = घर का मालिक ।

अध्यापक जो विद्यार्थियों का

भरण-यापण करता हुआ उन्हें

शिखा दे । वह ऋषि जो दस

हजार ब्रह्मचारियों को अन्न

और शिखा दे । महत ।

—पूय = जो कुल का पूज्य

हो । —वधू = कुलवती स्त्री ।

—वत = कुलीन । —वान =

कुलीन । कुनांगार = कुल नाशक ।

कुलतुल—(पु० अ०) सुराही में से पानी उँटते समय का शब्द ।

कुलक्षण—(पु० स०) धुरा लक्षण । बदबलनी ।

कुलटा—(स्त्री० स०) व्यभिचारिणी ।

कुलपा—(पु० फ्रा० सुफां) एक प्रकार का साग ।

कुलफी—(स्त्री० हि०) बरुं जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत ।

कुलबुलाना—(कि० अनु०) बहुत से छूटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना टालना । धीरे धीरे हिलना डोलना । खचल होना । कुल बुलाहट = धीरे धीरे हिलने डोलने का भाव ।

कुलह—(स्त्री० फ्रा०) टोपी । शिकारी चिड़ियों की आँख पर का टुकन । कुलहा = टोपी । शिकारी चिड़ियों की

धौप ढकने की धंधियारी ।
 कुनहो = कनटोप ।
 कुलाग—(प्रा०) जङ्गली बौघा ।
 कुलावा—(पु० अ०) लोहे का
 जमुरका जिमके द्वारा किशइ
 बाजू से जकड़ा रहता है ।
 कुलाह—(पु० स०) भूरे रंग
 का घादा । (स्त्री० फा०)
 एक प्रकार की ऊँची टोपी जो
 फारस और अफगानिस्तान
 आदि में पहनी जाती है ।
 कुली—(पु० तु०) बोन दोने
 वाला ।
 कुलीन—(वि० स०) अच्छे
 घाने का । पवित्र ।
 कुल्ला—(पु० हि०) (स्त्री० कुल्ली)
 मुल को साफ करने के लिये
 उसमें पानी लेकर इतर उधर
 हिलाकर फेंकने की क्रिया ।
 वतना पानी जितना एक बार
 मुँह में लिया जाय ।
 कुलहड—(स्त्री० हि०) पुरवा ।
 कुलिडया = छोटा पुरवा ।
 कुलहाडा—(पु० हि०) एक
 भीजार जिमसे यदई आदि

पेइ काटते हैं । टाँगा ।
 कुलहादी = टाँगी ।
 कु—(स०) बुरा । —वाक्य =
 गाली । —वासना = बुरी
 इच्छा । —विचार = बुरा
 विचार । —शामन = बुरा
 प्रबन्ध । —सग = बुरा साथ ।
 —सगति = बुरों का सग ।
 —मस्कार = बुरा मस्कार ।
 —समय = बुरा समय । सकट
 का समय । —साइत = बुरी
 साइत ।
 कुश—(पु० स०) काँस की
 तरह की एक घास ।
 कुशन—(पु० अ०) मोटा गधा ।
 तक्षिया ।
 कुशल—(वि० स०) चतुर ।
 श्रेष्ठ । पुरयशील । मगल ।
 गैरियत । —चेम = राजी
 खुशी । —ता = चतुराई ।
 योग्यता । —प्रन = किसी
 का कुशल मगल पूछना ।
 कुशलता = कुशल-समाचार ।
 कुशाम्र—(वि० स०) तेज ।
 कुशादगी—(स्त्री० प्रा०)

कुशासन

केशव । कुशासना=सुला
 हुआ । विस्तृत ।
 कुशामन—(पु० स०) पुस का
 बना हुआ धामन ।
 कुशता—(पु० प्रा०) भस्म ।
 कुशती—(स्त्री० फ०) मल्लयुद्ध ।
 —वाच=पहलवान ।
 कुष्ठ—(पु० स०) कोढ़ ।
 कुसी—(स्त्री० हि०) हलका फाल ।
 कुसुम—(पु० स०) कुसुम । केसर ।
 कुसुभी=कुसुम के रंग का ।
 कुसुम्—(स०) फूल । —गण=
 कामदेव । —शर=कामदेव ।
 कुसुमाञ्जलि=फूल से भरी
 हुई अञ्जली । पुष्पाञ्जलि ।
 न्याय का एक ग्रन्थ । कुसु
 माकर=वसत । वाटिका ।
 कुसुमायुध=कामदेव । कुसु
 मावलि =फूलों का गुच्छा ।
 कुसुमित=फूला हुआ ।
 कुहकना—(क्रि० घ० ति०) पची
 का मधुर स्वर में बोलना ।
 कुहनी—(स्त्री० स०) हाथ और
 पाद के जोड़ की हड्डी ।

कुहर—(पु० स०) गड्ढा ।
 सुगम ।
 कुहरा—(पु० हि०) वायु में जल
 के अत्यन्त सूषण कणों का
 समूह जो ठंड पाकर वायु में
 मिली हुई भाप के जमने से
 उत्पन्न होता है । कुहासा=
 कुहरा ।
 कुहराम—(पु० घ० कहर-भ्राम)
 हाहाकार ।
 कुहाना—(क्रि० हि०) नाराज
 होना ।
 कुस—(क्रा०) गली । पूजा ।
 कूँड—(स्त्री० हि०) हल जोतने
 से बनी हुई रेखा । सिर को
 बचाने के लिये लोहे की एक
 ऊँची टोपी । कूँडा=पानी
 रखने का मिट्टी का गडरा
 बर्तन । गमला । रोगी करने
 की एक प्रकार का बड़ी हाँकी
 जिमरी डाल भी बहते हैं ।
 कूँडी=पथरी । छोटी नाँद ।
 काण्ट के बीच का वह गड्ढा
 जिसमें जाट रहती है ।
 कूड़—(स्त्री० हि०) जल में होने

कृप

बाला कमल की तरह का

— एक कृत्त ।

कृष्ण—(श्री०) गली । कृष्ण ।

कृकर—(पु० दि०) कृत्ता ।

कृच—(पु० तु०) रवानगी ।

कृचा—(पु० फा०) छोटा रास्ता ।

— भाद ।

कृज—(श्री० दि०) श्वनि ।

—ना=बेमल और मधुर

। शब्द धरना । कृजित=स्व
नित ।

कृजा—(पु० फा० कृत्ता) कुल्हड़ ।

मिट्टी के पुरथे में जमाई हुई
मिसरी ।

कृद—(पु० सं०) पहाड़ की ऊँची

चोटी । गूढ़ भेद । —नीति

=दाँव पेच की नीति या

थाल । —युद्ध=धोखे की

खड़ाई । —स्थ=द्विपा

हुआ । अविनाशी । अचल ।

आला दर्जे का ।

कृद्व—(पु० दि०) एक प्रकार का

पीथा । फाफर ।

कृडा—(पु० दि०) जमीन पर

पड़ी हुई गद । बेकाम चीज़ ।

—प्राण=जहाँ कृत्ता फँका
जाता है ।

कृद्व—(पु० दि०) दल या वह
भाग जिसके एक सिरे पर
मुटिया और दूसरे पर लोपी
हाती है । (वि०) धजा ।

—मग्न=मद बुद्धि ।

कृच—(फा०) गमन । रवाना
हाना ।

कृचा—(फा०) गली ।

कृत्ता—(फा०) गुदा । मलद्वार ।

कृदना—(क्रि० दि०) फाँदना ।

जान घूमकर ऊपर से नीचे

की ओर गिरना । किसी काम

या बात के बीच में सहसा

आ मिलना या दमल देना ।

क्रम भङ्ग करके एक स्थान से

दूसरे स्थान पर पहुँच जाना ।

अत्यन्त प्रसन्न होना । गद-

यद्कर यातें करना ।

कृप—(पु० सं०) कृपा ।

कृपन—(पु० ध०) मनीषांर

कार्य का वह भाग जिस पर

शक्य भेजना वाला कुछ समा-

चारदि लिख सकता है ।

कूप-मंडूक

कूप मंडूक—(पु० सं०) कुएँ का मेडक । वह ब्यादमी जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो या बाहरी सत्कार की जिसको कुछ भी प्रभर न हो ।

कूबड—(पु० द्वि०) पीठ का टेढ़ा पन । किसी चीज़ का टेढ़ा पन ।

कूल्हा—(पु० द्वि०) कोर के नीचे कमर में पेड़ के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ ।

कूबत—(स्त्री० अ०) ज्वार ।

कृत—(वि० सं०) किया हुआ । रचित । —कर्मा = कामयाब ।

—कार्य = कामयाब । —कृत्य = कृताथ । —ज्ञ = नमक इराम । —ज्ञो = कृतज्ञ ।

—पु = एहसान मानने वाला । —शता = निहोरा मानना । —युग = सत्ययुग ।

—विद्य = जिसे विद्या का अभ्यास हो । कृताजलि = हाथ जोड़े हुये । कृतात = अत करने वाला । यम । कृतात्मा

= महारमा । कृताथ = सफत-मनोरथ । स-तुष्ट । कृति = कासूत । पार्य । कृती = पुण्यात्मा । साधु । पुराल । कृत्य = वसत्य वम । कृत्याकृत्य = भला और दुग काम । कृत्रिम = बनावटी । कर्दत = वह शब्द जो घातु में कृत प्रत्यय लगाने से बने ।

कृत्तिका—(स्त्री० म०) एक नक्षत्र ।

कृपण—(पु० सं०) कज्जुम । नीच ।

कृपया—(क्रि० वि० सं०) कृपा करके ।

कृपा—(स्त्री० सं०) दया । क्षमा । कृपा पात्र = कृपा का अधिकारी । कृपायतन = कृपा का भवन । कृपालु = दयालु ।

कृपाण—(पु० सं०) सजवार । फटार ।

कृमि—(पु० सं०) छोटा कीड़ा ।

कृश—(वि० सं०) दुबला-पतला । छोटा । —ता = दुबलापन । कमी । —र = दुबलापन । कमी । कृशित = दुर्बल ।

- दृशानु—(पु० स०) अग्नि ।
 दृषक—(पु० स०) विमान ।
 कृषि=खेती । कृषिकार=
 विमान ।
 कृष्ण—(वि० स०) काला ।
 नीला या आसमागी । यदुवशी
 यमुदेव के पुत्र जो देवकी के
 गर्भ से उत्पन्न हुये थे । —पशु
 =धैर्यपारा पशु । —मखा
 =धनुंन । —मार=काला
 मृग । कृष्णाष्टमा=जिप्त
 दिन कृष्णचंद्र का जन्म हुआ
 था । कृष्णा=द्वीपदा । कृष्णा
 जिन=काले मृग का चमड़ा ।
 केंचुआ—(पु० हि०) एक बर
 साती कीड़ा जो एक बालिरत
 या इससे कुछ और लंबा होता
 है । इसके तन में हड्डी नहीं
 होती । केंचुए के आकार का
 सफेद कीड़ा जो पेट से मल
 द्वारा बाहर निकलता है ।
 केंचुल—(स्त्री० हि०) साँप के
 शरीर पर की खोल ।
 केन्द्र—(पु० स०) मध्य । नामि ।
 बीच का स्थान ।

- केकडा—(पु० हि०) पानी का
 एक कीड़ा जिसके आठ टांगें
 और दो पंजे होते हैं ।
 केका—(स्त्री० स०) मोर की
 घोली । केकी=मोर ।
 केनकी—(स्त्री० स०) एक प्रकार
 का छोटा भाड़ या पीथा ।
 कवली—(पु० सं०) कंदू के
 पेड़ ।
 केमरा—(पु० अ०) फोरो त्वांघने
 का पत्र ।
 केराना—(त्रि० हि०) मूल में
 अन्न रखकर उसे दिनादिमा
 का बड़ और छोटे दाने
 अन्नग काना । मसक मयाजा
 हलदी आदि चीजों का मिश्र
 क व्यवहार में आती और
 पवारियों के यहाँ मिलती है ।
 केरानी—(पु० अ० त्रि० शि०)
 यह मनुष्य जिसके माता पिता
 में से कोई एक पुरोपिपण
 और दूसरा हिन्दुस्तानी हो
 सकें ।
 केराव—(पु० दि०) मसक

केरोसिन

केरोसिन—(पु० थ०) मिट्टी का तेल ।

केला—(पु० हि०) एक प्रकार का पेड़ । केले का फल ।

केलि—(स्त्री० म०) खेल । मैयुन । हँसी ।

केयट—(पु० हि०) अग्रिय पिता और वरमा माता से उत्पन्न एक अर्ध-सकर जाति ।

केवटी दाल—(स्त्री० हि०) दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल ।

केवडा—(पु० हि०) सकंद वेत्री का पीधा जो वेत्रवा से कुछ बड़ा होता है । एक पद जो हरद्वार के जङ्गलों और बरमा में होता है ।

केचल—(वि० स०) थकेला । शुद्ध । उत्तम । सिद्ध ।

केशव—(पु० म०) कृष्ण का एक नाम ।

केस—(पु० थ०) मुकुटमा । हाजत । घटना ।

केसर—(पु० म०) एक प्रकार के फूल की पंखड़ियाँ जानवरों

की गद्दा पर के यात्र । कसरिया = केसर के रंग का । केसरी = सिंह ।

कैची—(स्त्री० पु०) फत्तरनी ।

कैडा—(पु० हि०) पैमाना । चाल । शारदाज्ञी ।

कैप—(पु० अ०) छावनी । पडाव ।

कैटलग—(पु० अ०) सूचीपत्र । फेरिस्त ।

कैथ—(पु० हि०) एक कंगेला पेड़ जो खेल के पेड़ के सामान होता है । कैथो = एक पुरानी लिपि जो नागरी से मिलती जुलती है । प्रायः कायस्थ जाग इसमें लिखते हैं ।

कैद—(स्त्री० थ०) बन्दन । दंड । कारावास । —क = कागज की पट्टी जिसमें किसी एक नियम या व्यक्ति से संबंध रखनेवाले फाताजादि रखे जाते हैं । —खाना = कारागार । जेजखाना । —तन हाइ = पालकाठरी । —मइज

= सादी कैद । — सप्त =
कदो कैद । कैदी = बन्दी ।

कैप—(स्त्री० अ०) टोपी ।

कैपिटल—(पु० अ०) धन ।
पूँजी । राजधानी ।

कैपिटलिस्ट—(पु० अ०) पूँजी-
पति ।

कैफ—(पु० अ०) नशा ।
कैफी = मतवाला । नरोपाज ।

कैफियत—(स्त्री० अ०) समा-
चार । विवरण ।

कैबिनेट—(स्त्री० अ०) मुख्य
मंत्रियों की वह विशेष सभा
जो किसी एकांत स्थान में बैठ
कर राज्य प्रबंध पर विचार
करे । मंत्रिमंडल । लकड़ी
का बना हुआ सामान । फोटो
का एक आकार जो फाई
साइज का दूना होता है ।

कैरट—(पु० अ०) करात । एक
प्रकार का मान ।

कैलंडर—(पु० अ०) अँगरेजी
तिथि पत्र या पचास । सूची ।
रजिस्टर ।

कैलास—(पु० स०) हिमालय
की एक शोभा का नाम ।

कैरज्य—(पु० अ०) मुक्ति ।

कैरा—(पु० अ०) काया-शैला ।
गर्दी । (वि०) निपट्टा
दाम नगद किया गया था ।
—बॉक्स—दराये चलने का
छोटा सड़क ।

कैरियर—(पु० अ०) गज़ादी ।

कैस—(अ०) कैला के प्रती
मजनों का नाम ।

कैसर—(पु० अ० मी०)
सम्राट् । जमना के सम्राट् का
उपाधि ।

कैसा—(वि० हि०) क्रिय प्रकार
का ।

कौकण—(पु० स०) दक्षिण
भारत का एक प्रदेश ।

कौचना—(क्रि० हि०) चुभाना ।

कौचा—(पु० हि०) बहेलियों की
वह लम्बी लगी निमके
पंखे निरे पर ये क्षामा क्षामये
रहते हैं और जिससे घृष पर
बैठे हुए पक्षी को कौचकर-
फँसा खेते हैं ।

कोँछु—(पु० हि०) स्त्रियों के
अंगुल का एक कोना ।

कोँटा—(पु० हि०) धातु का वह
। छत्ता या बड़ा जिसमें जड़ी
या और कोई वस्तु अटकाव
जाती है ।

कोँपर—(पु० हि०) छोटा अथ
पका आम ।

कोँहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा ।
कोँहड़ी—कुम्हड़े की या
पेठे की बनाई हुई घरी ।

कोग्रा—(पु० हि०) रेशम के
कीड़े का घर । टमर नामक
रेशम का कीड़ा । महुए का
पका फल । कटहल के पके
हुये बीज ।

कोहरी—(पु० हि०) एक जाति ।
जो तरकारी होती है ।

कोइली—(धी० हि०) वह कच्चा
आम जिसमें किसी प्रकार का
आघात लगने से एक काला
सा दाग पड़ जाता है ।

कोई—(सब०) एक भी (अनुष्य) ।

कोका—(पु० ध०) दक्षिणी अमे-
रिका का एक वृक्ष जिससे

काकेन निकलती है । (तु०)
घाय की सतान । काकेन =
कोपा नामक वृक्ष की पत्तियों
से तैयार की हुई एक प्रकार
की गंधहीन और सफ़ेद रंग
की औषधि । कोक-शाख = रति
परने की क्रिया यतानेवाला
शाख जिसे कोक परिद्धत ने
बनाया था ।

कोकिल—(खी० स०) कोयल ।
कोकिला = कोयल ।

कोच—(पु० ध०) गद्देदार बड़िया
पलंग, बेंच या चाराम कुर्सी ।
—ना = घँसाना । —क =
(प्रा०) छोटा ।

कोचमैन—(पु० ध०) घोड़ागादी
हाँकनेवाला ।

कोच बम्स—(पु० ध०) घोड़ा
गाड़ी में वह ऊँचा स्थान
जिसपर हाँकनेवाला बैठा
है । कोचवा = घोड़ागादी
हाँकनेवाला ।

कोचोन—(पु० हि०) महान
प्रान्त की एक देशी रियासत

जा ग्रावन्कोर राज्य के उत्तर में है।

कोट—(पु० स०) जिला। राज मन्दिर। (ध०) श्रृंगरेड्डी दग का एक पहनावा जो कमीज के ऊपर पहना जाता है।
—पाल=जिले की रक्षा करनेवाला। कोतवाल।

कोटर—(पु० स०) पेट का लोमला भाग।

कोटि—(स्त्री० स०) धनुष का मिरा। कमान का गांश। श्रेणी। (वि०) करोड़।
—श =करोड़ो।

कोटेशन—(पु० थ०) लेख वा वाक्य का उद्धृत अंश। सीसे वा दल्ला हुआ चौकोर पोला टुकड़ा जो बम्पाज करने में खाली स्थान भरने के काम में आता है।

कोठरी—(स्त्री० हि०) छाटा कमरा। कोठा=बड़ी कोठरी। भंडार। अठारी। पेट। गभा शय। घर। कोठार=भंडार। कोठारी=भंडारी। कोठी=

इवेली। बँगला। बड़ी दुकान जिसमें धोक की विक्री होती हो। यखार। कोठीपाल=महाजान। यष्टा। व्यापारी।

कोट—(पु० थ०) सकेत। विधा। किसी विषय के प्रयोग के नियम आदि का समूह। ज्ञानून।

कोडा—(पु० हि०) चातुक।

कोडी—(स्त्री० थ०) योस का समूह।

कोट—(पु० हि०) एक प्रकार का रक्त ग्रौर तथा सम्बंधी रोग। कोड़ी=कोड़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण—(पु० स०) कोना।

कोतल—(पु० प्रा०) घासली घोड़ा। (वि०) खाली।

कोतल गारद (पु० थ० फार्टर गार्ड) छावनी का वह प्रधान स्थान जहाँ हर समय गारद रहती है।

कोतवाल—(पु० स० कोट पाल) पुलिस का इन्स्पेक्टर।

कोंडु—(पु० हि०) त्रिपों के
अंशुल का एक कोना ।

कोंड़ा—(पु० हि०) धातु का यह
छद्मा था कहा जिसमें जमीर
या और कोई वस्तु अटकाइ
जाती है ।

कोंपर—(पु० हि०) छोटा अथ
परा आम ।

कोंहडा—(पु० हि०) कुम्हड़ा ।

कोंहड़ी—कुम्हड़े की या
पेटे की थनाइ हुई बरी ।

कोप्रा—(पु० हि०) रश्म के
काटे का घर । टमर नामक
रेशम का कीटा । महुए का
पका फल । फट्टल के पके
हुये बीज ।

कोहरी—(पु० हि०) एक जाति ।
जो सरकारी होती है ।

कोइली—(स्त्री० हि०) यह कच्चा
आम जिसमें किसी प्रकार का
आघात लगने से एक काला
मा दाग पड़ जाता है ।

कोइ—(सब०) एक भी (मनुष्य) ।

कोका—(पु० अ०) दक्षिणी अमे-
रिका का एक वृक्ष जिससे

काकेन निकलती है । (तु०)
घाय की मत्तान । काकेन =
कोका नामक वृक्ष की पत्तियों
से तैयार की हुई एक प्रकार
की गंधहीन और सफेद रंग
की औषधि । कोक-शास्त्र = रति
करने की क्रिया यतानेवाला
शास्त्र जिसे कोक परिद्धत ने
बनाया था ।

कोकिल—(स्त्री० स०) कायल ।
कोकिला = कोयल ।

कोच—(पु० अ०) गहदार खदिया
पलंग, बेंच या आराम बुर्सी ।
—ना = धँसाना । —क =
(का०) छोटा ।

कोचमैा—(पु० अ०) घोड़ागाड़ी
हाँकनेवाला ।

कोच बक्स—(पु० अ०) घोड़ा
गाड़ी में यह ऊँचा स्थान
जिसपर हाँकनेवाला बैठा
है । कोचगान = घोड़ागाड़ी
हाँकनेवाला ।

कोचीन—(पु० हि०) मद्रास
प्रान्त की एक देशी रियासत

कोरम—(पु० अ०) कार्य निर्वाहक-सदस्य सत्या । निरिक्त सत्या ।

कोरमा—(पु० तु०) अधिक धी में भुना हुआ एक प्रकार का भास जिममें जल का अश या जोरवा बिल्कुल नहीं होता ।

कोरस—(अ०) कह्यों का मिल-फर एक स्वर में गाना जाता ।

कोरा—(वि० हि०) जिमका व्यवहार न हुआ हो । कपड़ा वा मिट्टी का वस्तु जिससे जल का स्पर्श न हुआ हो । सादा । खाली । बेदाग । मूल । धन-हीन । केवल । —पन = नवीनता ।

कोरी—(पु० हि०) हिंदू जुलाहा । वस्तुओं का समूह । जो काम में न लाई गई हो । सादी ।

कोर्ट—(पु० अ०) अदालत । —थाफ वॉड्म = वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा

किसी अनाथ, विधवा या अयोग्य मनुष्य की भारी जायदाद का प्रबन्ध होता है ।

—इन्स्पेक्टर = पुलिस का वह कर्मचारी जो पुलिस की ओर से फौजदारी अदालतों में मुकद्दमों की पैरवी करता है ।

—फोस = अदालती रसूम ।

—माशक = फौजी अदालत जिसमें सेना के नियमों का भग करनेवाले, सेना छोड़कर भागनेवाले तथा वागी सिपाहियों का विचार होता है ।

—शिप = एक पारधात्य प्रथा जिसके अनुसार पुरुष किसी स्त्री को अपने साथ विवाह करने के लिये उद्यत और अनुकूल करता है ।

कोर्स—(पु० अ०) पाठ्यक्रम । पाठ्य पुस्तक ।

कोपाभ्यक्ष—(पु० स०) खजाची ।

कोला—(अ०) अफ्रीका के गम प्रदेशों में होनेवाला एक पेड़ ।

कोतह—(वि० प्रा०) छोटा ।

—गदन = जिसका गदन

छोटी हो । कोताह = छाटा ।

कोताही = कमी ।

कोथला—(पु० दि०) पदा

थैला । पेट । कोथली = रुपये

आदि रखने की एक प्रकार

की लची पतली थैली जिसे

लोग कमर में बांधकर रखते

हैं । गँजिया ।

कोता—(पु० दि०) माशा ।

जुमला निरा ।

कोप—(पु० सं०) प्रोध ।

कोफ़—(पु० प्रा०) रज । परे

शानी ।

कोफ़ा—(पु० प्रा०) कूटे हुए

मास का बना हुआ एक प्रकार

का मसाला ।

कोया—(पु० प्रा०) मोगरी ।

दुरमुट ।

कोमल—(वि० सं०) मुलायम ।

सुन्दर । सुन्दर । —ता =

नरमी । मधुरता ।

कोयर—(पु० दि०) सागपात ।

यह दूरा चारा जो भी बँह

आदि का दिया जाता है ।

कोयरा—(स्त्री० दि०) कोबिजा ।

कोयला—(पु० दि०) घट खला

हूया चरा जो लची हुई

लकड़ी के अंगारों को सुकाने

से बचता है ।

कोया—(पु० दि०) चाँस का

ढेला । चाँस का बेंना ।

कोर—(स्त्री० दि०) विनारा ।

बेंना । (अ०) पलटन ।

सैन्य दल ।

कोरकसर—(स्त्री० दि० + प्रा०)

पेय और कमी । अधिकता

या न्यूनता ।

कोरट—(पु० अ०) कोट चाफ

घाड़ स) कोट चाफ दाढम ।

किसी बायलाद का काट चाफ

बाँहस के प्रबंध में आना या

लिया जाना ।

कोरना—(क्ति० दि०) लकड़ी

आदि में कोर निकालना ।

नकाशी करना ।

कोरनिश—(तु०) सुय-मुककर

सजाम करना ।

कुल देवता स्थापित किये जाते हैं ।
 कोहा—(पु० हि०) मिट्टी का धरतन । खोपड़ी के आकार का मिट्टी का धरतन ।
 कोहान—(पु० फ्रा०) ऊँट की पीठ पर का धूपड़ा ।
 कोहिस्तान—(पु० फ्रा०) पहाड़ी देश ।
 कौंची—(स्त्री० हि०) बाँस की पतली टहनियाँ ।
 कौट—(पु० अ०) युरोप के सामतों या बड़े बड़े जमीनारों की उपाधि ।
 कौसल—(पु० अ०) बैरिस्टर । एडवोकेट ।
 कासलर—(पु० अ०) परामश दाता ।
 कौसिल—(अ०) विचार-सभा ।
 कोच—(स्त्री० अ०) मोटे गहरे का अँगरेज़ी पर्नाग या बेंच ।
 कोट्टुम्बिक—(वि० स०) कुटुम्ब का । परिवारवाला ।
 कौडी—(स्त्री० हि०) समुद्र का एक कोड़ा जो घोंघे की तरह

हड्डी के एक टाँचे के अन्दर रहता है । कौड़ा = बड़ी पौड़ी । कौड़ियाला = पौड़ी के रंग का ।

कौडिल्ला—(पु० हि०) मछली पकड़कर खानेवाली एक चिड़िया ।

कौडेना—(पु० हि०) कसेरों का लोहे का एक औज़ार ।

कौतुरु—(पु० स०) कुतूहल । दिह्वगी । खेल । तमाशा । कौतुकी = कौतुक करनेवाला । खेब । तमाशा करनेवाला । कौतुहल = कौतुक ।

कौथ—(स्त्री० हि०) कौन सी तिथि । कौन सम्बन्ध । कौथा = किस सख्या का ।

कोम—(स्त्री० अ०) जाति । कौमियत—(स्त्री० अ०) जाती-यता ।

कोमी—(वि० अ०) जातीय ।

कौर—(पु० हि०) निवाला ।

कोरना—(स्त्री० हि०) सँकना ।

कौलज—(पु० यू० कूलज) बायसूल । कौलिक पेन ।

कोलाहल

कोलाहल—(पु० म०) शोर ।

कोलिया—(स्त्री० हि०) तग
राम्ता ।

कोत्रिद—(वि० स०) पठित ।

कोश—(पु० म०) थडा । डिग्रा ।

टिक्शनरी । —घार = शब्द
कोश बनानेवाला । —वृद्धि =अह-वृद्धि का रोग । काश
धिप, कोशाधिपति = राजा

नची—काशाधीश = भट्टारी ।

कोप = काश ।

कोशल—(पु० स०) सरयू वा
घाघरा नदी के दोनों तटों
पर का देश । कोशल ।

कोशिश—(पु० क्रा०) प्रयत्न ।

कोष्ठ—(पु० स०) पेट का
भीतरी हिस्सा । कोठा ।—क = किसी प्रकार की
दीवार । किसी प्रकार का
चक्र जिसमें बहुत से घर हों ।लिखने में एक प्रकार का
गिहों का जोड़ा चिम्के भीतर
कुछ वाक्य या शब्द आदि
लिखे जाते हैं । (म०) प्रीक ।

—वृद्ध = पेट में मल का

रकना । —शुद्धि = पेट का
मल-रहित और विरक्तुल साफ
हो जाना ।कोस—(पु० हि०) दूर की एक
नाप । जो ३६२० गज की
मानी जाती है ।कोसता—(वि० हि०) शाप
के रूप में मालियों देना ।कोसा—(पु० हि०) एक प्रकार
का रेशम जो मध्य भारत में
अधिक होता है । मिट्टी का
बदा दीया । कोसिया = मिट्टी
का छोटा कसोरा । चूना रखने
की कुँड़ी ।

कोह—(क्रा०) पहाड़ ।

कोहदन—(क्रा०) परदाद ।
पहाड़ खादनेवाला ।कोहवाफ—(पु० क्रा०) योरप
और एशिया के बीच का
पहाड़ । परिमता ।कोहनूर—(पु० फा०) एक बहुत
बदा और प्रसिद्ध हारा ।कोहबर—(पु० हि०) यह न्याय
या घर जहाँ विवाद के समय

- क्राउन प्रिंस—(पु० अ०) युव राज ।
- क्रिकेट—(अ०) गेंद का एक खेल ।
- क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट—(पु० अ०) गुफिया महकमा । पुलिस । सो० आई० टी० ।
- क्रिमिनल पोर्सीज्ज फोड—(पु० अ०) दंड विधान । जाब्ता फौजदारी ।
- क्रिया—(स्त्री० स०) चेष्टा । अनुष्ठान । शौचादि कर्म । प्रेत कर्म । उपाय । —निष्ठ=स्नान, सप्या, तपशादि नित्य कर्म करनेवाला । —वान कर्मनिष्ठ ।
- क्रिस्टल—(पु० अ०) बिस्फीर । शोरे आदि का जमा हुआ रवादार टुकटा ।
- क्रिस्टान—(पु० अ०) “क्रिस्तान =ईसाई । क्रिस्तानो =ईसाई मतानुसार ।
- क्रोडा—(स्त्री० स०) कल्लोज ।
- क्रीत—(वि० स०) कय किया हुआ । —दास =जरखरीद गुलाम ।
- क्रीम—(अ०) मलाई ।
- कूजर—(पु० अ०) तज चलने वाला हथियारबन्द जहाज । रचक जहाज ।
- कूर—(वि० स०) निदय । —कर्मा =कूर काम करने वाला । —ता =कठोरता । दुरता ।
- कूम—(पु० अ० श्रास) इसाइयों का एक प्रकार का धम-चिह्न ।
- क्रेडिट—(पु० अ०) बाजार में मान मयादा, जिसके कारण मनुष्य ऋण देन कर सकता है । साख ।
- क्रेता—(पु० स०) मोल लेने वाला ।
- क्रेन—(अ०) योका उठानेवाली चोंचनुमा मशीन ।
- क्रोडपत्र—(पु० स०) अतिरिक्त पत्र । सप्लीमेंट ।
- क्रोध—(पु० स०) गुस्सा ।

कौल

कौल—(पु० स०) वाममार्गी ।

कौल—(पु० तु० करावल)

सेना की छावनी का मध्य भाग । (थ०) कथन । प्रतिज्ञा ।

कोवाल—(पु० थ०) सुमल मानों में गवैशों की पूर जाति जो कौवाली गाती है । कौवाली=एक प्रकार का गाना जो धीरों की मज़ार या सक्रियों की मजलिसों में होता है ।

कौशल—(पु० स०) कुशलता । चतुराई । कौशल देश का निवासी । कौशल्य=राम चन्द्र की माता ।

कौस—(थ०) कमान । परिधि का टुकड़ा ।

कौसकुजा—(थ०) इन्द्र धनुष ।

क्यों—(क्रि० वि० हि०) किम कारण ? किम भोंति ।

कदन—(पु० स०) रोग ।

कम—(पु० स०) शैली । मिल सिद्धा । —श =सिद्धसिद्धे पार । धीरे धीरे । क्रमागत =

क्रमश किसी रूप को प्राप्त । परपरागत । क्रमानुसार = क्रमश ।

कम्य—(पु० स०) मोल लेना । कया=मोल लेनेवाला । कय्य=जो बिक्री के लिये रक्खा जाय ।

क्राति—(स्त्री० स०) रगोल में वह कल्पित वृत्त नियम पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है । फेर फार । —मडल=वह वृत्त नियम पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है । —वृत्त=सूर्य का माय । इन्द्रिजाव ।

क्राइस्ट—(पु० थ०) ईसामसीह ।

क्राउन—(पु० थ०) राजमुकुट । छापे के कागज़ की एक नाप जो १५ इंच चौड़ा और घीस इंच लम्बा होता है । राजा ।

क्राउन कालोनी—(स्त्री० थ०) वह उपनिवेश जो किसी राज्य के अधीन हो ।

सूँघन से आदमी बेहोश हो जाता है ।

कचित—(क्रि० वि० म०) शायद ही कदा ।

कार्टाइन—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ प्लेग या दूमरी छूतवाली बीमारी के दिनों में रेल या जहाज के यात्री कुछ दिनों के लिये सरकार की ओर से रोक कर रकये जाते हैं ।

कारापन—(पु०) कुमारपन । कारा = जिसका विवाद न हुआ हो ।

काटर—(पु० अ०) बम्ती । बाड़ा । टेरा । मुकाम ।

केशन—(पु० अ०) प्रश्न । सवाल ।

केशन पेपर—(पु० अ०) परीक्षा पत्र । प्रश्न-पत्र ।

काडूट—(पु० अ०) छापे में मीसे का ढला हुआ चौकर टुकड़ा जो कपाज बनने में खाली लाहा आदि भरने के काम में आता है ।

काथ—(पु० स०) काड़ा ।

कार्टर मास्टर—(पु० अ०) एक

क्रीडी अफसर जिसका काम मैणिकों के लिये स्थान, भोजन और घस आदि आवश्यक सामग्रियों का प्रबन्ध करना होता है । जहाज का एक अफसर जो रगीत कड़ी, लालटेन या अन्य सकेत दिग्गजाकर मण्डाहों को जहाज चलाने में सहायता देता और उन्हें समुद्र की गहराई और निशा आदि बतलाता है ।

किताइ—(पु० अ०) कुनै ।

कृतव्य—(वि० स०) क्षमा करने के योग्य ।

क्षण—(स०) पल । —प्रभा = बिचला । —भगुर = धर्मिय ।

क्षणिक = क्षणभगुर ।

क्षत—(वि० स०) घाव । फोटा । आघात पहुँचाना ।

क्षति—(स्त्री० स०) हानि । नाश ।

क्षत्र—(पु० स०) बल । राष्ट्र ।

धन । क्षत्रिय = हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण ।

राजा । बल । क्षत्र = क्षत्रियों का ।

- क्रोधित = क्रुद्ध । क्रोधी =
क्रोध करनेवाला ।
क्रुच—(अ०) मोटर के रोकने
का एक पुरजा ।
क्रुश—(पु० अ०) साहित्य,
विज्ञान, राजनीति आदि मार्ग
जनिक विषयों पर विचार करने
अथवा आमोद प्रमोद के लिये
सघटित की दुइ दुइ लोगों
की समिति । मनोरिनोद की
जगह ।
क्रुश—(पु० अ०) मुशी ।
लोखक ।
क्रुशत—(वि० स०) थका हुआ ।
क्रुशति = परिश्रम ।
क्रुशता—(पु० अ०) सरकस
आदि का ममखरा ।
क्रुशक—(स्त्री० अ०) बड़ी घड़ी
जो लकड़ी आदि के चौखटों
में लड़ी हाथो है । दीवार पर
की घड़ी ।
क्रुशक टावर—(पु० अ०) घटा
घर ।
क्रुशध—(अ०) कपड़ा ।

- क्रुशनेट—(पु० अ०) एक प्रकार
का अंगरेजी याज्ञा घो मुँह
से यज्ञाया जाता है ।
क्रुशरेट—(पु० अ०) एक प्रकार
की विहायती शराब ।
क्रुशाम—(पु० अ०) दरजा ।
क्रुशप—(स्त्री० अ०) पजेनुमा
एक कमाने जिसमें चिट्टियों
कागजादि को एकत्र करके इम
सिप लगाया जाता है कि
वे सब इधर उधर न होने
पावें । पकड़ने की चिमटी ।
क्रुशियर—(कि० अ०) साफ
करना ।
क्रुशिशित—(वि० स०) हेश पाया
हुआ । क्रुशिट = दुखी । कठिन ।
—कल्पना = बहुत धुमा फिरा
कर लगाया हुआ अथ ।
क्रुशिव—(पु० स०) नामदे ।
डरपोक ।
क्रुशेम—(कि० अ०) दाज ।
क्रुशेश—(पु० म०) दुख ।
क्रुशैव्य—(पु० स०) नपुसकता ।
क्रुशोरोफार्म—(पु० अ०) एक
प्रसिद्ध सरख औषधि जिसके

सूँघने से घावमी येहोश हा जाता है ।

दक्षित—(कि० वि० स०) गायद ही कोई ।

कार्टाइन—(पु० अ०) यह स्थान बर्दा खोग या दूसरी छुतवात्री बीमारी क टिाँ में रक्त या बहाव के यात्रो कुछ दिनों के लिय सरकार की ओर से रोय कर रखे जाते ह ।

कारापन—(पु०) कुमारपन । कारा =निसका विवाद न हुआ हो ।

कार्टर—(पु० अ०) बस्ती । बाड़ा । टरा । मुजाम ।

केश्वन—(पु० अ०) प्रश्न । सवाल ।

केश्वन पेपर—(पु० अ०) परीचा पत्र । प्रश्न पत्र ।

काइट—(पु० अ०) छापे में साये का डला हुआ चोकार टुकड़ा जो कपोज़ वरने में खाली लाइन आदि भरने के काम में आता है ।

काय—(पु० स०) कादा ।

कार्टर मास्टर—(पु० अ०) एक

प्रीजी धरसर जिसका काम सैनिकों के लिये स्थान, भोजन और वष आदि आवश्यक सामग्रिया का प्रबन्ध करना हाता है । जहाज़ या युव अक्रमर जो रगीन कटी, रालटो या अन्य सकेन रिथलापर मरलाहों को जटाज़ चलाग में सहायता देना श्रीर उह समुद्र की गहराट श्रीर दिगा आदि बतलागा है ।

किनाइरा—(पु० अ०) बुईन ।

क्षतव्य—(वि० म०) क्षुधा के योग्य ।

क्षय—(स०) पत्र । —
पिजला । —

क्षणिक = क्षणिक ।

क्षत—(वि० म०) क्षत ।
घाघात पक्ष ।

क्षति—(खी० अ०) क्षति ।

क्षत्र—(पु० म०) क्षत्र ।

घन ।

क्षत्र ।

क्षय

क्षय—(पु० स०) प्रलय । नाश ।
रोग । अत ।
क्षार—(पु० स०) नमक । सजी ।
शोरा ।
क्षीण—(पु० स०) दुर्बला । —ता
= कमजारी । दुश्लापन ।
सूक्ष्मता ।
क्षीर—(पु० स०) दूध ।
क्षुद्र—(पु० स०) नीच । कमीना ।
—ता=नीचता । शोषापन ।
क्षुद्राशय = कमीता ।
क्षुद्र घटिका—(छा० स०) घुँघुरू
दार करधनी ।
क्षुधा—(स्त्री० स०) भूख । —तुर
= भूखा । क्षुधित = भूखा ।

क्षुब्ध—(त्रि० स०) चञ्चल ।
व्याकुल । भयभीत ।
क्षेत्र—(पु० स०) खेत । मन्तल
भूमि । उत्पत्ति स्थान । पुण्य
स्थान । —फल = रकबा ।
क्षेपक—(त्रि० स०) मित्राया
हुधा ।
क्षेम—(पु० स०) कल्याण ।
सुख ।
क्षेमैष्ट—(पु० स०) धारमीर फा
णक प्रसिद्ध सस्कृत-कवि, ग्रन्थ-
धार और इतिहासकार ।
क्षोभ—(पु० सं०) -घबराहट ।
रज । क्रोध ।

ख—हिन्दी वर्ण माला में कर्ग का दूसरा अक्षर । इसका उच्चारण कठ से होता है ।
 खँखारना—(क्रि० हि०) खँसना ।
 खड़—(पु० हि०) तलवार ।
 खँगना—(क्रि० हि०) कम होना ।
 खगारना—(क्रि० हि०) धोना ।
 खँचाना—(क्रि० हि०) अकित करना ।
 खंजन—(पु० स०) एक प्रसिद्ध पक्षी ।
 खजर—(पु० फ्रा०) कटार ।
 खँजरो—(अ० हि०) दऊली की तरह का एक छोटा बाजा ।
 खड—(पु० स०) भाग । —
 धाव्य = वह धाव्य जिसमें 'धाव्य' के सम्पूर्ण अक्षर या लक्षण न हों, यत्कि कुछ ही हों । —प्रलय = वह प्रलय जो एक चतुर्युगी या महाका एक दिन बीत जाने पर —हर = दूटे या

गिरे हुये मकान का अवशिष्ट भाग । खडित = दूटा हुआ ।
 धपूण ।
 खडन—(पु० स०) डुकड़े-डुकड़े करना । खडनीय = तोड़ने फोड़ने लायक ।
 खँडपूरी—(खी० हि०) एक प्रकार की भरी हुई पूरी जिसके अन्दर मेवे और मसाले के साथ चीनी भरी जाता है ।
 खता—(पु० हि०) वह धौंजार जिसस जमीन आदि रोदी जाती है ।
 खदक—(खी० अ०) शहर या क़िले के चारों ओर रोदी हुई सड़ । बड़ा गड्ढा ।
 खन्द —(फा०) हँसी ।
 खम—(पु० हि०) खमा । सहारा ।
 खमा = स्तम्भ ।
 खौंदगी—(फा०) शिष्टा । पढ़ाई ।
 खौंदा—(फा०) साधर । पठित ।
 खूँसार—(फा०) खनी । खूँज = खनी ।

रस्यार—(सं० पु० अणु०) एक ।

—रा = रसिना ।

रसगोल—(पु० सं०) धावाग
मडल । —विद्या = ज्योतिष ।

रसग्राम = पूरा ग्रहण ।

रसराखत्र—(क्रि० वि० यणु०)
बहुत भरा हुआ ।

रसचर—(पु० हि०) गंध और
घोड़ी के मयाग से उत्पन्न
एक पशु ।

रसटना—(क्रि० अ०) कमाता ।
कड़ी मेहनत करना ।

रसमल—(पु० हि०) रसकीटा ।

रसमिष्टा—(पु० हि०) कुछ रस
और कुछ मीठा ।

रसप्राइ—(स्त्री० हि०) रसपान ।
खटास = रसपान । खटा =
बच्चे ग्राम, इमली आदि के
रसाद का सुगंध ।

रसटिक—(पु० हि०) हिन्दुओं
के अतगत एक जाति
जिसका काम फल तरकारी
आदि घाना और बेचना है ।

रसटिया—(स्त्री० हि०) छोटी

घासपाई । रसटोलना = रसटोला
= छोटी घासपाई ।

रसटला—(पु० हि०) इंटों की
रसटी चुनाई ।

रसटुट्टी—(स्त्री० हि०) उलट
फेर । हलचल ।

रसडमडल—(पु० हि०) गड़पड़ ।

रसडा—(वि० हि०) ऊपर को
उठा हुआ । उहरा हुआ ।
प्रस्तुत । तैयार । धारम्भ ।
स्थापित । पूरा । उहरा हुआ ।

रसडाऊँ—(स्त्री० हि०) काठ
की पायड़ी ।

रसडिया—(स्त्री० हि०) सरुद
मिठी ।

रसडी गोती—(स्त्री० हि०)
हिन्दी भाषा ।

रस—(पु० हि०) गड्ढा ।

रस—(पु० अ०) विट्टी ।
लिखावट । रेखा । दाढ़ी के
के बाल ।

रसतना—(हि० अ०) मुमलमानों
को एक रसम जिसमें उनके
लिंग के अगले भाग का रस

- दुध्या घमड़ा काट निया जाता है ।
- उत्तम—(वि० फा०) पुण्य ।
- उत्तरा—(प्रा०) भय । अदेश ।
- खतरानी—(स्त्री० हि०) खत्री जाति की स्त्री ।
- उत्ता—(स्त्री० अ०) अपराध । धोखा । भूल । —यार = अपराधी ।
- उत्तियाँगी—(स्त्री० हि०) रासा खतियाने का काम । यह कागज़ जिसमें पट्टारी असामी का रकबा और तगान आदि दज करता है ।
- उत्तम—(अ०) उत्तीर । अन्त ।
- उत्ता—(पु० हि०) गड्ढा । अन्न रखने का स्थान ।
- उत्त्री—(पु० हि०) हिन्दुओं में क्षत्रियों के अतगत एक जाति जो अधिकतर पञ्जाब में बसती है । क्षत्रिय ।
- उत्तशा—(पु० अ०) डर ।
- उत्तान—(स्त्री० हि०) वह गड्ढा जिसे खोदकर उसके अन्दर से कोई पदार्थ निकाला जाय ।
- उत्तीव—(पु० प्रा०) मिस्र के बादशाह की उपाधि ।
- खट्टेगना—(स० टि०) दौड़ाना ।
- उत्तची—(स्त्री० तु० कमधी) कसठा । कबाब भूजने की सीप । घाँस की पतली पत्ती ।
- उत्तडी—(पु० हि०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मवा की छाजन पर रखने के काम आता है । उत्तडी = मिट्टी की वह हँदिया जिसमें भेंड़भूजे दाना भूजते हैं । उत्तरेल = उत्तरे से छाई हुई छत ।
- उत्तपर—(पु० हि०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र ।
- उत्तकान—(अ०) पागलपन । दित की बीमारी ।
- उत्तगी—(स्त्री० फा०) अग्रस-यता । क्रोध । उत्ता = नाराज़ । क्रुद्ध ।
- उत्तफीफ—(वि० अ०) थोड़ा । चुद्र । लजित ।
- खबर—(स्त्री० अ०) समाचार । सूचना । संदेश । सुधि ।

स्वप्नार—(स० पु० थनु०) कप ।
 —ना = खामना ।
 स्वप्नोल—(पु० स०) आकाश
 मण्डल । —विष्ठा = ज्योतिष ।
 स्वप्नस = पूरा ग्रहण ।
 स्वप्नारन्व—(क्रि० वि० थनु०)
 बहुत भरा हुआ ।
 स्वप्नार—(पु० हि०) गधे और
 घोड़ी के मयोग में उत्पन्न
 एक पशु ।
 स्वप्नना—(क्रि० थ०) कमना ।
 कड़ी मेहनत करना ।
 स्वप्नमल—(पु० हि०) चटकीला ।
 स्वप्नमिष्टा—(पु० हि०) सुत्र पहा
 और बुद्ध मीरा ।
 स्वप्नार्ह—(स्त्री० हि०) सहापन ।
 स्वप्नस = स्वप्नपन । स्वप्न =
 कचे ग्राम, इमली आदि के
 स्वाद का गुण ।
 स्वप्नार—(पु० हि०) हिन्दुओं
 के अतगत एक जाति
 जिसका काम फल सरकारी
 आदि खोना और बेचना है ।
 स्वप्नार्या—(स्त्री० हि०) छोटी

चारपाई । स्वप्नोलना = खटोला
 = छोटी चारपाई ।
 स्वप्नजा—(पु० हि०) हँसों की
 खर्ची धुनाई ।
 स्वप्नयडी—(स्त्री० हि०) उलट
 फेर । हलचल ।
 स्वप्नमण्डल—(पु० हि०) गदबद ।
 स्वप्नार—(वि० हि०) ऊपर को
 उठा हुआ । टहरा हुआ ।
 प्रस्तुत । तैयार । आरम्भ ।
 स्थापित । पूरा । ठहरा हुआ ।
 स्वप्नार्ह—(स्त्री० हि०) काठ
 की पाखड़ी ।
 स्वप्नार्या—(स्त्री० हि०) सफ़ेद
 मिट्टी ।
 स्वप्नारी घोती—(स्त्री० हि०)
 हिंदी भाषा ।
 स्वप्नार—(पु० हि०) गहड़ा ।
 स्वप्नार—(पु० थ०) चिट्ठी ।
 लिखावट । रेखा । दाढ़ी के
 क बाल ।
 स्वप्नना—(हि० थ०) मुसलमानों
 की एक रस्म जिसमें उनके
 लिंग के अगले भाग का बड़ा

- हुआ चमड़ा काट दिया जाता है ।
- सतम—(वि० फा०) पूर्ण ।
- सतगा—(फा०) भय । घटेश ।
- सतरानी—(स्त्री० हि०) सत्रो जाति की स्त्री ।
- सवता—(स्त्रा० थ०) अपराध । धोसा । भूल । —वार = अपराध ।
- सतियौनी—(स्त्री० हि०) सत्ता सतियाने का काम । यह वागज जिसमें पटवारी थसामी का रङ्ग शौर लगाया आदि दज करता है ।
- सवतम—(थ०) असीर । अन्त ।
- सवत्ता—(पु० हि०) गड्ढा । अथ सवने का स्थान ।
- सत्री—(पु० हि०) हिन्दुओं में सत्रियों के अन्तगत एक जाति जो अधिकतर पञ्जाब में घसती है । सतिय ।
- सवदशा—(पु० थ०) डर ।
- सदान—(स्त्री० हि०) वह गड्ढा जिसे रोदकर उसके अन्दर से कोई पदार्थ निकाला जाय ।
- सदीच—(पु० फा०) मिला के बादशाह की उपाधि ।
- सदेरना—(स० हि०) दीवाना ।
- सपची—(स्त्री० पु० कमधी) कमरा । कयास भूने का सीख । घाँस की पतली पत्ती ।
- सपडे—(पु० हि०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मफा की छाजन पर सवने के घाम आता है । सपडी = मिट्टी की वह हँडिया जिसमें भेंड़भूजे दाना भूते हैं । सपरैल = सपडे से छाई हुई घत ।
- सप्पर—(पु० हि०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र ।
- सफकान—(थ०) पागलपन । दिल की बीमारी ।
- सफगी—(स्त्री० फा०) अग्रम-घता । क्रोध । खफा = नाराज । क्रुद्ध ।
- खफीफ—(वि० थ०) थोड़ा । सुदृ । लजित ।
- खयर—(स्त्री० थ०) समाचार । सूचना । संदेश । सुधि ।

पता । —गोरी = देव रेख ।

सहानुभूति और महायत्ना ।

—द्वार = होशियार ।

खरीस—(पु० अ०) शैतान ।

जो टुष्ट और भयंकर हो ।

खदत—(पु० अ०) पागलपन ।

खन्ती = सनकी ।

खम—(पु० प्र०) टेढ़ापन ।

—ठोंककर = ताल ठोंककर ।

खमी—(अ०) उयाल । उप

खना । खाटे का फूलना ।

खमीरा—(पु० अ०) खमीरा

उम्माटू । चानी या शारे में

परीकर बनाई हुई थीपधि ।

खयानत—(खो० अ०) धरा

हर रखी हुई वस्तु न देना

या कम देना । चोरा या

बेईमानी ।

खयाल—(पु० प्र०) ध्यान ।

और ।

खर—(पु० स०) गधा । खबर ।

घास ।

खरका—(पु० हि०) तिनका

जिससे दाँत कुरेदते हैं ।

खखशा—(पु० फा०) कगडा ।

भय । कंकट ।

खगोश—(पु० फ्रा०) खरहा ।

खरचना—(हि० फ्रा० अक्ष)

ध्वय करना । खरतना ।

खरबूजा—(पु० फ्रा० खरबूजा)

एक फल ।

खरमिटाय—(पु० हि०) जल

पान ।

खरहरा—(पु० हि०) घोड़े का

बदन साक करने का कथा ।

खरहा—(पु० हि०) खरगोश ।

खरा—(वि० हि०) तेज़ ।

अच्छा । कंककर बढ़ा विया

हुया । जो व्यवहार में सच्चा

और ईमानदार हो । स्पष्ट

वक्ता । —पन = सायता ।

खराद—(पु० अ० खराद

फ्रा० खराद) एक थोड़ा

जिस पर चढ़ाकर लकड़ी,

धातु आदि की सतह चिकनी

और सुधील की जाती है ।

—ना = खराद पर चढ़ाकर

किसी वस्तु को साक और

सुधील करना ।

खराब—(वि० अ०) बुरा ।
 दुर्दशाग्रस्त । पतित । खराबी
 = दोष । दुर्दशा । गदगी ।
 खराबा = उनका हुआ मकान ।
 खरा बात = शराबखाना ।
 जुवाड़ियों का शब्द ।
 खरायँध—(खो० हि०) पेशाब
 का बंदू ।
 खराश—(स्त्री० फा०) सर्द ।
 खरीता—(पु० अ०) थैली । जेब ।
 यह बड़ा लिफाफा जिसमें
 किसी बड़े अधिकारी आदि
 की धोर से मातहत के नाम
 आज्ञापत्र आदि भेने जाँय ।
 खरीद—(स्त्री० फा०) मोल
 लेना । खरीदो हुई चीज़ ।
 —ना = मोल लेना । खरी
 दार = ग्राहक । इच्छुक ।
 खरीफ—(स्त्री० अ०) जो फसल
 आपाड़ से आधे अगहन के
 बीच में काटी जाय ।
 खर्च—(पु० अ० सच) व्यय ।
 खर्चा = खर्च । खर्चीला = खूब
 खर्च करनेवाला । खरीच =
 खर्चीला ।

खरी—(पु० अनु०) यह लग्ना
 या बड़ा कागज़ जिसमें कोई
 भारी हिसाब या विवरण
 लिखा हो ।
 खल—(वि० स०) क्रूर । नीच ।
 दुष्ट । खरल ।
 खलक—(पु० अ०) दुनिया ।
 —त = सृष्टि । भीड़ ।
 खलना—(अ० हि०) बुरा
 लगना ।
 खलल—(पु० अ०) रोक ।
 बाधा ।
 खल्लास—(वि० अ०) मुक्ता ।
 प्रतम ।
 खलत—(अ०) मिल जाना ।
 मिलना ।
 खलियान—(पु० हि०) खेतों
 के पास वह स्थान जहाँ फसल
 काटकर रखी, सोड़ी और
 ओसाई जाती है ।
 खलियाना—(क्रि० हि०) खाल
 उतारना ।
 खलिश—(पु० फा) सुभना ।
 तटप ।
 खली—(स्त्री० स० खलि) तेब

निकाळ लेने पर तेजहन की
बधी हुई सीठी ।

उल्लोक—(अ०) सजन । मुरवत
वाला ।

उल्लोज—(स्त्री० अ०) खाड़ी ।

उल्लोफा—(पु० अ०) अधि
कारा । कोई बूढ़ा व्यक्ति ।
खुराद ।

उल्लोल—(अ०) सचा दोस्त ।

उल्लास—(पु० अ०) राजाओं
और रईसों आदि का प्रिय
मत्तगार ।

उल्लस—(पु० स०) एक घास ।

उल्लसना—(क्रि० अनु०) धीरे
धीरे एक स्थान से दूसरे
स्थान पर जाना । उल्लसना
= हटाना । गुप्त रूप से कोई
चीज हटाना या देना ।

उल्लसस—(स्त्री० स०) पोस्ते
का दाना ।

उल्लससी—(वि० हि०) रस
रस की तरह का । बहुत
घोटा ।

उल्लसम—(पु० अ०) पति ।

उल्लसरा—(पु० अ०) पटवारी का

एक कागज़ जिसमें प्रत्येक खेत
का नम्बर, रकबा आदि
लिखा रहता है । किसी
दिसाब किताय वा फरचा
चिट्ठा ।

उल्लसलत—(स्त्री० अ०) स्वभाव ।

उल्लसी—(वि० अ०) कजूम ।

उल्लोट—(स्त्री० हि०) बलपूर्वक
लेना या छीनना । —ना =
नोचना । छीनना ।

उल्लस्ता—(वि० पा० उल्लस्त)
मुरमुरा । झराव । घायल ।

उल्लस्ती—(पु० अ०) बकरा ।
बधिया । नपुंसक ।

उल्लंग—(पु० हि०) काँटा । वह
काँटा जो तीतर मुग आदि
पक्षियों के पैरों में निकलता
है । गेंडे के मुँह पर का सर्ग ।
अङ्गुली सुधर का वह दाँत
जो मुँह के बाहर काँट की
तरह निकला रहता है । सुर-
वाले पशुओं वा एक रोग
जिसमें उनके खुरों में घाव
हो जाता है ।

- खाँचा—(क्रि० स० हि०)
अस्त्रिष करना । खरदी-खादी
लिखा । खाँचा = पनली
टहनी खादि का घना बड़ा
टाकरा । बड़ा पित्रदा ।
- खाँड—(स्त्री० हि०) पथी
शहर ।
- खामना—(क्रि० स० हि०)
लिपाके में बड़ करण ।
- खाँवाँ—(पु० हि०) अधिभ
चौडी खाइ ।
- खाँसना—(क्रि० हि०) गले
और रगत की नलियों
में बसे हुये कफ का बाहर
फेंकने के लिये झटके के साथ
निकालना । खाँसी ।
- खाक—(स्त्री० पा०) मिट्टी ।
तुच्छ । तुच्छ नहीं । खाकी =
मिट्टी के रंग का । एक प्रकार
के वैष्णव साधु जो तमाम
शरीर में राख लगाया करते
हैं । मुसलमान फ़ारों का
एक संप्रदाय जो खाकी शाह
का अनुयायी है । —सार =
धपदार्य । तुच्छ ।
- खाका—(पु० पा०) हाँचा ।
धिय ।
- खाज—(स्त्री० हि०) सुअली ।
- खाजा—(पु० हि०) एक प्रकार
की मिठाइ ।
- खातमा—(पु० क्रा०) धत ।
शुभु ।
- खाता—(पु० हि०) बगार । यह
बही या किताब जिनमें प्रत्येक
असामी या व्यापारी खादि
का हिसाब मितोवार व्योरे-
वार लिखा हो । विभाग ।
- खातिम—(अ०) इत्तम करने
वाला ।
- खातिर—(स्त्री० अ०) सम्मान ।
—ब्राह = इच्छातुसार ।
—जमा = सन्तोष । —दारी
= सम्मान । खातिरी =
सम्मान । तमली ।
- खातून—(पु० स्त्री०) भद्र
महिला ।
- खाद—(स्त्री० हि०) गोबर ।
मैला बगीरह ।
- खादिम—(पु० अ०) नौकर ।
- खादी—(वि० हि०) हाथ से

खान

- फते हुये सूत वा हाथ से धुना हुआ कपड़ा ।
- खान—(पु०) सरदार । रहम ।
- खानकाह—(खा० श०) मुमल मान साधुओं या धर्मशिष्यों के रहने का स्थान ।
- खानखाना—(पु० फ्रा० खाने खाना) सरदारों का सरदार । —खान=(फ्रा०) सरदार । रहस । अमीर ।
- खानगी—(वि० फ्रा०) आपम का । वेश्या ।
- खानजादा—(पु० फ्रा०) अमार का पुत्र ।
- खातदान—(० फ्रा०) वश । खानदानी=अच्छे कुल का ।
- खातदश—(पु०) बम्बई प्रांत का एक देश ।
- खान पान—(पु० स०) खाना पीना ।
- खानवहादुर—(पु० फ्रा०) एक क़त्तब जो भारत सरकार की ओर से मुसलमानों को दिया जाता है ।

- खानसामा—(पु० फ्रा०) मुसलमानों और खंखरेजों का भोजन बनानेवाला ।
- खाना—(फ्रा०) घर । मकान । —खाना=चौपट करने वाला । आगारा । —जगी=थापस की लड़ाई । —जाद=घर में पैदा या पाला पोसा हुआ । —तलाशी=किसी खोई द्विपी या अनजानी चीज़ के लिये मकान के अंदर छानबीन करना । —दागी=गृहस्थी । —पूरी=नक़्का भरना । —बदोश=जिसका घर ही कंधे पर हो अर्थात् जिसका घरबार न हो । —शुमारी=किसी गाँव या नगर आदि के मकानों की गिनती का काम ।
- खानि—(खी हि०) उपजने की जगह ।
- खाम—(वि० फ्रा०) कच्चा । जिसे तज़रबा न हो । खामी=कच्चापन । नातज़रबेकारी ।

सामोश—(वि० क्रा०) चुप ।
 सामोशी=चुप्पी ।
 साया—(पु० फा०) थंडकोश ।
 सार—(पु० हि०) सजी। खोनी ।
 धूल ।
 सार—(पु० क्रा०) काँटा । टाढ़ ।
 सारिज—(वि० थ०) बाहर
 किया हुआ । भिन्न । जिसकी
 सुनाइ न हो ।
 सारिश—(स्त्री० फा०) सुजली ।
 सारिस्त=सारिश ।
 सारुथ्राँ—(पु० हि०) थाल से
 बना हुआ एक प्रकार का रंग
 जिसमें मोटे कपड़े रँग जाते
 हैं ।
 सवाल—(स्त्री० हि०) चमड़ा ।
 सातासा—(वि० थ०) जिस
 पर बेजल एर का अधिकार
 हो । सरकारी । खालिस ।
 शुद्ध ।
 सा—(स्त्री० थ०) माता की
 बहिन । मौसी ।
 सारु—(पु० थ०) बनाने
 वाला ।

खालिस—(थ०) विशुद्ध ।
 जिसमें मेल न हो ।
 खाविन्द—(पु० प्रा०) पति ।
 मालिक ।
 खास—(वि० थ०) विशेष ।
 निज का । स्वयं । —कलम=
 प्राइवेट सेक्रेटरी । निज का
 मुर्शी । —गी=निज का ।
 —तराश=वह नाई जो
 राजा के बाल बनाया करता
 हो । --दान=पानदान ।
 —बरदार=वह सिपाही जो
 राजा की सवारी के साथ
 साथ सवारी के ठीक आगे
 आगे चलता है । —बाज़ार=
 वह बाज़ार जो राजा क महल
 के सामने हो और जहाँ से
 राजा वस्तुयें मोल लता हो ।
 खासीयत—(स्त्री० थ०)
 स्वभाव । गुण । ज्ञास्मा=
 स्वभाव ।
 खादिश—(स्त्री० फा०) इच्छा ।
 खिचन—(क्रि० हि०) घसीटना ।
 आकर्षित होना । चिखित
 होना । रुटना । उदासीन

होना । खिचवाना =
“खींचना” का प्रेरणायक
रूप । खिचार्इ = खींचना ।
खींचने की मज़दूरी । खिचाव
= आकषण ।

खिचड़ी—(स्त्री० हि०) दाल
और चावल एक में मिलाकर
पकाया हुआ । विवाह की
एक रम्मतिसे ‘भात’ भी कहते
हैं । मिला हुआ । गदबड़ ।

खिजलाना—(क्रि० हि०) मुँह-
लाना ।

खिना—(स्त्री० फा०) पतझड़
की षट्पत्नी । अवनति का
समय ।

खिजाव—(पु० अ०) सफेद
धातों को काला करने की
औषधि ।

खिक्ता—(क्रि० अ० हि०)
खोजना । खिक्ताना = खिणना ।

खिडनी—(स्त्री० हि०) झरोखा ।

खिनाथ—(पु० अ०) उपाधि ।

खिन्ता—(पु० अ०) देश ।

खिदमत—(स्त्री० फ्रा०) सेवा ।

—गार = सेवक । —गारी

= सेवकाई । खिदमती =
खिदमत करनेवाला ।

खिद—(वि० स०) उदासीन ।
अप्रसंग । दोन हीन ।

खियागा—(क्रि० हि०) खिन्न
जाना ।

खिरउमन्द—(फ्रा०) बुद्धिमान ।
अकमन्द ।

खिरनी—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार का ऊँचा और छतनार
गदाबहार पेड़ । इस पृष्ठ का
फल ।

खिरम—(फा०) खलियान ।

खिराज—(पु० अ०) माछ
गुजारी ।

खिलश्रत—(स्त्री० अ०) यह
धरतीदि जो किसी बड़े राजा
या बादशाह की ओर से
सम्मान-सूचनार्थ किसी को
दिया जाता है ।

खिलरत—(स्त्री० अ०) ससार ।
भीड़ ।

खिलना—(क्रि० वि० हि०)
विकसित होना । प्रसन्न
होना । शोभित होना ।

घोच से फट जाता । अलग-
अलग हो जाना ।

खिलनत—(स्त्री० अ०)
पकात । —प्राना = पकात
स्थान ।

खिलाइ—(स्त्री० हि०) खिलाने
का काम । खिलाना = भोजन
कराना । खेल करना ।

खिलाफ—(वि० अ०) विरुद्ध ।
—त = (अ०) तमाम इस
लामो राज्यों का सम्राट् ।
मुसलमानों के धार्मिक अगुवा
का पद ।

खिलाल—(स्त्री० हि०) पूरी
याज्ञी की हार ।

खिलोना—(पु० हि०) बालकों
के खेलने की चीज़ ।

खिल्लो—(स्त्री० हि०) हँसी ।

खिसकना—(क्रि० अ०) चुपके
से चल देना ।

खिसारा—(पु० क्ला०) घाटा ।

खिसिप्राना—(क्रि० हि०)
बजाना । रिसिप्राना । खिसि
आइट = खिसिप्राना ।

खींचतान—(स्त्री० हि०)

खींचापीची । खींचना =
घसीटाता । आकर्षित करना ।
अफ सुभाना ।

खीज—(स्त्री० हि०) सुँझाइट ।
—ना = दुखी और क्रुद्ध
होना ।

खीर—(स्त्री० हि०) दूध में
पनाया हुआ चावल ।
—मोहन = घेने की बनी हुई
एक प्रकार की बँगला मिठाई ।

खीरा—(पु० हि०) बरसात में
होनेवाला फरफ़ी की जाति
का एक फल ।

खील—(स्त्री० हि०) खाना ।
कील । —ना = खील
लगाना । खीला = कँटा ।

खीली—(स्त्री० हि०) पाप का
बीड़ा ।

खोस—(वि० हि०) नष्ट । दाँत
निकालना ।

खीसा—(पु० फा०) पैला । जेब ।

खुशरार—(वि० फा०) इराक ।
वेइजत । खुशरार = खराबी ।
अनादी ।

खुगोर—(पु० फा०) नमदा ।
ज्ञान ।

खुजलाना—(क्रि० हि०) सह
लाना । खुजलाहट = खुजलो ।
खुजली = खुजलाहट ।

खुट्टी—(स्त्री० हि०) घाय पर
जमी हुई पपड़ी ।

खुट्टी, खुडढा—(स्त्री० हि०)
पागाने में पैर रगन के पाय
दान । पागाना फिरने का
गड्ढा ।

खुतबा—(थ०) भाषण । स्वीच ।

खुद—(थ० फा०) स्वयं ।
—कारत = वह ज़मीन जिस
का मालिक स्वयं जाते घोये
पर सीर न हो । —कुशी =
ध्यात्महत्या । —गरज =
स्वार्थी । —मुखतार = स्वतंत्र ।
—राय = स्वेच्छाचारा । खुदी
= थहकार । अभिमान ।
—बखुद (फ्रा०) आप ही
थाप ।

खुदना—(क्रि० हि०) खोदा
जाना । खुदाई = खोदने का
काम । खोदने की मज़दूरी ।

खुदरा—(पु० हि०) फुटकर
चीज़ ।

खुदा—(पु० फा०) इश्वर ।
—ई = इश्वरता । —बद
= ईश्वर । मालिक । हुज़ूर ।

खुदाम—(थ०) खादिम का
बहुवचन । नौकर लोग ।

खुनकी (स्त्री० फा०) सरदी ।
खुनुक = (फा०) सर्द ।
ठण्डा । खुश ।

खुफिया—(थ०) पोशादा ।

खुमखाना—(फ्रा०) शराबखाना ।

खुमारी—(स्त्री० थ० खुमार),
नशा । वह दशा जो नशा
उत्तरने के समय होती है ।
वह दशा जो रात भर जागने
से होती है ।

खुर—(पु० सं०) सींगवाले
घौरायों के पैर की कड़ी टाप
जो बीच से फटी होती है ।

खुरपुरा—(वि० हि०) जो
चिकना न हो ।

खुरचा—(स्त्री० हि०) जो
वस्तु खुरचकर निकाली जाय ।
खुरचना = धरोना । खुरचनी

=सुराघने या करोने का एक शौकार । कसरों के घर्तन छीलने का शौकार ।

सुरचाल—(खी० दि०) पाञ्चोपन । सुरचाली = पाञ्ची ।

सुरपा—(पु० दि०) पास छीलने का शौकार ।

सुरंभ—(प्रा०) प्रसन्नचित्त ।

सुरमा—(पु० ध०) एक प्रकार का पशुवान ।

सुरशेद—(प्रा०) सूर्य ।

सुराक—(पु० फा०) भोजन ।

सुराची = यह नहर दाम का सुराक क लिय दिया जाय ।

फात—(खी० ध०) बेहूदी पात । गाती गली ।

जान—(पु० फा०) प्रारस

श का एक यज्ञ सूत्र ।

—(खी० दि०) टाप का द्र ।

(वि० फा०) छोटा ।

शीन = सूक्ष्म दशक यत्र ।

फरोश = छाटी मोटी

पुत्रक वेचनेवाला ।

— = नष्ट भ्रष्ट । समाप्त ।

सुराटि—(वि० दि०) घृष्टा । अनुभवों । चाखाफ ।

सुला—(क्रि० दि०) धधन का घृष्टा । किसी क्रम का चलना या जारी होना ।

किसी कारणान, दृष्टा, द्रष्टर या और किसी कार्य-

लय का गत्य का कार्य

आरम्भ होगा । किसी पत्नी

सवारी या रवाग हो जाग

जिम पर बहुत स आदमी

एक साथ बैठें । किसी गुप्त

या गूढ बात का प्रकट हा

जाना । भेद बताना । सुजा

= यन्धन-रहित । सुरलम-

सुरला = सुन धाम ।

सुजासा = माराश । सुजा

दुष्ठा । बिना रसायत का ।

साफ-भात्र ।

सुरश—(वि० प्रा०) प्रसन्न ।

थच्छा । —विस्मत्त = भाग्य-

वान । —विस्मती =

सीभाग्य । —गत = सुले-

रक अर्थात् सुन्दर अक्षर

लिखनेवाला ।

सुशामद

अच्छी श्वघर ।—दिज = सदा
 प्रमत्त रहनेवाला । हँसोड़ ।
 —नसोस = सुशामत । —
 तसामो = सुदर अथवा लिप्यन
 की कला । —नसीप = भाग्य
 वा । —तसीपी = मौ
 भाग्य । —उमा = सुन्दर ।
 —वू = सुगधि । —वूदार
 = सुगधित । —रग =
 तिमिर रग बढ़िया हो ।
 —हात = सुखी । —हाली
 = डाम दगा । सुशी =
 प्रसन्नता । —रूद = (फ्रा०)
 राज्ञो । रजामद । —गगर
 = मोठी चीज । भली बात
 जो अच्छी लगे ।

सुशामद—(स्त्री० फ्रा०) चाप
 लूसा । सुशामरी = चापलूस ।
 सब प्रकार का काम करने
 वाला । सुशामदी टट्ट =
 भारी सुशामदी ।

खुश्क—(वि० फ्रा०) सूखा ।
 हल्ले स्वभाव का । केवल ।
 सुखी = स्वजापन । —साली

= गूरा । कहत । —मिजाब
 = हल्के स्वभाव का ।

गूंगार—(वि० फ्रा०) खून पीने
 वाला । भयकर । निन्द्य ।

गूट्ट—(पु० हि०) फान की मैत्र ।

गूटा—(पु० हि०) पढ़ी मेव ।

खंदार—(फ्रा०) खून गिराने
 वाला । खूनी ।

खूरेज—(फ्रा०) खून गिराने
 वाला । खूनी ।

खून—(पु० फ्रा०) रक्त । बघ ।

—खराबी = मारफाट । एक
 प्रकार की यार्निंग जो लकड़ी
 पर की जाती है । खूना =
 हत्यारा । शय्याचारी ।

खून—(वि० फ्रा०) अच्छा ।
 अच्छी तरह से । खूनी

= भलाइ । गुण । —खूई

(फ्रा०) = माछकी । —

सुरत = सुदर । खूसुरती =

सुदरता ।

खूवागी—(स्त्री० फ्रा०) एक
 प्रकार का मेवा जिसे ज़र
 दाल भी कहते हैं ।

खूसट—(पु० हि०) उरलू ।

मनहूस । सुद्धा । प्रप्पीस ।

खेडा—(पु० हि०) छोटा गाँव ।

खेत—(पु० हि०) जोतने योने
की ज़मीन । खेतिहर =
किमान । खेती = किसानी ।
खेत में बोई हुई फसल । खेती-
यारी = किसानी । लटाह की
जगह ।

खेठ—(पु० स०) टुप । थका
घट ।

खेदना—(क्रि० हि०) भागना ।
पीड़ा करना । खेना = किसी
बनेले पशु को मारने या
पकड़ने के लिये घेरकर एक
उपयुक्त स्थान पर लाने का
काम । शिकार ।

खेना—(क्रि० हि०) नाच चलाना ।
बिताना ।

खेप—(स्त्री० हि०) एक बार का
बोझा । गाड़ी नाव आदि की
एकबार की यात्रा ।

खेमटा—(पु० हि०) एक प्रकार
का गीत ।

खेमा—(पु० अ०) डेरा ।

खेल—(पु० हि०) मनवहलाव ।

बहुत हलका या तुच्छ काम ।

किसी प्रकार का अभिनय ।

तमाशा, स्त्रांग या घरतब
आदि । कोई अद्भुत कार्य ।

—वाड़ = खेल । खेलावादी ।

—खेलनवाला । कौतुक-प्रिय ।

खेलावादी = खेलनेवाला ।

तमाशा करनेवाला ।

खेवट—(पु० हि०) पटवारी
का एक कागज़ जिसमें हर
एक पट्टेदार के हिस्से की
तादाद और मालगुजारी का
विवरण लिखा रहता है ।

खेस—(पु० हि०) बहुत मोटे
देशी सूत की बनी हुई एक
प्रकार की बहुत रम्बी चादर ।

खेस्तारी—(स्त्री० हि०) मटर ।
लतरी ।

खेह—(स्त्री० हि०) रास ।

खैवर—(पु० हि०) भारत और
अफ़ग़ानिस्तान के बीच की
एक घाटी का नाम ।

खैयाम—(अ०) फारसी का एक

खैर

प्रसिद्ध कवि । खेमा गाढ़ने
वाला ।

खैर—(पु० हि०) कत्या ।
(फा०) अन्ना । —खाह =
भलाइ चाहनेवाला ।
—खाही = भलाइ सोचना ।
खैरा = खैर के रंग का ।
खैरात—(अ०) गान देना ।
—मज्दूम = (अ०) स्थागत ।

खेरियत—(खी० फा०) कुशल
खेम । भलाइ ।

खोखना—(क्रि० अनु०)
खोसना ।

खोंची—(आ० हि०) चुन्नी ।

खोडर—(पु० हि०) पैद का
भौतरी पोला भाग ।

खोता—(पु० हि०) घोंमला ।

खोमना—(क्रि० स० हि०)
अटमाना ।

खोई—(खी० हि०) ऊब के गडों
के वे डठल जो रस निकल
जाने पर फोल्ह में शेष रह
जाने हैं । फग्यल की घोषी ।

खोयला—(वि० हि०) पोली
जगह । बड़ा छेद ।

खोज—(खी० हि०) तलाश ।
निशान । गाड़ी के पहिये का
लीय अथवा पैर आदि का
चिह्न । खोनी = खोनेवाला ।

खोजा—(पु० फा० इबाजा)
वह नपुंसक व्यक्ति जो मुम
लमानी हरमों में इतर-वक
या मेवक की भाँति रहता
है । सवक । सरदार ।

खोदना—(क्रि० हि०) गहटा
करना । छेडना । उभा-
दना । खोदनी = खोदने
का छोटा औजार । खोद
विनाद = छेड-छाड़ । खोदाई
= खोदने का काम । खादने
की मजदूरी । कड़ी वस्तु पर
किमी नोकदार वस्तु सं शक,
चिह्न, बेल-बूटे आदि बनाने
का काम ।

खोना—(क्रि० हि०) खोना ।
भूल से किमी वस्तु को वहीं
छोड़ आना । गराब करना ।

खोवा—(पु० फा० इवान्वा)
वह बड़ी परात या थाल
चिममें मिठाई और खाने

पीने की वस्तुयें भरी रहती
हैं। यह भाल निममें रगकर
फेरीअले मिटाईं देखते हैं।

श्लोपडा—(पु० हि०) फगल ।
मिर । गरी । नारियल ।

श्लोपदी = पपाल । मिर ।

श्लोभार—(पु० हि०) गद्ग
निममें कृदा-कर्वट फेंका जाय ।

श्लोया—(पु० हि०) सोवा ।
हूँट पाथने का गारा ।

श्लोरा—(पु० हि०) फटोरा ।
आयतोर । श्लोरिया = छोटा
फटोरा ।

श्लोरान्न—(खा० फा०) भाजन
सामग्री । खाँ पी मात्रा ।
श्लोराना = अधिक भाजन-
करनेवाला ।

श्लोल—(पु० स०) गिलाफ़ ।

श्लोलना—(मि० स० हि०) दमा-
वट या परदा दूर करना ।
बधन तोड़ना । किसी क्रम
को चलाना या जारी करना ।
किसी कारखाने, दुकान,
वस्तु का दैनिक

ना । किसी

गुल या गूड़ दात को प्रकट
कर देना ।

श्लोली—(स्त्री० फा०) गिलाफ़ ।
तकिये आदि के ऊपर चढ़ाने
की धैत्री ।

श्लोफ़—(पु० अ०) दर ।

श्लोलना—(मि० हि०) उच-
लना ।

श्ल्यात—(वि० म०) प्रसिद्ध ।
श्ल्याति = प्रसिद्धि ।

श्ल्याल—(पु० अ०) ध्यान ।
अनुमान । विचार । आदर ।
एक विशेष प्रकार का गान ।
लायनी गाने का एक ढंग ।

श्ल्याजा—(पु० फ़ा०) मालिक ।
सरदार । कोर्ट प्रसिद्ध पुरुष ।
ऊँचे दर्जे का मुसलमान
फकीर । रनिवास का नपुंसक
भृत्य । —सरा = (फ़ा०)
मुसलमानी जमाने में घरों में
काम करनेवाला यह गुलाम
जिमका लिङ्ग पाट ढाला गया
हो ।

श्ल्यान—(पु० फ़ा०) थाल ।

श्ल्याव—(पु० फ़ा०) स्वप्न ।

ख़ार—(वि० फा०) ख़राब ।
विरसृत । ख़ारी=ख़राबी ।
अनादर ।

ख़ास्तगार—(पु० फा०) चाहने
वाला । ख़ाहाँ=चाहनाला ।

ख़ादिश=इच्छा । ख़ादिश-
मद=इच्छुक ।

ख़ाह—(अच० फा०) या ।

ख़ाहमख़ाह—(फा०) जरूर ।

ग

ग

गँडेरी

ग—हि० दी वषामाला में कवर्ग का
तीसरा वक्ष । इसका उच्चारण
कठ स होता है ।

गज—(पु० हि०) गजाना । डेर ।
समूह । वह आयादी जहाँ
यनिय बसाये जाते हैं । गजा
=गज रोग । निमने सिर के
घाल भड़ गये हों । गजी=
शकरकंद ।

गँजिया—(हि०) सूत की धनी
हुइ रुपया रमने की जालीदार
येली ।

गजीफा—(पु० फा०) एक खेत
जो आठ रंग के ६६ पत्तों से
खेला जाता है ।

गँजेडी—(वि० हि०) गाँजा पीने
वाला ।

गँठकटा—(पु० हि०) गिरहकट ।
गँठजाडा=गँठकघा । गँठ-
बन्धन=विवाह की एक रीति
जिसमें वर और धरू के वध
को परस्पर बाँध देते हैं ।

गँटरा—(पु० हि०) मूँल की तरह
की एक घास ।

गँडासा—(पु० हि०) चीपायों के
राने के लिये चारे या घास
के टुकड़े काटने का औज़ार ।

गँडेरी—(स्त्री० हि०) ईस या
गत्ते का छोटा टुकड़ा जो
चूसने या कोल्हू में पेरने के
लिये पाटा जाता है ।

गदगी—(स्त्री० क्रा०) मैलापन ।
 अशुद्धता । दुर्गन्ध । गदा =
 मैला । नापाक । पृथित ।
 गदुम—(पु० फा०) गेहूँ ।
 गध—(स्त्री० हि०) महक । सुगध ।
 —क = एक सनिज पदार्थ
 गधक -यटी = एक औषध या
 गोली । गधाना = दुर्गन्ध
 करता ।
 गधर्व—(पु० सं०) देवताओं का
 एक भेद जो गाने का काम
 करते हैं । —नगर = नगर,
 ग्राम आदि का वह मिथ्या
 आभास जो आकाश में
 या स्थल में दृष्टि दोष से
 दिखाई पड़ता है । मिथ्या
 भ्रम । —विवाह = आठ प्रकार
 के विवाहों में से एक ।
 गधाचिरोजा—(पु० हि०) चीड
 नामक वृक्ष का गोंद जो
 फारस से आता है ।
 गधी—(पु० हि०) सुगन्धित तेल
 और द्रव्य बेचनेवाला । गधिया
 नामक घास । गधिया नामक
 फीका ।

गभीर—(वि० सं०) घोर ।
 शात ।
 गँवइ—(स्त्री० हि०) छोटा गाँव ।
 गँवर दल = गँवरों का समूह ।
 गँवार = ग्रामीण । मूल ।
 अनादी ।
 गँगीता—(त्रि० हि०) बुनावट में
 सूख फसा हुआ ।
 गुजाइम—(क्रा०) समाइ ।
 गोइन्दा—(फा०) कहनेवाला ।
 जासूस ।
 गऊ—(स्त्री० हि०) गाय ।
 गगन—(पु० सं०) आकाश ।
 —भेदी = बहुत ऊँचा ।
 गगरा—(पु० हि०) कलसा ।
 गगरी = फलसी ।
 गच्च—(अ० धनु०) पक्ष पशु ।
 पक्षी छत । —बारी = चूने
 सुरखी का काम ।
 गज—(पु० सं०) हाथी ।
 गज—(पु० फा०) लम्बाइ नापने
 की एक माप जो ३ फुट की
 होती है । —इलाही = अफ-
 बरी गज जो ४१ अगुल का
 होता है ।

गजक—(पु० फा० कजक) घाट ।
तिल्लपपडी । नाशता । घटपटी
चीज़ ।

गजट—(पु० थ० गजेट) थस
थार । वह विशेष सामयिक
पत्र जो भारतीय सरकार
थथना प्रांताय सरकारों द्वारा
प्रकाशित होता है थर निसमें
वद् बड थपसरो की नित्युक्ति,
नये कानूनों के मसौदे थर
भिन्नभिन्न सरकारी विभागा
के सम्बन्ध जो विशेष थर
सर्व साधारण के जानने योग्य
बातें प्रकाशित की जाती हैं ।

गजनी—(वि० फा०) गजनी
नगर का रहनेवाला । गजनी
= अफगानिस्तान के एक
नगर का नाम ।

गजपुट—(पु० स०) धातुघों के
फूँकने की एक रीति ।

गजप—(पु० थ०) कोप ।
आपत्ति । थपेर ।

गजर—(पु०।हि०) पहर पहर पर
घटा बजने का शब्द । घटे का

वह शब्द जो प्रात काल ४
बजे होता है ।

गजर वजर—(पु० अनु०) घाल
मेल ।

गजरा—(पु० हि०) माला ।

गजल—(स्त्री० फा०) ऊरसी
थर उडूँ में थ गार रस की
एक कविता । ।

गजी—(पु० फा०) गाड़ा ।

गटरना—(नि० हि०) खाना ।
गटरगट=किसी पदार्थ को
कई थार करके निगलने
या घूटघूट पीने में गले से
उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

गटपट—(स्त्री० अनु०) मिला
वट । सहवास ।

गटापारचा—(पु० मला०) एक
प्रकार का गोद जो कई ऐसे
घुँचों से निकलता है जिनमें
सक्रोद दूध रहता है ।

गट्टा—(पु० हि०) हथेली थर
पहुँचे के बीच का जोड़ । पैर
का नली थर तलुप के बीच
की गाँठ । नैचे के नीचे की
वह गाँठ जहाँ दोनों पै मिलती

हैं और जो क्ररशी या टुकड़े के मुँह पर रहती हैं। एक प्रकार की मिटाई।

गट्टर—(पु० हि०) बड़ी गट्टरी। गट्टा=गट्टर। बड़ी गट्टरी। प्याज या लहसुन को गाँठ। बट्टा।

गठप्रधन—(पु० हि०) विवाह में एक रीति जिसमें घर और बधू के बच्चों के छोर को परस्पर मिलाकर गाँठ बाँधते हैं। गठकटा=गिरहकट। गठरी=बड़ी पोतली। सचित धन। गठित=गठा हुआ। गठिया=पुरजी। छोटी गठरी। कोरे बपड़े के धानों को बाँधी हुई बड़ी गठरी। एक रोग। गठियाना=गाँठ देना। गाँठ में रखना। गठीला=गाँठवाला। मज्ज बूत।

गडगडाहट—(स्त्री० हि०) बड़क।

गडप—(स्त्री० अनु० प्रा० गवाँन) पानी, फीचक आदि में किसी

वस्तु के महत्ता समाने का शब्द। —ना=निगलना।

गडबड—(वि० हि०) गोल-माल। गडपदा=गड्ढा। गडबडाना=बम भट्ट होना। विगडना। गडबडी=गोल माल।

गडरिया—(पु० हि०) भेड़ पालने वाली जाति। (स०) गडुरिक।

गडही—(पु० हि०) गड्ढा। छोटा गड्ढा।

गडाप—(पु० प्रा० इर्त्रं धाय) पानी आदि में डूबने का शब्द।

गडारी—(स्त्री० हि०) जिस पर रस्सी बट्टाकर पानी खींचते हैं। —दार=जिस पर गडे या धारियाँ पड़ी हों। घेर-दार।

गडू—(पु० हि०) एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हो। गड्डी=एक ही आकार की ऐसी

घरतुओं का का ढेर जो गले
ऊपर रखी हों। ढेर।

गदत—(वि० हि०) घनावट।
घना-दी घात। मनगदत =
फणोल कल्पित।

गढ़—(पु० हि०) जिला। गदा
= छोटा जिला। जिले या
घोट के दग का मङ्गवृत
मयान।

गढ़—(स्त्री० हि०) घनावट।
गढ़ना = पीटना। ठोंक ठोंक
कर सुडौल करना। घात
घनाना। पीटना।

गढ़ाई—(स्त्री० हि०) गढ़ने की
मङ्गदरी। गढ़ाना = घनाना।

गण—(पु० सं०) समूह।
श्रेणी। छ दशहर में तीन
दरों का समूह। —ना =
शुमार। हिसार। सख्या।
गण्य = गिने जाने योग्य।

गणिका—(स्त्री० सं०) चेर्या।

गणित—(पु० सं०) हिसार।
—ज्ञ = हिसाबी। ज्योतिषी।

गत—(वि० सं०) गया हुआ।

सितार आदि के स्वर का क्रम
यद् मिलान।

गतना—(पु० हि०) लकड़ी
का एक ढहा जिसके ऊपर
घमड़े की रोल घड़ी रहती
है।

गताव—(वि० सं०) पिढ़ला
थक।

गति—(स्त्री० सं०) चाल।
हरकत। दशा। सहाता।
चाल। दग। मृत्यु के उपात
जीवात्मा की उत्तम दशा।
साल और स्वर के अनुसार
थग सचाला।

गदर—(पु० थ०) हलचल।
थगावत।

गदराना—(मि० थ० अनु०)
(फल आदि का) पकन पर
होना। जवानी में थग का
भरना।

गदला—(वि० पा० रदा)
मटमैला।

गदा—(स्त्री० सं०) एक प्राचीन
अस्त्र का नाम जो लोह
का होता था। —(प्रा०)

भित्तारी । फज़ीर । —ई =
भीख माँगना ।

गद्गद—(वि० स०) अत्यधिक
प्रसन्न ।

गद्दा—(वि० हि०) भारी तोपक
आदि । घास, पमाच, रूई
आदि मुलायम चीज़ा से भरा
हुआ पिछौना । गद्दी = छोटा
गद्दा । वह कपड़ा जो घोड़े,
ऊँट आदि पर रखने के लिये
छाला जाता है । किसी घट
अधिकारी का पद । किसी
राजपूत की पीढ़ी का आचार्य
की स्थिति परंपरा । हाथ या
पैर की हथेली ।

गद्य—(पु० स०) वह लेख
क्रिसम मात्रा और वर्य की
सख्या और स्थानादि का कोई
नियम न हो ।

गनी—(वि० अ०) धनी ।
(अ०) गनी = पात्र या सन
की रस्सियों का जुना हुआ
मोटा खुरदरा कपड़ा ।

गनोम—(पु० अ०) टाकू ।
बैरी । —त = लूट का माल ।

मुपत का माल । सन्तोष की
घात ।

गनोरिया—(पु० लै०) सूज़ारू ।

गन्ना—(पु० हि०) ईँट ।

गणोडा—(पु० हि०) मिथ्या
घात । गणोडेबाजी = मूठ-
मूठ की चक्रवाह । गण ।
गण्पी = गण्य मारनेवाला ।
कृष्ण ।

गण—(स्त्री० पा०) अक्रवाह ।
कल्पित घात ।

गण्—(वि० हि०) घात ।

गणलत—(स्त्री० अ०) असा-
वधानी । वेप्रथरी । भूल ।

गवन—(पु० अ०) झयानत ।

गवरू—(वि० फा० खूबसूर) उम
इती जवागी का । भोला-
भाला ।

गवरून—(पु० फा० गम्बरून)
चारझाने की तरह का एक
मोटा कपड़ा ।

गठार—(वि० हि०) घमडी ।
महर ।

गत्र—(पु० फा०) पारसी ।

गमक—(पु० स०) सवले का
गम्भीर आवाज़ ।

गम—(पु० अ०) शाक । चिन्ता ।
—झोर = सहनशील । —

गीन = उदास । —नाक
= दुःखभरा । गमी = शोक

समय । मृत्यु । —वार =
मित्र । दोस्त । —जा =

कटाघ । —गुसार = दुःख
दूर करनेवाला । हमदर्द ।

गमला—(पु० हि०) मिट्टी या
धातु आदि का बना हुआ एक
पात्र जिसमें फूलों के पंख और
पौधे लगाते हैं ।

गम्मत—(स्त्री० मराठी) हँसी
दिखलगी । मौज ।

गर—(फ्रा०) अगर ।

गरकाव—(पु० अ०) निमग्न ।

गरगज—(पु० हि०) बुज ।

गरज—(स्त्री० अ०) आशय ।

ज़रूरत । इच्छा । निदान ।

अस्तु ॥ —मन्द = ज़रूरत

वाला । इच्छुक । गरजी =

गरजवाला । चाहनेवाला ।

गरजना—(क्रि० हि०) बहुत

गम्भार शब्द करना । बट
फना ।

गरदन—(स्त्री० फ्रा०) ग्रीवा ।

गरदियी = गरदन पकड़कर ।

गरदा—(पु० फ्रा० गद) धूल ।

गरदाना—(क्रि० फा० गरदान)

शब्दों का रूप साधना ।

गिनना ।

गरवा—(पु० गु०) एक प्रकार

का गीत जो गुजराती स्त्रियाँ

गाती हैं ।

गरम—(वि० फ्रा०) लज्जता

हुआ । तीक्ष्ण । तेज ।

जिमका गुण उष्ण हो । जोश

से भरा हुआ । गरमाई =

गरमी । गरमा-गरमी = जोश ।

गरमाना = गरम पढ़ना ।

उमग पर धाना । क्रोध

करना । कुछ देर लगातार

परिधम करने पर घोड़े आदि

पशुओं का तेज़ी पर चाना ।

गरमाइट = गरमी । गरमी =

ज्वन ; तेज़ी । क्रोध । जोश ।

ग्रीष्म षटु । आतशक ।

गरारा—(अ० सरारा) कठ में

पागी ढालकर गर गर शब्द
फरके बुझी करना ।

गरीब—(वि० अ०) नग्न ।
दरिद्र । —निषाङ्ग = दीनों
पर दया करनेवाला ।
—परवर = गरीबों का पालने
वाला । गरीबामऊ = गरीबों
के याग्य । मामूजी । गरीबी
= दीनता । दरिद्रता ।

गरुड—(पु० स०) उग्राय
पक्षी ।

गरूर—(पु० अ०) घमड ।

गरेवान—(पु० फ्रा०) गला ।
कालर ।

गरोह—(पु० फा०) कुड ।

गज्जन—(पु० स०) गरजना ।

गर्त—(पु० स०) गड्ढा
दरार ।

गर्दभ—(पु० स०) गधा ।

गर्दिश—(स्त्री० फा०) घुमाव ।

गवन—(फा०) झुल से धन
लेना ।

गर्भ—(पु० स०) हमल ।
जो गर्भ में हो । गर्भाधान =

के सोलह मस्यारों में से एक ।
पहला सस्वार गर्भधारण ।
गभाशय = बच्चादान । गर्भिणी
= गर्भवती । गर्भित = पूछा ।

गर्भ—(फ्रा०) तेज । उष्ण ।

गर्भाय—(पु० स०) नाटक का
एक अंश जिसमें केवल एक
दृश्य होता है ।

गर्त—(स्त्री० अ०) लड़की ।
युवती ।

गर्लस्कुल—(पु० अ०) फन्या-
विद्यालय ।

गर्व—(पु० स०) अहंकार ।
गर्वीला = घमडी ।

गलका—(पु० हि०) एक प्रकार
का फोड़ा जो हाथ की उँग-
लियों के अगले भाग में होता
है और बहुत बुरा होता है ।

गलत—(वि० अ०) अशुद्ध ।
असत्य । गलती = भूल-चूक ।

गल तकिया—(स्त्री० हि०) छोटा
गोल और मुलायम तकिया
जो गालों के नीचे रखला जाता
है । गल मुच्छा = गलगुच्छा ।

गलतफहमी—(स्त्री० अ० फ्रा०)

भूल से कुछ का कुछ सम
रूना । घनम ।

गलता—(पु० अ०) एक
प्रकार का बहुत चमकीला
और गरु कपड़ा जिसका
ताना रंगम का और बाना
सूत का होता है । मरान की
फारनिम ।

गलतान—(वि० प्रा०) चक्कर
भारता हुआ ।

गलता—(क्रि० हि०) विघलना ।
घटन सूचना । अत्यधिक
सरदी के कारण हाथ पैर
का ठिठुरना । बेकाम होना ।
गलाना = किमी वस्तु को
नरम गीला या द्रव करना ।
नरम करना । रच कराना ।
गलित = गला हुआ । गलित
कुष्ठ = छाठ प्रकार के कुष्ठों
में से एक । गलित जीवन
= डलती जनानी की स्त्री ।

गलवा—(अ०) धीगाधीगी ।
आक्रमण । हला ।

गलानि—(स्त्री० स०) पछुताव ।
खेद । दुःख ।

गलियारा—(पु० हि०) पतली
या छोटी तग गली ।

गलीचा—(पु० फा०) झालीन ।

गलीज—(वि० अ०) मैला ।
तापक ।

गल्प—(स्त्री० हि०) छोटी छोटी
कहानियाँ ।

गल्ला—(पु० अ०) अन्न ।
—क्रोश = अनाज का ध्या
पारी । गल्ला = (का०) पशुधों
का झुंड ।

गवनमेंट—(स्त्री० अ०) राज्य ।
शासक मंडल । गवनर =
शासक । गवनर जेनरल =
पदे छाट । गवनरी = अधि
कार ।

गवाह—(पु० स०) माराया ।

गँवाना—(क्रि० हि०) खोना ।

गवारा—(वि० फा०) अगीकार ।
मज़ूर ।

गवाह—(पु० फा०) वह मनुष्य
जिम्हने किमी घटना को
साक्षात् देखा हो । साखी ।

गवाही = साखी का प्रमाण ।

गवेपणा—(स्त्री० स०) खोज

गवैया—(वि० हि०) गानेवाला ।
गश—(पु० अ०) चेहोशी ।
मूर्च्छा ।

गरत—(पु० पा०) दौरा । गरती
= घूमनेवाला ।

गसना—(दि० हि०) जकड़ना ।
जुनावट में घाने को फसना ।
गसीला = जकड़ा हुआ ।
गरू ।

गहन—(वि० स०) गभीर ।
दुःख । फटिन । निविड ।
गहनी = यथक । पकड़ना ।
आभूषण ।

गहग—(वि० हि०) जो जमीन
के अन्दर दूर तक चला गया
हो । बहुत अधिक । मज़रूत ।
गाड़ा ।

गह्वर—(पु० स०) बिल । गुफा ।
गुप्त स्थान ।

गाँवना—(क्रि० स० हि०)
गँवना ।

गाँज—(पु० पा० गज) राशि ।
ढठन खर, लकड़ी आदि का
बह डेर जो तले ऊपर रगकर
लगाया गया हो । —ना =

राशि लगाना । घास लकड़ी,
ढठन आदि को तले ऊपर
रगपर डेर लगाना ।

गाँजा—(पु० हि०) भाँग की
जाति का एक पौधा ।

गाँठ—(स्त्री० हि०) गिरह ।
गठरी । थग का जोड़ । पार ।
गुरथी । गढ़ा । —बट =
गिरहबट । ठग । —गोभी
= गोभी का एक नेद ।
—दार = गँठोला । —ना ।
= गाँठ लगाना । मरम्मत
करना । मिलाना । तरतीब
देना । पक्ष में करना । बश में
करना ।

गाँडर—(स्त्री० दि०) मूँज की
तरह को एक घाम ।

गाडीय—(पु० स०) अर्जुन के
धनुष का नाम ।

गाधार—(पु० स०) कदहार ।
मिन्धु नदी के पश्चिम का
देश जो पेशावर से लेकर
फघार तक माना जाता था ।

गाँधी—(स्त्री० स०) हरे रंग का
एक छोटा कीड़ा जो वर्षाकाल

में धान के मेतों में अधिक होता है ।

गामोच्य—(पु० म०) गभीरता । स्थिरता । धीरता । जटिलता ।

गाँवें, गाँज—(पु० हि०) छापी बस्ती ।

गाइड—(पु० अ०) पथ प्रदर्शक ।

गाउन—(पु० अ०) एक प्रकार का लम्बा ढाला पहनावा जो प्रायः यारप अमेरिका आदि देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं । एक तरह का चोगा ।

गाऊग्रण्य—(वि० हि०) समामार । घाघ ।

गाजी—(पु० अ०) मुसलमानों में उच्च वीर पुरुष जो धर्माध्य विधियों से युद्ध करे । बहादुर । —मियाँ = बाले मियाँ ।

गाजीमर्द—(पु० अ० + फा०) वह जो बहुत बड़ा वार हो ।

गाडा—(पु० हि०) छोटी गाड़ी । (स्त्री०) गाड़ी । —खाना = वह स्थान जहाँ गाड़ियों रक्खी जाती हैं । —वान =

गाड़ी हाँकनेवाला । कोच-वान ।

गाती—(स्त्री० हि०) चदर या धँगाछा जिसे शरीर के चारों ओर लपेटकर गले में बाँधत हैं ।

गाथा—(स्त्री० स०) स्तुति । एक प्रकार की प्राचीन भाषा जिसमें सस्कृत के साथ कहीं कहीं पाली भाषा के विकृत शब्द भी मिले रहते हैं । श्लोक । गीत । कथा । पारसियों के धर्मग्रन्थ का एक भेद ।

गाद—(स्त्री० हि०) तलछट । षोट । गाड़ी चीज़ ।

गादर—(वि० हि०) सुस्त ।

गादा—(पु० हि०) अधपका अन्न । कच्ची फसल । हरा महुआ ।

गान—(पु० स०) गाव । गाना । = थलापना । मधुर ध्वनि करना । बणन करना । प्रशंसक करना । गाने की चीज़ ।

गाफिल—(वि० अ०) बेलघर ।
असावधान ।

गाय—(स्त्री० हि०) सींगवाला
एक मादा चौपाया जिसके नर
को बैल या साँड़ कहते हैं ।
दीन मनुष्य । —गोठ =
गोशाला ।

गायक—(पु० सं०) गानेवाला ।

गायत्री—(स्त्री० हि०) एक वैदिक
छन्द का नाम । एक पवित्र
मन्त्र का नाम ।

गायव—(वि० अ०) गुप्त ।
गायवाना = गुप्त रीति से ।
पीठ पीछे ।

गायत—(वि० अ०) नष्ट ।

गारद—(स्त्री० अ० गाढ) सिपा-
हियों का मुखर जो एक अफ्र-
सर के मातहत हो । पहरा ।

गारना—(क्रि० हि०) निचोड़ना ।

गार्ड—(पु० अ०) रक्षक । निरी
छक ।

गार्डन—(पु० अ०) बाग ।
—पार्टी = वह भोज जो नगर
के बाहर किसी बाग-बगाने

गाल—(पु० हि०) कपोल ।

गालिव—(वि० अ०) जीतने
वाला । बलशाली ।

गावजवान—(स्त्री० प्रा०) एक
धूम्र जो फारस देश में होती
है ।

गावतकिया—(पु० फा०) मस-
नद ।

गावदी—(वि० हि०) नासमझ ।
मूढ़ ।

गावदुम—(वि० फा०) चढ़ा
उतार ।

गाहो—(स्त्री० हि०) पाँच वस्तु
का समूह ।

गिच पिच—(वि० हि०) एक में
मिला जुला ।

गिजा—(स्त्री० अ०) भोजन ।

गिटपिट—(स्त्री० हि०) निरथक
शब्द ।

गिट्टक—(स्त्री० हि०) चिलम के
अन्दर रखने का फरक । गिट्टी
= गेरु या पत्थर के छोटे-
छोटे टुकड़े जो प्रायः सबक,
नींव, छत आदि पर बिछाकर
फूटे जाते हैं ।

गिडगिडाना

गिडगिडाना—(क्रि० हि०)

ज़स्वरत से ज्यादा त्रितीत
थौर नम्र होकर प्राथना
करना । गिडगिडाहट =
विनती ।

गिद्ध—(पु० ङि०) एक प्रकार
का मायाहारी पत्नी ।

गिनतो—(छा० हि०) गणना ।
सग्या । हाज़िरी । १ से १००
तक धरु । गिनना = गणना
करना । हिपात्र लगाना ।
गिनाना = गिनने का काम
दूमरे से कराना ।

गिनी—(छा० अ०) मोने का
एक सिक्का जिनका व्यवहार
इंग्लैण्ड में हाता था ।

गिरगिट—(पु० हि०) गिरगि
दान । द्विपकली की शकल
का एक जानवर ।

गिरजा—(पु० पुठ० इमिजिया)
इंवाइया का प्राथना मन्दिर ।

गिरना—(क्रि० हि०) किसी
धातु का खडा न रह सकना
या जमान पर पड़ जाना ।
अवाति ।

गिरातार—(पु० हि०) उजात
में एक पत्रत । पुराणों में
हमका रैवतक पत्रत कहते हैं ।

गिरफ्तार—(स्त्री० फ्रा०) पकड़ ।
गिरफ्तार = ने पकड़ा, कैद
किया था बाँधा गया हो ।

गिरमिट—(पु० अ० गिमलेट)
बड़ा धरमा ।

गरेवान—(फ्रा०) फालत । गदन ।

गिरिया—(फ्रा०) रोना । शोक ।

गिरयी—(वि० फ्रा०) बचक ।
—गर = जिसक यहाँ कोई
वस्तु बन्दक रखी हो ।
—नामा = रेहननामा ।

गिरह—(फ्रा०) गाँठ ।

गरा—(वि० फ्रा०) महँगा ।
भारी । अप्रिय । गिरानी =
मँहगी । अकाल । अभाप ।

गिरा—(स्त्री० स०) भाग ।
—मा = (फ्रा०) बुजुर्ग ।

गिरि—(पु० स०) पर्वत ।
पहाड ।

गिरदाव—(फ्रा०) भँवर ।

गिर्द—(फ्रा०) चकर गोल ।

गिर्दावर—(पु० फ्रा०) घूमने

- वाला । धूम धूमकर काम की
जांच करनेवाला ।
- गिरकार—(फ्रा०) पकड़ा हुआ ।
कसा हुआ ।
- गिल—(स्त्री० फा०) मिट्टी ।
गारा ।
- गिलट—(पु० अ० गिल्ड) सोना
चढ़ाने का काम । एक प्रकार
की बहुत इल्की और कम
मूल्य की धातु ।
- गिलटी—(स्त्री० हि०) छोटी
गॉठ जो शरीर के अन्दर सधि
स्थान में रहती है ।
- गिलम—(स्त्री० फा०) ऊन का
बना हुआ नरम और चिकना
बालाग ।
- गिरहरी—(स्त्री० हि०) एक
जानवर ।
- गिला—(पु० फ्रा०) उलहना ।
शिक्षावत ।
- गिलारु—(पु० अ०) खोल ।
ग्यान ।
- गिलास—(पु० अ० ग्लास)
पानी पीने का एक बरतन ।
- गिलोय—() गुरुचि ।
- गिलोगी—(स्त्री० हि०) एक
या कई पानों का बीड़ा ।
- गीत—(पु० सं०) गाने की
चीज़ ।
- गीती—(फ्रा०) सत्कार । दुनिया ।
- गीता—(स्त्री० सं०) भगवद्
गीता ।
- गीदड—(पु० हि०) सियार ।
- गांदी—(रि० फा०) डरपोक ।
- गीरना—(क्रि० अ० हि०)
परचना ।
- गीर—(फा०) बाला ।
- गीला—(वि० हि०) भीगा
हुआ । —पा=नमी ।
- गुच्चा—(पु० अ०) पत्नी ।
- गुज—(स्त्री० हि०) गुजार ।
आनन्द ध्वनि । —न=
भनभनाहट । —ना=भौरों
का भनभनाना । गुजा=
धुधची । गुजायमान=गुजता
हुआ । गुजार=भौरों की
गुज ।
- गुजाइश—(पु० फा०) अँटने
की जगह । समाइ ।
- गुजान—(वि० फ्रा०)

गुंडा

- गुंडा—(वि० हि०) पापी ।
 छैला । —पन=धदमायी ।
 गुंडह=गुणदापन ।
 गुफ्तगू—(फ़ा०) बातचीत ।
 गुफ्तार ।
 गुफ्तार—(फ़ा०) बातचीत ।
 गुफ्तार ।
 गुब्बज—(पु० फ़ा० गुब्बद)
 देवाल्लयों की गोल छत ।
 —दार=जिस पर गुब्बज
 हो ।
 गुब्बी—(खी० हि०) भूमि में
 बना हुआ बहुत छोटा गड्ढा ।
 जिस गोली या गुल्ली उड़ा
 खेलते समय बनाते हैं ।
 गुच्छ, गुच्छरू—(पु० स०)
 गुच्छा ।
 गुजर—(पु० फ़ा०) निकास ।
 पट्टेच । निर्वाह । —गाह=
 रास्ता । —ना=धीतना ।
 किता स्थान से होकर थाना
 या नाना निर्वाह होना ।
 —बसर=निर्वाह । गुजरान ।
 =गुजर । गुजरना=धीता
 हुआ । गुजारना=विताना ।

गुजारा=गुजरा । वृत्ति जो
 किसी का जीवन निर्वाह के
 लिये दी जाय । गुजार=
 अदा करना ।

गुजरात—(पु० हि०) भारत-
 यप के पश्चिम प्रान्त का एक
 देश जो राजपूताने के आगे
 पड़ता है । गुजराती=गुजरात
 देश की भाषा । छोटी इलायची
 गुजारिश—(म्त्रो० फ़ा०)
 निवेदा ।

गुफ्तिया—(खी० हि०) एक
 प्रकार का पकवान ।

गुटका—(पु० हि०) छोटे
 आकार की पुस्तक ।

गुट्ट—(पु० हि०) समूह ।

गुठली—(खी० हि०) किसी
 फल का धीज ।

गुड ईवनिंग—(खी० अ०) शाम
 के समय का अँगरेज़ी सलाम ।

गुड नाइट—(खी० अ०) रात
 के समय का अँगरेज़ी सलाम ।

गुड वाई—(स्त्री० अ०) किसी
 से विदा होते समय कहा
 जानेवाला अँगरेज़ी सलाम ।

गुड मार्निंग—(पु० ध०) किमी
ये मिलने या विदा होते
ममय कदा जानेवाला रँग
रेज़ो मलाम ।

गुडवा—(पु० हि०) कषा धाम
जो दबाकर शीरे में डाला
गया हो ।

गुड—(पु० हि०) कषाह में
गादा पकाकर बनाया हुआ
ऊपर का रस जो कठरे, बट्टी
या भेली के रूप में होता है ।

गुडगुड—(पु० हि०) यह शब्द
जो गले में वायु के सुसने और
धुल्लुला छूटी से होता है ।

गुडगुडाना=गुड-गुड शब्द
होना । हुक्का पीना । गुड
गुडाइट=गुड-गुड शब्द । गुड
गुड़ी=करशी ।

गुडहर—(पु० हि०) अदहल
या पेड़ या फूल ।

गुडिया—(स्त्री० हि०) कपडे
की बनी हुई पुतली जिससे
कढ़कियाँ खेलती हैं । गुडू ।

गुण—(पु० स०) सिद्धा ।
निपुणता । हुनर । असर ।

अर्द्धा म्यभाय । विनेपता ।

—पर = लाभदायक । —

कारक = लाभदायक । —

पारी = लाभदायक । —

प्राहक = गुण की कदर करने

वाला मनुष्य । —प्राही =

गुणियों का आदर करने

वाला । —शु = गुण का जान-

नेवाला । गुणी । —शुता =

गुण की जानकारो । —यत

= गुणी । —यती = गुण

वाली । —वाचक = जो गुण

को प्रकट करे । —यान =

गुणी । —सागर = गुणों से

भरा । गुणाद्य = बहुत गुणों-

वाला । गुणातीत = गुणों

से परे । गुणानुवाद = प्रशंसा ।

गुणी = गुणवाला । निपुण

मनुष्य ।

गुणा—(पु० हि०) ज़रम ।

गुणक = जिससे किसी अक

को गुणा करें या ज़रम दें ।

गुणनफल = गुणा करने या

ज़रम देने से जो फल आवे ।

गुणाक = वह अक जिसको

गुत्था धरना हो । गुत्थित =
गुत्था किया हुआ । गुत्थ =
यह अरु जिसमें गुत्था करें ।

गुत्थम गुत्था—(पु० हि०)
उल्लङ्घन । भिन्नत ।

गुदगुती—(स्त्री० हि०) यह सुर
सुगन्ध या मीठी सुगन्ध या
काग, पर चाँचि मासक
स्थानों पर उँसली आदि
छू जाने से हाँसी है । गुद
गुदाना = गुदगुती पैदा करना ।

गुदाज—(त्रि० प्र०) गूदशर ।

गुदुरी—(स्त्री० हि०) गदर की
पत्नी ।

गुनगुनाता—(त्रि० हि०) गुन-
गुन शब्द धरना । अस्पष्ट स्वर
में गाना ।

गुनाह—(पु० प्र०) पाप ।
दाप । गुनाही = पापी ।
दोषी । गुनाइगार = पापी ।
दोषी । —गारी = अपराध ।

गुना—(पु० हि०) गुण । धार ।

गुपचुप—(त्रि० हि०) छिपा
धर । एक प्रकार की मिठाई ।

गुप्त—(वि० सं०) छिपा हुआ ।

गू । धैर्यों के नाम के साथ
उपहार होने का एक पदवी ।

—पर = दिया । —दान
= जिस दान को 'गिफ्ट' दाता
ही जाने ।

गुफा—(स्त्री० हि०) कदवा ।

गुल्लूगू—(स्त्री० प्र०) दातणत ।

गुरुरेला—(पु० हि०) एक प्रकार
का छोटा फादा जो गोरु-
धौर मल आदि साता और
हथका करता है ।

गुजार—(पु० प्र०) पूल । मन में
दया हुआ कथ, दुःख या
दुःख ।

गुजारा—(पु० हि०) यह पैनी
या उमके आकार का और
बाईं बाँज जिसके आँसु गर्म
हवा या हवा से हलका किसी
प्रकार की भाप आदि भावर
आकार में उड़ते हैं ।

गुम—(पु० प्र०) गायब । अ
प्रसिद्ध । खाया हुआ ।
—नाम = अप्रसिद्ध ।

गुमटी—(स्त्री० प्र०) गुमद ।

गुमर—(पु० फा०) अभिमान ।
गुवार ।

गुमराह—(वि० फ्रा०) भूजा
हुआ ।

गुमान—(फा०) सह । शक ।
धमक ।

गुमास्ता—(पु० फ्रा०) मुनीम ।
—गीरी = गुमास्ते का पद ।
गुमास्ते का काम ।

गुर—(पु० हि०) मूलमंत्र । युक्ति ।
गुरगा—(पु० हि०) नौकर ।
लड़का ।

गुरगारी—(पु० फा०) मुडा
जूता ।

गुरदा—(पु० फ्रा०) रीढ़दार
जोड़ों के अन्दर का एक अंग
जो कनेजे के निकट होता है ।
हिम्मत ।

गुरिया—(स्त्री० हि०) माला
का दाना ।

गुरु—(त्रि० स०) आचार्य ।
शिक्षक । बड़ा । भारी । कठि
नता से पढ़ने या पचने जाना ।
—आई = गुरु का धम ।

चालाकी । —कुल = गुरु,
आचार्य या शिक्षक के रहने
का वह स्थान जहाँ वह
विद्यार्थियों को अपने साथ
रखकर शिक्षा देता हो ।
—जन = बड़े लोग । —ता
भारीपन । महत्त्व । गुरवाई ।
—र = भारीपन । बढ़प्पा ।
—रकेन्द्र = किसी पदार्थ में
वह बिन्दु जिस पर समस्त वस्तु
का भार एकत्रित हुआ और
कार्य करता हुआ मान सकते
हैं । —आवपण = वह
आवपण जिसके द्वारा भारी
वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती ह ।
—रक्षिणा = आचार्य की
भेंट । —द्वारा = गुरु का
स्थान । —भाई = दो या
दो से अधिक ऐसे पुरुष
जिनमें से प्रत्येक का गुरु
वही हो जो दूसरे का ।
—मुत्त = जिसने गुरु से मंत्र
लिया हो । —मुत्ती = गुरु
नानक की सजाई हुई एक
प्रकार की लिपि जो पञ्जाब

में प्रचलित है। —यार= बृहस्पति का दिन।

गुरेना—(क्रि० हि०) घूरना।

गुरा—(गु० हि०) वह रत्ना निमस धनियर्षा धनुशी का परदा कर्मते है।

गुराना—(धि० हि०) क्रोध या अभिमान के कारण भारी और कष्टकर स्वर स बालना।

गुरा—(स्त्री० हि०) मुने हुये जी।

गुरूर—(घ०) अस्त होना।

गुरूर=घनर। दम्भ।

गुल—(पु० फा०) फूल। छाप। दीपकादि में बत्ती का वह अंश जो विकृत लज्ज जाता है। लडा। —कद=मिथ्री या चीनी में मिली हुई अमल ताम या गुलाब के फूलों की पक्कियाँ जो धूप की गरमी से पकाइ जाती हैं। —कारी =किमी प्रकार के खेल घूरे या फूल पत्ती इत्यादि बनाने, तरा शने या काटने का काम। —खैरु=एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं। —जार

=वाटिका। —तराण=वह कैंची निममे चिराग का गुल काटते हैं। वह कैंची जिसमे माली लोग याग के पौधों को कतरते या छाँटते हैं। याग के पौधों को काटने या छाँटनेवाला माजा। सग तराणों का वह औजार जिससे वे पत्थरों पर फूल पक्कियाँ बनाने हैं। —दस्ता=फूल का गुच्छा। —दावदी=एक प्रकार का छोटा पौधा। —दान=गुलदस्ता रखने का पात्र। नार=अनार का फूल। —बकावली = एक प्रकार का फूल। —मैददी=एक प्रकार का पौधा। —लाला =एक प्रकार का पौधा। —शकरी=चीनी और गुलाब के फूल से बनी हुई एक मिठाई। —शन=फुलवारी। —शब्बो=जहसुन से मिळता लुब्धता एक प्रकार का छोटा पौधा जिसको रजनी गधा या सुगधन कहते हैं। —सम=

सेनारों का नष्टागी करने का एक थीज़ार जिसमें फूल आदि बनाते हैं। —सौसन=एक प्रकार का फूल जो हलके श्यामनानी रंग का होता है। —इज़ारा=एक प्रकार का गेंदा। गुलाब=एक झाड़ या फटोला पौधा जिसमें बहुत सुन्दर और सुगन्धित फूल लगते हैं। गुलाब जल। गुलाब पात्र = भारी के आकार का एक प्रकार का लवा पात्र। गुलाबी=गुलाब के रंग का। हलवा। गुजे राग=सुन्दर फूल। —चीन =एक प्रकार का वृक्ष जो कर्म से लगाया जाता है और चारहों महीने फूलता है। समस्त चीन देश से यह आया है। —बन्द (फा०) =गुलाब के फूलों से बनी एक मीठी दवा। —गपावा =शोर। —गुल=मुलायम। —गुला=कौमल। एक प्रकार का पकवान। —गुलाना=

किसी गूदेदार चीज़ को दवा पर या मलपर मुलायम करना। —दरा=मीज़। —दस्ता=फूल रखने का पात्र। --फाम=सुन्दर। खूबसूरत। —बदा=एक प्रकार का बहुतमूल्य रत्न जो पपड़ा जो प्रायः लहरियेदार या धारीदार होता है। —रु =सुन्दर। खूबसूरत। गुलाब (फा०)=एक पुष्प विशेष। गुलाबी=गुलाब के फूल के रंग की वस्तु। शीशा। अमरुद की एक किस्म। गुलाबजामुन=एक प्रकार की मिठाई।

गुलाम—(पु० अ०) परीदा हुआ नौकर। नौकर। ताश का एक पत्ता। गुलामी= दासत्व। सेवा। पराधीनता। —चोर=ताश का एक प्रकार का खेल। —गर्दिश =कोठी या मद्दल आदि के चारों ओर बना हुआ वह बरामदा जहाँ थरदली, चप-

गुलिस्ताँ

रासी, दवान और दूसरे नौकर
घाकर रहते हों ।

गुलिस्ताँ—(पु० फ्रा०) याग ।
उपवन । फारसी का एक
प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

गुलियाना—(क्रि० हि०) औषध
या और कोई तरल पदार्थ
बाँस के चोंगे में भरकर पशु
को पिलाना ।

गुलबद—(पु० फ्रा०) वह सूती,
ऊनी या रेशमी लम्बी और
प्राय एक बालिशत चौड़ा पट्टी
जो सरदी से बचने के लिये
सिर, गले या कानों पर
लपेटे जाती है ।

गुलेल—(फ्रा० फ्रा० गिलूल)
वह कमान या धनुष जिससे
चिड़ियों और बन्दरों आदि
को मारने के लिये मिट्टी की
गोलियाँ चलाई जाती हैं ।
—ची = गुलेल चलानेवाला ।

गुलोरा, गुलार—(पु० हि०)
वह स्थान जहाँ रस पकाने
का मट्टा हो और जहाँ गुड़
बनाया जाता है ।

गुल्फ—(पु० स०) पेंदी के ऊपर
की गाँठ ।

गुल्म—(पु० स०) ऐसा पौधा
जो एक जगह में कई होकर
निकल और जिसमें कई
लकड़ी या टठल न हो ।

गुल्ला—(पु० हि०) रसगुल्ला ।
मिट्टी की बनी गौली जो गुलेल
से फेंकी जाती है ।

गुस्ताव—(वि० फ्रा०) वे
थदय । गुस्तावी = वे थदयी ।
गुस्ता—(अ०) क्रोध । गुस्तैल
= गुस्तावर ।

गुस्तल—(पु० अ०) स्नान ।
—झाना = स्नानागार ।

गुहना—(क्रि० हि०) गुँथना ।
सूई तागों से सी देना ।

गूंगा—(वि० फ्रा०) जो बोल
न सके ।

गूह—(वि० स०) छिपा हुआ ।

गूलर—(पु० हि०) एक बड़ा पे
जिसकी पेड़ी दाढ़ादि से एक
प्रकार का दूध निकलता है ।

गृह—(पु० स०) घर । बुद्ध

- पति=घर का मालिक ।
 —पशु=कुत्ता । —मण्डि
 =दीपक । —स्य=घर बार
 वाला । खाने-पीने से रुश
 आदमी । गृहस्थाश्रम=चार
 आश्रमों में से दूसरा आश्रम ।
 गृहस्थी=घर-बार । पुटुम्ब ।
 घर का सामान । खेती-
 बारी । गृहिणी=घर की
 मालकिन । गृही=गृहस्थ ।
 गृह-सचिव—(पु० स०) स्वराष्ट्र
 सचिव ।
 गेंड—(पु० हि०) ऊपर के ऊपर
 का पत्ता ।
 गेंडुआ—(पु० हि०) तन्त्रिया ।
 बड़ा गद ।
 गेंद—(पु० हि०) फटुक ।
 —बल्ला=गेंद और उसे
 मारने की लकड़ी ।
 गेंदा—(पु० हि०) एक पौधा
 जिसमें पीले रंग के फूल
 लगते हैं ।
 गेटिस—(पु० अ० गेटर) मोजा
 आदि ^{लिखे रबर,}
 कीता ।

- गेरुआ—(वि० हि०) गेरु के
 रंग का । गेरुई=चैत की
 फसल का रोग ।
 गेरु—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
 की लाल बड़ी मिट्टी ।
 गेली—(स्त्री० अ०) छापेखाने में
 धातु या लकड़ा की एक
 छिछली किरती जिस पर
 टाइप रखकर पहले पहल वह
 कागज़ छपा जाता है, जिस
 पर सशोध होता रहता है ।
 गेसू—(क्रा०) लट । फाकुल ।
 जुलक ।
 गेहुँशन—(पु० हि०) एक प्रकार
 का अत्यन्त विषहर फनदार
 साँप ।
 गेहूँ—(पु० हि०) एक अनाज
 जिसकी फसल अगहन में
 बोई जाती है और चैत में
 काटी जाती है ।
 गेंडा—(पु० हि०) भैंस के
 आहार का एक बड़ा पशु ।
 गैजेट—(अ०) सरकारी समा-
 चार-पत्र ।
 गैजेटियर—(पु०

पुस्तक जिममें किमी स्थान
वा भौगोलिक बखन हो ।

गेजेटेड अफसर—(पु० अ०)
वह सरकारी कर्मचारी जिसकी
नियुक्ति की सूचना सरकारी
गेजेट में प्रकाशित होती है ।

गैव—(पु० अ०) वह जो सामने
न हो । गैबी = छिपा हुआ ।
अजनबी ।

गैर—(वि० अ०) दूसरा । अज
नबी । —मनकूला = अचल ।
—मुासिय = अनुचित ।
—मुमकिन = असभव । —
वाजिब = थयोग्य । —दाजिर
= अनुपस्थित ।

गैरत—(स्त्री० अ०) जज्जा ।

गैलन—(स्त्री० अ०) पानी
दूधादि द्रव पदार्थ मापने का
एक अँगरेजी मान जो तीन
सेर का होता है ।

गैटरी—(स्त्री० अ०) नीचे ऊपर
बैठने का सीढ़ीनुमा स्थान ।

गैस—(स्त्री० अ०) एक तत्व ।
हवा ।

गोंड—(पु० हि०) एक असभ्य
जङ्गली जाति ।

गोंदरा—(पु० हि०) नरम
घास या पयाल का बना हुआ
एक प्रकार का आसन जिस
पर किसान लोग सोते हैं ।
गोंदरी = घास की बनी हुई
बटाई । पयाल की बनी हुई
बटाई ।

गोवि—(क्रा०) यद्यपि ।

गो—(स्त्री० स०) गाय ।
—गाला = जहाँ गायें बाँधी
जाती हैं ।

गोज—(पु० क्रा०) पाद ।

गोजई—(स्त्री० हि०) जो थोर
गेहूँ मिला हुआ ।

गोटा—(पु० हि०) सुनहले या
रुपहले बादले का बना हुआ
पतला फीता । सूया हुआ
मल ।

गोटी—(स्त्री० हि०) ककड़ ।
गेरू पत्थर इत्यादि का छोटा
गोल टुकड़ा जिससे बच्चे
खेल खेलते हैं ।

गोड्डत—(पु० हि०) चौकादार ।

गोडना—(कि० स० हि०)

कोटना ।

गोडा—(पु० [हि०] पलंगादि
का पाया ।

गोन—(पु० हि०) बुल । समूह ।

गोती = शपने गोत्र का । गोत्र

=सतान । समूह । एक प्रकार

का जाति विभाग ।

गोता—(पु० फा०) दुग्धी ।

—घोर = दुग्धी लगाने

वाला ।

गोदना—(कि० हि०) गठाना ।

गोदी—(स्त्री० हि०) बही नगी

या समुद्र में वह घेरा हुआ

स्थान जहाँ जहाज मरम्मतार्थ

या तूफान आदि के उपद्रव

से रक्षित रहने के लिये रक्ते

जाते हैं । जेटी ।

गोधूली—(स्त्री० स०) सन्या

का समय ।

गोपन—(पु० स०) छिपाना ।

गोपनीय = छिपाने योग्य ।

गोफन, गोफना—(पु० हि०)

ढेलवाँस । फर्शी ।

गोवर—(पु० हि०) गौ का मल ।

—गणेश, गणेश = भद्र ।

मूख । गोवरी = गोबर का

लेपन । गोधरैला = एक प्रकार

का छोटा फीड़ा जो गोबर में

या इसी प्रकार की कोई दूसरी

गद्दी चीज़ में उत्पन्न होता है

धीर उसी में रहता है ।

गोभी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार

की घास जिसके पत्ते लंबे खर-

खरे, फटावदार धीर फूल

गाभी के पत्तों के रंग के होते

ह । एक तरफारी ।

गोमती—(स्त्री० स०) एक नदी ।

गोमुषी—(स्त्री० स०) ऊन

आदि की बनी हुई एक प्रकार

की धैली जिसमें हाथ डाल-

कर जप करते समय माला

फोते हैं ।

गोयँड—(स्त्री० हि०) गाँव के

थासपास की भूमि ।

गोयन्दा—(क्रा०) कहने वाला ।

भेदिया ।

गोया—(क्रा०) मानो ।

गौर

गौर—(खी० फा०) वृत्र। गौरा।
सफेद। —स्तान=(फ्रा०)
वृषविस्ता। ईमाइ मुसब
मानों के मुरदे गाड़ने की
जगह। —वन=(फा०)
कम खोदने वाला।

गौरखधधा—(पु० हि०) मूगड़ा।
उलकन।

गौरखनाथ—(पु० हि०) एक
प्रसिद्ध धर्मरूत जो पन्द्रहवीं
शताब्दी में हुए थे। गौरख
पंथी=गौरखनाथ का धनु
गामी।

गौरार—(पु० फ्रा०) गधे की
जाति का एक जगली पशु जो
गधे से बड़ा और घोड़े से
छोटा होता है।

गौरवा—(पु० हि०) नैपाल के
एक प्रदेश का निगसी।

गोनिया—(फ्रा०) यदह्यों और
मेमारों का औजार जिससे
लकड़ी और इमारत की
देड़ाई सिधाई देखी जाती है।

गोरस—(पु० स०) दूध। गोरसी
=दूध गर्म करने की अँगीठी।

गौरा—(वि० स० गौर) मरुदे
घणवाला। फिरगी। —ई
=गौरापन। सुदरता।
गौरी=रूपवती स्त्री।

गौरिल्ला—(पु० अफ्रिका) चिपेंजी
की जाति का बहुत बड़े आकार
का एक प्रकार का वनमानुष।

गोरू—(पु० हि०) मवेशी।

गोल—(फा०) गिरोह। दल।
मुँड।

गोलमेज कान्फरेन्स—(स्त्री०)
वह सभा जिसमें एक गोल
मेज के चारोंथोर बैठकर
भिन्न भिन्न दलों या मतों के
लोग किसी महत्व के विषय
पर विचार करते हैं।

गोलदाज—(पु० फा०) तोप में
बत्ती देने वाला। गोलदाजी
=गोला चलाते का काम।

गोलवर—(पु० हि०) गुब्बद।
गोलाइ। गोत्र=घृत्ताकार।

गोला—(पु० स०) किसी पदार्थ
का बड़ा गोल पिंड। लोह
का वह गोल पिंड जिसमें
बहुत-सी छोटी छोटी गोलीयाँ

मैलें आदि भरकर युद्ध में तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। गरी का गोला। वह बाजार या मंडी जहाँ थगाज या फिराने की बहुत बड़ी बड़ी दुकान हों। गोलाई=गोला पत्र। गोलाकार। गोलाकृति=गोल शकृवाला। गोलाध्याय=भास्कराचार्य का एक ग्रन्थ जिसमें भूगोल और खगोल का वर्णन है। गोलाब्द=पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है। गोली=बटिया। औपधि की बटिका। मिट्टी काँच आदि का बना हुआ वह छोटा गोल पिण्ड जिससे बालक खेलते हैं। गोली का खेल। सीमे आदि का डला हुआ वह गोल पिण्ड जो बन्दूक में भरकर चलाया जाता है।

गोल्ड—(पु० ध०) सोना।

—न=सोने का। सोने के रंग का।

गोवध—(पु० स०) गौ की हत्या।

गोश—(क्रा०) घात। गोशा=कोना। —माल=(फा०) कान मलना। —वारा=(फा०) क्लेशक। विवरण-पत्र।

गोशत—(पु० फा०) मास।

गोसफन्द—(फा०) भेड़। बकरी।

गोसाई—(पु० हि०) सन्यासियों का एक सम्प्रदाय। विरक्त साधु।

गोह—(स्त्री० हि०) छिपकली की जाति का एक जगली जंतु।

गोहरा—(पु० हि०) वटा।

गोहराना—(क्रि० हि०) पुकारना। गोहार=पुकार।

गौं—(स्त्री० हि०) मीका। मतलब।

गौंटा—(पु० हि०) पड्यन्त्र। मतलब।

गौगा—(पु० ध०) शेर। अक्र-वाह।

गौण

गौण—(वि० स०) जो प्रधान या मुख्य न हो । सहायक । साधारण ।

गौता—(पु० द्वि०) सुक्लाना । द्विरागमन ।

गौर—(वि० स०) गोरा । उज्वल ।

गौरव—(पु० स०) बढप्पन । सम्मान ।

गौरवा—(पु० द्वि०) चक्र पक्षी ।

गौहर—(पु० पा०) मोती ।

ग्रथ—(पु० स०) पुस्तक ।

—कक्षा, पार=ग्रथ का बनाने वाला । —धुवक=

जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान् हो । —साहव=

स्त्रिकला की धम पुस्तक जिनमें सब गुरुओं के उपदेश एकत्र किये हुये हैं ।

ग्रह—(पु० स०) वे तारे जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं ।

—वेध=ग्रह की स्थिति आदि का जानना । ग्राहक=ग्रहण करने वाला । ररी दार । चाहने वाला ।

ग्रहण—(पु० स०) सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में पृथ्वी के धा जाने से चन्द्रमा पृथ्वी का छाया में धा जाता है, उस चन्द्र-ग्रहण और पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के धा जाने से सूर्य का कुछ अंश ढक जाता है उसे सूर्य-ग्रहण कहते हैं । पञ्चना । छेना वा हस्तगत कराना । मजूरी । ग्राह्य = लेने योग्य । मानने लायक । जानने योग्य ।

ग्राडील—(वि० थ० गैडियर) ऊँचे फंद का ।

ग्राम—(पु० स०) गाँव । बस्ती । समूह । —बुक्कुट=पालतु गुरगा । —सिह=बुत्ता । ग्रामीण=देहानी । ग्राम्य=ग्रामीण । मूढ़ ।

ग्रामर—(थ०) याकरण ।

ग्रामरुट—(पु० थ०) घास काटने की मशीन ।

ग्रीक—(वि० थ०) यूनान देश की भाषा । ग्रीस वा यूनान देश का निवासी ।

ग्रीवा—(स्त्री० स०) गर्दन ।
 ग्रीष्म—(स्त्री०स०) गरमी की ऋतु ।
 ग्रूप—(पु० अ०) रुड ।
 ग्रेट प्राइमर—(पु० अ०) एक प्रकार का छापे का यन्त्र ।
 ग्रेट ब्रिटेन—(पु० अ०) इंग्लैण्ड, वेल्स और स्कॉटलैंड देश ।
 ग्री—(पु० अ०) एक अगरेजी तेल जो प्राय एक जो के बराबर होती है ।

ग्रेनाइट—(पु० अ०) एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कड़ा होता है ।
 ग्रेजुएट—(पु० अ०) बी० ए० या एम० ए० पास किया हुआ व्यक्ति ।
 ग्लास—(पु० अ०) शीशा । पानी पीने का एक प्रकार का बरतन ।
 ग्लेशियर—(अ०) बरफ की नदी ।
 ग्रीस—(अ०) बारह दजन ।

घ

घ

घट

घ—हिन्दी-वर्णमाला में कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण निह्वा-मूल या कठ से होता है ।
 घट—(पु० हि०) घडा । सूत-क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाधा जाता है ।
 घँघरी—(स्त्री० हि०) छोटा लहंगा ।
 घँघोलना—(कि० हि०) घँघो रना । पानी को छिलाकर उसमें कुछ मिलाना ।

घटा—(पु० स०) घटाइ घडा या समय । एक जगरगर याजा जा मन्दिराँ नं दाटफता रहता है । —घर=घट ऊँचा धौरदर जिस पर एक घेरी घडी घर्म घडी लगती हो जा चारोओर स दूर गण दिवाई देती हो और जिसका धना दूर तक सुनाई दगा हो ।
 घटी—(स्त्री० स०) छोटा घंटा या जगके घन्ने का शब्द ।
 घट—(पु० सं०) घडा । कृष्ण ।

घटती

- घटती—(स्त्री० हि०) कमी ।
 अवनति । अप्रतिष्ठा ।
 घटा—(क्ति० घ०) होना । कम
 होना । छोटा होना । (सं०)
 वाक्त्रया । वारदात ।
 घटबढ़—(स्त्री० हि०) कमी यशी ।
 घटा—(स्त्री० सं०) मेघमाला ।
 सुषड ।
 घटाटोप—(पु० सं०) बादलों
 का जमाव । ओहार ।
 घटी—(स्त्री० हि०) कमी । हाणि ।
 घाटा ।
 घटाना—(क्ति० हि०) कम
 करना । वाक्त्रा निकालना ।
 अप्रतिष्ठा करना ।
 घटिया—(वि० हि०) जो अच्छे
 माल का न हो । सस्ता ।
 घडा—(पु० घट) मिट्टी का
 बना हुआ गगरा ।
 घडियाल—(पु०) वह घटा जो
 पूजा के समय की सूचना के
 लिये बजाया जाय । एक जल
 जतु । मगर ।
 घडी—(स्त्री० हि०) समय सूचक
 यंत्र । समय ।

- घडीसाज—(पु० हि०) घड़ी की
 मरम्मत करने वाला ।
 घडीसाजी—(स्त्री० हि०) घड़ी
 की मरम्मत का व्यवसाय ।
 घडौंची—(स्त्री० हि०) घड़ा
 रखने की त्रिपाई या ऊँचा
 जगह ।
 घन—(पु० सं०) मेघ । हयौड़ा ।
 समूह ।
 घनघोर—(पु० सं०) भीषण
 घनि । भयानक ।
 घनचक्र—(पु० सं०) मूल ।
 आबारा गद्द । आतिशबाजी ।
 सूर्यमुखी का पृष्ठ । चक्र ।
 जवाल ।
 घात्व—(पु० सं०) सघनता ।
 घनफल—(पु० सं०) लम्बाई,
 चौड़ाई और मोटाई (गहराई
 या ऊँचाई) तीनों का गुणन
 फल ।
 घनमूल—(पु० सं०) गणित में
 किसी घन-राशि का मूल
 अंक ।
 घना—(पु० सं० घन) गम्भिर ।
 नज़दीकी । बहुत अधिक ।

घूस

घूस—(स्त्री० हि०) चूहे के बर्ग का एक जातु । शिशवत् । उरकोच ।

घृत—(पु० हि०) घी ।

घँटा—(पु० अनु०) सुथर का बन्धा ।

घेघा—(पु० देश०) गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है । गले का वह रोग जिससे गले में सूजन होकर थतौदा सा निकल आता है ।

घेर—(पु० हि०) चारों ओर का फैलाव । घेरा । —घार = चारों ओर का फैलाव । खुशामद करना । घेरा = चारों ओर की सीमा । घिरा हुआ स्थान । हाता । मण्डल ।

घौघा—(पु० देश०) शर का तरह का एक कीड़ा । मूल । गावदी ।

घौंघी—(स्त्री० हि०) यह बैल जिसके भोंग कानों की ओर मुड़े हों ।

घोंटना—(क्रि० हि०) घूँट घूँट करके पीना ।

घोंसला—(पु० हि०) नीड़ । खोता ।

घोटना—(क्रि० स० हि०) रगड़ना । अभ्यास करना ।

घोटाई—(स्त्री० हि०) घोटने की मज़दूरी ।

घोटाला—(पु० देश०) घपला । गड़बड़ ।

घोडा—(पु० हि०) एक जानवर । खटका जिमके दवाने से बढ़क में रजक लगती है और गोली चलती है । शतरज का एक मोहरा जो टाई घर चलता है । —गाड़ी = वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है । (स्त्री०) घोड़ी = टोंटा ।

घोर—(वि० स०) भयकर । सघन । कठिन । गहरा । बुरा । बहुते अधिक ।

घोषणा—(स्त्री० स०) उच्च स्वरा से किसी बात की सूचना राजाज्ञा आदि का प्रचार करना । घन । —घर = घर

घुमक्कड

- घुमक्कड—(वि० हि०) घट्टन
घूमने वाला। सेजानी।
- घुमनी—(वि० स्त्री० हि०) जा
इधर उधर घूमती फिरे।
- घुमाव—(पु० हि०) चक्कर।
—दार = चक्करदार।
- घुसपैठ—(स्त्री० हि०) पहुँच।
गति। प्रवेश। रसाइ।
- घुँघट—(पु० हि०) वस्त्र का वह
भाग जिससे कुल्लवधू का
मुँह ढका रहता है।
- घुँट—(पु० अनु०) पानी या
किसी द्रव पदार्थ का उतना
अंश जितना एक थार गले के
नीचे उतारा जा सके।
घुमकी।
- घुडीदार—(वि० हि०) जिसमें
घुटी लगी हो।
- घुटना—(पु० हि०) पाँव के
मध्य भाग का जोड़। साँस
का भीतर ही भीतर दब
जाना। रुकना।
- घुटना—(पु० हि०) घुटनों
तक का पायजामा। पतली
मोहरी का पायजामा।

- घुट्टी—(स्त्री० हि०) घट्ट दवा जो
छोटे बच्चों को पाचन के बिसे
पिझाई जाती है।
- घुडकना—(क्रि० हि०) दौटना।
- घुडकी—(स्त्री० हि०) दौट,
दपट। फटकार।
- घुडरौड—(स्त्री० हि०) घोड़े
की दौड़। घोड़े के दौड़ने
का स्थान।
- घुडसाल—(स्त्री० हि०) अस्त
बल।
- घुँटी—(स्त्री० हि०) एक शीपधि
जा छोटे बच्चों को पिझाई
जाती है।
- घुँसा—(पु० हि०) मुक्का।
- घूमना—(क्रि० अ०) चारोंओर
फिरना। चक्कर खाना।
देशांतर भ्रमण। मँडराना।
किमी ओर को मुटना।
घापस थाग या जाना।
लौटना।
- घूर—(पु० हि०) वह जगह जहाँ
कूड़ा-करवट फेंका जाय।
- घूरना—(क्रि० हि०) घुरी नीयत
से पफ़क देलना।

चद

- चद—(वि० प्रा०) कुष्ठ ।
 चदन—(पु० स०) एक पेड़
 जिसके हीर की लकड़ी बहुत
 सुगन्धित होती है ।
 चदा—(पु० हि०) चद्रमा ।
 बेहरी । उगाही ।
 चद्र—(पु० स०) चन्द्रमा ।
 गले में पहनने का एक
 गहना । गौलखा हार ।
 चन्द्रोदय = चद्रमा का
 उदय । चँदोया । वैशक में
 एक रस ।
 चपर्द—(वि० हि०) पीले रग
 का ।
 चपक—(पु० स) चम्पा ।
 चपत—(वि० देश०) चलता ।
 शतदान ।
 चपा—(पु० हि०) एक पेड़
 जिसमें हल्के पीले रग के
 फूल लगते हैं ।
 चपू—(पु० स०) गद्य-पद्य मय
 काव्य ।
 चकइ—(स्त्री० हि०) मादा
 चक्रवा ।

- चकती—(स्त्री० हि०) पट्टी ।
 पैबन्द ।
 चकत्ता—(पु० हि०) घनडे पर
 पड़ा हुआ धन्धा या दाग ।
 चकनाचूर—(वि० हि०) चूर
 चूर ।
 चकरदी—(स्त्री० हि०) ज़मीन
 की हदबदी ।
 चकमक—(पु० तु०) एक प्रकार
 का बड़ा पत्थर जिस पर चोट
 पड़ने से बहुत जल्द आग
 निकलती है ।
 चकमा—(पु० हि०) मुलावा ।
 चकराना—(क्रि० हि०) घूमना ।
 शक्ति होना । आश्चर्य में
 डालना ।
 चकला—(पु० हि०) चौका ।
 चक्री । इलाका । कम्पनी-
 साग ।
 चकलेदार—(पु० देश०) किसी
 प्रदेश का शासक या कर
 संग्रह करनेवाला ।
 चक्रवा—(पु० हि०) एक पक्षी ।
 चक्राचौध—(स्त्री० हि०) दृष्टि
 की तिलमिलाहट ।

पत्र जिसमें सर्पसाधारण को
सूचनाय राजाका आदि लिगी
हो । विशिष्टि । सूचना पत्र ।
घोसी—(पु० हि०) अहार ।
माला । दूध बेचनेवाला ।

आजकल जो सुसंयोजित दूध
बैंचते हैं, वे घोसी कहलाते
हैं ।

घौर—(पु० देश०) फलों का
गुच्छ । गौद ।

घ

च

चहल

च—हिंदी-वर्णमाला का २२वाँ
अक्षर और च यग का पहला
व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान
काठु है ।

चग—(खी० फा०) लारनी
बाजों का बाजा । पतंग ।
गुड्डा ।

चगा—(वि० हि०) नारोग ।
तदुस्त । अच्चा ।

चगुल—(पु० हि०) चिदियों
या पशुओं का डेरा पत्रा ।
बकोटा ।

चंगेर, चंगेरी—(खो० हि०)
टोमरी । डलिया ।

चचल—(वि० सं०) थधीर ।
उद्दिग्ध । नटलट । —ता =
घबलता । शरारत ।

चट—(वि० हि०) चालाक ।
धृत ।

चडाल—(पु० सं०) चाडाल ।
डोम ।

चट्ट—(पु० हि०) आराम का
सत जिसका चुर्चा नशे के
लिये एक नली के द्वारा पीते
हैं । —प्राना = वह घर जहाँ
जोग इकट्ठे होकर चट्ट
पीते हैं ।

चहल—(पु० देश०) झाकी रग
की एक छोटी चिडिया, जो
पेडों और झाड़ियों में बहुत
सुन्दर घासका बनाती है
और बहुत अच्चा बोलती
है । पुराना चहल = घेडोल
भडा या बेवकूफ आदमी ।

चटनी—(स्त्री० हि०) थपलेह ।

चटपटो—(स्त्री० हि०) धातुरता ।

तेज चीज, जैसे बचालू
आदि ।

चटाई—(स्त्री० हि०) नृण पा

शिक्षाना ।

चटाना—(क्रि० हि०) गिराना ।

रिशवत ड्रेना ।

चटोरा—(रि० हि०) स्टाड

लोतुर । लोभी । ।

चट्टान—(स्त्री० हि०) शिला-

पट ।

चट्टी—(स्त्री० हि०) पदाव ।

स्लिपर ।

चढ़ना—(क्रि० हि०) ऊँचाई पर

जाना । बढ़ना । आक्रमण

करना । सँहगा होना । आवाज

तेज होना । बहाव के विरुद्ध

नदी में चलना । तनना ।

देवार्पित होना । डोल सितार

आदि को डोरी या तार फस

गाना । सवार होना । किसी

निर्दिष्ट काल विभाग जैसे

वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का

आरम्भ होना । कर्ज होना ।

दणं होना । पम्ने या थाँच

खाने के लिये चूटे पर रखना

जाना । तप होना । चढ़ाई =

चढ़ने की क्रिया । यह स्थान

जो आगे की ओर बराबर

ऊँचा होता गया हो ।

धावा । चढ़ा ऊपरी = होड ।

चढ़ाना = ऊँचाई पर पहुँ-

चाना । चढ़ने में प्रवृत्त कराना ।

भाव बढ़ाया । धावा कराना ।

चढ़ाव = वह गहना जो दूरे

के घर की ओर से दुलहिन

को पहनाया जाता है । यह

दिशा जिधर से नदी या पानी

की धारा आइ है । चढ़ावा

= पुनावा । बढावा ।

चतुरग—(पु०, स०) शतरज का

खेल । चतुरगिणी = वह मेना

जिसमें हाथी, घोड़े, रथ, घोरे

पैदल हों ।

चतुर—(पु० स०) तेज । चलाक ।

चतुराई = होशियारी ।

चालाकी ।

चतुर्थ—(वि० स०) चौथा ।

चतुर्थांश = एक चौथाई ।

चञ्चित

चञ्चित—(पि० स०) विस्मित ।

हैरान ।

चञ्चोर—(पु० स०) एक पक्षी ।

चञ्चर—(पु० हि०) फेरा ।

चञ्चका—(पु० हि०) पहिया ।

चञ्चनी—(स्त्री० हि०) आटा

पीसने या दाल दलने का यन्त्र ।

चञ्च—(पु० स०) पहिया । कुम्हार

का चाक । लोहे का एक अस्त्र जो पहिए के आकार का होता था । पङ्कज ।

चञ्चवर्ती—(वि० हि०) सात भाग ।

चञ्चवाद—(पु० स०) चक्रवा पक्षी ।

चञ्चवृद्धि—(स्त्री० स०) सूद दर सूद ।

चञ्चन्यृह—(पु० स०) एक प्रकार की पौजी मोर्चेपत्नी ।

चञ्च—(प्रा०) मगडा । लडाइ ।

चञ्चना—(क्रि० हि०) स्वाद लेना ।

चञ्चाचप—(प्रा०) मगडा ।

लडाई के समय तलवार की आवाज ।

चञ्चाचसी—(स्त्री० प्रा०) लाग-टाँट । विरोध । बैर ।

चञ्चागा—(क्रि० हि०) स्वाद लिखाना । पिलाना ।

चञ्चड—(वि० देश०) चतुर ।

चञ्चताइ—(पु० पु०) मध्य एशिया निवासी तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश । अन्धर इसी वंश का था ।

चञ्चा—(पु० हि०) बाप का भाइ । चञ्ची = चञ्चा की स्त्री चञ्चेरा = चञ्चाजाद । चञ्चा से उत्पन्न ।

चट—(वि० वि०) शीघ्र । वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है ।

चटक्दार—(वि० हि०) चञ्चीला ।

चटवनी—(स्त्री० हि०) सित फिना ।

चटकमटक—(स्त्री० हि०) यनाव । शृङ्गार । वेप विन्यास । चमक-दमक ।

चवेना—(पु० हि०) चवंश,
भूँजा।

चमक—(स्त्री० हि०) रोशनी।
पाति। कमर छादि का घट
दड़ जो घोट लगाने या एक-
वारगी अधिक बल पढने के
कारण पढता है। —दमक =
तडक-भडक। टट घाट।
—शर = भडकीला। —ग
= देदीप्यमान होना। दम
कना। प्रसिद्ध होना। यद्गी
पर होना। चौकना। मट से
निकल जाना। एक वारगी
उद हो उठना। मटकना।
चमकाना = साक करना।
चौकाना। मटकाना। चमकीला
= चमकदार। भडकीला।

चमगादड़—(पु० हि०) एक
जन्तु का नाम।

चमचम—(स्त्री० हि०) एक बँगला
मिठाई।

चमचा—(पु० क्रा०) चम्मच।
एक प्रकार को छोटी कलछी।
चिमटा।

चमडा—(पु० हि०) रथचा। चर्म।

चमत्कार—(पु० स०) धारचर्य।
करामाद।

चमत्कारी—(पु० स०) करा-
माती।

चमन—(पु० क्रा०) कुलवाड़ी।

चमर—(पु० स०) सुरा गाय को
पूँछ का घना चँवर।

चमरग—(स्त्री० हि०) चरखे
की गुदियों में लगाने की
चरती।

चमार—(पु० हि०) चमडे का
काम करनेवाली एक जाति-
विशेष जिसे रैदास भी कहते
हैं।

चमेली—(स्त्री० हि०) एक
फूल।

चमोटा—(पु० हि०) चमडे का
टुकड़ा जिस पर नाइ छूरे को
राइते हैं।

चमोटी—(स्त्री० हि०) चाबुक।
पतली छड़ी।

चम्मच—(पु० क्रा०) एक प्रकार
की हलकी कलछी।

चयन—(पु० स०) समूह।
चुनना।

चतुर्दशी

चतुर्दशी—(स्त्री० स०) चौदहवीं तिथि ।

चतुर्भुज—(वि० सं०) चार भुजाओं वाला । विष्णु । यह क्षेत्र जिसमें चार मुजाएँ और चार कोण हों ।

चतुर्वर्ग—(पु० स०) अथ, धर्म, काम और मोक्ष ।

चतुर्वर्ण—(पु० स०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

चतुर्वेदी—(पु० हि०) चार वेदों का जाने वाला पुरुष । ब्राह्मणों की एक जाति ।

चतुष्पद—(पु० स०) चौपाया ।

चतुष्पदी—(स्त्री० स०) चौपाई । चार पद का गीत ।

चना—(पु० हि०) चैती प्रसल का एक प्रधान अन्न जिसे बूट, घोखा और रहिला भी कहते हैं ।

चनार—(क्रा०) एक पेड़ ।

चन्दौं—(क्रा०) इस इतर । इतनी देर । अभी ।

चन्दन—(क्रा०) चन्दन । सद्ग ।

चन्दाल—(क्रा०) चाण्डाल । चूइदा । भगी ।

चपकन—(क्रा०) चँगरखा ।

चपकलरा—(तु०) सरावार की लड़ाई । गिरोह । भीड़ । कठिन स्थिति ।

चपडा—(पु० हि०) सारू की हुई लाय ।

चपत—(पु० हि०) तमाचा । मप्पड़ ।

चपरासी—(पु० फा०) प्यादा । अरदली ।

चपल—(वि० स०) चंचल । चालाक ।

चपलता—(स्त्री० स०) चंचलता । छटता ।

चपला—(स्त्री० स०) फुरतीली । विजली ।

चपाती—(स्त्री० हि०) रोटी ।

चपेटा—(पु० हि०) धक्का ।

चप्पल—(पु० हि०) एक प्रकार का जूता ।

चवाण—(क्रि० हि०) दाँतों से कुचलना ।

चमूतरा—(पु० क्रा०) चौतरा

चराचर—(वि० स०) जड़
और चेतन ।

चरित—(पु० स०) जीवनी ।
दृश्य । चरिताय = जो पूरा
उतरे । कृतकृत्य । चरित्र =
स्वभाव । कार्य्य । करनी ।
—नायक = वह प्रधान पुरुष
जिसके चरित्र का आधार
लेकर कुछ लिखा जाय ।
—दान = सदाचारी ।

चच—(पु० थ०) गिरजा घर ।

चर्चा—(स्त्री० स०) ययान ।
यातचीत ।

चर्चित—(वि० स०) लेप किया
हुया ।

चर्म—(पु० स०) चमड़ा ।
—कार = चमार ।

चर्ग्या—(स्त्री० स०) आचरण ।
कामकाज ।

चर्चाना—(क्रि० हि०) किसी
बात की प्रबल इच्छा होना ।
खम्ची आदि के टूटने का
शब्द । खुरकी और रखाई
के कारण किसी थग में तनाव
और हलकी पादा ।

चवण—(पु० स०) चबाना ।
चबेना ।

चर्चित—(वि० स०) चबाया
हुया । —चर्ण = (पु० म०)
किसी क्लिष्ट हुये काम या कही
हुई बात को फिर से करना
या कहना ।

चलती—(स्त्री० हि०) प्रभाव

चलतू—(वि० हि०) काम
चलाऊ । साधारण ।

चलन—(पु० हि०) गति । रस्म ।
रिवाज । प्रचार । जिसका
व्यवहार प्रचलित हो ।
चलना = गमन करना ।
निभना । चल विचल = जो
अपने स्थान से हट गया
हो । अच्यवस्थित । चलाऊ
- टिकाऊ । मज़बूत । चलान
= भेजा जाना । चलाना =
चलने के लिये प्रेरित करना ।
गति देना । गिमाना ।
चलायमान = चचल । चलने
वाला ।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार धाने

चर

चर—(पु० स०) दूत । शासिद ।
 चरघटा—(पु० हि०) हाथी के
 किये चारा काटनेवाला
 थादमी ।

चरु—(प्रा०) धाकाश ।
 चरखा—(पु० हि०) रहट ।
 गराही । ऋगडे बरोडे या
 भफट का काम ।

चरखी—(स्त्री० हि०) छोटा
 चरखा । (प्रा०) वह वस्तु
 जो बराबर घूमती रहे ।

चरख—(पु० स०) पैर । किमी
 छद्, रजोक या पद्य आदि
 का एक पद । चरखामृत =
 पैर का घोया हुआ जल ।
 चरखोटव = चरखामृत ।

चरगा—(पु० हि०) पशुओं
 का मैदान में घूम घूमकर
 चारा खाना । घूमना फिरना ।
 चरनी = वह नाद जिसमें
 पशुओं के खाने के लिये
 चारा दिग्य जाता है । चराना
 = पशुओं को चारा गिलाने
 के लिये मैदान में ले जाना ।
 चरवाहा = वह जो पशु चरावे ।

चरवाही = पशु चराने की मज
 दूरी । चराऊ = चरागाह । चरा
 गाह = वह मैदान जहाँ पशु
 चरते हैं । चरिदा = चरने
 वाला जीव, जैसे, गाय भैंस
 आदि । चरी = वह जमीन
 जो किमानों को पशुओं के
 चारे के लिये जमींदार से
 बिना खगान मिलती है ।
 चाजरे की त्रिस्म का एक
 पौधा, जिसे जानवर खाते हैं ।
 चरपरा—(वि हि०) स्वाद में
 तीक्ष्ण ।

चरवाँक, चरवाक—(वि०
 प्रा० चम) चाञ्जाक ।
 शोल ।

चरवी—(स्त्री० प्रा०) मज्जा ।
 चरमराना—(क्रि० हि०) जूते
 आदि से चरमर शब्द होना ।
 चरस—(पु० हि०) गाँजे के पेड़
 से निकला हुआ एक प्रकार
 का गोंद । मोट । पुर ।
 चरसा—(पु० हि०) मोट । पुर ।
 भूमि का एक परिमाण ।
 चराग—(प्रा०) दीपक ।

चराचर—(वि० स०) जड़
और चेतन ।

चरित—(पु० स०) जीवनी ।
रूप्य । चरितार्थ = जो पूरा
उतरे । कृतकृत्य । चरित्र =
स्वभाव । कार्य्य । करनी ।
—नायक = बड़े प्रथा पुस्तक
जिसके चरित्र का आधार
लेकर कृत्य लिखा जाय ।
—वान = सदाचारी ।

चच—(पु० अ०) गिरजा घर ।

चर्चा—(गी० स०) बयान ।
बातचीत ।

चर्चित—(वि० स०) लेप किया
हुआ ।

चर्म—(पु० स०) चमड़ा ।
—कार = चमार ।

चर्या—(स्त्री० स०) आचरण ।
कामकाज ।

चर्चाना—(क्रि० हि०) किसी
बात की प्रबल इच्छा होना ।
लम्बी आदि के टूटने का
शब्द । खुरकी और रुबाई
के कारण किसी अंग में तनाव
और हलकी पीड़ा ।

चवण—(पु० स०) चबाया ।
चबेना ।

चर्वित—(वि० स०) चबाया
हुआ ।—चवण = (पु० स०)
किसी किये हुये काम या कड़ी
हुई बात को फिर से करना
या कहना ।

चत्तती—(स्त्री० हि०) प्रभाव

चलत्—(वि० हि०) काम
चलाऊ । साधारण ।

चलन—(पु० हि०) गति । रस्म ।
रिवाज । प्रचार । जिमका
प्यवहार प्रचलित हो ।
चलना = गमन करना ।
निभना । चल विचल = जो
अपने स्थान से हट गया
हो । अथवस्थित । चलाऊ
—टिकाऊ । मजबूत । चलान
= भेजा जाता । चलाना =
चलने के लिये प्रेरित करना ।
गति देना । निभाना ।
चलायमान = चलल । चलने-
वाला ।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

चर—(पु० स०) दूत । कासिद ।
 चरकटा—(पु० हि०) हाथी के
 किये चारा घाटनेवाला
 आदमी ।
 चर्ख—(फ्रा०) आकाश ।
 चरखा—(पु० हि०) रहट ।
 गराडी । मगड़े बरेड़े या
 मकूट का काम ।
 चरखी—(स्त्री० हि०) छोटा
 चरखा । (फ्रा०) वह वस्तु
 जो परावर घूमती रहे ।
 चरख—(पु० स०) पैर । किमी
 छद्, रत्नोष्क या पद्य आदि
 का एक पद । चरखामृत =
 पैर का घोषा हुआ जल ।
 चरखोदक = चरखामृत ।
 चरगा—(पु० हि०) पशुओं
 का मैदान में घूम घूमकर
 चारा गाना । घूमना फिरना ।
 चरनी = वह नाद जिसमें
 पशुओं को गाने के लिये
 चारा दिया जाता है । चराना
 = पशुओं को चारा खिलाने
 के लिये मैदान में ले जाना ।
 चरवाहा = वह जो पशु चरावे ।

चरवाही = पशु चराने की मज
 दूरी । चराऊ = चरागाह । चरा
 गाह = वह मैदान जहाँ पशु
 चरते हों । चरिदा = घरने
 वाला जीव, जैसे, गाय भैल
 आदि । चरी = वह जमीन
 जो किसानों को पशुओं के
 चारे के लिये जर्मीदार स
 बिना लगान मिलती है ।
 चाजरे की क्रिस्म का एक
 पीघा, जिसे जानवर खाते हैं ।
 चरपरा—(वि हि०) स्वाद में
 तीक्ष्ण ।
 चरघाँक, चरघाक—(वि०
 फ्रा० चर्व) चालाक ।
 शोख ।
 चरखी—(स्त्री० फ्रा०) मज्जा ।
 चरमराना—(कि० हि०) धूल
 आदि से चरमर शब्द होना ।
 चरस—(पु० हि०) गाँजे के पेड़
 से निकला हुआ एक प्रकार
 का गोंद । मोट । पुर ।
 चरसा—(पु० हि०) मोट । पुर ।
 भूमि का एक परिमाण ।
 चरान—(फ्रा०) दीपक ।

धराचर—(रि० स०) लड़
: और चतन ।

चरित—(पु० स०) जीवनी ।
कृत्य । चरिताय = जो पूरा
वतरे । कृतकृत्य । चरित्र =
श्रमाय । कार्य्ये । करनी ।
—नायक = वह प्रधात पुरुष
जिसके चरित्र का आधार
लेकर कुछ लिखा जाय ।
—ज्ञान = सदाचारो ।

चच—(पु० श०) गिरजा घर ।

चर्चा—(स्त्री० स०) बयान ।
बातचीत ।

चर्चित—(रि० स०) लेप किया
हुआ ।

चर्म—(पु० स०) चमड़ा ।
—कार = चमार ।

चर्ग्या—(स्त्री० स०) आचरण ।
कामकाज ।

चर्ताना—(क्रि० हि०) किसी
बात की प्रबल इच्छा होना ।
लक्ष्मणा आदि के दूटन का
शब्द । खुरकी और रुग्नाई
के कारण किसी धग में तनाव
और हलकी पीड़ा ।

चचण—(पु० स०) चमना ।
चवेना ।

चर्वित—(वि० स०) चबाया
हुआ । —चरण = (पु० स०)
किसी त्रिपु हुथ फाम या कडी
दुई पात को फिर से करना
या कहना ।

चलती—(स्त्री० हि०) प्रभाय

चलन्—(वि० हि०) काम
चलाऊ । साधारण ।

चलन—(पु० हि०) गति । रस्म ।
रिवाज । प्रचार । जिसका
व्यवहार प्रचलित हो ।
चलना = गमन करना ।
निभाना । चल-विचल = जो
अपने स्थान से हट गया
हो । अग्र्यवस्थित । चलाऊ
= टिकाऊ । मजबूत । चलान
= भेजा जाना । चलाना =
चलने के लिये प्रेरित करना ।
गति देना । निभाना ।
चलायमान = चलत । चलने
वाला ।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

पर नीचे भाग जलाकर
भोजन पकाया जाता है ।

चूसना—(हि०) किसी पदार्थ
का रस खींच-खींचकर पीना ।

चूहा—(पु० हि०) मूस ।

चे—(स्त्री०) चिदियों के बोलने
का शब्द ।

चेंज—(पु० अ०) हवा बदलना ।
परिवर्तन । विनिमय ।

चेंबर—(पु० अ०) सभा-गृह ।
—आप्त कामस = व्यापारियों
की सभा ।

चेअर—(स्त्री० अ०) बैठने की
कुरसी ।—मैन = किसी सभा
या बैठक का प्रधान ।

चेक—(पु० अ०) वह रक्का या
आज्ञापत्र जो किसी बैंक के
नाम लिखा गया हो और
जिसके देने पर वहाँ से ठस
पर लिखी हुई रकम मिल
जाय ।

चेचक—(स्त्री० फ्रा०) शीतला या
माता नामक रोग । —रू =
वह जिसके मुँह पर शीतला
के दाग हों ।

चेत—(पु० हि०) ज्ञान । स्मरण ।
चेता = आत्मा । जीवधारी ।
चेतना = बुद्धि । स्मृति ।
विचारणा ।

चेतावनी—(स्त्री० हि०) सतक
होने की सूचना ।

चेत—(स्त्री० अ०) जंजीर ।

चेना—(पु० हि०) सौँचा की
जाति या एक अन्न ।

चेप—(पु० हि०) लमदार रस ।

चेपना—(क्रि० हि०) चिपकाना

चेला—(पु० हि०) शिष्य ।

चेष्टा—(स्त्री० स०) कोशिश
परिश्रम । इवाहिश ।

चेहरा—(पु० फ्रा०) मुखवा ।

चेहलुम—(पु० फ्रा०) मुहरम ।
चालीसवें दिन की रसम ।

चेंसलर—(पु० अ०) विश्व
विद्यालय का प्रधान अधि
कारी ।

चैत—(पु० हि०) वह चन्द्रमास
जिसकी पूणिमा को चित्रा
नक्षत्र पड़े ।

चैतन्य—(पु० स०) होशियार ।

एके प्रसिद्ध बंगाली वैष्णव धर्म प्रचारक ।

चैती—(स्त्री० हि०) रन्धी । एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है ।

चैन—(पु० हि०) आराम ।

चैला—(पु० हि०) कुहाड़ी से चीरा हुआ लकड़ी का टुकड़ा ।

चैली—(स्त्री०) लकड़ी का छोटा टुकड़ा जो छीलने या काटने से निकलता है ।

चैलोज—(पु० थ०) ललकार ।

चोंगा—(पु०) घाँस की खोराली नली । घेवकूरु ।

चोगी—(स्त्री० हि०) भायी में की वह लकी जिसके द्वारा होकर हवा निकलती है ।

चोच—(स्त्री० हि०) पक्षियों के मुख का अगला भाग । बुद्धू ।

चोचना—(क्रि० हि०) फाड़ना या तोचना ।

चोत्रा—(पु०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव पदार्थ ।

चोकर—(पु० हि०) घाटे का

घड़ अथवा जो छानने के बाद दलनी में रच जाता है ।

चोखा—(वि० हि०) अंग्रे । शुद्ध । इमानदार । तेज । मुरता ।

चोगा—(क्रा०) लम्बा अगस्त्या ।

चोचला—(पु० हि०) हाथ भाव । नपरा ।

चोट—(स्त्री० हि०) आघात । घाममय ।

चोटा—(पु० हि०) राय का वह पसेव जो कपड़े में रचकर दवाने या छानने से निकलता है । स्रोटा ।

चोटी—(स्त्री० हि०) शिखा । एक में गुँधे हुये स्त्रियों के सिर के बाल । शिरर ।

चोट्टा—(पु० हि०) चोर ।

चोव—(स्त्री० क्रा०) शामियाना सड़ा करने का बड़ा लम्बा । नगाडा था ताशा बजाने की लकड़ी । छड़ी । लकड़ी ।
—दार वह नौर जो हाथ में लकड़ी लेकर आगे आगे चले ।

घोर—(पु० म०) जो छिपकर
पराङ्मुखता का अपहरण करे ।
—दरवाजा = किसी मकान में
रखे की छोर या अलग देने
में बना हुआ गुप्त द्वार ।
घोरी = छिपकर किसी दूसरे
की वस्तु लने का काम ।

घोला—(पु० हि०) लम्बा और
ढाला-ढाला तुरता । शरीर ।

घाली—(स्त्री० स०) भँगिया ।
फसुकी ।

घादना—(वि० हि०) मड़फना ।
भीचषा होना । सतक होना ।

घाघियाना—(क्रि० हि०) चका
चौंध होना । दृष्टि मंद होना ।

घांरी—(स्त्री० हि०) चाटी या
बखी धाँधने की सोरी ।
सक्रेद पूँछ वाली गाय ।

घाव—(पु० हि०) चौखूँटी खुकी
झमी । शहर का बड़ा बाजार ।
मगल के अवसरों पर आँगन
में खवीर आदि की रेखाओं
से बना हुआ चौखूँटा चित्र ।
घार का समूह ।

घाकडी—(स्त्री० हि०) छल्लाग ।

घोषणा—(वि० हि०) साव
धान ।

घोषण—(वि० हि०) घोषणा ।
टीक ।

घोषा—(पु० हि०) काठ या
पत्थर का पाटा जिम पर रोटी
बेकते हैं । यह जिपा पुता
स्थान जहाँ हिन्दू लोग स्नान
प्राते और खाते हैं ।

घोषी—(स्त्री० हि०) ब्रह्मा ।
छोटा शय्या । रखवाली ।
रोटी बेकने का एक छोटा
घरना । —दार = पहरा
देनेवाला ।

घोषार—(वि० हि०) चौखूँटी ।

घोषट—(स्त्री० हि०) दहलीज़ ।

घोषिद—(क्रि० वि० हि०)
घारा तराफ़ ।

घोषा—(वि० हि०) लबाइ की
शोर के दोनों किनारों के
भीष फैला हुआ । —ई =
लम्बाई के दोनों किनारों का
फैलाव ।

घोषरा—(स्त्री०) चयूतरा ।

घोषाल—(पु० हि०) शृवग

- का एक ताल । एक प्रकार का गीत ।
- चौथा—(पि० हि०) क्रम में तीसरे के बाद पढ़नेवाला शक । —ई=चौथा भाग । —चौथिया=वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे ।
- चौधराना—(पु० हि०) चौधरी का पद । वह धन जो चौधरी को उसके कामों के बदले में मिले ।
- चौधरी—(पु० हि०) किली जाति, समाज या मडली का मुखिया ।
- चौपट—(वि० हि०) नष्ट भ्रष्ट । बरवाद ।
- चौपड—(स्त्री० हि०) चौसर नामक खेल ।
- चौपाई—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का छन्द ।
- चौपाल—(पु० हि०) खुली हुई घैठक ।
- चौवदी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का छोटा पुस्तक अंग । राजस्व ।
- चौधे—(पु० हि०) माहियों की एक जाति ।
- चौबोला—(पु० हि०) एक मात्रिक छन्द ।
- चौभड—(स्त्री० वि०) वह चौडा, चिपटा और गह्वेदार दाँत जिससे आहार कूचते या चबाते हैं ।
- चौमजिला—(वि० हि०) चार मरातिब या खडोंवाला मकान ।
- चौमासा—(पु० हि०) वर्षा-काल के चार महीने ।
- चौमुहानी—(स्त्री० हि०) चौराहा ।
- चौरान्न—(वि० हि०) समथल ।
- चौरा—(पु० हि०) च्यूतरा । वह बैल जिसकी पूँछ सफ़ेद हो ।
- चौराइ—(स्त्री० हि०) चौजाइ नाम का साग ।
- चौसर—(पु० हि०) चौपद ।
- चौहद्दी—(स्त्री० हि०) चारों ओर की सीमा ।
- चौहान—(पु० हि०)

के अन्तर्गत चित्रियों की एक
प्रसिद्ध शाखा ।

च्युत—(वि० सं०) पतित ।
गिरा हुआ ।

छ

छ

छटपटाना

छ—हिन्दी वर्णमाला में चत्वार
का दूसरा व्यंजन । इसके
उच्चारण का स्थान तालु है ।

छँटा—(क्रि० हि०) अलग
होना । छितराना । साथ
छोड़ना ।

छँटा—(वि० हि०) घुना हुआ ।
मराहूर ।

छंद—(पु० सं०) वह वाक्य
जिसमें वर्ण या मात्रा की
गणना के अनुसार चिराम
आदि का नियम हो ।
छदावद्ध = जो पद्य के रूप
में हो । इदोभग = छंद
रचना का एक दोष ।

छन्डा—(पु० सं०) बौलगाड़ी ।
बोरु जादन की दुपहिया
गाड़ी जिसे पैल खींचने हैं ।

छक्का—(क्रि० सं०) लुप्त होना ।
खा पीकर खपाना । मूल धनना ।

छकाछक—(वि० हि०) खपाया
हुआ । मरा हुआ ।

छक्का—(पु० सं०) छ का
समूह या वह यस्तु जो छ
अवयवों से बनी हो । जूए
का एक दाँव जिसमें कौड़ी
या चित्ती फँकने से छ
कौड़ियाँ चित पड़ें ।

छहँदर—(पु० सं०) चूहे की
जाति का एक जंतु । एक
थातशबाज़ी ।

छज्जा—(पु० हि०) झोलती ।
छाजरा या छत का वह भाग
जो दीवार के बाहर निकला
रहता है ।

छटकना—(क्रि० हि०) सट
फना । दाँव से निकल जाना ।
वेग से अलग हो जाना ।

छटपटाना—(क्रि० अनु०)
तड़पना । बेचैन होना । धधक

या पीड़ा के कारण हाथ-पैर
पटकाना ।

छटाँक—(स्त्री० हि०) पाय भर
का चौथाई । एक तौल जो
सेर या सोलहवाँ भाग है ।

छटा—(स्त्री० हि०) प्रकार ।
फलक । शोभा । छवि ।

छठा—(वि० हि०) गिाती के
क्रम से जिसका स्थान छ
पर हो ।

छड—(स्त्री० हि०) धातु या
लकड़ी आदि का लया पतला
बड़ा डुबड़ा ।

छडा—(पु० हि०) लच्छा ।
पैर में पहाने का चूड़ी के
आकार का एक गहना ।

छडी—(स्त्री० हि०) पतली लाठी ।
सीधी पतली लकड़ी । —दार
= छड़ीवाला । चोपदार ।

छत—(स्त्री० हि०) पाटा ।
घर की दीवारों के ऊपर की
पटिया ।

छतरी—(स्त्री० हि०) छाता ।
राजाओं की चिता या साधु
महारमाओं की समाधि के

स्था पर स्मारक रूप से
बना हुआ छज्जेशर मठप ।

छतियाना—(क्रि० हि०) छाती
के पास खे जाना । चट्टक
सानना ।

छत्ता—(पु० हि०) मधुमक्खी,
भिड़ आदि के रहने का घर ।

छत्र—(पु० स०) राजाओं का
छाता जो राश्रिद्वों में से है ।
—पति=राजा । छत्र का
अधिपति । —भग=राजा का
गाश ।

छन्न—(पु० स०) छिपाव ।
बहाना । छल । कपट ।
—वेश=बदला हुआ वेश ।

छन्नछानना—(क्रि० अनु०) किसी
तपी धातु पर पानी आदि
पडने पर छन्न-छन्न शब्द
होना ।

छप—(स्त्री० अनु०) पानी में
किसी वस्तु के गिरने का
शब्द ।

छपटना—(क्रि० हि०) चिपकना ।
सटना ।

छपटाना

- छपटाना—(क्रि० हि०) चिम
राना । आक्षिप्त करना ।
- छपना—(क्रि० अ० हि०) छापा
जाना । मुद्रित होना । शीतला
का टीका लगाना ।
- छपाना—(क्रि० हि०) छापने
का काम कराना । मुद्रित
कराना । शीतला का टीका
लगवाना ।
- छप्पय—(पु० हि०) एक छद
जिसमें छ चरण होते हैं ।
- छप्पर—(पु० हि०) छाजन ।
छान ।
- छवीला—(वि० हि०) सुहावना ।
सुंदर ।
- छव्योस—(वि० हि०) जो
गिनती में बीस और छ हो ।
- छमडम—(स्त्री० अनु०) नूपुर
या घुँघरू आदि का शब्द ।
पानी बरसने का शब्द ।
- छमाडम—(स्त्री० अनु०) गहनों
के बजने का शब्द । पानी
बरसने का शब्द ।
- छरछराना—(क्रि० हि०) नमक
या चार जगने से शरीर का

घाव या छिले हुए स्थान में
पीटा होना । छरछराहट =
घाव में नमक आदि लगाने से
उपत्र पीड़ा ।

छल—(पु० स०) ठगपन ।
बहाना । कपट । —छद =
चासबाज़ी । कपट का
व्यवहार । —ना = किमी को
धोखा देना । धोखा । छल ।
छली = कपटी । धोखेबाज़ ।

छलकना—(क्रि० अ०) उम
ठना । बाहर प्रकट होना ।
छलकागा = किसी यंत्रन में
रखे जल को हिला-डुलाकर
बाहर उड़ाखना ।

छलाँग—(स्त्री० हि०) कुदान ।
फलाँग । चौकड़ी ।

छलावा—(पु० हि०) भूत प्रेत
आदि की छाया जो एक बार
दिखाई पढ़कर फिर स्र से
अदृश्य हो जाती है ।

छल्ला—(पु० हि०) मुँदरी ।
छरजेदार = जिसमें छरले लगे
हों ।

छवाई—(स्त्री० हि०) छाने का काम । छाने की मजदूरी ।

छवि—(स्त्री० सं०) शोभा । वाति । घमक ।

छाँट—(स्त्री० हि०) छाँटने की क्रिया । काटने या कतरने की क्रिया । कैं । छाँटना=काटकर अलग करना । छिन्न भिन्न करना ।

छाँदना—(क्रि० हि०) जपड़ना । कसना । बाँधना ।

छाजन—(पु० हि०) छप्पर का ढाँचा ।

छाता—(पु० हि०) यही छतरी ।

छाती—(स्त्री० हि०) सीना । वक्षस्थल ।

छात्र—(पु० सं०) विद्यार्थी ।

छात्रवृत्ति—(स्त्री० सं०) वज्रीक्रा । स्कालरशिप ।

छान—(स्त्री० हि०) छप्पर ।

छानना—(क्रि० हि०) किन्ही चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े के पार निकासना ।

छानवीन—(स्त्री० हि०) लॉच पड़ताल । गहरी खोज ।

छाना—(क्रि० हि०) छानना । फैलाना ।

छाप—(स्त्री० हि०) निशा । मुहर । —ना=मुद्रित करना ।

छापा—(पु० हि०) मुहर । —खाना=प्रेस । मुद्रणालय ।

छाया—(स्त्री० सं०) साया । —दान=एक प्रकार का दान । —पथ=आकाश गगा ।

छाला—(पु० हि०) चमड़ा । फफोला ।

छावनी—(स्त्री० हि०) छप्पर । ढेरा । पड़ाव । सेना के ठहरने का स्थान ।

छिउँकी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की छोटी चींटी ।

छिछोरा—(पु० हि०) थोड़ा । नीच प्रकृति का । —पन=नीचता ।

छिटकना—(क्रि० हि०) बखेरना

छपटाना

- छपटाना—(क्रि० हि०) चिम
थाना । थालिङ्गन करना ।
- छपना—(क्रि० थ० हि०) छापा
जाता । मुद्रित होना । शीतला
का टीका लगाना ।
- छपाना—(क्रि० हि०) छापने
का काम कराना । मुद्रित
कराना । शीतला का टीका
लगवाना ।
- छप्पय—(पु० हि०) एक छद
जिसमें छ चरण होते हैं ।
- छप्पर—(पु० हि०) छावन ।
छान ।
- छबीला—(वि० हि०) सुहावना ।
सुंदर ।
- छब्वीस—(वि० हि०) जो
गिनती में बीस और छ हो ।
- छमछम—(स्त्री० अनु०) नूपुर
या घुँघरू आदि का शब्द ।
पानी बरसने का शब्द ।
- छमाछम—(स्त्री० अनु०) गहनों
के बजने का शब्द । पानी
बरसने का शब्द ।
- छरछराना—(क्रि० हि०) नमक
या चार लगाने से शरीर का

घाव या छिले हुए स्थान में
पीटा होना । छरछराह =
घाव में नमक आदि लगाने से
उत्पन्न पीडा ।

- छल—(पु० स०) ठगपन ।
बहाना । फट । —छद =
वालभाङ्गी । फट का
व्यवहार । —ना = किसी को
धोखा देना । धोखा । छल ।
छली = फपटी । धोखेबाज़ ।
- छलकना—(क्रि० थ०) उम
डना । बाहर प्रकट होना ।
छलकाता = किसी वस्तु में
रस्से जल को दिला डुलाकर
बाहर उछालना ।
- छलाईंग—(स्त्री० हि०) कुदान ।
फलाईंग । चौकड़ी ।
- छलात्रा—(पु० हि०) भूत प्रेत
आदि की छाया जो एक बार
दिखाई पढ़कर फिर कभी
अदृश्य हो जाती है ।
- छरला—(पु० हि०) सुँदरी ।
छरलेदार = जिसमें छपले लगे
हों ।

छवाई—(स्त्री० हि०) छाने का काम । छाने की मज़दूरी ।

छवि—(स्त्री० स०) शोभा । काति । चमक ।

छाँट—(स्त्री० हि०) छाँटने की क्रिया । काटने या कतरने की क्रिया । क़ै । छाँटना=काट कर अलग करना । छिन्न भिन्न करना ।

छाँदना—(क्रि० हि०) जकड़ना । फसना । बाँधना ।

छाजन—(पु० हि०) छप्पर का ढाँचा ।

छाता—(पु० हि०) बड़ी छतरी ।

छाती—(स्त्री० हि०) सीना । बक्षस्थल ।

छात्र—(पु० स०) विद्यार्थी ।

छात्रवृत्ति—(स्त्री० म०) बज़ीरुआ । स्काज़रशिप ।

छान—(स्त्री० हि०) छप्पर ।

छानना—(क्रि० हि०) किसी चूर्ण या सरस पदार्थ के महीन कणों के पार निकाशना ।

छानधीन—(स्त्री० हि०) जाँच-पड़ताल । गहरी खोज ।

छाना—(क्रि० हि०) तानना । फैलाना ।

छाप—(स्त्री० हि०) निशान । मुहर । —ना=मुद्रित करना ।

छापा—(पु० हि०) मुहर । —खाना=प्रेस । मुद्रणालय ।

छाया—(स्त्री० स०) साया । —दान=एक प्रकार का दान । —पथ=आकाश-गंगा ।

छाला—(पु० हि०) चमड़ा । फफोला ।

छावनी—(स्त्री० हि०) छप्पर । डेरा । पदार्थ । सेना के ठहरने का स्थान ।

छिड़की—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की छोटी चोंटी ।

छिछोरा—(पु० हि०) थोछ्छा । नीच प्रकृति का । —पन=नीचता ।

छिटकना—(क्रि० हि०) बखेरना

- ना=लगाव में न रहना ।
दूर होना ।
- छूत—(स्त्री० हि०) स्पर्श ।
- छूना—(क्रि० हि०) स्पर्श करना ।
- छेकना—(क्रि० हि०) स्थान लेना । जगह लेना ।
- छेड—(स्त्री० हि०) किसी को चिढ़ाने या लगाने का क्रिया ।
- छेद—(पु० स०) सुराज ।
—ना=वेधना ।
- छेना—(पु० हि०) पनीर । फटे दूध का सोया ।
- छेनी—(स्त्री० हि०) टाँकी ।
- छेल छिकनियाँ—(पु० देश०) शौकीन ।
- छैल छवीला—(पु० देश०) भाँका ।
- छैला—(पु० हि०) शौकीन । सजीला ।
- छोक्डा—(पु० हि०) लड़का ।
—पन=लड़कपन । छिछोरा पन । छोक्डी=लड़की ।
- छोटा—(वि० हि०) लघु । —पन=छोटाइ । लड़कपन ।
- छोटी इलाइची—(स्त्री० हि०) सकुंद या गुजराती इलायची ।
- छोडना—(क्रि० हि०) पकड़ से अलग करना ।
- छोप—(पु० हि०) मोटा छेप ।
—ना=गाढ़ा छेप करना ।
- छोर—(पु० हि०) किसी वस्तु का किनारा ।
- छोलदारी—(स्त्री० हि०) छोटा तबू ।

ज—चवर्ग का तीमरा अक्षर ।
इसका उच्चारण तालु से
होता है ।

जकशान—(पु० थ०) वह स्थान
जहाँ दो या अधिक रेलवे
लाइनें मिली हों । वह स्थान
जहाँ दो रास्ते मिले हो ।
सगम ।

जग—(स्त्री० फ्रा०) लड़ाई ।
युद्ध । लोहे का सुरचा ।

जगम—(वि० स०) चलने-
फिरनेवाला । चलता फिरता ।

जगल—(पु० स०) वन । रेगि
स्तान ।

जंगला—(पु० पुर्त०) कटहरा ।
बादा । चौखट या खिड़की
जिसमें जाबी या छड़ लगी
हो ।

जगली—(वि० हि०) जगल में
मिलने या होनेवाला । जगल
सम्बन्धी । जगल में रहने-
वाला ।

जगी—(वि० फ्रा०) यद्वा ।

जघा—(स्त्री स०) जाँघ ।

जँचा—(वि० हि०) सुपरीक्षित ।

जजाल—(पु० हि०) झूठ ।
उलझन । —जजाली =
झगड़ालू ।

जजीर—(फ्रा०) शृङ्खला,
साँकल । जजीरा = एक
प्रकार की सिलाई जो जजीर
की तरह मालूम पड़ती है ।
लहरिया ।

जटिलमेन—(पु० थ०) सम्य
पुरूप । भलामानुस ।

जतरमतर—(पु० हि०) जादू
थेना ।

जँतसार—(स्त्री० हि०) जाँता
गाड़ने का स्थान ।

जता—(पु० हि०) तार खींचने
का औज़ार ।

जत्री—(पु० हि०) पत्रा । पचाग ।

जद्—(पु० फ्रा०) पारसियों का
धर्म ग्रन्थ ।

जघोरी नीवू

- जघोरी नीवू—(पु० हि०) एक प्रकार का खटा नीवू ।
- जजुक्—(पु० हि०) गीन्दा ।
- जजूरक—(स्त्री० प्रा०) छोटी तोप जो प्राय ऊँटों पर लादी जाती है ।
- जजूरची—(पु० प्रा०) तोपची ।
- जजुरा—(पु० हि०) खल निस पर तोप चड़ाई जाती है ।
- जँभाइ—(स्त्री० हि०) उबासी ।
- जँभाना—(क्रि० हि०) जँभाइ लेना ।
- जामीरी—(हि०) एक प्रकार का खटा नीवू ।
- जइ—(स्त्री० हि०) जी की जाति का एक अन्न ।
- जइफ—(वि० अ०) बुद्धा ।
—जइप्री—(प्रा०) बुद्धा ।
- जक—(प्रा०) धरा देना ।
दोपारोपण करना ।
- जकड—(स्त्री० हि०) बसकर बाँधना । —ना=बड़ा बाँधना ।
- जकात—(स्त्री अ०) दान ।
खैरात । चुंगी ।

- जखीरा—(पु० अ०) समूह ।
ढेर ।
- जरम—(अ०) घाव ।
- जग—(पु० हि०) दुनिया ।
- जगजगाना—(क्रि० अ०)
चमकना ।
- जगत्—(पु० स०) ससार । पूर्व के ऊपर चारों तरफ बना हुआ चबूतरा । —सेठ=बहुत बड़ा धनी महान्न निसकी साल मसार में हो । जगदाधार=परमेश्वर । जगदीश्वर=परमेश्वर । जगद्गुरु=अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष । शंकराचार्य की गद्दी पर के महन्तों की उपाधि । जगद्गामी=दुर्गा की एक मूर्ति । जगन्नाथ=ईश्वर विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के अतगत पुनामक स्थान में स्थापित है । जगन्निधता=परमात्मा ।
- जगना—(क्रि० हि०) नींद उठना ।

जगमग, जगमगा—(वि० अ०) प्रकाशित । चमकीला । जगमगाना = दमकना । जगमगा दट = चमक ।

जगवाना—(क्रि० हि०) सोते से उठवाना ।

जगह—(स्त्री० हि०) स्थान ।

जगात—(पु० हि०) महसूल ।

जगाती—(पु० हि०) वह जो कर वसूल करे ।

जगाना—(क्रि० स० हि०) शैतन्य करना । सुखगाना ।

जघन्य—(वि० स०) नीच । निरुद्ध ।

जघा—(स्त्री० क्रा०) प्रसूता स्त्री ।

जज—(पु० थ०) न्यायाधीश ।

जजमेंट—(पु० थ०) फैसला । निर्णय ।

जजा—(अ०) प्रतिफल । बदला ।

जजिया—(पु० अ०) एक प्रकार का कर ।

जजी—(स्त्री० हि०) जज की थदालत ।

जजीरा—(पु० क्रा०) टापू । द्वीप ।

जटना—(क्रि० स० हि०) टगना ।

जटल—(स्त्री० हि०) बकवास ।

जटा—(स्त्री० स०) ठलके हुए घड़े-बड़े बाल ।

जटित—(वि० स०) जड़ा हुआ । गरित = शस्यन्त कटिन । जटाधारी ।

जठर—(पु० स०) पेट । जठर-विन = पेट का वह गरमी या अग्नि जिससे अन्न पचता है ।

जड—(वि० स०) अचेतता । मूर्ख । —ता = अचेतता । —त्व = अचेतन्य ।

जडहन—(पु० हि०) एक प्रकार का धान ।

जडारू—(वि० हि०) पचीकारी किया हुआ ।

जडित—(वि० हि०) जो किसी चीज़ में जड़ा हुआ हो ।

जडी—(स्त्री० हि०) वृक्ष ।

जताना—(क्रि० स० हि०) बत जाना ।

जत्या—(पु० हि०) मुट ।

जद—(क्रा०) चोट मारना । मारना ।

जदल

- जदल—(ध०) युद्ध । झगड़ ।
 जदा—(क्रा०) मारा हुआ ।
 खोट खाया हुआ ।
 जदीद—(वि० ध०) नया ।
 जन—(पु० स०) लोग । जन—
 (क्रा०) खी । धम पकी ।
 जन-सरया—(घी० स०) आ
 यादी ।
 जनक—(पु० स०) जन्मदाता ।
 जनखर्चों—(क्रा०) टुट्टी ।
 जनखा—(वि० क्रा०) हीजड़ा ।
 नपुसक ।
 जाता—(घी० सं०) सय-साधा
 रण । पबलिक ।
 जना—(क्रि० स० हि०) प्रसन्न
 करना । जननी=माता ।
 जानेन्द्रिय—(घी० स०) योनि ।
 जापद्—(पु० स०) देश । देश-
 वासी ।
 जनप्रिय—(वि० स०) सबप्रिय ।
 जनयिता—(पु० हि०) जन्मदाता ।
 पिता । जनयित्री=जन्म देने
 वाली । माता ।
 जनरत्न—(पु० ध०) अंग्रेजी सेना
 का सेनापति ।

- जगरव्य—(पु० सं०) कियदंती ।
 वदामा । शोर ।
 जायरी—(घी० ध०) अंग्रेजी
 साल का पहला महीना ।
 जनवास—(पु० हि०) वह
 जगह जहाँ कन्या-पक्ष की
 ओर से परातियों के टहरने
 का प्रबंध हो ।
 जनश्रुति—(घी० सं०) अक्रवाह ।
 जनस्थान—(पु० स०) ददकान ।
 जना—(घी० स०) पैदाइश ।
 जनाजा—(पु० ध०) धर्मी ।
 ताबूत ।
 जनारखाना—(पु० फा०) छियों
 के रहन का घर । धत-पुर ।
 जनाना—(क्रि० हि०) मालूम
 कराना ।
 जनाना—(वि० क्रा०) छियों
 का । नामद । निर्बल । अत-
 पुर ।
 जनानापन—(पु० क्रा०) मेहरा-
 पन । स्त्रीत्व ।
 जनाद—(पु० ध०) महाशय ।
 —थाली=मान्यतर ।
 जनादन—(पु० स०) विष्णु ।

जनाश्रय—(पु० सं०) मकान ।
 जनित—(वि० सं०) जन्मा हुआ ।
 जनी—(स्त्री० हि०) दासी । स्त्री ।
 जन्माई हुई ।
 जनूब—(अ०) दक्षिण दिशा ।
 जनेऊ—(पु० हि०) यज्ञोपवीत ।
 जनेत—(स्त्री० हि०) घात ।
 जनेवा—(पु० हि०) लकड़ी आदि
 में बनी हुई लफोर ।
 जन्द—(क्रा०) पारसियों की
 धर्म-युक्तक ।
 जन्नत—(अ०) स्वर्ग । विद्विस्त ।
 जन्म—(पु० सं०) उत्पत्ति ।
 —कुटुंबी = ज्यातिप के अनु-
 सार वरु चक्र जिससे किसी के
 जन्म के समय में ग्रहों की
 स्थिति का पता चले । —तिथि
 = जन्म दिन । वर्ष-गाँठ ।
 —दिन = उप गाँठ । —पत्र
 = जन्म पत्री । जीवन चरित्र ।
 —भूमि = जन्म स्थान । —
 राशि = वह लग्न जिसमें
 किसी के उत्पन्न होने के समय
 चन्द्रमा उदय हो । —स्थान
 = जन्म भूमि । माता का

गम । जन्मांध = जन्म का
 धरा । जन्माष्टमी = भादों की
 वृश्वाष्टमी ।

जप—(पु० सं०) किसी मंत्र या
 पाप्य का धीरे धीरे पाठ करना ।
 —तप = सभ्या । पूजा ।
 —ता = किसी वाक्य या
 वाक्यपारा के धरावर लगातार
 धीरे धीरे देर तक कहना या
 दोहराना । —माला = वह
 माला जिसे लेकर लोग जप
 करते हैं । —यज = जप ।

जरुर—(अ०) विजय । पनेह ।
 जफा—(स्त्री० क्रा०) सगती ।
 जुरम । —कश = सहन-
 शील । मेहनती ।

जफील—(स्त्री० हि०) सीटी ।
 जव—(क्रि० वि० हि०) जिस
 समय ।

जवडा—(पु० हि०) मुँह में
 दोनों धोर ऊपर नीचे की
 धे हड्डियाँ जिनमें ढाढ़े जड़ी
 रहता है ।

जघर—(वि० हि०) यज्ञवान ।
 मज्जवृत ।

जबरदस्त—(वि० क्रा०) बली ।

इड । जबरदस्ती = अत्याचार ।

बल पूर्वक । जबरन = बलात् ।

जबरदस्ती ।

जबरील—(अ०) इसाई और इसलाम मज़हब में एक फिरिते का नाम ।

जच्चा—(अ०) प्रसूता । जिस स्त्री के बच्चा पैदा हुआ हो ।

जबह—(पु० अ०) हिंसा । घघ ।

जवाई—(स्त्री० क्रा०) जीम । —

दराज़ = बंद-बंदकर बाँटने करने वाला । —दराज़ा =

धृष्टता । ज़वान = जीम ।

भापा । बोली । —बदी =

मौन । ज़वानी = मौखिक ।

कथित । पहना ।

जबून—(वि० पु०) । घुरा । बेजुम्हूर ।

जब्त—(अ०) कोई वस्तु किसी के अधिकार से ले लेना ।

ज़ब्ती = ज़ब्त होने की क्रिया ।

जब्थार—अत्याचारी । गुरुर करनेवाला ।

जब्र—(पु० अ०) ज़्यादाती । सक्ती ।

जमघट—(पु० हि०) बहुत से मनुष्यों की भीड़ । ठट्ट ।

जमशेद—(क्रा०) फारस के एक बादशाह का नाम जो हकीम था ।

जमहर—(अ०) प्रजातंत्र शासन ।

जमाअत—(अ०) गिरोह । दल । समूह ।

जमाइ—(पु० हि०) दामाद ।

जमजम—(अ०) कावे के पास एक कुर्छा है ।

जमा—(क्रा०) एकत्र । —जर्घ = धाय और व्यय । —जया = धन-संपत्ति ।

जमात—(स्त्री० क्रा०) बहुत से मनुष्यों का समूह । दरजा ।

जमाल—(अ०) शरीर और मन दोनों की सुन्दरता ।

जमादात—(अ०) प्राणहीन पदार्थ पत्थर, मिट्टी आदि ।

जमादार—(पु० क्रा०) कई सिपाहियों या पहरेदारों आदि

का प्रधान । —दारी = जमा
दार का पद ।

जमानत—(स्त्री० अ०) वह
जिम्मेदारी जो ज़रानो कोई
कागज लिखकर दायवा कुछ
रूपया जमा करके ली जाती
है । —नामा = वह कागज
जो जमानत करनेवाला जमा
नत के प्रमाण-स्वरूप लिख
देता है ।

जमाना—(क्रि० हि०) किसी तरल
पदार्थ को ठोस बनाना ।

जमाना—(पु० फ्रा०) समय ।
युग । वक्त । —साज =
अपना मतलब साधने के
लिये दूसरों को प्रसन्न रखने
वाला । व्यवहार कुशल ।
—साजी = अपना मतलब
साधने के लिये दूसरों को
प्रसन्न रखना ।

जमावदी—(स्त्री० फा०) पटवारी
का एक कागज जिसमें असा
मियों के नाम और उनसे
मिलने वाले लगान की रकमें
लिखी जाती हैं ।

जमामार—(वि० हि०) अनुचित
रूप से दूसरों का धन दबा
रखने या ले लेने वाला ।

जमाव—(पु० हि०) इकट्ठा
होना । भीड़ । —दा =
भीड़ ।

जमीकद—(पु० फा०) सुरन ।

जमींदार—(पु० फा०) भूमि का
स्वामी । —दारी = जमींदार
का हक या स्वत्व ।

जमींदोज—(वि० फा०) जो
गिरा, तोड़ या उखाड़कर
जमीन के बराबर कर दिया
गया हो । एक प्रकार का
खेमा ।

जमीन—(स्त्री० फा०) पृथ्वी ।

जमीमा—(पु० अ०) छोड़पत्र ।
परिशिष्ट ।

जमीयत—(अ०) आदमियों का
गिराह । सभा ।

जमुर्द—(पु० फा०) पत्ता नामक
रत्न ।

जमुर्दी—(वि० फा०) नीलापन
के लिये हुए हरा रंग ।

जमोग—(पु० हि०) तसदीक ।

जमोगना—(कि० हि०)
हिमाचल पर्वतों की जाँच
करना ।

जयती—(स्त्री० स०) विजय
दिनी । यथा ।

जय—(स्त्री० स०) जीत । —पत्र
= विजय-पत्र । —माल = वह
माला जिस स्वयंवर के समय
कन्या अपने वर हुए पुरुष के
गले में डालती है । वह माला
जो, विजय का विजय पात्रों
पर पहनाई जाय । —श्री =
पियाय । एक प्रकार की
रागिनी । —स्तम = वह स्तम्भ
जो विजयी राजा किसी देश
का विजय करने के उपरान्त,
विजय के स्मारक-स्वल्प बन
वाता है ।

जर—(पु० प्रा०) धन । स्वर्ण ।
—गर = (फा०) सेनार ।
—कम, जाकसी = जिस पर
रौने के तर आदि लगे हों ।

जरई—(स्त्री० हि०) धान आदि
के ये बीज जिनमें थरु
निकले हों ।

जरग—(पु०) आदिमियों का
गिरोह । सम्भल ।

जरखेज—(वि० फा०) रफ-
जाऊ ।

जरठ—(वि० म०) घृष्ट ।

जरतुपत—(फा०) पारमियों के
धर्म प्रवर्तक । जस्तुरत ।

जरदोज—(पु० फा०) जरदोजी
का काम करनेवाला । —जर
देजी = एक प्रकार की दस्त-
धारी जो कपड़े पर सलमें
सितारे आदि से की जाती है ।

जरनल—(पु० थ०) साक्षिक
पत्र । जरनलिस्ट = पत्रधार ।
जरनलिजम = पत्र-संग्रहादन-
कला ।

जरव—(स्त्री० थ०) आघात ।
गुणा ।

जरवफ्त—(पु० फा०) बेल-
घुटेदार एक रेशमी कपड़ा ।

जरमन—(पु० थ०) जरमनी
का देश का निवासी । जरमनी
देश की भाषा । —सिज-
यर = एक प्रकार की चाँदी ।

जरमनी—मध्य यूरोप का एक प्रसिद्ध देश ।

जरर—(पु० अ०) हानि ।
चोट ।

जरा—(स्त्री० स०) बुढ़ापा ।
—प्रस्त = वृद्ध ।

जरा—(वि० अ०) थोड़ा ।

जराफत—(अ०) बुद्धिमान्नी ।
सज्जनता ।

जरा—(अ०) कण ।

जरायु—(पु० स०) गर्भाशय ।

जरिया—(पु० अ०) सहारा ।
वसीना ।

जरी—(स्त्री० फा०) सोने के तारों आदि से बना हुआ काम ।

जरीफ—(पु० अ०) मसखरा ।
परिहास करनेवाला ।

जरीब—(स्त्री० फा०) एक माप जिससे भूमि नापी जाती है ।

जरूर—(क्रि० वि० अ०) अवश्य ।
जरूरत = आवश्यकता ।

जरूरी = आवश्यक ।

जर्कवर्क—(वि० प्रा०) चमकीला ।

जर्जर—(वि० स०) जीय ।

' जर्जरित = जीर्ण । पुराना ।

जर्द—(वि० प्रा०) पीला ।

—थालू = एक मेवा जिसे सुखा लेने पर सुधानी कहते हैं । जर्दा = (फ्रा०) एक

प्रकार का व्यजन । तम्बाकू ।

जर्दी = पीलापन ।

जर्दा—(पु० अ०) थणु ।

जर्दाह—(पु० अ०) शस्त्र चिकित्सक । सर्जन । —जर्दाही = शस्त्र चिकित्सा ।

जल—(पु० स०) पानी ।

—तना = बलेवा । —चर = जल जन्तु । —जन्तु = जल-चर ।

—तरंग = एक प्रकार का धारा । —पान =

पलेवा । —प्रदान = तपण ।

—प्रपात = झरना । —प्लानन = बाढ़ । —थान = नाव ।

—सेना = नौ सेना । समुद्री सेना । —सनापति = जल या

नौ सेना का प्रधान । नौ-सेनापति । जलाजलि = पानी

भरी थँडुली । तपण ।

जलजला—(पु० क्रा०) भूकण ।

जलन—(स्त्री० हि०) दाह ।

जलना—(क्रि० अ० हि०)
यलना ।

जलवा—(अ०) वैभव ।

जलसा—(पु० अ०) उत्सव ।
भभा ।

जलादत—(अ०) चुस्ती ।
घालाकी । जवामर्दों ।

जलाना—(क्रि० हि०) प्रज्वलित
करना । किसी के मन में
इर्ष्या या द्वेष आदि उत्पन्न
करना ।

जलालत—(अ०) बुद्धिगर्भी महत्त्व ।

जलायतन—(वि० अ०) निवा
मिष्ठ ।

जलायतनी—(स्त्री० अ०) देश
निकाला ।

जलाशय—(पु० स०) वह स्थान
जहाँ पानी जमा हो ।

जलील—(वि० अ०) अपमानित ।

जलूस—(पु० अ०) समारोह ।

जलेबी—(स्त्री० क्रा०) एक प्रकार
की मिठाई । एक प्रकार की
आतिशबाजी ।

जलोदर—(पु० स०) एक रोग ।

जल्द—(क्रि० वि० अ०) शीघ्र ।

—बाज़ = बहुत जल्दी करने
वाला । जल्दी = शीघ्रता ।

जल्पना—(क्रि० स०) व्यर्थ
यकवाद करना ।

जल्लाद—(पु० अ०) घातक ।

जवाँमर्द—(वि० क्रा०) शूरवीर ।
जवाँमर्दों = वीरता ।

जवापार—(पु० हि०) एक प्रकार
का नमक ।

जवान—(वि० क्रा०) युवा ।
युवक । जवानी = युवावस्था ।

जवाद—(पु० अ०) उत्तर ।
—तलय = जिसके मध्य में

समाधान कारक उत्तर माँगा
गया हो । —दावा = पद उत्तर

जो वादी के नियेदन पर के
उत्तर में प्रतिवादी लिखकर

अदालत में देता है । —देह
= उत्तर-दाता । —देही =

उत्तरदायित्व । —सवाल =
प्रश्नोत्तर । —जवाबी = जवाब

सम्बन्धी ।
जवाल—(पु० हि०) अवनति ।

जौहर—(फा०) गुण । हुनर ।
 जवाहर—(पु० अ०) रत्न ।
 जवाहिरात = रत्न ।
 जशन—(पु० फा०) उखल । हर्ष
 मनाना ।
 जसामत—(अ०) मोटा । ताज़ा ।
 लम्बे चौड़े शरीरवाला ।
 जसारत—(अ०) मर्दांगी ।
 दिलेरी ।
 जस्ना—(पु० हि०) एक प्रकार
 की धातु ।
 जस्टिफाई—(पु० अ०) कम्पोज
 किये हुए मैटर को इस तरह
 बैठाना या कतना कि कोई
 लाइन या पक्ति ऊँची-नीची
 या कोई अक्षर इधर उधर न
 होने पावे ।
 जस्टिस—(पु० अ०) न्याय ।
 न्यायाधीश । विचारपति ।
 जस्टिस आफ दि पीप—(पु०
 अ०) स्थानीय छोटे मैजिस्ट्रेट
 जो शांति-रखा तथा छोटे मोटे
 मामलों आदि का विचार
 करने के लिये नियुक्त कि
 जाते हैं । जे० पी० ।

जहँडाना—(क्रि० हि०) हानि
 उठाना । उगा जाना ।
 जद—(फा०) चोट मारना ।
 मारा । ज़दा = (फा०) मारा
 हुआ । चोट खाया हुआ ।
 जग्म—(अ०) घाव ।
 जहन्नुम—(पु० अ०) तर्क ।
 —रशीद = नरक में गया
 हुआ ।
 जहमत—(स्त्री० अ०) आपत्ति ।
 फट । दुःख । रज ।
 जहर—(स्त्री० फा०) विष ।
 —बाद = एक प्रकार का
 फोड़ा । —मोहरा = साँप का
 विष खींचने वाला एक प्रकार
 का काला पत्थर । जहरीला =
 विषैला ।
 जहाँ—(क्रि० वि० हि०) जिस
 जगह । (फा०) ससार ।
 —दीद, जहाँदीदा =
 अनुभव । —पनाद = ससार
 का रचक ।
 जहाज—(पु० अ०) पोत । जहाजी
 = जहाज सम्बन्धी ।
 जहाद—(अ०) धर्मयुद्ध ।

जहान—(पु० फा०) ससार ।
 जहालत—(स्त्री० अ०) अज्ञान ।
 मूर्खता ।
 जहीन—(वि० अ०) बुद्धिमान् ।
 जहूर—(पु० अ०) प्रकाश ।
 जहेज—(पु० अ०) दहेज ।
 जाँघ—(स्त्री० हिं०) ढर ।
 जाँघिया = हाक पैट ।
 जाँच—(स्त्री० हिं०) परीक्षा ।
 —ना = सत्यासत्य का निश्चय
 करना ।
 जाँत, जाता—(पु० हिं०)
 आटा पीसने की यही
 यन्त्र ।
 जाँफिशानी—(फा०) मेहनत ।
 परिश्रम ।
 जाँबाज—(फा०) ज्ञान पर खेलने
 वाला ।
 जाँनिवाज—(फ०) प्राणदान
 करनेवाला ।
 जा—(फा०) जगह ।—बजा =
 हर जगह ।
 ज्याइन्ट—(पु० अ०) जोड़ ।
 जाप—(फा०) स्थान । जगह ।

जाकट—(पु० अ०) पतुही ।
 कुर्ती । सदरी ।
 जाफड—(पु० हिं०) शतं पर
 लाया हुआ माल ।—यही =
 वह यही जिसमें दूकानदार
 जाफड दिये हुए माल का
 नाम और दाम आदि टाँक
 लेते हैं ।
 जागना—(कि० हिं०) सोकर
 उठना ।
 जागरण—(पु० स०) जागना ।
 जागरित = जागा हुआ ।
 जागरूफ = चैतन्य ।
 जागीर—(स्त्री० फा०) सेवा के
 पुरस्कार में मिली हुई भूमि ।
 —दार = वह जिसे जागीर
 मिली हो ।
 जाग्रत—(स०) जो जागता हो ।
 जाजरूर—(पु० फा०) पाखाना ।
 जाजिम—(स्त्री० तु०) गलीचा ।
 जाउत्रह्यमान—(वि० स०)
 प्रखलित ।
 जाट—(पु० हिं०) भारतवर्ष की
 एक प्रसिद्ध जाति ।
 जाठ—(पु० हिं०) लकड़ी का वह

मोटा और ऊँचा लट्टा जो
कोरहू की कूँडो के पीछे में
लगा रहता है ।

जाड़ा—(पु० दि०) शीतकाल ।

जातक—(पु० स०) शौद्ध
कथार्ये ।

जात कर्म—(पु० स०) हिन्दुओं
के सोलह सस्कारों में से
चौथा सस्कार जो बालक के
जन्म के समय होता है ।

जात-पाँत—(स्त्री० दि०) विरा
दरी ।

जाति—(स्त्री० स०) वण ।
—धैर = स्वाभाविक शत्रुता ।

जातीय = जाति सम्बन्धी ।

जातीयता = जाति का भाव ।

जाती—(वि० अ०) व्यक्तिगत ।

जादू—(पु० क्रा०) इन्द्रजाल ।
—गर = वह जो जादू करता

हो । जादूगरी = जादू करने
की मिया ।

जान—(स्त्री० दि०) ज्ञान ।
(क्रा०) प्राण । शक्ति ।

—कार = अभिज्ञ । —कारी
= अभिज्ञता । —दार =

सजीव । —बलव = मरणा-
सल ।

जानना—(क्रि० दि०) अनुभव
करना ।

जानशीन—(पु० क्रा०) उत्तरा
धिकारी ।

जानाँ—(क्रा०) मायूत्र ।

जाना—(क्रि० दि०) गमन
करना ।

जानिय—(स्त्री० अ०) तरक ।

जानूँ—(क्रा०) घुटना ।

जाफत—(स्त्री० अ०) मोत्र ।

जाफरान—(पु० अ०) कण ।
जाफरानी = कैसरियाईतका ।

जाव प्रेन्—(पु० अ०) काट,
नोरिय आदि ऐंगी-शब्दा

चोत्रों के धारने का प्रथ ।

जावजा—(क्रि० वि० अ०)
बगद-बगद ।

जाविर—(वि० अ०) कपटी
धारी ।

जाव्या—(पु० अ०) जावरा ।

जाम—(क्रा०)
प्याला ।

जामेजम—(प्रा०) धमशेद
का प्याला ।

जामा—(पु० क्रा०) पहनावा ।
कपड़े ।

जामाता—(पु० हि०) दामाद ।

जामिन—(पु० थ०) ज़िम्मेदार ।
—दार = ज़मानत धरन
वाला ।

जामुन—(पु० हि०) एक प्रकार
का वृक्ष और फल ।

जामुनी—(वि० हि०) जामुन
के रंग का ।

जामेसेहर—(फा०) सूर्य ।

जायट—(वि० थ०) साथ में
काम करनेवाला । सहयोगी ।

जायट मैजिस्ट्रेट—(पु० थ०)
फ़ौजदारी का वह मैजिस्ट्रेट
जिसका दर्जा ज़िला मैजिस्ट्रेट
के नीचे होता है ।

जायका—(पु० थ०) स्वाद ।
जायकेदार = स्वादिष्ट ।

जाय—(क्रा०) जगह । स्थान ।

जायज—(वि० थ०) उचित ।

जायज़ूर—(पु० क्रा०)
पाश्ताना ।

जायद—(वि० क्रा०) अधिक ।

जायदाद—(स्त्री० क्रा०)
संपत्ति । —ग़ैरमनक़ूला =
अचल संपत्ति । —ज़ोजि-
यत = स्त्री धन । —मज़क़ूला
= वह संपत्ति जो रेहन या
बन्धक हो । —मनक़ूला =
चल संपत्ति । —मुगनाज़िया
= विवाद-ग्रस्त संपत्ति ।
—शौहरो = वह संपत्ति जो
स्त्री को उसके पति से मिले ।
स्त्री धन ।

जायनमाज—(स्त्री० क्रा०) वह
छोटी दरी जिम पर बैठकर
मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं ।

जायफल—(पु० हि०) एक
सुगन्धित फल ।

जायल—(वि० क्रा०) विनष्ट ।

जाया—(वि० प्रा०) खराब ।
खराब ।

जार—(पु० स०) पराई स्त्री
से प्रेम करनेवाला । (प्रा०
ज़ार) आर्ष । शोषित ।
बृद्ध । रोता हुआ ।

जारी—(वि० घ०) चालू ।
बहुता हुआ ।

जाल—(पु० स०) एक में बुने
या गुंथे हुए बहुत से तारों
अथवा रेशों का समूह ।
(क्रा०) घोसा । —दार =
जिसमें जाल की तरह पास
पास बहुत से छेद हों ।
—साज = (क्रा०) दगा-
याज । —माजी = दगायाजी ।
बालिया = दगायाज ।

जाला—(पु० हि०) मक्की का
धुना हुआ जाल ।

जालिम—(वि० घ०) अत्या-
चारी ।

जालो—(स्त्री० हि०) किमी
लकड़ी, पत्थर या धातु की
चादर आदि में बना हुआ
बहुत से छोटे-छोटे छेदों का
समूह । —दार = जिसमें
जाली बनी या पड़ी हो ।

जावित्री—(स्त्री० हि०) जाय
फल के ऊपर का छिलका ।

जावेद—(क्रा०) दीघजीरी ।

जासूस—(पु० घ०) भेदिया ।

जाह—(घ०) मान । पैगम ।
रत्न ।

जाहिद—(प्रा० घ०) मसार
त्यागी । परहेजगार ।

जाहिर—(वि० घ०) प्रकट ।
—दारी = दिग्गवा । ज्ञा
हिरा = प्रत्यक्ष में ।

जाहिल—(वि० घ०) मूर्ख ।

जिक—(स्त्री० घ०) जस्ते का
सार ।

जिदगी—(स्त्री० क्रा०) जीवन ।
जि-दगानी = (का०) जिदगी ।

जिदा = (पा०) जीवित ।

—दिल = (पा०) विरोध-
प्रिय ।

जियादा—(घ०) अधिक ।
विशेष ।

जिस—(स्त्री० का०) क्रिस्म ।
वस्तु । सामग्री । अनाज ।

जिसवार—(पु० पा०) पट-
धारियों का एक कागज़
जिसमें वे परताल करते समय
अपने हलके के प्रत्येक खेत में
थोप हुए अन्न का नाम
लिखते हैं ।

- जिक्र—(पु० थ०) चर्चा ।
- जिगर—(पु० फा०) कलेजा ।
मन ।
- जिच, जिच्च—(खो० पा०)
बचसी ।
- जिज्ञासा—(खो० स०) जानने
की इच्छा । जिज्ञासु = जानने
की इच्छा रखनेवाला ।
- जितना—(वि० हि०) जित
मात्र का ।
- जितेन्द्रिय—(वि० स०) जिसकी
इन्द्रियाँ बश में हों ।
- जिद्—(खो० थ०) हठ ।
ज़िद्दी = (फा०) हठी ।
- जिधर—(क्रि० हि०) जहाँ ।
- जिन—(पु० स०) जैनों के तीर्थ
कर । (थ०) भूत ।
- जिना—(पु० थ०) व्यभिचार ।
—कारी = (फा०) पर-खी
गमन । —थिरज़न्न = (थ०)
बलात्कार ।
- जिनिस—(खो० फा०) प्रकार ।
धस्तु । सामग्री ।
- जिवह—(थ०) बलिदान । गला
काटना ।
- जिमनास्टिक—(पु० थ०)
थंगरेज़ी कसरत ।
- जिमाथ्र—(थ०) मैथुन ।
- जिम्मा—(पु० थ०) उत्तर-
दायित्व । जिम्मादार = उत्तर
दायी । —दारी = उत्तर
दायित्व । —वार = उत्तर
दाता ।
- नियाफत—(खो० थ०) आतिथ्य ।
भोज ।
- जियारत—(खो० थ०)
दर्शन । तीर्थ-यात्रा । जिया-
रती = दशक । तीर्थ-यात्री ।
- ज़िरह—(पु० थ०) हुजत ।
सर्क ।
- जिराश्रत—(खो० थ०) सेतो ।
किसानी ।
- ज़िला—(खो० थ०) चमक-
दमक । पानी ।
- ज़िला—(पु० थ०) प्रदेश ।
किसी इलाके का छोटा
विभाग या अंश । —बोर्ड =
। किसी जिले के कर दाताओं
के प्रतिनिधियों की सभा ।
—मैजिस्ट्रेट = जिले का बड़ा

हाकिम । —दार=माल
गुजारी वसूल करनेवाला एक
अफसर ।

जिलासाज—(पु० फा०) सिक-
लीगर ।

जिल्द—(स्त्री० अ०) राल ।
—गर=जिल्दरद । —यद=
जिल्द बाँधनेवाला । —बदी
=जिल्द बँदाई । —साज
=जिल्दरद । —साजो=
जिल्दरदी ।

जिल्लत—(स्त्री० अ०) धप
मान ।

जिस्म—(पु० फा०) शरीर ।
बदन । जिस्मानी=शरीर
सम्बन्धी ।

जिहन—(पु० अ०) समरु ।
जिहाद—(पु० अ०) मजहबो
लड़ाई ।

जीजा—(पु० हि०) बड़ी बहिन
का पनि । जीजा=बड़ी
बहिन ।

जीत—(वि० हि०) विजय ।
जीता—(वि० हि०) जीवित ।
जीन—(पु० फा०) काठी ।

जीनहार—(फा०) हरगिज़ ।
कदावि ।

जीनत—(स्त्री० फा०) शोभा ।
सजावट ।

जीनपोश—(पु० फा०) कात्री
का ढँकना ।—सवारी=घोड़े
पर ज़ीन रखकर चढ़ने का
कार्य ।

जीना—(फा०) सीढी ।

जीभ—(स्त्री० हि०) जिह्वा ।

जीभो—(स्त्री० हि०) धातु की
बनी एक पतली लचकीली
वस्तु जिमसे छीलकर जीभ
साफ की जाती है ।

जीरा—(पु० हि०) एक मसाले
का नाम ।

जीर्ण—(वि० स०) बुढ़ापे से
जर्जर । पुराना । —उर=
पुगना खुलार । —ता=
बुढ़ापा । पुरानापा ।

जाय—(पु० स०) जान ।
प्राण । —दाग=प्राणदान ।
—धारी=प्राणी । —हिंसा
=प्राणियों की हत्या ।
जीवारमा=जीव ।

जुलूस—(पु० अ०) उत्सव ।
समारोह ।

जुल्लाव—(पु० अ०) दस्त ।
रेचन ।

जुस्तजू—(स्त्री० पा०) तलाश ।
खोज ।

जुहो—(स्त्री० हि०) एक फूल ।

जूजू—(पु० अ०) एक वहिपत
भयंकर जीव । हाऊ ।

जूट—(पु० स०) जटा की गाँठ ।
जटा । (अ०) सन ।

जूठा—(वि० हि०) किसी के
खाने से बचा हुआ ।

जूडा—(पु० हि०) सिर के बालों
की गाँठ ।

जूडी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का ज्वर ।

जूता—(पु० हि०) पनही ।
उपानह । —छोर = जो जूता
खाया करे । निलजज ।

जूती = स्त्रियों का जूता ।

जूनियर—(वि० अ०) पात्र क्रम
से पिछला । छटा ।

जूर—(पु० अ०) जूरी का काम
करनेवाला । पच ।

जूरिस्ट—(पु० अ०) वह व्यक्ति
जो कानून में, विशेषकर
दीवानी कानून में, पारगढ़
हो ।

जूरिस्ट्रियन—(पु० अ०) अधि
कार सीमा ।

जूरो—(स्त्री० हि०) जुटो ।
(अ०) एक प्रकार के पच जो
अदालत में जज के साथ बैठ-
पर मुकदमों के फैसले में
सहायता देते हैं ।

जूप—(पु० स०) झेल ।

जूस—(पु० हि०) रसा । काला ।
(अ०) रस ।

जूस ताक—(पु०^१ हि०) एक
प्रकार का जूसा ।

जूड़ी—(स्त्री० हि०) एक फूल ।

जूंगरा—(पु० देग०) अर्धों और
तरवारियों के डठल ।

जूवनार—(स्त्री० हि०) भोज ।
रसाइ ।

जूटी—(स्त्री० अ०) नदी या
समुद्र के किनारे पर बह बना
हुआ धवारा जिसपर से

जहाजों का माल उतारा और
 चढ़ा जाता है।
 जेठ—(पु० दि०) हिंदुओं का
 एक महीना। पति का यज्ञ
 भाई। जेठ=यज्ञ। जेठानी
 =पति के यज्ञे भाई की स्त्री।
 जेनरल स्टाफ—(पु० थ०)
 जेनरलों या सेनाप्यक्षों का
 घग या समूह।
 जेस्तिन—(पु० जर्मन) जर्मनी का
 एक प्रकार का वायुयाग।
 जेय—(थ०) पाक। खीसा।
 सजाव। —कः=गिरहकट।
 —एच=(प्रा०) भोजन,
 घघ आदि क प्यय से भिन्न,
 निन्न का और ऊारी एच।
 —इडा=जेश घटी। (थ०)
 घार। जेशी=जेश में रखने
 योग्य।
 जेय—(क्रा०) सुन्दरता।
 जयरा—(पु० थ०) एक जगजी
 जानर।
 जेर—(प्रा०) नीचे। दुयंन।
 गिरा हुआ। —वन्द=
 यह तरमा जो घोड़े के नीचे

र्थाया जाता है। —दम्न=
 दुबल। प गोदा। —शर=
 पति प्रस। फष्ट-पोदित।
 दु रित।
 जेल—(पु० थ०) कारागार।
 जेत्तर=जेत्त का थरुमर।
 जेलोटीर—(स्त्री० थ०) एक
 प्रकार की सरेस।
 जेवर—(पु० प्रा०) गहना।
 आभूषण।
 जेष्ठ—(पु० दि०) जेठ मास। जेठ।
 जेहा—(पु० थ०) बुद्धि।
 जेतू—(पु० थ०) एक प्रकार
 का वृक्ष।
 जैन—(पु० स०) भारत का एक
 धर्म संप्रदाय। जैनी=जैन
 मतावलंबी।
 जेल—(पु० थ०) दामन। नीचे।
 जेम्—(स्त्री० दि०) पानी में रहने-
 वाला एक कीड़ा।
 जेम्बर—(थ०) मसखरा।
 जेब्लिम—(स्त्री० दि०) आश का।
 इतरा। (थ०) गिरक।
 जोगयना—(वि० दि०) रचित
 रखना। यटारना।

जोगिन—(स्त्री० हि०) विरक्त स्त्री । जोगी की स्त्री ।

जोगिनिया—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का धान ।

जोगिया—(वि० हि०) जोगी सम्बन्धी । गेरू के रंग में रंगा हुआ ।

जोगी—(पु० हि०) योगी । एक जाति ।

जोगीडा—(पु० हि०) एक प्रकार का गाना ।

जोट—(पु० हि०) जोड़ा । साथी ।

जोड़—(पु० हि०) जोड़ने की क्रिया । जोड़ना = सबद्ध करना । जोड़ा = दो समान पदार्थ । जोड़ी = एक ही सी दो चीजें ।

जोतना—(हि०) हल से ज़मीन फाँड़ना । जोताई = जोतने का काम । जोतने की मज़दूरी ।

जोती—(स्त्री० हि०) लगाम ।

जोफ—(पु० अ०) बुझापा । मुस्ती ।

जोम—(पु० अ०) उत्साह । झड़पार ।

जोर—(पु० फा०) शक्ति । —मद = (फा०) ताबत वाला । —शोर = (फा०) बहुत अधिक जोर । —दार = जोरवाला । जोरावर = बलवान । जोरावरी = ज़बरदस्ती ।

जोया—(फा०) हँदनेवाला ।

जोरू—(स्त्री० हि०) पत्नी ।

जोलाहा—(फा०) जुलाहा । कपड़ा बुननेवाला ।

जोश—(पु० फा०) उफान । जोशीला = धावेगपूण ।

जोशन—(पु० फा०) फव्वल ।

जौ—(पु० हि०) एक अनाज ।

जौजा—(अ०) पत्नी । स्त्री ।

जोर—(अ०) धत्याचार । जुल्म ।

जौहर—(पु० फा०) रत्न । उत्कृष्ट । जौहरी = रत्न विक्रेता । पारखी ।

ज्ञात—(वि० स०) विदित । —स्य = जानने योग्य । ज्ञाता = ज्ञानकार ।

ज्ञाति—(पु० स०) गोती ।
बाधक ।

ज्ञान—(पु० म०) बोध । जान-
कारी । —गम्य=जो जाना
जा सके । —गोचर=ज्ञान
गम्य । ज्ञानी=जानकार ।
ज्ञानेंद्रिय=वे इन्द्रियाँ जिनसे
जीवों को विषयों का बोध
होता है । ज्ञेय=जानने योग्य ।

ज्या—(स्त्री० स०) धनुष की
डोरी ।

ज्यादती—(स्त्री० प्रा०) अधि-
कता ।

ज्यादा—(क्रि० वि० प्रा०)
अधिक ।

ज्याफत—(स्त्री० अ०) भोज ।

ज्यामिति—(स्त्री० स०) रेखा
गणित ।

ज्यों—(क्रि० वि० हि०) जैसे ।

ज्योति—(स्त्री० हि०) प्रकाश ।

ज्यौ । —संय=प्रकाशमय ।
—विद्या=ज्योतिष विद्या ।

ज्योतिष—(पु० स०) वह विद्या
जिससे अंतरिक्ष में स्थित
ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पर-
स्पर दूरी, गति, परिमाण
आदि का निरचय किया जाता
है । ज्योतिषी=ज्योतिर्विद् ।
ज्योतिष्मान्=प्रकाशयुक्त ।

ज्योत्स्ना—(स्त्री० स०) चाँदी ।

ज्योनार—(स्त्री० हि०) रसोई ।

ज्वलत—(वि० स०) जलता
हुआ । दीप्त । प्रकट ।

ज्वार—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का अनाज । बहर की उठान ।

—भाटा=(हि०) समुद्र के
जल का चढ़ाव और उतार ।

ज्वालामुखी पर्वत—(पु० स०)
वह पर्वत जिसकी चोटी से
धुआँ, राख तथा पिघले हुए
पदार्थ निकलता करते हैं ।

जोगिन—(स्त्री० हि०) विरक्त स्त्री । जोगी की स्त्री ।

जोगिनिया—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का धान ।

जोगिया—(वि० हि०) जोगी सम्बन्धी । गेरू के रंग में रंगा हुआ ।

जोगी—(पु० हि०) योगी । एक जाति ।

जोगीडा—(पु० हि०) एक प्रकार का गाना ।

जोट—(पु० हि०) जोड़ा । साथी ।

जोड़—(पु० हि०) जोड़ने की क्रिया । जोड़ना = संबद्ध करना । जोड़ा = दो समान पदार्थ । जोड़ी = एक ही सी दो चीजें ।

जोतना—(हि०) हल से ज़मीन खोदना । जोताइ = जोतने का काम । जोतने की मज़ूरी ।

जोती—(स्त्री० हि०) लगाम ।

जोफ—(पु० ध०) बुढ़ापा । मुस्ती ।

जोम—(पु० ध०) उत्साह । थहफार ।

जोर—(पु० फा०) शक्ति । —भड़ = (फा०) ताकत वाला । —शोर = (फा०) बहुत अधिक जोर । —दार = जोरवाला । जोरावर = थलवान । जोरावरी = ज़बर दस्ती ।

जोया—(फा०) हँसनेवाला ।

जोरू—(स्त्री० हि०) पत्नी ।

जोलाहा—(फा०) जुलाहा । कपड़ा बुननेवाला ।

जोश—(पु० फा०) उफान । जोशीला = आवेगपूर्ण ।

जोशन—(पु० फा०) क्वच ।

जौ—(पु० हि०) एक धमाका ।

जौजा—(ध०) परनी । स्त्री ।

जोर—(ध०) अत्याचार । जुल्म ।

जौहर—(पु० फा०) रत्न । उत्कृष्ट । जौहरी = रत्न विक्रेता । पारखी ।

ज्ञात—(वि० स०) विदित । —व्य = जानने योग्य । ज्ञाता = ज्ञानकार ।

ज्ञाति—(पु० स०) गोती ।
माधव ।

ज्ञान—(पु० स०) बोध । जान-
कारी । —गम्य=जो जाना
जा सके । —गोचर=ज्ञान
गम्य । ज्ञानी=जानकार ।
ज्ञानेंद्रिय=वे इन्द्रियाँ जिनसे
जीवों को विषयों का बोध
होता है । ज्ञेय=जानने योग्य ।

ज्या—(स्त्री० स०) धनुष की
ढोरी ।

ज्यादती—(स्त्री० प्रा०) अधि-
कता ।

ज्यादा—(क्रि० वि० प्रा०)
अधिक ।

ज्याफत—(स्त्री० अ०) भोज ।

ज्यामिति—(स्त्री० स०) रेखा
गणित ।

ज्या—(क्रि० वि० हि०) जैसे ।

ज्योति—(स्त्री० हि०) प्रकाश ।

ज्यौ । —संय=प्रकाशमय ।

—विद्या=ज्योतिष विद्या ।

ज्योतिष—(पु० स०) वह विद्या
जिससे अंतरिक्ष में स्थित
ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पर-
स्पर दूरी, गति, परिमाण
आदि का निश्चय किया जाता
है । ज्योतिषी=ज्योतिर्विद् ।
ज्योतिष्मान्=प्रकाशयुक्त ।

ज्योत्स्ना—(स्त्री० स०) चाँदनी ।

ज्योनार—(स्त्री० हि०) रसोइ ।

ज्वलत—(वि० स०) जलता
हुआ । दीप्त । प्रकट ।

ज्वार—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का अनाज । लहर की उठान ।
—भाटा=(द्वि०) समुद्र के
जल का चढ़ाव और उतार ।

ज्वालामुखी पर्वत—(पु० स०)
वह पर्वत जिसकी चोटी से
धुआँ, राख तथा पिघले हुए
पदार्थ निकलते हैं ।

भ—हिन्दा-दर्शमाला का नववाँ
श्रौत चरण का चौथा घण्ट
जिसका उच्चारण-स्थान टालू
है।

भकार—(स्त्री० स०) भनभन
शब्द।

भँगेरना—(द्वि० अ० अनु०)
हवा का भँका मारना।

भखना—(पु० हि०) बहुत
अधिक दुखी होकर पड़ताना
श्रौत बुझना।

भखाड—(पु० हि०) घनी श्रौत
काटेदार भाटी या पी।

भभट—(स्त्री० अनु०) व्यथ का
भगदा।

भभा—(प० स०) वह तेज श्राधी
जिसके साथ वर्षा भी हा।
—निल = श्राधी। —वात
श्राधी। प्रचण्ड वायु।

भभा—(स्त्री० देश०) छुनी बीदी।

भडा—(पु० हि०) पताना।
(स्त्री०) भदी।

भँपना—(द्वि० हि०) हँपना।
विपना।

भँपान—(पु० हि०) डोली।

भँया—(पु० हि०) जली हुई
झँ।

भउश्रा, भउवा—(पु० हि०)
टोका।

भव—(स्त्री० अनु०) धुन। मौज।

भवभन—(स्त्री० अनु०) रथ
का हुजत।

भवभोर—(पु० अनु०) भटवा।

भवना—(द्वि० अनु०) रथ की
घातें करना। भका = हुजत।

भवाभव—(वि० अनु०) चम-
पोला।

भख—(स्त्री० हि०) भाएना।

भगाडना—(द्वि० हि०) भगदा
करना। भगावा = तकर।

भगाडालू = लडाई करनवाला।

भज्जर—(पु० हि०) एक वर्तन।

भभय—(स्त्री० हि०) चौक।
चमक। —ना = (अनु०)

रिठकना।

भट—(क्रि० हि०) तुरत । —पट
=प्रौरन् ।

भटकना—(क्रि० हि०) हलका
धका देना ।

भटका—(पु० हि०) धका देना ।

भटप—(स्त्री० हि०) दो जीवों
की परस्पर मुठभेद । भटपा
भटपी = (अनु०) हायापाई ।

भडाका—(पु० अनु०) भटप ।

भडी—(स्त्री० हि०) लगातार
वर्षा ।

भनकार—(स्त्री० स०) भनभन
शब्द । भनाइट = भनभना
इट ।

भपरु—(स्त्री० हि०) बहुत थोड़ा
समय । भपरी = (स्त्री०
अनु०) हलकी नाँद ।

भपट—(स्त्री० हि०) धारा ।
—ना = धावा करना ।

भमकना—(क्रि० हि०) दमकना ।

भरना—(क्रि० हि०) चरमा ।
सेता ।

भरोसा—(पु० हि०) गवाण ।

भलक—(स्त्री० हि०) चमक ।

—ना = (क्रि० हि०) चम-
कना ।

भलका—(पु० हि०) चमका ।
फफोला ।

भलभलाइट—(स्त्री० अनु०)
चमक ।

भल्लाना—(क्रि० हि०) बहुत
चिढ़ना ।

भाई—(स्त्री० हि०) प्रतिविम्ब ।
चेहरे पर का काला धब्बा ।

भाँकना—(शि० हि०) लुक-
छिपकर देखना ।

भाँकी—(स्त्री० हि०) दशन ।

भाँभ—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का याजा । पैर का एक
गहना ।

भाँवाँ—(पु० हि०) जली हुई
ईट ।

भाँसा—(पु० हि०) घोखाधड़ी ।

भासी—(पु० देश०) एक बीड़ा ।

भाऊ—(पु० हि०) एक छोटा
भाइ ।

भाग—(पु० हि०) फेन ।

भाड—(पु० हि०) वह छोटा
पेड़ या कुछ यथा पौधा जिसमें

पेड़ी न हो । —सड =
 जगल । —झपाड़ = (हि०)
 काँटेदार भाड़ियों का समूह ।
 भाडन—(स्त्री० हि०) वह जो
 कुछ भाड़ने पर निकले ;
 भाड़ने का कपड़ा ।
 भाडना—(क्रि० स० हि०)
 भटकारना ।
 भाड़ फूँट—(स्त्री० हि०) मग्न
 आदि पढ़कर भाड़ना या
 फूँकना ।
 भाड़ा—(पु० हि०) भाड़-फूँक ।
 मल ।
 भाड़ी—(स्त्री० हि०) छोटा
 भाड़ । —दार = भाड़ी की
 तरह का ।
 भाड़ू—(स्त्री० हि०) योहारी ।
 बढनी ।
 भापड—(पु० हि०) तमाचा ।
 भाव्य भाव्य—(स्त्री० अनु०)
 बकवाद ।
 भालर—(स्त्री० हि०) हाशिया ।
 भिडक—(स्त्री० हि०) डाँट ।
 भिडकी—(स्त्री० हि०) फट
 पार ।

भिल्लंगा—(पु० हि०) दूदा दुई
 साट ।
 भिल्लमिल—(स्त्री० हि०) काँपती
 हुई रोशनी ।
 भिल्लमिलाना—(अ० हि०) रह-
 रहकर चमकना ।
 भिल्लमिली—(स्त्री० हि०) खद-
 खदिया ।
 भौकना—(अ० हि०) खीजना ।
 भौंगा—(पु० हि०) एक मछली ।
 भौंगुर—(पु० हि०) एक फोड़ा ।
 भिल्ली ।
 भील—(स्त्री० हि०) प्राकृतिक
 तालाब ।
 भुड—(पु० हि०) घुँद । समूह ।
 गिरोह ।
 भुकना—(अ० हि०) निहुरना ।
 भुकाव = भुकना । आकषण ।
 भुमका—(पु० हि०) एक गहना ।
 भुरना—(क्रि० हि०) सूखना ।
 भुरमुट—(पु० हि०) कई भाँड़ों
 पत्तों आदि से ढका हुआ
 स्थान ।
 भुलनी—(स्त्री० हि०) एक
 गहना ।

भुलसना—(क्रि० हि०)
 भौमना । खलाना ।
 भुलाना—(क्रि० हि०) गूले में
 बिठाकर हिलाना ।
 भूठमूठ—(क्रि० हि०) व्यर्थ ।
 भूठा—(वि० हि०) मिथ्या ।
 भूठ बोलनेवाला ।
 भूमना—(क्रि० हि०) बार-बार
 भोके खाना ।
 भूरा—(वि० हि०) सूखा ।
 भूला—(पु० हि०) हिंडोला ।
 भूलना—(क्रि० हि०) सहना ।
 भोका—(स्त्री० हि०) भुकाव ।
 घका । पिनका । —ना = पेंक-
 पर छोड़ना । भोका = हवा
 का भटका या धरका ।

भोकी—(स्त्री० हि०) बोकू ।
 जोषिम ।
 भोक्क—(पु० हि०) घोंसला ।
 भोटा—(पु० हि०) बड़े-बड़े
 बालों का समूह ।
 भोपडा—(पु० हि०) कुटी ।
 (स्त्री०) भोपडी = कुटिया ।
 भोपा—(पु० हि०) गुच्छा ।
 भोल—(पु० हि०) शोरवा ।
 भोला—(पु० हि०) पैला ।
 भोली = पैली ।
 भौसना—(क्रि० हि०) भुलसना ।
 भौवा—(पु० हि०) बड़ा टोकरा
 जो अरहर के डडलों से
 बनता है ।

ज

व

ज—हिन्दी वर्णमाला का दसवाँ
 व्यंजन जो चवग का पँधवाँ

वर्ण है । इससे हिन्दी में कोई
 शब्द नहीं बनता ।

ट—द्वि-दो-थंभाजा में ग्यारहवाँ
व्यंजन और टग का पहला
अक्षर ।

टँकाइ—(स्त्री० हि०) मुई से
टाँकने की मज़दूरी या काम ।

टकार—(स्त्री० सं०) मनकार ।

टकी—(स्त्री० ध०) पानी का
बहा बरतन ।

टफोर—(पु० सं०) मनकार ।

टँगगा—(क्रि० हि०) लटकना ।

टँगारी—(स्त्री० हि०) कुल्हाड़ी ।

टच—(वि० हि०) तैयार । पूरा ।
शिशुद्ध ।

टट घट—(पु० हि०) मिथ्या
आह्वय ।

टटा—(पु० हि०) झगड़ा ।

टडर—(पु० हि०) अदालत का
बह आनापत्र जिसके द्वारा
कोई मनुष्य किसी के प्रति
अपना देना अदालत में
दाखिल करे ।

टँडिया—(स्त्री० हि०) एक
गहना ।

टक्कटा—(पु० हि०) स्थिर
दृष्टि । टक्कटी = गद्दी हुई
ताज़र ।

टकराना—(क्रि० हि०) ज़ोर से
भिड़ना ।

टकसाल—(स्त्री० हि०) रुपये,
पैसे आदि बनने का फायदा
क्षय । मिन्ट । टकसाली =
सरा ।

टका—(पु० हि०) रणया । सिक्का ।

टकुआ—(पु० हि०) तकला ।

टकर—(स्त्री० हि०) ठाकर ।

टटका—(वि० हि०) तत्काल
का । ताज़ा ।

टटोलना—(क्रि० हि०) डूँडना ।
छुना ।

टट्टर—(पु० हि०) बाँस की
फट्टियों आदि का घना हुआ
पह्ला जो परदे, किताब, छाजन
आदि का काम दे ।

टट्टी—(स्त्री० हि०) बाँस की
फट्टियों आदि से बनाया हुआ
- बाँस जो आड़, रोक या रक्षा

के लिये दरवाजे धरामदे
 धधगा और किसी खुले स्थान
 में लगाया जाता है ।
 पाखाना ।
 टन—(स्त्री० हि०) घटा बजने
 का शब्द । (अ०) एक अग्रज्ञी
 तौल ।
 टनमन—(पु० हि०) स्वस्थ ।
 चुस्त ।
 टनेल—(स्त्री० अ०) सुरग ।
 टपकना—(क्रि० हि०) बूँद-बूँद
 गिरना । चुना ।
 टपका—(पु० हि०) बूँद । चुथा ।
 टव—(पु० अ०) पानी रखने के
 लिये नाँद के आकार का एक
 खुला बरतन ।
 टमेटो—(पु० अ०) बिलायती
 भग ।
 टरकाना—(क्रि० हि०) टाक
 देना ।
 टरकी—(पु० तुर्की) रूम देश ।
 टर्ना—(हि०) बदमिजाज ।
 टर्नाना—(क्रि० हि०) फेंककर बाँटें
 करना । टर्नान = फट्टवादिता ।
 टलना—(क्रि० हि०) टटना ।

टसक—(स्त्री० हि०) फसक ।
 टसरना—(क्रि० हि०) तिस-
 फना ।
 टसर—(पु० हि०) एक प्रकार
 का बड़ा और मोटा रेशम ।
 टहनी—(स्त्री० हि०) वृक्ष की
 बहुत पतली शाखा ।
 टहल—(स्त्री० हि०) सेवा ।
 टहलनी = दासी । टहलुआ =
 सेवक । टहलुइ = दामा ।
 टहलना—(क्रि० हि०) धीरे धीरे
 चलना ।
 टाँकना—(क्रि० हि०) सीना ।
 जोड़ना ।
 टाँका—(पु० हि०) जोड़ मिलाने
 वाली कील या फाँटा ।
 टाँकी—(स्त्री० हि०) पथर गढ़ने
 का औज़ार ।
 टाँग—(क्रि० हि०) पैर ।
 टाँगना—(क्रि० हि०) लटकाना ।
 टाँट—(पु० हि०) कपाल ।
 टाय टॉय—(स्त्री० हि०) व्ययं
 बकवाद ।
 टाइट—(अ०) खूब कमकर बाँधा
 हुआ ।

टाइटिल—(अ०) पदवी ।
स्त्रिताब । —पेज = किसी
पुस्तक के सबसे ऊपर का पृष्ठ
जिस पर पुस्तक और ग्रन्थकार
का नाम आदि रहता है ।

टाइप—(पु० अ०) सीसे के टुकड़े
हुए अक्षर जिनको मिलाकर
पुस्तकें छपायी जाती हैं ।
—कॉम्पोज़िग मशीन = अक्षर
ढालने की मशीन । —मोल्ड
= अक्षर ढालने की बल्क ।
—राइटर = एक कल जिसमें
कागज़ रखकर टाइप के से
अक्षर छपाय सकते हैं । टाइप
पिस्ट = टाइपराइटर का काम
जाननेवाला व्यक्ति ।

टायफायड ज्वर—(पु० अ०)
एक ज्वर ।

टाइफोन—(पु० अ०) एक प्रकार
का तुफान ।

टाइम—(पु० अ०) समय ।
—टैबुल = समय-सूचक विवरण
पत्र । समय विभाग ।
—पीस = एक प्रकार की

घड़ी । —कीपर = समय की
सूचना देनेवाला व्यक्ति ।

टाई—(स्त्री० अ०) कपड़े की एक
पट्टी जो अंग्रेज़ी पहनावे में
कालर के ऊपर बाँधी जाती
है ।

टाउन—(पु० अ०) शहर ।
—परिया = कस्बों की ग्रुनि-
मिपैबिटी । —ट्यूटी = धुगी ।
—हाल = किसी नगर में वह
सार्वजनिक भवन जिसमें सर्व
साधारण सबधी सभायें होती
हैं ।

टाफ—(अ०) वात-वीत ।
टाफी = खोखला हुआ सिनेमा ।

टाट—(पु० हि०) सन या पट्टे
की रस्सियों का बुना हुआ
कपड़ा ।

टार्टरिकपेसिड—(पु० अ०)
इमली का सत ।

टाटी—(स्त्री० हि०) टट्टी ।

टान—(स्त्री० हि०) तनाव ।
दबाव ।

टानिक—(पु० अ०) पुष्टिकारक
औषध । ताकत की दवा ।

टाप—(स्त्री० हि०) घोड़े का सुम ।

टापिक—(थ०) विषय । प्रसंग ।

टापू—(पु० हि०) द्वीप ।

टार्च—(थ०) एक तरह का जेब ।

लैम्प जो मसाले से जलता है ।

टारपीडो—(पु० थ०) एक प्रकार का जगी जहाज़ जो पानी के भीतर भीतर चलकर शत्रु के जहाज़ों का नाश करता है । —कैचर=तेज चलने वाला वह शक्तिशाली जगी जहाज जो टारपीडो बोट को नष्ट करने के काम में लाया जाता है ।

टाल—(स्त्री० हि०) ऊँचा ढेर ।

टालटूल—(स्त्री० हि०) बहाना ।

टावर—(पु० थ०) लाट ।
मीनार ।

टालना—(क्रि० हि०) हटाना ।

टिंचर—(पु० थ०) एक श्रमेज़ी दवा । —आयाचीन=सूजन पर लगाने के लिये लाहे के सार का थक ।
—ओपियाई=क्षफीम का थक । —कार्डिमम=इला

यची का थक । —स्त्रील=

फौलाद के सार का थक ।

टिंड—(पु० हि०) ढेबसी ।

टिकट—(पु० थ०) कहीं आने-जाने या कोई काम करने के लिये अधिकार पत्र ।

टिकटिक—(स्त्री० थनु०) घोड़ों को डाँकने के लिये मुँह से किया हुआ शब्द । घड़ी के बोलने का शब्द ।

टिकटिकी—(स्त्री० हि०) टिकठी ।

टिकडी—(स्त्री० हि०) छोटी रोटी ।

टिकना—(क्रि० हि०) ठहरना ।

टिकाना=ठहराना ।

टिकरी—(स्त्री० हि०) टिकिया ।

टिककड़=बड़ी टिकिया ।

टिकली—(स्त्री० हि०) छोटी टिकिया । बेंदी ।

टिकाऊ—(वि० हि०) मजबूत ।

टिकोरा—(पु० हि०) आम का छोटा और कच्चा फल ।

टिक्रा—(पु० देश०) तिलक ।

टिटहरी—(स्त्री० हि०) एक पक्षी ।

जिसके द्वारा एक स्थान पर कदा हुआ शब्द कितने ही फीस दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ता है।

टेलिस्कोप—(अ०) दूरबीन।

टैब—(स्त्री० हि०) चादत।

टैबा—(पु० हि०) जन्मपत्री।

टैबु—(पु० हि०) पलाश का फूल। लड़कों का एक उत्सव।

टैबा—(स्त्री० देश०) छोटी कौड़ी।

टैक्स—(पु० अ०) महसूल।

टैक्सी—(स्त्री० अ०) किराये पर चलनेवाली मोटर गाड़ी।

टैब्लेट—(पु० अ०) छोटी टिकिया।

टोटा—(पु० हि०) नली।

टोटी—(स्त्री० हि०) नली।

टोक—(पु० हि०) पूव-ताड़।
—ना = बाघमें बोल उठना।

टोफ़ी—(स्त्री० हि०) इलिया।

टोकरा—(पु० हि०) डला।
टोकरी = छोटा टोकरा।

टोटका—(पु० हि०) टोना।

टोटल—(पु० अ०) तोड़।

टोटा—(पु० हि०) कारदूस।
घाटा।

टोडी—(स्त्री० हि०) एक रागिनी।

टोनाहाइ—(स्त्री० हि०) टोना करानेवाली।

टोना—(पु० हि०) जादू।

टोप—(पु० सि०) बड़ी टोपी।

टोपी—(स्त्री० हि०) सिर पर का पहराग। —दार = जिस पर टोपी लगी हो। —वाला = वह आदमी जो टोपी पहने हो।

टोरी—(पु० अ०) वह जो प्रजा सत्तात्मक शासन प्रणाली का विराधी हो।

टोल—(स्त्री० हि०) इन्जी।
चुंगी।

टोला—(पु० हि०) महल्ला।
टोली = छोटा महल्ला। पार्टी।

टोह—(स्त्री० हि०) खोज।

ट्यूटर—(अ०) गृह-शिक्षक।
ट्यूशन = घर पर आवर पढ़ाने का काम।

ट्रंक—(पु० अ०) लोहे का सफ़री सन्दूक।

द्रूप—(पु० अ०) ताश का एक खेल ।

द्रुस्ट—(पु० अ०) सपत्ति या दान-सपत्ति को इस विचार से दूसरे व्यक्तियों को सौंपना कि वे सपत्ति का प्रयत्न या उपयोग उसके स्वामी के दान पत्र के अनुसार करेंगे ।

द्रुस्टी—(पु० अ०) अभिभावक ।

द्राम—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की लंबी गाड़ी जो छोड़े की बिछी हुई पट्टी पर चलती है ।

द्रान्जैकशन—(अ०) काम ।

द्रान्सपोर्ट—(पु० अ०) माल असबाब एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना । बारबर दारी । वह जहाज जिस पर सैनिक या युद्ध का सामान आदि एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाता है । सवारी गाड़ी ।

द्रान्सफर—(अ०) सबादला ।

द्रान्सलेटर—(पु० अ०) भाषा-तरकार । अनुवादक ।

द्रान्सलेशन—(पु० अ०) अनुवाद । भाषातर ।

द्रूप—(स्त्री० अ०) पलटन । सैन्य । दल । घुड़सवारों का एक दल ।

द्रूस—(स्त्री० अ०) शक्ति सधि ।

ट्रेजरर—(पु० अ०) राजाजी । कोषाध्यक्ष ।

ट्रेड—(अ०) व्यापार ।

ट्रेडमार्क—(अ०) छाप ।

ट्रेडिल मशीन—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की छापने की छोटी कल ।

ट्रेन—(स्त्री० अ०) रेलगाड़ी ।

ट्रेनिंग—(अ०) शिक्षा देना ।

ट्रेजेडियन—(पु० अ०) वह अभिनेता जो विपाद शोक और गम्भीर भाव-युक्त अभिनय करता हो । वियोगात नाटक लेखक ।

ट्रेजेडी—(स्त्री० अ०) दुःखात नाटक । वियोगात नाटक ।

ठ—प्यजनो में ग्यारहवाँ और दसवा
का दूसरा प्यजन त्रिवके
उच्चारण का स्थान मूर्धा है ।

ठंठ—(वि० द्वि०) ठूँठा ।

ठडक, ठडरु—(स्त्रा० द्वि०)
शीत । उष्ण । ठडा = शीतल ।
ठड = गरम । ठडाई—शत
जता । यह दवा त्रिवके पीने
से शरीर का गरमी कम होता
है । ठडो = शीतल ।

ठडा मुलम्मा—(पु० द्वि०)
बिना चाँच के साग चाँदा
चमने की रसि ।

ठक ठर—(स्त्री० धनु०) भगवा ।

ठरठमाना—(क्रि० धनु०)
खटवगना ।

ठरुसुहाती—(स्त्री० द्वि०)
पुशाभद ।

ठरु.इन—(स्त्री० द्वि०) ठरु
का स्त्री । माज्जिन ।

ठरु.इ—(स्त्री० द्वि०) काधि-
पय ।

ठरुगरी—(स्त्री० द्वि०) जमीदार
की छा । अग्राणी ।

ठग—(पु० द्वि०) घोषा देकर
घन हरण कामेशान्ता । —ई
= ठगना । घोषा । —पना
= पछ । —विषा = पोते
षाजी । ठगाई = ठगरना ।
ठगना = ठगा जाना । ठगनी
= लुटारिन

ठगो = ठग का काम ।

ठट, ठट्ट—(पु० द्वि०) समूह ।

ठटना—(क्रि० द्वि०) भिरिषत
करना । सभना ।

ठट्टो—(स्त्री० द्वि०) टाँचा ।

ठट्टा—(पु० द्वि०) उपहास ।
मजक ।

ठठेरा—(पु० द्वि०) फसेरा ।

ठटे । = ठेरा जाति का स्त्री ।

ठठेरे पर धाम ।

ठठाली—(स्त्रा० द्वि०) दिहमी ।

ठठर—(स्त्री० द्वि०) मृदगादि
की धनि । ठठरफना = ठठर
शब्द धरना ।

ठनगन—(पु० दि०) विवाह
आदि अवसरों पर नेगियों
या पुरस्कार पानेवालों का
अधिक पाने के किये दूठ
करना ।

ठनठा गोपाल—(पु० अ०)
छूँधी और निःसार वस्तु ।
निधन आदमी ।

ठनाका—(पु० अ०) टन-टा
शब्द ।

ठनाठन—(क्रि० रि० अ०) म्हा
कार के साथ ।

ठमकना—(क्रि० हि०) ठिठकना ।

ठर्रा—(पु० हि०) मोटा सूत ।
एक प्रकार की शराव ।

ठस—(वि० हि०) ठोस
(रूपया) जिसकी म्हनकार
ठीक न हो ।

ठसक—(श्री० हि०) नखरा ।

ठसाठस—(क्रि० हि०) ठूस-
कर भरा हुआ ।

ठस्सा—(पु० देश०) नक्राशी
बनाने की एक छोटी रूखानी ।
ठमक । घमड़ । शान ।

ठहर—(पु० हि०) स्थान ।

—ना=रुना । ठहराना
स्थान देना । रोकना । ठह-
रौनी=विवाह में खेन-देा
का करार ।

ठहाका—(पु० अ०) अट्टहास ।

ठाँठ—(रि० हि०) नीरम ।

ठाँसना—(क्रि० हि०) ज़ोर से
घुसाना ।

ठाधुर—(पु० हि०) देव-मूर्ति ।
जमींदार । पत्रिय । —द्वारा
= देवालय । —वादी =
मंदिर ।

ठाट—(पु० हि०) लफड़ी या
बाँस की फट्टियों का बना
हुआ परदा । —बंदी =
दृष्ट । —याट = सजावट ।

ठानना—(क्रि० हि०) इद
सम्बन्ध करना ।

ठिठकना—(क्रि० हि०) रुक
जाना ।

ठीक—(वि० हि०) यथार्थ ।
—ठाक = यदोयस्त ।

ठीकरा—(स्त्री० दि०) मिट्टी के
घरतन का छोटा फूटा टुकड़ा ।
(स्त्री०) ठीकरी ।

ठीका—(पु० हि०) जिम्मा ।

—दार=ठीका देनेवाला ।

ठीका—(पु० हि०) जमीन

में गढ़ा हुआ लफड़ी का
कुदा जिसका थोड़ा सा भाग
जमान के उपर रहता है ।

ठुकराना—(प्रि० हि०) ठाकर

मारना । अस्त्रोचार फरना ।

ठुड़ी—(स्त्री० हि०) विद्रुक ।

ठुमकना—(प्रि० अनु०) पृथक्

या फुदकते हुए चलना ।

ठुमकी = धपसा ।

ठुमरो—(स्त्री० हि०) एक गीत ।

ठुँट—(पु० हि०) स्या पेड़ ।

ठुँटा ।

ठुंगा—(पु० हि०) अँगूठा ।

छिाना ।

ठुँटी—(स्त्री० देश०) धान की

मैल । धान का छेद मूँदने

की वस्तु । पाग ।

ठेका—(पु० हि०) सहारे की

वस्तु । घँठक ।

ठेठ—(वि० देश०) पिपट ।

प्रालिस । शुद्ध ।

ठेरना—(प्रि० हि०) टवेजना ।

ठेला—(पु० हि०) एक प्रकार की

गाड़ी जिस चादमी रेल या
टवेजपर चलाता है ।

ठेहरी—(स्त्री० देश०) यह छोटी

सी लफड़ी जो दरवाजों के
पहलों की चूल् के नीचे गढ़ी

रहती है और जिस पर चूल्
घूमती है ।

ठोप—(स्त्री० हि०) प्रहार ।

—ना = आघात पहुँचाना ।

ठोक्का—(पु० हि०) गूगा ।

ठोकर—(स्त्री० हि०) टेस ।

ठोड़ी—(स्त्री० हि०) ठुड़ी ।

ठोस—(हि० हि०) जिसके

भातर खाली स्थान न हो ।

ठौर—(पु० हि०) जगह ।

ड—हिन्दी पञ्चमाला का तेरहवाँ
व्यंजन और टरग का तीसरा
वर्ण ।

डरु—(पु० हि०) मिट्ट, विच्छ, मधु मन्त्री आदि काडा के पीछे का जहराला पौंटा ।

डका—(पु० हि०) नगाडा ।

डगू—(पु० अ०) एक उर ।

डठल—(पु० हि०) छाटे पौधों को पेड़ी और शाला ।

डड, डड—(पु० हि०) एक प्रकार का व्यायाम । —पेल कमरती ।

डडा—(पु० हि०) सोटा । —डडी = छोटी लम्बी पतली छड़ी ।

डपेल—(पु० अ०) कमरत करने का लोहे का एक पदार्थ ।

डवॉडोल—(वि० हि०) विचलित ।

डक—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ जहाज आकर ठहरते हैं ।

डकार—(स्त्री० अनु०) मुँह से निकला हुआ वायु का उद्गार । —ना=डकार लना ।

डकैत—(पु० हि०) डाका डालने वाला । —डकैता=डकैत का काम ।

डग—(पु० हि०) इदम ।

डगडगाना—(क्रि० अनु०) हिलना ।

डगना—(क्रि० हि०) रसकना ।

डगमगाना—(क्रि० हि०) इधर उधर हिलना डालना ।

डगर—(स्त्री० हि०) रास्ता ।

डगना—(क्रि० हि०) अड़ना ।

डगाना—(क्रि० हि०) हटाना ।

डपटना—(क्रि० हि०) ढोंगना ।

डपोरसख—(पु० अनु०) ढोंग मारनेवाला । मूस ।

डफ—(पु० हि०) डफला । (स्त्री०) डफली=रौंजही ।

डफगली—(पु० हि०) डफला धजानेवाला

डवडवाना—(क्रि० अनु०) अशु-पृथ होना ।

डवल—(वि० अ०) दोहरा । —रोटी=पावरोटी ।

डभका—(पु० हि०) कुएँ से
ताजा निकाला हुआ पानी ।

डभरु—(पु० हि०) एक याजा ।
—मध्य = घरती का वह तग
पतला भाग जो दो बड़े-बड़े
खंडों को मिलाता है । —यत्र
= वहाँ का एक प्रकार का
धन ।

डर—(पु० हि०) भय ।
—ना = भयभीत होना ।
—पोक = भीरु । कायर ।
डराना = भय दिखाना । डरा
घना = भयकर ।

डलिया—(स्त्री० हि०) छोटा
टोकरा ।

डली—(स्त्री० हि०) छोटा
डुकड़ा । सुपारी ।

डहना—(क्रि० हि०) छल
करना । डहकाना = गँवाना ।

डहडहा—(वि० अनु०) हरा
भरा । —ना = हरा भरा
होना ।

डहर—(स्त्री० हि०) पशुओं
का रास्ता ।

डॉफ—(स्त्री० हि०) तंबू या

चाँदी का बहुत पतला कागज
की तरह का पत्तर ।

डाँगर—(वि० हि०) चौपाया ।

डाँट—(स्त्री० हि०) शासन ।
घरा । दबाव ।

डाँटना—(क्रि० हि०) टपटना ।

डाँड—(पु० हि०) डटा । डर
माना । सरहद ।

डाँडा—(पु० हि०) छटा ।

डाँवाडोल—(वि० हि०) विच
लित ।

डाँस—(पु० हि०) बड़ा मन्दिर ।

डाइन—(स्त्री० हि०) सुईल ।

डाइविटीज—(पु० अ०) बहुमूत्र
रोग । मधुमेह ।

डाइरेक्टर—(पु० अ०) कार्य
संचालक । डाइरेक्टरी =
वह पुस्तक जिसमें किसी
नगर या देश के मुख्य निवा
सियों या व्यापारियों आदि
की सूची अपर क्रम से हो ।
डार्ई—(पु० अ०) साँचा । ठप्पा ।
—प्रेस = ठप्पा उठाने की
कला ।

डाक—(पु० हि०) पोस्ट आफिस । —खाता = यह सरकारी दफ्तर जहाँ से चिट्ठियाँ जाती हैं और बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ लोगों को बाँटी जाती हैं । —भाड़ी = डाक छे जानेवाली रेल गाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है । —वर = डाक पाना । —यगला = यह बैंगला या मकान जो सरकार की धोर से उठरने के लिये बना हो । —महसूल = यह खर्च जो चीज को डाक द्वारा भेजने वा मँगाने में लगे । —मुशी = डाकघर वा चक्रसर । —धय = डाक-महसूल ।

डाका—(पु० हि०) वह आक्रमण जो धन हरण करने के लिये सहसा किया जाता है । —ज़नी = डाका मारने वा क्षाम । डाकू = डाका डालनेवाला । डाकिनी—(स्त्री०) डाहन । चुड़ैल ।

डाकेट—(पु० अ०) चिट्ठी का सुजासा ।

डाक्टर—(पु० अ०) वैद्य । डाक्टरी = पारव्याय आयुर्वेद । डाक्टर का पेशा वा काम । यह परीक्षा जिसे पास करने पर चादमी डाक्टर होता है ।

डाटना—(क्रि० हि०) मिटाकर डेलना ।

डाढ़ा—(स्त्री० हि०) दावानल ।

डाढ़ी—(स्त्री० हि०) ढोड़ी । दाढ़ी ।

डावर—(पु० हि०) नीची जमीन । तलैया ।

डामल—(स्त्री० हि०) जनमजैद ।

डायट—(स्त्री० अ०) व्यवस्थापिका सभा । राज्यसभा । पध्य । भोजन ।

डायन—(स्त्री० हि०) डाकिनी ।

डायनमो—(पु० अ०) एक छोटा एंजिन जिससे मिलती पैदा की जाती है ।

डायरिया—(पु० अ०) दस्त की बीमारी । अतिसार ।

दायरो

दायरो—(स्त्री० घ०) रोज-
तामचा ।

दायल—(पु० अ०) घड़ी का
चेहरा ।

दायस—(अ०) वह ऊँचा स्थान
या चूतरा जिस पर किसी
सभा के सभापति का आसन
रक्खा जाता है ।

दायमड—(अ०) दारा ।

दायमड कट—(पु० अ०) हीरे
की सा काट ।

दायर्नी—(स्त्री० अ०) वह शासन
प्रणाली या सरकार जिसमें
शासन अधिकार दो व्यक्तियों
के हाथों में हो । द्वैध शासन ।

डाल—(स्त्री० हि०) शाखा ।

डालना—(क्रि० हि०) छोड़ना ।
अन्दर करना ।

डालफिन—(स्त्री० अ०) द्वेज
मछली का एक भेद ।

डालर—(पु० अ०) अमेरिका
का सिक्का ।

डाली—(स्त्री० हि०) डलिया ।
पत्त, फूल, भेदे तथा और
खाने पाने की वस्तुएँ जो

डलिया में सजाकर किसी के
पाम सम्मानाय भेजी जाती
हैं । शाखा ।

डाह—(स्त्री० हि०) हृष्या ।

डिगल—(प्रि० हि०) रात्रपूताने
की वह भागा जिसमें माट
और चारण काय्य और वशा
पत्ती आदि लिखते चले जाते
हैं ।

डिफ्टेटर—(पु० अ०) प्रधान
गेता । पथ प्रदर्शक । निरकुश
शासक ।

डिप्टेशन—(पु० अ०) वह
पाष्य जो लिखने के लिये
बोला जाय । इमला ।

डिक्लेशन—(पु० अ०) वह
लिखा हुआ पासाज जिसमें
किसी मैजिस्ट्रेट के सामने कोई
प्रेस पोलन या कोई समा-
चार पत्र छापने और निकालने
की जिम्मेदारी ली या घोषित
की जाती है ।

डिक्री—(स्त्री० अ०) आज्ञा ।
न्यायालय की वह आज्ञा
जिसके द्वारा खदनेवाले पक्षों

1 में से किसी पक्ष को किसी संपत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिक्शनरी—(स्त्री० अ०) शब्द कोष। लुगत।

डिगना—(क्रि० हि०) टलना। पिचलना।

डिगरी—(स्त्री० अ०) विरव विद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी।—दार=वह जिसके पक्ष में अदालत की डिगरी टुड़ हो।

डिगाना—(क्रि० हि०) हटाना।

डिट्रेन्डिब—(पु० अ०) नासूस।

डिप्टी—(पु० अ०) नायब।

डिपाजिट—(पु० अ०) धरोहर। जमा।

डिपार्टमेंट—(पु० अ०) विभाग।

डिपो—(स्त्री० अ०) गुदाम।

डिप्लोमा—(पु० अ०) सनद।

डिप्लोमेट—(पु० अ०) कूट नीतिज्ञ।

डिफेमेंशन—(पु० अ०) मान हानि। बेइज्जती।

डिविया—(स्त्री० हि०) छोटा डिंवा। डिंवा=सपुट।

डिवेंचर—(पु० अ०) प्रत्यक्षीकार पत्र।

डिमरेज—(पु० अ०) बन्दरगाह में जहाज के ज्यादा ठहरने का हर्जा। स्टेशन पर थाये हुए माल के अधिक दिना पड़े रहने का हर्जा जो पानेवाले को देना पड़ता है।

डिमाई—(स्त्री० अ०) कागज़ वा छापने की फल की एक नाप जो १८ × २२ इंच होती है।

डिलेवरी—(स्त्री० अ०) डाक खानों में आई हुई चिट्ठियों, पारसलों, मनीआडरों की बैटाई जो नियत समय पर होती है। किसी चीज़ का बाँटा जाना या दिया जाना। प्रसव होना।

डिविजनल—(वि० अ०) डिवीजन का। उस भूभाग का जिसमें कई जिले हों।

डिविडेड

डिविडेड—(पु० अ०) वह मुनाफा जो कम्पनी या सम्मिलित पूँजी से चलने वाली कम्पनी को होता है और जो हिस्सेदारों में, उनके हिस्से के मुताबिक बाँटा जाता है।

दिवीजन—(पु० अ०) कमिश्नरी विभाग।

डिस्ट्रिक्ट—(क्रि० अ०) छापे खाने में कम्पोज़ किए हुए टाइपों (अक्षरों) को केसों (खानों) में अपने अपने स्थान पर रखना। धाँटना।

डिस्कॉर्ड—(पु० अ०) घटा। दस्तूरी। फमीशन।

डिस्मिस—(वि० अ०) बरखास्त।

डिसिप्लिन—(पु० अ०) कायदे के अनुसार चलने की शिक्षा या भाव। अनुशासन। फरमाँ बरदारो। व्यवस्था। शिक्षा। घट।

डिस्ट्रायर—(पु० अ०) नाराक अहान्न। टारपीडो बोट।

डिस्ट्रिक्ट—(पु० अ०) ज़िला।
—बोर्ड = जिला बोर्ड। किसी ज़िले के वर-दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा। —मैजिस्ट्रेट = ज़िला हाकिम।

डिस्पेन्सिया—(पु० अ०) मदाग्नि। पाचन शक्ति की कमी।

डींग—(स्त्री० हि०) शोली।

डील—(पु० हि०) बूढ़।

डीह—(पु० हि०) गाँव। ग्राम देवता।

डुवाना—(क्रि० हि०) धोरना।

डुबाव—(पु० हि०) दूबने भर की गहराई।

डूँगर—(पु० हि०) टीला।
(स्त्री०) डूंगरी = छोटी पहाड़ी।

डूबना—(क्रि० हि०) मूड़ना।

डेव—(पु० अ०) अहान्न पर लकड़ी से पटा हुआ पशु या घृत।

डेपूटेशन—(पु० अ०) चुने हुए प्रधान प्रधान लोगों की वह मजली जो जन-साधारण या किसी सभा, या सस्या की

धोर से सरकार, राजा महा राजा अथवा किसी अधिकारी या शासक के पास किसी विषय में प्रायना करने के लिये भेजी जाय ।

डेमोक्रेसी—(छा० अ०) सर्व साधारण द्वारा परिचालित सरकार। प्रजा-सत्तारमक राज्य। प्रजातंत्र । राजनीतिक और सामाजिक समानता ।

डेमोक्रेट—(पु० अ०) वह जो डेमोक्रेसी या प्रजासत्ता या लोकसत्ता के सिद्धांत का पक्षपाती हो ।

डेरा—(पु० हि०) ठहराव । पड़ाव ।

डेरी—(स्त्री० अ०) वह स्थान जहाँ गीर्ण, भैंसें रखी जाती है, और दूध, मक्खन आदि बेचा जाता हो ।

डेल्टा—(पु० यु० अ०) नदियों के मुहाने या सगम स्थान पर बनी हुई भूमि ।

डेल आयरियन—(स्त्री० आय-

रिश) चायलैंड की पाकमेंट या घ्यपस्यापिका मभा ।

डेलिगेट—(पु० अ०) प्रतिनिधि ।

डेली—(स्त्री० अ०) दैनिक ।

डेवदा—(वि० हि०) देवगुना ।

डेवलप करना—(वि० अ०)

फोटोग्राफी में प्लेट को मन्नाले मिले हुए जल से धोना जिसमें थकित चित्र का धाकार स्पष्ट हो जाय ।

डेस्क—(पु० अ०) लिखने के लिये छोटा गालुथी मेज़ ।

डेहरी—(स्त्री० हि०) दरवाजे के नीचे की उठी हुई जमीन जिस पर चौखट के नीचे की जपड़ी रहती है ।

डेना—(पु० हि०) पत्त ।

डेम—(पु० अ०) एक अंगरेज़ी गाणी ।

डेश—(पु० अ०) विराम चिह्न ।

डोगा—(पु० हि०) बिना पाज की नाव । डोंगी=बिना पाज की छोटी नाव ।

डोकरा—(पु० हि०) धूरा आदमी ।

डोम—(पु० हि०) एक घस्पूरय

नीच जाति । —कौशा =

बड़ी जानि का कौशा ।

डोमिन = डोम जातिको खो ।

डोमिनियन—(खी० अ०) स्वतंत्र

शासन या सरकार ।

डोर—(खी० स०) धागा ।

डोरा = सूत । डारिया = एक

प्रकार का सूती कपड़ा । डोरा

= रस्सी ।

डोल—(पु० हि०) लोहे का एक

गोल धरतन जिसे ऊँचे से

पानी रींचते हैं । झूला ।

—चा = छोटा डोल । —डाल

= चलना फिरा । डोलना

= (त्रि० हि०) गति में होना ।

पासाने जाना ।

डोला—(पु० हि०) पालकी ।

डोली = छियों के बैंगने को

एक मगरी जिसे पहार करों

पर उठाकर ले चलते हैं ।

डोडा—(प्रा० हि०) नुँडारा ।

डोरा—(पु० हि०) डौंचा । दग ।

—डाल = उपाय ।

ड्यूक—(पु० अ०) इंग्लैंड के

सामन्तों और भूम्यधिकारियों
को दी जाने वाली एक सर्वोच्च
उपाधि ।

ड्यूटी—(खी० अ०) कर्तव्य ।

धर्म । प्रज । सेवा । पहरा ।

धुगी । महसूल ।

ड्योढ़ा—(वि० हि०) वेदगुना ।

ड्योढ़ी—(खी० हि०) दरवाजा ।

—दार = द्वारपाल । मिपाही ।

—वान = दरवान ।

ड्राइंग—(खी० अ०) लकीरों से

चित्र या आकृति बनाने की

विद्या ।

ड्राइवर—(पु० अ०) गाड़ी हाँकने

या चलाने वाला ।

ड्राई प्रिंटिंग—(खी० अ०) सूखी

छपाई ।

ड्राप—(पु० अ०) बूँद । बिन्दु ।

यवनिका । —सीन = नाट्य

शाला या थियेटर के रंगमंच

के आगे का परदा जो नाटक

का एक अंक पूरा होने पर

गिराया जाता है । यवनिका ।

ड्राफ्ट्समैन—(पु० अ०) नकशा

बनानेवाला ।

ड्राफ्ट—(पु० अ०) मसविदा ।
मसौदा ।

ड्राम—(पु० अ०) पानी आदि
द्रव पदार्थों को नापने का
एक अंग्रेजी मान जो तीन
माशे के बराबर होता है ।

ड्रामा—(पु० अ०) अभिनय ।
नाटक ।

ड्रिल—(स्त्री० अ०) प्रवायद ।

ड्रेडनाट—(पु० अ०) जगो
जहाज का एक भेद ।

ड्रेन—(पु० अ०) परनाला ।
मोरी ।

ड्रेस करना—(क्रि० अ०) मरहम-
पट्टी करना ।

द

ढ

ढर्राँ

ढ—हिंदी त्रणमाला का चौदहवाँ
व्यंजन और टवग का चौथा
अक्षर ।

ढंग—(पु० हि०) शैली ।

ढगी—(वि० हि०) चतुर ।
पाखंडी ।

ढँढेरा—(पु० हि०) डुगडुगी ।

ढकना—(पु० हि०) ढकन ।
छिपाना ।

ढकेलना—(क्रि० हि०) धक्के से
गिराना ।

ढकोसला—(पु० हि०) पाखंड ।

ढकन—(पु० स०) ढाकने की
धस्तु ।

ढवर—(पु० हि०) आयोजन
और सामान ।

ढव—(पु० हि०) तरीका ।

ढमढम—(पु० अनु०) ढोल का
वा नगारे का शब्द ।

ढरकना—(क्रि० हि०) ढलना ।

ढरका—(पु० हि०) आँख का
एक रोग ।

ढरकी—(स्त्री० हि०) जुलाहों का
एक औजार । पशुओं के
दवा पिलाने की बाँस की
चाँगी ।

ढर्राँ—(पु० हि०) मार्ग । ढग ।

दलशा—(पु० हि०) घाँस का एक रोग ।
 दलाई—(स्त्री० हि०) ढालने का काम । ढालने का मजदूरी ।
 ढहाना—(क्रि० हि०) ध्वस्त करना ।
 ढाँचा—(पु० हि०) ढील ।
 ढाँसना—(क्रि० हि०) सूखी खाँसी खाँसना ।
 ढाक—(पु० हि०) पत्थर का पेड़ ।
 ढाड़स—(पु० हि०) धीरज ।
 ढाल—(स्त्री० स०) नीचे की उतरती हुई ऊँगाई । सलवार की चोट सँभालने वाला एक हथियार ।
 ढालना—(क्रि० हि०) उँदेलना ।
 ढिँढोरा—(पु० हि०) धापणा करने की मेरी ।
 ढिँठाइ—(स्त्री० हि०) धृष्टता ।
 ढिलार्ई—(स्त्री० हि०) सुस्ती ।
 ढीठ—(वि० हि०) बेधदय ।
 ढील—(स्त्री० हि०) शिथिलता ।
 ञूँ । ढीळा = शिथिल । —पन = शिथिलता ।

डुँडवाना—(क्रि० हि०) धोव घाना ।
 डुरां—(स्त्री० हि०) पगडडी ।
 डुलका—(क्रि० हि०) लुदकना ।
 डुलगा—(क्रि० हि०) बरकना ।
 डुलवाई—(स्त्री० हि०) ठोने की मजदूरी । डुलघाना = ठोने का काम करना ।
 डूँड—(स्त्री० हि०) खोज । —ना = खोजना ।
 डैकली—(स्त्री० हि०) सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र ।
 डैका—(पु० हि०) बड़ी बँकी ।
 डैकी—(स्त्री० हि०) अनाज फूटने का लकड़ी का एक यंत्र । बँकली ।
 डैहर—(पु० हि०) डेंटर ।
 डैपी—(स्त्री० हि०) फल का मुँह ।
 डेर—(पु० हि०) राशि । समूह ।
 डेरा—(पु० हि०) सुतली धरने की फिरकी ।
 डेलवांस—(स्त्री० हि०) गोफन ।

ढेला—(पु० हि०) इंट, मिट्टी, ककड़, पत्थर आदि का टुकड़ा ।

ढोंग—(पु० हि०) पाखंड ।
ढोंगी=पाखंडी ।

ढोंढ—(पु० हि०) कपास, पोस्ते आदि की कमी ।

ढोटा—(पु० हि०) पुत्र ।

ढोना—(क्रि० हि०) भार ले चलना ।

ढोल—(पु० अ० दुहल) एक ढाजा ।

ढोलक—(स्त्री० हि०) ढोल ।

ढोलना—(पु० हि०) ढोलक के आकार का छोटा जन्तर जो सागे में पिरोकर गले में पहना जाता है ।

ढोली—(स्त्री० हि०) २०० पानों की गड्डी ।

ण

ण—हिन्दी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन ।

त

त

तज

त—हिन्दी-वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंत है ।

तँई—(प्रत्य० हि०) से ।

तग—(पु० फा०) घोड़ों की धीन कसने का तस्मा ।

सिबुदा हुआ । छोटा ।—दक = निर्धन । शरीर । —दिख = कजूस । —दस्ती = कजूमी । —हाल = शरीर । बीमार । तगी = सकीर्णता । सकलीफ । शरीरी ।

तज—(अ०) उपालम्भ । ताना ।

तजेव—(स्त्री० फ्रा०) महीन और
 यदिया मलमल ।
 तनु—(पु० हि०) धागा ।
 ताँत ।
 तत्र—(पु० स०) तनु । शैवों
 और शाक्तों का धर्म ग्रन्थ ।
 शासन ।
 तदुरुस्त—(वि० फ्रा०) स्वस्थ ।
 तदुरुस्ती = स्वास्थ्य ।
 तदूर—(पु० हि०) श्रैंगीरी ।
 तद्रा—(स्त्री० स०) उँवाइ ।
 आरस्य ।
 तवाङ्ग—(पु० हि०) एक पौधा ।
 तबोह—(स्त्री० अ०) नसीहत ।
 तनु—(पु० हि०) रोमा ।
 तबूर—(पु० फ्रा०) छोटा ढोल ।
 (अ०) रोगी पकाने का ज़रफ़ा ।
 तबूरा—(पु० हि०) धीन या
 सितार की तरह का एक
 वाजा ।
 तँबोलिन—(स्त्री० हि०) पान
 बेचनेवाली स्त्री । तँबोजी =
 पान बेचनेवाला ।
 तत्रदूर—(फ्रा०) मालदार ।
 तत्रज्जुन—(पु० अ०) आदर्श ।

तत्रम्मुन—(पु० अ०) ब्रिक्र ।
 तत्रलुरु—(पु० अ०) सयध ।
 तत्रलुका—(पु० अ०) धड़ा
 इलाका ।
 तत्रलुकेदार—(पु० अ०)
 इलाकेदार ।
 तत्रस्सुव—(पु० अ०) धर्म या
 जाति मवधी पक्षपात ।
 तदनात—(पु० हि०) नियुक्त ।
 तकदिमा—(अ०) मुकदमा पेश
 करना । पेशगी दिया गया
 रुया ।
 तकदीर—(स्त्री० अ०) भाग्य ।
 तकरार—(स्त्री० अ०) विवाद ।
 झगडा ।
 तवरीर—(स्त्री० अ०) बातचीत ।
 भाषण ।
 तवरीय—(स्त्री० अ०) उत्सव ।
 तक्रोबन्—(अ०) छगभग ।
 अनुमानत ।
 तकह'ध—(अ०) समीपता ।
 नज़दीकी ।
 तक्ह'री—(स्त्री० अ०) नियुक्ति ।
 तक्ला—(पु० हि०) टेकुआ ।

- तकली = छोटा तकला या टुकड़ी ।
- तकलीश्र—(अ०) टुकड़े करना ।
- तकलीद—(अ०) अनुकरण ।
- तकवियत—(अ०) बल देना ।
- तकयुद—(अ०) वदी । क़ैद होना ।
- तकनुर—(अ०) अहंकार । घमट ।
- तकरार—(अ०) मग़दा । लड़ाई ।
- तकतीफ—(खी० अ०) फट ।
- तकलील—(अ०) कम करना । धोखा करना ।
- तकल्लुफ—(पु० अ०) शिष्टाचार ।
- तकसोम—(खी० अ०) घाँटना ।
- तकसीर—(खी० अ०) अन्वय । शून । —दार = अन्वय । गुनदगार ।
- तकसाता—(पु० अ०) सगादा । माँग ।

- तमायी—(खी० अ०) वह धन जो ज़मींदार या राजा की ओर से गरीब किसानों को खेती के औज़ार बनवाने और बीज खरीदने को दिया जाय ।
- तकिया—(पु० प्रा०) सिर के नीचे रखने का रुहंदार धैला । —कलाम = बोलते समय एक ही वाक्य या शब्द जो अक्षर पढ़ जाने के कारण बार बार आये । —दार = मज़ार पर रहनवाला मुसलमान प्रकीर ।
- तखफ़ीफ—(खी० अ०) घमो । सचिस्त करना । हलफ़ करना ।
- तखमीनन—(फ़ि० अ०) अज्ञान से । तख़माना = अज्ञान ।
- तख़लिया—(पु० अ०) पृथक् स्थान ।
- तख़नुम—(अ०) छाप । उपनाम ।
- तख़मीस—(अ०) विशेषता । ताम नाम ।

—ताकस = (अ०) एक प्रसिद्ध राज सिंहासन, जिसे शाहजहाँ ने छ करोड़ रुपये खगाकर बनवाया था ।
 —नशीन = सिंहासनारूढ़ ।
 —पोश = तट्ट या चौकी पर बिछाने की चादर ।
 तट्टता = बड़ा पटरा । चिरी हुई लकड़ी । तट्टी = छोटा तट्टा । पट्टिया ।
 तगडा—(वि० हि०) बलवान् ।
 तजरवा—(पु० अ०) अनुभव ।
 —कार = अनुभवी ।
 तजरुवा—(पु० अ०) अनुभव ।
 —कार = अनुभवी ।
 तजकिरा—(पु० अ०) चर्चा ।
 जिक्र करना ।
 तजवीज—(स्त्री० अ०) सम्मति ।
 योजना । —सानी = (अ०) एक ही हाकिम के सामने होनेवाला पुनर्विचार ।
 तजल्ली—(अ०) प्रकाश । रोशनी ।
 तजम्मुल—(अ०) वैभव । शान ।
 सुन्दरता ।
 तट—(पु० स०) किनारा । क्षेत्र ।

प्रदेश । —स्थ = किनारे पर रहनेवाला । निरपेक्ष ।
 तडका—(पु० हि०) सबेरा ।
 यघार ।
 तडप—(स्त्री० हि०) छटपटाना ।
 धमक । ब्रह्मक । —ता = छटपटाना ।
 तडाका—(पु० अनु०) “तड” शब्द । जल्दी से ।
 तडातड—(कि० अनु०) तडतड शब्द के साथ ।
 तत्काल—(कि० स०) क्रौरन् ।
 तत्कालीन = उसी समय का ।
 तत्क्षण—कि० स०) तत्काक्ष ।
 तत्ता—(वि० हि०) गरम ।
 तत्व—(पु० सं०) वास्तविकता ।
 सार । —ज्ञ = तत्त्वज्ञानी ।
 दाशनिक । —ज्ञान = प्रखर ज्ञान । —ज्ञानी = तत्त्वज्ञ ।
 दाशनिक । —दर्शी = तत्त्व ज्ञानी । —वेत्ता = तत्त्वज्ञ ।
 दाशनिक । —शास्त्र = दर्शनशास्त्र । तत्त्वावधान = निरीक्षण ।

तत्पर—(वि० स०) उद्यत ।
 मुस्तैद । —ता=मुस्तैदी ।
 तत्पुरुष—(स०) एक समास ।
 तत्सम—(पु० स०) हिन्दी में
 व्यवहृत होनेवाला सरकृत का
 वह शब्द जो अपने शुद्ध रूप
 में हो ।
 तथा—(अ० स०) और ।
 इसी तरह ।
 तथापि—(अ० स०) तीभी ।
 तथ्य—(वि० स०) सत्य ।
 तदातर—(क्रि० स०) उसके
 बाद ।
 तदनुरूप—(वि० स०) उसी के
 समान ।
 तदनुसार—(वि० स०) उसके
 अनुकूल ।
 तदवीर—(स्त्री० अ०) उपाय ।
 तदारक—(पु० अ०) बदोबस्त ।
 दृढ ।
 तदुपरान्त—(क्रि० स०) उसके
 बाद ।
 तद्भव—(पु० स०) सरकृत
 के शब्द का अपभ्रंश रूप ।
 तन—(पु० हि०) शरीर । बदन ।

तनकीह—(स्त्री अ०) जाँच
 करना ।

तनराह—(स्त्री० फा०) वेतन ।
 मजदूरी । —दार=वेतन
 भोगी ।

तन्ज—(अ०) ताना ।

तनज्जुल—(पु० अ०) ध्वनत ।
 तनज्जुली=(स्त्री० फा०)
 ध्वनति ।

तनय—(पु० स०) पुत्र ।

तनसीय—(स्त्री० अ०) रह
 करना ।

तनहा—(वि० फा०) थकेला ।
 —इ=एवात ।

तना—(पु० फा०) पेड़ का धड़ ।

तनाजा—(पु० अ०) झगड़ा ।

तनाव—(पु० हि०) खिचाव ।

तनावर—(फा०) मोटा । बड़ा ।

ताकतदार ।

तनासुत—(अ०) प्रसव ।
 सन्तापोत्पत्ति ।

तनी—(स्त्री० हि०) बघन ।

तन्मय—(वि० स०) लवलीन ।

—ता=एकता ।

तप—(पु० हि०) तपस्या। (फा०)

ज्वर। ताप।

तपन—(पु०स०) जलन। प्रीप्न।

तपना=तप्त होना। तपाना
=तप्त करना।

तपस्या—(स्त्री० स०) तप।

तपस्विनी=तपस्या करने
वाली स्त्री। तपस्वी=तपस्या
करने वाला।

तपाम्—(पु० फा०) आदेश।

जल्नी।

तपिश—(फा०) गरभी। सोऽज्ञश।

तपेद्रिक—(पु० फा०) राजयप्ता।

तपोधन—(पु० स०) तपस्वी।

तपोभूमि—(स्त्री० स०) तपोवन।

तपोबल—(पु० स०) तप का

प्रभाव या शक्ति।

तप्तकुड—(पु० स०) गरम पानी

का सोता या कुड।

तप्ता—(फा०) बला हुआ।

आशिक्ष।

तफरीक—(स्त्री० अ०) जुदाई।

विभिन्नता।

तफरिखा—(अ०) फर्क। फा

सिद्धा।

तफजील—(अ०) बहपन।

प्रतिष्ठा करना।

तफज्जुल—(अ०) बुझुर्गी।

पदाई।

तफतीश—(अ०) खोज। तलाश।

तफरोह—(स्त्री० अ०) प्रमदता।

साजगी।

तपसीर—(स्त्री० अ०) विस्तृत

वचन। टीका। सूची।

तफावत—(पु० अ०) अन्तर।

दूरी।

तव—(अध्य० हि०) उस समय।

तवरु—(पु० अ०) लोक। चाँदी

सोने आदि धातुओं का पतला
बरत।

तवका—(पु० फा०) पट।

लोक। पत्र। दर्जा

तवदीन—(वि० अ०) परिवर्तित।

तवदीली=(स्त्री० अ०)

बदली। तवहल=(पु० अ०)

बदली।

तवर्रा—(अ०) नजरत करना।

तवल—(पु० फा०) नगर।

। डोल। —ची=(हि०) पद

- जो तबला बजाता हो।

सयला = एक प्रसिद्ध राजा ।
 तवस्सुम—(अ०) मुसकुराना ।
 कली का खिलना ।
 तत्राफ—(पु० अ०) परात ।
 तवायत—(खी० अ०) विकिरता ।
 तयाह—(वि०) क्रा०) धरयाद ।
 तवाही = धरयादी । उजद
 जाना ।
 तयीश्रत—(खी० अ०) चित्त ।
 स्वास्थ्य । —दार = (वि०
 अ०) समरुदार । भायुक् ।
 —दारी = समरुदारी । भायु-
 कता ।
 तयीय—(पु० अ०) चिकित्सक ।
 हकीम । वैद्य ।
 तयेला—(पु० अ०) अस्तबल ।
 घुड़माल ।
 तभी—(अव्य० हि०) उसी समय ।
 तमचा—(पु० क्रा०) पिस्तौल ।
 तम—(हि०) अधकार ।
 तमर—(पु० हि) जोश । क्रोध ।
 तमगा—(पु० तु०) पत्क ।
 तम्पूर—(अ०) तमूरा ।
 तमतमाना—(क्ति० हि०) धूप

या क्रोध के कारण चेहरा
 लाल हो जाना ।
 तमकनत—(अ०) गय । टीम
 टाम ।
 तमतमाहट—(हि०) चेहरा लाल
 हो जाना । जाली ।
 तमसील—(अ०) उदाहरण ।
 तमस्सुम्—(अ०) दस्तावेज़ ।
 तमरा—(अ०) वाघा । अभि
 जापा । इच्छा ।
 तमहीद—(अ०) भूमिका ।
 तमा—(अ०) जालच । लोम ।
 तमाश्रत—(अ०) लोभ करना ।
 जालच करना ।
 तमाचा—(पु० हि०) यण्ड ।
 तमाम—(वि० अ०) सम्पूर्ण ।
 पूरा ।
 तमाशा—(पु० क्रा०) चित्त को
 प्रसन्न करनेवाला दृश्य । —ई
 = तमाशा देखनेवाला ।
 तमाशावीण = पेयाश । तमाशा
 देखनेवाला । तमाशावीनी =
 पेयाशी ।
 तमीज—(खी० अ०) विवेक ।
 ज्ञान । अदब ।

तमोलिन—(स्त्री० हि०) पान
बेचने वाली स्त्री ।

तम्बूल—(प्रा०) ताम्बूल । पान ।

तय्यार—(थ०) प्रस्तुत ।

तरगिणी—(स्त्री० स०) नदी ।

तय—(थ०) निष्पत्ति करना ।
आमावा । मुस्तैद ।

र—(वि० प्रा०) भीगा हुआ ।
शीतल । —बतर = भीगा
हुआ ।

तर्क—(थ०) छोड़ना । परिग्रह ।

तरक्श—(पु० प्रा०) खुरी ।

तरकारी—(स्त्री० प्रा०) शाक ।
भाजी ।

तरकी—(स्त्री० हि०) कान में
पहनने का एक गहना ।

तरकीर—(स्त्री० थ०) उपाय ।
युक्ति ।

तरफ़ी—(स्त्री० थ०) उच्चति ।

नरकीक—(थ०) धारीक करना ।

तरगात्र—(थ०) जालघ देना ।
आकर्षित करना ।

तर्ज—(थ०) प्रकार । ढँग ।
तरह ।

तरजुमा—(पु० थ०) अनुवाद ।

तरतीब—(स्त्री० थ०) सिल
सिला । क्रम ।

तरदीद—(स्त्री० थ०) मसूदा ।

तरदुदुद—(पु० थ०) फिकर ।
चिन्ता ।

तरना—(क्रि० हि०) पार करना ।

तरफ—(स्त्री० थ०) ओर ।
—दार = पक्षपार्थी । —दारी
= पक्षपात । तरक़ैन = दोनों
ओर ।

तरवियत—(थ०) तालीम ।
परवरिश ।

तरयूज—(पु० हि०) मतारा ।

तन्मीम—(स्त्री० थ०) सशोधन ।

तरल—(वि० स०) घचल ।

तरस—(पु० हि०) दया ।

तरसना—(क्रि० हि०) अभाव
का दुःख सहना । तरसाना =
अभाव का दुःख देना ।

तरह—(स्त्री० थ०) प्रकार ।
भँति । समस्या । —दार =
सुन्दर मनावट का । —दारी =
सजधज का ढँग ।

तराई—(स्त्री० हि०) पहाड़ के
नीचे की भूमि ।

तराक—(प्रा०) कोड़े मारने की धाराङ्ग । तबाक ।

तराना—(प्रा०) राग । गीत ।

तराजू—(स्त्री० प्रा०) तुला ।

तराघोर—(वि० हि०) सरायोर ।

तरावट—(स्त्री० हि०) गोला पन । टडक ।

तराश—(स्त्री० प्रा०) फाटछाँट ।

—तराश = फाट छाँट ।

तराशा = छिलका तराशा हुआ । तराशना = फतरना ।

तरोका—(पु० अ०) ढँग । प्रणाली ।

तरु—(पु० स०) पेड़ ।

तरोई—(स्त्री० हि०) एक तरकारी ।

तर्क—(पु० स०) विवेचना ।

(अ०) छोटना । परिग्रह ।

तकणा = (स) विचार ।

दलील । तकना = विचार ।

युक्ति । —वितर्क = विवेचना ।

यहस । —शास्त्र = सिद्धांतों

के सटन मटन की, शैली

तर्ज—(पु० अ०) प्रकार । शैली । तरह । ढँग ।

तर्जुमा—(पु० अ०) भाषान्तर ।

तर्पण—(पु० स०) पितरों को जल देना ।

तल—(पु० स०) सीचे का भाग । तला ।

तलख—(प्रा०) फडुवा । थसल्य ।

तलजुट—(स्त्री० हि०) तलजुट ।

तलनुफ—(अ०) मेहरबानी करना ।

तलफना—(कि० अनु०) छटपटाना ।

तलपफुज—(अ०) उच्चारण ।

तलय—(स्त्री० अ०) रोज । तलाश । चाह । माँगना ।

इश्वा । तलबाना = यह खर्चा

जो गवाहों को तलय करने के

लिये टिकट के रूप में थदा

लत में दाखिल किया जाता

है ।

तलवी—(स्त्री० अ०) बुलाइट ।

तलवार—(स्त्री० हि०) एक हथि

कार ।

तलहटी

- तलहटी—(स्त्री० हि०) पहाड़ की तराई ।
- तला—(पु० हि०) पेंचा ।
- तलारू—(पु० अ०) पति पत्नी का विधान पूर्वक सम्बन्ध त्याग ।
- तलाज—(अ०) शोर-गुल ।
- तलातुम—(अ०) मगड़ा । लड़ाई । नदी में लहरों की तपेड़ें ।
- तलाफी—(अ०) नित्यारण्य । दिलभोड़ ।
- तलाश—(स्त्री० तु०) खोज । ढूँढ़ना । तलाशी—गुम की हुड़ या छिपाई हुड़ वस्तु को पाने के लिये घर-घर, चीज-वस्तु आदि की देख-भाल ।
- तली—(स्त्री० हि०) पेंदी ।
- तले—(फि० हि०) नीचे ।
- तलेटी—(स्त्री० हि०) पेंदी । तलहटी ।
- तल्प—(पु० सं०) पलंग । अरारी ।
- तल्ली—(स्त्री० सं०) जूते का तजा ।

- तलफतुल—(अ०) इस्वर पर भरोसा करना ।
- तलजह—(स्त्री० अ०) ध्यान ।
- तवा—(पु० हि०) छोड़े का एक बतन जिस पर रोटी सेंकते हैं । (क्रा०) तावा ।
- तलद्वर—(प्रा०) साफ़तवर । मालदारी ।
- तवाजा—(स्त्री० अ०) आदर । दावत । नम्रता ।
- तवायफ—(स्त्री० अ०) वेश्या ।
- तवारीख—(स्त्री० अ०) इतिहास ।
- तवालत—(स्त्री० अ०) लड़ाई । अधिकता । आपत्ति । फट ।
- तवील—(अ०) लम्बा ।
- तशखीस—(स्त्री० अ०) उल्टा राव । रोग का निदान ।
- तशयीह—(अ०) उदाहरण मिसाल ।
- तशरोफ—(स्त्री० अ०) इजाजत बढ़पन ।
- तरादीद—(अ०) किसी पर सखती करना ।

तशब्दुद—(घ०) अनापार ।
किसी पर सद्यती करना ।

तशतरी—(घी० फा०) रिकायी ।

तसदीक—(झी० झ०) सचाई ।
समर्थन । गवाही ।

तसद्दुफ—(पु० थ०) निष्ठावर ।
फल प्रदान ।

तसदीद—(घ०) दुरस्त करना ।

तसनोफ—(झी० झ०) प्रथ फी
रचना । लेख ।

तसवीह—(झी० थ०) जप
माला ।

तसमई—(हि०) एक प्रकार का
पकवान ।

तसरीह—(थ०) प्रकट करना ।

तसला—(पु० हि०) फटोरे के
आकार का एक बड़ा बरतन ।

(झी०) तसली ।

तसलीम—(झी० थ०) प्रणाम ।
स्वीकृति ।

तसल्ली—(झी० थ०) आश्वा
सन । धैर्य ।

तसवीर—(झी० थ०) चित्र ।

तसहीह—(थ०) शुद्ध करना ।
दुरस्त करना ।

तसह्हुय—(घ०) माशूक का
अपने आशिक से गाज करना ।

तररर—(पु० स०) चोर ।

तसन्फ—(थ०) दण्ड देना ।
कुछ का कुछ बर देना ।

तस्फिया—(थ०) निपटारा
करना ।

तह—(झी० फा०) परत ।

तहकीक—(झी० थ०) सत्य ।
न्याय । जाँच । तहरीफात =

अनुसन्धान ।

तहयाना—(पु० फा०) तल-
गृह ।

तहजीव—(झी० थ०) शिष्ट
व्यवहार ।

तहयन्द—(फा०) लुगो । लँगोट ।

तहवाजारी—(झी० फा०) वह
महसूल जो मही में सौदा
बेचनेवालों से जमींदार लेता
है ।

तहत—(थ०) अधीन । नीचे ।

तहमत—(पु० फा०) लुंगी ।

तहरीक—(थ०) आदोलन ।
ध्यान दिखाना ।

तहरीर—(स्त्री० अ०) लेख ।

तहरीरी—(वि० फ्रा०) लिखित ।

तहलका—(पु० अ०) मृत्यु ।

हलचल । बरबादी ।

तहय्युर—(अ०) विस्मय ।

आश्चर्य ।

तहम्मूल—(अ०) धैर्य । सतोष ।

उठाना । बरदारत करना ।

तहवीर—(स्त्री० अ०) सुपुर्दगी ।

धरोहर । अमा । कोप ।

खजाना । रोकड़ । —दार =

खजानची ।

तहखुर—(अ०) मर्दानगी ।

तहसनहस—(वि० देश०) बर

बाद ।

तहसील—(स्त्री० अ०) वसूली ।

तहसीलदार की कचहरी ।

इकट्ठा करना । —दार =

बर वसूल करानेवाला अफसर ।

—दारी = तहसीलदार का

काम ।

तहाँ—(दि०) वहाँ ।

तहेदस्त—(फ्रा) खाली हाथ ।

शरीर ।

तहोवाला—(वि० फ्रा०) नीचे

ऊपर । ; ;

ताँता—(पु० हि०) चलनेवाले

का पक्ति-बद्ध समूह ।

तातिया—(वि० हि०) ताँत का

तरह दुबला पतला ।

ताँवा—(पु० हि०) घातु ।

तावाँ—(फ्रा०) चमत्कार ।

तावूल—(पु० स०) पान ।

ता—(फ्रा०) तक ।

तई—(अद्वय० हि०) प्रति ।

ताअत—(अ०) प्रार्थना । पूजा ।

आदर । सत्कार ।

ताइ—(स्त्री० हि०) हारत ।

जूड़ी ।

ताइद—(स्त्री० अ०) पक्षपात ।

अनुमोदन ।

ताऊ—(पु० हि०) याप का बड़ा

भाई ।

ताऊन—(पु० अ०) भ्रोग ।

ताऊस—(पु० अ०) मोर ।

ताक—(स्त्री० हि०) घात ।

ताफ—(पु० अ०) घाता ।

ताकनुफत—(पु० फ्रा०) एक

प्रकार का जूसा । ;

ताक भ्वाक—(स्त्री० हि०) घात ।
 ताकत—(स्त्री० अ०) शक्ति ।
 सामध्य । —वर = बलवान ।
 ताकना—(क्वि० हि०) देखना ।
 ताकीद—(स्त्री० अ०) सावधान
 करना । बार बार कहना ।
 ताककुल—(अ०) समझना ।
 जानना । फिक्र करना ।
 तागा—(पु० हि०) सूत ।
 ताज—(पु० अ०) राजमुकुट ।
 ताजगी—(स्त्री० फ्रा०) हरापन ।
 ताजापन । स्वस्थता । नया
 पन ।
 ताजपोशी—(स्त्री० फ्रा०) राज
 मुकुट धारण करने या राज
 सिंहासन पर बैठने की रीति
 या उरमव ।
 ताजमहल—(पु० अ०) आगरे
 का प्रसिद्ध मङ्गल ।
 ताजा—(वि० फ्रा०) हरा भरा ।
 ताजिया—(पु० अ०) बाँस की
 कमचियों पर रंग बिरंगे
 फागुन, पत्ती आदि चिपका
 कर बनाया हुआ मङ्गल के
 आकार का मडप ।

ताजिर—(अ०) व्यापारी । सौदा
 गर ।
 ताजी—(वि० फ्रा०) थरब धा
 धोड़ा ।
 ताजीम—(स्त्री० अ०) सम्मान-
 प्रदर्शन । प्रतिष्ठा करना ।
 ताजीमी सरदार—(पु० फ्रा०)
 ऐसा सरदार जिसकी दरबार
 में विशेष प्रतिष्ठा हो ।
 ताजीरान—(पु० अ०) थपराथ
 और दूह सम्बन्धी व्यवस्थाओं
 या कानूनों का समूह । दूह
 विधि ।
 ताड—(पु० स०) पेड़ ।
 ताडना—(स्त्री० स०) प्रहार ।
 धमकी ।
 ताडपत्र—(पु० स०) ताड़ का ।
 पत्ता ।
 ताडप्राज्ञ—(वि० हि०) ताड़ने
 वाला ।
 ताडी—(स्त्री० स०) खजूर का
 रस ।
 ताता—(वि० हि०) गरम ।
 तातायेड—(स्त्री० अनु०) तृप्त
 का शब्द ।

तुलसी

तुलसी—(स्त्री० सं०) एक छोटा पौधा ।

तुलसीदास—(पु०) एक प्रसिद्ध भक्त कवि जिन्होंने राम चरितमानस बनाया ।

तुला—(स्त्री० सं०) तराजू ।

तुलादान—(पु० सं०) एक प्रकार का दान ।

तुलुअ—(थ०) उदय होना ।

तुपार—(पु० सं०) पाजा । बरफ़ ।

तुहफा—(थ०) भेंट । अनोखी वस्तु ।

तुहमत—(स्त्री० थ०) मूढा कलक ।

तुहिन—(पु० म०) कुहरा । बरफ़ । टडक ।

तूँवा—(पु० हि०) कडुआ गोल फल ।

तूँवी—(स्त्री० हि०) कडुआ गोल फल ।

तूत—(फा०) शहतूत । एक फल ।

तूतो—(स्त्री० फा०) तोते की जाति की चिड़िया ।

तूदा—(पु० फा०) डेर । इहयदी ।

तूफान—(पु० थ०) आंधी । तूफानी = ऊपमी ।

तूमडी—(स्त्री० हि०) तूँबी ।

तूमार—(पु० थ०) घात का बतगढ़ ।

तूल—(थ०) लम्बाई ।

तूलिका—(स्त्री० सं०) तसबीर बनानेवालों की कूँची ।

तृण—(पु० सं०) घास ।

तृतीय—(वि० सं०) तीसरा । तृतीया = तीज ।

तृम—(वि० सं०) अघाया हुआ । तृश । तृसि = (सं०) सतोष ।

तृपा—(स्त्री० सं०) प्यास । इच्छा । लालच । तृपित = प्यास । तृप्या = लालच । प्यास ।

तेंदुआ—(पु० देश०) बिह्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु ।

तेग—(स्त्री० थ०) तलवार ।

तेज—(पु० हि०) चमक । कांति । —स्वी = जिसमें तेज हो । प्रतापी । —स्विता =

प्रताप । तेजोमय = जिनमें
 एष तेज हो ।
 तेज—(त्रि० क्रा०) जिसकी धार
 पैनी हो । महँगा ।
 तेजपत्ता—(पु० हि०) दारचीनी
 की जाति का एक पेड़ ।
 तेजवल्ल—(पु० हि०) एक कई
 दार जगली पेड़ ।
 तेजाव—(पु० क्रा०) किसी चार
 पदार्थ का अम्ल सार ।
 तेजी—(स्त्री० फा०) उग्रता ।
 शीघ्रता ।
 तेलगू—(स्त्री० हि०) तैलग देश
 की भाषा ।
 तेल—(पु० हि०) वह चिकना
 तरल पदार्थ जो बीजों, वन
 स्पतियों आदि से निकलता
 या निकाला जाता है ।
 (स०) तैल । —हर = ये
 बीज जिनसे तेल निकलता
 है । तेलिन = तेली की स्त्री ।
 तेलिया = तेल के से रगवाला
 —कद = एक प्रकार का कद्दा ।
 —सुहागा = एक प्रकार का
 सुहागा जो देखने में बहुत

चिकना होता है । तेली =
 हिन्दुओं की एक जाति ।
 तैनात—(वि० हि०) नियत ।
 तैनाती = नियुक्ति । मुकरंरी ।
 तैयार—(वि० अ०) सब तरह
 से दुरुस्त या ठीक । तैयारी =
 प्रबन्ध की पूण्यता ।
 तैरना—(क्रि० हि०) उतरना ।
 पैरना । तैराई = तैरने की
 क्रिया । तैराक = तैरनेवाला ।
 तैलग—(पु० हि०) दक्षिण
 भारत का एक प्राचीन देश ।
 तैलाभ्यग—(पु० स०) तेल की
 मालिश ।
 तैश—(पु० अ०) गुस्ता ।
 तौद—(स्त्री० हि०) पेद का
 फुलाव ।
 तोटक—(पु० स०) एक छद ।
 तोड़—(पु० हि०) तोड़ने की
 क्रिया । दही का पानी । तेज़
 धारा । —जोड़ = दाँव-पेंच ।
 —ना = टुपड़े करना ।
 तोडा—(पु० हि०) खजाना ।
 रुपये की थैली ।

तोतला—(वि० हि०) वह जा
हुतलाकर मोलता है। —ना
साफ न बालना।

तोता—(पु० क्रा०) सूया।
शुक। —घरम=(पा०)
तोते की तरह धाँसों फेरने
वाला।

तोद—(अ०) तोंद। बड़ा पहाड़।

तोप—(स्त्री० तु०) माला मारने
का एक बहुत बड़ा हथियार।
—प्राग=तोपघर। —ची
=(अ०) तोप चलाने वाला।

तोवडा—(पु० हि०) घोड़ों के
दाना गिलाने का थैला।

तोया—(स्त्री० अ०) किसी धनु
चित्त कार्य का भविष्य में न
करने की प्रतिज्ञा।

तोमर—(पु० स०) भाले की
तरह का एक प्राचीन हथियार।

तोरण—(यु० स०) किमी घर
या नगर का बाहरी पाटक।
बदनवार।

तोटा—(पु० हि०) एक तौल जो
धारह माशे या छानवे रत्ती
की होती है।

तोशक—(स्त्री० तु०) गुदगुदा
बिछीना। झलका गद्दा।

तोशा—(पु० क्रा०) साधारण
खाने पाने की चीज़ें।—खाना
(क्रा०) वह बड़ा कमल
जहाँ राजाओं और थमीरों
के पहना के बढ़िया कपड़े
और गहने आदि रहते हों।

तोहफा—(पु० अ०) सौगात।
उपहार। बढ़िया। उत्तम।

तोहमत—(स्त्री० अ०) मूत्र
फलक। तोहमती=मूत्र
अभियोग लगाने वाला।

तौक—(पु० अ०) हँसुली के
आकार का गले में पहनने का
एक गहना।

तौकीर—(अ०) दूसरे की प्रतिष्ठा
का ध्यान रखना।

तौकीक—(अ०) इच्छा। मुया
क्रिक करता।

तौर—(अ०) प्रकार। भाँति।

तौल—(पु० स०) तराजू। वज़न।
भारका मान। —ना=(कि०
हि०) वज़न करना। तौलाई=
तौलने की मजदूरी।

तौलिया—(स्त्री० हि०) नोटा
 खँगोड़ा जिससे स्नान आदि
 करने के बाद शरीर पोंछते हैं ।

तौसीश्र—(ध०) विलुप्त करना ।

तौसीफ—(ध०) प्रशंसा करना ।

तौहीन—(ध०) नीचा दिखाता ।

त्याग—(पु० स०) किसी चीज
 पर से थपना हट्ट हटा लन
 ध्यवा उमे धपने पास से
 धलग करने का काम ।

—पत्र = इस्तीफा । स्यागी =
 जिमने सब कुछ त्याग दिया
 हो ।

त्याज्य—(वि० स०) त्यागने
 योग्य ।

त्याँ—(द्वि० हि०) उस प्रकार ।

त्योरी—(स्त्री० हि०) गौं ।

त्याँहार—(पु० हि०) वह दिन
 जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या
 ज्ञातीय उत्सव मनाया जाय ।
 त्याहारी = वह धा जो किसी
 त्याँहार के उपलक्ष में छोटी,
 लक्ष्मों या नौकरों आदि को
 दिया जाता है ।

आता—(पु० स०) बचाना बचा ।

त्रिपारा—(पु० स०) तीनों
 फाल—भूत, वर्तमान और
 भविष्य। तीनों मन्त्र—प्रातः,
 मध्याह्न और राय ।

त्रिताप—(पु० स०) गरमी ।
 तेज । दैहिक, दैविक और
 भौतिक कष्ट ।

त्रिदोष—(पु० स०) वात, पित्त
 और कफ ये तीनों दोष ।

त्रिफला—(पु० स०) चाँयले,
 हृद और बहेडे का समूह ।

त्रिपली—(स्त्री० स०) तीन
 बल जा पेट पर पड़ते हैं ।

त्रिलोक—(पु० स०) स्वर्ग,
 मध्य और पाताल ।

त्रिवेणी—(स्त्री० स०) गंगा,
 यमुना और सरस्वती का
 संगम स्या जो प्रयाग में है ।

त्रिशूल—(पु० स०) एक प्रकार
 का हथियार जिमके सिरेपर
 तीन फल होते हैं ।

थ—हिन्दी वणमाला का सत्रहवाँ
और सवग का दूसरा अक्षर ।

थकना—(क्रि० हि०) मिहनत
करते-करते हार जाना ।

थकान = थकावट । थकावट
= शिथिलता । थकित =
थका हुआ ।

थन—(पु० हि०) गाय, भैंस,
बकरी इत्यादि चौपायों का
स्तन ।

थपनी—(स्त्री० हि०) हाथ से
धीरे धीरे ठोंकना ।

थपुआ—(पु० हि०) पपड़ा ।

थमना—(क्रि० हि०) रुकना ।
ठहरना ।

थरथराता—(क्रि० हि०) डर
के मार काँपना ।

थरथराहट—(स्त्री० हि०) कँप
कंपी ।

थमामीटर—(पु० थ०) सरदी
गरमी नापने का यंत्र ।

थराना—(क्रि० हि०) डर के
मार काँपना ।

थल—(पु० हि०) जगह ।

थहाना—(क्रि० हि०) गहराई
का पता लगाना ।

था—(क्रि० हि०) 'है' शब्द
का भूतकाल । रहा ।

थॉट—(थ०) विचार ।

थाती—(स्त्री० हि०) धरोहर ।

थान—(पु० हि०) जगह ।
ढेरा । पशुओं के बाँधे जाने
की जगह ।

थाना—(पु० हि०) टिकने या
बैठने का स्थान । पुलिम की
बढ़ी चौकी ।— दार = थाने
का अक्रसर । —दारी =
थानेदार का पद या कार्य ।

थाप—(स्त्री० हि०) थपनी ।
प्रतिष्ठा । —ना = स्थापित
करना । जमाना । किसी गोली
सामग्री (मिट्टी गोबर आदि)
को हाथ या साँचे से पीर
अथवा दबाकर कुछ बनाना ।

थामना—(क्रि० हि०) रोकना ।

थाला—(पु० हि०) वह घेरा
या गड्ढा जिसके भीतर पौधा
बसाया जाता है ।

थाली—(स्त्री० हि०) बड़ी तरतरी ।

थिपटर—(पु० अ०) रगभूमि । नाटक का तमाशा ।

थियरो (थ्योरी)—(अं०) सिद्धान्त ।

थियोसोफिस्ट—(पु० अ०) थियोसोफी के सिद्धान्तों को माननेवाला ।

थियोसोफी—(स्त्री० अ०) ब्रह्मविद्या ।

थिरकना—(क्रि० हि०) ठुमुक ठुमुक कर गचना ।

थुका फजीहत—(स्त्री० हि०) निन्दा और तिरस्कार ।

थू—(अव्य० अनु०) थूकने का शब्द । घृणा और तिरस्कार सूचक शब्द ।

थूक—(पु० हि०) लार । थूकना = मुँह से थूक निकालना ।

थूनी—(स्त्री० हि०) थम । सहारे का खभा ।

थूचा—(पु० हि०) मिट्टी यादि के ढेर का बना हुआ टीला ।

थूहर—(हि०) सेंहुद ।

थेई थेई—(वि० अनु०) ताल सूचक गच का शब्द और मुद्रा ।

थोक—(पु० हि०) डेर । कुड ।
—दार = हकटा माल धेचने वाला व्यापारी ।

थोडा—(वि० हि०) कम । जरा सा ।

थोथा—(वि० देश०) खोखला ।
(स्त्री०) थोथी = निस्सार ।

थोपना—(क्रि० हि०) छोपना । मिथ्या अपराध लगाना ।

थैला—(पु० हि०) बड़ा बटुआ ।
(स्त्री०) थैली । —दार = रोकड़िया । खजान्ची ।

थू—(अ०) द्वारा । मारकृत ।

द—हिन्दी वणमात्रा में थठार
हवाँ व्यजन और तमग का
तीसरा वर्ण ।

दग—(वि० फ्रा०) चकित ।
विस्मित ।

दगल—(पु० फ्रा०) पड़लवानों
की कुरती । अखाड़ा ।

दगा—(पु० हि०) भगदा ।
उपद्रव ।

दड—(पु० स०) सजा । डडा ।
—नीति—(स्त्री० म०) दड

देकर अर्थात् पीड़ित करके
शासन में रखने की नीति ।

—नीय—(वि० स०) दड देने
योग्य । —प्रणाम—(स०)

भूमि में दडे के समान पड़कर
प्रणाम करने की मुद्रा ।

सादर अभिवादन । —घत्—
(पु० स०) पृथ्वी पर लट

कर किया हुआ नमस्कार ।
साष्टांग प्रणाम । —विधि—

(स०) जुर्म और सजा का
धान । दडी—दड धारण

करनेवाला व्यक्ति । वह

सन्यामी जो दड धीर कम
दड धारण करे ।

दत्त—(पु० स०) दौत ।
—कथा—अनश्रुति ।

ददान—(फ्रा०) दौत । ददाने
दार—जिसमें दौत क तरह
निकले हुए कगूरों की पक्ति
हो । —ददानेसाज—दौत
बनानेवाला ।

दभ—(पु० स०) पाखड ।
अभिमान । दभी—पाखडा ।

दश—(पु० स०) वह घाय जो
दौत फाटने से हुआ हो । दौंस ।

दकियानूस—(अ०) पुरातन
पथी । अथ विश्वासी ।

दकीक—(अ०) कठि ।
मुश्किल ।

दकीका—(पु० अ०) कोई
थारीक बात । उपाय ।

दकाक—(अ०) आटा पीस
नेवाला । बहुत चतुर ।

दक्खिन—(पु० हि०) उत्तर के
सामने की दिशा । दक्खिनी

= दक्खिन का ।

दत्त—(वि० स०) चतुर ।

दक्षिण—(वि० म०) दाहना ।

दक्षिण दिशा ।

दक्षिणा—(स्त्री० स०) यह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय प्राणियों को दिया जाय ।

दक्षिणी—(स्त्री० हि०) दक्षिण देश की भाषा या निवासी ।

दम्बल—(पु० अ०) अधिकार ।

—दिहानी = ऋषज्ञा दिलवाना । —नामा = वह

सरकारी आजा पत्र जिसमें किसी व्यक्ति के लिये किसी पदार्थ पर अधिकार कर लेने की आज्ञा हो । दम्बलभार = वह अस्सामी जिमने किसी जमींदार के रोत या जमीन पर कम से कम चारह वष तक अपना दम्बल रक्खा हो ।

दम्बलकारी = वह जमीन जिस पर दम्बलकार का अधिकार हो ।

दग्दग—(पु० अ०) डर । सदेह ।

दगलफसल—(पु० अ०) धोखा । फरेब ।

दगा—(स्त्री० अ०) फट । धोखा । —दार = (वि० क्रा०) धोखेवाज़ । —घाज़ = (वि० क्रा०) छली । धोखा देनेवाला । —याज़ी = (क्रा०) ग़ल । धोखा ।

दग्ध—(वि० स०) जला या जलाया हुआ । हु खित ।

दज्जाल—(पु० अ०) भूता । वेईमान ।

दनुवन—(स्त्री० हि०) दातु ।

दत्तक—(पु० स०) गाद लिया हुआ लड़का ।

दत्तचित्त = (वि० स०) जब लोन ।

ददोरा—(पु० हि०) चरत्ता ।

दवि—(पु० स०) दही ।

दपट—(स्त्री० हि०) धुदकी ।

—ना = डौटना । धुदकना ।

दफ—(क्रा०) ढप । एक बाजा ।

दफती—(स्त्री० अ०) गत्ता ।

दफा—(पु० अ०) मुरदे को ज़मीन में गादने की क्रिया ।

दफा

दफा—(स्त्री० अ०) धार ।
 किसी कानूनी किताय का वह
 एक अंश जिसमें किसी एक
 अपराध के सम्बन्ध में व्यवस्था
 हो। पेट्ट। धारा। —दार =
 (अ० + क्र०) फौज का वह
 वमधारी जिसकी अधानता में
 कुछ सिपाही हों।

दफ्तीना—(पु० अ०) गढ़ा हुआ
 धन वा स्रज्ञाना।

दफ्तर—(पु० क्रा०) कार्यालय ।
 खात्रिम । दफ्तरी = जित्त
 सान ।

दवग—(वि० हि०) प्रभाव
 शाली ।

दवक—(स्त्री० हि०) छिपना ।
 —ना = (हि०) दर के मारे
 छिपना । दवकाना = (हि०)
 छिपाना । डाँटना । दवकी
 = (स्त्री० देश०) सुराही की
 तरह वा मिट्टी का एक बतन
 जिसमें पानी रखकर चावाहे
 और खेतिहर खेतपर ले जाया
 करते हैं ।

दवदया—(पु० अ०) रोषदाय ।
 धातक ।

दवना—(क्रि० हि०) बोक के
 नीचे पड़ना । दाव में घाना ।
 दववाना = दवाने का काम
 दूसरे से करवाना । दवाना
 = (हि०) ऊपर से भार
 रखना । मजबूर करना ।
 दवाव = (हि०) प्रभाव ।
 जार ।

दविला—(पु० देश०) इलवा
 ह्यों का एक शौजार ।

दविस्ता—(क्रा०) शिक्षालय ।
 मदमा ।

दवीज—(वि० अ०) मोटा ।
 गाढ़ा ।

दवीर—(पु० क्रा०) लिखने
 वाला । मुशी ।

दवोचना—(क्रि० हि०) किमी
 के सहसा पकड़कर दवा
 लेना ।

दम—(क्रा०) जान । प्राण ।
 —कल = यत्र । —खम =
 (क्रा०) मजबूती । प्राण ।
 —चूल्हा = एक प्रकार का

लोहे का चूहा । --दार =
(क्रा०) मजबूत । --दोज
= फुसलायाला । दगाबाज ।
फरेबी ।

दमक—(स्त्री० हि०) धमक ।
धामा । दमकना = धमकना ।
दमडी—(स्त्री० हि०) पैसे का
छाठवाँ भाग ।

दमदमा—(पु० क्रा०) मोरचा ।
नक्कारा । डोल । शोहरत ।
फरेब । चापलूसी ।

दमन—(पु० स०) दवाना ।
रोकना । --शील = दमन
करनेवाला । दमनीय = दमन
होने के योग्य । जो दयाया
जा सके ।

दमा—(पु० क्रा०) साँस का
एक रोग ।

दमाद—(पु० हि०) कन्या का
पति । जामाता ।

दमामा—(पु० फा०) नगरा ।

दया—(स्त्री० स०) करुणा ।
रहम । --निधान = दया का
सज्जाना । बहुत दयालु पुरुष ।
--पात्र = (स०) वह जो

दया के योग्य हो । --मय =
(स०) दयालु । दयार्द्र =
दया से भीगा हुआ । दया-
पूर्ण । --लु = (वि० स०)
बहुत दया करनेवाला । दया-
वान् । दयालुता = रहमदिबी ।
दयावत = दयालु । --वती =
दया करनेवाली । --वान् =
दयालु । --वीर = वह जो
दया करने में वीर हो ।
--शील = दयालु । कृपालु ।
--सागर = अत्यंत दयालु
पुरुष ।

दयानत—(स्त्री० अ०) ईमान ।
--दार = (अ०) ईमानदार ।
--दारी = (अ०) ईमान-
दारी ।

दयार—(अ०) प्रात । प्रदेश ।
दर—(पु० स०) शख । दरार ।
गुफा । (फा०) अन्दर ।
बीच ।

दरकना—(क्रि० हि०) चिरना ।
विदीर्ण होना ।

दरकार—(वि० फा०) धाव-
शक । ज़रूरी ।

नार = वह जिसकी दाढ़ी
 लकी हो। गाली।
 दाता—(पु० स०) देने वाला।
 दातार = दाता। देनेवाला।
 दातुन—(स्त्री० हि०) दनुवन।
 दातून। दातौन।
 दाद—(स्त्री० हि०) एक चमरोग।
 दादनी—(स्त्री० फा०) शृणु।
 ब्रज।
 दादा—(पु० हि०) पितामह।
 आज्ञा। बड़ा भाई।
 दादी—(स्त्री० हि०) पिता की
 माता। दादा की स्त्री। (फ्रा०)
 फरियादी।
 दादूपथी—(पु० हि०) दादू
 नामक साधु का अनुयायी।
 दानव—(पु० स०) असुर।
 राक्षस। दानवी = राक्षसी।
 दानवीर—(पु० स०) दान देने
 में साहसी पुरुष।
 दाना—(पु० हि०) अनाज का
 एक बीज। अन्न का एक
 फल। (फ्रा०) बुद्धिमान।
 —ई = (फ्रा०) अकृमदी।
 बुद्धि। अरु।

दानाचारा—(पु० हि०) खाना
 पीना। आहार। दाना पानी
 = खान पान।
 दानाभ्यक्ष—(पु० स०) राजाओं
 के यहाँ दान का प्रबंध करने
 वाला कर्मचारी।
 दानिश—(स्त्री० फ्रा०) समझ।
 बुद्धि। राय। सम्मति।
 दानिश्ता = (फ्रा०) जानकर।
 जाना हुआ।
 दानेदार—(वि० फा०) जिसमें
 दाने हों। रवादार।
 दाम—(फ्रा०) लाल। फदा।
 मूल्य। कीमत।
 दामन—(पु० फ्रा०) कोट, कुर्ते
 इत्यादि का निचला भाग।
 पल्ला। —गीर = (फ्रा०)
 पल्ले पहनेवाला। पाछे पहने
 वाला।
 दामाद—(पु० हि०) पुत्री का
 पति। जमाई।
 दामिनी—(स्त्री० स०) विजली।
 दायक—(पु० स०) देनेवाला।
 दाता।

दायमुल्लाप—(पु० अ०)

। धीरन भर के लिये श्रद्धा ।

कालपायी की सगा ।

दायग—(वि० प्रा०) पिता

हुआ । चकता । जारी ।

दायरा—(पु० अ०) गोबल घेरा ।

मदल ।

दाय्याँ—(वि० हि०) दाहिना ।

दायित्व—(पु० स०) ज़िम्मेदारी ।

जवाबदेही ।

दायिनी—(स्त्री० स०) देने

वाली ।

दायी—(वि० हि०) देनेवाला ।

दाय्ये—(क्रि० वि० हि०) दाहिनी

ओर का ।

दार—(अ०) सुली । फाँसी का

तखता । (फा०) रखनेवाला ।

वाला ।

दारचीनी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार

का तज जो दक्षिण भारत,

सिंहल और देनासरिम में

होता है ।

दारमदार—(पु० फा०) आशय ।

ठहराव । कार्य का भार ।

दारा—(स्त्री० हि०) स्त्री । पत्नी ।

—इ = (फा०) हुपमत ।

सुदाई ।

दारुण—(वि० स०) भयकर ।

भीषण । बठन ।

दारुस्सलाम—(अ०) मग ।

दारुस्सलननत—(अ०) राज-

धानी ।

दारुल्लिलाफत—(अ०) राज

धानी ।

दारुल्फना—(अ०) दुनिया ।

जगत ।

दारुल्मुत्क—(अ०) राजधानी ।

दारुहत्ती—(स्त्री० हि०) एक

भाइ ।

दारु—(स्त्री० प्रा०) दवा ।

श्रीपथ ।

दारोगा—(पु० प्रा०) निगरानी

रखन वाला थक्रमर ।

दार्शनिक—(वि० स०) दशन

जानने वाला । दशन शास्त्र

सम्बन्धी ।

दाल—(स्त्री० वि०) दली हुई

धरहर, मूँग आदि । —माठ

=घी, तेल आदि में नमक,

मिर्च के साथ सली हुई दाल

दिखाऊ—(वि० हि०) बनावटी ।

दिखाव—(पु०, हि०) दृश्य ।

—टी=बनावटी । दिखावा

। १५ =आठघर । ऊपरी तदक-

। १६ =भड़क । १७ =

विगड—(क्रा०) अन्ध । दूसरा ।

दिग्दर्शक यत्र—(पु० स०)

। कुतुबनुमा । फरास ।

दिग्दर्शन—(पु० स०) भ्रमूना ।

। १६ =ज्ञानकारी । १७ =

दिग्विजय—(छी० स०) अपनी

। १६ =वीरता और गुणों द्वारा देश

। १७ =देशांतरों में अपनी प्रधानता

। १८ =अथवा महान स्थापित करना ।

। १९ =दिग्विजयी =जिसने दिग्विजय

। किया हो ।

दिह—(पु०, स०) सूर्योदय से

। १६ =छेकर सूर्यास्त तक का समय ।

। १७ =दिवस । —चर्चा=दिन भर

। १८ =का काम घघा । १९ =

दिनाई—(खा० हि०) एक रोग ।

दिमाग—(पु० थ०) मस्तिष्क ।

। १६ =भेजा । बुद्धि । —द्वार=

। (थ० + क्रा०) बहुत धडा

। १७ =समकक्षार । घुमडा । १८ =

दिया—(पु० हि०) विराग ।

। १६ =बत्ती =सन्ध्या के समय

। १७ =दिया, जलाने का काम ।

। १८ =सजाई =सकड़ी की वह

सोजी या सजाई जे, रंगड़ने

से जल उठती है । दियारा

। १६ = (पु० क्रा०) नदी के

। १७ =किनारे की वह जमीन जो

। १८ =नदी के इट जाने पर निकल

। आती है । कछार । १९ =

दिसम—(पु० हि०) मिश्र देश

। १६ =का चाँदी का एक सिक्का ।

। १७ =साढे तीन माशे की एक तौल ।

दिल—(पु० फा०) क्लेश ।

। १६ =हृदय । —धारा=(फा०)

। भाशुक । प्रेमिका । —धाराम

। (क्रा०) भाशुक । प्रेमिका ।

। १७ =—गीर=(फा०) उदास ।

। १८ =बुखी । १९ =—गारी=(फा०)

। १६ =उदासी । रज । १७ =दुःख ।

। १८ =—चला=साइसी । दिलेर ।

। १९ =श्रीर । शानी । पागल । —चरप

। १६ =उप=(फा०) जिसमें जी खगे ।

। १७ =मनोहर । १८ =चरपी=(फा०)

। १९ =दिल का शरणा । मनोरजन ।

—जमई=(फ्रा०) इतमी
 बान। तमही। —जला=
 (वि० फ्रा०) अत्यंत दुखी।
 —दार=(फ्रा०) उदार।
 रसिक। प्रेमी। —पमद=
 (फ्रा०) मनोहर। जो भला
 मालूम हो। —पिजीर
 =(फ्रा०) दिल पसंद।
 —त्रिगार=(फ्रा०) जल्लमी
 दिल। आशिक। —वर=
 प्यासा। —वस्ता=(फ्रा०)
 दिल लगा हुआ। —वस्तगी
 (फ्रा०) दिल का लगना।
 —बहार=(फ्रा०) सशस्त्राशी
 रंग का एक भेद। —रुवा=
 प्यारा। —वाला=उदार।
 दाता। साहसी। —वाल
 =(फ्रा०) चालाक। निहर।
 दिवावर=शूर। बहादुर।
 साहसी। दिवावरी=(फ्रा०)
 बहादुरी। साहस। दिवासा
 =(फ्रा०) तसही। ठाढ़स।
 दिली=(फ्रा०) हार्दिक।
 हृदय या दिल-सम्बन्धी।
 डिगरी। दिखेर=(फ्रा०)

बहादुर। साहसी। दिलेगाना
 =(फ्रा०) दिखेर के मानिन्द।
 धीरतापूवक। दिजेरी=
 (फ्रा०) बहादुरी। साहस।
 दिहगी=मज्ञाक। परिहास।
 हँसी चट्टा। दिहगीबाज़=हँसी
 या दिहगी करनेवाला। मस
 खरा। दिहगीबाज़ी=(दि०)
 दिहगी करने का काम।

दिवस—(पु० स०) दिन। रात्र।
 दिवाला—(पु० हि०) प्रजन
 सुका मकना। दिवालिया=
 जिमने दिवाला निकाला हो।
 दिव्य—(वि० स०) स्वर्गीय।
 अलौकिक। चमकीला।
 बहुत अच्छा। खूब सुन्दर।
 दिशा—(स्त्री० स०) धोर।
 तरफ़। —अम=दिशा मूल
 जाना। —शूल=किस दिन
 किस तरफ़ नहीं जाना चाहिये,
 इसका नियम।

दिसवर—(पु० अ०) खँगरजी
 साल का बारहवाँ या अठारवाँ
 महीना। —
 दिसावर—(पु० हि०) दूसरा

देश । परदेश । दिसावरी =
बाहरी ।
दिहदा—(वि० क्रा०) दाता ।
देनेवाला ।
दिहात—(क्रा०) ग्राम समूह ।
दिहुला—(पु० देश०) एक प्रकार
का धान ।
दीगर—(क्रा०) और । दूमरा ।
दीक्षा—(स्त्री० स०) मंत्र की
शिक्षा, जिसे गुरु दे और शिष्य
ग्रहण करे । दीक्षित = जिसने
गुरु से दीक्षा ली हो ।
दीठवद्—(पु० हि०) नजरबंद ।
जादू ।
दीशर—(पु० फा०) दशन ।
दीशी—(स्त्री० हि०) बड़ी बहिन ।
दीन—(वि० स०) गरीब ।
दरिद्र । (अ०) पय । मजहब ।
दीनता = (स०) गरीबी ।
कातरता । —दयालु = दीनों
पर दया करने वाला ।
—दार = (अ०) अपने धर्म
पर विश्वास रखने वाला ।
—यधु = दुब्लियों का सहा
यक ।

दीनार—(पु० अ०) मोहर ।
दीप—(पु० स०) चिराग । दीया ।
—क = (स०) दीया ।
चिराग । एक रागिनी ।
—शिखा = चिराग की लौ ।
दीपावलि = दीपों की कतार ।
दीयालो ।
दीप्ति—(स्त्री० स०) उजाला ।
चमक । शोभा ।
दीवाचा—(क्रा०) भूमिका ।
दीमक—(स्त्री० क्रा०) चींटी की
तरह का एक छोटा कीड़ा ।
दीर्घ—(वि० स०) लंबा । बड़ा ।
दीर्घायु = (स०) बहुत दिनों
तक जीने वाला ।
दीगट—(स्त्री० हि०) चिरागादान ।
दीवान—(पु० अ०) राजमन्त्री ।
दरबार । —गी = (क्रा०)
पागलपन । —ग्राम = (अ०)
ग्राम दरबार । —खाना =
(क्रा०) बैठक । —खान्सा
= (अ०) वह अधिकारी
जिसके पास राजा या बादशाह
की मुहर रहती है । —खाल

दीवाना

- दरवार । वह जगह या भवन
 जहाँ खास दरवार होता हो ।
 दीवाना—(पि० फा०) पागल ।
 —पन = पागलपन । दीवानी
 = (फा०) दीवान का
 घोहदा । पगली ।
 दीवार—(स्त्री० फा०) भीत ।
 —गीर = (फा०) दिया
 आदि रखने का आधार जो
 दीवार में लगाया जाता है ।
 दीवाली—(स्त्री० हि०) कार्तिक
 की अमावस्या को होनेवाला
 उत्सव ।
 दुख—(पु० स०) कष्ट । तक्र-
 लीक । —दायक = (स०)
 दुख या कष्ट पहुँचानेवाला ।
 दुखान = (स०) जिसके अंत
 में दुख हो ।
 दुआ—(स्त्री० अ०) मार्यना ।
 दरखास्त । आशीर्वाद ।
 दुआबा—(पु० फा०) दो नदियों
 के बीच का प्रदेश ।
 दुफडा—(पु० हि०) जोड़ा ।
 । दुखी = जिसमें कोई वस्तु

- । दो दो हो ॥ —घो, वृत्तियोवाला
 ताश का पत्ता । ॥ ११११
 दुकान—(स्त्री० फा०) । सौदा
 बिकने का स्थान । —दार =
 । (पु० फा०) दुकान का
 —मालिक । —दारी = (फा०)
 दुकान का माल बेचने का
 काम । (० - - १११)
 दुकाल—(पु० हि०) अकाल ।
 दुष्ठा—(वि० हि०) जो एक साथ
 दो दो ॥ ॥ ११११
 दुकी—(स्त्री० हि०) ताश का वह
 । पत्ता, जिसपर दो-वृत्तियाँ
 बनी हो । ॥ ११११
 दुखाना—(क्रि० हि०) घटापहुँ
 । —बाग । (स्त्री० अ०) — ॥ ११११
 दुखिया—(वि० हि०), दुखी ।
 । —पीड़ित । दुखी = (वि० हि०)
 । जिसे दुख हो । ॥ ११११
 दुस्तर—(फा०) लड़की । पुत्री ।
 दुगना—(वि० हि०) दूना ।
 दुचन्द—(फा०) दुगुना । दूना ।
 दुग्ध—(वि० स०) दूध । ११११
 दुज्द—(फा०) —घोरा । —घोरी
 करनेवाला । ॥ ११११

दुत्तर्का—(वि० क्रा०) दोनों ओर का ।

दुधार—(वि० हि०) दूध देने वाली ।

दुनोली—(स्त्री० हि०) दो, नल वाली ।

दुनिया—(स्त्री० अ०) ससार ।

दुजगत् । दुनियावी—(अ०) सामारिक । —दार—(फा०)

समारी । गृहस्थ । —दारी—(फा०) दुनिया का कार-

वार । —माज—(फा०) चापलूस । —साजी—

(फा०) अपना मतबध निकालने का दग ।

दुपट्टा—(पु० हि०) चादर ।

दुपहरिया—(स्त्री० हि०) दो पहर ।

दुवधा—(स्त्री० हि०) चित्त की अस्थिरता । अनिश्चय ।

दुवला—(वि०, हि०) चीण शरीर का । फुर । —खे सेतों

में पानी महुँवाने का एक प्रकार । —पत—(हि०)

३१

दुवारा—(फा०) दूमरी दफा ।

दुवाला—(फा०) दुगना ।

दुभापिया—(पु० हि०) दो भिग भिन्न भाप में बोलनेवालों

के बीच का मध्यस्थ ।

दुमजिला—(वि० फा०) दो खडा ।

दुम—(स्त्री० फा०) पूँड़ । —

ची—(फा०) घाडे के साज में वह तसमा जो पूँड़ के

नीचे दबा रहता है । पुट्टों के बीच की इही । —दार—

(वि० फा०) पूँड़वाला । दुम्मा—(फा०) चौबी और भारी

पूँड़वाला मेडा । दुरगी—(स्त्री० हि०) दो रगों

की । दोतरकी । छल युक्त । दुरगा—(वि० हि०) दा रगों

का । दुर—(अ०) मोती । दाँत ।

दुरमिसधि—(स्त्री० स०) मिल जुलकर की हुई धुमप्रणा ।

दुरमुस—(पु० हि०) एकद्वारा । मिट्टी । पीटकर बैंगने का

। चीनार ।

दुरुस्त

- दुरुस्त—(पा०) उचित । ठाक ।
 वाजिब ।
 दुरवस्था—(स्त्री० स०) प्रराध
 हाजत । हीन दशा ।
 दुराग्रह—(पु० स०) हठ ।
 जिद ।
 दुराचरण—(पु० स०) बुरी
 चाल चलन ।
 दुराचार—(पु० स०) खोनी
 चाल । दुराचारी = बुरे चाल
 चलन का ।
 दुरात्मा—(वि० हि०) दुष्टात्मा ।
 खोटा ।
 दुराशा—(स्त्री० स०) ऐसी
 आशा जो पूरी होनेवाली
 न हो ।
 दुरुपयोग—(पु० सं०) बुरा
 उपयोग ।
 दुरुस्त—(वि० प्रा०) ठीक ।
 दुर्गंध—(स्त्री० स०) बदबू ।
 बुरी गंध ।
 दुर्ग—(वि० स०) जिनमें पहुँचना
 कठिन हो । दुर्गम । जिला ।
 दुर्गाधिकारी = त्रिजेदार ।

- दुर्गति—(स्त्री० स०) बुरा हाव
 दुदरा ।
 दुर्गम—(वि० स०) जहाँ जान
 कठिन हो ।
 दुर्गा—(पु० स०) आदि शक्ति
 देवी ।
 दुर्गाष्टमी—(स्त्री० स०) आरिषन
 और चैत्र के शुक्ल पक्ष की
 अष्टमी ।
 दुर्गुण—(पु० स०) दोष । पेश ।
 दुर्जन—(पु० स०) दुष्ट आदमी ।
 —ता = (स०) दुष्टता ।
 दुर्जय—(वि० स०) जिसे जीतना
 बहुत कठिन हो ।
 दुर्ज्ञेय—(वि० म०) कठिनाई से
 जानने योग्य ।
 दुर्दमनीय—(वि० स०) जिसका
 दमन करना बहुत कठिन हो ।
 प्रबल ।
 दुर्दशा—(स्त्री० स०) बुरी
 दशा । प्रराध हाजत ।
 दुर्दिन—(पु० स०) बुरा दिन ।
 दुदशा का समय ।
 दुर्द्वय—(वि० स०) जिसका दमन
 करना कठिन हो । प्रबल ।

दुर्नीति—(स्त्री० स०) कुनीति ।
 अन्याय ।
 दुर्बल—(वि० स०) कमजोर ।
 —ता=(स०) कमजोरी ।
 दुबलापन ।
 दुर्बोध—(वि० स०) जो जल्दी
 समझ में न आवे ।
 दुर्भाग्य—(पु० स०) मद भाग्य ।
 खोगी किस्मत ।
 दुर्भिक्ष—(पु० स०) अकाल ।
 दुर्मति—(स्त्री० स०) बुरी बुद्धि ।
 नासमझो ।
 दुर्गा—(पु० फ्रा०) कोड़ा ।
 चाबुक्र ।
 दुर्लभ—(वि० स०) जो कठिनता
 से मिल सके ।
 दुर्विदग्ध—(वि० स०) अधजला ।
 घमडी ।
 दुर्विनीत—(वि० स०) अशिष्ट ।
 अक्लबुझ ।
 दुर्व्यसन—(पु० स०) खराब
 आदत ।
 दुलकी—(स्त्री० हि०) घोड़े की
 एक चाल ।
 दुलसी—(स्त्री० हि०) घोड़े आदि

चौपायों का पिछले दोनों
 पैरों को उठाकर मारना ।
 दुलदुल—(पु० अ०) वह खच्चरी
 जिसे इसकदरिया (मिश्र) के
 हाकिम ने मुहम्मद साहब को
 नज़र में दिया था ।
 दुलहन—(स्त्री० हि०) नई बहू ।
 दुलाई—(स्त्री० हि०) रुड़ भरा
 हुआ पतला थोढ़ना ।
 दुलार—(पु० हि०) प्यार ।
 दुलारा=लाइला । दुलारी
 =प्यारी ।
 दुशाला—(पु० हि०) पमीने
 की बड़ों का जोड़ा । —
 पोश=(वि० फ्रा०) जो
 दुशाला थोड़े हो । —फरोश
 =(फ्रा०) दुशाला बेंचने
 वाला ।
 दुश्चरार—(फ्रा०) कठिन ।
 मुश्किल ।
 दुश्चरित—(वि० स०) बद्-
 चलन । कठिन । दुश्चरित्र
 =(स०) बद्चलन ।
 दुश्मन—(पु० फ्रा०) शत्रु ।
 बैरी ।

- = (वि० स०) जो देखने में
 आ सके। दृष्टिगत = (पु०
 स०) साफना या देखना।
 धवलोकन।
 देखना—(क० हि०) धवलोकन
 करना।
 देगाऊ—(वि० हि०) बनावटी।
 देखा देखी—(स्त्री० हि०) धाँखों
 से मुलाज्जल।
 देग—(पु० प्रा०) एक बरतन।
 —घा = (फा०) छोटा देग।
 —घो = (फा०) छोटा
 देगघा।
 देदीयमान—(फा०) समझता
 हुआ।
 देनदार—(हि०) ऋणदार।
 देन लेन—(पु० हि०) व्याज पर
 रुपया उधार देने का ध्यापार।
 देना—(स० हि०) प्रदान
 करना। ऋण।
 देर—(स्त्री० फा०) विलम्ब।
 देय—(फा०) भूत। जिन।
 देवता—(पु० स०) स्वर्ग में रहने
 वाला अमर प्राणी।
 देवदार—(पु० हि०) एक पेड़।
- देवर—(पु० स०) पति का छोटा
 भाई। देवराणी = (हि०)
 देवर की स्त्री।
 देवपि—(पु० स०) देवताओं में
 श्रेष्ठि।
 देववाणी—(स्त्री० स०) सरकृत
 भाषा। आकाशवाणी।
 देवी—(स्त्री० स०) देवता का
 स्त्री।
 देश—(पु० स०) राष्ट्र। पृथ्वी
 का वह विभाग जिसका कोई
 अलग नाम हो, जिसमें कई
 प्रांत, नगर, ग्राम आदि हों
 और एक ही शासित के लोग
 बसते हों।—ज = (वि० स०)
 देश में उत्पन्न।—निकाला
 = (हि०) देश से निकाल
 दिये जाने का दृढ।—भाषा
 = (स्त्री० स०) यह भाषा
 जो किसी देश या प्रांत विशेष
 में ही बोली जाती हो।—
 देशंतर = (पु० स०) विदेश।
 परदेश। देशाटन = (सं०)
 भिन्न भिन्न देशों की यात्रा।

- देशी—(वि० हि०) देश सन्धी ।
- देसावर—(पु० हि०) विदेश । परदेश । देशवरी—(हि०) दूपरे देश से आया हुआ ।
- देह—(स्त्री० स०) शरीर । बदन ।
- देहकान—(पु० फा०) कियान । गंवार । देहकानी—(वि० फा०) गंवारू । ग्रामीण ।
- देहली—(स्त्री० स०) धौकठ ।
- देत्य—(पु० स०) असुर । राक्षस ।
- दैर—(फा०) मन्दिर । गुम्बद ।
- देनिक—(वि० स०) प्रतिदिन का ।
- देवज्ञ—(पु० स०) ज्योतिषी ।
- दो—(वि० हि०) तीन से एक कम ।
- दोआब—(पु० फा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश ।
- दोखमा—(पु० हि०) एक प्रकार का नैवा जिसमें कुएँकी नहीं होती ।
- दोचार—(फा०) मुल्काजात । मुल्काबिल ।
- दोजख—(पु० फा०) जहन्नुम । नरक ।
- दोजर्बी—(स्त्री० फा०) दोनली बटूक ।
- दोजर्हो—(फा०) दो दुनिया ।
- दोजानू—(वि० फा०) घुटनो के बल बैठना ।
- दोतरफा—(वि० फा०) दोनों तरफ का ।
- दोतल्ला—(वि० हि०) दो खद का । दोमज्जिला ।
- दोद—(फा०) धुर्माँ । राम । रज ।
- दोना—(पु० हि०) पत्तों का बना हुआ फटेरा । दोनिया—(स्त्री०) छोटा दोना ।
- दोनों—(वि० हि०) एक और दूसरा ।
- दोपल्ली—(वि० हि०) दो पल्ले-वाला ।
- दोपहर—(स्त्री० हि०) मध्याह्न काल ।
- दोफसली—(वि० हि०) दोनों

दोशारा—(वि० प्रा०) दूधारी
घार ।

दोषाला—(वि० फा०) दूना ।
दुगना ।

दोमजिला—(वि० पा०) दो
सद या ।

दोमट—(खी० हि०) यह जमीन
जिमका गिटा में बुद्ध याद
भा मिला हा ।

दोमुहो—(वि० हि०) दो मुँह
पाला । कपटी ।

दोयम—(वि० फा०) दूधारा ।

दोशवा—(पा०) सोमवार ।

दोष—(पु० म०) षेप । अपराध ।
दोषी = अपराधी । पापी ।
मुजरिम ।

दोसूती—(खी० हि०) दोसही या
दुमूती नाम की मोटी चादर
जो विधाने के काम में धाती
है ।

दोस्त—(पु० फा०) मित्र ।
—दार = (पु० फा०) मित्र ।

दोस्तारी = (खी० फा०)
मित्रता । दोस्ताता = (पु०

पा०) दोस्ती । मित्रता ।

दोस्ता = (फा०) मित्र ।

दाहरथा—(वि० हि०) दाहों
हाथों में ।

दाहर—दो पातों की चादर ।

दाहरा—(वि० हि०) दो पात
या सद या । दुगना ।

दाहराना—(वि० हि०) किसी
पात को दूसरी धार बदलना
या बदलना ।

दोहा—(पु० हि०) एक मुद ।

दोहरा—(पु० हि०) यह इकट्ठी
धर्या जो गामी के दिनों में
तपी हुई धरती पर होती है ।

दौर—(फा०) जमाना । अरु ।
समय । गर्दिश । दौरान =
(घ०) समय । जमाना ।

दोरी—(खी० हि०) धातों को
बजाकर अथवा धीरे धीरे का
अलग करना ।

दोड़—(खी० हि०) दोड़ने की
शक्त किया या भाव । —धूप =
दोड़ (हि०) किसी काम के लिये
धार धार धारोंधोर- धाना
। दोड़ना । —ना = (हि०) लेज

।। चलना । दौड़ादौड़ = बिना
फर्की, हके हुए चलना ।
दौड़ाना = (हि०) बलपूर्वक
चलाना ।

दौना—(पु० हि०) एक पौधा ।

दौर—(पु० अ०) चक्कर । फेरा ।
दौरों का फेरा । बदती का
समय ।

दौरा—(पु० अ०) चारो घोर
धूमने की क्रिया । गरत ।
फेरा । बाँस का थना बड़ा
टोकरा ।

दौरान—(अ०) समय चक्र ।
जमाना ।

दौलत—(पु० अ०) धन ।
संपत्ति । —खाना = (पु०
पा०) निवासस्थान । घर ।
—मद = (वि० पा०) धनी ।
संपन्न ।

द्युति—(स्त्री० सं०) क्रांति ।
चमकाना । शोभा । किरण ।

द्युत—(पु० सं०) बुद्धि ।

द्योतक—(वि० सं०) प्रकाशक ।
बतलानेवाला ।

द्रव—(पु० सं०) बहाव । रस ।

(०) द्रवीभूत = (वि० सं०) जो
पानी की तरह पतला हो
गया हो । पिघला हुआ ।

द्रव्य—(पु० सं०) पदार्थ । चीज़ ।
सामग्री । धन ।

द्रष्टव्य—(वि० सं०) देखने योग्य ।

द्रष्टा—(वि० सं०) देखनेवाला ।
दृशक ।

द्रावक—(वि० सं०) ठास चीज़
को पानी की तरह पतला
करनेवाला । पिघलानेवाला ।
हृदय पर प्रभाव डालनेवाला ।

द्रुत—(वि० सं०) तेज़ । जल्द ।
—गति = (सं०) शीघ्रगामी ।
—गामी = (वि० सं०) तेज़
चलनेवाला । —विलंबित =
(सं०) एक क्षुब्ध ।

द्रुम—(पु० सं०) वृक्ष । पेड़ ।

द्रुह—(पु० सं०) जोड़ों । दो
आदमियों की परस्पर लड़ाई ।

।। किंगों । इह = (पु० सं०)
।। जोड़ा । दो आदमियों की
लड़ाई ।

द्वादश—(वि० सं०) बारह ।

चारहवाँ । द्वादशी = (स०)

चारहवाँ तिथि ।

द्वारा—(पु० हि०) जरिये से ।

द्वितीय—(वि० स०) दूसरा ।

द्विदल शासन प्रणाली—(स्त्री०

स०) द्वैत शासन प्रणाली ।

एक प्रकार को शासन प्रणाली

या सरकार जिसमें शासन

अधिकार दो भिन्न-यक्तियों

के हाथ में रहता है ।

द्वितीया—(स्त्री० स०) दूज ।

द्वीप—(पु० स०) स्थल का वह

भाग जो चारों ओर जल से

घिरा हो ।

द्वेष—(पु० स०) घैर । शत्रुता ।

द्वेषी—(वि० हि०) विरोधी । चिद

रत्नवेवाला ।

द्वेष शासन प्रणाली—(स्त्री०

स०) एक प्रकार की शासन

प्रणाली या सरकार, जिसमें

शासन अधिकार दो भिन्न

व्यक्तियों के हाथ में रहता है ।

द्विदल शासन प्रणाली ।

द्वेषीभाव—(पु० स०) एक से

लड़ना तथा दूसरे से सधि

करना । दोनों ओर मिलकर

रहना ।

घ—हिंदी घणमात्रा का उन्नीसवाँ

व्यंजन और तबग का चौथा

वर्ण ।

घघा—(पु० हि०) काम-काज ।

घँसना—(हि०) गड़ना । चुभना ।

घँसान = दलदल । घँसाव

— = घँसान । ढाल । उतार ।

धक—(स्त्री० अनु०) दिल के धड़

बने का शब्द । शक्ति ।

धकधकाना = हृदय का धड़

बना । धकधकाइट = धड़कन ।

आशका । धकधकी = जी की

धड़कन ।

धकका—(पु० हि०) टकर । रेल ।

धकमधका = रगड़ा । भेद ।

धकामुका = मुठभेद । मार-
पीट ।

धज—(स्त्री० हि०) मजाबट ।

धड—(पु० हि०) शरीर का मध्य
भाग जिसमें छाती पीठ
और पेट हाते हैं ।

धडकन—(स्त्री० हि०) हृदय का
स्पन्दन । धडकना = छाती का
धकधक करना । धडका =
खटका । भय । गिरने पड़ने
का शब्द । धदरजा = धडाका ।
धडाका = धमाके या गदगदा
हट का शब्द ।

धडाधड—(वि० अनु०) बार बार ।
धडाके के साथ ।

धडाम—(हि०) गिरने का शब्द ।

धडी—(स्त्री० हि०) चार या
पाँच सेर की एक तोल ।

धत्—(अव्य० अनु०) तिरस्कार
के साथ हटाने का शब्द ।

धता—(वि० अनु०) हटा हुआ ।
टाँल दना ।

धनूरा—(पु० हि०) एक पौधा ।

धधक—(स्त्री० अनु०) आग की

भदक । धधकना = लपट के
साथ जलना । दहकना ।

धन—(पु० स०) संपत्ति ।
दौलत । —हीन = दगिद्र ।
कगाल । धनाख्य = धनवान् ।
मालदार । धनो = धनवान् ।
मालदार ।

धनुष—(पु० स०) कमान ।
धनुषर = तीरदाज्ञ । धनुर्वात
= एक वायु राग जिसमें शरीर
धनुष की तरह झुक जाता है ।
धनुर्विद्या = धनुष चलाने
की विद्या । धनुर्वेद = यह
शास्त्र जिसमें धनुष चलाने
की विद्या का निरूपण हो ।
धन्वी = धनुषर । चतुर ।

धन्य—(वि० स०) पुण्यवान् ।
बड़ाई के योग्य । —वाद =
माधुवाद । शाबाशी । शुक्रिया ।

धटारा—(पु० देश०) निशान ।

धमन—(स्त्री० अनु०) भारी बीज
के गिरने का शब्द । पैर रखने
की आवाज़ । धमकना =
धमाका करना । पहुँचना ।

धमनी

- धमकाना = डराना। डँटना।
 धमकी = डँट डपट।
 धमनी—(स्त्री० स०) नस।
 धमाचौखंडी—(स्त्री० अनु०)
 उड़ल-शूद।
 धमार—(खा० अनु०) उपद्रव।
 धरणी—(स्त्री० स०) पृथ्वी।
 नादी।
 धरती—(स्त्री० हि०) पृथ्वी।
 ज़मीन।
 धरहर—(स्त्री० हि०) धर-पकड़।
 गिरप्रतारी।
 धराऊ—(वि० हि०) मामूली से
 अच्छा। बहुमूल्य। रक्खा
 हुआ।
 धरातल—(पु० स०) पृथ्वी।
 रकबा।
 धरोहर—(स्त्री० हि०) अमानत।
 थाली।
 धर्म—(पु० स०) स्वभाव।
 नित्य नियम। प्रकृति।
 मज़हब।—निष्ठ=धार्मिक।
 धम पराबण।—भीद=जिसे
 धम का भय हो।—शाब्द
 =बह मकान जो यात्रियों के

- ठहरने के लिये बना हो और
 जिसका कुछ भाड़ा आदि न
 लगता हो।—शाब्द=वा
 प्रय जिसमें समाज के शासन
 के निमित्त नीति और सदा
 धरि सम्यची नियम हों।
 धाफ—(पु० स०) रोष। दा
 दबा।—बँधना=आतक
 डाना।
 धातु—(स्त्री० स०) खनिज
 पदार्थ। धीय।
 धाम—(पु० स०) शरीर। देव
 स्थान या पुण्य स्थान। पर
 लोक। स्वर्ग।
 धाय—(स्त्री० हि०) दाईं। धात्री।
 धार—(पु० सं०) झोर से पानी
 धरना।
 धारणा—(स्त्री० स०) अत्रल।
 याद।
 धारा—(स्त्री० स०) पानी का
 बहाव या गिराव।
 धारी—(वि० हि०) धारवा करने
 वाला। लकीर।—दार=
 लकीरोंवाला।

धारोष्ण—(पु० स०) यन से
निकला हुआ ताजा दूध।

धावा—(पु० हि०) हमला।
चढ़ाई।

धिकू—(अध्य० स०) लानत।
निदा। धिक्कार=लानत।
फटकार। धिक्कारा=फट
कारना। घुरा भज्जा कहना।

धींगार्धीगी—(स्त्री० हि०)
शरारत। ज़बरदस्ती।

धींगामुस्ती—(स्त्री० हि०)
शरारत। उपद्रव। बदमाशी।

धोमा—(वि० हि०) मद।

धीर—(वि० स०) धैर्यशाला।
तम्र।

धीरज—(पु० हि०) धीरता।
धैर्य।

धीरे—(क्रि० हि०) आहिस्ते से।
मद-मद।

धीवर—(पु० स०) मछुवा
मल्लाह।

धुध—(स्त्री० हि०) धँधेरा।

धुध्राँ—(पु० हि०) धूम।
—कश=स्त्रीमर।

धुकड धुकड—(पु० अनु०)
घबराहट। आगा पीछा।

धुकधुकी—(स्त्री० अनु०) पेट
थीर छाती के बीच का भाग
जो रुद्ध गहरा सा होता है।

धुन—(पु० हि०) लगन।

धुनफना—(क्रि० हि०) रुई स
दिनौले अलग करना।
धुनकी=रुई धुनने का धनुष।
धुनियाँ=रुई धुननेवाला।

धुरधर—(वि० स०) भार
उठानेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान।

धुरइ—(स्त्री० हि०) कुएँ से
पुर द्वारा पानी निकालने में
सहायक बॉस।

धुरा—(पु० हि०) वह बड़ा
जिसमें पहिया पहनाया रहता
है थीर जिम पर वह घूमता
है। धुरी=छोटा धुरा।
धुरीण=घोसू सँभालने
वाला। मुख्य। प्रधान।

धुराँ—(पु० हि०) किसी चीज
का अत्यंत छोटा भाग। कण।
ज़रा।

धुलना—(क्रि० हि०) धोना

लाना । धुलवाना = धोने का काम दूसरे से करवाना ।
धुलाई = धोने का काम । धोने की मज़दूरी । धुलाना = धुलवाना ।

धुवाँ—(पु० हि०) धूम ।

धुम्स—(पु० हि०) टीला ।

मिठी आदि का ऊँचा ढेर ।

धुस्सा—(पु० हि०) मोटे ऊन की लोई ।

धुआँधार—(पु० हि०) धुएँ से भरा हुआ ।

धूना—(पु० हि०) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा पेड़ ।

धूनी—(छा० हि०) धूप ।

गुग्गुल, लोबान आदि गंध द्रव्यों या और किसी वस्तु का जलाकर उठाया हुआ धुआँ । अलाव ।

धूप—(पु० स०) सुगंधित धूम । घाम । —घड़ी = एक घण्टे के समय धूप में समय का जान होता है । —छाँट = एक रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग

दिखाई पड़ता है, कभी दूसरा ।
—बत्ती = मसाला जगी हुई सोंक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है ।

धूम्र—(पु० स०) धुआँ ।

—केतु = पुच्छल तारा । घाम ।

—धाम = मीठ भाव और तेयारा । समारोह । —पान = मिर्गरेट या तम्बाकू पीना ।

धूर्त्त—(वि० स०) दली ।

दगागाज । —ता = चाल बाजी । दल ।

धूल—(स्त्री० हि०) गद । रज । (स०) धूलि ।

धूसर—(वि० स०) धूल के रंग का । मटमैला । धूल से भरा ।

धृष्टता—(स्त्री० स०) टिगाई । गुरताली । निलज्जता ।

धेनु—(स्त्री० स०) गाय ।

ध्येय—(वि० स०) धारण करने योग्य ।

धेली—(स्त्री० हि०) झटपटी ।

धैर्य—(पु० स०) धीरता ।
सम्र ।

धौंधा—(पु० हि०) लोंढा ।
वेहील पिष्ट ।

धोसा—(पु० हि०) छल ।
दसा । धोखेबाज़ = धोखा
देनेवाला । छली । धोखेबाजी
= छल कपट ।

धोती—(स्त्री० हि०) फमर से
नीचे पहनने का कपड़ा ।

धोना—(क्रि० हि०) पानी से
साफ़ करना ।

धोक्ना—(क्रि० हि०)
आग पर, उसे दहकाने के
लिये भायी दबाकर हवा
का झोंका पहुँचाना ।

धोरनी—(स्त्री० हि०) भाथी ।

धोस—(स्त्री० हि०) धमकी ।
ढाँट । —पट्टी = मुलावा ।
दम दिलासा ।

धोराहर—(पु० हि०) ऊँची
थ गी ।

धौल धम्मा—(पु० हि०)
आघात । चपे ।

ध्यान—(पु० म०) भावना ।
विचार । याद ।

धुपद—(पु० हि०) एक गेत ।

धुज—(वि० म०) अचल ।
इधर उधर न हटनेवाला ।
धुजतारा । —दर्शक =
मसर्पिमडल । कुतुबनुमा ।

धुसक—(वि० स०) ताश
करनेवाला ।

धुज—(पु० स०) चिह्न ।
निशान । झडा । धुजा =
पताना । झडा ।

धुनि—(स्त्री० स०) शब्द । नाद ।
आवाज़ । —त = प्रकट किया
हुआ । बजाया हुआ ।

या दूफानों आदि को वह
 छापी जिसमें भेजो जानेवाली
 चिट्ठियों की नकल रहती है ।
 नकली (अ०) = जो असली
 न हो । बनावटो ।
 नकसीर—(स्त्री० हि०) नाक
 से खून बहना ।
 नकाश—(स्त्री० अ०) मुँह
 झिपाने का परदा ।
 नकाशी—(स्त्री० अ०) धातु या
 पत्थर आदि पर खोदकर बेल
 बूटे आदि बनाने का काम या
 विद्या । —दार = (अ० ×
 फ्रा०) जिस पर नकाशी हो ।
 नकाहत—(अ०) रोग के बाद
 की दुबलता । कमज़ोरी ।
 नकीव—(पु० अ०) भाट ।
 चारण ।
 नकेल—(स्त्री० हि०) ऊँट की
 नाक में बँधी हुई रस्सी ।
 नक़ारारा—(पु० फ्रा०) नगाड़ा ।
 नक़ारखाना = नौबतखाना ।
 नक़ारचा = नगाड़ा बजाने
 वाला ।
 नक़काल—(पु० अ०) नकल

करनेवाला । नक़ाली = (स्त्री०
 अ०) नकल करने का काम ।
 नक़काश—(पु० अ०) वह जो
 खोदकर बेल बूटे आदि बनाता
 हो । नक़ाशी = धातु या पत्थर
 आदि पर खोदकर बेल बूटे
 आदि बनाने की विद्या ।—
 दार = जिस पर खोदकर
 बेल-बूटे बनाये गये हों ।
 नक़कू—(वि० हि०) बड़ी नाक-
 वाला ।
 नक़श—(वि० अ०) सींचा,
 बनाया या लिखा हुआ ।
 —निगार = (फ्रा०) बनाये
 हुए बेल-बूटे आदि । नक़ाशी ।
 नक़शा = चित्र । स्केच । मैप ।
 —नयीस = नक़शा बनाने
 वाला । —नवीसी = नक़शा
 बनाना । नक़शो = जिस पर
 बेल-बूटे बने हों ।
 नक़त्र—(पु० स०) तारे ।
 नक़र—(पु० स०) हाथ या पैर
 का नाखून ।
 नक़रारा—(पु० फ्रा०) हाव भाव ।
 चौबला । नाज़ । —तिरला

नख्खिर

= नखरा । नाज़ नखरशाज़
 =(वि० फा०) नखरा
 कानवाना । नखरेबाज़ा =
 (फा०) चोचलापन ।

नखाशख—(पु० स०) नख से
 लेकर गिन्ना तक के सब अंग ।

नखास—(पु० अ०) वह याज़ार
 जिसमें पशु शिपेत घोड़े
 बिकने हैं ।

नग—(फ्रा०) नगीना ।

नगएय—(वि० स०) तुच्छ ।

नगर—(पु० स०) शहर ।

—कीत्तन=(पु० स०) घड़
 गाना, बजाना या कीत्तन
 ज़िमे नगर का गलियों
 और सड़कों में धूम धूमकर
 रुद्ध लोग करें । नगरी =
 (स०) शहर । नगर ।

नगीना—(पु० हि०) रत्न ।

मणि । —साज़=(फा०)
 घड़ जो नगीना बनावता या
 बंदता हो ।

नखाना—(हि० हि०) नाथ
 कराना ।

नहाफ—(अ०) धुनिया । हई
 धुननेवाला ।

नज़दाक—(वि० फा०) पास ।
 समीप । नज़दीकी = निकटस्थ ।

नज़म्—(स्त्री० अ०) कविता ।
 पद्य ।

नज़र—(स्त्री० अ०) निगाह ।
 चितवन । कृपादृष्टि । निगरानी ।
 ध्यान । भेंद । —बद = ज़िमे
 नज़रबन्दा की सजा दी जाय ।
 —बन्दा = वह सज़ा जिसमें
 दक्षिण पुरुष किसी नियत स्थान
 पर रखा जाता है और उस
 पर कड़ी निगरानी रहती है ।
 जादूगरी । —बाग = वह बाग
 जो महलों या बड़े बड़े मकानों
 आदि के सामने या चारों
 ओर उनके अहाते के अंदर
 ही रहता है । —सानी =
 किसी किये हुए कार्य या
 लिखे हुए लेख आदि को,
 उसमें सुधार या परिवर्तन
 करने के लिये फिर से देखना ।
 नज़राना = नज़र खर्च जाना ।
 भेंद । टपहार ।

नजरत—(अ०) तरोताजगी ।
 नजला—(पु० अ०) एक प्रकार
 का रोग । —बन्द = अक्रम
 और चूने आदि का वह फाहा
 जो नजले को गिरने से रोकने
 के लिये दोनों कनपटियों पर
 लगाया जाता है ।
 नजाकत—(स्त्री० फा०) सुकृमा
 रता । कोमलता ।
 नजात—(स्त्री० अ०) मोक्ष ।
 मुक्ति । छुटकारा ।
 नजामत—(स्त्री० अ०) नाज़िम
 का पद । नाज़िम का मह
 कमा या विभाग ।
 नजारत—(स्त्री० अ०) नाज़िर
 का पद । नाज़िर का मह
 कमा ।
 नजारा—(पु० अ०) दरय ।
 नजर । —बाजी = स्त्री या
 पुरुष का दूसरे पुरुष या स्त्री
 को प्रेम या लालसा की दृष्टि
 से देखना ।
 नज़िल—(अ०) अपवित्र ।
 नजीर—(स्त्री० अ०) उदा-
 हरण । गिराव । बपगा ।

नजूम—(पु० अ०) ज्योतिष
 विद्या । नजूमी = ज्योतिषी ।
 नजूल—(पु० अ०) सरकारी
 जमीन ।
 नट—(पु० स०) नाटक का
 पात्र । एक जाति के पुरुष जो
 गा बजाकर और तरह तरह के
 खेल दिखाकर अपना निर्वाह
 करते हैं । नटी = (स०) नट
 जाति की स्त्री । नाचनेवाली
 स्त्री । अभिनेत्री । वेश्या ।
 नट की स्त्री ।
 नटराट—(वि० हि०) ऊधमी ।
 नटखटी = बदमाशी ।
 नताइज—(अ०) नतीजे का
 बहुवचन । परिणाम । शरज ।
 नथ—(स्त्री० हि०) एक गहना
 जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती
 हैं ।
 नथना—(पु० हि०) नाक का
 अगला भाग ।
 नथनी—(स्त्री० हि०) नाक में
 पहनने की छोटी नथ ।
 गधुनी ।
 नद—(पु० स०) पक्षी नदी ।

नदामत—(अ०) लज्जा ।
शरमि-दगी ।

नदारद—(वि० पा०) गायक ।

नदी—(स्त्री० स०) दरिया ।

नधना—(क्रि० हि०) जुगना ।

नाद, ननद—(स्त्री० हि०) पति
को बहन ।

ननसार—(स्त्री० हि०) नाना
का घर ।

ननिहाल—(पु० हि०) नाना
का घर ।

नन्हा—(वि० नि०) छोटा ।

नपुंसक—(पु० स०) नामदं ।

नफर—(पु० प्रा०) दास ।
सेवक । (अ०) व्यक्ति । एक
छादमी ।

नफरत—(स्त्री० अ०) घिन ।
शृण ।

नफरी—(स्त्री० क्रा०) एक
मजदूर की एक दिन की मज
दूरी या एक दिन का काम ।

नफस—(अ०) दम । स्वास ।

नफनानी—(अ०) कामेच्छा
संबंधी ।

नफ्ता—(पु० अ०) फायदा ।
लाभ ।

नफासत—(स्त्री० अ०) उम्दा
पन । अच्छाई ।

नफीरी—(स्त्री० का०) सुरही ।
गहनाई ।

नफीस—(अ०) सुन्दर । सुघर ।
बहुमूल्य ।

नफस—(वि० अ०) उमदा ।
यदिया । साप्र । सुदर ।

नफसे अम्मारा—(अ०) विषय
वासना । प्रवृत्ति ।

नवात—(अ०) हरी शास ।
तरकारी । सब्जी ।

नवज—(स्त्री० अ०) नाडी ।

नभ—(पु० हि०) आकाश ।
आसमान ।

नम—(वि० क०) गीला । तर ।

नमक—(पु० । का०) लवण ।
नोत । —द्वार—(वि०

प्रा०) नमक खानेवाला ।
पालित होने वाला । —दान—

(पु० हि०) पिसा हुआ नमक
रखने का पात्र । —सार—
(पु० पा०) वह स्थान

जहाँ नमक निकलता या
बनता हो।—हराम = कृतघ्न।
—हरामी = कृतघ्नता। —
हजाल = स्वामि भक्त।
—हजाली = स्वामि भक्ति।
नमकीन = (वि० फ्रा०)
जिममें तमक का सा स्वाद
हो। रूखसूरत।

नमगा—(पु० फ्रा०) जमाया
हुआ लगी कबल या कपड़ा।

नमस्कार—(पु० स०) प्रणाम।
मुँकर अभिवादन करना।

नमस्ते—(स०) तमस्कार।

नमाज—(स्त्री० फ्रा०) मुसल
मानों की ईश्वर प्रार्थना।

—गाह = (स्त्री० फ्रा०)

ममजिद में यह जगह जहाँ

नमाज पढ़ी जाती है।

—बद = (फ्रा०) दुरती

का एक प्रकार का पेंच।

नमाज़ी = (पु० फ्रा०) नमाज

पढ़नेवाला।

नमी—(स्त्री० प्रा०) गीला

पन। तरी।

नमूदार—(वि० फ्रा०) प्रकट।
जाहिर।

नमूना—(पु० फ्रा०) बानगी
आदर्श।

नम्र—(वि० स०) जिसमें नम्रता
हो। विनीत। मुका हुआ।

नय—(फ्रा०) याँसुरी।

नयन—(पु० स०) नेत्र। आँरा।

नया—(वि० हि०) नवीन।
ताजा। नूतन।

नर—(पु० स०) पुरुष।
आदमी।

नरई—(स्त्री० देश०) गेहूँ की
वाल का ढठल।

नरक—(पु० स०) दोऊप्र।

नरकट—(पु० हि०) बेंत की
तरह का एक पौधा।

नरगिस—(पु० फ्रा०) एक
फूल।

नरद—(स्त्री० हि०) चौसर
खेलने की मोटी।

नरमा—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार की कपास।

नर मेश—(फ्रा०) मेंढा।

नरमिहा—(पु० हि०) एक
भाजा ।

नरो—(स्त्री० प्रा०) बकरी या
बकरे का रेंगा हुआ चमड़ा ।
मुजायम चमड़ा ।

नरोड—(पु० सं०) राजा ।

नरोश—(पु० सं०) राजा ।

नरानम—(पु० सं०) ईश्वर ।
भगवान ।

नरोह—(स्त्री० देश०) पिहला
का हड्डी ।

नर्म—(प्रा०) मुजायम । गुद
गुदा ।

नर्मी—(स्त्री० हि०) कोमलता ।
नम्रता ।

नल—(पु० हि०) पनाजा ।
छोटे या सामे का पोछा लम्बा
छुद ।

नला—(पु० हि०) पेहू के अक्षर
की वह नाली जिममें से
होकर पेशाब नीचे उतरता
है ।

नली—(स्त्री० सं०) छोटा या
पतला मल । तब के आकार
की थाली हड्डी ।

नयम्वर—(पु० सं०) शीमड़ी का
स्फारदवा महीना ।

नय—(पु० सं०) नवीन । नया ।

—ग्रह = (पु० सं०) सूर्य,

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु शुक,

शनि, शङ्ख और केतु य ग्रह ।

नयमी = (सं०) नवी तिथि ।

—युवक = (सं०) नौजवान ।

तरुण । —यौवना = (सं०)

नौजवान औरत । —रस =

(सं०) मोती, पत्ता मातिका,

गोमेद, हीरा, मूंगा, छह

मुनिया, पचराग और तीखन

या सषाहर ये नी रस ।

—रस = (सं०) कास्य के

नी रस—शुद्धार कदव,

हास्य, रौद्र, वीर, भयानक,

वीर्यम, अद्भुत और शांत ।

नयला = (स्त्री० सं०) नई

स्त्री । तरुणी । —शिक्षित =

(सं०) यह जिसने अभी

हाल में कुछ पढ़ा या सीखा

हो ।

नयाजिहा—(स्त्री० प्रा०) मेहर
धानी । शृषा । इनायत ।

नवाव—(पु० अ०) बादशाह का प्रतिनिधि, जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त हो । —ज़ादा = (पु० फा०) नवाब का पुत्र ।
 नवाबी = (हि०) नवाब का पद । नवाब का काम ।
 नवार—(फा०) निवाह, जिससे पत्न्य पुत्र जाते हैं ।
 नवासा—(फा०) दीहित्र । बेटी का वेग ।
 नवाह—(अ०) दिशा में । आस पास ।
 नशीन—(वि० स०) नया । ताजा । —ता = (हि०) नयापन ।
 नवीस—(पु० फा०) लिखने वाला । लेखक । नवीसी = लिखाई ।
 नशा—(पु० फा०) मतमादा पन । —खोर = मशेराज़ ।
 नशीनुमा—(अ०) पैदा हुना । बढ़ना ।
 नशीन—(वि० फा०) बैठनेवाला ।
 नशीला—(वि० फा०) नशा

खाने वाला । मादक ।
 नशेराज़ = (पु० फा०) नशा वाला ।

नशतर—(पु० फा०) फाटा चारन का तेज़ चाकू ।

नष्ट—(वि० स०) बरबाद ।

नस—(स्त्री० हि०) रक्त शक्तिनी पतला नला । रग ।

नस्तालीक—(पु० अ०) यह ज़िमका रग-उग बहुत अच्छा और सुन्दर हा ।

नसर—(स्त्री० अ०) गध ।

नसल—(स्त्री० अ०) घर । खानदान ।

नसीब—(पु० अ०) भाग्य । तर्कदोर ।

नसीम—(पु० अ०) ठंडी । धीमी और बढ़िया ।

नसीहत—(स्त्री० अ०) उपदेश । सीख ।

नस्तालीक गो—(अ०) शुद्ध और स्वच्छ लिखने वाला ।

नहदू—(पु० हि०) विवाह की एक रस्म ।

नहर—(स्त्री० फा०) जज़ बहाते

नाद

जानघरों की नाव की नकेल
 या रस्मी ।
 नाद—(पु० स०) शब्द ।
 आवाज । ध्वनि ।
 नादान—(वि० फा०) अन
 ज्ञान । मूर्ख । नादानी =
 नासमझी । अज्ञान ।
 नादार—(वि० फा०) निधन ।
 फगल ।
 नादारी—(स्त्री० फा०) गरीबी ।
 निधनता ।
 नादिम—(वि० अ०) उज्जित ।
 शरमिन्दा ।
 नादिर—(फा०) तुइफा ।
 नादिरशाही—(स्त्री० फ्रा०)
 ऐसा अघेर जैसा नादिरशाह
 ने दिल्ली में मचाया था ।
 नादिहद्—(वि० फा०) न
 देनेवाला ।
 नादिहदी—(स्त्री० फा०) किरा
 का कुछ न देने की प्रवृत्ति ।
 नादुरुम्त—(फा०) अशुद्ध ।
 शकत ।
 नाधना—(क्रि० हि०) जोतना ।
 नाघा—(पु० हि०) वह रस्ती ।

वा चमड़े की पट्टी जिससे
 हल वा कोरूह की हरिम
 जुए में बाँधी जाती है ।

नान—(फा०) रोटी । —बाईं =
 रोटी शाक बेचनेवाला ।
 —खताईं = मीठी खस्ता
 टिकिया ।

नानकोआपारेसन—(पु० अ०)
 असहयोग ।

नाना—(वि० स०) बहुत तरह
 के । बहुत । मामा का बाप ।
 ननिहाल = (हि०) नानी
 का घर । नानी = माता के
 माता ।

नाप—(स्त्री० हि०) माप ।
 परिमाण । नापने का काम ।
 —तोल = (हि०) नापने
 और तौलने की क्रिया ।
 नापना = मापना । छरबाईं,
 चौदाइ, गहराईं या ऊँचाई
 निश्चित करना ।

नापसर—(वि० फा०) जो
 पसन्द न हो । अस्वीकृत ।

नापाक—(वि० फा०) अशुद्ध

अपवित्र । नापाकी = अपवि-
त्रता । अशुद्धता ।
नापायदार—(वि० क्रा०) जो
टिकाऊ न हो । चणभगुर ।
नापायदारी = (फा०) चण-
भगुरता । अशुद्धता ।
नाफेरमाँ—(पु० क्रा०) अवज्ञा
करनेवाला । हुवम न मानने
वाला ।
नाफहम—(फा०) नासमक ।
नाफा—(पु० क्रा०) कस्तूरी की
थैली जो कस्तूरी मृगों की
नाभि में होती है ।
नाफी—(घ०) नष्ट करने वाला ।
नापदान—(पु० हि०) पनाखा ।
नरदा ।
नाबालिग—(वि० घ०) जिसका
खड़कपन अभी दूर न हुआ
है । नाबालिगी = नाबालिग
रहने का अवस्था ।
नाधीना—(फा०) अन्धा ।
नाबूद—(वि० फा०) नष्ट ।
नाभि—(घा० स०) पेट के
मध्य भाग । डोंरी ।
नामज़र—(वि० फा०) अश्वीकृत ।

नाम—(पु० हि०) वह शब्द
जिसमें किसी चीज या
व्यक्ति का बोध हो । सज्ञा ।
नामक = नाम से प्रसिद्ध ।—
करण = हिन्दुओं के सोलह
संस्कारों में स एक जिनमें
बच्चे का नाम रक्खा जाता है ।
—ज़द = प्रसिद्ध । मशहूर ।
—दार = नामी । प्रसिद्ध
प्रतिष्ठित । —धाम = नाम
धीर पता । पता ठिकाना ।—
धारी = नाम वाला । नामी ।
—वर = नामी । प्रसिद्ध ।
—वरी = कार्ति । प्रसिद्धि ।
नामावली = नामों की
सूची । नामी = मशहूर ।
नामो गिरामो = दिखाना ।
नामर्द—(वि० फा०) नपुंसक ।
हरपाक । नामर्दी = नपुंस-
कता । फायरपन ।
नामहदूद—(फा०) असीम ।
बेइद ।
नामा—(फा०) पत्र । खत । चिट्ठी ।
नामाकूल—(वि० घ०) अयाग्य ।
नालायत । उरलु ।

- प्रकट होना । प्रसिद्ध । स्पष्ट होना । धूप । —क=बह जो प्रकाश करे । यह जो प्रकट करे । पुनक छगनेवाला । —न=किमी पुस्तक का छपाका सबसाधारण में प्रचलित करने का काम । प्रकाशित=चमकता हुआ । प्रकट। छपो हुई । —मान=चमकीला । प्रसिद्ध । मशहूर ।
- कीर्णक—(पु० स०) अप्याय । विस्तार । फुटकर ।
- प्रकृत—(वि० स०) धसली । वास्तविक । स्वभाववाला ।
- प्रकृति—(स्त्री० सं०) स्वभाव । कुदरत । —सिद्ध=स्वाभाविक ।
- प्रकोप—(पु० सं०) बहुत अधिक कोप । किमी रोग को प्रवृत्तता ।
- प्रक्रिया—(स्त्री० सं०) तरीका ।
- प्रक्षिप्त—(पु० स०) धीछे ये मिलाया हुआ ।
- प्रखर—(वि० स०) तीक्ष्ण । प्रचण्ड । धरदार । पैना ।
- प्रत्यात—(वि० सं०) प्रसिद्ध । मशहूर ।
- प्रगल्भ—(वि० सं०) चतुर । प्रतिभाशाली । साहसी । निदर । निहज ।
- प्रचण्ड—(वि० सं०) तेज । प्रखर । प्रचल । मयहूर । कठोर । असह्य । बदा । बलवान् । बहुत गरम । प्रतापी ।
- प्रचलित—(वि० सं०) जारी । चलता हुआ ।
- प्रचार—(पु० सं०) चलन । रवाज । प्रसिद्ध । —कार्य =प्रचार करने का उग या काम । प्रौपैगडा । —क=फैलानेवाला । प्रचार करने वाला ।
- प्रचुर—(वि० सं०) बहुत । अधिक ।
- प्रच्युत—(वि० सं०) ढका हुआ । क्षिपा हुआ ।
- प्रजा—(स्त्री० सं०) मतान । रैयत । राज्य के निवासी । —पति=सृष्टि वा उत्पन्न करने वाला । मझा ।

राजा । —सत्ता = प्रजा द्वारा
संचालित राज्यप्र बन्ध ।

प्रणय—(स०) प्रेम । स्त्री पुट्ट
सम्बन्धी प्रेम । प्रणयिनी =
प्रेमिका । पत्नी । प्रणयी =
प्रेमी । प्रेम करनेवाला ।
पति ।

प्रणाली—(स्त्री० स०) नाली ।
प्रया । रीति । परिपाटी ।
त्रायदा । ढग ।

प्रणीत—(पु० स०) बनाया
हुआ । रचित । प्रणेत =
रचयिता । बनानेवाला ।
कर्ता ।

प्रताप—(पु० स०) पौरुष ।
वारता । तेज । इक्बाल ।
ताप ।

प्रति—(अध्य० हि०) लिये । हर
एक । श्वोर । तरफ । —कूल =
(स०) खिलाफ । विरुद्ध ।
—दान = चापस करना ।
परिवर्तन । विनिमय ।
—ध्वनि = प्रतिनाद । गूँज ।
—निधि = दूसरों का स्थान
पक्ष होकर फाम करने वाला ।

—फन = बदला । —विष =
परदाह । छाया । —क्षिपि =
लेख की नकल । —वाद =
विरोध । विगत । बहस ।
उत्तर । जवाब । —वादी =
वह जो प्रतिवाद करे ।
—पेव = मनाही । निषेध ।
खडन । —हिंसा = बैर
निकालना । बदला लेना ।

प्रतिज्ञा—(स्त्री० स०) प्रण । दृढ़
निश्चय । शपथ । —पत्र =
हजारनामा ।

प्रतिभा—(स्त्री० स०) बुद्धि ।
—शाली = विशेष बुद्धि
सम्पन्न ।

प्रतिमा—(स्त्री० स०) मूर्ति ।
छाया । प्रतिबिम्ब ।

प्रतिष्ठा—(स्त्री० स०) स्थापना ।
रखा जाना । ठहराव । देवता
की प्रतिमा की स्थापना । मान
मर्यादा । गौरव । प्रसिद्धि ।
यश । —पत्र = सम्मानपत्र ।
—प्रतिष्ठित = (स०) आदर-
प्राप्त । इज्जतदार ।

प्रतीकार—(पु० स०) बदला ।
प्रतिकार । इलाज ।

प्रतीक्षा—(स्त्री० स०) आसना ।
इन्तज़ार । —तीक्ष्णक =
इतज़ार करने वाला ।

प्रतीत—(वि० स०) जाना हुआ ।
विदित ।

प्रतीति—(स्त्री० स०) जानकारी
ज्ञान । विश्वास ।

प्रत्यक्षा—(स्त्री० हि०) धनुष की
ढोरी ।

प्रत्यक्ष—(वि० स०) जो देखा
जा सके ।

प्रत्यागमन—(पु० स०) लौट
घाना । वापसी । दोबारा
आना ।

प्रत्याघात—(पु० स०) चोट के
बदल की चोट । टक्कर ।

प्रत्युपकार—(पु० स०) उपकार
के बदल में उपकार । प्रायुष
पारी = उपकार का बदला देने
वाला ।

प्रत्येक—(वि० स०) हर एक ।
अलग अलग ।

प्रथम—(वि० स०) पहला ।
आदि या ।

प्रथा—(स्त्री० स०) रीति ।
रिवाज़ । नियम ।

प्रदक्षिणा—(स्त्री० स०) परि
भ्रमा । चारों ओर घूमना ।

प्रदेश—(पु० स०) प्रांत । सूबा ।
स्थान । जगह ।

प्रधान—(वि० स०) मुख्य ।
खास । श्रेष्ठ । मुखिया ।
नेता । मन्त्री । वज़ीर ।

प्रवध—(पु० स०) इतज़ाम ।
निबन्ध ।

प्रवल—(वि० स०) बलवान् ।
प्रचढ़ । तेज । ठम ।

प्रबोध—(पु० स०) ज्ञान । पूर्ण
ज्ञान । आरवासन ।

प्रभा—(स्त्री० स०) प्रकाश ।
धमक ।

प्रभात—(पु० स०) सवेरा ।

प्रभाव—(पु० स०) सामर्थ्य ।
असर ।

प्रभु—(पु० स०) स्वामी । अधि
पति । स्वामी । मांडिक ।

ईरर । —ता = बड़ाई ।
 मइर । दृष्टमत् ।
 प्रमाण—(पु० स०) सूत्र ।
 प्रमाणित = साबित ।
 प्रामाणिक = विश्वास योग्य ।
 प्रमाद—(पु० स०) भूत । भ्रम ।
 प्रमेद—(पु० स०) घातु गिरो
 का रोग ।
 प्रमेद—(पु० स०) धानन्द ।
 हृष । सुख ।
 प्रयत्न—(पु० स०) चेष्टा ।
 काशिश । प्रयास ।
 प्रयास—(पु० स०) प्रयत्न ।
 उद्योग । कोशिश ।
 प्रयुक्त—(वि० स०) अच्छी तरह
 मिला हुआ । सम्मिलित ।
 व्यवहार में आया हुआ ।
 प्रयोग—(पु० स०) साधन ।
 व्यवहार ।
 प्रयोजन—(पु० स०) काम ।
 काम । मतजब । गरज ।
 प्रलय—(पु० स०) विलीन
 होना । न रह जाना । ससार
 का तिराभाव ।

प्रलाप—(पु० स०) बकना ।
 व्यर्थ की बकनाद ।
 प्रलोभन—(पु० स०) लालच
 दिखाना ।
 प्रवर्त्तक—(पु० स०) सञ्चालक ।
 प्रवाद—(पु० स०) जनश्रुति ।
 अपवाद ।
 प्रवास—(पु० स०) विदेश
 रहना । परदेश का निवास ।
 परदेश । प्रवासी = परदेश में
 रहने वाला ।
 प्रवाह—(पु० स०) स्रोत ।
 बहाव । धारा । व्यवहार ।
 सिलसिला ।
 प्रवाहिका—(स्त्री० स०) बहाने-
 वाली ।
 प्रविष्ट—(वि० स०) भीतर पहुँचा
 हुआ । घुसा हुआ ।
 प्रवृत्त—(वि० स०) तत्पर । लगा
 हुआ । तैयार । प्रवृत्ति =
 लगन ।
 प्रवेश—(पु० स०) भीतर जाना ।
 घुसना । गति । पहुँच ।
 प्रशसक—(वि० स०) प्रशंसा
 करनेवाला । खुशामदा ।

प्रशोसा—(स्त्री० स०) स्तुति ।
बडाई । तारीफ ।

प्रशस्त—(वि० स०) प्रशस्तनीय ।
श्रेष्ठ । उत्तम । प्रशस्ति =
प्रशमा । सरनामा ।

प्रशन्न—(पु० स०) पूडताव ।
जिज्ञासा । समाज ।

प्रश्रास—(पु० स०) बाहर आती
साँस ।

प्रसंग—(पु० म०) मेल । सबध ।
जगाव । विषय या जगाव ।
अर्थ की मगति ।

प्रसन्न—(वि० स०) मन्तुष्ट ।
सुर ।

प्रसव—(पु० स०) बच्चा जनने की
क्रिया ।

प्रसाद—(पु० स०) प्रमदता ।
पृषा । सफाई । वह वस्तु जो
देवता को चढ़ाई जाय । देवता
या बडे का देन ।

प्रसिद्ध—(वि० स०) विख्यात ।
मशहूर ।

प्रसूता—(स्त्री० स०) बच्चा जनने
वाली स्त्री ।

प्रसून—(पु० स०) फूल । पुष्प ।
फल ।

प्रस्तर—(पु० स०) पत्थर ।

प्रस्ताव—(पु० म०) अवसर ।
विषय । ज्ञाक । शर्चा । सभा
समाज में ठढाई हुई बात ।
—क = प्रस्ताव उपस्थित
करनेवाला । प्रस्तावित =
जिमके लिये प्रस्ताव हुआ हो ।

प्रस्तुत—(वि० स०) प्राप्तिक ।
जो सामने हो । तैयार ।

प्रस्थान—(पु० स०) रवानगी ।
गमन । कूच ।

प्रहरो—(वि० स०) पहर पहर पर
घटा बजानेवाला । पहरवाला ।

प्रदस्तन—(पु० स०) हँसी ।
दिल्लीगी । नाटक का एक अंग ।

प्रहार—(पु० स०) आघात ।
वार । छोट ।

प्रात—(पु० स०) सीमा । छोर ।
सिरा । प्रदेश । खड ।

प्राइम मिनिस्टर—(पु० अ०)
किसी रा'प' या देश का
प्रधान मंत्री । बजीर आज़म ।
प्राइमर—(पु० सं०) किसी भाषा

की वह प्रारम्भिक पुस्तक जिसमें उस भाषा की वणमाला आदि दी गई हो ।

प्राग्मर—(वि० श्र०) प्रारम्भिक । प्राथमिक ।

प्राइवेट—(वि० श्र०) व्यक्तिगत । निजका । गुप्त । —सेक्रेटरी = किसी बड़े आदमी का निज का मन्त्री या सहायक ।

प्राकार—(पु० म०) केट । चहार दिवारी ।

प्राकृत—(वि० स०) प्रकृति-सचधी । स्वाभाविक । सहज । साधारण । नीच । बोलचाल की भाषा । एक प्राचीन भाषा । प्राकृतिक = जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो । कुदरती ।

प्राक्सि—(स्त्री० श्र०) प्रतिनिधि पत्र । प्रतिनिधि ।

प्राचीन—(वि० स०) पुरम का । पुराना । पुरातन ।

प्राण—(पु० स०) वायु । जान ।
—दृढ = मोठ की सजा ।
—प्रतिष्ठा = प्राण धारण कराना =

घातक प्राणायाम = योग शास्त्रानुसारयोग के आठ अगों में चौथा । साँस रोकने की क्रिया । प्राणी = प्राण धारी । जीव ।

प्रात काल—(पु० स०) सबेरे का समय । प्रात कालीन = प्रात काल सम्बन्धी । प्रत काल का । प्रात स्मरणीय = जो प्रात काल स्मरण करने के योग्य हो । श्रेष्ठ । पूज्य ।

प्राथमिक—(वि० स०) पहले का । प्रारम्भिक । आदिम ।

प्रादुर्भाव—(पु० म०) प्रकट होना । विकास ।

प्रादुर्भूत—(वि० स०) प्रकटित । विकसित । निकला हुआ । उत्पन्न ।

प्रादेशिक—(वि० स०) प्रदेश सम्बन्धी । प्रांतिक ।

प्राधान्य—(पु० स०) प्रधानता । श्रेष्ठता । मुख्यता ।

प्राप्त—(वि० स०) पाया हुआ । जो मिला हो । प्राप्ति =

- मिलना । उपलब्ध । पहुँच ।
 आय । फायदा ।
 ग्रामीसरी नोट—(पु० थ०)
 हुँदी ।
 प्राय—(वि० स०) बहुधा ।
 अकसर । जगमग । क़रीब
 क़रीब ।
 प्रायद्वीप—(पु० हि०) स्थल का
 वह भाग जो तीन ओर से
 पानी से घिरा हो और केवल
 एक ओर स्थल से मिला हो ।
 प्रायश्चित्त—(पु० स०) शास्त्रा
 नुसार वह कृत्य जिसके करने
 से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं ।
 प्रारम्भ—(पु० स०) आरम्भ ।
 शुरु । आदि । प्रारम्भिक =
 प्रारम्भ का । आदिम । प्राय
 मिक ।
 प्रारब्ध—(वि० स०) भाग्य ।
 त्रिस्मत ।
 प्राथना—(स्त्री० स०) निवेदन ।
 विनय । प्रार्थी = मँगने
 वाला । निवेदक । इच्छुक ।
 प्रास्ताव—(पु० स०) महल ।
 प्रास्पेक्टस—(पु० थ०) विवरण
 पत्र ।
 प्रिंटर—(पु० थ०) छापने वाला ।
 प्रिंटिंग—(स्त्री० थ०) छापने का
 काम । छपाई । —इक =
 टाइप के छापने की स्याही ।
 —प्रेम = छापखाना ।
 प्रिंस—(पु० थ०) राजकुमार ।
 शाहजादा । सरदार ।
 प्रिंस आफ वेल्स—(पु० थ०)
 इंग्लैण्ड का युवराज ।
 प्रिंसिपल—(पु० थ०) किसी
 बड़े विद्यालय या कॉलेज
 आदि का प्रधान अधिपति ।
 सिद्धान्त ।
 प्रिय—(स०) प्यारा । प्रियतम =
 शायों से भी बढ़कर प्रिय ।
 स्वामी । पति । —घर = अति-
 प्रिय । सब से प्यारा । प्रिया
 = स्त्री । प्रेमिका स्त्री ।
 प्रिचिलेज लीष—वह छुट्टी जिसे
 सरकारी तथा किसी गैर सर
 क़ारी संस्था या कम्पनी के
 नौकर कुछ निर्दिष्ट अवधि तक

काम करने के बाद पाने के अधिकारी होते हैं।

प्रिमी कैसिल—(पु० अ०)

किसी बड़े शासक को शासन के काम में सहायता देनेवाले कुछ घुने हुए लोगों का दग।

प्रीति—(स्त्री० सं०) आनन्द। प्रसन्नता। प्रेम। सुहृद्व्यत।

प्रीमियम—(पु० अ०) यह रकम जो जीवन या दुघटना आदि का बीमा कराने पर उस कंपनी का, जिसके यहाँ बीमा कराया गया हो, निश्चित समयों पर दी जाती है।

प्रीमियर—(पु० अ०) प्रधान मंत्री। वजीर आज़म।

प्रूफ—(पु० अ०) सवृत। प्रमाण। किसी छपने वाली चीज़ का वह नमूना जो उसके छपने से पहले अशुद्धियाँ आदि दूर करने के लिये तैयार किया जाता है। —रीडर=प्रूफ पढ़नेवाला।

प्रूम—(पु० अ०) सीसे का बना हुआ एक यंत्र जिसमें समुद्र की गहराई नापते हैं।

प्रेत—(पु० सं०) मरा हुआ मनुष्य।

प्रेम—(पु० सं०) स्नेह। अतुराग। प्रीति। —पात्र=प्रेमी। मायूक। प्रेमाज्ञाप=प्रेम की बातचीत। प्रेमार्जिणा=प्रेमपूर्वक गले लगाना। प्रेमा=अनुरागी। आसक्त।

प्रेरणा—(स्त्री० सं०) कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। दबाव। जोर। प्रेरित=भेजा हुआ। प्रवृत्त किया हुआ।

प्रेपक—(पु० सं०) भेजने वाला। प्रेरक। प्रेषित=भेजा हुआ।

प्रेस—(पु० अ०) छापने की कल। छापाखाना। —कम्युनिक किसी विषय के सम्बन्ध में वह सरकारी विज्ञप्ति वा वक्तव्य जो अखबारों को छापने के लिए दिया जाता है। —पेजट=वह कानून जिसके द्वारा छापे खाने वालों के अधिकारों और

प्रामीसरी नोट

- मिस्त्रना । उपलब्धि । पञ्च ।
 आय । फायदा ।
 प्रामीसरी नोट—(पु० अ०)
 हुंडी ।
 प्राय—(वि० स०) बहुधा ।
 अकर्म । लगभग । करीब
 करीब ।
 प्रायदाप—(पु० हि०) स्थल का
 वह भाग जो तान आर से
 पानी से बिरा हो और केवल
 एक ओर स्थल से मिला हो ।
 प्रायश्चित्त—(पु० स०) शास्त्रा
 नुसार वह कृत्य जिसके करने
 से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं ।
 प्रारभ—(पु० स०) आरभ ।
 शुरू । आदि । प्रारभिक =
 प्रारभ का । आदिम । प्राथ
 मिक ।
 प्रारब्ध—(वि० स०) भाग्य ।
 त्रिस्मत ।
 प्राधना—(स्त्री० स०) निवेदन ।
 विनय । प्रार्थी = माँगने
 वाला । निवेदक । इच्छुक ।
 प्रासाद—(पु० स०) महल ।

- प्रास्पेक्टस—(पु० अ०) विवरण
 पत्र ।
 प्रिंटर—(पु० अ०) छापने वाला ।
 प्रिंटिंग—(स्त्री० अ०) छापने का
 काम । छपाई । —इक =
 टाइप के छापने की स्याही ।
 —प्रेस = छापारखाना ।
 प्रिंस—(पु० अ०) राजकुमार ।
 शाहजादा । सरदार ।
 प्रिंस आफ वेल्स—(पु० अ०)
 इंग्लैंड का युवराज ।
 प्रिंसिपल—(पु० अ०) किसी
 बड़े विद्यालय या कॉलेज
 आदि का प्रधान अधिकारी ।
 सिद्धान्त ।
 प्रिय—(स०) प्यारा । प्रियतम =
 प्राणों से भी बढ़कर प्रिय ।
 स्वामी । पति । —घर = अति
 प्रिय । सब से प्यारा । प्रिया
 = स्त्री । प्रेमिका स्त्री ।
 प्रिविलेज लीव—वह छुट्टी जिसे
 सरकारी तथा किसी गैर सर
 कारी संस्था या कम्पनी के
 नौकर कुछ निर्दिष्ट अवधि तक

काम परा के बाद पाने के अधिकारी होते हैं।

प्रिची कौसिल—(पु० अ०)

किसी बड़े शासक को शासन के काम में सहायता देनेवाले कुछ चुने हुए लोगों का दम।

प्रीति—(स्त्री० स०) आनन्द।

प्रसन्नता। प्रेम। मुहव्यत।

प्रीमियम—(पु० अ०) वह रकम

जो जीवन या दुघटना आदि का बीमा कराने पर उस कम्पनी का, जिसके यहाँ बीमा कराया गया हो, निश्चित समयों पर दी जाती है।

प्रीमियर—(पु० अ०) प्रधान

मंत्री। वजीर या ज़म।

प्रूफ—(पु० अ०) स्यूत। प्रमाण।

किसी छपने वाली चीज़ का वह नमूना जो उसके छपने से पहले अशुद्धियाँ आदि दूर करने के लिये तैयार किया जाता है। —रीडर = प्रूफ पढ़नेवाला।

प्रूम—(पु० अ०) सीसे का बना हुआ एक यंत्र जिसमें समुद्र की गहराई नापते हैं।

प्रेत—(पु० स०) मरा हुआ मनुष्य।

प्रेम—(पु० स०) स्नेह। अतुल्य।

प्रीति। —पात्र = प्रेमी।

मायूक। प्रेमाज्ञाप = प्रेम की

बातचीत। प्रेमालिगन =

प्रेमपूर्वक गले लगाना।

प्रेमी = अनुरागी। आसक्त।

प्रेरणा—(स्त्री० स०) कार्य में

प्रवृत्त या नियुक्त करना।

उत्तेजना देना। दबाव। जोर।

प्रेरित = भेजा हुआ। प्रवृत्त

किया हुआ।

प्रेपक—(पु० स०) भेजने वाला।

प्रेरक। प्रेषित = भेजा हुआ।

प्रेस—(पु० अ०) छापने की कला।

छापाखाना। —कम्प्युनिक

किसी विषय के सम्बन्ध में वह

सरकारी विज्ञप्ति वा वक्तव्य जो

असवारों को छापने के लिए

दिया जाता है। —पेक्ट =

वह कानून जिसके द्वारा छापे

खाने वालों के अधिकारों और

प्राय दीवारों आदि पर चित्र
 पाया जाता है। पास्टर।
 सैटिनम—(पु० अ०) चॉटो के
 रङ्ग का एक बहुमूल्य धातु।

सैन—(पु० अ०) किमी घनने
 वाली इमारत का रेखा चित्र।
 नक्शा। ठाँचा। मनसूबा।
 तजरीज। योजना।

फ

फ

फटना

फ—हिन्दी ब्रह्ममाला में बाईंमनों
 यज्ञन और पवग का दूसरा
 वण।
 फकी—(स्त्री० हि०) फोंकने की
 दवा।
 फड—(पु० अ०) कोश।
 फदा—(पु० हि०) बन्धन। जाल।
 फँसना—(क्रि० स० हि०) बन्धन
 में पड़ना। पकड़ा जाना।
 उलझना।
 फर—(त्रि० हि०) । सफेद।
 बदरङ्ग।
 फक्त—(वि० अ०) बस।
 पर्याप्त। केवल। सिफ।
 फकीर—(पु० अ०) भिक्षुमहा।
 भिक्षुक। साधु। सत्तार
 त्वागी।

फावर—(पु० फ्रा०) गौरव।
 गर्व।
 फाजर—(स्त्री० अ०) प्रातःकाल।
 सवेरा।
 फाजल—(पु० अ०) कृपा। महर
 बानी।
 फाजीलत—(स्त्री० अ०) श्रेष्ठता।
 उत्कृष्टता। बढ़ाई।
 फाजीहत—(स्त्री० अ०) दुर्दशा।
 दुर्गति।
 फाजूल—(वि० फ्रा०) व्यर्थ।
 —खर्च = व्यर्थ। फाजूल
 खर्ची = व्यर्थ व्यय करना।
 फाटकना—(क्रि० हि०) फट् फट्
 शब्द करना। फाटकना।
 घाने देना।
 फाटका—(पु० अनु०) धुनिप की

धुनकी जिससे वह रह आदि
धुनता है ।

फटकार—(स्त्री० हि०) भिड़की ।
—ना = भिड़कना । उदा
लेना । मारना ।

फट्टा—(पु० हि०) चीरो हुआ बाँस
की छड़ । मुँहफट्ट आदमी ।
(स्त्री०) फट्टी ।

फड—(स्त्री० हि०) दाँव । जूए
या अड्डा । —बाज़ = अपने
यहाँ लोगों को जूआ खेलाने
वाला व्यक्ति ।

फडकन—(स्त्री० हि०) धड़कन ।
उत्सुकता । फड़कना = (अनु०)
फड़फड़ाना । उड़लना ।

फडनवीस—(पु० हि०) मराठोंके
राजत्वकाल का एक राजपद ।

फडफडाना—(क्रि० अनु०)
फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना ।
हिलाना ।

फडुआ, फडुहा—(पु० हि०) मिट्टी
खोदने और टालने का औजार ।
(स्त्री०) फडुही । फडुई ।

फण—(पु० स०) फन ।

फतवा—(पु० अ०) मुसलमानों

के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था
जो मौलवी देते हैं ।

फतह—(स्त्री० अ०) विजय ।
जीत । सफलता । —मन्द =
विजयी ।

फतिगा—(पु० हि०) पतिगा ।
पतङ्ग ।

फनोलसोज—(पु० फा०)
चिरागदान । दीवट ।

फतूर—(पु० अ०) विकार ।
दोष । तुकसान ।

फतूह—(स्त्री० अ०) जीत ।
विजय ।

फतूही—(स्त्री० अ०) सदरी ।
सलूका । मिलन या लूट का
धन ।

फनेह—(स्त्री० अ०) विजय । जीत
फन—(पु० हि०) फण ।

फन—(पु० फा०) गुण । खूबी ।
विद्या । दस्तकारी । झलने
का ढङ्ग ।

फना—(स्त्री० अ०) विनाश ।
यरवादी ।

फफोला—(पु० हि०) धाला ।
कलवा ।

फरती—(स्त्री० हि०) वह बात जो समय के अनुकूल हो।
व्यंग्य।

फवना—(क्रि० हि०) शोभा देना। सोहना।

फय्याज—(अ०) दाना। उदार। दाता।

फरक—(पु० अ०) पाथक्य। अलगवाव। दूरी। अंतर। भेद।

फरजद—(पु० फा०) पुत्र। लड़का।

फरजी—(पु० फा०) शतरंज का एक माहरा। कल्पित।

फरद—(स्त्री० अ०) लेखा वा वस्तुओं की सूची।

फरमाइश—(स्त्री० फा०) आना। आर्हर। माँग। फरमाइशी = जा फरमाइश करके बनवाया या मँगाया गया हो।

फरमान—(पु० फा०) राजकीय आनापत्र। अनुशासन पत्र। फरमाना = आज्ञा देना। कहना।

फर्याद—(स्त्री० फा०) शिकायत। नालिश।

फरलाग—(पु० अ०) दा सी थीस गज फी दूरी।

फरलो—(स्त्री० अ०) छुट्टी या सरकारी नौकरी का आधे वेतन पर मिलती है।

फरवरी—(पु० अ०) अङ्गरेजी सन् का दूसरा महीना।

फरश—(पु० अ०) विघावन। धरातल। समतल भूमि।
—शब्द = वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ फरश बना हो।

फरशी—(स्त्री० फा०) गुहगुही। हुष्का।

फरहग—(फा०) बुद्धि। अहं। कोप। फुझी।

फरहत—(स्त्री० अ०) आनंद। प्रसन्नता। मन शुद्धि।

फरहाद—(फा०) एक प्रतिद्व प्रेमी का नाम।

फराख—(वि० फा०) विस्तृत। लम्बा। चौड़ा। फराखी = चौड़ाई। विस्तार। फैलान।

फरागत—(स्त्री० अ०) छुटकारा। छुट्टी। निवृत्तना। निरिच्छत होना। माखाना जाना।

फ़राज़—(वि० फ़ा०) उँचा ।
 फ़रामोश—(वि० फ़ा०) भूला
 हुआ । विस्मृत ।
 फ़रार—(वि० घ०) भागा हुआ ।
 फ़रारी = भागा हुआ ।
 भगोड़ा ।
 फ़रासीस—(पु० फ़ा०) फ़्रांस
 का रहने वाला । फ़रासीसी =
 फ़्रांस का रहने वाला ।
 फ़्रांस का ।
 फ़राहम—(फ़ा०) इषट्टा । जमा ।
 फ़रियाद—(स्त्री० फ़ा) शिका
 यत । नालिश । फ़रियादी =
 फ़रियाद करने वाला ।
 फ़रिश्ता—(पु० फ़ा०) ईश्वरी
 दूत ।
 फ़रीक—(पु० घ०) मुकाबला
 करने वाला । ज़िरोधी । दूसरा
 पक्ष । प्रतियोगी । फ़रीक़ैन =
 फ़रीक का बहुवचन ।
 फ़रही—(स्त्री० हि०) छाटा
 फ़ारदा । मथानी ।
 फ़रेफ़ता—(वि० फ़ा०) लुभाया
 हुआ । आशिष्ट । आसक्त ।
 फ़रेब—(पु० फ़ा०) छल । धोखा ।

फ़पट । फ़रेबी = धान्येशज्ञ ।
 फ़पटी ।
 फ़रो—(वि० फ़ा०) दया हुआ ।
 तिरोहित ।
 फ़रोहत—(स्त्री० फ़ा०) विद्वय ।
 विन्नी । वेचना ।
 फ़रोश—(फ़ा०) । वेधनेवाला ।
 फ़फ़—(पु० घ०) भेद । अन्तर ।
 फ़र्ज—(पु० घ०) धार्मिक कृत्य ।
 फ़र्तम्य फ़र्म । उत्तर-दायित्व ।
 फ़ल्पना । मान लेना । फ़र्जी =
 कल्पित । सत्ताहीन ।
 फ़र्द—(स्त्री० फ़ा०) फ़ग़ज व
 फ़पडे आदि का टुकड़ा जो
 किसीके साथ जुड़ा वा लगा न
 हा । फ़ग़ज का टुकड़ा जिस
 पर किसी वस्तु का विवरण,
 लेखा, सूची वा सूचना आदि
 लिखी गइ हो या लिखी जायँ ।
 फ़र्म—(पु० घ०) व्यापारी व
 महाजनो कोठी । साके का
 कारवार ।
 फ़र्गटा—(पु० घ०) वेग ।
 तेजी ।
 फ़र्गश—(पु० घ०) नौकर ।

खिदमतगार। फर्शी =
 (वि० प्रा०) फर्श या फर्शा के
 बार्नों से सम्बन्ध रखनेवाला।
 फर्श—(स्त्री० अ०) विद्यावन।
 या विद्वाने का कपड़ा।
 फर्शी—(स्त्री० फा०) एक प्रकार
 का बड़ा हुका। फर्श का।
 फस्ट—(वि० अ०) पढ़ला।
 —झास = सवधेष्ट।
 फल—(पु० स०) वनस्पति का
 बीजकाश। परिणाम।
 नतीजा। वमभोग। गुण।
 प्रभाव। बदला। हलकी नोक।
 चाकू की धार।
 फलक—(पु० स०) तखता।
 पट्टी। वरक। पृष्ठ। (अ०)
 आकाश। स्वर्ग। आममान।
 फलदान—(पु० हि०) हिदुओं
 की एक रीति जो विवाह होने
 के पहले होती है।
 फर्ना—(वि० फा०) अमुक। काइ
 अनिश्चित।
 फर्नांग—(स्त्री० हि०) कुदान।
 शौकड़ी।
 फलालीन, फनालेन, फनालैन

—(पु० हि०) एक प्रकार का
 ऊनी वस्त्र। (अ०) प्रलैनल।
 फनाहारी—(पु० हि०) फल
 खानेवाला। जो फल खाकर
 निर्वाह करता हो।
 फलित—(वि० स०) फला
 हुआ। संपन्न। शूण।
 फली—(पु० हि०) छोमी।
 फलीभूत—(वि० स०) लाभ
 दायक। फलदायक।
 फवाद्द—(अ०) फायदे का बहू
 वचन। फलदायक।
 फव्वारा—(अ०) निम्न, जिसमें
 से पानी निकलता हो।
 फसल—(स्त्री० अ०) श्रुतु।
 मौसम। समय। काल।
 खेत की उपज। अन्न।
 फसली = श्रुतु सबधो। श्रुतु
 का। एक प्रकार का सवत्।
 —बुवार = बादा देकर खाने
 वाला बुवार।
 फसाद—(पु० अ०) बिगाड़।
 विचार। विद्राह। उपद्रव।
 मगदा जवाईं। विवाद।

- फसादी = उपद्रवी । भग
डालू । नटपट ।
फसाता—(फा०) किस्मा
कहानी ।
फसील—(थ०) परकोटा । शहर
पनाह । किले की दीवार ।
फनीह—(थ०) सुन्दर वस्त्र ।
अच्छा बोलनेवाला ।
फन्द—(खा० थ०) नम को छेद
कर शरीर का दूषित रक्त
निरालने की क्रिया ।
फस्त—(थ०) घट्टु । सेती ।
पुस्तक का एक भाग ।
फहम—(खी० थ०) ज्ञान ।
समझ । उद्भि ।
फहरना—(कि० हि०) वायु में
उड़ाना । फड़फड़ाना । फह
राना = (कि० हि०) उड़ाना ।
फहश—(वि० थ०) फूहड़ ।
अश्लील ।
फाक—(खी० हि०) छुरी आदि
से काटा हुआ टुकड़ा ।
फाँकना—(वि० हि०) कण या
चूर्ण को मुँह में फेंकर
साना । फाँका—(वि० हि०)

- चूण या कण जो एक बार में
मुँह में धा सके ।
फाँडा—(पु० वि०) दुपट्टे या
धोता का कमर में बँधा हुआ
हिस्सा ।
फाट—(खी० हि०) उद्घाल ।
फाँदना = फूदना । उद्घलना ।
फाँफी—(खी० हि०) बहुत
बारीक तह । दूध के ऊपर
पड़ी हुई मलाई को बहुत
पतली तह । जाला । माँदा ।
फाँस—(खी० हि०) बधन ।
पाश । फदा । फाँसना =
बाँधना । फूदना । जाल में
फँसाना । फाँसी = प्राणदण्ड
देने का फदा ।
फाइनांनशल—(वि० थ०)
मालगुजारी के मुताबिलक ।
माली ।
फाइनांनशल कमिश्नर—(पु०
थ०) वह सरकारी अफसर
जिसके अधीन किसी प्रदेश
का राजस्व विभाग या नाल
का महकमा हो ।

- फाइल—(पु० अ०) जुमाना ।
अर्थदंड ।
- फाइल—(वि० अ०) आखिरी ।
अंतिम ।
- फाइनाम—(पु० अ०) राजस्व
और उसका आय-व्यय की
पद्धति । अथ-व्यवस्था ।
- फाल—(खा० अ०) मिथिल ।
न्याय । सामर्थ्य पत्रों आदि
के कुछ पूरे अक्षरों का समूह ।
- फाउन्टेनपेन—(अ०) वह कजम
जिसमें अक्षर स्याही भरी
रहती है ।
- फाउडी—(खी० अ०) ढालन
का कारखाना ।
- फाउडेशन—(अ०) गार ।
- फाका—(पु० अ०) उपवास ।
- फाकामस्त, फाकोमस्त—(वि०
क्रा०) जो पैसा पास न रख
कर भी बेपरवा रहता हो ।
- फाखतइ—(वि० हि०) भूगण
लिये हुए लाल रंग ।
- फाखता—(अ०) पड्डन ।
- फाग—(पु० हि०) पागुन के
महीने में होनेवाला उत्सव ।
- फागुन—(पु० स०) माघ के बाद
का महीना । फाल्गुन ।
- फाजिल—(वि० अ०) जरूरत से
ज्यादा । खच या धाम से
बचा हुआ । निरर्थक । व्यर्थ ।
- फाजिल वाकी—(मी० अ०)
हिसाब का कमा या बेशी ।
हिसाब में का लाना या देना ।
- फाटन—(पु० हि०) बड़ा दर-
वाजा । तोरण ।
- फाटना—(वि० हि०) टूटना ।
खंडित होना । दरार पड़ना ।
- फाडना—(वि० हि०) धीरना ।
विदाण करना ।
- फातिहा—(पु० अ०) प्राथना ।
वह चढ़ाया जा मर हुए लोगों
के नाम पर दिया जाय ।
- फादर—(पु० अ०) पादरियों की
सम्मान सूचक उपाधि । पिता ।
बाप ।
- फानी—(अ०) नारवान ।
- फानूस—(पु० क्रा०) एक प्रकार
की बड़ी फदोल । (अ०)
काढ़ का वह हिस्सा जिसमें
बत्तियाँ जलाते हैं ।

फायदा—(पु० अ०) लाभ ।
नफा । आय । फायदेमंद =
लाभदायक । उपवारक ।

फायर—(पु० अ०) आग ।
बदक, तोप आदि हथियारों
का दगगा । —एजिन = आग
बुझाने की दमकल । —त्रिगेड
= आग बुझानेवाले कमचा-
रियो का टक । —मैन =
हजन में फोयला भोंकने का
काम करनेवाला ।

फारस्पती—(स्त्री० हि०)
चुक्ती । बेवाड़ी ।

फारम (फार्म)—(पु० अ०)
दरखास्त, बही खाने, रसीद
आदि के गमूने । छप ई में
एक पूरा तफ्ता जो एक बार
एक साथ छापा जाता हो ।

फारमुला—(पु० अ०) सकेत ।
सिद्धांत । फायदा । नुसखा ।

फारसी—(स्त्री० फा०) फारस
देश की भाषा ।

फारिग—(वि० अ०) काम से
छुट्टी पाया हुआ । निश्चिन्त ।
बेक्रिफ । छूटा हुआ । मुक्त ।

—उल् बाल = सपन्न । नि
श्चिन्त । —उल् बाली =
अमीरी । बेक्रिफ़ी ।

फारेन—(वि० अ०) दूसरे राष्ट्र
या देश का । वैदेशिक ।
पर गफ़्राय । —मिनिस्टर =
वैदेशिक मन्त्र ।

फार्म—(अ०) खेत ।

फाल—(अ०) पतन ।

फालतू—(वि० हि०) ज़रूरत से
ज्यादा । बढ़ती । निक्कमा ।

फालसा—(पु० फ़ा०) एक
प्रकार का छोटा पेड़ ।

फालिज—(पु० अ०) पचाघात ।
लज्बा मार जाना ।

फालदा—(पु० फ़ा०) पीने के
लिये बनाई हुई एक चीज़
जिसका व्यवहार प्राय मुसल-
मान करते हैं ।

फाल्गुन—(पु० स०) माघ के
बाद का महीना ।

फायडा—(पु० हि०) मिट्टी
रोदने का एक औज़ार ।

फाश—(वि० फा०) ख़ुजा ।
प्रकट । ज्ञात ।

- फामफरम—(पु० अ०) एक जलनेवाला द्रव ।
- फामला—(पु० अ०) त्रि । अंतर ।
- फान्ट—(वि० अ०) तज । गाध गामी ।
- फाहा—(पु० हि०) पाया ।
- फिन—(अ०) चिन्ता । माच ।
- फाहिशा—(वि० अ०) दिगल ।
- फिनरा—(पु० अ०) वायव । जुमला । भाँसापट्टी । दम बुत्ता । फिनरेवाज = भाँसा पट्टी देनेवाला । फिनरमानी = भाँसापट्टी देना ।
- फिक्र—(स्त्री० अ०) चिन्ता । —मन्द = (म०) चिन्तामस्त ।
- फिट—(अ० अ०) छी । धिक्कारने का शब्द । (अ०) उपयुक्त । टीक । जिसके कल्ल पुरज आदि टीक हों । मूर्च्छा ।
- फिटकार—(पु० हि०) धिक्कार । लानत ।
- फिटकिरी—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ ।
- फिटन—(स्त्री० अ०) चार पहिये का खुली घाड़ा गाड़ी ।
- फिनना—(पु० अ०) मगना । नला फमाद ।
- फिनरत—(अ०) स्वभाव । बुद्धि । कमजोरी । फिनरती = चालाक । चतुर । मायागी । धोमेवाज ।
- फितूर—(पु० अ०) कमी । मगदा । फितूरी = मगदाल । उपद्रवी ।
- फिदयी—(वि० अ०) आजाकारी ।
- फिदा—(अ०) आसक्त ।
- फिरग—(पु० अ०) गरमी । धातशक ।
- फिरगिस्तान—(पु० अ० फा०) फिरङ्गियों के रहने का देश । युरोप । गारों का देश ।
- फिरगी—(वि० हि०) गोरा । युरोपियन ।
- फिरट, फ्रट—(वि० अ०) बरुद । बिदाफ । बिगडा हुआ ।
- फिर—(वि० वि० हि०) एक बार और । दोबारा ।

फिरका—(अ०) जाति । सम्प्र
दाय ।

फिरकी—(स्त्री० हि०) लक्ष्मणों का
एक खिलौना ।

फिरदौस—(अ०) स्वग ।

फिरदौसी—(क्रा०) फारसी के
एक कवि का नाम ।

फिरना—(क्रि० हि०) इधर
उधर चलना । वापस आना ।

फिरनी—(स्त्री० फा०) एक
प्रकार का ब्राह्मण पदाथ ।

फिराक—(पु० अ०) वियोग ।
चिन्ता । सोच । टोह ।
सोज ।

फिरार—(पु० अ०) भागना ।
भाग जाना । फिरारी = भागने
वाला । भगोड़ा ।

फिरिश्ता—(पु० क्रा०) देवदूत ।

फिलसफा—(अ०) दशमशास्त्र ।
फिलासफी ।

फिलहाल—(अ०) तत्काल ।
क्रौरन् । अभी ।

फिलासफी—(स्त्री० अ०) दर्शन
शास्त्र । सिद्धांत या तत्त्व की
बात ।

फिल्ली—(स्त्री० देश०) करघे का
एक पुर्जा ।

फिशॉ—(क्रा०) झाड़ता हुआ ।
झाड़ने वाला ।

फिम—(वि० अनु०) कुछ नहीं ।

फिसट्टी—(अ० अनु०) जिमसे
कुछ करते धरते न बने ।

फिसलन—(स्त्री० हि०) रपटन ।
फिमलना = रपटना । खिस
लना ।

फिहरिश्त—(स्त्री० क्रा०) सूची ।
सूचीपत्र । बीजरु ।

फी—(अव्य० अ०) हरणक । प्रति
णक । भेद । अंतर । (अ०)
शुक्क । फीस ।

फोका—(वि० हि०) स्वादहीन ।
नीरस ।

फीता—(पु० पुत०) नेवार की
पतली धजी ।

फीरोजा—(पु० फा०) एक
बहुमूल्य पत्थर । फीरोजी =
(क्रा०) फीरोजे के रंग का ।
हरापन लिए नीला ।

फील—(पु० क्रा०) हाथी ।
—खाना = वह घर जहाँ हाथी

बांधा जाता है। —पाया =
 ईंटों का बना हुआ मोटा सभा
 जिस पर छत गढ़वाई जाती है।

फील्ड—(पु० अ०) खेत ।
 मैदान । गन् खेलने का मैदान ।

फील्ड पम्पुल्लेस—(पु० अ०)
 मैदानों प्रसफाज ।

फीवर—(पु० अ०) ज्वर ।
 उष्ण ।

फीम—(स्त्री० अ०) फर । मेहन
 ताना । बजस्त ।

फुँकनी—(स्त्री० हि०) नली
 जिसमें मुँह की हवा भरकर
 धाग दड़काने हैं ।

फुँकाना—(क्रि० हि०) फुँकने
 का काम करना ।

फुंसी—(स्त्री० हि०) छोटी
 फोडिया ।

फुचडा—(पु० देश०) कपड़े,
 दरी, कालोन, घगाई आदि
 बुनी हुई वस्तुओं में घाहर
 निपला हुआ सूत या रेशा ।

फुट—(वि० हि०) अकेला ।
 अलग । (अ०) एक नाप जो
 १२ इंच का होता है । पैर ।

—नाट = वह टिप्पणी जो
 किसी लक्ष्य वा पुस्तक के पृष्ठ
 में नाचे की ओर ली जाती
 है । —पाथ = (अ०) शहरों
 में सड़क का पट्टी पर का
 वह भाग जिस पर मनुष्य
 पैदल चलते हैं । —वाल =
 (अ०) बड़ा गेद जिसे पैर की
 टापर से उछालकर खेचते हैं ।

फुटकर—(वि० हि०) जिसका
 जोड़ा न हो । अकेला ।
 अलग । पृथक् । थोड़ा थोड़ा ।

फुटका—(पु० हि०) फफोला ।
 छाला । फुकी = बहुत छोटी
 अठी ।

फुदेहरा—(पु० हि०) घने वा
 सुना हुआ चयन ।

फुदकना—(क्रि० अनु०) उछल
 उछलकर फूटना । उछलना ।

फुदकी—(स्त्री० हि०) एक छोटी
 चिकिया ।

फुनगी—(स्त्री० हि०) शत्रु ।

फुफकार—(पु० अनु०) फूँक
 जो साँप मुँह से निकालता है ।

फ़ला—(पु० हि०) ज़ाया । शॉस
का एक रोग ।

फ़लो—(स्त्री० हि०) सकंद दाग
जो शॉस का पुतली पर पड़
जाती है ।

फ़हड—(वि० हि०) शेरऊर ।

फ़ंनना—(क्रि० हि०) अपना स
दूर गिराना ।

फ़ॉट—(स्त्री० हि०) कमर का
घेरा । पटुका । कमरबंद ।

फ़टना—(वि० हि०) लेप या
लेहू की तरह चीज़ को हाथ
या उँगला से मथना ।

फ़ॉटा—(पु० हि०) कमर का
घेरा । पटुका । कमरबंद ।

फ़ेन—(पु० म०) काग ।

फ़ेनिल—(वि० म०) फ़ेनयुक्त ।

फ़ेफ़डा—(पु० हि०) शॉस की
शैली ना धानी के नीचे होती
है । फ़ुफ़ुस ।

फ़ेर—(पु० हि०) चक्कर ।
धुमाय । परिवर्तन । अंतर ।

फ़क । असमझस । भ्रम ।
धोखा । झूठ । पवज़ ।

—फ़ार = परिवर्तन । उलट

पलट । फ़ेरा = चक्कर । परि
क्रमण । इधर स उधर
धूमना ।

फ़ेरा—(स्त्री० हि०) परिव्रता ।
प्रदक्षिणा । योगा या प्रकीर
का किसी यन्त्री में भिन्ना के
लिये घरावर शाना । धूम
फ़िरकर सौदा बेचना ।

फ़ेल—(पु० अ०) काम । वार्य ।
(अ०) अमृतकाय ।

फ़ेलो—(पु० अ०) सभासद ।
सभ्य ।

फ़लट—(पु० अ०) जमाया हुआ
ऊन ।

फ़ेस—(पु० अ०) चेहरा । मुँह ।
सामना । टाहप का वह ऊपरी
भाग जो छपने पर उभरता
है । —वेस्तु = वह दाम जो
चीज़ के ऊपर छपा रहता है ।

फ़ेहरिस्त—(स्त्री० फ़ा०) सूचीपत्र ।

फ़ॉसिंग—(अ०) तार लगाना ।
बाड़ बाँधना ।

फ़ाली—(वि० अ०) देखने में
सुन्दर ।

फ़ैकल्टी—(स्त्री० अ०) विश्व

विद्यालय के अन्तर्गत विद्वत्तम
मिति ।

फैन्टरी—(स्त्री० अ०) बारम्बाना ।

फैज—(पु० अ०) काम । वृद्धि ।
फल । परिणाम । दान । दौ ।

फैटम—(पु० अ०) गहराई की
एक नाप जो छ पुट की होती
है ।

फैन—(पु० अ०) परा ।

फैयाज—(वि० अ०) खुले दिख
का । उदार ।

फैयाजी—(स्त्री० अ०) उदारता ।

फैर—(स्त्री० अ०) बन्दूक तोप
आदि हथियारों का दगना ।

फैलना—(क्रि० हि०) स्थान
घेरना । व्यापक होना ।
छाना । भिन्नरना । छितराना ।

फैलसूफ—(वि० यू०) कज्जूल
सर्च ।

फैलाना—(क्रि० हि०) स्थान
घिरवाना । फैलाव = विस्तार ।
प्रसार । लम्बाई चौड़ाई ।

फैशन—(पु० अ०) ढंग । तज्ञ ।
चाल ।

फैसल—(अ०) न्याय करना ।
कगड़ा निश्चयता ।

फैसला—(पु० अ०) निणय ।

फैस्ट—(वि० हि०) तुच्छ ।
व्यथ । मुग्ध ।

फोफरु—(पु० अ०) फोटोग्राफी
में कैमरे के लेंस के मागने के
दृश्य का स्पष्ट करना ।

फोटो—(पु० अ०) फोटोग्राफी के
यंत्र द्वारा उतारा हुआ चित्र ।
फोटोग्राफ = छाया चित्र । —
ग्राफर = फोटोग्राफी का
काम करने वाला । —ग्राफी
= प्रकाश की किरणों द्वारा
आकृति वा प्रतिरूप उतारने
की क्रिया ।

फोडा—(पु० हि०) ग्रथ ।
फोड़िया = छोटा फावा ।
पुनमी ।

फोता—(पु० फा०) अटकौप ।

फोनोग्राफ—(पु० अ०) एक यंत्र
जिसमें गाए हुए राग, कही
हुई बातें और यज्ञाए हुए
वाजों का स्वर आदि चूड़ियों

में भरे रहते हैं और ज्यों क
थों सुनाई पड़ते हैं ।

फोरमैन—(पु० अ०) कारखानों
में कारीगरों और काम करन
वालों का सरदार वा जमा
दार ।

फोट—(पु० अ०) जिला । टुंग ।

फालाड—(पु०) इसपात ।

फोलिया—(पु० अ०) कागज
क तख्त वा आधा भाग ।

फौज—(स्त्री० अ०) सेना ।
लश्कर । —दार = मना का
प्रधान । मनापति । —दारी
= लड़ाई मगडा । मार पाट ।

फौजी—(वि० प्रा०) फौज
संबधी । सैनिक ।

फोट—(वि० अ०) नष्ट । मृत ।
गत ।

फोती—(वि० अ०) मृत्यु संबधी ।
मृत्यु का । —नामा = मृत
शक्तियों के नाम, पते की
सूची ।

फोरन—(क्रि० वि० अ०) तुरन्त ।
तत्काल ।

फोलाद—(पु० प्रा०) एक प्रकार

का लोहा । फौलादी =
फौलाद का रना हुआ ।

फोयारा—(पु० हि०) जल का
महीन छाय । जल के छूँटे
देनेवाला यंत्र ।

फ्राक—(पु० अ०) फ्रांस का
चाँदी का सिक्का ।

फ्राटियर—(पु० अ०) सरहद ।
सीमात ।

फ्रासीसी—(वि० फ्रांस) फ्रांस
देश का ।

फ्रास—(पु० अ०) लम्बी आन्तीन
का हीला उल्ला बुरता ।

फ्रिस्टेट—(स्त्री० अ०) छोड़े की
चहर का बना हुआ चौखटा
जो हाथ से चलाए जानेवाले
प्रेम क डाले में जडा रहता
है ।

फ्री—(वि० अ०) स्वतन्त्र । मुक्त ।
मुफ्त । फ्रीट्रेड = वह वाणिज्य
जिसमें माल के आने जाने पर
किसी प्रकार का बर या मह
सूज न लिया जाय ।

फ्रीमेसन—(पु० अ०) फ्रीमेसनरी नाम के गुप्त सघों का सम्बन्ध ।

फ्रीमेसनरी—(खी० अ०) एक प्रकार का गुप्त सघ या सभा जिसकी शाखा प्रशाखाएँ यूरोप, अमेरिका तथा उक्त गणध्याओं में हैं, वहाँ युगवियन हैं ।

फ्रॉन्ट—(वि० अ०) फ्रॉन्ट दश का ।
—पेपर = एक प्रकार का हलका, पतला और चिकना कागज ।

फ्रीम—(पु० अ०) चीकटा ।

फ्युडेटरी चीफ—(पु० अ०) सामन्तराजा । कर्द राजा ।
मांडलिक ।

फ्युडेटरी स्ट्र—(पु० अ०) यह छोटा राज्य या किसी बड़े राज्य के अन्तर्गत हो और उसे कर देता है ।

फताइव्वाय—(पु० अ०) प्रेम में वह लड़का जो प्रेम पर न अपने हुए वागज्ज अल्दी स मपत्वर उत्तारता है और उन पर धार्मिक दौड़ाकर एवाइ की श्रुति की सृष्टना प्रेममैत्र को देता है ।

फतूट—(पु० अ०) चली की तरह या एक छँदरेजी घाना ।

फ्लैग—(पु० अ०) मरदा ।
पताका ।

व

व

वचक

व—हिन्दी का तेहमर्थाँ यान और पत्रग का तीसरा रूप ।

वंगला—(वि० हि०) बंगाल देश का । बंगाल देश की भाषा । एक स्वाम डग से बना हुआ मकान ।

बंगाल—(पु० हि०) बंग देश जो भारत का पूरबी भाग है ।
बंगाली = बंगाल देश का निवासी ।

वचना—(स०) शगी ।

वचक—(पु० हि०) पाखण्डो ।

घटलोई—(स्त्री० हि०) देगची ।
पत्तीली ।

बटा—(पु० हि०) गोला । गेंद ।

उटालिया—(स्त्री० अ०) पैदान
सना का एक दल जिसमें
१००० जवान होते हैं ।

पटिया—(स्त्री० हि०) छोटा बटा ।
लोदिया ।

बटा—(स्त्री० हि०) गाली ।

बटुरना—(क्रि० हि०) यिमटा
इफटा होना ।

बटुला—(पु० हि०) बड़ी बट
लाई ।

उटुधा—(पु० हि०) गाल थैली ।
बड़ा घटलोई ।

बटेर—(स्त्री० हि०) एक छोटा
चिड़िया । —बाजो = बटेर
पालने या लड़ाने का काम ।

बटोर—(पु० हि०) जमावड़ा ।
—ना = समेटना ।

बट्टा—(पु० हि०) दस्तूर ।
दलाली । —खाना = दूधी
हुई एकम का लेगा या बड़ी ।

कून्ने पीमने का पथर ।
लोदिया । त्रिकिया ।

बडप्पन—(पु० हि०) बड़ाई ।
गौरव । महत्त्व ।

उडउड—(स्त्री० अनु०) बर
वाद । ध्वय का बोलना ।
बडबडाना = ध्वय बोलना ।
बकनाद करना ।

बडवाग्न—(पु० म०) समुद्र
के भीतर की आग ।

बडहल—(पु० हि०) एक पेड़ ।

बडा—(वि० हि०) अधिक
निस्तार का । विशाल । दीर्घ ।
जिसकी उम्र ज्यादा हो ।
श्रेष्ठ । चुजुगं । महत्त्व का ।
भारी । बढ़कर । ज्यादा ।
एक पक्क्या । — दिन =
२५ दिसबर का दिन जो
ईसाइयों के त्योहार का
दिन है ।

बडाई—(स्त्री० हि०) बडप्पन ।
श्रेष्ठता ।

बड़े लाट—(पु० हि० अ०)
हिन्दुस्तान में अगरीजी

वदई—(पु० हि०) मेमार । जफदी
का काम करनेवाला ।

वदती—(स्त्री० हि०) वृद्धि ।
आधिक्य । उन्नति ।

वदना—(क्रि० हि०) वृद्धि का
प्राप्त होना । गिनती या नाप
तौल में ज्यादा होना । धसर
या आमियत वगैरह में
ज्यादा होना । चलना ।
चलने में किसी से आगे
निकल जाना । भाग का
बदना । किसी से किसी बात
में अधिक हो जाना । चिराग
का धुक्ना ।

वदती—(स्त्री० हि०) भादू ।
धुआरी ।

वदाय—(पु० हि०) फैलाव ।
विस्तार । अधिकता । उन्नति ।
वृद्धि ।

वदाया—(पु० हि०) प्रोत्साहन ।
उत्तेजना ।

वणिक्—(पु० ।स०।)।वनिया ।
सोदागर । बेचनेवाला ।

वतरुदा—(स्त्री० हि०) घात
घात । वार्त्तालाप ।

वतख—(स्त्री० हि०) हंस की
जाति की एक चिड़िया ।

वतवढाव—(पु० हि०) प्रियाव ।

वतासा—(पु० हि०) एक प्रकार
की मिठाई ।

वतार—(क्रि० अ०) तरीके पर ।
रोति से ।

वत्ता—(स्त्री० हि०) सूत, रुई,
कपड़े आदि की पतली छूट ।
दीपक । मोमयत्ती ।

वत्तीसी—(स्त्री० हि०) दाँवों
की पक्ति ।

वथुआ—(पु० हि०) एक साग ।

वद—(फ्रा०) बुरा । —गमलो =
राज्य का कुप्रबन्ध । अशाति ।
—अन्देश = दुश्मन । —इन्त
जामी = कुप्रबन्ध । अत्य
घस्या । —कार = कुकर्मी ।
व्यभिचारी । —कारी =
कुकर्मी । व्यभिचार । —कि
स्मत = अमागा । बुरी
स्मित का । —एत =
बुरा जेज । बुरे अक्षर ।
—एवाह = बुरा चाहने-
वाला । —गुमान = बुरा

सदेह करनेवाला । —गुमानी
 = भ्रूण शक । —गोइ—
 निन्दा । चुगली । —चलन
 = घुरे चाल चलन का ।
 —चलनी = व्यभिचार ।
 —ज्ञान = कटुभाषी ।
 —ज्ञात = खोटा । नाच ।
 —तमीज = अशिष्ट । गँवार ।
 —तर = और भी घुरा ।
 —दियानती = चइमानी ।
 प्रिश्वासघात । —दुष्ठा =
 शाप । —नसीबी = दुर्भाग्य ।
 —नाम = फलकित । —नामी
 = अफकीर्ति । फलक ।
 —नीयत = जिसकी नियत
 घुरा हो । —नीयती = चेई
 मानी । दगावाजी । —नुमा
 = कुरूप । भद्दा । —परहेज
 = कुपथ्य करनेवाला ।
 —परहेजा = कुपथ्य । —अत
 = अभागा । बदझिरमत ।
 —बू = दुर्गंध । —बूदार =
 दुर्गंधयुक्त । —मजा = घुरे
 रना का । —मस्त = शेर
 में घूर । खपट । —मरती

= मतवालापन । कामुकता ।
 —माश = दुष्ट । खोटा ।
 दुष्ट । दुराचारी । —मारी
 = दुष्म । नीचता । दुष्टता ।
 व्यभिचार । —मिजाज = घुरे
 स्वभाव का । —रग = भद्दे
 रग का । राइ = घुरी राइ
 चलनेवाला । —शकल =
 बुरूप । बेडील । —सलूकी
 = घुरा व्यवहार । घुराई ।
 —सूरत = कुरूप । बेडील ।
 —हजमी = अफच । अजीर्ण ।
 —हवास = बेहोश । अचेत ।
 व्याकुल ।

घदन—(फ्रा०) शरीर ।

घदरनगीसी—(फ्रा०) हिमाच-
 न्निताय की जाँच । दिमाय में
 गढ़बढ रजम झलग करना ।

घदल—(पु० अ०) हेरफेर । परि-
 वतन । —ना = परिवर्तित
 होना या करना । विनिमय
 करना ।

घदला—(पु० अ०) विनिमय ।
 प्रतिफल । नतीजा ।

घदली—(स्थी० हि०) पैत्रकर
 छाया हुआ घादल। तयादला।
 घदस्नूर—(पा०) ज्यों का त्यों।
 घदा—(पु० हि०) निपत।
 घदायदी—(स्थी० हि०) हाथ।
 छागदाट।
 घदोलत—(प्रा०) द्वारा।
 कृता से।
 घदुदु—(पु० देश०) घदनाम।
 घद्व—(वि० स०) बँधा हुआ।
 निर्धारित।
 घघ—(पु० स०) हत्या।
 घघाई—(स्थ० द०) मुयारक-
 वादी।
 घघिक—(पु० हि०) घघ करने
 वाला। दर्यारा। जल्लाद।
 व्याध। बहेलिया।
 घघिया—(पु० हि०) नपुमक
 किया हुआ चौपाया। लस्वी।
 घघिर—(पु० स०) बहरा।
 घभ्य—(वि० स०) मारने के
 योग्य।
 घन—(पु० हि०) जगल।
 घनना—(क्रि० हि०) तैयार होना।
 रचा जाना। हो सकना।

घापस में निमाता। सजना।
 —पय=जगल या रास्ता।
 —वास=घन में बसना।—
 बिलार=बिहली की छाति
 का एक जगली जतु।—
 माजुप=जगली घादमी।
 —घनस्पति=पौधा। पेड़।
 घनफरा—(पु० प्रा०) एक प्रकार
 की घनस्पति।
 घनात—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
 का बधिया ऊनी कपड़ा।
 घनाफर—(पु० हि०) चत्रियों
 की एक छाति।
 घनाम—(अ० य० फा०) नाम पर।
 नाम से। किसी के प्रति।
 घनारस्ती—(वि० हि०) काशी
 सयधी।
 घनाव—(पु० हि०) घनावट।
 रचना। शृ गार। घनावट=
 रचना। गढ़न।—घनावटी
 =नकली। कृत्रिम।
 घनिया—(पु० हि०) बेश्य।
 व्यापार करनेवाला व्यक्ति।
 घनियाइन—(स्त्री० हि०) गञ्जी।

वनिस्यत—(अ० य० फ्रा०)
 अपेक्षा । मुकाबले में ।
 वनेठी—(स्त्री० हि०) पटे या डी के
 अभ्यास के लिये तम्बी लानी
 जिमके दोनों सिरों पर लट्टू
 लगे रहते हैं ।
 वपतिस्मा—(पु० अ०) इंसान
 मरदाय का एक मुख्य
 मस्तर ।
 वपौती—(स्त्री हि०) बाप से पाई
 हुई जायदाद ।
 वफर स्टेट—(पु० अ०) वह
 मध्यवर्ती छोटा राज्य जो दो
 बड़ राज्यों को एक दूसरे पर
 आक्रमण करने से रोकने का
 काम करे ।
 वफारा—(पु० हि०) औषध
 मिश्रित जल की भाप ।
 ववर—(पु० फ्रा०) सिंह ।
 ववूल—(पु० हि०) एक फाटेदार
 पेड़ ।
 ववूला—(पु० हि०) बुलबुला ।
 वुदुद । फेन ।
 वम—(पु० अ०) विस्फोटक
 । पत्थरों से भरा हुआ जोड़े

का घना एक प्रकार का
 गोला । —पुलिस=राइ
 चकतों और मुसाफिरों के
 लिये बस्ती से दूर बना हुआ
 पायदान । —चस्व=शोर ।
 भगदा । विवाद ।
 वमुभावला—(पि० फा०)
 मुकाबले में । सामने । विरुद्ध ।
 वमूजिव—(वि० फा०) अनुसार ।
 मुताबिक ।
 वया—(पु० हि०) एक पक्षी ।
 वयान—(पु० फा०) बवान ।
 वयन । जिक । हाल ।
 विवरण ।
 वयाना—(पु० फा०) पेशगी ।
 अगाऊ ।
 वयावान—(पु० फा०) अगल ।
 उजाड़ ।
 वरअफस—(फा०) उलटा ।
 वरइ—(पु० हि०) तमोली ।
 वरकदाज—(पु० अ०—फा०)
 चौकीदार । रक्त ।
 वरकत—(स्त्री० अ०) बसती ।
 वरफरार—(वि० फ्रा०) कायम ।
 स्थिर ।

घरखास्त—(वि० फा०) जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो ।

घरखिलाफ—(वि० फा० अ०)
प्रतिकूल । उल्टा । विरुद्ध ।

घर सुरदार—(फ्रा०) बेटा ।

घरगद्—(पु० हि०) यह का पेड़ ।

घरठ्ठा—(पु० हि०) भाला नामक हथियार ।

घरजस्त—(फ्रा०) ठीक । चुस्त ।

घग्गन—(पु० हि०) पाथ । भाँड़ा ।

घरतना—(क्रि० हि०) घरताव करना ।

घरतरफ—(फ्रा० अ०) घरग्यास्त ।

घरताव—(पु० हि०) व्यवहार ।

घरदाना—(क्रि० हि०) गाय को साँड़ से जोड़ा खिलाना ।

घरदाफरोश—(पु० फ्रा०) दासों को खरीदने और बेचनेवाला ।

घरदाफरोशी = (फ्रा०)
गुलाम बेचने का काम ।

घरदार—(वि० फ्रा०) डोनेवाला । ले जानेवाला ।

घरदास्त—(खी० फा०) सहन ।

घरनर—(पु० अ०) लप का वह ऊपरी भाग जिसमें बत्ती लगाई जाती है ।

घरपा—(वि० फ्रा०) खड़ा हुआ ।

घरफी—(खी० फ्रा०) एक मिठाई ।

घरवस—(वि० हि०) बल पूर्णक । ज़बरदस्ती । व्यर्थ ।

घरखाद—(वि० फ्रा०) नष्ट । चौपट । तथाह । घरवादी =

नाश । खराबी । तथाही ।

घरमला—(फ्रा०) सामने ।

घरमा—(पु० देश०) छेद करने का लोहे का एक औज़ार ।

घरस—(पु० हि०) वर्ष । साल । —गाँठ = जन्मदिन । साल-गिरह ।

घरसात—(खी० हि०) वर्षाकाल । वर्षाकाल ।

घरसाती = घरसात का ।

घरसाना—(क्रि० हि०) वर्षा करना । वृष्टि करना ।

घरहम—(वि० फ्रा०) जिसे गुस्ता था गया हो । उच्चेजित ।

घरहा—(पु० हि०) खेतों में

विचारई क लिये बनी हुई
नाली ।

यरही—(पु० हि०) पुत्र जन्म क
बारहवें दिन का उत्सव ।

यरा—(पु० हि०) उदक की पीपी
हुई दाढ़ का पना हुआ,
एक परमान । बदा ।

यरात—(स्त्री० हि०) जनत ।
यराती—(पु० हि०) विवाह
में वर पक्ष की ओर से
सम्मिलित होने वाला ।

यरानफोट—(पु० थ०) बदा
फोट ।

यराना—(मि० हि०) बघाना ।

यरावर—(वि० हि०) तुल्य ।
एक सा । समान पद या
मर्यादावाळा । समतल । ठीक ।
लगातार । साथ । हमेशा ।
यरावरी—समानता । सामना ।

यरामद—(वि० प्रा०) खाई हुई,
चारी गई हुई या न मिलती
हुई वस्तु जो कहीं से निकाला
जाय ।

यरामदा—(पु० प्रा०) धग्गा ।

दालान । घोसारा । (घ०)
पराडा ।

यराय—(घय्य० प्रा०) वास्ते ।
लिये । निमित्त ।

यराय—(पु० हि०) परहेज ।

यरी—(स्त्री० हि०) उद या मूँग
की गोल टिनिया । (वि०
प्रा०) मुक्त । छूटा हुआ ।

यरेखी—(स्त्री हि०) बिरों का
एक गहना ।

यरांही—(प्रा० हि०) सुभर के
बालों का बनी हुई पूँछ ।

यर्क—(फ्रा०) बिजली । बिजली
की चमक ।

यर्ग—(फा०) पत्ता ।

यर्फ—(स्त्री० प्रा०) हिम । पाला ।
तुपार । बर्फिस्तान = बर्फ का
मैदान या पहाड़ ।

यर्फी—(स्त्री० फ्रा०) एक
भिठाइ ।

यवर—(वि० सं०) अनार्य ।
जगती आदमी । अशिष्ट ।

यराक—(अ०) चमकीला ।

यलद—(वि० प्रा०) ऊँचा ।

यल—(पु० सं०) शक्ति ।

सामर्थ्य । सहारा । भरोसा ।
 जपेट । मरोड़ । टेढ़ापन ।
 सिकुड़न । —वान् = ताकत
 वर । शक्तिमान् । मजबूत ।
 —शालो = बलवान् । —
 बलिष्ठ = अधिक बलवान ।
 —मज्जी = ताकतवर ।

बलबलाना—(क्रि० अ०) ऊँ
 का योजना । व्यथ बकना ।
 बलवा—(फ्रा०) दगा । हुल्लाह ।
 विप्लव । विद्रोह ।

बला—(अ०) विपत्ति । फट ।
 रोग । व्याधि ।

बलिदान—(पु० स०) कुर्यानी ।
 बलिहारी—(स्त्री० हि०)
 निष्ठावर । कुरबान ।

बलूत—(प० अ०) माजूफल
 की जाति का एक पेड़ ।

बलिकु—(अ० फा०) अन्यथा ।
 इसके विरुद्ध । बदतर है ।

बल्व—(पु० अ०) शीशे का
 वह खासका लट्टू जिसके
 अन्दर बिजली की रोशनी
 के तार लगे रहते हैं ।

बल्ला—(पु० हि०) राहतोर

या ढहा । बल्ली = छोटा
 बच्चा । खभा । डॉढ़ ।

बवासीर—(स्त्री० अ०) अर्श
 रोग ।

बशारत—(अ०) शुशुबली ।
 शुभ समाचार ।

बशीर—(अ०) शुभ समाचार
 देनवाला ।

बसत—(पु० स०) चैत और
 वैशाख के महीने । बसती
 = बसतऋतु सबरी । सरसों
 के फूज के रंग का । एक
 रंग का नाम । पीला कपड़ा ।

बस—(वि० फा०) भरपूर ।
 काफ़ी ।

बसना—(क्रि० हि०) आवाद
 होना । उदरना । वह कपड़ा
 जिसमें काई वस्तु लपेटकर
 रखी जाय । थैली ।

बसाना—(क्रि० हि०) आवाद
 करना । उदराना । महकना ।

बशारत—(अ०) रटि ।

बसूला—(पु० हि०) एक इयियार
 जिससे बड़ई लकड़ी छीलते

घौर गदत हैं । वसुन्धी = छोटा
वसुला ।

वमेरा—(वि० हि०) टिकने
की जगह । घामले में बैठना ।

वस्ट—(पु० प्रि०) मुख्य अथवा
धाती व ऊपर का चित्र ।

वस्ता—(पु० पा०) गेटन ।
कपड़े का चौकोर टुकड़ा
जिसमें पुतक घौर यहीखाते
इत्यादि बाँधकर रखे जाते हैं ।

वस्तार—(पु० प्रा०) पुलिदा ।
एक में बँधी हुई बहुत सा
वस्तुओं का समूह ।

वस्ती—(स्त्री० हि०) भावादी ।
निवास ।

वहँगा—(पु० हि०) यदी
वहँगी । वहँगा = फाँवर ।
बाक्का ले चलने के लिये तराजू
के आकार का ढाँचा ।

वहम्ना—(क्रि० हि०) भटकना ।
भागभ्रष्ट होना । चूकना ।
वहकाना = रास्ता भुलवाना ।
भटकाना । लक्ष्य भ्रष्ट करना ।

वहना—(क्रि० हि०) प्रवाहित
हाना । पानी की धारा

में पड़ जाना । हजा का
चलना । मारा मारा फिरना ।
आवारा डाना ।

वहनोई—(पु० हि०) बहन
का पति । वहनोरा = बहन
की समुराल ।

वहनूदी—(स्त्री० प्रा०) लाभ ।
भलाई । फायदा ।

वहर—(थ०) समुद्र । गीत की
लय । बहरी = समुद्री ।

वहरा—(वि० हि०) न सुनने
वाला ।

वहल—(स्त्री० हि०) रथ के
आकार की चैलगाड़ी ।

वहलना—(क्रि० हि०) झुम्ट
या दुख की घात भूलना
और चित्त का दूसरी धार
लगाना । भुलावा देना ।
बहकाना । बहलाना =
मनोरजन करना । भुलावा
देना । बहकाना । बहलाप
= मनोरजन । प्रसन्नता ।

वहली—(स्त्री० हि०) रथ के
आकार की चैलगाड़ी ।

वहस—(स्त्री० थ०) दन्तील ।

सुदर और घनाठना । घाँकी
 = लोहे का बना हुआ एक
 औजार । छैल छशीली ।
 घाँकपन—(वि०) टेढ़ापन ।
 छैलापन । घनावट । सजावट ।
 शोभा ।
 घाँग—(स्त्री० प्रा०) आग ।
 आग । प्रातःकाल के समय
 मुरगे के बालने का शब्द ।
 घाँगड़—(वि० हि०) मुख ।
 बवकूप ।
 घाँचा—(क्रि० हि०) पढ़ना ।
 वाक्—(स्त्री० हि०) वध्या ।
 वाट—(पु० हि०) भाग ।
 हिस्सा ।
 घाँटना = विभाग करना ।
 वितरण करना ।
 घाँडा—(पु० देश०) वह पशु
 जिसकी पूँछ कट गई हो ।
 परिवारहीन पुरुष ।
 घाँदी—(स्त्री० प्रा०) लौंठी ।
 दासी ।
 घाँध—(पु० हि०) बंद ।
 घुस्म ।
 घाँघना—(क्रि० हि०) गाँठ

देना । कैद करना । पाबंद
 करना । नियत करना ।
 बाँधनू = मसूदा । उपक्रम ।
 बाँस—(पु० हि०) एक घन
 स्थिति ।
 बाँसुरी—(स्त्री० हि०) सुरली ।
 पशा ।
 बाह—(स्त्री० हि०) भुजा ।
 बाहु । हाथ ।
 बाहप्लेन—(पु० अ०) प्रोप्लेन
 या वायुमन का एक भेद ।
 बाइविल—(स्त्री० यू०) ईसाइयों
 की धर्म पुस्तक । हजीब ।
 बाइस—(अ०) कारण । सबब ।
 बाइसिकिल—(स्त्री० अ०)
 पैरगाड़ी ।
 बाई—(स्त्री० हि०) वायु का
 प्रकाश । छियों के लिये एक
 आदर-सूचक शब्द ।
 बाउटी—(स्त्री० अ०) सहायता ।
 मदद ।
 बाकी—(वि० अ०) शेष ।
 बाख़र—(प्रा०) जाननेवाला ।
 यात्रिण ।

घाग—(पु० घ०) उपना ।
घाटिका । —घान=(फ्रा०)
नाली । —घानी=(पा०)
माली की जगह ।

घागडोर—जगाम ।

घागर—(पु० देश०) नदी के
किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ
नदी का पानी कभी पहुँचता
ही नहीं ।

घागी—(पु० घ०) विद्रोही ।
राजद्रोही ।

घागीचा—(पु० फ्रा०) छोटा
भाग । उपवन ।

घाघ—(पु० हि०) शेर ।

घाघवर—(पु० हि०) घाघ की
खाल । एक प्रकार का
रोपुँदार कपड़ा ।

घाज—(पु० घ०) एक शिकारी
पक्षी । कुष्ठ । थोड़े । बसौर ।
बिना । (फ्रा०) महसूल ।
जगान । —गुजार=महसूल
अदा करनेवाला । —दावा=
(फ्रा०) अपने अधिकारों का
त्याग ।

घाजरा—(पु० हि०) एक अन्न ।

घाजा—(पु० हि०) यज्ञाने का
यंत्र । घाघ ।

घाजावता—(हि० पा०) नियम
मानुसार ।

घाजार—(पु० पा०) हाट ।
घाजारी=घाजार संघथा ।
मामूली । घाजारू=(फ्रा०)
मर्यादा रहित । अशिष्ट ।

घाजी—(स्त्री० पा०) शत ।
दौघ । बदान ।

घाजीगर—(पु० फ्रा०) जादूगर ।

घाजू—(पु० पा०) भुजा । बाँह
पर पहनी का घाजूबंद नाम
का गहना । तरफ । थोर ।
पक्षी का घैना ।

घाट—(पु० हि०) भाग । रास्ता ।
पथर का वह टुकड़ा जिससे
सिद्ध पर कोई चीज पीसी
जाय । पत्थर आदि का वह
टुकड़ा जो सौलने के काम
आता है ।

घाटिका—(स्त्री० स०) भाग ।
फुलवाड़ी ।

घाटी—(स्त्री० हि०) गोली ।
पिंड । अंगारों या उपलों

धादि पर सेंका हुई एक प्रकार की रागी ।
 वाडकिन—(पु० थ०) धापखाने में और दफतराखाने में काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ ।
 वाढ़—(स्त्री० हि०) वृद्धि । तज़ी । जोर ।
 वाड़ी—(स्त्री० थ०) अँगरेज़ी ढग की एक प्रकार की अँगिया या कुरती ।
 वाडा—(पु० हि०) चारों ओर से घिरा हुआ विस्तृत । गाली स्थान पशुशाला । वाडो = वाटिका ।
 वाडिस—(स्त्री० थ०) स्त्रियों के पहनने को अँगरेज़ी ढग का कुरती । बडा । वाडो गाढ—(अ०) शरीर-रक्षक ।
 वाढ—(स्त्री० दि०) अधिक्ता । लज प्लानन ।
 वाण—(पु० स०) तीर ।
 वाणिज्य—(पु० सं०) व्यापार । राजगार ।
 वात—(स्त्री० हि०) वचन ।

वाणा । कथन । सर्घा । यहाना । वादा । मान मर्यादा । इज्जत । प्रतिज्ञा । रहस्य । भेद ।

वातिन—(थ०) अन्त करण । अन्दरूनी ।

वाती—(स्त्री० हि०) बत्ती ।

वाद—(पु० स०) बहस । तर्क । विवाद । झगडा । (अ०) परघात । पीछे । दस्तूरी या कमीशन । अतिरिक्त । मिवाय । (क्रा०) घात । हवा । —सबा = प्रातःकाल की वायु । —फिरङ्ग = आतशक का रोग । —कश = लुहार की धोंकनी । —नुमा = (क्रा०) वायु की दिशा सूचित करनेवाला यंत्र । —बान = (क्रा०) पाद ।

वादल—(पु० हि०) मेघ । धन । एक प्रकार का पत्थर जो दूधिया रंग का होता है ।

वादशाह—(पु० क्रा०) राजा । शासक । सरदार । स्वतंत्र । शतरज का एकमुहरा । शाय

का एक पत्ता । —जादा =
(क्रा०) राजकुमार ! —त
=राज्य । शासन । हुकूमत ।
बादशाही =राज्य । राज्या
धिपार । शासन । हुकूमत ।
मनमाना व्यवहार । बाद
शाह का । राजाओं के
योग्य ।

बाद्‌हवाई—(द्वि० क्रा०) यों
ही । व्यर्थ । फ़ज़ूल ।

बादाम—(पु० फा०) एक मेवा ।
बादामी =बादाम के छिलके
के रंग का । बादाम के
आकार का एक प्रकार का
धान ।

बादिया—(फा) सौँक़ ।

बादी—(वि० क्रा०) धान का
विकार करनवाला । किसी के
विरुद्ध अभियोग लानेवाला ।
मुद्दई । बैरी । शत्रु । राग में
प्रधान रूप से लगनेवाला
स्वर ।

बाध—(पु० स०) मूँज की रस्मी ।
बाधक =रुनावट डालने

वाला । विघ्नकता । दुःख
दायी ।

बाधा—(स्त्री० स०) रुमावट ।
अड़चन । विघ्न । बाधित =
जो रोका गया हो । बाध्य =
विशय किया जानेवाला ।
मजबूर होनेवाला ।

वानगी—(स्त्री० हि०) नमूना ।

वानर—(पु० स०) बंदर ।

वाना—(पु० हि०) गहनावा ।
पोशाक । एक हथियार ।
कपड़े की बुनावट ।

वानी—(फा०) पेदों पर उगने
वाला एक पौधा । जड़ जमाने
वाला ।

वानू—(फा०) बेगम ।

वाण—(पु० हि०) पिता ।
जनक ।

वाव—(पु० अ०) परिच्छेद ।
पुस्तक का कोई विभाग ।

वावत—(स्त्री० अ०) सब ध ।
विषय ।

वावरची—(पु० फा०) भोजन
बनानेवाला । रसोइया ।

वावा—(पु० तु०) पिता । साधु
 स वासियों के लिये आदर
 सूचक शब्द । पूना पुरुष ।
 पितामह । दादा ।
 वावू—(पु० हि०) एक आदर
 सूचक शब्द । भलामास ।
 वायकाट—(पु० अ०) वहिष्कार ।
 वाय स्फाउट—(पु० अ०)
 बालघर ।
 वायस्काप—(पु० अ०) सिनेमा ।
 वायाँ—(बि० हि०) दहन का
 उलटा ।
 वायँ—(क्रि० हि०) बाइ ओर ।
 वायार—(क्रि० हि०) बार
 बार । लगातार । पुन पुन ।
 वार—(पु० द्वि०) द्वार । दर
 वाजा । देर । बिलब । दफा ।
 मरतवा । योका । भार ।
 वारर—(स्त्री० अ०) छावनी
 आदि में सैनिकों के रहने के
 लिए बना हुआ पक्का
 मकान ।
 वारदाना—(पु० पा०) व्यापार
 की चीजों के रखने का घर
 तन । रसद । यह अक्षर जो

बँधी हुई पगड़ी क नीचे
 लगा रहता है ।
 वारनिश—(स्त्री० अ०) फेरा
 हुआ रोगन या धमकीबा
 रग ।
 वारवरदार—(फा०) बोकू होने
 वाला । वारवरदारी—(फा०)
 सामान होने का काम ।
 सामान होने की मजदूरी ।
 वारहदरी—(स्त्री० हि०) वह
 हवादार बैठक जिसमें बारह
 द्वार हों ।
 वारहमासी—(पु० हि०) वह
 पक्ष या गीत जिसमें बारह
 महीनों की प्राकृतिक विशेष
 ताथों का बखान किया विरही
 या विरहिना के मुँह से कराया
 गया हो ।
 वारहमासी—(वि० हि०) सदा-
 बहार । सदाफूल । सब
 ऋतुओं में फूलनेवाला ।
 वारहउफात—(पु० अ०) एक
 धरती महीना ।
 वारहसिंगा—(पु० हि०) बिरन
 की जाति का एक पशु ।

घारिक—(पु० अ०) छावनी ।

—मास्टर = (अ०) वह प्रधान कर्मचारी जो घारिक की देखभाल और प्रबंध करता है ।

घारिश—(स्त्री० फा०) वषा । वृष्टि । वर्षाण्डनु ।

घारिस्टर—(पु० अ०) वह वकील जिसने विलायत में रहकर कानून की परीक्षा पास की हो ।

घारीक—(वि० फा०) महीन । पतला । सूक्ष्म । घारीको = (फा०) महीनपन । पतलापन । खूबो ।

घारुद—(स्त्री० तु०) दारु । अग्निचूर्ण । —घाना = वह स्थान जहाँ गोला घारुदआदि लड़ाई का सामान रहता है ।

घारे में—(अ० फा० हि०) विषय में । सबध में । प्रसंग में ।

घारोमीटर—(पु०) एक यंत्र जिससे हवा का दबाव मापलूम होता है ।

घार्डर—(पु० अ०) किसी चीज़

क किनारों पर बसा हुआ बेलगूटा । हाशिया ।

घाल—(पु० स०) घालक । लडका । केश । कुछ अनाजों के पीधों के टठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुंछे रहते हैं । —घर = वायस्काउट । —काल = बचपन । वाज्याप्रस्था । —दधे = लडकेवाले । सतान । धौलाद । —विधवा = वह स्त्री जो बाह्यावस्था ही में विधवा हो गई हो । —ग्रहचारी = बहुत ही छोटी उम्र से ग्रहचर्य व्रत रखनेवाला ।

घालक—(पु० स०) लडका । पुत्र । शिशु । अनाजान आदमी ।

घालटी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की ढोलची ।

घालना—(क्रि० हि०) जलना । रोशन करना ।

घाली—(स०) नवयुवती ।

घाला—(फा०) ऊँचा । —ई = ऊँचाई । ऊपरी ।

वालावर—(पु० क्रा०) एक प्रशर वा शेंगरखा ।

वालिका—(स्त्री० स०) कन्या ।

वालिंग—(पु० अ०) बजान ।

वालिरा—(स्त्री० फा०) तक्षिया ।

वालिरत—(पु० क्रा०) बिलान्ता बीता ।

वालिस ड्रन—(स्त्री० अ०) वह रेलगाडी जिस पर सदक बनाने के सामान (कपड़ आदि) लादकर भेजे जाते हैं ।

वाला—(स्त्री० हि०) कान में पहनने का एक आभूषण । जी, गेहूँ, ज्वार आदि के पीधों का वह ऊपरी भाग या सींका जिसमें अन्न के दाने लगते हैं ।

वालू—(पु० हि०) रत । रेणुका ।
—दानी = बालू रखने की द्विविया ।

वालूसाही—(स्त्री० हि०) एक मिठाई ।

वालयावस्था—(स्त्री० स०) प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था । ; जड़कपन ।

वायजूद—(फा०) तिम पर भी ।
तो भी ।

वाघरचो—(पु० फा०) भोजन पकानेवाला । रसोइया ।
—खाना = भोजन पकाने का स्थान । पाकखाना । रसोईघर ।

वायला—(वि० हि०) पागल ।
—पन = पागलपन ।

वायलो—(स्त्री० हि०) चौड़े मुँह का कुर्छा, जिसमें पानी तक पहुँचने के दिने मीदियाँ बंधी हों । पगली ।

वाशिदा—(पु० फ्रा०) रहने वाला । निवासी ।

वास—(पु० हि०) निवास । रहन का स्थान । घू । गघ ।

वासमती—(पु० हि०) एक प्रकार का धान ।

वासा—(पु० हि०) भोजनालय ।

वासी—(वि० हि०) देर धा बना हुआ ।

वाहम—(क्रि० क्रा०) आपस में । परस्पर ।

बाहर—(क्रि० हि०) भीतर या अंदर का उलटा। किसी दूसरे स्थान पर।

बाहरी—(वि० हि०) बाहर का। पराया। गैर। अजनबी। ऊपरी।

बाहुबल—(पु० स०) बहादुरी। पराक्रम।

बाहुल्य—(पु० स०) बहुतायत। अधिकता। ज्यादाती।

बिंदी—(स्त्री० हि०) शून्य। बिंदु। माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका। बिंदुली।

बिकना—(क्रि० हि०) बेचा जाना। बिक्री होना।

बिकवाना—(क्रि० हि०) बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकारू—(वि० हि०) बिकने वाला। जो बिकने के लिये हो।

बिकारी—(वि० हि०) उरा। हानिकारक। एक प्रकार की देवी पाई।

बिक्री—(स्त्री० हि०) विक्रय। बेचना।

बिखरना—(क्रि० हि०) छितराना। तितर बितर होना।

बिगडना—(क्रि० हि०) खराब हो जाना। अच्छान रह जाना। खराब दशा में आना। खाल चला का खराब होना। क्रुद्ध होना। लड़ाई भगड़ा होना। विरोधी होना। बे-फ़ायदा स्वर्च होना।

बिगडेदिल—(पु० हि०) हर बात में लड़ने भगड़ने वाला।

बिगडैल—(वि० हि०) हर बात में क्रोध करने वाला। हठी। जिद्दी। घुरे रास्ते पर चलने वाला।

बिगाड—(पु० हि०) घुराई। दोष। भगडा।—ना=किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। घुरी दशा में लाना। कुमांग में लगाना। पातिव्रत्य भंग करना। स्वभाव खराब करना।

बिगुल—(पु० अ०) अंगरेज़ी दग की एक प्रकार की तुरही।

- त्रिगुजर = (अ०) फौज में
 त्रिगुज बजानवाला ।
 त्रिग्रह—(पु० हि०) ऋगदा
 लडाइ । कजइ ।
 त्रिचक्रना—(क्रि० हि०) विदना ।
 हाथ स निकल जाना ।
 त्रिचक्राना—(क्रि० अनु०)
 विदना । कियो का चि,ाने
 क लिन मुँइ देना काना ।
 त्रिपुना—(क्रि० हि०) फैलाया
 जाना । बिदाया जाना ।
 द्वितराया जाना ।
 विटाना—(क्रि० हि०) फैला
 देना । बिरगाना ।
 विद्रिप्रा—(रा० हि०) पैर की
 उगलियों में पहनने का एक
 प्रकार का छरला ।
 त्रिपुत्रा—(पु० हि०) पैर म पह
 नन का एक गहना । एक
 छोटा सा शत्रु । चुना हुआ ।
 विदुडना—(क्रि० हि०) जुदा
 होना । अलग होना । बियाग
 होना ।
 विदुह—(पु० हि०) जुदाई ।
 बियाग ।
 विद्योना—(पु० हि०) विस्तर ।
 विजत—(पु० स०) निजत स्थान
 सुनसान जगह । अकंला ।
 विजली—(रा० हि०) त्रिचुत ।
 बादलों की रगड से आकाश
 में चमकनेवाला प्रकाश ।
 त्रिजायठ—(पु० हि०) बाँह पर
 पहनने का बाजूबंद ।
 विजौरा—(पु० हि०) नोबू की
 जाति का एक वृक्ष ।
 त्रिज्जू—(पु० देश०) बिरली के
 आवार प्रकार का एक जगली
 जानवर ।
 विडवना—(क्रि० हि०) नकल ।
 उपशम । बदनामी ।
 वित्ता—(पु० हि०) बाजिरत ।
 वित्ती—(स्त्री० हि०) वह धन जो
 दूकानदार लोग गोशाला
 या धौर किसी धर्म कार्य के
 लिये, माल का दाम चुकाने
 के समय, काटकर अलग रखते
 हैं ।
 विदकना—(क्रि० हि०) भद
 कना । विदकाना = भदकाना ।
 विदहना—(पु० हि०) धान या

कङ्कनी आदि की फमल पर
आरम में पाटा या हँगा
चलाना ।

विदा—(स्त्री० क्रा०) प्रस्थान ।
गमन । रवानगी । हलमत ।
गौना । हिरागमन । विदाइ =
विदा होने की आना । वह
धन जो किसी को विदा देने
के समय, उसका स्कार करने
के लिये दिया जाता है ।

विद्वत्—(स्त्री० अ०) सराबी ।
दोप । तकलाफ । आफत ।
अत्याचार । दुदशा ।

विधवा—(वि० सं०) रौंड़ ।

विनती—(स्त्री हि०) प्रार्थना ।
निवेदन ।

विना—(अ० य० हि०) छोड़कर ।
बगैर । (क्रा०) आधार । जड़ ।

विनोला—(पु०) कपास का बीज ।

विपदा—(स्त्री० हि०) आकृत ।
सकट ।

विघाड—(स्त्री० हि०) एक रोग
जिसमें पैरों के तलुए का
चमड़ा फट जाता है और वहाँ
बदर हो जाता है ।

विरगिड—(स्त्री० अ०) सेना का
एक विभाग ।

विरला—(वि० हि०) कोई कोई ।

विरहा—(पु० हि०) अहीरों का
गीत ।

विरादर—(पु० फा०) भाई ।
आता । विरादरी = भाई-
चारा । बहुत्व । जातीय-
समाज ।

विराना—(क्रि० हि०) मुँह
चिड़ाना । चुनना । छुँटना ।

विल—(पु० हि०) छेद । दराज ।
(अ०) बोजक । हिसाब ।

विलाना—(क्रि० हि०) अलग
होना । नष्ट होना ।

विलटो—(स्त्री० अ०) रेल के द्वारा
भेजे जाने वाले माल की वह
रसीद जो रेलवे कम्पनी से
मिलती है ।

विलनी—(स्त्री० हि०) काली
भौरी । अमरी ।

विलफेल—(क्रि० अ०) इस
समय । अभी ।

बिलविलाना—(क्रि० अ०)
छोटे छोटे कीड़ों का उधर
उधर रेंगना । व्याकुल होकर
सकना ।

बिलहरा—(पु० हि०) चाँस की
तीलियों या खम आदि का
घाटा हुआ सफुट जिसमें पान
के बीज रखे जाते हैं ।

बिलह्ला—(वि० दश०) गावदा ।
मूत्र । आचारा ।

बिला—(अव्य० अ०) बिना ।
धर ।

बिलियर्ड—(पु० अ०) एक
अंगरेज़ी खेल ।

बिलोना—(क्रि० हि०) मथना ।

बिलमुक्ता—(वि० अ०) जो घट
बढ़ न सके ।

बिल्ला—(पु० हि०) बिहाल ।
चपरास ।

बिल्ली—(स्त्री० हि०) एक जान
वर ।

बिल्लौर—(पु० हि०) एक प्रकार
का स्वच्छ सफ़ेद पत्थर । बहुत
स्वच्छ शीशा ।

विशप—(पु० अ०) इमाइ मत
का बड़ा पादरी ।

विसखपरा—(पु० डि०) मोह की
जाति का एक विपैला जंतु ।

विसमिल—(वि० क्रा०) घायल ।
जरमी ।

विसमिल्लाह—(पु० अ०) श्री
गणेश । आरंभ । आदि ।

विसाँयँध—(वि० हि०) सड़ी
मछली या सड़े मांस की सी
गंधवाला । दुर्गंध । बदबू ।

विसात—(स्त्री० अ०) हैसियत ।
समाई । जमा । पूँजी ।
सामर्थ्य । शतरज । चौपद
आदि खेलने का कपड़ा ।
बिताती—छोटी चीज़ों का
दुकानदार ।

विसारना—(क्रि० हि०) भुला
देना । स्मरण न रखना ।

विस्तुट—(पु० अ०) खमीरी
आटे की तहूर पर पकी हुई
टिकिया ।

विस्तर—(पु० हि०) बिछाना ।

विस्तुइया—(स्त्री० हि०) विप
कली ।

विहतर—(वि० प्रा०) बहुत
अच्छा । विहतरी = भलाइ ।

कुशल ।

विहाग—(पु०) एक राग ।

विहिष्ट—(स्त्री० प्रा०) स्वर्ग ।
यैकुण्ठ ।

विही—(स्त्री० प्रा०) अमरुद
की तरह का एक पेड़ ।
—दाग = विही नामक पत्र
का बीज

वींड़ी—(स्त्री० हि०) बैलगाड़ी में
सीमरा बैल जो आगे रहता
है ।

वीघा—(पु० हि०) पास यिस्वा
जमाने ।

वीच—(पु० हि०) मध्य ।

वीचोवीच—(क्रि० हि०) बिल
कुल वीच में । ठीक मध्य
में ।

वीचुना—(क्रि० हि०) चुनना ।
छाँटना ।

वीज—(पु० सं०) दाना । तुषम ।
जड़ । मूल । हेतु । कारण ।
शुक्र । वीर्य ।

वीजक—(पु० सं०) सूधी । क्रिड
रिस्त ।

वीट—(स्त्री० हि०) पणियों की
विष्टा । गुह । मल ।

वीडी—(स्त्री० हि०) पत्ते में छपेग
हुआ सुरती का चूर जिसे
छोग चुर या सिगरेट आदि
के स्थान में सुलगाकर पीते
हैं ।

वीतना—(क्रि० हि०) एक
कना । समय गुजरना ।

वीन—(स्त्री० हि०) एक वाजा ।

वीवी—(स्त्री० प्रा०) कुलवधू ।
पत्नी ।

वीभत्म—(वि० सं०) पृथित ।

वीम—(पु० सं०) बहाज का
मस्तूल ।

वीमा—(पु० प्रा०) हानि पूरी
करन की जिम्मेदारी ।

वीमार—(वि० प्रा०) रोगी ।
—दारी = रोगियों का शुभ्र
या । वीमारी = रोग ।

व्याधि । ककट । बुरी भादत ।

वीर—(पु० हि०) शूर । परा
क्रमी । बलवान् ।

वीरघट्टी—(स्त्री० हि०) एक
छोटा रेंगेवाला कीड़ा ।

वीसी—(स्त्री० हि०) धीम चीजों
का समूह । कांड़ी ।

वीहड—(वि० हि०) ऊँचा नीचा ।
रिपम । विरुट ।

बुँदेली—(पु० हि०) चत्रियो का
एक वंश ।

बुक—(स्त्री० हि०) बलक किया
हुआ महान, पर बहुत
करारा करवा । महीन पत्ती ।
(अ०) किताब । —सेखर
= पुस्तकें बेचनेवाला ।

बुक्या—(पु० फ्रा०) गठरी ।

बुका—(स्त्री० सं०) हृदय ।
कलेजा । गुरदे का माम ।
प्राचीनकाल का एक प्रकार का
बाजा ।

बुखार—(पु० अ०) भाप । ज्वर ।
ताप ।

बुगदा—(पु० फ्रा०) कसाइयो
का धुरा ।

बुजदिल—(वि० फ्रा०) कायर ।
दरपोक ।

बुजुग—(वि० फा०) बुद्धा ।
बदा । बुजुगीं = बदापन ।

बुझना—(क्रि० हि०) जलने का
अंत हो जाना । ठहा होना ।

बुझाना—(क्रि० हि०) रुग्नि
शांत करना । पानी डालकर
रहा करना ।

बुडाइ—(स्त्री० हि०) बुढ़ापा ।

बुढापा—(पु० हि०) बुढ़ावस्था ।

बुन—(पु० फ्रा०) मूर्ति ।
प्रतिमा । प्रियतम । मूर्ति
की तरह खुपचाप बैठा
रहनेवाला । —पास्त =
मूर्तिपूजक । रसिक । सौ दूरों
पासक । —परस्ता = मूर्ति-
पूजा । —शिकन = मूर्तिपूजा
का घोर विरोधी ।

बुताम—(पु० अ०) बटन ।
बुढी ।

बुत्ता—(पु० देश०) घोखा ।
झाँसा । यहाना । हीला ।

बुदबुदा—(पु० हि०) पानी का
धुलधुल । बुल्ला ।

बुद्ध—(वि० सं०) जो जागा हुआ
हो । ज्ञानवान ।

बुद्धि—(स्त्री० स०) विवेक ।
 अहम् । समझ । —मत्ता =
 समझदारी । अकलमदी ।
 —मान् = समझदार । अहम्
 मद । —मानी = समझदारो ।
 अहम् मदी ।

बुज—(पु० स०) एक ग्रह ।

बुजना—(क्रि० हि०) बुझाहों का
 काम ।

बुजावट—(स्त्री० हि०) सूतों की
 मिलावट ।

बुनियाद—(स्त्री० फा०) जड़ ।
 नींव । अखण्डित । वास्तवि
 कता ।

बुरकना—(क्रि० अनु०) भुर
 भुराना । झिडकना ।

बुरा—(वि० हि०) खराब ।
 निकट । बुराई = खराबी ।
 नीचता । दाप । ध्वगुण ।
 ऐश ।

बुरादा—(पु० फा०) लकड़ी का
 चुरा ।

बुरुश—(पु० अ०) बूँचे ।

बुर्का—(अ०) स्त्रियों के पहनने
 का परदे का कपड़ा ।

बुज—(पु० अ०) गरज । किल
 आदिका दावारों में, आगे की
 थार निक्ला हुआ गोल या
 पहलदार भाग । मीनार का
 ऊपरा भाग । गुब्दा । राशिचक्र ।

बुर्द—(स्त्री० फा०) ऊपरो धाम
 दनी । ऊपरो लाभ । नफा ।
 शत । बाती । —चार =
 सहनशील ।

बुलद—(वि० फा०) भारी ।
 बहुत ऊँचा । बुलदी = ऊँचाई ।

बुलडाग—(पु० अ०) विज्ञा-
 यतो कुत्ता ।

बुलबुल—(स्त्री० फा०) एक
 चिड़िया ।

बुलबुला—(पु० हि०) घुदबुदा ।
 पानी का बुझा ।

बुलाक—(पु० तु०) नाक का
 गड़ना ।

बुलाकी—(पु० तु०) घोड़े की
 एक जाति ।

बुलाना—(क्रि० हि०) पुका
 रना । आवाज देना । अने
 पाम आने के लिये कहना ।

बुलावा—(पु० हि०) निमंत्रण ।

वेनायदा—(वि० अ०) नियम विरुद्ध ।	वेई तारङ्ग या परवा न हो । व्यर्थ ।
वेकार—(वि० प्रा०) निवृत्ता । यथ । निष्प्रयोजन । वेकारा=निवृत्तापन । काम घटा का न हाना ।	वेगरजी—(स्त्री० प्रा० अ०) बिना मतलब का ।
वेकसूर—(वि० अ०) निरपराध ।	वेगाना—(वि० प्रा०) पराया । गैर । वेगानगी=(प्रा०) परायापन ।
वेख—(स्त्री० प्रा०) जड़ । मूल ।	वेगार—(स्त्री० प्रा०) बिना मज दूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम । वेगारी=(प्रा०) वेगार में काम करनेवाला आदमी ।
वेखटक—(वि० हि०) निस्स क्षेप ।	वेगुनाह—(वि० प्रा०) बेकसूर । निर्दोष ।
वेगतर—(वि० अ०) निभय । निडर ।	वेचना—(क्रि० हि०) विक्रय करना । प्रसारण करना ।
वेखता—(वि० अ०) वेकसूर । निरपराध ।	वेचारा—(वि० प्रा०) गरीब । दीन ।
वेखथर—(वि० प्रा०) अनजान । नावाकिफ । बेहाश । बेसुध ।	वेचिराग—(वि० प्रा०+अ०) उजड़ा हुआ ।
वेखवरो—(स्त्री० प्रा०) अज्ञा नता । बेओशी ।	वेचैन—(वि० प्रा०) व्याकुल । विकल । वेचैनी=विकलता । व्याकुलता । घबराहट ।
वेखौरु—(वि० प्रा०) निडर । निभय ।	वेजड—(वि० हि०) वे बुनियाद । निमूल ।
वेगम—(स्त्री० तु०) रानी । राज पत्नी । तास का एक पत्ता जिम पर एक स्त्री या रानी का चित्र बना होता है ।	
वेगरज—(प्रा०+अ०) जिसे	

घेजयान—(वि० फ्रा०) गूँगा ।
गरीब ।

घेजा—(वि० फा०) घेमीके ।
घेठिकाने । अनुचित । ना
मुनामिष । खराब । घुरा ।

घेजान—(वि० फ्रा०) मुरदा ।
कमजोर ।

घेजाटना—(वि० फा० + अ०)
क्रान्त के विरुद्ध ।

घेजार—(वि० फ्रा०) व्यथित ।

घेजांड—(वि० हि०) जिवमें जोड़
न हो । निरुपम । अद्वितीय ।

घेट—(पु० अ०) यात्री । दाँव ।
शक्त ।

घेटा—(पु० हि०) पुत्र । लड़का ।
घेरी = लड़की ।

घेठन—(पु० हि०) बँधना ।

घेठिकाने—(वि० हि०) ऊँज
ललूल । शय । निरथक ।

घेड—(पु० अ०) नीचे का भाग ।
तल । विस्तर । बिछोना ।

घेडा—(पु० हि०) तिरना ।
जहाजों या नावों का

समूह । आदा ।

घेडी—(स्त्री० हि०) लोहे की

ज़ञीर जो कैदियों के पह-
नाई जाती है ।

घेडोल—(वि० हि०) महा ।
बेढगा ।

घेडगा—(वि० हि०) महा ।
फुरूप । —पन = महापन ।

घेडर्ड—(स्त्री० हि०) पचौड़ी ।
भरा हुई राटी या पूगी ।

घेडना—(क्रि० हि०) रूँधना ।
चौपायों का घेरकर हाँक खे
जाना ।

घेढय—(वि० हि०) बेढगा ।
महा ।

घेतवल्लुफ—(वि० फ्रा० + अ०)
सरल । निर्ग्याज । निछल ।
घेतवल्लुफी = सरलता ।
सादगी ।

घेतकमीर—(वि० फा० + अ०)
निरपराध । बेगुनाह ।

घेतमीज—(वि० फ्रा० + अ०)
वेशहूर । बेहूदा । उजड़ ।

घेनरह—(क्रि० फा० + अ०) घुरी
तरह से । अनुचित रूप से ।
विलक्षण ढंग से ।

वतरीका—(नि० ण० + थ०)

बकायदा । अनुचित ।

वतहाशा—(क्रि० ण० + थ०)

बहुत अधिक सेवा स । बिना
सेवा के ममके ।

वताय—(वि० ण०) दुयल ।

कमजोर । विकल । व्याकुल ।

वताधी = कमजारी । दुय

लता । बेचैना । घबराहट ।

वतार—(वि० हि०) बिना तार

का ।

वतुका—(वि० हि०) बमेज ।

वतौर—(क्रि० ण० + थ०)

बुरी तरह से । बेतरह ।

वेदखल—(वि० ण०) अधिकार

च्युत । वेदखली = अधिकार
में न रहने देना ।

वेदम—(वि० ण०) मृतक ।

मुरदा । अधमरा । मृतप्राय ।

वेदद—(वि० ण०) फणोर हृदय ।

निदय । वेददी = निदयता ।
फणोरता । बेरहमी ।

वेदाग—(वि० ण०) निर्दांप ।

शुद्ध । बिना धर्म्ये का ।

वदाना—(पु० हि०) काबुर्बी

धनार ।

वेघडय—(क्रि० ण० + हि०)

नि सकोष । निहर होकर ।

वेयाफ । बेरकावट । निहर ।

वेनजीर—(वि० ण० + थ०)

अनुपम ।

वेनट—(स्त्री० थ०) सगीन ।

वेनसीर—(वि० हि० + थ०)

अभागा । बदत्रिस्मत ।

वेना—(पु० हि०) बाँस का बना

हुआ पत्ता ।

वेनागा—(क्रि० ण० + हि०)

लगातार । नित्य । बिना नागा
बाले ।

वेनुली—(स्त्री० देश०) खाँति या

चक्री में वह छोटी सी लकड़ी
जो किराले के ऊपर रखी जाती
है ।

वेपरद—(वि० ण०) नफ़ा । नफ़ा ।

वेपरदगी = परदे का अभाव ।

वेपरवा वेपरवाह—(वि० ण०)

वेपिक । मन मौजी । उदार ।

वेपेंदी—(वि० हि०) जिसमें पैदा

न हो ।

वेफायदा—(वि० फ्रा०) व्यथ ।
 वेफिकरा—(वि० हि०) फा०)
 निश्चिन्त ।
 वेफिकर—(वि० फ्रा०) वेपरवा ।
 वेफिकरी = निश्चितता ।
 वेवस—(अ०) लाचार । पर-
 वश ।
 वेवसी—(स्त्री० हि०) लाचारी ।
 मजदूरी ।
 वेवाक—(वि० फा०) चुकाया
 हुआ ।
 वेदुनियाद—(वि० फ्रा०)
 निमूल ।
 वेभाव—(क्रि० फ्रा०) वेहद ।
 बेहिसाब ।
 वेमजा—(वि० फा०) जिसमें
 कोई आनन्द न हो ।
 वेमन—(क्रि० फ्रा०) बिना मन
 लगाये ।
 वेमरम्मत—(वि० फा०) बिना
 सुधरा । दूटा फूटा ।
 वेमालूम—(क्रि० फ्रा०) बिना
 किसी को पता लगे ।
 वेमिलावट—(वि० हि०) बेमेल ।
 शुद्ध । प्राणिस ।

वेमुनासिव—(वि० फा०) अनु-
 चित ।
 वेमुरव्वत—(वि० फ्रा०) शील
 मकोच रहित । वेमुरचती =
 दु शीलता ।
 वेमौसा—(वि० फ्रा०) अवसर
 का अभाव ।
 वेमौसिम—(वि० फ्रा०) उपयुक्त
 मौसिम या अतु न होने पर
 भी होनेवाला ।
 वेरस—(वि०) रस हीन । बुरे
 स्वादवाला ।
 वेरहम—(वि० फ्रा०) निटुर ।
 निदय । वेरहमी = निदयता ।
 निष्टुरता ।
 वेरा—(पु० अ०) साहब लोगों
 का वह चपरासी जिसका
 काम चिट्ठी पत्री या समाचार
 आदि पहुँचाना और ले
 आना आदि होता है ।
 वेरी—(स्त्री० हि०) एक छता ।
 एक कँटीला घृच ।
 वेरुख—(वि० फ्रा०) वेमुरव्वत ।
 नाराज़ । मुद्ध ।

बेरुपा—(स्त्री० प्रा०) बेसुर
ध्वती ।

बेरोर—(वि० फा० + हि०)
बेसुटके । निर्विघ्न ।

बेरोजगार—(वि० फा०) बिना
काम धंधे का ।

बेरौनक—(वि० फा०) ठदाम ।

बेर्रा—(पु० देश०) मिले हुए
जौ और चने का आग ।

बेल—(पु० हि०) श्रीफल ।
बिरब । एक फरीला वृक्ष ।
(पु० अ०) गाँठ । जमावत ।

बेलचा—(पु० फा०) एक प्रकार
की छोटी कुदाल । एक
प्रकार की लबा खुरपी ।

बेलउजन—(वि० फ्रा०) स्वाद
हीन । सुखरहित ।

बेलदार—(पु० फ्रा०) फासदा
चलाने या जमीन खोदने का
काम करनेवाला मजदूर ।
बेलदारी = बेलदार का काम ।

बेलन—(पु० हि०) रोलर ।
कोरू का छाठ । कोई गोल
और लंबा लुदकनवाला
पदार्थ । बेलदार = जिसमें

घलन लगा हो । बलना =
काठ का बना हुआ छोटा
गोल टुटा जो प्रायः रोटी,
पूरी, बच्चारी को चकले पर
रखकर बलन के काम में
आना है । (क्रि० स०) रोटी
पूरी, बच्चारी, आदि को
चकले पर रखकर बलने की
सहायता से बड़ा और
पतला करना । चौपट करना ।

बेलपत्र—(पु० हि०) बेल के वृक्ष
की पत्तियाँ ।

बेलबूटेदार—(वि० हि०) जिसमें
बेल-बूटे धने हों । बल-बूटों
वाला ।

बेला—(पु० हि०) चमेली की
जाति का एक फूल । मोगरा ।
मखिलका । समय । वक्त ।
एक बाजा ।

बेलाग—(वि० फा०) बिलकुल
थलग । साफ़ खरा ।

बेलाडीना—(पु० अ०) मकोय
का सत्त ।

बेलौस—(वि० हि० + फ्रा०)
सच्चा । खरा । बेसुरध्वत ।

वेवकूफ—(वि० फ्रा०) मूल ।

नासमक । वेवकूफी = मूलता ।

नादानी । नासमक्की ।

वेवकू—(क्रि० फा०) कुसमय में ।

वेवतन—(वि० फा०) बिना घर
द्वार का ।

वेवफा—(वि० फा०) बेमुगै-
व्यत । अकृतन ।

वेवा—(स्त्री० फ्रा०) विधवा ।
रॉड ।

वेशकर—(वि० फ्रा०) मूल ।

नाममक । वेशकरी = मूलता ।

नासक्की ।

वेशकू—(वि० वि० फ्रा०)
नि मदेद । अग्रय ।

वेशकामत, वेशकीमतो—
(वि० फ्रा०) बहुमूरय ।

वेशरम—(वि० फा०) निलज्ज ।

वे-या । वेशरमी = निलज्जता ।

यहपाई ।

वेशो—(स्त्री० फा०) अधिकता ।
ज्यादती ।

वेसन—(पु० देश०) चने की
दाल का आटा ।

वेसनी—(वि० हि०) वेसन का
बना हुआ ।

वेसवय—(क्रि० वि० फा०)
अकारण ।

वेसवरा—(वि० फा०) अधीर ।
वेववरी = असतोष । अधैर्य ।

वेसवक—(वि० फा०) मूल ।
नाममक । वेवमक्की = नास
मक्की । मूलता ।

वेनरोनामान—(' वि० फा०)
दगिद्र । फगाल । जिमके पाम
कुछ सामग्री न हो ।

वेसिलमिले—(क्रि० हि०) अव्य-
वस्थित रूप से ।

वेसुध—(वि० हि०) अचेत ।
बहोश । वेसुधर ।

वेसुर—(वि० हि०) घेमेज स्त्र-
वाला ।

वेसुरा—(वि० हि०) जो निय
मित स्त्र में न हो । वे
सैका ।

वेस्वाद—(वि० हि०) स्वाद्
रहित । बदलापत्रा ।

वेहगम—(वि० हि०) वेहगा ।
वेहव ।

बहतर

वेहतर—(वि० फा०) यदकर
अच्छा । (अ०) प्राथना
वा आदेश के उत्तर में स्माकृति
भूत्कर शब्द । वेहतरी =
अच्छापन । भलाइ ।

वेहद—(वि० फा०) अमीम ।
अपार । बहुत अधिक ।

वेहन—(पु० हि०) अनाज आदि
का बीज जो रेत में बोया
जाता है । बीधा ।

वेहना—(पु० देश०) धुनिया ।

वेहया—(वि० फा०) निलज ।
वेशम । वेहयाइ = निलजता ।
वेशमी ।

वेहला—(पु० हि०) सारंगी के
आकार का अँगरेजी बाजा ।

वेहाल—(वि० फा०) याकुज ।
वेचैन ।

वेहिसाव—(कि० फा०) बहुत
अधिक । वेहद ।

वेहुरमत—(वि० फा०) वेहउजत ।

वेहदगी—(वि० फा०) असम्यता ।

वेहदा—(वि० फा०) बदतमीज ।
(अशिष्ट । —पन = अशिष्टता ।
असम्यता ।

वेहैफ—(वि० फा०) वेकिफ ।
दिता-नहित ।

वेहोश—(वि० फा०) मूर्च्छित ।
वेसुष । वेहोशी = मूर्च्छा ।
अचेतनता ।

वक्—(पु० अ०) रूपय के लेन
देन की बड़ी काठी ।

वकर—(पु० अ०) महाजन ।
साहकार ।

वगन—(पु० हि०) एक फल
तरकारी ।

वगनो—(वि० हि०) वँगन के रंग
का । वँगनी ।

वैजनी—(वि० हि०) वगनो ।

वेड—(पु० अ०) अँग्रेजी बाजा ।

वै—(स्त्री० अ०) वेचना । विक्री ।

वैजा—(पु० अ०) अडा ।
अडकोश ।

वेट—(पु० अ०) डडा ।

वैटरी—(स्त्री० अ०) चीनी वा
शीशे आदि का पात्र जिसमें
रासायनिक पदार्थों के योग
से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा
विजली पैदा करके काम में
लाइ जाती है । सोपट्राना ।

वैठक—(स्त्री० हि०) बैठने का स्थान । चौपाल । अथाई । एक प्रकार की कसरत । बैठका = चौपाल या दालान । बैठकी = किसी स्थान पर बैठने का महसूल ।

वैठा ठाला—(पु० हि०) निष्क्रमा । बेकार ।

वैठना—(क्रि० हि०) आसन जमाना । किसी को पति बना लेना । खच होना ।

वैठनी—(स्त्री० हि०) करघे में वह स्थान जहाँ जुलाहे कपड़ा बुनते समय बैठते हैं ।

वैठाना—(क्रि० हि०) स्थित करना । किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रख लेना ।

वैना—(पु० हि०) वह मिठाई आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है ।

वेरग—(वि० अ०) वह चिढ़ी या पारमल जिसका महसूल पानेवाले से वसूल किया जाय ।

वैर—(पु० स०) शत्रुता । दुरमनी । विरोध । द्वेष ।

वैरन—(पु० अ०) एक अँगरेजी उपाधि ।

वैरा—(पु० अ०) सेवक । चाकर ।

वेरागी—(पु० हि०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद ।

वेरी—(वि० स०) शत्रु । विरोधी ।

वैरोमीटर—(पु० अ०) मौसिम की सरदी-गर्मी नापने का एक यंत्र ।

वैल—(पु० हि०) एक चौपाया । मूखं मनुष्य ।

वैलर—(पु० अ०) पोपे के आकार का लोहे का बड़ा देग जो भाप से चलनेवाली कलों में होता है ।

वैलून—(पु० अ०) गुब्बारा ।

वैसाखी—(स्त्री० हि०) लँगड़े के टेकने की लाठी ।

वोम्—(पु० हि०) भार । वजन । सुरिकल काम । कठिन बात । वोम्मा = भार । वजन ।

घोट—(स्त्री० अ०) नाव । नौका । स्टीमर । जहाज़ ।

घोटी—(स्त्री० हि०) मांस का छोटा टुकड़ा ।

घोडा—(पु० देश०) एक पत्नी जिसकी तरकारी बनती है ।

घोतल—(स्त्री० थ०) काँच का एक लंबी गरदन का गहरा घरतन ।

घोता—(पु० थ०) ऊँट का बच्चा ।

घोदर—(पु० दश०) ताल या जलाशय के किनारे सिंचाई का पानी चढ़ाने के लिये बना हुआ स्थान जिसके कुछ नीचे दो आदमी इधर उधर खड होकर टोकरे आदि उलाचनर पानी ऊपर गिराते रहते हैं ।

घोदा—(वि० हि०) मूल । गावदी । सुम्त । (थ०) घोता । —पन = मृषता । नाममन्त्री ।

घोष—(पु० स०) ज्ञान । जान-कारा । सतोष । बाधक = ज्ञान करानेवाला । जताने वाला । —गम्य = समझ में आने योग्य ।

घोनस—(पु० थ०) पुरस्कार । वह अतिरिक्त लाभ जो किसी कंपनी के हिस्सेदारों को दिया जाय ।

घोना—(कि० हि०) बीज का जमने के लिये जुने खेत या भुरभुरी की हुई ज़मीन में दितराना । बिखराना ।

घोरसी—(स्त्री० हि०) अगीठी ।

घोरा—(पु० हि०) टाट का बना धैजा । घोरिया = छोटा धैजा । (क्रा०) चटाई । बिस्तर । घोरी = छोटा घोरा ।

घोर्ड—(पु० थ०) किसी स्थायी कार्य के लिये बनी हुई समिति । माल के मामलों के फैसले या प्रयत्न के लिये बनी हुई समिति या चमेटी । फागज की मोटी दफती ।

घोडर = वह विद्यार्थी जो बोर्डिंग हाउस में रहता हो । घोडिङ्ग हाउस = छात्रावास ।

घोल—(पु० हि०) वचन । वाणी । ताना । -यग । बोलती = बोलने की शक्ति ।

बोलना = मुँह में शब्द निकालना । आने के लिये कहना या कहलाना । बोला चाली = बात चीत । बोलाया = न्याता । बोली = आवाज । वाणी । वचन । बात । नीलाम करनेवाले और लेने वाले का जोर में दाम क"ता । भाषा । हँसी दिहनी । ताना । नटाली ।

बोहनी—(स्रो० हि०) किसी सौदे की पहली बिक्री । किसी दिन की पहली बिक्री ।

बोहाड़ी—(स्रो० हि०) भादू ।

बौखलाना—(क्रि० ि०) बहक जाना । सक जाना ।

बौठाड—(स्रो० हि०) रूँदों की ऋद्धि । लगातार बात पर बात ।

बौडम—(पु० हि०) बेयकूर । पागल ।

बौद्ध—(वि० सं०) बुद्ध का अनुयायी । —धर्म = गौतम बुद्ध का सिखाया मत ।

—(पु० हि०) आम की

मञ्जरी । —ना = आम का फूलना ।

व्यवहार—(पु० हि०) उधार । बज़ ।

व्यवहार—(पु० हि०) रुपए का लेन देन । लेने देने का सबध । इष्ट मित्र का सबध । व्यवहारी = कार्यकर्ता । मामला करने वाला । व्यापारी ।

व्याज—(पु० हि०) वृद्धि । सूद ।

व्याना—(क्रि० हि०) जनना । पैदा करना ।

व्यापना—(क्रि० हि०) किसी स्थान में भर जाना । असर करना ।

व्यालू—(पु० हि०) रात का खाना ।

व्याह—(पु० हि०) विवाह । शादी ।

व्योचना—(क्रि० हि०) मुरकना । मोच खा जाना ।

व्योत—(पु० हि०) ढग । उपायः तरीका ।

द्वारा—(पु० हि०) विवरण ।
तफ्तीक ।

द्वयोहर—(पु० हि०) देन-देन
का व्यापार ।

ब्रह्म—(पु० हि०) ईश्वर । जगत
का कारण । —कर्म =
ब्राह्मण का कर्म । —चर्य =
वीथ को रचित रखने का
प्रतिबन्ध । चार आधर्मों में
पहला आधर्म । ब्रह्मचारी =
ब्रह्मचर्य का व्रत धारण
करनेवाला । ब्रह्मचारिणी =
ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने
वाली स्त्री । —ज्ञान = ब्रह्म
का बाध । अद्वैत मित्रात का
बोध । —पानी = अद्वैत
वादी । —द्रोही = ब्राह्मणों
से बैर रखनेवाला । —पुत्र
= ब्रह्मा का पुत्र । —रन्ध्र =
मूर्खों का छेद । ब्रह्माड-झार ।
—वेत्ता = ब्रह्मजानी । —हत्या
= ब्राह्मण को मार डालना ।
ब्रह्माड = चौदहों भुवनों
का समूह । कपाल । लोपदी ।

ब्रह्मा—(पु० स०) सृष्टिकर्ता ।
विधाता ।

ब्राह्मण—(पु० स०) चार वर्णों
में सबसे श्रेष्ठ वर्ण । ब्राह्मणी
= ब्राह्मण जाति की स्त्री ।

ब्राह्ममुहूर्त्त—(पु० स०) सूर्यो
दय से पहले नौ घड़ी तक
का समय ।

ब्राह्मन्मजाज—(पु० स०) बंग
देश में प्रवर्तित एक नया
सम्प्रदाय जिसमें एकमात्र
ब्रह्म ही की उपासना की
जाती है ।

ब्राह्मी—(स्त्री० स०) भारतवर्ष
की पुरानी लिपि । औपघ के
काम में आनेवाली एक वृत्ति ।

ब्रिगेड—(पु० अ०) सेना का
एक समूह । ब्रिगेडियर =
एक सैनिक कर्मचारी जो एक
ब्रिगेड भर का सचालक होता
है ।

ब्रिटिश—(वि० अ०) उस द्वीप
से संबन्ध रखनेवाला जिसमें
इंग्लैंड प्रदेश है । इंगलिस्तान
का । अंगरेज़ी ।

त्रिज—(पु० अ०) पुल । नेतु ।
 त्रिटेन—(पु० अ०) इगलैंड और
 वेल्स ।
 त्रिप्रियर—(पु० अ०) एक प्रकार
 का छोटा टाइप ।
 तुश—(पु० अ०) बालों वा बनाव
 दुआ कूँचा जिमसे टोपी वा जूते
 इत्यादि साफ किये जाते हैं ।
 त्रोकर—(पु० अ०) इलाक ।
 व्लाक—(पु० अ०) ठप्पा ।

भूमि का कोई चौकोर मुकदा
 या घग ।
 व्लाटिंग पेपर—(अ०) सोपाना ।
 स्वार्ही-सोत्र कागज ।
 वल्यू—(अ०) नीला । —व्लैक
 = नीली मिश्रित काली
 स्माही ।
 व्लैकट—(अ०) वस्त्र ।
 व्लैक—(अ०) काला । —वाड
 = बाला सपता ।

भ

भ

मँडोआ

भ—हिन्दी-व्युत्पत्तियों का चौथी
 सर्वा और पवग का चौथा
 वर्ण ।
 भग—(पु० स०) पराजय ।
 बाधा । भाँग । भगद =
 बहुत भाँग पीनेवाला ।
 भँगोड़ी ।
 भगी—(पु० हि०) मल मूत्र
 उठानेवाला । भँगोड़ी ।
 भँडभौंड—(पु० हि०) एक
 कँटीला पौधा ।

भँडारिया—(पु० हि०) एक जाति
 का नाम । ढोंगी । पाखडी ।
 भूत । भट्टर के वंशज ।
 भडार—(पु० हि०) कोप ।
 खजाना । असादि रखने का
 स्थान । पाकशाला । भडारा =
 साधुओं का भोज । भडारी =
 खजानची । कोपाध्यस ।
 भँडोआ—(पु० हि०) भँडे क
 गाने के गीत । अरलील बात ।



भडुश्रा—(पु० हि०) वेरयाघ्नो
का दलाज । वेरयाघ्नो के साथ
तयला या सारगी बजाते-
वाला ।

भडुर—(पु० हि०) एक जाति ।
वया विज्ञान का एक प्राचीन
कवि ।

भतीजा—(पु० हि०) भाइ का
पुत्र ।

भत्ता—(पु० हि०) दैनिक यय
जो किना बमबारी का
यात्रा के समय दिया जाता है ।
धलाउस ।

भदा—(वि० हि०) घेडगा ।
कुरप । —पन = घेडगापन ।

भद्र—(वि० स०) सभ्य । सुशि-
क्षित ।

भद्रा—(स्त्री० स०) फलित
ज्योतिष के अनुसार एक योग ।
बाधा ।

भनभनाइट—(स्त्री० हि०)
गुल्लार ।

भभक—(स्त्री० हि०) उबलना ।
उबात्र ।

भय—(पु० स०) डर । सौफ ।

भयकर = डरावता । भयभीत =
डरा हुआ । भयातुर = डर से
घबराया हुआ । भयाक =
भयकर । भयावह = डरावना ।

भरण—(पु० स०) पात्रा-
पापण ।

भरता—(पु० देश०) चोरा ।

भरती—(स्त्री० हि०) भरना ।
प्रवेश हाना ।

भरपाइ—(कि० हि०) पूरी
यसूलो का रसीद ।

भरपूर—(वि० हि०) भली-
भाँति ।

भरम—(पु० हि०) सशय ।
सदेह । भेद । रहस्य ।

भरसक—(कि० हि०) यथा
शक्ति । जहाँ तक हो सके ।

भरापूरा—(वि० हि०) सपन्न ।

भरी—(स्त्री० हि०) एक ताल जो
एक रुपये क बराबर होती है ।

भरोसा—(पु० हि०) आसरा ।
सहारा । आशा । दृढ़ विश्वास ।
यत्रीन ।

भर्ग—(पु० अनु०) कर्सा ।
पत्नी । चकमा ।

भूत

शास्त्र जिनके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान होता है।

भूत—(पु० स०) जीव । प्राणी ।
धीता हुआ समय । गुजरा
हुआ ज़माना । मृत शरार ।
शव । प्रेत । जिन । गत ।
(स्त्री०) भूतिनी ।

भूतल—(पु० स०) पृथ्वी का
ऊपरी तल । ससार ।

भूधर—(पु० स०) पहाड़ ।

भूनना—(क्रि० हि०) अग्नि
में डालकर या तवे पर रखकर
या गरम बालू में डालकर
पकाना । तबना ।

भूप—(पु० स०) राजा ।

भूमडल—(पु० स०) पृथ्वी ।

भूमि—(स्त्री० स०) पृथ्वी ।
ज़मीन । स्थान । जड़ । देश ।
प्रात । क्षेत्र ।

भूमिका—(स्त्री० स०) रचना ।
किसी ग्रंथ के चारभकी वह
सूचना जिससे उस ग्रंथ के
संघर्ष की आवश्यक और

ज्ञातय बातों का पता चले ।
सुख बन्ध ।

भूमिहार—(पु० स०) एक जाति ।

भूरा—(पु० हि०) मटमैला रंग ।

भूरि—(पु० स०) अधिक ।

भूल—(स्त्री० हि०) राजती ।

चूक । कसूर । अशुद्धि ।

—ना=बाद न रखना ।

गलती करना । खो देना ।

भुलकड़=भूलनेवाला । भूल

भुलैयाँ=धुमावदार इमारत ।

बहुत धुमाव फ़िराव की बात

या घटना ।

भूपण—(पु० स०) गहना ।

भूपित=सजाया हुआ ।

भूसा—(पु० हि०) मुस ।

(स्त्री०) भूमी=अन्न या दाने

के ऊपर का छिलका ।

भूकुटी—(स्त्री० स०) भौंह ।

भृत्य—(पु० स०) सेवक ।

नौकर ।

भेंट—(स्त्री० हि०) मिन्नता ।

मुलाकात । उपहार ।

गज़राना ।

भेंटना—(क्रि० हि०) मुलाकात

करना । मिलना । छाती से लगाना । थालिङ्गन करना ।

भेजना—(क्रि० हि०) रवाना करना । पठाना ।

भेजा—(पु० हि०) खोपड़ी के भीतर का गुदा । चदा । वेहरी ।

भेड—(स्त्री० हि०) चकरी की जाति का एक चोपाया । गाढर । बहुत सीधा या मृग्य मनुष्य । भेड़ा=भेड़ जाति का नर भेड़ा । भेदियाधसान=अध विश्वास । बिना सोचे विचारे काम करना । भेदिया=एक जङ्गली जानवर । बड़ा सियार ।

भेद—(पु० स०) रहस्य । मर्म । तात्पर्य । प्रक । अतर । विस्म । जाति । —बुद्धि=पूट । भेदिया=भेद लेने वाला । जामूस । गुप्त रहस्य जानने वाला ।

भेरी—(स्त्री० स०) वषा डोल या गगावा । हुँदभी ।

भेली—(स्त्री हि०) गुड़ की गोल पिंडी । गुड़ ।

भेस—(पु० हि०) वेप । शकल सूरत ।

भैस—(स्त्री० हि०) दूध देने वाला ष्व चौपाया । (पु०) भैसा ।

भैया—(पु० हि०) भाई । धरा धर वालों या छोटों के लिये सषोधन शब्द । —दोज=कार्तिक शुक्ल द्विताया । भाईदूज ।

भैरवी—(स्त्री० स०) एक रागिनी । —चक्र=तात्रिकों या धाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों, ऋतुओं और समयों में देवी की पूजा करने के लिये एकत्र होता है । मद्यपों और धनाचारियों का समूह ।

भोंकना—(क्रि० हि०) घँसाना । घुसेदना ।

भोंडा—(वि० हि०) भद्दा । बदसूरत । कुरूप । —पन=भद्दापन । बेहूदगी ।

भाट्ट—(वि० हि०) ब०कू० ।
मूर्ध । सीधा । भाजा ।

भौपू—(पु० अनु०) तुरहा की
तरह वा एक प्रकार का
वाजा ।

भोग—(पु० म०) सुख या दुःख
आदि को अनुभव करना या
सहना । मृत्यु । स्त्री मभाग ।
भोगना = भुगतना । सहना ।
—विकास = आमोद प्रमोद ।
सुख चैन । भागी = भागने
वाला । सुखी । इन्द्रियों का
सुख चाहने वाला । भुगतने
वाला । भोग्य = भागने
योग्य । काम में लाने योग्य ।

भोज—(पु० हि०) दानत ।
जेवनार ।

भोजन—(पु० स०) खाना ।
भक्षण करना । खाने की
सामग्री । —मट्ट = पेट्ट ।
—शाला = रसोईघर ।
पाकशाला । भोजनाच्छादन =
खाना ढपका । अन्न-वस्त्र । भोज
नालय = पाकशाला । रसोई-

घर । भोग्य = खाने योग्य
पदार्थ

भोजपत्र—(पु० स०) एक वृक्ष

भौला—(वि० हि०) सीधा सादा
—पन = सरलता । सांगो
नादानी । मृगता । —नाला
= सीधा । सरल चित्त का ।

भौ—(स्त्री० हि०) चारों के ऊपर
के बालों की श्रेणी । भौह ।

भौगा—(पु० हि०) काले रंग का
उड़नेवाला एक पतंगा । एक
खिलौना ।

भौरी—(स्त्री० हि०) पशुओं
आदि के शरीर में बालों के
घुमाव से बना हुआ चक्र ।
तेज बहते हुए जल में पड़ने-
वाला चक्कर ।

भौरी—(हि०) बाटी । उपले पर
सँकी हुई माटी रोटी ।

भौह—(स्त्री० हि०) भौ ।

भौचक्र—(वि० हि०) स्तम्भित ।
चक्रपकाया हुआ ।

भौजाह—(स्त्री० हि०) भाभी ।
भाह की भाख्या ।

भौतिक—(पु० स०) पचभूत

मयधी । —विद्या = भूतों
प्रेतों को बुझाने और दूर
कराने का विद्या ।

भौमवार—(पु० म०) मगतवार ।

भ्रम—(पु० म०) मिथ्या ज्ञान ।

घावा । मग्नेह । शक । येहे
शी । —मूलक = जो भ्रम का
कारण उत्पन्न हुआ हो ।

सद्दिग्ध । भ्रमण = घूमना ।

भ्रामक = भ्रम उत्पन्न करने

वाला । भ्रामक = जिनके

कारण भ्रम उत्पन्न होता हो ।

भ्रमर—(पु० स०) भौरा ।

भ्रष्ट—(वि० स०) पतित । बुरे

चाल चलनवाला । दुराचारी ।

भ्रष्टा = कुलटा । दिनाल ।

भ्राति—(स्त्री० म०) धोखा ।

मरह । पागलपन । भूलचूक ।

भ्रान्ता—(पु० स०) सगा भाई ।

सहोदर ।

भ्रू—(स्त्री० स०) शीशुओं के ऊपर

के बाल । भा । —भग =

शैरी बढ़ाना । क्रोध आदि

प्रगट करने के लिये भौह

बढ़ाना । —सधातन = भी

मथाना । —विलास = म्त्रियों

का हाजभाव ।

भ्रूण—(पु० म०) स्त्री का गर्भ ।

—हत्या = गर्भ के बालक

को हत्या ।

म

म—हिंदी उणमाळा का पश्ची
सर्वो यजन और पत्रग का
अंतिम वर्ण ।

मगन—(पु० हि०) भिक्षुक ।

मँगता = भिलमता । मँगनी

= उगर । विवाह के पहले
की रहम । वररक्षा ।

मगल—(पु० स०) कल्याण ।

एक दिन । —प्रद = कल्याण

कारी । —वार = सोमवार

के बाद बुधवार के पहले
का वार । भौमवार ।
मागलिक = शुभ ।

मँगाना—(क्रि० हि०) मँगने
काम दूसरे से कराना ।

मच, मचक—(पु० स०) खाट ।
खनिया । मैचिया । ऊँचा
बना हुआ बँका ।

मजन—(पु० हि०) दाँत साफ
करने का चूण । (थ०) दूध
पाठहर ।

मजरी—(स्त्री० स०) कौपल ।
घौर ।

मजिल—(स्त्री० थ०) पढ़ाव ।
मकान का खट । भरातिय ।

मजुल—(वि० स०) सुन्दर ।

मजूर—(वि० श्र०) स्वीकृत ।
मजुरी = स्वीकृति ।

मजूपा—(स्त्री० स०) छोटा
पिटारा या डिब्बा । पिटारी ।

मडन—(पु० स०) सजाना ।
प्रमाण आदि कोई बात सिद्ध
करना । मडित = शोभित ।

मडप—(पु० स०) किसी डरसव
या समारोह के लिये बाँस

पृस आदि से छाकर बनाया
हुआ स्थान । देवमन्दिर के
ऊपर का गुम्बद । चँदोवा ।
शामियाना ।

मडल—(पु० स०) चक्कर ।
गोलाई । भूमिखट । प्रदेश ।
समाज । समूह । ग्रह के घूमने
की वृत्ता । मडलाकार =
गोल । मडलाना = किसी के
चारों ओर घूमना ।
मडली = गोल । समूह ।
समाज । समुदाय ।

मँडवा—(पु० हि०) मडप ।

मडी—(स्त्री० हि०) थोक विक्री
की जगह । बड़ा हाट ।

मँडुआ—(पु० देश०) एक धन्न ।

महूर—(पु० स०) छोड़े की मूल ।

मंतव्य—(वि० स०) मानने
योग्य । माननीय । विचार ।
मत ।

मत्र—(पु० स०) सखाह । परा
मर्श । गायत्री आदि वैदिक
वाक्य । जप के लिये निर्दिष्ट
शब्द या वाक्य । मत्रया =
परामश । सखाह । —विद्या =

सत्रिषा । मत्रशास्त्र । तत्र ।	मक्कदूर—(पु० थ०) सामर्थ्य ।
मत्रिय=मत्री का कार्य ।	मकानातीस—(पु० थ०) चुम्बक
पञ्जारत । मत्री=सलाह देने	पर्यार ।
वाला । सचिव ।	मक्कफल—(वि० थ०) रेहन
मथन—(पु० स०) मयना ।	किया हुआ ।
बिलोना ।	मक्करा—(पु० थ०) समाधि ।
मद्—(वि० म०) धीमा । सुस्त ।	मजार ।
शिथिल । आलसी । मूव ।	मक्कनृजा—(वि० थ०) अधि-
—भाग्य = दुर्भाग्य ।	कृत ।
—भागी = अभागी । मद्दी =	मक्करद—(पु० स०) पृजा का
सस्ती ।	रम ।
मदार—(पु० स०) आक ।	मकरा—(पु० हि०) मद्बुवा
मदार ।	नामक अन्न । एक कीड़ा ।
मदिर—(पु० स०) घर । दगा	मक्करूह—(वि० फा०) नापाक ।
लय ।	घुणित ।
मद्र—(पु० म०) गम्भीर ध्वनि ।	मक्कसद—(पु० थ०) मनोरथ ।
धीमा ।	मतलब ।
मशा—(स्त्री० अ०) इच्छा ।	मक्कसूद—(वि० अ०) उद्विष्ट ।
हरादा ।	अभिप्रेत ।
मसत्र—(पु० अ०) पद । पदमी ।	मम्मान—(पु० फ्रा०) घर ।
मसूत्र—(वि० थ०) रद ।	मकुना—(पु० हि०) विना नौत
मक्कद—(स्त्री० हि०) एक अन्न ।	का नर हाथी । बिना मूँड़ों
मक्कडा—(पु० हि०) बड़ी	का पुरूप ।
मक्कड़ी । मक्कड़ी = एक कीड़ा ।	मकुनी—(स्त्री० देश०) मक्क के
मक्कतब—(पु० अ०) पाठशाळा ।	आटे की रोटी ।

मन्त्रमुद्रा—(वि० श०) इकट्ठा किया हुआ । सगृहीत ।

मजमून—(पु० श०) विषय । खोल ।

मजगिया—(वि० फा०) नाजारी हो । प्रवृत्त ।

मजल्बिया—(वि० फा०) नेता और वाया हुआ ।

मजरुह—(वि० श०) घायल । ज़रमी ।

मजल—(स्त्री० फा०) मजिल । पड़ाव ।

मजलिस—(स्त्री० श०) सभा । महफिल । नाच रंग का स्थान । मजलिसी=निमंत्रित व्यक्ति । जो मजलिस में रहने योग्य हो । सबको प्रसन्न करनेवाला ।

मजलूम—(वि० श०) अध्याचार पीड़ित । सताया हुआ ।

मजहब—(पु० श०) धार्मिक संप्रदाय । पथ । मत । मजहबी= किसी धार्मिक मत या संप्रदाय से सय्य रखनेवाला । महतर सिल ।

मजा—(पु० फा०) स्वाद । लज्जत । ध्यानद । मुस । दिखली ।

मजाक—(पु० श०) दिखली । मजाज़न्=हँसी दिखली के तौर पर । मजाज़िया= मजाक से ।

मजाज़—(पु० फा०) गर्व । स्वभाव । तमीयत ।

मजाज़—(पु० श०) अधिकार । हक़ । इच्छित्यार ।

मजाज़ी—(वि० श०) बनावटी । कल्पित ।

मजार—(पु० श०) समाधि । मज़बरा । क़य्र ।

मजाल—(स्त्री० श०) सामर्थ्य ।

मजिस्ट्रेट—(पु० श०) ज़िन्दागी अदालत का अफसर । मजिस्ट्रेटी=मजिस्ट्रेट का कार्य या पद ।

मजीठ—(स्त्री० हि०) एक लता ।

मजीरा—(पु० हि०) ताक । डुनकी । जोड़ी ।

मजूर—(पु० फा०) मजदूर ।

बुली : मजूरी = मजूर
का काम ।

मञ्जेदार—(वि० फा०) स्वादिष्ट ।
घदिया । मञ्जेदारी = स्वाद ।
खानद ।

मञ्जन—(पु० स०) स्नान ।
नहाना ।

मञ्जा—(स्त्री० स०) हड्डी के
भीतर का गूदा जो बहुत
कोमल और चिकना होता
है ।

मञ्जधार—(स्त्री० हि०) बीच
धारा ।

मञ्जला—(वि० हि०) मध्य का ।
बीच का ।

मञ्जाना—(क्ति० हि०) प्रविष्ट
करना । बीच म धँसाना ।

मञ्जोला—(वि० हि०) बीच का ।
मध्यम आकार का ।

मटकना—(क्ति० हि०) नखरा
करना । मटकाना = नखरे के
साथ शर्कों का संचालन
करना ।

मटका—) मिट्टी का

वदा घदा । मटरी = छोटा
मटका । कमोरी ।

मटमँगरा—(पु० हि०) विवाह
के पहले की एक रीति ।

मटमेला—(वि० हि०) मिट्टी के
रंग का ।

मटर—(पु० हि०) एक धान ।

मटरराशत—(स्त्री० हि०) मँर-
सपाटा ।

मटरघोर—(पु० हि०) मटर के
बराबर घुंघरू जो पाजोब
आदि में लगते हैं ।

मटियामेट—(पु० हि०) तहस-
नहस ।

मटियार—(पु० हि०) वह भूमि
या सेत जिनमें चिकनी मिट्टी
अधिक हो ।

मट्टा—(पु० हि०) मथा हुआ
दवा । छाड़ । मही ।

मठ—(पु० स०) निवास स्थान ।
रहने की जगह । मंदिर ।
देवालय । —धारी — वह
साधु या महत जिसके अधि-
कार में कोई मठ हो । मठा

- धोश = मठ का मालिक ।
मत्त ।
- मठरी—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का मिटाई ।
- मडई—(वि० हि०) कुटिया ।
- मडराना—(त्रि० हि०) मटप बांधकर उठना । चक्कर देते हुए उठना । विसा क चारों ओर घूमना ।
- मडाड—(पु० देश०) छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा ।
- मडुआ—(पु० देश०) बाजरे की जाति का एक प्रकार का कद्दू ।
- मडेया—(स्त्री० हि०) छोटा मटप । झोपड़ा ।
- मड़—(पु० हि०) रहने की जगह । अद्विपल ।
- मड़ना—(त्रि० हि०) बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना । थापना । मड़वाना = मड़ने का काम दूसरे से कराना । मड़ाइ = मड़ने का मज़दूरी । मड़ने का काम । मड़ाना = मड़ने का काम दूसरे से कराना ।
- मढ़ी—(स्त्री० हि०) छोटा मठ । कुटी । झोंपड़ा ।
- मण्णि—(स्त्री० स०) बहुमूल्य रत्न । जवाहिर । सबश्रेष्ठ व्यक्ति । —माला = मणियों की माला ।
- मत—(पु० स०) सम्मति । मज़हब । मतलब । (फ्रा०) निषेध वाचक शब्द । न । नहीं ।
- मतलब—(पु० अ०) तात्पर्य । स्वाध । अभिप्राय । आशय । अर्थ । वाम्ना । मतलबी = स्वार्थी ।
- मतवाला—(वि० हि०) मस्त । नशे में चूर । पागल ।
- मतानुयायी—(पु० स०) किसी के मत को माननेवाला । मतानुलग्ना = किसी एक मत पर अमल करनेवाला ।
- मति—(स्त्री० स०) बुद्धि । समझ ।
- मतीरा—(पु० मारवाड़ी) तरबूज ।
- मत्त—(वि० स०) मस्त । मतवाला । पागल ।
- मत्सर—(पु० स०) डाह । अलन ।

मथना—(क्रि० हि०) विलोम ।

मथित = मथा हुआ ।

मथानी—(स्त्री० हि०) रद्द ।

विज्ञानी । मद्दनी ।

मद्—(पु० स०) हथ । मद्य ।

गव । अहकार । (क्रा०) कार्या

या कार्यालय का विभाग ।

मीमा । सरिस्ता । ग्याता ।

मद्गुची—(वि० हि०) जो मद्क

पाता हो ।

मद्गुला—(स्त्री० अ०) वह

स्त्रा जिसे कोई बिना विवाह

किए ही रस ले वा घर में

ढाल ले । रगनी ।

मद्द—(स्त्री० अ०) सहायता ।

—रच = पेशगी । —गार =

सहायक ।

मद्दग्ना—(पु० अ०) पाठशाला ।

मद्दाध—(वि० स०) मदोन्मत्त ।

मद्दाग्लित—(स्त्री० अ०) बाँध ।

रोक । रुकावट । अधिकार ।

—रेजा = (स्त्री० अ० फा०)

अनधिकार गणेश । अनुचित

दस्तवेज ।

मधु—(पु० स०) शब्द । —पर्क

= दही, घी, लव, शब्द और

चाँनी का मिश्रण । —प्रमेद

= एक प्रकार का प्रमेद रोग ।

—मवगी = शब्द का मवगी ।

मधुर—(वि० स०) मीठा ।

—ता = मिठास ।

मध्य—(पु० स०) बीच । —देश ।

= भारतवर्ष के बीच का

प्रदेश । मध्यम = बीच का ।

मध्यमा = पाँच उँगलियों में

से बीच की उँगली । मध्य

की । —वर्ती = जो मध्य

में हो । बीच का । मध्यस्थ

= पंच । मध्याह्न = दिन का

मध्य भाग । दोपहर के

बाद का समय ।

मन—(पु० हि०) द्यत करण

चित्त । इच्छा । इरादा ।

मनकूला—(वि० अ०) अस्थिर ।

चल ।

मनकूहा—(वि० अ०) जिसके

साथ निवाह हुआ हो ।

विवाहिता ।

मनगढ़त—(स्त्री० हि०) कपोल-

कल्पित ।

मरगट—(पु० स०) शमशा
घाट । मसान ।

मरज—(पु० प्र०) रोग ।
बीमारो । घराय आदत ।
कुत्रेव ।

मरनिया—(वि० हि०) मरकर
धीनेनाला । समुद्र में डूबकर
उमक भीतर से मोती आति
निशालनवाला । जिवक्रिया ।

मरजो—(स्त्री० अ०) इच्छा ।
कामना । चाह । आशा ।
सुशी । प्रसता । आज्ञा ।
स्वीकृति ।

मरण—(पु० स०) मृत्यु । मौत ।

मरतपा—(पु० अ०) पद ।
पदवी । पार । दफा ।

मरदना—(क्रि० हि०) मसलना ।
मलना । ध्वस करना । चूँ
करना । मारना । गूँधना ।

मरदानगो—(स्त्री० प्रा०)
घारता । शूरता । साहस ।

मरदाना—(वि० फा०) पुरुष
सबघी । पुरुषों का सा ।

मरदूद—(वि० अ०) तिरस्कृत ।
नीच ।

मरना—(क्रि० हि०) मृत्यु का
प्राप्त होना । घटत दुःख
सहना । मुरझाना । सूखना ।
चाह करना । हारना ।

मरमर—(पु० हि०) एक प्रकार
का दानदार चिकना पत्थर ।

मरमराना—(क्रि० अनु०) मर
मर शब्द करना ।

मरम्मन—(स्त्री० अ०) दुःखना ।

मरसा—(पु० हि०) एक प्रकार
का माग ।

मरसिया—(पु० अ०) शोक
सूचक कविता । (उद्दू)
सियापा । मरण शोक ।

मरहटा—(पु० हि०) महाराष्ट्र
देश का रहनेवाला । मरहठा ।

मरहम—(पु० अ०) औपधियों का
वह गादा और चिकना लेप
जो घाव भरने के लिय लगगाया
जाता है ।

मरहला—(पु० अ०) मज़िल ।
पढ़ाव । मोंपची । दर्जा ।
मरातिब ।

मरहून—(वि० अ०) जो रहन

किया गया हो । गिरों रक्त्वा
 गया हो ।
 मरहम—(वि० थ०) स्वर्गीय ।
 मृत ।
 मरानिब—(पु० थ०) दरता ।
 पद । उत्तरात्तर थानेवाली
 धरम्यापे । मृष्ट । तद् ।
 मयान का रट । सज्जा ।
 मराल—(पु० मं०) हम ।
 मरिच—(पु० म०) मिरिच ।
 मरी—(स्त्री० हि०) एक रोग ।
 एक प्रकार का भूत ।
 मरोज—(वि० अ०) रोगी ।
 बीमार ।
 मरीना—(पु०) एक प्रकार का
 जनी कपड़ा ।
 मरगत्रा—(पु० हि०) एक पौधे
 का नाम ।
 मरुस्थल—(पु० म०) बालू का
 मैदान । रेगिस्तान ।
 मरोड—(पु० हि०) पेंटना । पीड़ा ।
 व्यथा । पेट पेंटना । —ना
 पेंटना । बल डालना । पेंठकर
 नष्ट करना वा मार डालना ।
 दुग्ध देन पीड़ा देना ।

मसलना । मरोडा = पेंटना ।
 उमेड । पेट की वह पीड़ा
 जिसमें पेंठन होती है ।
 मर्जा—(स्त्री० थ०) क्षया ।
 खाह । आजा । स्वीरुति ।
 मर्तवा—(पु० अ०) पद । पदवी ।
 बार । दफा ।
 मर्तवान—(पु० हि०) रोगनी
 यत्न जिसमें अचार, मुरब्बा,
 घा आदि रखा जाता है ।
 अमृतयान ।
 मर्त्यलोक—(पु० स०) पृथ्वी ।
 मनुष्य-लोक ।
 मर्द—(पु० क्रा०) मनुष्य । पुरुष ।
 साहसी पुरुष । वीर पुरुष ।
 जवान । पति ।
 मर्दाना—(वि० क्रा०) पुरुष
 सयथी । मनुष्योचित । वीरो-
 चित्त । वीर । साहसी पुरुष
 का मा ।
 मर्दुम—(पु० क्रा०) मनुष्य ।
 —शुमारो = मनुष्य गणना ।
 थाबादी । मर्दुमी = मरदा
 नगी । वीरता । पुरुष ।

महन—(पु० स०) कुचलना ।
 रौंटना । मलना । घसना ।
 घोंटना । पानना । नाशक ।
 सहारकत्ता । मर्हित = मला
 या मसत्रा हुआ । टुकड़े टुकड़े
 किया हुआ । नष्ट किया
 हुआ ।

मर्म—(पु० स०) स्वरूप । रहस्य ।
 भेद । मधि स्थान । —ज्ञ =
 भेद की बात जाननेवाला ।
 —पाहा = मन का पहुँचने
 वाला केश । आंतरिक
 दुःख । —भदी = आंतरिक
 कष्ट देनेवाला ।

मर्यादा—(स्त्री० स०) सीमा ।
 हद । नियम । सदाचार ।
 मान । गौरव ।

मल—(पु० स०) मैल । कीट ।
 दोष । बिछा । —द्वार =
 शरीर की वे द्विचर्याँ जिनसे
 मल निकलते हैं । पाखाने
 का स्थान । गुदा । —रोधक
 = जो मल को रोके । कब्ज
 यत् करनेवाला ।

मलनी—(कि० हि०) मजिना ।

मसजना । घिसना । माजिश
 करना । छँटना । मरोदना ।
 हाथ से बार-बार दबाना या
 रगदना ।

मरामल—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
 का पतला कपड़ा ।

मलमास—(पु० स०) वह
 अमांत मास जिसमें सञ्जाति
 पड़ता हो ।

मलहम—(पु० अ०) मरहम ।
 घाव आदि पर लगाने का
 औषधियों का गाढ़ा चिकना
 लेप ।

मलाइ—(स्त्री० देश०) दूध की
 साड़ी । सार । तय । रस ।

मलामत—(स्त्री० अ०) लानत ।
 फटकार । गदगी । मलामती
 = दुतकारने या फटकारने
 योग्य । शृणित । जघन्य ।

मलाल—(पु० अ०) दुःख । रज ।
 उदासा ।

मलिन—(पु० अ०) राजा ।
 अधीश्वर । मुसल्मानों की
 प्राति का नाम । मलिका =
 रानी । अधीश्वरी ।

मलिन—(वि० स०) मैला ।
गेदला । दूषित । पराध ।
बदरग । फीका । उदासीन ।
—ता = मैलापन ।

मलीदा—(पु० क्रा०) चूरमा ।
एक प्रकार का ऊनी वस्त्र ।

मलेरिया—(पु० अ०) एक प्रकार
का ज्वर ।

मल्ल—(पु० स०) पहलवान ।
—युद्ध = कुश्ती । बाहुयुद्ध ।
—विद्या = कुश्ती की विद्या ।

मल्लाह—(पु० अ०) धीवर ।
माझी । मल्लाही का काम या
पद ।

मवकिल—(पु० अ०) अपनी
धोर से बकील या प्रतिनिधि
नियत करनेवाला पुरुष ।
असामी ।

मवर्खवा—(वि० अ०) लिपित ।

मवाजिव—(पु० अ०) नियमित
मात्रा में नियमित समय पर
मिलनेवाला पदार्थ ।

मवाजी—(वि० अ०) अनुमान
किया हुआ ।

मवाद—(पु० अ०) पीब ।

मवास—(पु० स०) रखा का
स्थान । शरण । किला ।

मवेशी—(पु० अ०) पशु । डोर ।

मशकत—(स्त्री० अ०) मेहनत ।
परिश्रम ।

मशागूल—(वि० अ०) काम में
लगा हुआ । लीन ।

मशरू—(पु० अ०) एक प्रकार
का धारीदार कपड़ा ।

मशविरा—(पु० अ०) सलाह ।
परामश ।

मशहर—(वि० अ०) प्रख्यात ।
प्रसिद्ध ।

मस्तान—(पु० हि०) मरघट ।

मशाल—(पु० अ०) जलनेवाली
एक प्रकार की मोटी बत्ती ।—
धी = मशाल दिखलानेवाला ।

मशीखत—(स्त्री० अ०) शेखी ।
घमड़ ।

मशीन—(स्त्री० अ०) यंत्र । कल ।

मशीर—(पु० अ०) सलाह देने
वाला । मंत्री ।

मशर—(पु० अ०) अभ्यास ।
मशक = अभ्यस्त ।

- भाव बहुत बड़ा साधु,
सन्ध्यामी या विरक्त ।
- महारत—(स्त्री० पा०) अभ्यास ।
मश्क ।
- महाल—(पु० ध०) मुहल्ला ।
भाग । हिस्ता ।
- महाजत—(पु० हि०) फीलवान ।
हाथा हाँकनेवाला ।
- महावर—(पु० हि०) एक प्रकार
का लाल रंग ।
- महावरा—(ध०) आदत । बोल
चात्र के निश्चित वाक्य या
शब्द । महावरेदार = जिसमें
महावरा हो ।
- महिला—(स्त्री० सं०) स्त्री ।
- महान—(वि० हि०) पतला ।
कोमल ।
- महीना—(पु० दि०) काल का
एक परिमाण जो ताम्र दिन
का हाता है । मासिक वेतन ।
स्त्रियों का मासिक धर्म ।
- मनुश्चर—(स्त्री० हि०) वह भेद
जिसका ऊन कालापन लिए
लाल रंग का हाता है । वह
- रोटी जो महुआ मिलाकर
पकाई गई हो । एक यात्रा ।
- महुआ—(पु० हि०) एक वृक्ष ।
- महोगनी—(पु० ध०) एक पद ।
- महोत्सव—(पु० सं०) यथा
उत्सव ।
- महोदय—(पु० सं०) एक आदर-
सूचक शब्द । महाशय ।
महोदया = स्त्रियों के लिये
आदर-सूचक शब्द ।
- महौपध—(पु० सं०) कारगर
दवा ।
- मागलिक—(वि० सं०) शुभ ।
- माँजना—(क्रि० हि०) जार में
मलकर मैल छुड़ाना । माँझ
। दना । अभ्यास करना ।
- माँझा—(पु० हि०) नदी में का
टापू । वृक्ष का तना ।
- माँझी—(पु० हि०) केवट ।
मल्लाह । बलवान् ।
- माँड—(पु० हि०) पकाय हुये
चायको में स निक्का हुआ
लसदार पानी ।
- माँडना—(क्रि० हि०) मलना ।
सानना । गूँधना । मचाना ।

माँडा—(पु० हि०) थाँस का एक रोग ।

माडी—(स्त्री० हि०) भात का पसावन । माँड । कपडे या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलप ।

माँद—(वि० हि०) गुफा । जगली जानवरों का बिल ।

माँदगी—(स्त्री० फा०) बीमारी । रोग । थकापट ।

माँदा—(वि० फा०) थका हुआ । रागी । बीमार ।

मास—(पु० स०) गोरत ।
—खोर = मास खाने वाला ।
मासाहारी । —पिंड = शरीर ।
देह । —भस्त्री = मास खाने वाला । —भोजी = मास खाने वाला । मामल = मास से भरा हुआ । मोग ताजा । धलवान् । मासाहार = मास खानेवाला ।

मा—(स्त्री० स०) माता ।

माकूल—(वि० अ०) उचित । ठीक । योग्य । पूरा । बढ़िया । जो निरुत्तर हो गया हो ।

मायालिया—(फा०) पागल पन । सनक ।

मागधी—(स्त्री० म०) मगध देश की प्राचीन भाषा ।

माघ—(पु० स०) हिन्दुओं का एक महीना ।

माजरा—(अ०) घटना । धार दात ।

माजिद—(अ०) गुरजन । बुजुग ।

माजून—(स्त्री० अ०) वह धरती या धवल्लेह जिसमें भाँग मिली हो ।

माजूफल—(पु० फा०) माजू नामक झाड़ी का गोंद ।

माटा—(पु० हि०) लाल च्यूटा ।

माणिक्य—(पु० स०) लाल रंग का एक रत्न ।

मात—(स्त्री० अ०) पराजय । हार ।

मातदिल—(वि० अ०) न बहुत ठंडा न बहुत गरम ।

मातबर—(वि० अ०) विश्वास करने योग्य । मातबरी = विश्वास ।

मानम—(पु० अ०) शोक ।
 —पुर्मा = मृतक क सम्बन्धियों को मान्यता देना ।
 मातमी = शोक-मूचक ।
 मातहत—(पु० अ०) अधीनस्वर्गवर्माचारी । मातहती = अधीनता ।
 माता—(स्त्री० हि०) मा । कोई पूज्य वा आदरणीय स्त्री । शीतला ।
 मातृपूजा—(स्त्री० हि०) विवाह की एक रीति ।
 मातृभाषा—(स्त्री० स०) वह भाषा जो बालक माता को गोद में रहते हुए सीखता है ।
 मात्र—(अ० स०) केवल । सिक्क ।
 मात्रा—(स्त्री० स०) परिमाण । एक बार गाने योग्य श्लोक ।
 मात्रिक = मात्रा सम्बन्धी ।
 मात्सर्य—(पु० म०) ईर्ष्या । दाह ।
 माथुर—(पु० म०) मथुरा का निवासी । ब्राह्मणों की एक जाति । कायस्थों की एक

जाति । वैश्यों की एक जाति ।
 मादक—(वि० स०) जिससे नशा हो । नशीला । —ता = नशीलापन ।
 मादर—(स्त्री० फा०) माँ । —जाद = बिलकुल नगा ।
 मादा—(स्त्री० फा०) स्त्री जाति का प्राणी ।
 माहा—(पु० अ०) वह मूल तत्त्व जिससे कोई पदार्थ बना हो । शब्द का मूल । योग्यता । पीठ ।
 माधुरी—(स्त्री० स०) मिठास । माधुर्य = मधुरता । काय का एक गुण ।
 माध्यम—(वि० स०) कार्य सिद्धि का उपाय या साधन । (अ०) मीडियम ।
 मान—(पु० स०) परिमाण । भिकदार । पैमाना । अहङ्कार । हज्जत ।
 मानना—(वि० हि०) स्वीकार करना । अनुकूल होना । दण्ड समझना । मज्जत करना ।

मानवः पृथग्व्यक्तः । व्यक्तः ।	धीमान् । मनुष्यः साधारणः । मनुष्यः वा ।
मानवः—(पुं० सं०) आदमी । —एकः बहु रूपः विशेषे एकवचनं को वर्तमानः च विशेषः चार्थः वा विशेषः इत्यादि । एतद्वी - वती । क. ११ । एतद्वी मानवार्थः ।	मानवः—(पुं० सं०) एकः । लक्षणः । मानवः—(स्त्री० वि०) ऐतः । व. ११ ।
मानवः—(पुं० सं०) मनुः । मनुष्यः । —एकः — साधारणः । मानविकः—मनु मानवार्थः ।	मानवः—(वि० सं०) आदरः क इत्यर्थः ।
मानवराजः—(पुं० वि०) हिमा क्षयः की एकः प्रसिद्धः पर्वी क्षेत्रः ।	मानवः—(स्त्री० वि०) मनु । पर्वी मानवः । मानवः—मानवः ।
मानः—(पुं०) मनुष्यः । वदः इत्यर्थः । शीतः ।	मानः—(वि० सं०) एतः ।
मानिकः—(पुं० वि०) एकः मनुष्यः का नामः ।	मानिकः—(स्त्री० सं०) मनुष्यः । इत्यर्थः ।
मानिकी—(वि० वि०) एतद्वी । (सं०) एतः । मनुष्यः । मनु । मनुष्यः । चार्थः ।	मानिकी—(स्त्री० सं०) एतः । पर भूमिः वा हिमा वा विशा ख्यानः कदा गर्हः दो ।
मानुषी—(स्त्री० सं०) एतः ।	मानिकः—(स्त्री० सं०) मानिकः । विश्वः ।
	मानिका—(पुं० सं०) मानः । पारम्परिकः इत्यर्थः । मनुष्यः । मनुष्यः । प्रथमः विषयः ।
	मानिका—(पुं० सं०) मानः वा मानः ।

मामी—(स्त्री० प्रा०) माता का स्त्री ।

मामू—(स्त्री० अनु०) माता का भाई । मामा ।

मामूल—(पु० अ०) टंग । जत । रीति । रवान ।

मामूलो—(वि० अ०) नियमित । नियत । साधारण ।

मायका—(पु० द्वि०) पीहर । नैहर ।

मायल—(वि० फा०) कुरा हुआ । मित्रा हुआ ।

माया—(स्त्री० स०) धन । श्रमिष्ठा । भ्रम । छल । कपट । जादू ।

—माह = छल ।

प्रलोभन । —वादी = ईश्वर

के सिवा प्रत्येक वस्तु को

अनिव्य माननेवाला । —वी

= धोखेवाज । फरेबी ।

मायूस—(वि० फा०) निराश । नाउम्मेद ।

मार—(स्त्री० द्वि०) चोट । निशाना । मार पीट । युद्ध ।

काला मिट्टी की जमीन ।

(फा०) सर्प । अत्याचारी ।

—वाट = युद्ध । लड़ाई ।

—ना = बध करना । सताना ।

फेंकना । क्षिपाना । पीटना ।

नष्ट । करना । चलाना ।

मारफ = मार डालने वाला ।

किमी क प्रभाव आदि को नष्ट

करनेवाला ।

मारका—(पु० अ०) माक । चिह्न । निशान । (पु० अ०)

युद्ध । लड़ाई । बहुत बड़ी या

महत्त्वपूर्ण घटना ।

मारखोर—(पु० प्रा०) एक प्रकार का बकरी वा भेड़ ।

मारफत—(अ० अ०) द्वारा । जरिये से ।

मारू—(पु० द्वि०) एक राग ।

मारे—(अ० द्वि०) बजह से । कारण से ।

मार्क—(पु० अ०) छाप ।

मार्का = छाप ।

मार्केट—(पु० अ०) बाजार । हाट ।

माग—(पु० स०) रास्ता ।

मार्च—(पु० अ०) अगरेजी का

नीवरा माम । गमन । गति ।

सेना का कूच ।

मार्जन—(पु० स०) मफाई ।

माजगीय = मार्जन करने योग्य ।

माल—(पु० प्रा०) असबाब ।

सामान । —गाना = भडार ।

—गाड़ी = रेल में वह गाड़ी

जिसमें केवल माल आता जाता है । —गुजार = माल

गुजारी देवेवाला । —गुजारी

= जमीन का कर । लगान ।

—गोदाम = वह स्थान जहाँ माल रक्खा जाता है ।

—मताश्र = अमबाध और रुपया । —दार = धनी ।

मालटा—(स्त्री० अ०) एक प्रकार

की नारंगी ।

मालती—(स्त्री० स०) एक प्रकार

की लता का नाम ।

मालवीय—(वि० स०) मालवे

का । मालवे का रहनेवाला ।

माला—(स्त्री० स०) पत्ति ।

अवली । फूलों का हार ।

कुड । —माल = (अ०)

बहुत धनी । भरा हुआ ।

नयालब ।

मालिक—(पु० अ०) ईश्वर ।

पति । शौहर । मालिकाना =

मिलकियत । स्वामित्व ।

मालिक की तरह । मालिकी =

मालिक का स्वत्व ।

मालिनी—(स्त्री० स०) मालिन ।

मालिन्य—(पु० स०) मैला

पन । अँधेरा ।

मालियत—(स्त्री० अ०) श्रीमत् ।

धन । श्रीमती चीज ।

माली—(पु० हि०) बाग को

साचने और पौधों को ठीक

स्थान पर लगानेवाला

पुरुष । माल के सवध का ।

धन सवधी ।

मालीदा—(पु० पा०) मलीदा ।

चूरमा । एक प्रकार का ऊनी

बपड़ा ।

मालूम—(वि० अ०) जाना

हुआ । ज्ञात ।

माश—(अ०) खड़ी मूँग ।

माशा—(पु० हि०) एक प्रकार

का बाट वा मान ।

वाला । —कारा = सान या
छाँटा पर होनेवाला रगीन
काम । किसी काम में निकाली
या की हुई बहुत बड़ा यारीकी ।

मीनार—(क्रा०) स्तम्भ । छोट ।
मसजिदों आदि के कोनों पर
बहुत ऊची उठी हुई गोल
इमारत जो खम्बे के रूप में
होता है ।

मीमांसक—(पु० स०) मीमासा
करनवाला । मीमासा = तत्त्व
का विचार, निर्णय या विवे
चन । मीमांसित = जिसकी
मीमांसा की जा चुकी हो ।

मीर—(पु० क्रा०) सरदार ।
प्रधान । धार्मिक आचार्य ।
सैयद जाति की एक उपाधि ।
नाम में भयसे बड़ा पता ।
—अज्ञ = वह कर्मचारी जो
बादशाहों की सेवा में लोगों
के निवेदनपत्र आदि उपस्थित
करे । —आतश = वह कर्म
चारी जिसकी अधीनता में
तोपखाना हो । मीरजा =
अमीर या सरदार का लड़का

मुगल शाहजादों की एक
उपाधि । मीरजाई = मीरजा
का पद या उपाधि । अमीरी ।
अमीरों या शाहजादों का सा
ऊँचा दिमाग होना । अभि-
मान । मिरजाई । —फर्श =
वे भारी पत्थर जो बड़े बड़े
दरवाजों या चाँदनियों आदि
के कोनों पर इसलिये रखे
जाते हैं जिसमें वे हवा से उड़
न जायें । —मखला = मुसल
मानी राजत्व काल का एक
प्रधान कर्मचारी । —यहर =
मुसलमानी राजत्वकाल में
जल-सेना का प्रधान अधि
कारी । —वार = प्राचीन
मुसलमानी राजत्वकाल का
एक प्रधान कर्मचारी । —
मजिल = वह कर्मचारी जो
बादशाहों या लश्कर आदि
के पहुँचने से पहले मजिल
(पर पहुँचकर प्रयत्न करे । —
मजलिस = सभापति । —
महल्ला = किसी महल्ले का
प्रधान या सरदार । —मुसी



—प्रधान मुशी।—शिकार = शिकार का प्रयत्न करनेवाला प्रधान कर्मचारी। —नामान = पाकशाला का प्रधान प्रबंधक। —दाज = दाजियों का सरदार।

मीरास—(स्त्री० अ०) बपौती। मीरासा = एक प्रकार का मुसलमान।

मुँगगा—(पु० हि०) पीटने-डॉकने का एक औजार।

मुगोरी—(स्त्री० हि०) मूँग की बनी हुई घरी।

मुडन—(पु० सं०) सिर का उस्तरे से मूँडने की क्रिया। एक सस्कार।

मुँडना—(क्रि० हि०) मूँडा जाना। सिर के बालों की सफाई होना। लुटना। ठगा जाना। हानि उठाना। मुँडाई = मूँडने का मज़दूरी।

मुँडा—(पु० हि०) वह जिमके सिर के बाल न हों या मुँड हुए हों। वह जो सिर मुँडा कर किसी साधु या जोगी का

शिष्य हा गया हो। वह यशु जिमके साग न हो। एक प्रकार का जूता। मुँडी = वह स्त्री जिमका सिर मुँडा हो। विधवा। एक प्रकार की जूती।

मुडिन—(वि० अ०) मुँडा हुआ।

मुँडेरा—(स्त्री० हि०) मुँडेरा। मकान की चाटी।

मुतकिल—(वि० अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ।

मुतजिम—(पु० अ०) वह जो इतज़ाम करता हो।

मुतज़िर—(पु० अ०) इतज़ार या प्रतीक्षा करने वाला।

मुँदरी—(स्त्री० हि०) छलना। धँगूठा।

मुशी—(पु० फा०) लेखक। मुशीर। मुशियाना = मुशियों का तरह का। —खाना = दफ्तर। —गिरी = मुशी का काम या पद।

मुसरिम—(पु० अ०) दफ्तर का प्रधान कर्मचारी।

मुमलिक—(पु० अ०) माघ में बाँधा या नया किया हुआ ।

मुमिफ—इन्माफ करने वाता ।
मुसिफा—न्याय करने का काम । मुसिक का काम या पद । मुमिफ की अन्वयत ।

मुह—(पु० हि०) बोलने और भाषन करने का अंग । मुख विपर ।—काला=वेहज्जती । बदनामी । एक प्रकार की गाली । —घोर=वह जो दूसरों के सामने जाने से मुँह छिपाता हो । —छुट=मुँह फट । —ज़ोर=बकवादी । उहट । —दिखलाई=नई बंधू का मुँह देखने का रस्म । वह धन जो मुह दखने पर बंधू को दिया जाय । —फट=बदजबान । —यद=जिसका मुँह खुला न हो । बुँधारी । —माँगा=अपना इच्छा के अनुसार । मुँहासा=मुँह पर की कुम्भियाँ जा युवावस्था में निकलती हैं ।

मुयज्जन—(पु० अ०) मसजिद में अजान देने वाला ।

मुयनल—(वि० अ०) जो काम से कुछ दिनों के लिये अलग किया जाय । मुयत्तली=काम से कुछ दिनोंके लिये अलग कर दिया जाना ।

मुयम्मा—(पु० अ०) रहस्य । भेद । पहेलो । घुमाव फिरोव का बात ।

मुश्रलिलम—(पु० अ०) शिष्य ।

मुय्राफ—(वि० अ०) चमा । मुय्राफी=चमा ।

मुय्राफकत—(फा०) दोस्ती । अनुकूलता ।

मुश्राफिक—(अ०) अनुकूल । समान । ठीक ठीक । इच्छा नुसार ।

मुश्रामता—(अ०) व्यापार । काम । व्यवहार । विवादास्पद विषय ।

मुय्राइना—(अ०) देख भाव करना । निरीक्षण ।

मुश्रालिज—(अ०) इलाज करने वाला । चिकित्सक । मुश्रा

लिङ्गा = इलाज । विकिरणा ।
 मुञ्चावजा—(अ०) बदला । वह
 धन जो हानि के बदले में
 मिले । वह रकम जो जमींदार
 को जमीन के बदले में मिले ।
 मुञ्चाहदा—(अ०) दद
 निश्चय । फरार ।
 मुकत्ता—(वि० अ०) ठीक तरह
 से बनाया हुआ । सभ्य ।
 शिष्ट ।
 मुकदमा—(पु० अ०) अभि
 योग । दावा । नालिश ।
 मुकदमेबाज़ = वह जो प्राय
 मुकदमे लड़ा करता हो ।
 मुकदमेबाज़ी = मुकदमा
 लड़ने का काम ।
 मुकदम—(अ०) पुराना । सब
 ध्रष्ट । ज़रूरी । आवश्यक ।
 मुबिया । नेता ।
 मुकद्दर—(पु० अ०) भाग्य ।
 तकदीर ।
 मुकद्दस—(वि० अ०) पवित्र ।
 पाक ।
 मुकम्मल—(वि० अ०) पूरा
 किया हुआ ।

मुकरना—(क्रि० हि०) इनकार
 करना । नटना ।
 मुकरर—(अव्य० अ०) दोबारा ।
 फिर से निश्चित । मुकरर
 = (अ०) नियुक्त । निस्पन्देह ।
 मुकररी = नियुक्ति ।
 मुक वी—(वि० अ०) यत्नवद्धक ।
 मुकाबला—(पु० अ०) आमना
 सामना । मुठभेड़ । बराबरी ।
 तुलना । मिलान । विरोध ।
 लड़ाई ।
 मुकाबिल—(क्रि० अ०) सम्मुख ।
 सामने ।
 मुकाम—ठहरने का स्थान ।
 पड़ाव । घर । सरोद का कोई
 परदा ।
 मुकिर—(वि० अ०) प्रतिज्ञा
 करने वाला । किसी दस्तावेज़
 या धरज्ञादावे का लिखने
 वाला ।
 मुकुट—(पु० म०) ताज ।
 मुकुलित—कुछ टिली हुई कली ।
 कुछ कुछ खुला । मपकता
 हुआ नेत्र ।
 मुक्ता—(पु० हि०) बँधी सृष्टी ।

मुक्ती=धूँसा। मुक्केवाङ्गी=
धूसवाङ्गी।

मुक्त—(वि० म०) छुटकारा पाया
हुआ। फँसा हुआ।—कठ=
सुले गले स।

मुख—(पु० म०) मुँह। प्रधान।
मुखड़ा=मुख। चहरा।

वतार—(पु० अ०) प्रतिनिधि।
एक प्रकार के कानूनी सलाह
कार।—ग्राम=वह प्रति
निधि जिसे सब प्रकार के
काम करने, मुद्दमे आदि
लड़ने का अधिकार दिया गया
हो।—वार=वह जो किसी
काम की देख रेख के लिये
नियुक्त किया गया हो।
—वारी=मुद्रतार का काम
या पद। मुख्तारी।—ग्राम
=वह जो किसी विशिष्ट
कार्य या मुद्दमे के लिये
प्रतिनिधि बनाया गया हो।
—नामा=वह अधिकार पत्र
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी
की ओर से अदालती कार
वाई करने के लिये मुद्रतार

पनाया जाय।—नामा ग्राम
=वह अधिकार पत्र जिसके
द्वारा कोई मुख्तार ग्राम नियुक्त
किया जाय।—नामा
प्राप्त=वह अधिकार पत्र
जिसके द्वारा कोई मुख्तार
ग्राम नियुक्त किया जाय।

मुखद्रस—(वि० अ०) नपुंसक।

मुद्रफफ—(वि० अ०) जो
घटाकर कम किया गया हो।
सहित।

मुखविर—(पु० अ०) भेदिया।
जासूम। मुखविरा=भेद
देना।

मुखमसा—(पु० अ०) झगडा।
यखेडा।

मुखम्मस—(वि० अ०) जिसमें
पाँच कोने या अंग आदि
हों। पाँच चरणों की उर्दू
की कविता।

मुखर—(वि० स०) बन्वादी।

मुखलिखी—(छी० अ०) छुट
कारा। रिहाई।

मुद्राम—(पु० स०) कठस्थ।

मुग्धातिथ—(वि० अ०) जिससे
घात की जाय ।

मुग्धापेदी—(पु० हि०) दूसरों
के महारं रहनेवाला ।

मुग्धालिफ—(वि० अ०) विरोधी ।
शत्रु । प्रतिद्वंदी । मुग्धालि
कृत = विरोध । दुरमनी ।

मुग्धिया—(पु० हि०) नेता ।
प्रधान । अगुणा ।

मुग्धलिफ—(वि० अ०) अलग ।
भिन्न । अनेक प्रकार का ।

मुग्धसर—(वि० अ०) सविस्त ।
घोटा । थोड़ा ।

मुग्धार—(पु० अ०) प्रतिनिधि ।

मुग्धय—(वि० स०) प्रधान ।
श्रेष्ठ । —ता = प्रगनता ।
—तया = विशेष करके ।

मुग्धर—(पु० हि०) एक प्रकार
की लकड़ी जिसका उपयोग
व्यायाम के लिये किया जाता
है ।

मुग्धल—(पु० क्रा०) तुर्कों का एक
श्रेष्ठ धर्म ।

मुग्धालता—(पु० अ०) धोन्ना ।
छल ।

मुग्ध—(वि० स०) मोहित ।
मुग्धा = साक्षर्य में एक
नायिका ।

मुग्धलका—(पु० तु०) प्रतिज्ञा
पत्र ।

मुग्धरुग्—(वि० अ०) पुच्छग ।

मुग्धरा—(पु० अ०) वह रकम
जो किसी रकम में से काट
ली गई हो । अभि
धादन । वेश्या का वह गाना
जो बैठकर हा और जिसमें
उसका नाच न हो ।

मुग्धरुग्—(वि० अ०) धकेला ।
समारंथागी ।

मुग्धरुग्—(वि० अ०) धातुमाया
हुआ । परीक्षित ।

मुग्धिम—(पु० अ०) अभियुक्त ।

मुग्धलद्—(वि० अ०) जिह्द
दार ।

मुग्धलिम—स-शरीर । प्रत्यक्ष ।

मुग्धावर—वह मुसलमान जो
किसी दरगाह आदि की सेवा
करता हो और चढ़ावा आदि
लेता हो ।

मुजिर—(वि० अ०) हानिकारक।

मुटाइ—(स्त्री० हि०) मोटापा ।
पुष्टि । घमड । मुगाना = मोटा
हा जाना । अहकारी हो
जाना । मुगसा = बेपरवा ।
घमडी ।

मुटिया—(पु० हि०) बोक दोने
वाला । मजदूर ।

मुट्टा—(पु० हि०) चगुल भर
वस्तु । पुर्जिदा । मुट्टो = बँधी
हुई इथेली ।

मुठभेड—(स्त्री० हि०) टक्कर ।
भिद्दत । भेंग । सामना ।

मुठिया—(स्त्री० हि०) दस्ता ।
बैंट ।

मुडना—(क्रि० हि०) घुमाव
लेना । मुक्कना । घूम जाना ।
लौटना ।

मुडवाना—(क्रि० हि०) उस्तरे
से बाल या राई दूर कराना ।
मुक्कने या घूमने में प्रवृत्त
करना ।

मुडाना—(क्रि० हि०) सिर के
सब बाल बनवाना । टगा
जाना ।

मुडिया—(पु० हि०) सिर मुँहा
हुआ ।

मुत्तअल्लिक—(वि० अ०)
सबधी । विषय में ।

मुत्तदायरा—(वि० अ०) सुत्रदमा
जो दायर किया गया हो ।

मुत्तफन्नी—(वि० अ०) चालाक ।
धोरेबाज़ ।

मुत्तफरिक्—(अ०) अलग
अलग । विविध ।

मुत्तयन्ना—(अ०) दत्तक या गोद
लिया हुआ पुत्र ।

मुत्तमैवल—(अ०) धनवान् ।
धमीर ।

मुत्तरज्जिम—(फा०) अनुवादक ।

मुत्तलक—(अ०) जरा भी ।
तनिक भी ।

मुत्तयफा—(फ्रा०) मृत । स्वर्गीय ।

मुत्तयलनी—(फा०) अभिभावक ।

मुत्तवातिर—(फ्रा०) लगातार ।
निरंतर ।

मुत्तसद्दी—(पा०) लेखक ।
सुशी । पेशकार । जिम्मेदार ।
प्रयत्नकर्ता । हिसाब रखने
वाला । मुनीम ।

मुतहम्मिल—(थ०) सहिष्णु ।
सहनशील ।

मुताधिक—(थ०) अनुमार ।
बमूजिप । अनुकूल ।

मुतालरा—(फ़ा० पु० थ०) ।
बाज़ी रुया ।

मुताह—(थ०) मुमलमानों में
एक प्रकार का अस्थायो
विवाह । मुताही = वह
स्त्री जिसके साथ मुताह किया
गया हो । रखेला स्त्री ।

मुत्तफिरु—(वि० थ०) सहमत ।

मुत्तलिल—(थ०) नमीप ।
नजदीक । लगातार ।

मुदरिस—(पु० थ०) शिक्षक ।
अध्यापक ।

मुदाम—(क्रि० फ़ा०) सदा ।
हमेशा । लगातार । मुदामी =
जो सदा होता रहे ।

मुदित—(वि० स०) प्रसन्न ।
सुख ।

मुद्दगर—(पु० स०) मोगरा ।

मुद्दआ—(पु० थ०) अभिप्राय ।
मतलब ।

मुद्द

दारा करनेवाला ।

मुद्दत—(थ०) अरधि । बहुत
दिन । धरसा । मुद्दती = वह
जिसके साथ कोई मुद्दत लगी
हो ।

मुद्दाअलेह—(पु० थ०) प्रति
वादी ।

मुद्दा—(स्त्री० स०) मोहर । छाप ।
रुया, अशरफ़ी आदि ।
सिक्का । थँगूड़ी । छल्ला ।
हाथ, पाँव, आँख, मुँह
आदि की कोई स्थिति ।
अगों की कोई स्थिति । मुख
की चेष्टा । गोरखपथी साधुओं
के पहनने का एक कण भूषण ।
हठयोग में विशेष अंग
विन्यास । मुद्दण = छपाई ।
मुद्दणालय = छपाखाना ।
प्रेस । मुद्दाकित = मोहर किया
हुआ । मुद्दिका = थँगूड़ी ।
सिक्का । मुद्दित = छपा हुआ ।

मुन्दा—(पु० फ़ा०) बड़ी किश
मिश ।

मुनव्वतकारी—(स्त्री० थ०) ।
परयों पर उभरे हुए बेल-
घूटे का काम ।

(स्त्री०) एक रागिनी । एक प्रकार की मिट्टा ।
 मुलम्मा—(वि० अ०) गिट्ट । फल है । ऊपरी तदक मद्क ।
 —मात्र = मुद्रग्मा करने वाला । मुलमर्चा ।
 मुलावात—(स्त्री० अ०) भेंट । मित्रन । हेल मेल । प्रसग । मुलाज्ञाता = परिचित ।
 मुनाचम—(पु० अ०) नौकर । दाम । —त = सवा । नौकरी ।
 मुलायम—(अ०) नरम । नासुक । मुलायमत = मुकुमारता । कोमलता । मुला मियत = नमी । कोमलता ।
 मुलाहजा—(अ०) निरीक्षण । देख भाव । सकेच । रिथायत ।
 मुलठी—(स्त्री० हि०) जेठो मधु ।
 मुल्क—(पु० अ०) देश । प्रात । ससार । —गौरी = मुल्क जीतना । मुल्की = देशी ।
 मुत्तधी—(अ०) स्पगित ।
 मुल्ला—(पु० अ०) मौलवी ।
 मुवकिल—(पु० अ०) वकील करने वाला ।

मुशज्जर—(पु० अ०) एक प्रकार का दवा हुआ फपड़ा ।
 मुशफिक—(वि० अ०) कृपातु । मित्र । दयागान ।
 मुश्क—(पु० अ०) कम्बूरी । गंध । —नाफा = कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कम्बूरी रहती है ।
 मुश्की = कस्तूरी के रंग का । जिसमें कस्तूरी पकी हो ।
 मुश्किल—(वि० अ०) कठिन । (स्त्री०) कठिनता । सफ़ठ ।
 मुश्त—(पु० अ०) मुट्टी ।
 मुश्तहिर—(अ०) जो प्रसिद्ध किया गया हो ।
 मुश्ताक—(अ०) चानेवाला ।
 मुष्टि—(स्त्री० स०) मुट्टो । पूँमा ।
 मुसकराना—(कि० हि०) मदहास । मुसकराइट = मुसकराने की क्रिया । मुसकान = मदहास ।
 मुसहिका—(वि० अ०) लौंचा हुआ ।
 मुसत्रा—(पु० अ०) किसी असल कागज़ की नकल । रसीद आदि का आधा भाग ।

मुसन्निक—(अ०) प्रवक्तृ ।
रघयिता ।

मुसम्मा—(वि० अ०) नामक ।
—त = औरत । खो ।

मुसलधार—(क्रि० वि० हि०)
घटुत अधिक वेग से ।

मुसलमान—(पु० फा०) इस्लाम
धर्म के मानने वाला ।
मुसलमानो = मुसलमानों की
एक रसम ।

मुसल्लम—(वि० फा०) पूरा ।
असह ।

मुसल्ला—(अ०) नमाज पढ़ने की
चगई या दरी ।

मुसव्विर—(पु० अ०) चित्रकार ।
मुसव्विरी = चित्रकारी ।
नक्शाशी ।

मुसहर—(पु० हि०) एक जगली
जाति ।

मुसहिल—(अ०) रेचक ।
जुनाब ।

मुसाफिर—(पु० अ०) यात्री ।
परिक । —ताना = रेल के
यात्रियों के ठहरने का घना
हुआ स्थान । धर्मशास्त्र ।

सराय । —त = मुसाफिरी ।
प्रवास । मुसाफिरी =
यात्रा । प्रवास ।

मुसाहर—(पु० अ०) पार्श्ववर्ती ।
सहवासी । धनवान् या राजा
आदि का मन बहलानेवाला ।
—त = मुसाहब का पद या
काम । मुसाहबी = मुसाहब
का पद या काम ।

मुसोयत—(अ०) तकलीफ ।
कष्ट । सकट ।

मुस्टड—(वि० हि०) हष्ट पुष्ट ।

मुस्तकिल—(वि० अ०) स्थिर ।
मजबूत । स्थायी ।

मुस्तगीस—(पु० अ०) फरि
यादी । मुद्दई । दावेदार ।

मुस्तनद—(वि० अ०) प्रानाणिक ।

मुस्तशाना—(फा०) छोंटा हुआ ।
भिन्न । जो अपनी स्वभाव ही ।
बरी किया हुआ ।

मुस्तहक—(अ०) हक्दार ।
योग्य ।

मुस्तैद—(अ०) जो किसी कार्य
के लिये तत्पर हो । चात्ताक ।

मुहाला—(अ०) पातल का वह बंद या चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है ।

मुहावरा—(पु० अ०) अम्यास । आदत । (अ०) इडियम ।

मुहासिब—(पु० अ०) हिसाब बाननेवाला । गणितज्ञ । हिसाब लेनेवाला । मुहासिया = हिसाब । जेया । पूछनाछ ।

मुहासिरा—(पु० अ०) घेरा ।

मुहासिल—(अ०) आमदनी । लाभ । मुनाफ़ा ।

मुहिल्लव—(पु० अ०) दोस्त । मित्र ।

मुहिम—(पु० अ०) युद्ध । लड़ाई । आम्रमण ।

मुहत्त—(पु० स०) ज्योतिष के अनुसार काल का एक मान । समय ।

मूँग—(स्त्री० पु० हि०) एक अन्न जिसकी दाँल बनती है । — फला = एक प्रकार का पौधा और उसकी फली । मूँगिया = मूँग का सा । हरे रंग का ।

मूगा—(हि०) एक प्रकार का रत्न ।

मूँछ—(स्त्री० हि०) उपरी श्रोत्र के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं ।

मूँज—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का वृक्ष ।

मूँडना—(क्रि० हि०) इजामत करना । ठगना । चेला बनाना ।

मूदना—(क्रि० हि०) ढाँकना । बंद करना ।

मूक—(वि० स०) गूँगा ।

मूजी—(पु० अ०) दुष्ट । दुजन ।

मूढ—(वि० स०) मूख । जिसे धागा पीड़ा न सूझता हो । —ता = मूर्खता । अज्ञान ।

मूत—(पु० हि०) पेशाब । —ना = पेशाब करना ।

मूत्र—(पु० स०) पेशाब । —विज्ञान = मूत्र-परीक्षा पर आयुर्वेद का एक ग्रंथ । मूत्राघात = पेशाब बंद होने का रोग । मूत्राशय = नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है ।

=मृगवृष्णा की लहरें।—
 वृषा, मृगवृष्णा = मृग
 मरोचिका।—राज = मिह।
 —लोचनो = हरिण के समान
 नेत्रवाली। मृगो = हरिणी।
 मृगया—(पु० स०) गिकार।
 चाखेट।
 मृणाल—(खो० स०) कमल का
 डठज।
 मृत—(वि० स०) मग हुआ।
 मृतक = मुर्दा। मृतक कर्म =
 प्रेत कर्म।—वत्सा = (खो०)
 जिसकी सतति मर मर जाती
 हो।—सजोयनी = एक वृत्ति।
 उवर को एक आपध।
 मृत्तिश—(खो० स०) मिट्टी।
 मृत्युञ्जय—(पु० स०) वह जिसने
 मृत्यु को जोत लिया हो।
 एक मंत्र।
 मृत्यु—(खो० स०) मरण। मौत।
 यमराज।—नाशक = पारा।
 मृदग—(पु० स०) एक वाजा।
 मृदु—(वि० स०) कोमल। नरम।
 । धीमा। मृदु।—ता
 मलता। धीमापन।—

ल = कोमल। वृषालु।
 नाजुक।
 मृन्मय—(वि० स०) मिट्टी का
 बना हुआ।
 मृषा—(अ० स०) कृमूठ।
 व्यर्थ।
 मँ—(अ० स०) आवार सूचक
 शब्द। बकरी के घालने का
 शब्द।
 मँगनी—(दि०) लेंदा।
 मँवर—(अ०) सभासद।
 सदस्य।
 मेकदार—(पु० अ०) परिमाण।
 मात्रा।
 मेख—(खो० क्रा०) खँटा।
 मेयला—(स०) करधनी। घेरा।
 मडल। कमरबंद या पेटी।
 मेगजीत—(पु० अ०) थारुद
 खाना। सामयिक पत्र विशेषत
 मासिक पत्र जिसमें लेख
 छपते हैं।
 मेघ—(पु० स०) बादल। एक
 राग।—गजन = बादल की
 गरज।—नाद = मेघ का
 गजन। रावण का पुत्र।

- माला = बादलों की घटा ।
 —पुष्प = घटा का जल ।
 मेघाच्छन्न = बादलों से ढका हुआ । मेघच्छादित = बादलों से ढका हुआ ।
 मेचक—(पु० सं०) छँधेरा । फाला ।
 मेज—(घो० फ्रा०) टेबुल । —पोश = मेज पर बिछाने का कपड़ा । —धान = मेइमान दार ।
 मेजर—(अ०) फ्रीज का एक अक्षर ।
 मेट—(पु० अ०) मजदूरों का अक्षर ।
 मेटना—(कि० हि०) मिटाना । दूर करना । नष्ट करना ।
 मेड—(पु० हि०) छाटा थाँघ । दो खेतों के बीच में सामा के रूप में बना हुआ रास्ता । —बदी = इद्वदी । मेइरा = किर्नी गोल वस्तु या नभरा हुआ किन्नारा । मडलाकार वस्तु का ढाचा । मेइरा ।

- मेडल—(पु० अ०) तमगा । पदक ।
 मेडरू—(पु० हि०) एक जल स्थल धारो जलु । ददुर ।
 मेढ़ा—(पु० हि०) सोंगवाला एक खीपाया ।
 मेथी—(सो० सं०) एक शाक । मेगौरी = मेण का साग मिलाकर बनाई हुई रस की पीठी की बरी ।
 मेद्र—(पु० हि०) धरयो ।
 मेद्रा—(अ०) पेट । पाकशय ।
 मेदिनी—(सं०) पृथ्वी । धरती ।
 मेधा—(सो० सं०) धारणागला बुद्धि । —धी = मेधा शक्ति-वाला । बुद्धिमान् । विद्वान् ।
 मेम—(सो० अ०) युरोप या अमेरिका की स्त्री । तारा का एक पत्ता ।
 मेमना—(अनु०) मेह का बच्चा ।
 मेमार—(पु० अ०) हमारा बनानवाला ।
 मेमोरियल—(अ०) वह प्रायतः पत्र जो किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाय ।

स्मारक चिह्न । यादगार ।

मेरा—(सर्व० हि०) “म” के
सबधकारक का रूप । अपना ।
मेरी (स्त्री०) ।

मेरु—(पु० स०) एक पर्वत ।
—दड=पीठ के बीच की
हड्डी । रीट । पृथ्वी के दोनों
ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी
कल्पित रेखा । —घत्र=
चरखा । बीजगणित में एक
प्रकार का चक्र ।

मेरे—(सर्व० हि०) ‘मेरा’ का
बहुवचन ।

मेल—(पु० स०) सयोग
भिलय । पक्ता । सुलह ।
दोस्ती । मित्रता । अनुकूलता ।
संगति । समता । बराबरी ।
मिलापट । मेला=बहुत
से लोगों का जमावड़ा । मेला
ढेला=जमावड़ा । मेली=
मुलाफाती । साथी । हेल-
मेल रखनेवाला ।

मेहिंटग केटूल—(पु० थ०) सरस
गलाने की देगचा ।

मेवा—(पु० फ्रा०) फल । सुखाए

हुए बढ़िया फल । —फरोश
=फल या मेवे बेचनेवाला ।

मेप—(पु० स०) एक राशि ।

मेहँदो—(स्त्री० हि०) एक झाड़ी ।

मेह—(पु० फ्रा०) बादल । वर्षा ।

मेहतर—(हि०) भगो ।

मेहनत—(फ्रा०) श्रम । प्रयास ।

मेहनताना=किसी काम की
मजदूरी । मेहनती=परिश्रमी ।

मेहमान—(अ०) पाहुना ।

अतिथि । दारो=आतिथ्य ।
पहुनाई । —मेहमानी=
आतिथ्य । पहुनाइ ।

मेहर—(फ्रा०) कृपा । दया ।

—दान=कृपानु । दयालु ।
—दानी=दया । कृपा ।

मेहरा—(हि०) छियों की सी
चेष्टावाला । छियों में बहुत
रहनेवाला । ग्त्रियों की एक
जाति ।

मेहराय—(फ्रा०) दरवाजे के ऊपर
का । गाल किया हुआ
डिस्का । —दार=ऊपर की
ओर गोल कटा हुआ ।

में—(सर्व० हि०) स्वयं । खुद ।

- मत्री—(स्त्री० स०) मित्रता । दास्ता ।
- मेथिल—(वि० स०) मिथिला देश का निवासी ।
- मेशुन—(पु० स०) समाग । रति कादा ।
- मेदा—(पु० पा०) बहुत महीन थापा ।
- मेदान—दूर तक फैली हुई सपाट भूमि । युद्ध क्षेत्र ।
- मैनफल—(पु० हि०) एक वृक्ष ।
- मेनसिल—(हि०) एक धातु ।
- मैना—(हि०) काले रंग का एक पक्षी ।
- मैल—(वि० हि०) मैला । दोष । विकार । —रोरा = मैल के क्षिप्रा लेनेवाला (रंग) । साधुन । मैला = मलिन । अस्वच्छ । दूषित । गदा । विष्टा । मूड़ा ककट । मैला कुचैला = जो बहुत मैले कपड़े आदि पहने हुए हो । गदा । मैलापन = मलिनता । गदा पन ।
- मोक्ष—(पु० स०) छुटकारा । मुक्ति । नजात ।
- मोच—(स्त्री० हि०) किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से चोट आदि क कारण इधर उधर खिसक जाना ।
- मोचरस—(हि०) सेमल वृक्ष की गोंद ।
- मोची—(हि०) चमड़े का काम बनानेवाला ।
- मोजा—(पु० फा०) जुराँब । पायताबा ।
- मोट—(स्त्री० हि०) गठरी । मोटरी ।
- मोटर—(अ०) एक गाड़ी जो यंत्र की सहायता से चलती है ।
- मोटरी—(हि०) गठरी ।
- मोटा—(वि० हि०) स्थूल शरीर वाला । दरदरा । मोटाई = स्थूलता । शरारत । मोगापन = मोगाई । स्थूलता । मोटापन = मोटापन । मोटाई ।
- मोटिया—(हि०) मोटा और

सुसुग देशो बपटा ।
गाडा । तुत्रो ।

मोठ—(स्त्री० दि०) एक घस ।

मोह—(स्त्री० दि०) घुमार ।
—ना = फेरना । लौटाना ।

मोतदिल—(वि० अ०) जा १
बहुत गरम थीर १ बहुत मद्
हो ।

मोती—(दि०) एक प्रसिद्ध रत्न ।

—चूर = छाटी बूँदियों का
छद्द । —उर = चेचक निक-
लन के पहले ध्यानवाला उर ।

मोतिया = एक फूल । —विद
= छाँय का एक रोग ।

मोतघर—(अ०) विरवाय पात्र ।

मोथा—(पु० दि०) एक घास ।

मोदक—(पु० स०) छद्द ।

मोदा—(दि०) परचुनिया ।
—खाना = भटार । मोदाम ।

मोधू—(वि० दि०) मूय ।

मोम—(पु० फा०) मधुमक्खी के
छत्ते का उपकरण । —जामा

= वह बपटा जिस पर मोम
का रोगान बढ़ाया गया हो ।

—पत्ती = मोम की जलने

वाला बत्ती । मामो = मोम का
बना हुआ ।

मोनि—(फा०) धर्मीष्ठ गुणल-
मान । जालाहों का एक जाति ।

मोसियाई—(दि०) नकली शिला-
धीन । काले रंग की एक दवा ।

मोयन—(दि०) माँड़े हुए छाटे
में घा या त्रिष्टा दना ।

मोर—(पु० दि०) एक सुन्दर
बदा पक्षी । —नी = मोर पक्षी

की मादा । —पक्षी = यह
नाव जिसका सिरा मार भी

तरह बना थीर रेंगा हुआ
हो । (वि०) मार क पन्ने के

रंग का । गहरा चमकीला
नीला ।

मोरचा—(फा०) जग । दपण पर
जमी हुई मैत्र । यह स्थान

जहाँ खड़े हाकर शत्रु-सेना से
जवाह भी जाती है ।

मोगना—(दि०) घुमाना ।

मोरी—(दि०) पनाही ।

मोल—(पु० दि०) श्रीमत ।
दाम ।

मोह—(पु० स०) चञ्चल । भ्रम ।

प्यार । मुहब्बत । —क =
 लुभानेवाला । —निशा =
 अज्ञानाधिकार । मोहिनी =
 धरा में करना । मुग्धता ।
 झाड़ू । मोहित = मुग्ध ।
 आशिक ।

मोहताज—(फ्रा०) निर्धन ।
 गरीब । मोहताभी = गाराभी ।
 मोहन—(पु० स०) मोहनेवाला ।
 —भाग = हलुधा । —माला
 = सोने के गुरियों या दानों
 की बनी हुई माला ।

मोहद्वत—(स्त्री० फा०) प्रेम ।
 स्नेह ।

मोहर—(स्त्री० फा०) ठप्पा ।
 अशरफ़ी ।

मोहरा—(पु० हि०) किसी घर
 सन का मुँह या खुलाभाग ।
 सेना की गति । शतरज की
 कोई गोदो ।

मोहरिरि—(पु० ध०) लेखक ।
 मुशो ।

मोहलत—(स्त्री० ध०) क्रूरसत ।
 अबकाश । अबधि ।

मोहल्ला—(पु० हि०) शहर का
 कोई हिस्सा ।

मौका—(पु० ध०) घटनास्थल ।
 जगह । अवसर ।

मौफूफ—(वि० ध०) बरझास्त ।
 निभर । मौफूफी = बरझा
 स्तगी ।

मौक्तिक—(पु० स०) मेथी ।

मौलिक—(वि० स०) ज़पानी ।

मौज—(स्त्री० ध०) छहर ।
 मौजी = मनमाना काम करने
 वाला ।

मौजा—(पु० ध०) गाँव ।

मौजूद—(पु० फ्रा०) उपस्थित ।
 हाज़िर । मौजूदगी = उप
 स्थिति । मौजूदा = प्रस्तुत ।
 वर्तमान काल का ।

मौत—(स्त्री० ध०) मृत्यु ।

मौतकिद्—(ध०) विश्वास
 करनेवाला ।

मौताद—(स्त्री० ध०) मात्रा ।

मौन—(पु० स०) चुप रहना ।
 चुप । —घत = चुप रहने का
 घत ।

मौर—(पु० हि०) मुकुट । विवाह

क समय पर के मिर का
 थाभूयण । मजरी । घोर ।
 मौरुसो—(वि० घ०) पैतृर ।
 माय्य—(पु० स०) चत्रियों के
 एक वरा का नाम ।
 मौलयी—(पु० घ०) घरकी भाषा
 का परिद्वत । मुसलमान धर्म
 का आचार्य ।
 मौलासरा—(घी० हि०) एक
 पेड़ ।
 मौसा—(पु० हि०) माता की
 बहन का पति । मौसो =
 माता की बहन । मौसिया =
 माता की बहन का पति ।
 मौसेरा = मौसा की ।
 मौसिम—(पु० घ०) धनु ।
 मौसिमी = काल के अनुद्वय ।

म्याँविं—(खा० घनु०) विद्वानों
 का वाणी ।
 म्यान—(पु० फ्रा०) नलवार,
 फगर आदि का घर ।
 म्युनसिपैलिटी—(खी० घ०)
 किसी नगर क स्याय्य,
 स्वच्छता आदि का प्रयत्न करने
 वाला प्रतिनिधि सभा ।
 म्यूजिक—(पु० घ०) बाजा ।
 म्यूजिशियन—(पु० घ०) बाजा
 बजानेवाला ।
 म्यूजियम—(पु० घ०) अजायब
 घर ।
 म्लेच्छ—(पु० म०) वे मनुष्य
 जो वर्णाश्रम धर्म का न
 मानते हैं ।

य

य

यक-ययक ।

य—हिंदी यणमाला का ०६वाँ
 व्यञ्जन ।
 यत्र—(पु० स०) चौतार । राजा ।
 —या = सकलाक । दर्द ।
 पीडा । —विद्या = कलों के

चलाने और बनाने की विद्या ।
 —शाला = मशीन घर ।
 यकता—(वि० फ्रा०) अद्वितीय ।
 —ई = एक होने का भाव ।
 यत्र ययक—(क्रि० फ्रा०) एक

प्यार । मुहब्बत । —क =
लुभानेवाला । —निशा =
अज्ञानांधकार । मोहिनी =
वश में फरना । मुग्धता ।
छादू । मोहित = मुग्ध ।
आशिक ।

मोहताज—(प्रा०) निर्धन ।
शरीर । मोहताजी = गाराया ।
मोहन—(पु० स०) माहनवाळा ।
—भोग = इच्छा । —माला
= सोन के गुरियों या दानों
की बनी हुई माला ।

मोहटवत—(स्त्री० फा०) प्रेम ।
स्नेह ।

मोहर—(स्त्री० फा०) ठप्पा ।
अशरफ़ी ।

मोहरा—(पु० हि०) किसी वर
तन का मुँह या खुलाभाग ।
सना की गति । शतरज को
कोई गोगे ।

मोहरिर—(पु० अ०) खेखक ।
मुशा ।

मोहलत—(स्त्री० अ०) फ़ुसत ।
अवकाश । अवधि ।

मोहल्ला—(पु० हि०) शहर का
कोई हिस्सा ।

मोका—(पु० अ०) घटनास्थल ।
जगह । अक्सर ।

मौकफ—(वि० अ०) बरखास्त ।
निभर । मौफ़ी = बरखा
स्तगी ।

मौकिक—(पु० स०) मे तो ।

मौखिर—(वि० स०) ज़बानी ।

मोज—(स्त्री० अ०) लहर ।
मौजी = मनमाना काम करने
वाला ।

मोजा—(पु० अ०) गाँव ।

मोजूद—(पु० फ़ा०) उपस्थित ।
हाज़िर । मौजूदगी = उप
स्थिति । मौजूदा = प्रस्तुत ।
वर्तमान काल का ।

मोत—(स्त्री० अ०) मृत्यु ।

मोतकिद—(अ०) विरवाश
करनेवाला ।

मोताद—(स्त्री० अ०) मात्रा ।

मोत—(पु० स०) चुप रहना ।
चुप । —मत = चुप रहने का
मत ।

मौर—(पु० हि०) मुकुट । विवाह

क समय पर के सिर का
आभूषण । मञ्जी । शौर ।
मौरुसा—(वि० अ०) पैगृक ।
मोर्व्य—(पु० स०) शत्रियों के
एक वश का नाम ।
मौलवी—(पु० अ०) धरधी भाषा
का परिद्वत । मुसलमान धर्म
का आचार्य ।
मौलानवरो—(स्त्री० हि०) एक
पेड़ ।
मौसा—(पु० हि०) माता की
बहन का पति । मौसी =
माता की बहन । मौसिया =
माता की बहन का पति ।
मौसेरा = मौसी की ।
मौसिम—(पु० अ०) ऋतु ।
मौसिमी = काल के अनुकूल ।

म्यार्थ—(छा० अनु०) विद्वान्ना
की बाला ।
म्यान—(पु० फ्रा०) तलवार,
फगर आदि का घर ।
म्युनिमिपैनिटी—(स्त्री० अ०)
किसी नगर के स्वास्थ्य,
स्वच्छता आदिका प्रबंध करने
वाला प्रतिनिधि मभा ।
म्यूजिर—(पु० अ०) बाबा ।
म्यूजिशियन—(पु० अ०) बाजा
बजानवाला ।
म्यूजियम—(पु० अ०) अज्ञायक
घर ।
म्लेच्छ—(पु० म०) वे मनुष्य
जो धर्माधम धर्म का न
मानते हैं ।

य

य

यक-ययक।

य—हिंदी उणमाजा का २६वाँ
व्यञ्जन ।
यंत्र—(पु० स०) औजार । बाजा ।
—या = तकलाक़ । दूँ ।
पीडा । —विद्या = फलों के

बलाने और बनाने की विद्या ।
—शाला = मशान घर ।
यवता—(वि० फ्रा०) अद्वितीय ।
—हँ = एक होने का भाव ।
यक उयक—(क्रि० फ्रा०) एक

धारगी । यकायक । यकवारगी = अचानक ।	यद्योपवीत—(पु० स०) अनेक । एक सरदार । उपनयन । प्रशवध ।
यकसाँ—(त्रि० क्रा०) एक समान । यराशर ।	यति—(पु० स०) सन्यासी । विशाम । निगम ।—भग=
यकायक—(क्रि० क्रा०) अचा नक ।	फाथ्य वा एक दोष ।
यकीन—(पु० अ०) दिग्वास । एतवार । —नू=अवरय । यशक । ज़रर ।	यतीम—(क्रा०) अनाथ । —घ्राना=अनाथालय ।
यकृत—(पु० स०) पेट में दाहिनी घोर की एक थैली । निगर ।	यत्न—(पु० स०) उपाय । डिप्रा जत ।
यद्मा—(पु० हि०) अय रोग । तपदिङ्ग ।	यत्रतत्र—(क्रि० स०) जहाँ तहाँ । जगह जगह ।
यदनी—(खो० फा०) शोरवा । भोज । उदल हुए मास का रसा ।	यथा—(आय० स०) जैसे । —क्रम=क्रमशः । क्रमानु सार । —तथ्य=ज्यों वा त्यों । —म'त=ममक के मुताबिब । —याथ्य=मुना सिब । उपयुक्त । —रुधि= इच्छानुसार । यथाथ=ठाक । उचित । जैम का तैमा । —यत्=जैसा वा तैमा । अच्छी तरह । —विधि= विधिपूर्वक । —शक्ति= सामर्थ्य के अनुगार । —सभव =जितना हो सक । —माध्य
यगाना—(वि० क्रा०) अपना । एक यश का । अङ्गला ।	
यजमान—(पु० स०) यज कराने वाला । यजमानी=पुरा हित को वृत्ति ।	
यज्ञ—(पु० स०) प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य । —शाजा=यज्ञ करने का स्थान । यज्ञमदप ।	

= जहाँ तब हो सक। यथा
 शक्ति। यथेष्ट = मनमाता।
 यथारिज = इन्द्रानुसार।
 यथेष्ट = काम। पूरा। यथोक्त
 = वही हुए के अनुसार।
 यथाहित = मुनाविष। ठीक।
 यथातथ्य = यथायथा।

यदि—(अभ्य० सं०) अगर।
 जो।

यद्यपि—(अभ्य० सं०) अगरचे।
 हरघट।

यम—एक देवता। —ज = एक
 सार उत्पन्न होनेवाली दो
 संतानें। —पुरा = यमलोक।
 यमपुर। यमालय = यम का
 घर।

यमरु—(स०) एक प्रकार का
 शब्दालंकार। एक श्रुत या
 नाम।

यमुना—(स्त्री० म०) उत्तर भारत
 का एक प्रसिद्ध नदी।

यवन—(पु० स०) यूनानी।
 यूनान देश का निवासी।
 मुख्यतः यवन = यवन
 जाति का स्त्री।

यरा—(पु० स०) पारि। नेत्र-
 माता। बड़ाई। —स्वनी =
 रीतिमती। —रवी = पारि
 मार।

यद्—(सर्व० द्वि०) प्राप्त की पद्य
 का निर्देश करनेवाला एक
 सपनाम। यही = यह ही।

यद्वा—(वि० द्वि०) इस अणु
 पर। यहाँ = यहाँ ही।

यद्वा—(पु० द्वि०) एक वाति।

या—(स० पा०) यथा। या।

याफन—(पु० स०) छाल रंग
 का बहुमुख्य पाथर। जाल।

याकूब—(स०) मुसलमानों के
 एक पैतावर।

याचरु—(पु० स०) भिसारी।
 मणिनेवाला।

यातायान—(पु० स०) गमना
 गमन। जाना जना।

यात्रा—(स्त्री० म०) सफर।
 प्रस्थान। यात्री = मुसाफिर।

याद—(स्त्री० क्रा०) स्मरण
 शक्ति। स्मृति। —तार =
 स्मारक। —दायत = स्मृति।

यान—(पु० स०) गाड़ी, रथ
 आदि सवारी । विमान ।
 यानो, याने—(अच्य० अ०)
 अर्थात् । मतलब यह कि ।
 यापन—(पु० स०) बिताना ।
 यार—(पु० पा०) मित्र । दोस्त ।
 उपपत्ति । जार । यागना =
 मित्रता । स्त्री और पुरुष का
 अनुचित सम्बन्ध । (वि०)
 मित्रता का । गरी = मित्रता ।
 स्त्री और पुरुष का अनुचित
 सम्बन्ध । —बाश = रसिक ।
 याता—(स्त्री० तु०) घाटे की
 गद्द के ऊपर के लम्बे धाल ।
 युक्ति—(स्त्री० स०) उपाय । ढंग ।
 कौशल । तक ।
 युग—(पु० स०) समय । काल ।
 युगांतर = दूसरा युग । जमाने
 का बदलना ।
 युत—(वि० स०) सहित । मित्र
 हुआ ।
 युद्ध—(पु० स०) लड़ाई ।
 युरेशियन—(पु० अ०) वह जिस
 के माता पिता में से कोई एक

यूरोप का और दूसरा पार्श्व
 का हो ।

युगप—(पु० अ०) एक महाद्वीप ।

युवती—(वि० स०) जवान स्त्री ।

युवराज—(पु० स०) राजा का
 वह राजकुमार जो उसके राज्य
 का उत्तराधिकारी हो ।

युवा—(वि० हि०) जवान ।

यूनाइटेड—(वि० अ०) मित्र
 हुआ । संयुक्त । —स्टेट्स =
 अमेरिका । —किंगडम =
 ब्रिटिश साम्राज्य ।

यूनान—(पु० ग्रीक आयानिया)
 एक देश । यूनाना = यूनान
 का । (स्त्री०) यूनान देश की
 भाषा । यूनान देश का
 निवासी । इकीमी ।

यूनिवर्सिटी—(स्त्री० अ०) विश्व
 विद्यालय ।

यूनियन—(पु० अ०) सब ।
 समा । समाज । —जैक =
 ग्रेट-ब्रिटेन और आयरलैंड के
 संयुक्त राज्यों की राष्ट्रीय
 पताका । यूनियन फ्लैग ।
 यों—(अच्य० हि०) इस भाँति ।

यौही—(अन्व० हि०) ऐसे ही ।
व्यर्थ हो ।

योग—पु० स०) सयोग । वित्त
की वृत्तियों की वञ्चन हाने से
रोकना । दृ दर्शनों में से
एक । —फल = दो या अधिक
सक्याओं को जोड़ने से प्राप्त
सक्या । —रूढ़ि = दो शब्दों
के योग से बना हुआ वह
शब्द जो अपना सामान्य अर्थ
छोड़कर कोई विशेष अर्थ
बताव । योगाभ्यास = योग
का माधन । यागिराज =
यागियों में श्रेष्ठ । योगी =
आत्मज्ञानी । योगीश्वर =
यागियों में श्रेष्ठ ।

योग्य—(वि० स०) काचित्त ।
दायक । श्रेष्ठ । उचित ।

—ता = स्त्रायकी । बदाई ।
बुद्धिमानी । सामर्थ्य । गुण ।

योजन—(पु० स०) दूरी की एक
माप ।

योजना—(स०) नियुक्ति ।
प्रयाग । मेज । रचना । घटना ।
स्थिति । व्यवस्था ।

योज्य—(वि० स०) सक्यायें जो
बोद्धे जायें ।

योद्धा—(पु० हि०) सिपाही ।
लड़ाका ।

योजि—(स्त्री० स०) आकर ।
खानि । उरगति-स्थान । स्त्रियों
की जननेन्द्रिय । प्राणियों के
विभाग ।

योम—(अ०) रोज । दिन ।

यौवन—(पु० स०) लयानी ।

र

र

रग

र—हिंदी-वर्णमाला का सत्ताईसवाँ
व्यञ्जन ।

रक—(वि० स०) शरीर । कगल ।

रग—(पु० स०) नाचना । गाना ।

युद्ध । वण । वह चीज जिसके
द्वारा कोई चीज रगी जाय ।
शरीर का ऊपरी वण । शोभा ।
प्रभाव । —त = रग का

भाय । हाजत । दशा ।
 —भूमि = अभिनय का स्थान । मीमांसास्थल । रणभूमि ।
 —शाळा = नाटकघर ।
 —मघ = नाटक का रंग ।
 रंगन = रंगा हुआ ।
 —रेज = कपड़े रंगनेवाला ।
 रंगोना = रसिकता । स. । वट ।
 रंगाला = आनंदी । रसिक । सुंदर । प्रेमी । रंगना = किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना । किसी को अपने अनुकूल करना । किसी पर आसक्त होना । —रिग = कई रंगों का । तरह तरह के ।
 —रिगा = अनेक रंगों का । —भवन = रंगमहल ।
 —मन्त्र = भागवतिकास का स्थान । —मार = तार या खल । —साज = रंग बनानेवाला । —साजी = रंग बनाने का काम ।
 रंगाई = रंगने की मशहूरी ।

रंगरूट—(पु० अ० रिक्) सेना

या पुलिस आदि में नया मर्त होना या न्याय भिषाही ।

रज—(पु० प्रा०) दुःख । खेद । शोक । रजिरा = मनमुटाव । रजादगी = मनमुटाव । रजीर = नाराज ।

रंनय—(स्त्री० हि०) वह जो सी या रूद जो बनी खगो वास्ते बटुक की प्याली । रसी छाती है । काई छीला बटपटा वृण ।

रजित—(वि० स०) रंगा हुआ । प्रसन्न । अनुरक्त ।

रंदावा—(पु० हि०) वैधव्य । विधवा की दशा ।

रडी—(स्त्री० हि०) बेरया ।
 —राज = बेरयागामी ।
 —राजी = बेरयागमन ।

रडुआ, रंडुवा—(पु० हि०) वह पुरुष निमकी स्त्री मर गई हो । विधुर ।

रदा—(पु० प्रा०) बदर्ह का एक आजार ।

रध—(पु० स०) खेद । घराब ।

रैभाना—(त्रि० द्वि०) गाय का
बोजना ।

रश्रव्यत—(स्त्री० अ०) प्रथा ।
रिधाया । निमान ।

रश्रु—(स्त्री० द्वि०) बड़ी मयने की
लकड़ी । दरदरा घाटा ।
सूत्री । चूर्णमात्र ।

रश्म—(पु० पा०) शमी । धनी ।

रश्या—(पु० अ०) पत्रफल ।

रश्म—(स्त्री० अ०) सपत्ति ।
श्वर । जगान की दर ।
सरह । रश्मी=यह किसान
जिसके साथ खाई प्राप्त
रिधायत की जाय ।

रक्षा—(स्त्री० का०) पाहों की
ज्ञान का पावदा । रक्षाश=
बसोधाकी । परात । रक्षाशे=
तरती ।

रक्षीक—(वि० अ०) पानी की
सरह पतला ।

रक्षीय—(पु० अ०) प्रेमिका या
दूधरा प्रेमी ।

रक्त—(पु० स०) लहू । अनु
रक्त । जाल । —चक्षु=
जाल रग का चक्षु । —पात

=लहू का गिरना या बहना ।
एन चराशे । —पित्त=एक
रोग । महसूर । —पाव=
एन जाना या गिरना । रक्षा-
तिमार=एक प्रकार का अति
सार । रक्षाशय=यं काठे
जिनमें रक्त रहता है । रक्षिम
=लगाईं लिए हुये ।

रक्षा—(स०) बचाना । पालना ।
रक्षक=बचानवाला । पदरे-
दार । पालन करनेवाला ।
रक्षण=रक्षा करना । पालन
पोषण । रक्षणोप=रक्षा
करने योग्य । —पधन=
द्विदुर्घों का एक रथोदार जो
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को
होता है । सजाना । रक्षित=
जिसकी रक्षा की गई हो ।
पाजा पोसा हुआ । (स्त्री०)
रक्षता ।

रक्षसे ताऊस—(पु० का०) एक
प्रकार का नाच ।

रखना—(क्रि० द्वि०) दिवाना ।
धरना । रक्षा करना । बचाना ।
निर्वाह या पालन करना ।

सग्रह करना । सौंपना । रेहन
 करना । अपने हाथ में करना ।
 अपनी अधीनता में लाना ।
 नियुक्त करना । पकड़ या रोक
 लेना । धारण करना । किमो
 पर आरोप करना । षड्वार
 होना । मन में अनुभव या
 धारणा करना । ठहराना ।
 रखवाना = रखने की क्रिया
 दूसरे से कराना । रखवाला =
 रखा करनेवाला । पहरेदार ।
 रखवाली = रखा करना ।
 रखेली = रखनी । उपपत्ती ।

रग—(स्त्री० फा०) मम ।

रगड़—(हि०) घपण । ऋगडा ।
 धुन । —ना = धिसना ।
 पीमना । अभ्यास आदि के
 लिये बार बार कोई काम
 करना । किसी काम को जल्दी
 जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक
 करना । परेशान करना ।
 रगड़वाना = रगड़ने का काम
 दूसरे से कराना । रगड़ा =
 बहुत अधिक उद्योग । यह
 ऋगडा जो बराबर होवा रहे ।

रगवत—(स्त्री० अ०) चार ।
 हृष्टा । रुचि ।

रगरेशा—(पु० फा०) पत्तियों
 की नसें । शरीर के अंदर का
 प्रत्येक अंग । किसी विषय
 की भीतरी और सूक्ष्म बातें ।

रगोदना—(क्रि० हि०) भगाना ।
 खदेड़ना ।

रग्गा—(पु० देश०) एक प्रकार
 का अन्न । रगी ।

रचना—(स्त्री० स०) बनावट ।
 निर्माण । बनाई हुई वस्तु ।
 कार्य । बनाया । निश्चित
 करना । ग्रथ आदि लिखना ।
 पैदा करना । आयाजन करना ।
 कल्पना करना । सजाना ।
 रग चढ़ना । रचयिता =
 रखने या बनाने वाला ।
 रचित = बनाया हुआ । रचा
 हुआ ।

रज—(पु० स०) धूल । गहँ ।

रजत—(स०) चाँदी ।

रजनी—(स०) रात ।

रजस्वला—(स०) अतुमती ।
 रजवती ।

रजा—(अ०) इच्छा । चुटी ।
 आशा । —मद = सहमत ।
 रजामदी = राजी या सहमत
 होना ।

रजिस्टर—(अ०) ऑगरेजी डग
 की बही या किताब । रजि
 स्टरी = किसी लिखित प्रतिज्ञा
 पत्र को कानून के अनुसार
 सरकारी रजिस्ट्रों में दर्ज
 कराने का काम । चिट्ठा, पार
 मल आदि डाक से भेजने के
 समय डाकघर के रजिस्टर
 में उसे दर्ज कराने का काम ।

रजील—(धि० अ०) नीच ।

रजागुण—(पु० स०) प्रकृति का
 वह स्वभाव जिससे जीवधारियों
 में भाग विलास तथा दिखावे
 की रुचि उत्पन्न होती है ।
 राजस ।

रजोदशन—(पु० स०) स्त्रियों का
 मासिक धर्म । रजम्बला
 होना ।

रटा—(स्त्री० हि०) कहना ।
 बोलना । रटना = किसी शब्द
 को बार बार कहना । ज़बानी

याद करने के लिये बार बार
 उच्चारण करना । रटत = रटना ।

रण—(पु० स०) युद्ध । —क्षेत्र
 = लड़ाई का मैदान ।
 —भूम = लड़ाई का मैदान ।
 —सिंघा = सुरक्षी । मरसिंघा ।
 —स्थल = रणभूमि ।

रतनजोत—(स्त्री० हि०) एक
 प्रकार की मणि । एक पौधा ।

रतनारी—(पु० हि०) लाल ।

रतालू—(पु० हि०) एक फल ।

रति—(स्त्री० स०) सभोग ।
 मैथुन । प्रेम । अनुराग ।

—क्रिया = मैथुन । सभोग ।

रतांधी—(स्त्री० हि०) घाँस का
 रोग ।

रस्तो—(स्त्री० हि०) घुँघचो का
 दाना । गुजा ।

रत्न—(पु० म०) मणि । जवा-
 हर । सवश्रष्ट । —परीक्षक
 = जौहरी । रत्नाकर = समुद्र ।

रथ—(पु० स०) प्राचीन काल
 की एक प्रकार की सवारी ।
 गाड़ी । —वार = रथ धराने
 वाला । बद्ध । एक जाति ।

—यात्रा = हिन्दुओं का एक पय । —वान् = रथ हाँकने वाला मारथा । रथी = रथ पर चढ़कर लड़नेवाला । रथ पर चढ़ा हुआ । यह दाँचा जिसपर मुग्धों को रखकर धारपट्टि क्रिया के लिये ले जाते हैं । रिक्ती ।

रद्वदल—(क्रि० क्रा०) परिवर्तन । अदल बदल ।

रदीरु—(स्त्री० अ०) अक्षरक्रम ।
—गर = अक्षर क्रम में ।

रह—(वि० अ०) जो काट या छाँट दिया गया हो । जो तोड़ या बदल दिया गया हो ।

रहा—(क्रा०) दोवार की पूगे लडाई में एक बार रखी हुई एक ईंट की जाडाई । नीचे ऊपर रखा हुई वस्तुओं की एक तरह या खड ।

रही—(क्रा०) निवृत्ता । बेकार ।
—रह खाना = वह स्थान जहाँ जगमग और निरुत्तरी चाहे रखी वा फँकी जायें ।

रनयास—(पु० हि०) रानियों

के रहने का महल । अनाखाना ।

रपटना—(क्रि० हि०) क्रियलता । मरणा । किसी काम की शोभता से करना ।

रफा—(वि० अ०) मिटाया हुआ । शान्त । —दफा = मिटाया हुआ । शान्त ।

रफोदा—(पु० अ०) वह रथ जिसके ऊपर चीन कमा जाता है । काबुक । गोल पगड़ी ।

रफू—(पु० अ०) फटे हुए कपड़े के छेद को तागे से भरकर उसे घराबर करना । —गर = रफू बनाने वाला । —गरी = रफू भरने का काम ।
—चक्कर = गायब । चंपत ।

रफूनी—(स्त्री० क्रा०) जाना । निर्घात ।

रफूार—(स्त्री० क्रा०) चाब । गति ।
रफूारफूा—(क्रि० क्रा०) धीरे धीरे । क्रम क्रम से ।

रव—(पु० अ०) हंशवर ।

रवड—(अ०) एक लक्ष्मीका पदायन

रवडी—(हि०) चौटाकर गाता

धी' छत्रवेदार किया हुआ
दूध ।

रघाथ—(पु० घ०) सारंगी की
तरह का एक बाजा ।
रघाविद्या = रघाथ बजाने
वाला ।

रघी—(स्त्री० घ०) यमतश्चतु ।
यह क्रमज जो यमत चतु में
काटा जाता है ।

रहत—(पु० घ०) चम्पास ।
सरक । —ज्ञप्त = सम्बन्ध ।

रमण—(पु० म०) विलास ।
क्रीड़ा । मैथुन । धूमना ।
रमणी = नारा । स्त्री । रम
णीक = सुन्दर । रमणीय =
सुन्दर । रमणायना = सुन्द
रता ।

रमजान—(घ०) मुमलमानों
का नया मनीना जिसमें ये
राज रहते हैं ।

रदना—(क्रि० हि०) मन लगने
के कारण वहीं रहना । भोग-
विलास या रतिक्रीड़ा करना ।

रदना करना । थक देना ।

विहार करना । विचरना ।
पाक ।

रमत—(पु० घ०) एक प्रकार
का फलित ज्यादातर । रमाल
= पासा फेंककर फलित
कहनेवाला ।

रमूज—(स्त्री० घ०) कटाण ।
सैन । इयारा । पहेली ।
भेद । रहस्य ।

रम्य—(वि० सं०) सुन्दर ।
मत्तारम । रमणीय ।

रम्हाना—(क्रि० हि०) रँमाना ।
गाय या बोलना ।

रच्यत—(स्त्री० घ०) प्रजा ।

रज—(पु० सं०) गुंजार । शब्द ।

रवशा—(पु० फ्रा०) वह नीकर
जा खियों के कामकाज करने
या सौदागान को द्यूनी पर
रहता है । यह पाताज जिन
पर रवाना किये हुए मान का
ध्योरा होता है । राहदारी
का फवारा ।

रवाँ—(वि० फा०) बहता हुआ ।
जारी ।

रवा—(पु० हि०) कण । रेखा ।

भेद का बात । गोपनाय । जो
 एकत्र में हुआ हो ।
 रहा सहा—(वि० हि०) सहा
 पुत्र ।
 रहित—(वि० सं०) बिना ।
 रगीर ।
 रहीम—(वि० अ०) कृपालु ।
 दयालु ।
 राँगा—(पु० हि०) एक धातु ।
 राँड—(वि० दि०) विभगा ।
 रग ।
 राँधना—(पु० हि०) पयाना ।
 राँपी—(स्त्री० देश०) मोठियों
 का एक श्रौंकार । सँध लगान
 के लिये चेरों का श्रौंकार ।
 राँमना—(क्रि० हि०) गाय का
 बालना या चिड़ाना ।
 राई—(स्त्री० हि०) बहन छोटी
 सरवों । बहुत थोड़ा मात्रा
 या परिमाण ।
 राइफल—(स्त्री० अ०) बड़ी
 बटूक ।
 राका—(स्त्री० अ०) पूर्णिमा की
 रात । पूर्णमासा ।

राक्षस—(पु० सं०) दैत्य ।
 असुर । फाई दुष्ट प्राणी ।
 राख—(स्त्री० हि०) भस्म
 झाक ।
 राग—(पु० सं०) सांसारिक
 सुखों की चाह । प्रेम । गीत
 गान । रागिनो=संगीत में
 किसी राग की पत्नी या स्त्री ।
 राघव—(पु० सं०) शू के वंश में
 उत्पन्न व्यक्ति । धारामन्त्र ।
 राज—(पु० हि०) शासन ।
 राज्य । दृष्टमत्त । देश । राजा ।
 राजगार । बचई । —कन्या
 = राजा का पुत्र । —कर =
 खिराज । —कीय = राज्य
 सयथा । —कुमार = राजा
 का पुत्र । —गद्दा = राजसिंहा
 सन । राज्याभिषेक । राज्या-
 धिकार । —गार = मकान
 बनानवाला कारीगर । —गीरो
 = राजगीर का पद या
 कार्य । —गृह = राजा का
 महल । —पत्नी = राजा की
 स्त्री । रानी । —पथ =
 राजमार्ग । बड़ी सड़क ।

—पद्धति = राजपथ । राज नीति । —पुत्र = राजकुमार । —पुत्री = राजकन्या । —पुरष = राज्य का कोई अफसर या कार्यकर्ता । —पुत्र = राजकुमार । राजपुत्राने में रहनेवाले वृत्तियों के कुछ विशिष्ट वश । —पूताना = राजस्थान नामक प्रदेश । —बाड़ी = राजा की चाटिका । राजमदल । —भक्त = राजा का भक्त । —भक्ति = राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम । —भवन = राजा का महल । —भोग = एक प्रकार का महीन धान । —मदल = राजा का महल । राजेश्वर = राजाओं का राजा । राजेश्वरी = महागङ्गी । —वश = राजा का कुल । राज कुल । —विद्या = राजनीति । —विद्रोह = बगावत । —विद्राही = बारी । —थी = राजा का पेश्वर्य । राजा की शोभा । —स = रजोगुण से उत्पन्न = राजशक्ति ।

—सभा = राजा का दरबार । राजाओं की सभा । —समाज = राजमदली । राजा लोग । —सिंहासन = राजगद्दी । —सी = राजाओं की सी शानवाला । जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो । —सूय = एक यज्ञ का नाम । —स्थली = एक प्राचीन जनपद का नाम । —स्थान = राजपुताना । —स्व = भूमि आदि का वह वर जो राजा को दिया जाय । —हस = एक प्रकार का हस । राजेंद्र = राजाओं का राजा । यादशाह । राजा = किसी देश या जग्ये का प्रधान शासक । राजाधिराज = राजाओं का राजा । शाहशाह ।

राज — (क्रा०) भेद । रहस्य ।
 राजी — (वि० अ०) अनुकूल ।
 यत्न । नीरोग । सुख ।
 सुखी । रजामदी । —नामा
 = सधि पत्र ।
 राज्ञी — (स्त्री० स०) रानी ।

राज्य—(पु० स०) शासन । याद
शाहत । —च्युत = जा राज
सिंहासन से उतार या हटा
दिया गया हो । राज्यभ्रष्ट ।
—भग = राज्य का नाश ।
—यवस्था = राज्यनियम ।
क्रान्त । राज्याभिषेक = राज
सिंहासन पर बैठन के समय
राजा का अभिषेक । राजगद्दी
पर बैठने की शक्ति ।

राणा—(पु० हि०) राजा ।

रात—(स्त्री० हि०) निशा ।

राजा—(स्त्री० हि०) राजा की
स्त्री । मालकिन । स्त्रियों के
लिये आदर सूचक शब्द ।

राम—(पु० म०) महाराज दशरथ
के पुत्र । ईश्वर । —चन्द्र =
श्याम्या के राजा दशरथ के
बड़े पुत्र का नाम । —नवमी
= चैत्र सुदी नवमी जिस
दिन रामजी का जन्म हुआ
था । —नामी = बड़े चान्द,
दुपट्टा या धोती जिस पर
“राम राम” छपा रहता है ।
—बाँस = एक प्रकार का

माटा बाँस । —रज = एक
प्रकार की पीली मिट्टी ।
—राज्य = रामचन्द्रजी का
शासन । अत्यन्त सुखदायक
शासन । —लीला = राम के
चरित्रों का अभिनय । —शिला
= गयाकी एक पहाड़ी ।

रामानन्द—(पु० स०) एक प्रसिद्ध
वैष्णव आचार्य ।

रामानुज—(पु० स०) वैष्णव
मत के एक प्रसिद्ध आचार्य ।

रामायण—(पु० स०) वह ग्रन्थ
जिसमें रामचरित वर्णित हो ।
रामायणी = रामायण सबधी ।

राय—(पु० हि०) राजा । छोटा
राजा या सरदार । सम्मान
की एक उपाधि । भाट ।
सम्मति । सलाह । —बहादुर
एक प्रकार की उपाधि ।
—साहब = एक प्रकार की
पदवी ।

रायता—(स०) दही या मूँड़े में
उबाला हुआ साग ।

रायल—(स०) राजकीय । शाही ।

दापने की जलों तथा कागज की एक गाव ।

रायल्टी—(अ०) किमी पुस्तक व लेखक को प्रकाशक की ओर से नियमपुस्तक मिलने वाला पारिश्रमिक ।

राल—(घा० स०) एक प्रकार का पद ।

राज—(पु० हि०) राजा । सरदार । दरबारी । भाट । फर्रु और राजपूताने के कुछ राजाओं का एक पदवी । एक प्रकार का पेड़ । —बडादुर एक प्रकार की उपाधि । —साहब=एक प्रकार की पदवी ।

राजटो—(हि०) छोलदारी । किमी चीज का बना हुआ छोटा घर ।

रावण—(वि० स०) लका का प्रसिद्ध राजा ।

राश—(क्रा०) राशि । अनाज का ढेर ।

राशि—(स्त्री० स०) ढेर । पुल । किसी का उत्तराधिकार ।

प्रतिवृत्त में पढ़नेवाले विशिष्ट सागमसूद्र जिनकी सख्या बारह है । —चक्र=राशियों का मडल ।

राशा—(अ०)रिशवत राजावाता । धूमपार ।

राष्ट्र—(पु० स०) राज्य । देश । प्रजा । —पति=किसी राष्ट्र का स्वामी । चायुतित्र प्रजा तत्र शान्त प्रयातां मं सर्व प्रदान शामक । —विप्लव =विद्रोह । बलवा । राष्ट्रीय =राष्ट्र सयधा । राष्ट्र का ।

रास—(पु० स०) एक प्रकार का गाव । एक प्रकार का चलता गाना । —मडल=श्रीकृष्ण के रामक्रीड़ा करने का स्थान । रासक्रीड़ा करनेवालों का समूह । रामधारियों का अभिनय । रासधारियों का समाज । —लावा=वह नृत्य या क्रीड़ा जो शरत् पूर्णिमा के श्रीकृष्ण ने गोपियां के साथ किया था । रासधारियों का कृष्णलाला

मबधी अभिनय । (अ०) घोड
की लगाम ।

रास्त—(वि० फ्रा०) सीधा ।
सरल । सही । ठीक । उचित ।
अनुकूल । —गो = सच
बोलनेवाला । —यात्री =
सचाई । ईमानदारी ।

रास्ता—(फा०) राह । पथ ।

राह—(स्त्री० फ्रा०) मार्ग ।
रास्ता । —खर्च = रास्ते में
होनेवाला खर्च । —गीर =
मुसाफिर । पथिक । —जन =
डाकू । लुटेरा । —जनी =
ढकैती । लुट । —दारी =
राह पर चलने का महसूज ।
—रीति = राह रस्म । व्यव
हार । परिचय । राही = मुसा
फिर । यात्री ।

राहत—(फा०) आराम । सुख ।

रिंग—(स्त्री० अ०) घेंगूठी ।
एकला । चूड़ी । घेरा ।

रिंद—(पु० फ्रा०) धार्मिक बंधनों
को न माननेवाला पुरुष ।
मनमौजा आदमी । मतवाला ।

रिश्रायत—(स्त्री० अ०) कोमल

और दयापूर्ण व्यवहार ।
नरमी । कमी । न्यूनता ।
ध्यान । विचार ।

रिश्राया—(अ०) प्रजा ।

रिक्वैडु—(स्त्री० देश०) पशु
भोज्य पदार्थ ।

रिक्शा—(स्त्री० अ०) एक गाड़ी
जिसे आदमी खींचता है ।

रिक्त—(वि० स०) खाली । शून्य

रिजक—(पु० अ०) रोज़ी
जीविका ।

रिजक—(वि० अ०) सुरचित ।

रिजालत—(अ०) नालायती ।
कमीनापन ।

रिजेंट—(पु० अ०) राजा की
तावालिगी में राजकाज
चलाने के लिये अंग्रेज़ सरकार
की तरफ़ से नियुक्त प्रति
निधि ।

रिक्नाना—(द्वि० हि०) किसी
को अपने ऊपर खुरा करना ।
मोहित करना । रिक्नाव =
प्रेम ।

रिपु—(पु० स०) शत्रु । —ठा
= दुरमनी ।

रिपोर्ट—(ग्नि० अ०) द्विती
घन्टा का सविस्तर बयान ।
सूचना । शिवरत्न । शार्तों
का व्योरा । —र=रिपाट
करनेवाला । संशब्दाता ।

रिन्यासत—(स्त्री० अ०) राज्य ।
अमलदारा । अमीरी । पैना ।

रिवाज—(पु० अ०) रस्म ।
प्रथा ।

रिशता—(पु० क्रा०) नाता ।
सबध । रिश्तेदार = सबधी ।
नातेदार । रिश्तेदारी = नाता ।
सबध । रिश्तेमद = सबधा ।
नातेदार ।

रिश्तत—(स्त्री० अ०) घुम ।
झाँच । —गार = रिश्तत
खोजवाला । —गोरा = रिश्तत
थाना ।

रिस्त—(स्त्री० हि०) प्रोध । गरमा ।

रिस्तालदार—(पु० प्रा०) पुप
सवार सेना का अग्रभर ।

रिस्ताला—(पु० क्रा०) घुड़सवारों
की सेना । (अ०) छोटी
बिताब । मायिकपत्र ।

रिहानामा—(पु० पा०) गिरवी
रमे जाने की शर्तों का खेत्त ।

रिहसूल—(पु० अ०) नाटक के
अभिनय या अम्यास । यह
अम्यास जो किसी कार्य को
दोक समप पर करने से पहले
बिया जाय ।

रिहन—(स्त्री० अ०) काठ की
थी हुई कैचीगुमा धाकी ।

रिहा—(वि० पा०) मुक्त । छूटा
हुआ । —इ = छुटकारा ।
मुक्ति ।

रीधना—(क्रि० हि०) रीधना ।
पहना ।

रीभना—(क्रि० हि०) प्रसन्न
होना । मोहित होना ।

रीठा—(पु० हि०) एक पद्म
जगली वृक्ष और उसका फल ।

राइ—(स्त्री० हि०) पाठ के बीचो
बाच खड़ी हड्डी । मेरुदंड ।

रीति—(स्त्री० स०) प्रकार ।
तरह । रस्म । रिवाज ।

क्रायदा । साहित्य में किसी
विषय का वर्णन ।

रीम—(स्त्री० अ०) कागाज की

वह गधुो जिसमें बीस दस्ते होते हैं ।

रुड—(पु० ग०) धिना सिर का धड़ । बिना हाथ पैर का शरीर ।

रुधना—(त्रि० हि०) धरा जाना ।

रुध्राय—(पु० अ०) धाक । रोय । भय । डर ।

रुकून—(अ०) स्तम्भ । बल । शान ।

रुकना—(क्रि० हि०) आगे न बढ़ सकना । अटकना । काम आगे न होना । सिद्धमिला आगे न चलना ।

रुकाव—(पु० हि०) रमावट । रोक ।

रुक्का—(पु० अ०) छोटा पत्र या चिट्ठा । वह लेख जो हुंडी या षर्ज़ लेनेगले रुपया लेते समय लिखकर महाजन का देते हैं ।

रुक्—(पु० फा०) गाल । मुख । चेहरा । चेहरे का भाव । आकृति । मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो । मेहरबानी की नज़र ।

सामने का भाग । शतरज का एक मोहरा । तरफ़ । ओर । सामने । याज़ार का भाव ।
—सार=गाल । कपोल ।

रुत्तस्त—(क्रा०) आज्ञा । विदाह । काम से छुट्टी । अवकाश । (वि०) जो कहीं से चल पड़ा हो । रुत्तमती =विदाह ।

रुम्माई—(पा० हि०) रुखापन । शुष्कता । खुरकी । व्यवहार की कठोरता ।

रुखानी—(खी० हि०) बड़इयों का एक औज़ार ।

रुग्ण—(वि० सं०) बीमार ।

रुचि—(पु० सं०) इच्छा । तबीयत । प्रेम । भूए । स्वाद । (वि०) शोभा के अनुकूल ।
—कर =अच्छा लगनेवाला ।
—वारक =रुचि उत्पन्न करने वाला । बढ़िया स्वादवाला ।
—कारी =अच्छे स्वादवाला । मनोहर । —र=सुंदर । अच्छा ।

रुतवा—(पु० थ०) पद ।

शोइदा । इज्जत । प्रतिष्ठा ।

रुदन—(पु० हि०) रोना ।

विनाप करना ।

रुद्र—(पु० स०) भयानक ।

हराया । रदास = एक वृक्ष जिसके के फल की माला बनती है ।

रुधिर—(पु० स०) लहू । खून ।

रुपया—(पु० हि०) चाँदी का सिक्का ।

रुपहता—(वि० हि०) चाँदी का सा ।

रुवाई—(स्त्री० थ०) उदूँ या फारसी की एक प्रकार की कविता । एक प्रकार का गाना ।

रुमाली—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का लँगोट । मुगदर हिलाने का एक हाथ ।

रुलाई—(स्त्री० हि०) रोने की प्रवृत्ति । रुलाना = दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना । इधर उधर फिराना । नष्ट करना ।

रुसवा—(वि० फा०) बदनाम ।

निंदित । —ई = अपमान और दुर्गति ।

रुस्ख—(अ०) मेल-जोल ।

रुँधना—(क्रि० हि०) फँटीले भाड़ आदि से घेरना । राफना । धागे जाने का भाग बढ़ करना ।

रु—(पु० फ्रा०) मुँह । मामना ।

—पोश = गुप्त । फतार ।

—पोशी = छिपना । —बरु = मामने । —बकार = मुकदमे की पेशी । आजापत्र ।

रुई—(स्त्रि० हि०) कपास के ढोंडे या बोश के अक्षर का धूआ । रुईदार = जिसमें रुई भरी गई हो ।

रुद्ध—(वि० स०) रुका ।

रुखा—(पु० हि०) सीठा । नीरस । उदासान । फटोर । विरक्त । —पन = नीरसता । खुरकी । फरारता । उदासीगाना । स्वादहीनता ।

रुठना—(क्रि० हि०) नाराज होना । रुसना ।

- रुडि—(स्त्री० स०) परम्परा से चली आती हुई । प्रथा ।
- रुदाद—(स्त्री० प्रा०) समाचार । हाल । दशा । विवरण । अदा लत की कारवाह । मुकदमे का रग-डग ।
- रूप—(पु० स०) शकल । सूरत । आकार । स्वभाव । सुदरता । वेप । दशा । समान । भेद । चिह्न । चाँदी । ग्न्वसूरत । — क = मृत्ति । मादर्य । दृश्यकाय । संगीत में एक ताल । — गविता = वह स्त्री जिसे रूप का अभिमान हो — वत = ग्न्वसूरत । सुदर । — वती = सुदरी । रूपी = मुख्य । मद्रश । — रेखा = आकार प्रकार ।
- रूम—(पु० प्रा०) टर्की या तुर्की देश का नाम ।
- रुमाल—(पु० फा०) कपड का यह चौकोर टुकड़ा जो हाथ, मुँह पोंछने के काम आता है । चौकोना शाल ।
- रूल—(पु० थ०) ज्ञायदा । लकीर

- रुँघने का डटा । लकीर । शामन । — र = लकीर रुँघने का डटा । पैमाना । शामक । रुलिंग = लकीर रुँघना । रुलिंग चीफ = बृटिश गवर्नमेंट के मातहत पर अपने राज्य में स्वतंत्र शासक राजा महा राजा ।
- रूस—(पु० फा०) एक देश का नाम । रुसी—रूस देश का रहनेवाला । रूस की भाषा ।
- रुसा—(पु० हि०) एक पौधा । अडूसा ।
- रुसी—(स्त्री० हि०) सिर के बालों में जमी हुई मैल ।
- रुह—(स्त्री० थ०) आत्मा । सार ।
- रुँघना—(क्रि० अनु०) गदहे का बोलना । शुरे दग से गाना ।
- रुँगना—(क्रि० हि०) फीटो आदि का चलना । धीरे धीरे चलना ।
- रुँट—(पु० देश०) नाक का मल ।
- रुँड—(पु० हि०) एक पौधा । — ना = पौधे में डटव

निकलना। रेंडो = अड़ी या रेंड का बीज।

रेखता—(पु० फा०) एक प्रकार का गाना उर्दू का पुराना नाम।

रेख—(स्त्री० हि०) मोछों के स्थान पर बारीक बालों की लकीर। —भिनना = मोछें निकलना।

रेखा—(स्त्री० स०) लकीर। किसी वस्तु का सूचक चिह्न। गणना। शुमार। धाकार। सूरत। इथेली तलवे आदि में पढ़ी हुई लकीरें। —गणित = गणित का वह विभाग जिसमें रसायनों द्वारा कुछ सिद्धांत निद्धारित किए जाते हैं। रेखाङ्कित = चित्रित। —चित्र = स्केच। यह चित्र जिसमें रंग न भरा गया हो। रेखाश = यामोत्तर घृत्त की एक-एक डिग्री या अंश।

रेग—(स्त्री० फा०) बालू। रेगिस्तान = बालू का मैदान। मरदेश।

रेचक—(वि० स०) दस्तावर। प्राणायाम की तीव्र क्रिया।

रेजा—(पु० फा०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। मुनारों का एक शौज़ार। नग। अदद।

रेजिश—(स्त्री० फ्रा०) जुकाम।

रेजीडेंट—(पु० अ०) देशी राष्ट्रियों में अंगरेज़ी राज्य का प्रतिनिधि।

रेजीमेंट—(स्त्री० अ०) सेना का एक भाग।

रेट—(पु० अ०) भाव। निर्णय। चान। गति।

रेडियम—(पु० अ०) एक धातु।

रेणु—(स्त्री० स०) धूल। बालू। कणिका।

रेत—(स्त्री० हि०) बालू। रेतीला = बालूवाला। बालुकामय।

रेतना—(स्त्री० हि०) रेती नाम के शौज़ार से रगड़ना। रेती = रेतने का शौज़ार।

रेल—(स्त्री० अ०) लोहे की पटरि जिस पर रेलगाड़ी के पहिये चलते हैं। —गाड़ी = भाप के जोर से चलनेवाली

- परदे बाँधने की बारीक ताँत ।
 रोना—(कि० हि०) रदन करना ।
 रज मानना । पड़ताना ।
 चिद्विद्या ।
- रोपना—(वि० हि०) लगाना ।
 स्थापित करना । बोना । हाथ
 से थापना ।
- रोव—(पु० अ०) प्रभाव ।
 आतक । —दाग = प्रभाव
 शाली ।
- रोम—(पु० हि०) देह के बाल ।
 रोयाँ । —लता = रोमावलि ।
 रोमाच = आनन्द से रोयों का
 उभर आना । पुलक । भय
 से रोंगटे खड़े होना । रोमा
 चित्त = पुलकित । भय मे
 जिमके रोंगटे खड़े हो गये हों ।
 रोयाँ = रोम । लोम ।
- रोमन—(अ०) प्राचीन यूनान के
 रोम देश में प्रचलित । —कैथ
 लिक = इसाइयों का प्राचीन
 संप्रदाय ।
- रोलर—(पु० अ०) बेलन ।
 —क्रेम = बेलन की कमानी ।

- मोल्ड = सरस का बेलन
 ढालने का साँचा ।
- रोली—(स्त्री० हि०) चूने हल्दी
 से बनी हुई लाल बुकनी ।
- रोयाँसा—(वि० हि०) बो
 रो देना चाहता हो ।
- रोशन—(वि० क्रा०) जलता
 हुआ । प्रकाशित । मशहूर ।
 प्रसिद्ध । प्रकट । जाहिर ।
 —चौकी = फूँककर बजाने
 का एक बाजा । नफीरी ।
 —दान = प्रकाश आने का
 छिद्र । मोर्या । रोशनाइ =
 स्याही । रोशनी = उजाड़ा ।
 दीपक । ज्ञान का प्रकाश ।
- रोप—(पु० स०) क्रोध । गुस्मा ।
 चिड । द्वेष । जोश ।
- रौ—(स्त्री० हि०) रग डग ।
 रैया । प्रवाद । मुकाब ।
- रादना—(क्रि० हि०) पैरों से
 कुचलना । खूब पीटना ।
- रौ—(स्त्री० क्रा०) गति । चाब ।
 बग । झोंक । पानी का
 बहाव । किसी बात की धुन ।
 चाल । डग ।

रौसान—(पु० थ०) तेज । जाग्र
आदि का घना हुआ पका
रस । रौसानी=तेज का ।
रौसान फेरा हुआ ।
रौसा—(पु० थ०) वाता ।
बागीचा । समाधि ।
रोट्ट—(वि० स०) भयकर ।

दरावना ।
रौनक—(स्त्री० थ०) चमक
दमक । कृति । विकास ।
शोभा ।
रोरु—(वि० स०) एक तरक ।
रौला—(पु० हि०) हल्ला ।
शेर । हलचल ।

ल

ल

लगर

ल—हिंदी पञ्चमाला का अष्टाई-
मवाँ वख । जिसका उच्चा
रण स्थान दाँत है ।
लफलाट—(पु० थ० जाग झुगध)
एक प्रकार का मोटा बड़िया
कपड़ा ।
लका—(स्त्री० स०) भारत के
दक्षिण का एक टापू ।
लग—(क्रा०) लँगड़ा ।
लँगड़ा—(वि० क्रा०) जिसका
एक पैर बेगाम या टूटा हो ।
जिसका एक पाया टूटा हो ।
एक प्रकार का आम ।
—ना = लगड़े होकर चलना ।

लगवो = कुरती का एक दाव ।
लगर—(पु० क्रा०) लोहे का एक
प्रकार का बौटा जिसका उप
योग जहाजों और बड़े नावों
को सजा करने में होता है ।
—लाना (पञ्चाधी) = यह
स्थान जहाँ से दक्षिणों को घना
घनाया भोजन बौटा जाता है ।
—गाइ = किनारे पर का यह
स्थान जहाँ लगर डालकर
जहाज उहराये जाते हैं ।
लगूर—(पु० हि०) बन्दर ।
पूँछ । एक प्रकार का बड़ा
बन्दर ।

लँगोट, लँगोटा—(पु० हि०)

कमर पर बाँधने का एक

प्रकार का बना हुआ उद्य।

लँगोटी=कोपान। पद्मनो।

लघन—(पु० स०) उपवास।

अनाहार। लघनीय=लघाने

का योग्य।

लठ—(वि० हि०) मूय। उजड़।

लँहरा—(वि० रस०) बिना पूँछ

का।

लप—(पु० अ०) दीपक।

चिगम।

लपट—(पु० स०) न्यमिधारी।

जामी। —ता = दुराचार।

शुक्ल।

लप्रा—(वि० हि०) विशाल।

बड़ा। ऊँचा। विस्तृत।

लम्बाइ=लम्बा होने का

भाव। लयो=लबा का स्त्री

लिंग। लघोदर=पेट।

लकटबग्घा—(पु० हि०) एक

जगली जतु।

लकडदारा—(पु० हि०) जगल

स लकड़ी सोड़ कर बाँधनेवाला।

लकड़ी—(छा० हि०) काठ।

काष्ठ। ईंधन। जाली।

लकड़क—(वि० क्रा०) मैदान

जिसमें पेड़ आदि न हों।

मारु-मुयरा।

लकव—(पु० अ०) उपाधि।

पदवी।

लकलफ—(पु० अ०) लची

गदन का जल-पत्ती। टँक।

(वि०) मृत्त दुबला पतला।

लकया—(पु० अ०) एक बात

संग।

लकीर—(छा० हि०) रेखा।

खत। धारी। पंक्ति। सतर।

लकड—(पु० हि०) काठ का

बड़ा कुदा।

लकड़ा—(पु० अ०) एक प्रकार

का कवच।

लक्ष—(वि० स०) एक लाख।

सौ हजार।

लक्षण—निशान। आसार।

खाल-टोल। लक्षणा=शब्द

को वह शक्ति जिससे उसका

अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षित=बतलाया हुआ।

देना हुआ। जिसपर कोई
चिह्न बना हो। यह अर्थ
जो शब्द की लक्षणा नाकि
द्वारा ज्ञात होता है।

लक्ष्मी—(स्त्री० स०) विष्णु की
पत्नी। धन की अभिलाषा
देवा। धन सम्पत्ति। शौभत।
शाभा।

लक्ष्य—(पु० स०) निजाना।
यह जिसपर चाक्षुष किया
जाय। उद्देश्य। —भद्र—
एक प्रकार का निजाना।

लग्नता—(पु० प्रा०) मूच्छा
दूर करने का मुगधित द्रव्य।

लगन—(स्त्री० द्वि०) ली। प्रेम।
सवध।

लगा—(क्रि० द्वि०) सटा।
जुड़ा। मिलना। चिपकाया
जाना। शामिल होता।
मालूम होना। सम्बन्ध या
रिश्ते में जुड़ होना। घाट
पहुँचना। पीता जाता। शुरू
हाना। चलना। सड़ना।
अमर होना। पीछे पाछे
चलना। चिमटना।

लगभग—(मि० द्वि०) प्राय।
फरीब-फरीय।

लगघाना—(क्रि० द्वि०) लगाने
का काम दूसरे से कराना।

लगानार—(मि० द्वि०) निरतर।
मिद्धमिद्धवार।

लगान—(पु० द्वि०) लगान या
लगाने की क्रिया या भाव।
लाग। भूमि पर लगाने वाला
कर। राजग्य।

लगाता—(मि० द्वि०) सटाना।
निजाना। जोड़ना। चिप
काना या गड़ाना। शामिल
करना। उगाना। रख
करना। पीतना। घोट पहुँ
चाना। काम में लगाना।
अभियाग लगाना। धारण
करना। जुगली गाना।
गाइना। पास ले जाना।
छुटाना। बन्द करना। दाँव
पर रखना।

लगाम—(स्त्री० प्रा०) रास,
बाग।

लगालगी—(स्त्री० द्वि०) लगन।
प्रेम। सम्बन्ध। मैल-जोड़।

लगाव—(पु० हि०) सम्बन्ध ।

वास्ता । —ट=सम्बन्ध ।

प्रेम

लग्ना—(पु० हि०) लग्ना वॉस ।

वृद्धों से पत्न आदि तोड़ने

का लग्ना वॉस । फाय

आरम्भ करना । लग्नी=

लग्ना वॉस । लग्ना = वा ।

एक प्रकार का चीता ।

लग्न—(पु० स०) सुहृत् ।

विवाह का समय । विवाह ।

शादी । विवाह के दिन ।

(वि०) लगा हुआ । ली ।

प्रम । सम्बन्ध ।

लगु—(वि० स०) छोटा । थोड़ा ।

इलका । नीच । —ता=

छोटापन ।

लक्ष्म—(स्त्री० हि०) मुकाब ।

लच्छा—(पु० अनु०) तारों या

ढोरों आदि का समूह । एक

भिठाई । एक प्रकार का

गहना । लच्छेदार=लच्छों

वाला । दिलचस्प (वात) ।

लज्ज—(वि० अ०) स्वादिष्ट ।

लज्जतदार ।

लज्जन—(स्त्री० अ०) स्वाद ।

ज्ञापका । —दार=स्वादित ।

लज्जा—(स्त्री० स०) लान ।

शर्म । इज्जत । —वत=

शर्माळा । लज्जालू का पौधा ।

—वती=लज्जारील । शर्मा

ळी । लज्जानू का पौधा ।

—शील=जिममें लज्जा हो ।

लज्जिळा । —हीन=वेहया ।

लज्जित = शर्माया हुआ ।

लज्जाना=शर्मिदा होना ।

लज्ज=शर्म ।

लट—(स्त्री० हि०) केशपाश ।

अलक । परम्पर चिमटे हुए

वाल ।

लटक—(स्त्री० हि०) मुकाब ।

लुभावनी चाल । धगभगी ।

लटकन = लटकने वाली

चीज । लटकना=कूटना ।

टंगना । लटकना । काँसी

चढ़ना । लटका=गति ।

चाल । हाव भाव । धात

धीत करने में स्वर का धारा

वही टंग । टोटका । एक

प्रकार का चलता गाना ।

लटवाना = टाँगना । इन्त
जार कराना । देर कराना ।

लटोरा—(पु० हि०) एक प्रकार
का छोटा पेड़ ।

लटट्ट—(पु० हि०) एक खिलौना ।

लट्ट—(पु० हि०) बड़ी लाठी ।

—बाज = छाठी बाँधने
वाला । —बाज़ी = छाठी की
लड़ाई या मारपीट ।

—मार = अप्रिय और
फटोर । कड़वा । लट्टा =
शहतीर । कड़ो । लकड़ी का
रभा । एक प्रकार का मोटा
कपड़ा । ज़मीन मापने का
पैमाना । लट्टाबन्दी =

ज़मीन की साधारण नाप ।

लटैत = लट्टबाज़ ।

लडका—(पु० हि०) बालक ।

पुत्र । —बाला = सतान ।

झौलाद । परिवार । लडकी
= बालिका । धन्या । पुत्री ।

लडकपा = यात्रायस्था ।
चञ्चलता ।

लडपडाना—(क्रि० हि०)

डगमगाना । डिगना ।

लडना—(क्रि० हि०) युद्ध करना ।

भिड़ना । कुश्ती करना ।

झगड़ा करना । यहम करना ।

टकराना । मेल मिल जाना ।

दिमा स्याग पर पड़ना ।

लडाइ = मिड़त । युद्ध ।

कुश्ती । यहम । टकर ।

विरोध । दुरमनी । लडाइ =

लडाई में काम आनेवाला ।

लडाना = लडने का काम

दूसरे से कराना । कलह के

लिये उद्यत करना । भिड़ाना ।

लड्य पर पहुँचाना । परस्पर

उलझाना । दुलार करना ।

लड्डू—(पु० हि०) एक मिठाई ।

मोदक ।

लत—(स्त्री० हि०) बुरी आत्त ।

लता—(स्त्री० सं०) वस्त्री ।

पेल । —कुज = लताओं से

छाया हुआ स्थान । —गृह

= लताओं से मटप की तरह

छाया हुआ स्थान । —भवन =

लताओं का कुज । —मटप =

छाई हुई लताओं से बना

हुआ मटप या घर । लतर =

वेद, बन्नी लतरा । छतरी =
एक प्रकार की घास और
घस ।

लतीफ—(वि० अ०) दिलचस्प ।
सुदिया । मनाहर । लतीफा
—पुस्तक । हँसी का भाव ।
भन्नी घास ।

लता—(पु० हि०) शोधदा ।
मरुत का दुकड़ा ।

लत्तो—(स्त्री० हि०) पशुओं का
पाद प्रहार । खात मारने की
क्रिया । कपड़े का लंबी धजा ।
पठम का पुष्टिना ।

लापथ—(वि० अ०) भीगा
हुआ । सरापेरा । पानी या
काषय आदि में रना हुआ ।

लगाट—(स्त्री० अ०) खट ।
मार । हाँट-खट ।

लापेणा—(क्रि० अ०) काँच
आदि में धरेणा । इराना ।
धरना । मझा-सुता बहना ।

लदना—(क्रि० हि०) बोझ उतर
लेना । गूण होना । बोझ भरा
जाना । खदावा = खाने का
काम दूसरं से कराना । खदा

कँदा = बोझ से भरा या लदा
हुआ । लदाव = बोझ । खदा
= बोझ होनेवाला ।

लपक—(स्त्री० अ०) उजाला ।
चमक । योग । पुरतो ।
—ना = तुरत दौड़ पड़ना ।
रूपना ।

लपट—(स्त्री० हि०) उजाला ।
धाम की लौ । धाँध । —ना
= चिमटना । मटना । धिर
जाना । लगा रहना ।

लपनपाना—(क्रि० अ०) झर
कना । पङ्कारना । धम
धमाना । लपलपाइट = धनक ।
लापही—(स्त्री० हि०) थोड़े धी
का हलुपा । गीली गाड़ी
पस्तु । लपना ।

लपेट—(स्त्री० हि०) फेरा । उड़
की भाव । घेरा । उखलन ।
धपन । —ना = धाँधना ।
पकड़ में कर लेना । खँसट में
धँसाना । खेपन धरना ।

लपंगा—(वि० अ०) लपट ।
धापारा । बुझागा ।

लपुत्र—(पु० अ०) शब्द । धाड़ ।

घात । सत्रजो = शास्त्रिक ।
सत्रराज = वादूनी । सत्रराजो
= डोंग मारना ।

लव—(पु० ऋ०) झोट । झोट ।
लवडघोंधों—(स्त्री० हि०) मूट
मूट का इत्हा । बद्दइतजाना ।
अपाय । बेईमाना की धाल ।

लवादा—(पु० ऋ०) रूइदार
चोता । अया । चोता ।

लवाताय—(वि० पा०) छलकता
हुआ ।

लवध—(वि० स०) पाया हुआ ।
प्राप्त । कमाया हुआ । भाग
करने से आया हुआ फल ।
—प्रतिष्ठ = सम्मानित । निसने
प्रतिष्ठा पाइ हो । लधि
= प्राप्ति । लाभ । हिसाब का
जवाब ।

लमह—(अ०) अण ।

लय—(पु० स०) प्रवेश । विलीन
होना । ध्यान में हूयना ।
लगन । प्रेम । प्रलय । मिल
जाना । नाच, गाने और
बाजे का मेल । विधाम ।
मूर्च्छा । गाने का स्वर । गीत

गाने का ढग या तर्ज ।

लग्जा—(पु० ऋ०) कँपपों ।
भूकष । जूही ।

ललकार—(स्त्री० हि०) हाँक ।
छड़ने का बदावा । —ना
= हाँक लगाना । छड़ने के
लिये बदावा देना । चँलँज ।

ललाचाग—(क्रि० हि०)
गुमाना ।

ललना—(स्त्री० म०) स्त्री ।

ललाय—(पु० म०) मस्तक ।
माया । भाग्य का लख ।
—पल्ल = मस्तक का तल ।

ललाम—(पु० स०) सुन्दर । काल
रग वा

ललित—(वि० स०) सुदर ।
प्यारा । —कला = वे कलायें
या विद्यायें जिाके व्यक्त
करने में किसी प्रकार के
सौन्दर्य की अपेक्षा हो ।

लललो चप्पो—(स्त्री० हि०)
चिकनी चुपड़ी बात ।

लव—(पु० स०) बहुत थोड़ी
मात्रा । लगन । प्रेम ।

लघण

—बीन = तमय । मग्न ।

—लेग = ज़रा सा ।

लघण—(पु० स०) नमक ।

लजाजमा—(पु० थ०) साथ में

रहनेवाली भीड़ या असबाब ।

लवाज़मत = सामग्री । उप

करण ।

लशकर—(पु० फा०) सेना ।

फौज । दल । धावनी ।

लशकरी = सेना सम्बन्धी ।

सिपाही ।

लस—(पु० स०) चिपचिपाहट ।

लासा । आरूपण । —दार =

जिसमें लस है । —ना =

चिपकाना । —लसा = लस

दार । चिपचिपा । लमी =

लस । आरूपण । पायदे का

ढील । दूध और पानी मिला

शरबत ।

लसोडा—(पु० हि०) एक प्रकार

का छोटा पेड़ ।

लस्टम पस्टम—(पु० देश०)

किमी न किसी तरह से ।

लहंगा—(पु० हि०) छियों का

एक घेरदार पहनावा ।

लहकना—(क्रि० हि०) झोंक

गाना । लहराना । हवा का

बहना । दहकना । लपकना ।

उत्कण्ठित होना ।

लहजा—(पु० थ०) स्वर । लय ।

लहजा—(ध०) पल । घण ।

लहना वही—(पु० हि०) बट

वही ज़िममें ऋण खेने वालों

के नाम और रकमें बिधा

जाती हैं ।

लहमा—(पु० थ०) पल । घण ।

लहर—(स्त्री० हि०) बड़ा हिलोरा ।

मौज । लोश । झोंका ।

आनद का उमग । आवाज़

की गूँज । वक्रगति । हवा का

झोंका । —दार = जो बल

खाता गया हो ।

लहरा = लहर । तरंग ।

बाजे की एक गति । लह

राना = लहरें खाना । हिलारें

मारना । झोंका खाते हुये

चलना । लपकना । दहकना ।

शोभित होना । लहरिया =

जहरदार । एक प्रकार का

कपड़ा । —दार = जिसमें

लहरिया बना हो । लहरी =
 लहर । दिखोर । मौज ।
 आनन्द । लहर पहर = मौज ।
 लहलहा—(वि० हि०) लह
 लहाना हुआ । दरा भरा ।
 प्रफुल्लित । हृष्ट पृष्ट । —ग =
 दरा भरा होना । सुशी मे
 भरना ।
 लहसुन—(पु० हि०) एक पीधा
 और उमकी गाँठ । लह
 मुनियाँ = एक बहुमूल्य रत्न
 या पत्थर ।
 लहालोट—(वि० हि०) हँसा से
 जोड़ता हुआ । उल्लाम-मम ।
 लह—(पु० हि०) गूना । लोह ।
 लाँग—(स्त्री० हि०) काष्ठ ।
 लाँगप्राइमर—(पु० अ०) एक
 प्रकार का टाइप ।
 लाँगना—(क्रि० हि०) लाँगना ।
 बाँकना । किसी वस्तु को
 उल्लंघन पर करना ।
 लॉच—(स्त्री० देश०) शिशवत ।
 घूस ।
 लाद्यन—(पु० सं०) दाग ।
 कलक ।

लॉ—(पु० अ०) रागनियम या
 कानून । व्यवहारशास्त्र ।
 लाइट—(अ०) प्रकाश । इजफा ।
 —डावस = प्रकारस्तम्भ ।
 लाइट—(स्त्री० अ०) इतार ।
 पेशा । लकीर । लैन । रेल
 की सड़क ।
 लाक्षणिक—(वि० सं०) जिससे
 लक्षण प्रकट हो ।
 लाइट क्लियर—(पु० अ०) रेखवे
 में सकेत ।
 लाइफ़—(स्त्री० अ०) जीवा ।
 जीवन चरित्र ।
 लाइफ़ वॉय—(पु० अ०) एक
 प्रकार का यंत्र ।
 लाइफ़ बोट—(स्त्री० अ०) एक
 प्रकार की नाव ।
 लाइब्रेरी—(स्त्री० अ०) पुस्तकालय ।
 लाक्षा—(स्त्री सं०) लाख ।
 लाह । —गृह = खास का
 घर ।
 लाइसेन्स—(पु० अ०) आदेश-
 पत्र । अधिकारपत्र ।
 लॉकअप—(पु० अ०) हवालात ।

- लाङ्गिकाम—(अ०) गिम्बन्द ।
 लाङ्गिक—(पु० अ०) लुट्टन ।
 लाङ्गिक—(स्त्री० हि०) प्रति
 योगिता ।
 लागत—(स्त्री० हि०) वह स्वयं
 जो किसी चीज का गपारी
 या यना में लग ।
 लागू—(वि० हि०) गरिताप
 होनेवाला । (अ०) फिट ।
 लाचार—(वि० प्रा०) मापूर ।
 विरग होकर । काशारा =
 विषयता । मागूरी ।
 लाज—(स्त्री० हि०) छगा ।
 शम । स्वीकृत ।
 लाजवार—(अ०) बेजाइ । धनु
 पम । शुप । ग्यामोश ।
 लाजयद्—(पु० प्रा०) एक प्रकार
 का प्रसिद्ध श्रीमती पथर ।
 रावटी । विज्ञापता नील ।
 लाजिम—(वि० अ०) उचित ।
 मुनासिब । लाजिमां = जग्गरी ।
 लाट—(पु० अ० छाट) गवनर ।
 किसी प्रांत या देश का सबसे
 बड़ा शासक । (स्त्री०) मोटा
 धौर ऊँचा लभा ।
 लाठी—(स्त्री० हि०) डडा ।
 खरकी ।
 लाट—(पु० हि०) प्यार । दुबारा ।
 खाइला = प्यारा । दुबारा ।
 लाटरी—(स्त्री० अ०) धन पत्र
 करन का एक प्रकार का
 तुथा । पिट्टी ।
 लात—(स्त्री० हि०) पैर । पाँव ।
 पदागत । पाद प्रहार । लति
 याना = पैर से मारना ।
 लादना—(क्रि० हि०) एक पर
 एक थानें रखना । होने या छे
 जाने के लिये वस्तुओं का
 भरना ।
 लादाया—(वि० अ०) बिनका
 कोई दाया न रह गया हा ।
 लादी—(स्त्री० हि०) कपड़ों की
 वह गठरी जिसे घोषा गदर
 पर छादता है ।
 लान—(पु० अ० लॉन) हरी घास
 का बड़ा मैदान । —टनिस =
 गेंद का एक खेल ।
 लानत—(स्त्री० प्रा०) धिक्कार ।
 फटकार ।

लाना—(क्रि० हि०) सामने रखना । ले घाना ।

लापता—(वि० अ०) ग़ोया हुआ गुप्त ।

लापरवा—(वि० अ०) बेफ़िक्र ।
—ही = बेफ़िक्री ।

लाभ—(पु० स०) प्राप्ति ।
फ़ायदा । भलाइ । —फारक = फ़ायदेमद । —कारी = फ़ायदाफ़रनेवाला । —दायक = फ़ायदेमद । गुणकारी ।

लामा—(पु० हि०) तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य ।

लायक—(वि० अ०) उचित ।
मुनासिब । सुयोग्य । समथ ।

लॉयल—(वि० अ०) राजभक्त ।
—दी = राजभक्ति ।

लार—(स्त्री० हि०) लसदार वृक्ष ।

लारी—(स्त्री० अ०) सवारी होने की बड़ी मोटरगाड़ी ।

लार्ड—(पु० अ०) ईश्वर ।
स्वामी । ज़मोदार । इंगलैंड के बड़े-बड़े ज़मोदारों और ईरानों की उपाधि । —सभा

= ब्रिटिश पार्लामेंट की वह सभा जिसमें बड़े-बड़े ताल्लु-द्वेदारों और थमीरों के प्रतिनिधि होते हैं ।

लाल—(पु० हि०) प्यारा बच्चा ।
बेटा । लाला = एक प्रकार का संबोधन । महाराज ।

लालच—(स्त्री० फ़ा०) लोभ ।
लोतुपता । लालची = लोभी ।
लालटेन—(स्त्री० अ० लेन्टर्न)
कडील ।

लालवेग—(पु० हि०) एक प्रकार का परदार कीड़ा । लालवेगी = भगी ।

लालसा—(स्त्री० स०) बहुत अधिक चाह या इच्छा ।

लालायित—(वि० स०) ललचाया हुआ ।

लालित्य—(पु० स०) सौंदर्य ।
मनोहरता ।

लालिमा—(स्त्री० स०) लाली ।
सुखी ।

लाली—(स्त्री० हि०) सुखी ।

लाले—(पु० हि०) मुसीबत ।

लाघत्य (पु० स०) ध्वनित
मुद्रता ।

लाघती—(स्त्री० देश०) गाने का
एक छंद ।

लायल्द—(वि० फा०) नि सता ।
लायल्दी = नि सतान हाने की
अवस्था ।

लावा—(पु० हि०) मूना हुआ
घान । खील । नाई । राप,
पथर और धातु आदि मिला
हुआ वह द्रव पदार्थ जो
ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से
विस्फोट होने पर निकलता
है ।

लाश—(स्त्री० फा०) मुरदा । शव ।
लाशा = मुर्दा । कमजोर ।

लासा—(पु० हि०) चेष ।
लुभाव ।

लामानी—(फा०) अनुपम ।
बेजोड़ ।

लाहोल—(पु० अ०) एक धरती
वाक्य का पहला शब्द ।

लिंग—(पु० स०) चिह्न । निशान ।
पुरुष की गुण इन्द्रिय । व्याक-

रण में वह भद जिससे पुरुष
और स्त्री का पता लगता है ।

लिफ—(पु० अ०) शीतला का
चेप जो टीका लगाने के काम
में आता है ।

लिफ—(हि०) वास्ते ।

लिम्साड—(पु० हि०) भारी
लेखक ।

लिकिडेंटर—(पु० अ०) वह
अक्षर जो किसी कपनी
आदि की ओर से मुद्रणा
लाने या और कोई आवश्यक
कार्य के लिये नियुक्त किया
जाता है ।

लिकिडेशन—(पु० अ०)
सम्मिलित पूंजी से चलनेवाली
कपनी आदि को बद कर
उसकी बची हुई रकम को
हिस्सेदारों में बाँट देना ।

लिखना—(क्रि० हि०) अक्षित
करना । अक्षर अक्षित करना ।
चित्र बनाना ।

लिखाई—(स्त्री० हि०) लेख ।
लिपि । लिखने का कार्य ।

लिग्यावट । लिखने की मजदूरी ।

लिग्याना—(क्रि० हि०) अकित कराना । लिखने का काम दूसरे से कराना ।

लिखापढी—(स्त्री० हि०) पत्र व्यवहार ।

लिग्यावट—(स्त्री० हि०) लेख । लिपि । लिखने का काम । लेख प्रणाली ।

लिखित—(वि० म०) लिखा हुआ । लेख । प्रमाण पत्र ।

लिखरेवर—(पु० अ०) साहित्य । लिखेरा = साहित्यिक ।

लिखाना—(क्रि० हि०) लेखने की क्रिया कराना ।

लिपटना—(क्रि० हि०) चिमटना । चिपकना । आलिगन करना । किसी काम में जा जान से लग जाना । लिपटना = चिमटना । आलिगन करना ।

लिपाइ—(स्त्री० हि०) लेपना । पोताई । सापने की मजदूरी ।

लिपाना—(क्रि० हि०) पुताना ।

मिट्टी गोबर आदि का लेप कराना ।

लिपि—(स्त्री० म०) लिग्यावट । अक्षर लिखने की प्रणाली । लेख । —कार = लेखक ।

लिम—(वि० म०) लीन । अनुरक्त ।

लिफाफा—(पु० अ०) चिट्ठी आदि भेजने की कागज की थैली । सजावट का पोशाक ।

लिखरल—(पु० अ०) उदार । उदार नीतिगता । इंग्लैंड का एक राजनीतिक दल । भारत का एक राजनीतिक दल ।

लियाकत—(स्त्री० अ०) योग्यता ।

लियाना—(क्रि० हि०) लाने का काम दूसरे से कराना ।

लिसोडा—(पु० हि०) एक पेड़ ।

लिगट—(स्त्री० अ०) क्रिदरिस्त । तादिका ।

लिहाज—(पु० अ०) कृपा दृष्टि । मुजाहज़ा । पक्षपात । अदब का इयाज़ । लजा । शम ।

लिहाडा—(वि० देश०) नीच ।

गिरा हुआ । खराब । निफगमा ।
 लिहाफ—(पु० अ०) रजाई ।
 लीफ—(छा० द्वि०) लकीर ।
 रेखा । लोक-नियम । प्रथा ।
 लोग—(छा० अ०) मघ ।
 सभा । समाज । —रिमें
 अमर = वह अमर जो नर
 वार के कानूनी या ज-पत्र
 रचना है ।
 लीगल—(अ०) कानूनी ।
 लीचड—(वि० देश०) मुस्त ।
 जिनका लेन देन ठाक न हो ।
 लीडर—(पु० अ०) नेता ।
 मुखिया । —आरू दी
 हाउस = पार्लामेंट या धन
 स्थापिका सभा का मुखिया ।
 लीडिंग आर्टिस्ट—(पु० अ०)
 मग्नादकाय अभिलेख ।
 लीयो—(पु० अ०) पथर का
 छाप । —ग्राफ = पथर का
 छाप जिस पर हाथ मल्लिखकर
 या चित्र खींचकर छपा जाता
 है । —ग्राफर = लीयो का
 काम करने वाला । —ग्राफी

= लीयो की छपाई में पथर
 पर हाथ से अक्षर लिखन
 और खींचने की कला ।
 लीट—(छा० दश०) घोंटे यादि
 का मज ।
 लीन—(वि० सं०) तन्मय ।
 तपस । अनुरक्त ।
 लीनो टायप मशीन—(छा० अ०)
 एक प्रकार की कल जिस में
 टाइप या अक्षर कमोच होने
 के समय टलता जाता है ।
 लीपना—(क्रि० द्वि०) पोतना ।
 गोली मिट्टी या गोबर दीवार
 या ज़मोन पर पेरना ।
 लीफ्लेट—(पु० अ०) पुस्तिका ।
 पर्चा ।
 लीला—(छा० सं०) क्रीड़ा ।
 प्रेम विनोद । विचित्र काम ।
 चरित्र । —मय = क्राडा के
 भाव से भरा हुआ ।
 लीच—(छा० अ०) छुटी । अत्र
 कार ।
 लीजर—(पु० अ०) यकृत ।
 जिगर ।
 लीज—(पु० अ०) पटा ।

लुगाडा—(पु० देश०) शोहदा ।

लफगा ।

लुगी—(स्त्री० हि०) तहमत ।

लुडमुड—(वि० हि०) जिसके
सिर, हाथ, पैर आदि कटे
हों । लँगड़ा लूजा ।

लुआव—(पु० अ०) लमदार
गूदा । —दार = लमदार ।

लुवना—(क्रि० हि०) छिपना ।

लुकमा—(पु० अ०) कीर ।
ग्रास ।

लुकाट—(पु० हि०) एक फल ।

लुकाना—(क्रि० हि०) छिपाना ।
छिपना ।

लुगाइ—(स्त्री० हि०) स्त्री ।
औरत ।

लुखुइ—(स्त्री० हि०) मैदे की
पतली और मुलायम पूरी ।

लुआ—(वि० फ्रा०) दुराचारी ।
बदमाश । लुच्ची = खोटी या
बदमाश औरत ।

लुटना—(क्रि० हि०) लूटा
जाना । बरसाद होना ।
लुटाना = दूसरे को लूटने

देना । बरसाद करना । बहु
तायत में घाँटना ।

लुटिया—(स्त्री० हि०) छोटा
लोट ।

लुटेरा—(पु० हि०) लूटनेवाला ।
डाकू ।

लुडकना—(क्रि० हि०) डुलकना ।
डुडकाना = डुलकाना ।

लुत्फ—(पु० अ०) कृपा । दया ।
भलाई । उत्तमता । आनंद ।
स्वाद । रोचकता ।

लुनना—(क्रि० हि०) खेत
काटना ।

लुनाई—(स्त्री० हि०) सुदरता ।

लुप्त—(वि० स०) गुप्त । गायब ।
अदृश्य ।

लुब्ध—(वि० स०) ललचाया
हुआ । मोहित ।

लुब्धलुबाव—(पु० अ०) गूदा ।
सारास ।

लुभाना—(क्रि० हि०) मोहित
होना । जालच में पड़ना ।
मोह में पड़ना । मोहित
करना । जलचाना । मोह में
। झालना ।

लुरकी—(स्त्री० हि०) फान में पहनने की बाली । मुरकी ।
 लुहार—(पु० हि०) लोहे का काम करनेवाला ।
 लू—(स्त्री० हि०) गरमी के तिनो की तपी टुड वायु ।
 लूस—(स्त्री० हि०) आग की लपट । जलती हुई लकड़ी ।
 लू । टूटा हुआ तारा ।
 लुकी—(स्त्री० हि०) आग की चिनगारी । लूका ।
 लूट—(स्त्री० हि०) डकैती । लूटने से मिला हुआ माल ।
 —ना = जबरदस्ती छीनना । धरबाद करना । उगना ।
 लूला—(वि० हि०) बिना हाथ का । बेकाम ।
 लूँड—(पु० हि०) बँधा मल । लड़ी = बँधा मल । मँगनी ।
 लूस—(पु० अ०) शीशे का ताल जो प्रकाश की किरनों को एकत्र या फैलीभूत करे ।
 लेइ—(स्त्री० हि०) चवबेह । लपसी । घुला हुआ धाटा ।
 लेफचर—(पु० अ०) व्याख्यान ।

यकृतता । —बाज़ी = खूब लेफचर देने की क्रिया । —
 = व्याख्यान देनेवाला ।
 लेख—(पु० स०) लिपि । लिखी हुई बात । लिखावट । लेखा । लेख = लिखने योग्य ।
 हिसाब के सायक । —क = लिखनेवाला । लेखन = लिखने का कार्य । लिखने की फजा या विद्या । चित्र बनाना । लेखनी = कलम ।
 लेखप्रणाली = लिखने का ढंग । लेखरोली = लेखप्रणाली । लेखा = गणना । गिनती । हिसाब किताब । ठीक-ठीक थदाजा । लेखाबदा = यह वही जिसमें राकद के लेन देन का व्योरा रहता है ।
 लेखिका = लिखनेवाली । प्रथ या पुस्तक बनानेवाली ।
 लेजम—(स्त्री० प्रा०) एक प्रकार की धमान ।
 लेजिस्लेटिव—(वि० अ०) व्यवस्था सम्बन्धी । कानून सम्बन्धी ।
 —एसेम्बली = व्यवस्थापिका

परिपद् । —बौसिद्ध =
व्यवस्थापिका सभा ।

लेट—(स्त्री० देश०) गघ ।
(ध०) जिसे देर हुई हो ।
—पी = यह फीस जो
निश्चित समय के बाद
दाखलाने में कोई चोड़ दाखिल
करने पर देनी पड़ती हो ।

लेटना—(क्रि० हि०) पीड़ना ।

लेटरवान्म—(पु० ध०) चिट्ठी
हालने की सवूक ।

लेटर्स पेटेंट—(पु० ध०)
राजकीय आज्ञापत्र ।

लेनदार—(पु० हि०) जिसका
कुछ माफी हो । महाजन ।

लेनदेन—(पु० हि०) लेने और
देने का व्यवहार । महाननी ।

लन—(स्त्री० ध०) गली । कूचा ।

लेना—(क्रि० हि०) प्राप्त करना ।
पकड़ना । खरीदना । जीतना ।
कर्म लेना । काम पूरा
करना ।

लेप—(पु० स०) पोतने या
चुपड़ने की चीज । लेह ।

उबटा । —न = गाड़ी गाड़ी
वस्तु की तरह चढ़ाना ।

लेफ्टिनेंट—(पु० ध०) एक सहा-
यक कर्मचारी । सेना का एक
अध्यक्ष । —जेमरल =
सहायक मै-याप्यस । —बनल
= सेना का एक अफसर ।

लेतुल—(पु० ध०) नाम । पत्रक ।

लेवरर—(पु० ध०) धमजीवी ।
मजूर ।

लेवोरेटरी—(स्त्री० ध०) प्रयोग
शाला ।

लेमनेड—(पु० ध०) नीबू का
शरबत ।

लेश—(वि० स०) चिन्ह । थोड़ा
अल्प ।

लेवी—(स्त्री० ध०) एक प्रकार
का दरवार ।

लेस—(पु० हि०) गोटा । थैल ।

लेसना—(क्रि० हि०) जलाना ।
सुगलीखाना ।

लेडो—(स्त्री० ध०) एक प्रकार
की थोड़ा गाड़ी ।

लेप—(पु० ध०) दीपक । चिराग ।

लेसर—(पु० ध०) रिसाले के

मवारों के तीन भेदों में स एक ।

लैन—(स्त्री० अ० लाइन) साथी लकीर । सामा की लकीर । कतार । पक्ति । पैदल सिपाहियों की सेना । धारक ।

लैवेंडर—(पु० अ०) एक सुगन्धित तरल पदार्थ ।

लैसस—(पु० अ० लाइसेंस) मनद । अधिकार पत्र ।

लेस—(वि० अ० लेस) बर्दाश्त हथियारों से सजा हुआ । तैयार ।

लोदा—(पु० हि०) किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो ढले की तरह बँधा हो ।

लोअर—(अ०) नीचे का ।
—फोर्ट = नीचेकी अदालत ।

लोइ—(स्त्री० हि०) गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिससे एक रोटि बन सके । एक प्रकार का कम्बल ।

लोक—(पु० स०) समार । स्थान । लोग । जन । समाज । यश । —समूह = ससार के

लोगों को प्रसन्न करना । सभ की भलाई चाहने वाला । लोकांतरित = जा इस लोक से दूसरे लोक में चला गया हो । मरा हुआ स्वर्गीय । लोकाचार = लोक व्यवहार । लोकोक्ति = कहावत । मसल । लोकात्तर = अलौकिक । लौकिक = सांसारिक । लोक-सम्बन्धी ।

लोकना—(कि० हि०) ऊपर गिरी हुई चीज को गिरने से पहले हाथों से पकड़ लेना । रास्ते में से ही ले लेना ।

लोकल—(वि० अ०) प्रांतिक प्रादेशिक । स्थानीय । —बात = एक प्रकार की समिति ।

लोग—(पु० हि०) मनुष्य जन ।

लोच—(पु० हि०) लचक कोमलता ।

लोचन—(पु० स०) आँख

लोट—(स्त्री० हि०) खोदने की क्रिया या भाव । खुदकना । —ना = सीधे और उर्क

- लेटते हुए किमी और को
जाना । लेटना । —पोट =
चकिन हाना ।
- लोटा—(पु० हि०) धातु का
एक घरतन । लाटिया =
छोटा लोटा ।
- लोटा—(पु० हि०) घटा । लोदिया
= छोटा लोटा ।
- लोथडा—(पु० हि०) मांस पिंड ।
- लोन—(पु० अ०) फल ।
- लोना—(पु० हि०) नमकीन
मिट्टी । लोनिया = एक जाति ।
लोनी = एक साग जो नम
कीन होता है ।
- लोप—(पु० म०) नाश । क्षय ।
विच्छेद । अभाव । छिपना ।
- लोयान—(पु० अ०) एक वृक्ष का
सुगन्धित गोद ।
- लोविया—(फा०) शाक की एक
फली ।
- लोभ—(पु० स०) लालच ।
लोभाना = मोहित करना ।
सुगंध होना । लोभित =
सुभाया हुआ । सुगंध । लोभी
= लालची ।
- लोम—(पु० स०) रोम । रोवाँ ।
बाज । —हर्षण = रोमाच ।
ऐसा भीषण प्रयोग जिससे
रोष खदे हो जायँ ।
- लोमडी—(स्त्री० हि०) कुत्ते या
गीदड़ की जाति का एक जंतु ।
- लोरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार
का गीत ।
- लोलक—(पु० स०) लटकन ।
- लोहा—(पु० हि०) एक धातु ।
हथियार । —र = एक जाति
जो लोहा का काम करती है ।
लोहिया = लोहे की चीजों
का व्यापार करनेवाला ।
- लोह—(पु० हि०) रक्त । रक्त ।
- लोम—(पु० हि०) एक फल की
फली ।
- लोटा—(पु०) छोकरा । बालक ।
खूबसूरत लड़का । —पन =
लड़कपन । छिछोरापन ।
लौंडी = दासी । मजदूरनी ।
- लौडेवाज—(वि० हि०) बालकों
के साथ प्रकृति विरुद्ध आचरण
करनेवाला ।

लौ—(स्त्री० हि०) उगाना ।
दीपशिखा ।

लौकी—(स्त्री० हि०) लहू ।
घीघ्रा ।

लौटना—(क्रि० हि०) पापस
धाना । उलटाना ।

लौट पाट—(स्त्री० हि०) दोरुखी

छपाई । उलटने पुलटने की
क्रिया ।

लौट-फेर—(पु० हि०) हेर-भर ।
भारी परिवर्तन ।

लौटाना—(क्रि० हि०) घेरना ।
घापस करना । घापस

खाना ।

व

व

वफालत

व—हिन्दी वर्णमाला का उन्तामवाँ
व्यंजन वण ।

वग—(पु० म०) वगाल ।

वचक—(वि० स०) ठग । धूत ।
गल ।

वचना—(स्त्री० स०) धोखा ।
ठगना ।

वाचित—(क्रि० स०) जो ठगा
गया हो । अलग किया हुआ ।
निमुप । अलग । रहित ।

वदना—(स्त्री० स०) स्तुति ।
प्रणाम । वदनीय = वदना

करने योग्य । —वदित =
पूज्य । आदरणीय ।

वदीगृह—(पु० स०) कैदखाना ।

वश—(पु० स०) कुल । घाना ।
—धर = सतान । वशावली
= किसी वश में उत्पन्न पुरुषों
की सूची ।

वशी—(स्त्री० स०) बाँसुरा ।
मुरली ।

वफालत—(स्त्री० भ०) दूसरे के
पक्ष का मददा । मुकद्दमे में
किसी प्ररीक की तरफ से
सहाय करने का पेशा । —नामा

वजारत—(स्त्री० फ्रा०) मंत्री का
काय ।

वजीफा—(पु० अ०) वृत्ति ।
—दार = वजीफा पानेवाला ।

वजीर—(पु० अ०) मंत्री ।
दीवान । शतरज की एक
गोटी । वजीरी = वजीर का
काम या पद ।

वजू—(पु० अ०) नमाज़ पढ़ने
के लिये हाथ, पाँव आदि
धोना ।

वज्र—(पु० स०) एक शस्त्र ।
विजली । —लेप = एक
मसाजा जो कभी नहीं
छूटता ।

वट—(पु० स०) शरगद का पेड़ ।

वणिक—(पु० स०) रोज़गार
करनेवाला । बनिया ।
—वृत्ति = व्यापार ।

वता—(पु० अ०) वासस्थान ।
जमभूमि ।

वत्स—(पु० स०) गाय का बच्चा ।
बालक । —ल = बच्चे के प्रेम
से भरा हुआ । अत्यंत स्नेहवान्

या कृपालु । वात्सल्य = बच्चों
के प्रति स्नेह ।

वत्सर—(स०) वर्ष । साल ।

वदन—(पु० स०) मुँह ।

वदान्य—(वि० स०) उदार ।

वध—(पु० स०) हत्या ।

वधू—(स्त्री० स०) नव विवा
हिता स्त्री । दुलहिन । पत्नी ।
पुत्र की बहू । पतोहू ।

वन—(पु० स०) जंगल । वाटिका ।
—घर = वन में रहनेवाला ।

जगली, मनुष्य । —माजी =
वनमाला धारण करनेवाला ।

श्रीकृष्ण । —वास = जगल
में रहना । —वासी = वन

में रहनेवाला । वनस्पति =
वृक्षमात्र । पेड़ । पौधा ।

—शास्त्र = वनस्पति विज्ञान ।
वनौषध = जगली लकी वृषी ।

वन्य = जगली ।

वफा—(स्त्री० अ०) वादा पूरा
करना । सुशीलता । —दार

= अपने काम के ईमान
दारी से करनेवाला । सच्चा ।

वफात—(स्त्री० अ०) मृत्यु ।

ववा—(स्त्री० अ०) महामारी ।
मरी ।

ववाल—(स्त्री०) बौद्ध । आफत ।
ईश्वरीय कोप । पाप का फल ।

वय—(स्त्री० स०) अवस्था ।
—स्क = उमर का । अवस्था
वाला । सयाना ।

वरन्—(अप्य० स०) धरिक् ।
परतु । लेकिन ।

वर—(पु० स०) किसी देवता
या बड़े से प्राप्त किया हुआ
फल या सिद्धि । पति । श्रेष्ठ ।
उत्तम । किसी देवता या बड़े
का प्रसन्न होकर कोई अभि-
लपित वस्तु या सिद्धि देना ।
—यात्रा = दूल्हे का बाजे गाजे
के साथ दुलहिन के घर विवाह
के लिये जाना । बरात ।

वरक—(अ०) पत्र । पुस्तकों का
पत्ता । पत्रा । सोने, चाँदी
आदि के पतले पत्तर जो
मिठाह्यों पर लगाने और
औषध के काम में आते हैं ।

वरदी—(स्त्री० फा०) वह पोशाक,
जो किसी विशेष विभाग के

कर्मचारियों के लिये नियत
हो ।

वरन्—(क्रा) ऐसा नहीं । धरिक् ।

वरजिश—(स्त्री० फा०) कम
रत । यायाम ।

वरिष्ठ—(वि० स०) श्रेष्ठ । पूज
नीय ।

वर्क—(पु० अ०) काम । बकर
= काम करनेवाला ।

वर्किंग कमिटी—(स्त्री० अ०)
कार्यकारिणी समिति ।

वर्ग—(पु० स०) जाति । श्रेणी ।
परिच्छेद । विभाग । —फल
= वह गुणाफल जो दो
समान राशियों के घात से
प्राप्त हो । —मूल = किसी
वर्गोंक का वह अंक जिसे
यदि उसीसे गुणन करें, तो
गुणन वही वर्गांक हो ।

वर्गलाना—(क्रा) उकसाना ।
बहकाना ।

वर्जना—(स०) मना करना ।
वर्जनीय = निषेध के योग्य ।
मना । वर्जित = छोड़ा हुआ ।
निषिद्ध ।

वर्ण—(पु० म०) रंग । जन
समुदाय के चार विभाग ।
—सकर = ग्यभिचारमे ठरपत्र
मनुष्य ।
वर्णन—(पु० म०) चित्रण ।
बयान । —श्लो = कहने का
ढग । वर्णनीय = बयान करन
योग्य । वर्णित = कहा हुआ ।
बयान किया हुआ ।
वर्त्तमान—(वि० स०) मौजूद ।
प्रिद्यमान । साक्षात् । आधु
निक । हाल का । व्याकरण
में क्रिया के तीन फालों में स
एक ।
वर्द्धक—(वि० स०) बढ़ानेवाला ।
बढ़मान = बढ़ता हुआ ।
वर्द्धित = बढ़ा हुआ ।
वर्मा—(पु० हि०) षत्रियों आदि
की उपाधि ।
वर्ष—(पु० स०) साल । सवत्सर ।
—गाँठ = वह कृत्य जो किसी
पुरुष के जन्म दिन पर किया
जाना है । —फल = फलित
ज्योतिष में ज्ञातक क अनुसार
एक कुडली ।

वर्षा—(छो० म०) वृष्टि ।
बरसात ।
वलि—(पु० स०) किसी देवी या
देवता के पशु मारकर
घदाना । देना ।
वत्फल—(पु० स०) वृष का
छाल का बछ जिम मुनि और
तपस्वी पहना करते थे ।
वलद—(पु० अ०) औरस बटा ।
पुत्र । वरिदमत = पिता क
नाम का परिचय ।
वल्ली—(छो० म०) सता ।
वश—(पु० स०) काबू । अधिकार ।
कब्जा । —वर्ती = जो दूसरे
क वश में रहे । वशीकरण =
वश में लाने की क्रिया ।
अधीन करना । वशीभूत =
वश में आया हुआ । अधीन ।
वश्यता = अधीनता । ।
वसत—(पु० स०) बहार वा
मौसिम । वसतोत्सव जो
प्राचीन काल में वसत पञ्चमी
के दूसरे दिन होता था ।
वसीका—(पु० अ०) बकर का
हकरारनामा ।

वसोयत—(स्त्री० अ०) अपनी सपत्ति के सबध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य किये जाता है। (अ०) विध। —गमा = विध।

वसीला—(पु० अ०) मयध। आश्रय। धरिया।

वसूल—(वि० अ०) प्राप्त। वसूली प्राप्ति। —वासी = प्राप्ति।

वस्त्र—(प० म०) कपड़ा।

वम्फ—(पु० अ०) गुण। विशेषता।

वस्तु—(पु० अ०) मिला। मयोग। मिलाप।

वह—(सय० स०) यनृकारक। प्रथम पुरुष सर्वनाम।

वहम—(क्रा०) कृष्ण रथात्। भ्रम। व्यर्थ की शवा। वहमी = कृष्ण रथात् में पड़ा रहनेवाला। वहम करनेवाला।

वहशत—(स्त्री० अ०) असभ्यता। उजड़पन। पागलपन। अधी रता। विकलता। उदासी। दशवनापन। वहशो = जगली।

तो पाकतू १ हा। अमभ्य। भइयने वाजा।

वहाँ—(अभ्य० द्वि०) उस जगह।

वहिरग—(पु० स०) बाहरी भाग।

वहिष्कन—(वि० स०) निशाना हुआ। त्यागा हुआ।

वहीं—(अभ्य० द्वि०) उसी जगह।

वही—(मथ० द्वि०) पूर्वाक्त व्यक्ति।

वाङ्मनीय—(वि० स०) चाहने योग्य। जिमकी इच्छा हो। वाङ्मा = इच्छा। चाह। वाङ्मित = चाहा हुआ।

वा—(अभ्य० स०) या। अथवा।

वाइज—(क्रा०) उपदेशक।

वाइन—(अ०) शराब। मद्य।

वाइफांट—(पु० अ०) इगलैंड के सामतों को दी जानवाली एक उपाधि।

वाइस चान्सलर—(पु० अ०) विश्वविद्यालय वा वह ऊँचा अधिकारी जो चान्सलर के सहायताय हो।

वाइस चेयरमैन—(पु० अ०)
 उपाध्यक्ष । उपसभापति ।
 वाइस प्रेसीडेंट—(पु० अ०)
 उपसभापति ।
 वाइसराय—(पु० अ०) हिन्दु
 स्तान में सम्राट् का प्रतिनिधि ।
 बड़ा लाट ।
 वाक्त्र—(अ०) घटना ।
 वाउचर—(पु० अ०) हिसाब के
 ब्योरे का कागज़ ।
 वाक्इ—(वि० अ०) ठीक ।
 यथाथ । वास्तव में ।
 वाक्या—(पु० अ०) घटना ।
 समाचार ।
 वाक्ता—(पु० अ०) घटनेवाला ।
 म्थित ।
 वाक्त्रिय—(अ०) दुर्घटना ।
 समाचार ।
 वाक्त्रि—(वि० अ०) जानकार ।
 ज्ञाता । अनुभवी ।—कार =
 कायज्ञ । वाक्त्रियत =
 जानकारी ।
 वान्य—(पु० स०) जुमला ।
 (अ०) मॅटॅस ।

वाक्सिद्धि—(स्त्री० स०) वाक्की
 की सिद्धि ।
 वाग्जाल—(पु० स०) बातों का
 आढम्बर या भरमार ।
 वाक्—(स्त्री० अ०) जेब में रखने
 की या कलाई पर बाँधने की
 छोटी घड़ी । —मैन =
 चौकीदार ।
 वाक्क—(वि० स०) बतानेवाला ।
 नाम । सज्ञा ।
 वाक्कनालय—(पु० स०) बड़े
 कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें
 और समाचार-पत्र आदि
 पढ़ने को मिलते हैं । रीडिंग
 रूम ।
 वाक्काल—(वि० स०) बकवादी ।
 —ता = बहुत बोलना ।
 बातचीत में निपुणता ।
 वाज—(पु० अ०) उपदेश । शिक्षा
 धार्मिक व्याख्यान । कथा ।
 वाजहेह—(अ०) मालूम । विदित ।
 वाजिव—(वि० अ०) उचित ।
 ठीक । वाजिवी = उचित ।
 वाजिवुल अदा = वह धन
 जिसके देने का समय आगया

हो । देव । (द्यु० अ०) ।
 वाजिबुल अर्ज = वह शर्त जो
 कानूनी बन्दोबस्त के समय
 जमींदारों और किसानों के
 बीच गाँव के रिवाज आदि के
 संघर्ष में लिखी जाती है ।
 वाजिबुल वसूल = धन जिसके
 वसूल करने का वक्त आ
 गया हो ।

वाटर—(पु० अ०) पानी । —
 प्रकू = जिस पर पानी का
 प्रभाव न पड़े । —वस =
 नगर में पानी पहुँचाने का
 विभाग । पानी पहुँचाने की
 फल । —शूट = जल क्रीड़ा ।
 वाटरिंग = छिड़काव ।

वाटिका—(स्त्री० स०) बाग ।
 बगीचा ।

वाण—(पु० स०) तीर ।

वाणिज्यदूत—(पु० स०) वह
 मनुष्य जो किसी देश के प्रति
 निधि रूप से दूसरे देश में
 रहता और अपने देशके
 व्यापारिक स्वार्थों की रक्षा
 करता हो ।

वाणी—(स्त्री० स०) मरस्वती ।
 वचन । वाक्शक्ति ।

वात—(पु० स०) हवा । —व्याधि
 = गठिया । वातायन =
 झरोखा । पिड़की ।

वात्सल्य—(पु० स०) प्रेम ।
 स्नेह । माता पिता का प्रेम ।

वाद—(पु० स०) तक । शास्त्राय ।
 दलील । —विवाद = बहस
 मुवाहसा ।

वादा—(पु० अ०) इतरार ।
 प्रतिज्ञा ।

वादी—(पु० हि०) क्रियादी ।
 मुद्दह ।

घानप्रस्थ—(पु० स०) मनुष्य-
 जीवन के चार विभागों या
 आश्रमों में से तीसरा विभाग
 या आश्रम ।

वापस—(वि० फा०) लौटा
 हुआ । फिरा हुआ । शायरी
 = लौटा हुआ या फेरग हुआ ।

वामन—(वि० म०) शीला ।

वायु—(स्त्री० सं०) हवा । वायु

वारट—(पु० अ०) अद्वय-
 पत्र । —अद्वय = द्वि

विलाप—(पु० सं०) मन्दा ।
रुदन । राना ।

विलायत—(पु० घ०) पराया
देश । दूर का देश । विला
यती = विदशी । पादेही ।
विलायती बंगन = टोमटो ।

विलास—(पु० स०) सुख भोग ।
मनोरजन । आनन्द । हर्ष ।
हाव भाव । नाज़ नज़रा ।
अतिशय सुख भोग ।

विवरण—(पु० म०) व्यौरा ।
तर्कमील ।

विवाद—(पु० स०) वाक् युद्ध ।
झगडा । फलह । मतभेद ।
विगदास्पद = जिम पर विवाद
या झगडा हो । विवाद
योग्य ।

विवाह—(पु० स०) शादी ।
व्याह । विवाहिता = जिस
फन्वा का पाणिग्रहण हो
गया हो । ब्याही हुई ।

विविध—(वि० स०) बहुत प्रकार
का । अनेक तरह का ।

विवेक—(पु० स०) भली-बुरी

बस्तु का ज्ञान । समझ ।
विचार । बुद्धि । सत्य ज्ञान ।

विचित्र—(स०) झाँचना ।
निर्णय । व्याख्या । तर्क-
वितर्क । अनुसंधान । विवेचना
= व्याख्या ।

विशद—(वि० स०) स्वच्छ ।
स्पष्ट ।

विशारद—(पु० स०) यह जो
किमी विषय का अच्छा पंडित
हो । दक्ष ।

विशेष—(पु० स०) भेद । अधिक ।
ज्वादा । —ज्ञ = किसी विषय
का पारदर्शी । विशेषण =
यह जो किमी प्रकार की
विशेषता उत्पन्न करता या
घतजाता हो । विशेषता =
प्रासपन ।

विधाम—(पु० स०) आराम ।
ठहरने का स्थान ।

विश्रुत—(वि० स०) विख्यात ।
मशहूर ।

विश्व—(पु० स०) समस्त ब्रह्माण्ड ।
ससार । दुनिया ।

विश्वास—(पु० स०) पतवार ।

यश्रीन । —घात = छल ।
धोखेबाजी । —पात्र = विश्वम
नीय । काबिल पतवार ।
विश्वासी = पतवारी ।

विप—(पु० स०) नहर ।
विपम—(वि० स०) जो बराबर
न हो । असमान । बहुत तेज ।
भोषण । सफ़्ट ।

विषय—(स०) सबध । विकार ।
फाम । (अ०) सञ्ज्ञेष्ट ।
विषयक = विषय का । सबधी ।
विषयी = विनासी । कामी ।

विषाद—(पु० स०) खेद ।
दुःख ।

विसर्जन—(पु० स०) परित्याग ।
छोड़ना । मिटा होना । चला
जाना । समाप्ति । अत ।
दान ।

विस्माल—(पु० अ०) संयोग ।
प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप ।

विसूचिका—(स्त्री० स०) हैजा ।

विस्तार—(पु० स०) फैलाव ।
पेड़ की शाखा ।

विस्तृत—(वि० स०) जो अधिक
दूर तक फैला हुआ हो ।

विस्मय—(पु० स०) आश्चर्य ।
साज्जुब ।

विस्मरण—(पु० स०) मूल
जाना ।

विस्मित—(वि० स०) चकित ।

विस्मृत—(स्त्री० स०) मूढ़
जाना । विस्मरण ।

विहार—(पु० स०) टाहना ।
घूमना । मभोग । रतिर्ज्ञान
करने का स्थान । शौच स्थानों
के रहने का मठ ।

विह्वल—(वि० स०) उल्टा
हुआ । व्याकुल ।

वीटो—(पु० अ०) उल्टा
नामङ्गरी । गंद ।

वीज—(पु० स०) बीज ।

वीर्य—(पु० स०) शक्ति ।

अष्ट । अष्ट । अष्ट । —
गणित = अष्ट अष्ट का

गणित = अष्ट अष्ट का
गणित = अष्ट अष्ट का

नीडा—(पु० स०) पृष्ठ का
अंश ।

वीर्य—(पु० स०) शक्ति के

धातुओं में से एक धातु ।

शुक्र । योज ।

वृत्त—(पु० स०) पेड़ । दरहत ।

वृत्त—(पु० स०) चरित्र । चाल
चलन । आचार । समाचार ।

हाल । मडल । वह क्षेत्र
जिसका घेरा या परिधि गोल
हो ।

वृत्तांत—(पु० स०) समाचार ।
हाल ।

वृत्ति—(स्त्री० स०) जाविका ।
राजी । वह धन जो किसी
पत्नी, विधवा या द्यात्र आदि
को बराबर, कुछ निश्चित
समय पर, उसके सहायताथ
निया जाय । व्यवहार । योग
के अनुसार वित्त की अवस्था ।
व्यापार । स्वभाव ।

वृद्ध—पु० स०) बुढ़ापा । उड़्डा ।
—ता = वृद्धावस्था ।

वृद्धि—(स्त्री० स०) बढ़ता ।
झ्यादती । अधिकता । व्याज ।

घेंटेरिनगी—(वि० अ०) वैल,
घोडे आदि पातल पशुओं की

चिकित्सा सबधी।—अस्पताल
= पशु चिकित्सालय ।

वेतन—(पु० सं०) तनझाह ।
दर माहा ।

वेत्ता—(वि० स०) जाननेवाला ।
जाता ।

वेद—(पु० म०) भारतीय शायी
के सबप्रधान और सबमान्य
धार्मिक ग्रन्थ, गिनती मख्या
चार है । वेदांग = वेदों के
अंग या शाख जा छ हैं ।
वेदांत = उपनिषद् और
आरण्यक आदि वेद के अंतिम
भाग । ब्रह्म विद्या । अर्ष्यात्म ।
छ दर्शनों में से प्रधान
दर्शन । उत्तर मामांसा ।
अद्वैतवाद ।

वेदी—(स्त्री० स०) यज्ञ काय्य
के लिये साफ करके तैयार की
हुई भूमि । वेदिका = वेदी ।

वेध—(पु० स०) वेधना । किसी
नोकिली चीज़ से छेदने की
क्रिया । यंत्रों आदि को सदा
यता से ग्रहों नक्षत्रों और
तारों आदि को देखना ।

उपोतिथ के ग्रहों का किमी
 एम म्यान में पहुँचना जहाँ से
 उनका किमा दूरमें ग्रह में
 सामना होता है। —**व** =
 वेध करनेवाला। वह जो
 गणियों आदि को वेधकर
 अपनी जीविका चलाता है।
 वेधशात्रा = वह म्यान जहाँ
 नक्षत्रों और तारों आदि को
 देखने और उनका दूरी, गति
 आदि जानने के यत्न हों।

बेला—(स्त्री० म०) फाल।

ममय। समुद्र की लहर।

बेश—(पु० म०) सजावट।

पोशाक।

बश्या—(स्त्री० स०) रक्षा।

गणिका।

बेष—(पु० स०) रूप रग।

बेषन—(पु० म०) बैठन।

बेष्ट—(पु० थ०) पश्चिम

दिशा। —**कोट** = एक प्रकार

की श्रृंगरेणी कुरती।

बैल्लिपक—(वि० स०) जो

किमी एक पक्ष में हो। एकां

गी। जिसमें किसी प्रकार का

संदेह हो। जा चुका न जा
 सके।

बैकुण्ठ—(पु० स०) स्वर्ग।

बैगोट—(स्त्री० थ०) एक प्रकार
 की घोड़ा-गाड़ी।

बैत्रिड्य—(पु० स०) भेद। एक।
 सुदरता। एषमृती।

बैज्ञानिक—(पु० म०) विज्ञान
 जाननेवाला। विज्ञान का।

बैतनिय—(पु० म०) वह जो
 घेतन लेकर काम करता है।
 नौकर। भृत्य।

बैतरणी—(स्त्री० स०) एक
 पौराणिक नदी।

बैदिक—(पु० स०) वेद में कहे
 हुए कृत्य करनेवाला। वेदों
 का पद्धत। जो वेदों में कहा
 गया हो। वेद सबधी।

बैदूर्य—(पु० स०) धूमिल रंग
 का एक प्रकार का रत्न।

बैद्य—(पु० स०) चिकित्सक।
 भिषक्।

बैद्यक—(पु० स०) चिकित्सा-
 शास्त्र। आयुर्वेद।

वैमनस्य—(पु० स०) द्वेष ।

दुरमनी ।

वैमानिक—(पु० स०) वह जो विमान पर चढ़कर आकाश में विहार करता हो । आकाश चारी ।

वैर—(पु० स०) शत्रुता । दुरमनी । विराध ।

वैरागी—(पु० स०) विरक्त । उदामीन वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

वैराग्य—(पु० स०) विरक्ति ।

वैवाहिक—(वि० स०) विवाह संबंध । विवाह का ।

वशाख—(पु० स०) चत के बाद का और जेठ के पहले का एक महीना ।

वैशेषिक—(पु० स०) छः दर्शनों में से एक । पदाथ विद्या ।

वैश्य—(पु० स०) भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से एक । धनिया ।

वैश्या—(स्त्री० स०) वैश्य जाति की स्त्री ।

वैश्वजनी—(वि० स०) समन ससार के लोगों का ।

वैषम्य—(पु० स०) विषमता ।

वैष्णव—(पु० स०) विष्णु का उपासना करनेवाला । हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय ।

वोट—(पु० अ०) मत । राय । वोटर = वोट या मन्मति देनेवाला । वोटर निस्त्र = वोट देनेवालों की सूची ।

व्यम्य—(पु० स०) गूढ़ और छिपा हुआ अथ । ताना । बोली । चुत्की ।

व्यजन—(पु० स०) चिह्न । भोजन । धर्ममाला में का वह वण जो बिना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो ।

व्यंजना—(स्त्री० स०) शब्द का वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो ।

व्यक्त—(वि० स०) प्रकट । ज्ञाहिर । स्पष्ट ।

व्यक्ति—(स्त्री० स०) आदमी ।
 व्यग्र—(वि० म०) ध्याकुल ।
 काम में फँसा हुआ ।
 व्यतिक्रम—(पु० स०) उलट
 फेर । बाधा । विघ्न ।
 व्यतिरेक—(पु० स०) अभाव ।
 भेद । अंतर । अतिक्रम ।
 व्यतीत—(वि० स०) बीता
 हुआ । गत ।
 व्यथा—(स्त्री० स०) पीड़ा ।
 वेदना । दुःख । क्लेश ।
 व्यथित = दुःखित । रजोदा ।
 व्यभिचार—(पु० स०) बद्
 चलनी । छिनाला । व्यभिचारी
 = बद्चलन । परस्त्रीगामो ।
 व्यय—(पु० म०) खर्च । सरफ़ा ।
 खपत ।
 व्यर्थ—(वि० स०) निरर्थक
 प्रजूल । यों ही ।
 व्यवच्छिन्न—(वि० स०) अलग ।
 जुदा । विभक्त ।
 व्यवच्छेद—(पु० स०) पृथक्ता ।
 अलगवाव । विभाग । हिस्सा ।
 व्यवसाय—(पु० स०) जीविका ।
 उद्योग । केशिश । काम

धधा । उद्यम । व्यवसायी =
 रोज़गार करनेवाला ।
 व्यवस्था—(स्त्री स०) प्रबन्ध ।
 इतज़ाम । व्यवस्थापक =
 प्रबन्धकर्ता । व्यवस्थापत्र =
 विज्ञान सम्बन्धी पत्र ।
 व्यग्रस्थित = कायदे का ।
 नियमित ।
 व्यवहार—(पु० स०) कार्य्य ।
 बरताव । व्यापार । लेन
 देन । व्यवहारिक = व्यवहार-
 योग्य । काम फाज सम्बन्धी ।
 उपयागी ।
 व्यवहृत—(वि० स०) जो काम
 में लाया गया हो ।
 व्यसन—(पु० म०) विपत्ति ।
 आप्रत । दुःख । विपयों के
 प्रति आमत्ति । आदत ।
 व्यसनी = शौकीन । वेश्या-
 गामी ।
 व्यस्त—(वि० स०) काम में
 लगा हुआ या फँसा हुआ ।
 व्याकरण—(पु० स०) भाषा का
 शुद्ध प्रयोग और नियम
 आदि बतलानेवाला शास्त्र ।

व्याकुल—(पु० म०) बहुत घबराया हुआ । 'याकुलता = घबराहट । कातरता ।

व्याख्या—(स्त्री० म०) टीका । व्याख्या ।

व्याख्याता—(पु० म०) 'या' एवा करनवाला । वह जो व्याख्यान देता हो । भाषण करनवाला ।

व्याख्यान—(पु० म०) भाषण । वक्तृता । —शब्दा = वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता हो ।

व्याघात—(पु० म०) विघ्न । बाधा ।

व्याघ्र—(पु० स०) बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जंतु ।

व्याज—(पु० स०) कपट । छल । धोखा । —निंदा = वह निंदा जो छल या कपट से की जाय । —स्तुति = वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े । व्याजोक्ति = कपट

भरी बात । एक प्रकार का झलकार ।

व्याघ—(पु० म०) शिकारी ।

व्याधि—(स्त्री० म०) रोग । बीमारी । आक्रांत । मूक ।

व्यान—(पु० म०) शरीर में रहने वाली पाँच वायुओं में से एक ।

व्यापक—(वि० स०) सबत्र । फैला हुआ ।

व्यापार—(पु० स०) कार्य । रोज़गार । व्यवसाय । व्यापारी = रोज़गारी । व्यवसायी ।

व्याप्य—(वि० स०) व्याप्त करने के योग्य । व्यापनीय ।

व्यायाम—(पु० स०) कमात । मेहनत ।

व्यालू—(पु० हि०) रात के समय का भाजन ।

व्यावहारिक—(पु० स०) व्यवहार संबंधी । व्यवहार शास्त्र संबंधी ।

व्यासंग—(पु० स०) बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग ।

व्युत्पत्ति—(स्त्री० स०) किसी

जाल । शब्दालकार = साहित्य
में वह अलकार जिसमें केवल
शब्दों या वर्णों से भाषा में
कालिय उत्पन्न किया जाय ।

शमा—(स्त्री० अ०) मांस । मोम-
यत्ती । —दान—यह आधार
जिसमें मोम की वत्ती लगा
कर जलाते हैं ।

शयन—(पु० सं०) सोना ।
बिछौना । मैथुन । समोग ।
शयनागार = सोन का स्थान ।
शयनगृह । शय्या = बिस्तर ।
बिछौना । पलंग । स्वाट ।
शय्यादान = मृत्यु के अनंतर
मृतक के संबंधियों का महा
पात्र का चारपाई, बिछान
आदि दान देना । सञ्जादान ।

शर—(पु० सं०) बाण । तीर ।
शरश्र—(स्त्री० अ०) कुरान में
दी हुई आशा । मुसलमानों
का धम्मशास्त्र ।

शरई—(वि० अ०) मुसलमानी
धम्म के अनुसार । (पु०)
शरध पर चलनेवाला मनुष्य ।

शरण—(स्त्री० सं०) रक्षा । आइ ।

आधय । आधय का स्थान ।
घर । अर्धान । मातहत ।
शरणागत = शरण में आया
हुआ व्यक्ति ।

शरत्—(स्त्री० सं०) एक ऋतु
जो आरियन और आर्क्तिक
मास में मानी जाती है ।
शरद् पूर्णिमा = कुम्हार मास
की पूणमासी । शरदपूनी ।

शरफ—(अ०) योग्यता ।

शरवत—(पु० अ०) पाने की
मीठी वस्तु । रस । चानी
आदि में पवा हुआ किसी
शोषधि का अर्क जो दवा के
काम में आता है । पानो में
घोली हुई शक्कर या खाँद ।
सगाई की रसम । शरवता =
एक प्रकार का इच्छा पाला
रस । एक प्रकार का नगाना ।
एक प्रकार का नायू । एक
प्रकार का बट्टिया कपड़ा ।
एक प्रकार का फावसा ।
रसीला । रसदार । शरवती
नायू = चकोतग । गलगज ।
जबीरी नीयू । मीठा नीयू ।

शरम—(स्त्री० क्रा०) लज्जा ।
 हया । जिहाज़ । सकोच ।
 शृङ्खल । प्रतिष्ठा । —सार=
 जिमे शरम हो । लज्जावाला ।
 लज्जित । शरमिदा । —सारी
 = लज्जा । शरमिदगी ।
 मुँह देखे की लज्जा करने
 वाला । शरमाऊ=जिमे
 बहुत लज्जा गालूम होती
 हो । शरमीला । शरमाना=
 लज्जित होना । लाज करना ।
 शरमा शरमी = लज्जा के
 कारण । शरमिदा होकर ।
 शरमिदगी=लाज । झँप ।
 नदामत । शरमिदा=लज्जित
 शरमीला=लज्जालु ।
 शरह—(स्त्री० अ०) टीका ।
 व्याख्या । दर । भाव । शरह
 लगान=लगान की दर ।
 ज़मीन की पढ़ती ।
 शरायत—(अ०) शर्तें ।
 शराकत—(स्त्री० फा०) साक्षात् ।
 दिस्तेदारी ।
 शराफत—(स्त्री० अ०) भल
 ममसी । सच्चाता ।

शराब—(स्त्री० अ०) मदिरा ।
 सुरा । मद्य । इफीमों की
 परिभाषा में शरबत । —राना
 =बह स्थान जहाँ शराब
 मिलती हो । —पूरी=
 मदिरा-पान । —रवार=
 शराबी । शराबी=शराब
 पीनेवाला । मद्यप ।
 शरापोर—(वि० फा०) तर-
 बतर । बिलकुल भौंगा हुआ ।
 शरार—(अ०) चिनगारियों ।
 शरारा=चिनगारी ।
 शरारत—(स्त्री० अ०) पाजीपन ।
 दुष्टता ।
 शरीक—(वि० अ०) शामिल ।
 मिला हुआ । साथी । हिस्म-
 दार ।
 शरीफ—(पु० अ०) कुलीन
 मनुष्य । भलाशाहमी ।
 सबके के प्रधान अधिकारी की
 पदवी । फलकत्ते, बम्बई
 आदि में सरकार की आर से
 नियुक्त किये हुए एक प्रकार
 के अर्वातनिक अधिकारी जिनके

सुपुद शाति रक्षा तथा इसी प्रकार के काम रहते हैं।
 शरीफा—(पु० हि०) सीताफल।
 शरीर—(पु० स०) देह। यत्न। तन। (वि० अ०) पाजी। दुष्ट।
 शरीरा—(स्त्री० म०) शकर। चीनी। घालू का फल। —प्रमेह = एव प्रकार का प्रमेह।
 शरट—(स्त्री० अ०) कमीज़।
 शर्त्त—(स्त्री अ०) बाज़ा। दौंव।
 शर्तिया—(क्रि० अ०) शर्त्त बंद कर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।
 शर्मसार—(क्रा०) लजित।
 शर्म्मा—(पु० वि०) ब्राह्मणों की उपाधि।
 शलजम—(पु० पा०) गाजर की भाँति का एक बंद।
 शलाका—(स्त्री० स०) सलाई। वह सलाई जिससे घाव की गहराई धादि नापी जाती है। सुरमा लगाने की सलाई।
 शव—(पु० स०) लाश। मुर्दा।

शरामाही—(वि० क्रा०) छ माही। अद्द वार्षिक।
 शागमडल—(पु० म०) चंद्रमा का घेरा या मडल।
 शख्र—(पु० स०) हथियार। शौज़ार। —क्रिया = फोड़ें यादि की चीर फाड़। नशतर लगाने का क्रिया। —विद्या = हथियार चकाने की विद्या। शखागार = शख्रों के रखने का स्थान। शखालय।
 शस्य—(पु० म०) धान। खेता। फसल। अन्न।
 शहशाह—(पु० क्रा०) बादशाहों का बादशाह। महाराजा धिराज। शहशाही = शाही। राजसी। शाहशाह का पद। लेने देने में खरापन।
 शह—(पु० क्रा०) बादशाह। गुप्त रूप से किसी के भडकाने या उभारने की क्रिया या भाव। शहजादा = राजकुमार। युवराज। —ज़ोर = बल धान। ताक़तवर। —सीर = लकड़ी का चोरा हुआ बहुत

बड़ा और खम्बा खड़ा ।
 —बाशा = घर का छोटा
 भाई जो विवाह के समय दूरदे
 क साथ पालकी पर छयना
 इसके पीछे घोड़े पर धम्पर
 जाता है । —मात = शतरज
 के खेल में एक प्रकार की
 मात ।

शहतूत—(पु० प्रा०) मूल नाम
 का पेड़ और उसका फल ।

शहद—(पु० अ०) मधु ।

शहना—(पु० अ०) खेत को
 चौकसो करने वाला । फाँत-
 वाला ।

शहनाई—(स्त्री० फा०) एक
 प्रकार का बाजा । नज़रीरो ।

शहर—(पु० फा०) नगर ।
 —पनाह = प्राचार । नगर
 फाटा ।

शहजत—(स्त्री० अ०) कामा
 सुरता । भोग विजास ।
 शैथुन ।

शहादत—(स्त्री० अ०) गवाही ।
 सम्युक्त । प्रमाण । धम्म के

लिये लड़ाई आदि में मारा
 जाना ।

शहाय—(पु० प्रा०) एक प्रकार
 का गहरा लाल रंग । शहायी
 = गहरा लाल ।

शहीद—(पु० अ०) धर्म पर
 यज्ञदान होने वाला व्यक्ति ।

शात—(पि० स०) ठहरा हुआ ।
 रुका हुआ । मिटा हुआ ।
 स्थिर । मरा हुआ । धीर ।
 सौम्य । गभीर । मौन । चुप ।
 शिथिल । थका हुआ । बुझा
 हुआ । विघ्न बाधा रहित ।
 जिसकी घबराहट दूर हो गई
 हो । जिस पर अमर न पड़ा
 हो । काय के नौ रसों में से
 एक एक रस । विरक्त पुरुष ।
 शाति = स्थिरता । तीरवता ।
 चैन । राग आदि का दूर
 होना । शृथु । गम्भीरता ।
 विराग । शातिकर = शाति
 करने वाला । शातिदाता
 = शाति देने वाला । शानि
 दायक = शाति देने वाला ।

शातिदायी = शाति देने वाला ।

शातिमय = शाति से पूर्ण ।

शाइस्ता—(क्रा०) सभ्य । तहजीब
वाला । नम्र । शिचित ।
शाइस्तगी = सभ्यता । शिष्टता ।
मनुष्यत्व ।

शाक—(पु० स०) तरकारी ।
साग । शाकाहार = थनाज
अथवा फल-फूल पत्ते आदि का
भाजन । शाकाहारी = केवल
थनाज या साग भाजी खान
वाला । शाकद्वीप = पुराणा
नुसार । इरान और तुर्किस्तान
के बीच का प्रदेश । शाक
द्वीपीय = शाकद्वीप का रहने
वाला । माहणों का एक
भेद ।

शाकर—(वि० अ०) कृत्ज्ञ ।

शादी—(वि० स०) शिकायत
करनेवाला । नाजिश करने
वाला । जुगला करने वाला ।

शाब—(स्त्री० क्रा०) टहनी ।
ढाली । सड़ । नदी आदि
की बही धारा में से निकली
हुई छोटी धारा । —दार

= जिसमें बहुत सी शाखाएँ
हों । टहनीदार । सींगवाला ।
शाखा—(स्त्री० स०) टहनी ।
ढाल । अंग । किसी शाख
या विधा के अंतगत उसका
कोई भेद ।

शागिर्द—(पु० क्रा०) शिष्य ।
चेला । --पेशा = मातहत ।
अहलकार । कर्मचारी ।
खिद्मतगार । बही कोठी के
पास नौकरों क लिये अलग
बने हुये घर । शागिर्दी =
शिष्यता ।

शाट—(वि० फा०) खुश । प्रसन्न ।
भरा पूरा । —मान = प्रसन्न ।
खुश । —मानी = प्रसन्नता ।
खुशी । शादाब = हरा भरा ।
सरो ताजा । शादियाना =
खुशी का धाजा । बधाइ ।
शादी = खुशी । विवाह ।

शान—(स्त्री० अ०) सजावट ।
तड़क भड़क । ठमक । विशा
लता । चमरकार । क्रामात ।
शक्ति । ऐश्वर्य । इज्जत । —दार
= भड़कीला । शट घाट का ।

भय । त्रिशाल । वेभयपूर्ण ।
ठसक घाला । शौक्त =
ठाट-बाट । सजावट ।

शाना—(पु० क्रा०) कथा ।

शाप—(पु० स०) कासना ।
बददुआ । —प्रस्त = जिमे
शाप दिया गया हो । शापित ।

शावाश—(अ० य० क्रा०) खुश
रहो । धन्य हो । वाह वाह ।
शावाशी = वाह वाही । साधु
वाद ।

शाम—(स्त्री० क्रा०) साँक ।
सध्या ।

शामत—(स्त्री० अ०) दुभाग्य ।
बदकिस्मती । आफ्रत ।
विपत्ति । दुर्दशा । —जुदा
= अभागा । बदनसीब ।
शामतो = जिमकी दुदशा
होने को हो । जिसकी शामत
आई हो ।

शामियाना—(पु० क्रा०) बडा
तबू ।

शामिल—(वि० अ०) मिला
हुआ । सम्मिलित । —हाल

= साथी । शरीक । शामिलत
= हिस्मेदारी । साम्ना ।
सम्मिलित ।

शायक—(वि० अ०) शौकीन ।
इच्छुक । आकाशी ।

शायद—(अ० य० का०) कदा
चित । संभव है ।

शायर—(पु० अ०) कवि ।
शायरी = काव्य । कविता ।

शाया—(वि० अ०) प्रकट ।
जाहिर । प्रकाशित । छपा
हुआ ।

शारीरिक—(वि० स०) शरीर
संबंधी । जिस्मानी ।

शाल—(स्त्री० का०) एक प्रकार
की ऊनी या रेशमी चादर ।
दुशाला ।

शालिहोत्र—(पु० स०) घोड़ों
और पशुओं आदि की
चिकित्सा का शास्त्र । शालि
होत्रो = विशेषत घोड़ों की
चिकित्सा करने वाला ।

शालीन—(वि० स०) विनीत ।
नम्र । जिसे सज्जा आती हो ।

शाला । विद्यालय । विभाग
= मरिश्ता तालीम । शिचित
= विद्वान् । पदा लिखा ।

शिखर—(पु० स०) सबसे ऊपर
का भाग । चाटी । पहाड़ की
चोटी । कँगूरा । कलश ।
महप । गु बंद ।

शिवगिणी—(स्त्री० स०) दही
और चीनी का रस । शिव
रस ।

शिखा—(स्त्री० म०) चोटी ।
फलगी । ज्वाला । दीपक की
गै । शिखर । —बधन =
चाटी बाँधना ।

शिगाफ—(पु० फा०) चोरा ।
नश्तर । त्रार । दज । कलम
के बीच का चिराव । छेद ।

शिगूफा—(पु० फा०) बिना
गिला हुआ फूल । कली ।
किसी अनोखी बात का होना ।

शिजरा—(श्र०) वश । वशावली ।

शितार—(क्रि० फा०) जल्द ।
शीघ्र । शिताबी = शीघ्रता ।
बर्दी । तेज़ी ।

शिथिल—(वि० म०) ढीला ।

सुस्त । धीमा । थका हुआ ।
—ता = ढीलापन । थकावट ।
मुस्तैदी का न होना ।
आलस्य । नियम पालन की
कड़ाई का न होना ।

शिहत—(स्त्री० श्र०) तेज़ी ।
ज़ोर । अधिकता ।

शिनार—(स्त्री० फा०) पह-
चान । पग्व । समीज़ ।

शिमाल—(स्त्री० श्र०) उत्तर
दिशा ।

शिया—(पु० श्र०) मददगार ।
मुसलमानों के दो प्रधान
और परस्पर विरोधी सम्प्रदायों
में से एक ।

शिर—(पु० हि०) सिर । मस्तक ।
माया । सिरा । चोटी । जिलर ।

शिरकत—(स्त्री० श्र०) साम्ना ।
हिस्सा ।

शिरा—(स्त्री० स०) रक्त की
छोटी नाड़ी ।

शिराकत—(स्त्री० श्र०) साम्ना ।
हिस्तेदारी । कार्य में योग ।

श्रेष्ठ । आचार व्यवहार में
निपुण । आनाकारी ।
—ता = सम्यता । श्रेष्ठता ।
शिष्टाचार = सम्य पुरुषों क
योग्य आचरण । सम्य
व्यवहार । आवभगत ।

शिष्य—(पु० स०) विद्यार्थी ।
शागिद । चेला ।

शीघ्र—(क्रि० स०) तुरत ।
जल्द । —कारी = जल्दी से
काम कान बाला । शीघ्र
प्रभाव उत्पन्न करने वाला ।
—गामी = शीघ्र चलनेवाला ।
—पतन = स्तम्भन शक्ति का
अभाव ।

शीत—(वि० म०) ठण्डा । सर्दों ।
थोस । —कटिबध = पृथ्वी
के उत्तर और दक्षिण के
भूमिखण्ड के वे कल्पित
विभाग जहाँ जाड़ा बहुत
अधिक पड़ता है । —काल =
हेमन्त ऋतु । जाड़े का मौसम ।
शीतल = ठण्डा । सर्द ।
शीतलघोनी = कषायघोनी ।

शीतला = चेचक । विम्फोटक
रोग ।

शीर—(पु० फा०) दूध । घीर ।
—खिरत = हफ्तीनी में एक
रेचक औषधि । —खारा
दूध पीता बच्चा । अन्नजान
बालक । —माल = एक
प्रकार की गमोरी रोटी ।

शीरा—(पु० फ्रा०) चीना मिठा
हुआ पानी । शरत । चारखी ।

शीराजा—(पु० फ्रा०) वह बुना
हुआ रंगीन या सफेद फीता
जो किताबों की सिलाई का
छोर पर शोभा और मजबूती
के लिये लगाया जाता है ।
प्रबध । इन्तज़ाम । सिल
सिला ।

शीरी—(वि० फ्रा०) मीठा ।
प्रिय । प्यारा । मधुर ।

शीरीनी—(स्त्री० फा०) मिठाई ।

शीर्ण—(वि० स०) टूटा-भूटा
हुआ । फटा पुराना । दुबला
पतला ।

शीर्ष—(पु० स०) सिर । कपाल
माथा । सबसे ऊपर क

भाग । मिरा । —क = यह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी क्षेत्र या प्रबन्ध के ऊपर लिगा जाय ।

शील—(पु० स०) चाख स्पष्ट हार । आचरण । चरित्र । स्वभाव । आदत्त । अस्वाभाव । चाख चरित्र । उत्तम स्वभाव । कोमल हृदय । मद्दोष का स्वभाव । सुरीयता । तत्पर । स्वभावयुक्त ।

शीशम—(पु० क्रा०) एक पेड़ ।

शीशमहल—(पु० पा०) काच का मकान ।

शीशा—(पु० फा०) काच । टर्पण । आहना ।

शीशी—(खी० पा०) काच की लम्बी कुन्धी ।

शुक—(पु० स०) ताता । मुग्गा ।

शुक—(वि० स०) धीर्य । एक बहुत चमकीला ग्रह । शनिवार से पहले पड़नेवाला दिन । (अ०) धन्यवाद । वृत्तज्ञता प्रकाश । —गुजार

= पदसाग मांगे वाला । एतन् । —गुजारी = पद-सागमदी । शुक्रमेढ = धातु सींगता । शुक्रार = मसाह का पटा दिन जो पृथ्वीतिगर के बाद पड़ता है । शुक्रिया = धन्यवाद । एतन्ता प्रकाश ।

शुक्र—(वि० स०) मग्नेद । रवेत । प्राक्षणों की एक पदवी ।

शुचि—(पु० स०) पवित्र । साफ । निर्दोष ।

शुजा—(वि० अ०) बहादुर । शूरवीर । शुजाधत = बहादुरी । वीरता ।

शुतुग—(पा०) ऊँट । —मुगं = एक बहुत बड़ा पशु जो ऊँट की तरह होता है ।

शुदनी—(खी० प्रा०) होनहार ।

शुद्ध—(वि० स०) पवित्र । साफ । टाक । सही । निर्दोष ।

स्वाक्षिस । —ता = पवित्रता । शुद्धि = सफाई । वैदिक धर्म के अनुसार यह हृत्य या सस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुच व्यक्ति के शुद्ध होने के समय

होता है। शुद्धि पत्र=वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुभहा—(पु० अ०) सन्देह। शक। धावा। भ्रम।

शुभ—(वि० स०) अच्छा। भला। (पु०) कल्याण। मंगल।
—चितक=शुभ या भला चाहनवाला। हितैषी। —दशनं=सुन्दर। खूबसूरत।

शुभ्र—(पु० स०) सफ़ेद।

शुरू—(पु० अ०) धारम। प्रारम।

शुल्क—(पु० स०) महसूल। चदा। दहज। फ़ीस।

शुश्रूषा—(स्त्री० म०) सेवा। दहज। कयन।

शुष्क—(वि० स०) सूखा। खुरक। नीरस। रसहीन। जिसमें मन न लगता हो। व्यथ। निरथक। निर्माँही।

शुद्ध—(पु० स०) हिन्दुओं के चार वर्णों में से चौथा और अतिम वर्ण।

शून्य—(पु० स०) खाली स्थान।

विन्दु। विन्दी। अभाव। खाली। निराकार। रहित।

शूर—(पु० म०) वार। बहादुर। योद्धा। निपाही।

शूल—(पु० स०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। सूजी। नुकीला काँटा। पेट का दड़। टोस। नुकीला।

शृङ्खला—(स्त्री० स०) क्रम। सिलमिला। ज़ंजीर। कनार।
—बद्ध=सिलसिलेवार।

शृंग—(पु० स०) शिखर। कँगूरा।

शृंगार—(पु० स०) साहित्य के अनुसार नौ रसों में से एक रस। सजावट। शोभा।

शृंगाल—(पु० स०) सियार। ढरपोक। दुष्ट।

शेख—(पु० अ०) पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। मुसलमानों के चार वर्गों में सब से पहला वर्ग। पोर। बहादुर। —विज्ञो=०क कल्पित मूल व्यक्ति जिसके सबंध में बहुत सी विसंख्य और हँसाने

पाली कहानियाँ कही जाती हैं। बँटे-बँटे बड़े-बड़े मसूवे बाँधनेवाला। मूय। मसफ़रा।

शेखी—(स्त्री० फ़्रा०) अहंकार। घमट। पेंठ। अक्क। अभिमान भरी बात। —बाज़ = अभिमानी। डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेयर—(पु० अ०) हिस्सा। भाग। किसी कारबार में लगी हुई पूँजी का अलग हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हर एक आदमी लगावे। —होरडर = हिस्सेदार।

शेर—(पु० फ़्रा०) बाघ। नाहर। अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। (अ०) फ़ारसी, उदू आदि की कविता के दो चरण। —दहाँ = (वि० फ़ा०) जिसका मुँह शेर का सा हो। —बच्चा = शेर का बच्चा। वीर पुरुष। बहादुर आदमी। एक प्रकार की खाती बटक। —हानी =

अंग्रेज़ी टैंग की काट का एक प्रकार का थगा।

शेष—(पु० सं०) बाज़ी। अत। परिणाम। बचा हुआ। ख़तम। समाप्त। और। अतिरिक्त। शेषांश = आखिरी भाग।

शैतान—(पु० अ०) घोर अत्याचारी। बहुत शरारती आदमी। शैतानी = दुष्टता। शरारत।

शैली—(स्त्री० सं०) षाल। ढग। परिपाटी। तरीका। रीति। लिखने का ढग।

शैशव—(वि० सं०) बचपन। लड़कपन।

शोक—(पु० सं०) रज। तम। शोकातुर = शोक से व्याकुल। शोकात्त = शोक से विकल।

शोख—(वि० फ़्रा०) ढीठ। छष्ट। शरीर। चंचल। छटकीला।

शोषी—(स्त्री० फ़्रा०) ढिंढाई। चंचलता। तेज़ी। छटकीलापन।

शोचनीय—(वि० सं०) शोक करने योग्य। जिससे दुःख

उत्पन्न हो। बहुत हीन था
बुरा।

शोध—(पु० स०) जाँच। परीक्षा।
खोज। तलाश।

शोभा—(स्त्री० स०) कांति।
चमक। सुन्दरता। मजीला
पन। शोभायमान = सोहता
हुआ। सुन्दर। शोभित =
सुन्दर। सजीला। सजा
हुआ।

शोर—(पु० क्रा०) हल्ला।
काळाहल। धूम। प्रसिद्ध।
शोरिश = हलचल। खलबली।
बलवा। दगा।

शोर्वा—(पु० पा०) झोल।
जूस। पके हुए मास का
पानी।

शोला—(पु० क्रा०) धाग की
लपट।

शोपक—(पु० स०) सोखने
वाला। सुग्यानेवाला। चीख
करनेवाला।

शोहदा—(पु० अ० + स०)
व्यभिचारी। क्षपट। बदमाश।
बहुत बनाव सिंगार करने

वाला। —पन = गुयदाप।
लुच्चापन। छैजापन।

शोहरत—(स्त्री० अ०) नामवरी।
प्रसिद्धि। धूम। खूब फैली
हुई गबर।

शोहरा—(पु० अ०) प्रसिद्धि।
ख्याति। धूम से फैली हुई
गबर।

शोक—(पु० अ०) प्रयत्न
लाभसा। हौसिला। व्यसन।
चसका। मुग्ध। शोकान =
शोक करनेवाला। सदा बना
ठना रहनेवाला। शोकीनी
= सजावट। बनावट।

शोक्य—(स्त्री० अ०) ठाठ-वाट।
ज्ञान।

शोकिया—(क्रि० अ०) शोक के
कारण। (वि०) शोक से
भरा हुआ।

शोच—(पु० स०) पवित्रता।
शुद्धता।

शोच्य—(पु० स०) धीरता। परा
क्रम।

श्मशान—(पु० स०) मसान।
मरघट।

श्याम—(पु० स०) काला और
नीला मित्रा हुआ रंग ।
—ता = कालापन । मलि
नता । उदासी ।

श्यामा—(स्त्री० स०) एक पक्षी ।
सोखद पक्षी की तरहनी । काले
रंग की गाय । श्याम रंग
वाली । तपाप हुये सोने के
समान धनवाली ।

श्रद्धा—(स्त्री० सं०) श्रद्धे के प्रति
मान में होनेवाला आदर और
पूज्य भाव । भक्ति । विश्वास ।
श्रद्धालु = श्रद्धा रखनेवाला ।
श्रद्धास्पद = पूजनीय । श्रद्धय ।
श्रद्धेय = श्रद्धा करने के योग्य ।

श्रम—(पु० स०) परिश्रम ।
मेहनत । —श्रम = पसीने
की बूँदें, जो परिश्रम करने पर
शरीर से निकलती हैं ।
—जीवी = मेहनत करके पेट
पालनेवाला । —विभाग =
परिश्रम या काम का विभाग ।
—महिष्णु = मेहनती । परि
श्रमी । —साध्य = बिना परि
श्रम न सध सके । श्रमित =

यका हुआ । श्रमी = मेहनती ।
परिश्रमी । श्रमशीली ।

श्रमण—(पु० स०) बौद्ध
मन्यामी । षण्डि । मुनि ।

श्रमण—(पु० स०) कान ।

श्रात—(वि० स०) परिश्रम से
यका हुआ ।

श्राद्ध—(पु० स०) श्रद्धा से
किया जानेवाला काम । वह
वृत्त्य जो शास्त्र के विधान के
अनुसार पितरों के उद्देश्य से
किया जाता है । पितृ पण ।

श्रावण—(पु० स०) जैन धर्म
की माननेवाला सन्यासी ।

श्रावण—(पु० स०) सावन ।
श्रावणी = सावन मास की
पूणमासी ।

श्री—(स्त्री० सं०) क्षत्री ।
शोभा । चमक । आदर-सूचक
शब्द जो नाम के आदि में
रखा जाता है । (पु०)
योग्य । सुदर । श्रेष्ठ । शुभ ।
—मत = श्रीमान् । धनी ।
—मत् = धनवान् । सुदर ।
श्रीमती = स्त्रियों के लिये

आदर सूचक शब्द । —मान्
= आदर-सूचक शब्द जो नाम
के आदि में रखा जाता है ।
श्रीयुत । धनवान् । सुदर ।
—युक्त = जिसमें श्री या
शोभा हो । एक आदर-सूचक
विशेषण । —युत = जिसमें
श्री या शोभा हो ।

श्रुत—(वि० स०) सुना हुआ ।

श्रुति—(स्त्री० स०) कान ।

सुनी हुई बात । वेद । —कटु
= जो कान को प्रिय न लगे ।

—मधुर = जो कान को प्रिय
लगे ।

श्रेणी—(स्त्री० स०) पक्ति ।

कतार । सिलसिला । दल ।

सेना । —बद्ध = कतार

बाँधे हुए ।

श्रेय—(वि० स०) अधिक अच्छा ।

बेहतर । कल्याणकारी । यश

देने वाला । भलाई । —स्कर

= कल्याण करनेवाला शुभ
दायक ।

श्रेष्ठ—(वि० स०) सर्वोत्तम ।

बहुत अच्छा । पूज्य । बड़ा ।

श्लाघा—(स्त्री० स०) प्रशंसा ।

तारीफ़ । स्तुति । बड़ाई ।

सुशामद । इच्छा । चाह ।

श्लाघनाय = तारीफ़ के
लायक । उत्तम ।

श्लील—(वि० स०) जो भद्दा

न हो । मगल-दायक । शुभ ।

श्लष्मा—(पु० स०) कफ ।

बलगम ।

श्लोक—(पु० स०) संस्कृत का

एक व्यवहृत छंद । संस्कृत

का कोई पद्य । कीर्ति ।

श्लेष—(पु० स०) कुत्ते का

मांस पकाकर खानेवाला ।

चाटाल । डोम ।

श्वसुर—(पु० स०) पति या

पत्नी का पिता । ससुर ।

श्वान—(पु० स०) कुत्ता ।

—निद्रा = हलकी नींद ।

भ्रूपकी ।

श्वास—(पु० स०) साँस ।

दम । दमा । —कास = दमा

और साँसो । दमा । श्वासा =

साँस । दम । प्राण । श्वासो

धृषाम=धेग म माँस ।
 खीचना और निवालना ।
 जन—(वि० स०) सफेद ।

खेतोंवर=सफेद पत्र घास
 करनेवाला । खेतों के दा
 प्रधान समझाओं में म पद ।

प

पाठ्य सम्भार

प

प—हिंदी-वर्णमाला के व्यंजन
 वर्णों में इकतीसवाँ वर्ण या
 अक्षर । इसका उच्चारण स्थान
 मूर्धा है ।

पट्-सर्म्—(पु० स०) ब्राह्मणों
 के छु कम—पढ़ना, पढ़ाना,
 यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान
 लेना, दान देना ।

पटपदी—(वि० स्त्री०) भौंसा ।
 एक छंद । छप्पय ।

पटराग—(पु० स०) संगीत के
 छ राग । बरेड़ा । भक्त ।

पड्यत्र—(पु० स०) झंझी
 चात्र । बल या बल ।

पोडा—(वि० म०) मासुदर्या ।
 साबुद ।

पाड़ा बना—(का० म०)
 बटना के मासुदर्या ।

पाड्यी—(वि० स्त्री० म०) मोसुद
 वर के बर्यावना खा ।

पाठ्य सम्भार—(पु० स०)
 हिंदी रत्न के अनुसार गर्भा
 गार में उक्त मृतक कम तक
 छ सांख्य सम्भार का हिंसा
 नियों के ज्ञिय पद मप है ।

समग्रहणी—(स्त्री० स०) एक राग ।

समग्राम—(पु० म०) युद्ध । लड़ाई । —भूमि = लड़ाई का मैदान । युद्ध-क्षेत्र ।

समग्र—(पु० म०) समूह । दल । समिति । सभा । प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातन्त्र राज्य । साधुओं के रहने का मठ ।

समग्रटन—(पु० स०) रचना । बनावट ।

समग्र्य—(पु० स०) रगड़ । धिस्मा । प्रतियोगिता । स्पर्धा ।

समघात—(पु० म०) घबराहट ।

समघाराम—(पु० स०) बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रमणों आदि के रहने का मठ । विहार ।

सचय—(पु० स०) समूह । जमा करना । सचयी = सचय करनेवाला । कज्जम ।

सचार—(पु० स०) गमन । चलना । फैलना ।

सचालक—(पु० स०) मैनेजर । प्रबन्धक । चलानेवाला ।

सचित—(त्रि० स०) सचय किया हुआ । एकत्र किया हुआ ।

सजाफ—(स्त्री० प्रा०) झालर । किनारा । गोटा । मगजी । सजाफी = झालरदार । किनारेदार ।

सजीदा—(वि० फा०) गभीर । शांत । समझदार । बुद्धिमान् । सजीदगी = गभीरता ।

सजीवनी विद्या—(स्त्री० स०) एक प्रकार की कल्पित विद्या ।

सज्ञा—(स्त्री० स०) चेतना । होश । नाम । —होन = बेहोश । सज्ञक = नाम-वाला ।

सड मुसड—(वि० हि०) मोटा-ताजा । बहुत मोटा ।

सडसा—(पु० हि०) लोहे का एक धौंजार जो दो छद्दों से बनता है । जँबूरा ।

सडास—(पु०) बुँ की तरह का गहरा पाखाना । शौच-शुष्प ।

सतत—(अप्य० स०) सदा ।
निरतर ।

सतति—(स्त्री० स०) मतान ।
भौलाद ।

सतप्त—(पि० स०) यदुत अधिक
जला हुमा । हुगी । पीडित ।

सतरा—(पु० पुस०) एक प्रकार
का बहा और मोठा नीचू ।
बही नारगी ।

सतरो—(पु० अ०) किसी स्थान
पर पहरा देनेवाला सिपाही ।
पहरेदार । द्वारपाल ।

सतान—(पु० स०) मतति ।
भौलाद ।

सताप—(पु० स०) जलन ।
आँच । बष्ट । मनोव्यथा ।

सतुष्ट—(पि० सं०) वृत्त ।

सतोप—(पु० स०) सम । शक्ति ।
वृत्ति । इतमीनान । प्रसन्नता ।
सुख । ध्यानद । सतोपी =
सम करनेवाला । सतुष्ट रहने
वाला ।

सदर्भ—(पु० स०) रचना ।
निबन्ध । लेख ।

सदल—(पु० प्रा०) चदन ।

सदला = (पि० प्रा०) इलाहा
पीला (रंग) । चदन पा ।

सदिग्ध—(पि० स०) सदेष्टव्य ।
मराकूफ ।

संदूक—(पु० अ०) पेगी । बकल ।
—धा = छोटा सदूक । —ही
= छोटा सदूक ।

सदेश—(पु० स०) समाचार ।
प्रबर । एक पैगला मिठाई ।

सदेशा—(पु० स०) समाचार ।

सँदेशा—(पु० हि०) प्रबर ।
हाल ।

सदेह—(पु० स०) सशय । शका ।
शक ।

सधि—(स्त्री० स०) मुजह ।
मिन्नता । जोड़ । गाँठ ।

—भाग = हाथ या पैर आदि
के किसी जोड़ का टूटना ।
मुजहनामे के विरुद्ध आच
रण । —पत्र = मुजह-नामा ।

सध्या—(स्त्री० स०) शाम ।
सायकाल । हिन्दुओं की
प्रातःकाल, मध्याह्न और
सध्या की उपासना ।

संन्यास—(पु० स०) हिन्दुओं

के चार आधमों में से अंतिम
आधम । सन्यास = वह जो
सन्यास आधम में हो ।
विरक्त ।

सर्पात्त—(स्त्री० स०) पेशवर्य ।
वैभव । धन । दौलत ।

सर्पदु—(स्त्री० स०) पेशवर्य ।
वैभव ।

सर्पदा—(स्त्री० स०) धन ।
दौलत । पेशवर्य । वैभव ।

सर्पद्व—(वि० स०) पूर्ण ।
सहित । युक्त । सुशहाल ।
धनी । दौलतमद ।

सर्पदक—(पु० स०) लगाव ।
समग । स्पर्श । मटना ।

सर्पात—(पु० स०) वह स्थान
जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े
या मिले ।

सर्पादक—(पु० स०) कोई काम
पूरा करनेवाला । किसी समा-
चारपत्र या पुस्तक का क्रम
आदि लगाकर निकालने
वाला । एडिटर । सर्पादकीय
= सर्पादक सम्बन्धी । सर्पादक
का । एडीटोरियल । सर्पादन

= किसी काम को पूरा
करना । प्रस्तुत करना । ठोक
करना । तैयार करना । किसी
पुस्तक या सवादपत्र आदि का
क्रम, पाठ आदि लगाकर
प्रकाशित करना । सर्पादित
= पूर्ण किया हुआ । प्रस्तुत ।
क्रम, पाठ आदि लगाकर ठोक
किया हुआ ।

सर्पुट—(पु० स०) ठीकरा । दोना ।
दियवा । चँजली । कोरा ।
कपड़े और गीला मिट्टी से
छपेटा हुआ वह वस्तु जिसके
भीतर कोई रस या औषधि
पूँकते हैं ।

सर्पूर्ण—(वि० स०) सब । बिल
कुल । पूरा । समाप्त । इतम ।
—त = पूरी तरह से ।
पूर्ण रूप से । —तया
= पूरी तरह से । भली
भाँति । —ता = पूरापन ।
समाप्ति ।

सँपेरा—(पु० हि०) मदारा ।

सँपोला—(पु० हि०) सर्प का
बच्चा ।

संप्रति—(अ० स०) इस समय
बभी ।

संप्रदाय—(पु० स०) किरपा ।
भाग । रीति । संप्रदायी =
मतावलम्बी ।

सवध—(पु० स०) लगाव ।
वास्ता । नाता । रिग्ता ।
गहरा मित्रता । सयोग ।
मेल । विवाह । सगाई ।
व्याकरण में एक कारक ।
सवधी = सवध रखनेवाला ।
सिलसिले या प्रसंग का ।
रिश्तेदार । समधी ।

सवद्ध—(वि० स०) बँधा हुआ ।
जुड़ा हुआ । मिला हुआ ।
बद्ध ।

सबोधन—(पु० स०) पुकारना ।
व्याकरण में एक कारक ।

सँभलना—(क्रि० हि०) थामा
जा सकना । आधार पर ठहरे
रहना । होशियार होना ।
सावधान होना । गिरने पड़ने
से रचना । बुरी दृष्टि को
फिर मुधार लेना । कार्य का
भार उठाया जाना ।

सभक्त्—(पु० स०) होना । मुम-
किन होना । उपयुक्तता ।
मुनासिबत । —त = हो
सकता है । मुमकिन है ।
सभवनीय = मुमकिन ।

सँभाल—(स्त्री० हि०) रक्षा ।
देख रेख । प्रवध । द्रवर
दारी । तन-बदन की सुध ।
होश हवास । —ना = रोके
रहना । थामना । गिरने से
बचना । रक्षा करना । दुराधी
से बचना । पालन पोषण
करना । दृष्टा दिगङ्गे से
बचना । सहेजना । जोश
थामना ।

सभाजना—(स्त्री० स०) करपना ।
थनुमान । हो सकना । सभा
वनीय = मुमकिन । सभावित
= उपस्थित । योग्य । वाबिल ।

सभापण—(पु० हि०) बातचीत ।
कथोपकथन ।

सभूय समुत्थान—(पु० स०)
साम्ने का कारवार । कम्पनी ।

सभोग—(पु० स०) सुखपूर्वक
व्यवहार । रति क्रीडा । मैथुन ।

सभ्रात—(वि० हि०) तेजस्वी ।
मम्मानित । प्रतिष्ठित ।

सयत—(वि० स०) बँधा हुआ ।
जरुदा हुआ । दबाव में रखा
हुआ । रोका हुआ । बशी
भूत । कायदे का पाबन्द ।
सयताम्ना—जिम्मे मन को
बश में किया हो ।

सयम—(पु० स०) रोक । मन
और इन्द्रियों को बश में रखने
की क्रिया । परहेज । मयमी
= धारू में रखनेवाला । मन
और इन्द्रियों को बश में
रखनेवाला ।

सयुक्त—(वि० म०) जुड़ा
हुआ । मिखा हुआ । सबद्ध ।
बगाव रपटा हुआ । सहित ।
माय । लिपि हुण । समन्वित ।
सयुत ।

सयुत—(वि० स०) सहित ।
साथ ।

सयोग—(पु० स०) मिखाप ।
सयध । सहवास । विवाह-
सवध । इत्तफ़ाऊ ।

सरदाण—(पु० स०) हिफ़ा

ज़त । देखरेख । निगरानी ।
सरसक = देखरेख और पाबन
पोषण करनेवाला । सरचित =
भलीभाँति रचित । अच्छी
तरह बठाया हुआ ।

सलग्न—(वि० स०) सटा हुआ ।
मिखा हुआ । मिदा हुआ ।
जुड़ा हुआ ।

सवत्—(पु० स०) वर्ष । सव-
त्सर । साल । सन् । महाराज
विक्रमादित्य के काल से चला
हुई वष-गणना ।

सवरण—(पु० स०) रोकना ।
निग्रह ।

सवाद—(पु० स०) बातचीत ।
कथोपकथन । स्वर । समा-
चार । कथा । —दाता =
अन्नवार का रिपार्टर ।

सँवारना—(क्रि० हि०) सजाना ।
ठीक करना । ठीक ठीक
बगाना ।

सवेदना—(पु० म०) सहातु
भूति ।

सशय—(पु० स०) सदेह ।

शक । दुविगा । सशयात्मा =
शकी ।

सशोधन—(पु० स०) शुद्ध
करता । सात्र करता । दुरस्त
करना । सुधारना । सशोधक
= सुधारनेवाला । सशोधित
= शुद्ध किया हुआ । सुधारा
हुआ ।

ससर्ग—(पु० स०) सयध ।
जगाय । मेल । सहवाम ।
घनिष्टता ।

ससार—(पु० स०) जगत ।
दुनिया । माया जाल । गृहस्थी ।
—चक्र = दुनिया का चक्र ।
ससारी = ससार सयधी ।
लौकिक । ससार में रहने
वाला । लोक व्यवहार में
कुशल । दुनियादार बार बार
जन्म लेनेवाला । सासारिक
= ससार सयधी ।

सस्मरण—(पु० स०) ठीक
करना । सजाना । सुधार
करना । पुस्तकों की एक बार
की छपाई । आवृत्ति ।

सस्कार—(प० स०) सुधार ।

दोष या ग़ुटि का निकाला
जाना । शुद्धि । दिक्क पर जमा
हुआ धसर । पूर्व जन्म की
वासना । रोति या रस्म ।
सस्कारी = सस्कारवाला ।

सस्मृत—(वि० स०) परि
मार्जित । परिष्कृत । निखारा
हुआ । सुधारा हुआ । पुराने
धायों की प्राचीन साहित्यिक
भाषा । देववाणी ।

सम्युक्ति—(स्त्री० स०) (थ०)
कलहर ।

सस्था—(पु० स०) समाज ।
सभा । (थ०) इन्स्टीट्यूशन ।
विभाग ।

सस्थापन—(पु० स०) खड़ा
करना । नया काम खोलना ।
सस्थापक = स्थापित करने
वाला । काम खोलने वाला ।
सस्थापित = जमाया हुआ ।
जारी किया हुआ ।

सस्पर्श—(पु० स०) छू जाना ।

सस्मरण—(पु० स०) याद-
दाश्त । स्मरणीय = याद

- करने योग्य । सस्मारक = याद दिलानेवाला । यादगार ।
- सहार—(पु० म०) नाश । शत । निपुणता । —क = नाशक ।
- सहिता—(स०) वेदों का मंत्रभाग ।
- सकना—(क्रि० हि०) फोड़ काम करने में समर्थ होना ।
- सकपकाना—(क्रि० अ० अनु०) धारचययुक्त होना । हिचकना । शरमाना । सकपकाहट = सकोच ।
- सकल—(वि० स०) सब । कुल ।
- सकारना—(क्रि० हि०) स्वीकार करना । महाजनों का हुडी की मित्ती पूरी होने के एक दिन पहले हुडी देकर उस पर हस्ताक्षर करना ।
- सकाल—(वि० अ०) जो जल्दी हजम न हो ।
- सफुचना—(क्रि० अ० हि०) बच्चा करना । शरमाना ।

- सकूनत—(स्त्री० अ०) रहस्य का स्थान ।
- सकोरा—(पु० हि०) मिट्टी की कगोरी । कसोरा ।
- सम्का—(पु० अ०) मिश्रता ।
- सखा—(पु० हि०) साथी । मगी । मित्र । दोस्त । सखी = महेली । सगिनी । सखी = (अ०) दानी । दाता । दानशील ।
- सखावत—(स्त्री० अ०) दानशीलता । उदारता । फैयाजा ।
- सरपुन—(पु० प्रा०) बातचीत । वार्तालाप । कविता । —चीन = चुगुलखोर । ह्दर-उधर यात लगानेवाला । —घीनी = चुगुलखोरा । —तक्रिया = वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जवान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुँह से निकला करता है । तक्रिया फलाम । सखुनर्दा = काव्य का रसिक । —दानी = बातचीत की समझदारी । का-य-

रसिकता । —परवर = यह जो
 अपना कही हुई बात का
 सदा पालन करता हो । दठी ।
 जिहो । —शनाम = यह जो
 मधुन या वाच्य भक्षीभाँति
 समझता हो । —माज्ञ =
 कवि । शायर । अपने मन से
 मूर्ती बातें बनाकर पढ़ावाला ।
 —साज्ञी = मूर्ती बातें गढ़ने
 का गुण ।

सग—(पु० फा०) वृत्ता । श्याम ।

—सुयाग = यह घोड़ा जिसका
 जीभ पक्ष के समान पतली
 और लची हो ।

सगपहती—(स्त्री० हि०) साग
 मिठाकर बनाई हुई दाल ।

सगा—(वि० हि०) एक माता
 से उत्पन्न । सहोदर । बहुत
 ही निकट के संबंध का ।

सगाइ—(स्त्री० हि०) विवाह
 संबंधी निरूपण । मँगनी ।

सघन—(वि० स०) घना । डोस ।

सच—(वि० हि०) सत्य । ठीक ।

—मुच = वास्तव में । वस्तुतः ।

अवश्य । सचाई = सच्चापन ।

वास्तविकता । यथार्थता ।

सषा = सच बोलनेवाला ।

यथाथ । ठीक । असखी ।

विशुद्ध । —पन = सत्यता ।

सगाइ ।

सचराचर—(पु० स०) सत्कार
 का स्थावर और अगम सभी
 वस्तुएँ ।

सचिदरण—(वि० स०) बहुत
 अधिक धिक्का ।

सचिय—(पु० स०) मग्री ।

सचेत—(वि० हि०) समझदार ।
 होशियार । सावधान । सचे
 तता = चेतनायुक्त । चतुर ।

सच्चारत, प्र—(वि० स०) नेक
 चालचलावाला । —ता =
 नेकचलायी ।

सच्चिदानन्द—(पु० स०) ईश्वर ।
 परमेश्वर ।

सजग—(वि० हि०) सावधान ।

सजघज—(स्त्री० हि०) बनाव ।
 सिंगार । सजावट ।

सजना—(क्रि० हि०) श्रद्धार
 , करना शोभा देना । भक्षा
 ज्ञान पढ़ना ।

सजल—(वि० म०) जिसमें पानी हो। धाँमुधों से पूण।

सजा—(स्त्री० फा०) दद।
—धारुता = ददित। —पाव = ददनीय। —वार = ददनाय।

सजातीय—(वि० म०) एक जाति या गोत्र का।

सजाना—(कि० हि०) वस्तुओं का यथास्थान रखना। तर तीव्र लगाना। सँवारना। शृङ्गार करना।

सजायट—(स्त्री० हि०) शोभा। तैयारी।

सजीला—(वि० हि०) सपथज के साथ रहनेवाला। छुपीला। सुन्दर। मनोहर।

सजीव—(वि० स०) जीव युक्त। पुरतीला। श्रोत्रस्वो। प्राणी। जीवधारी।

सज्जन—(पु० हि०) भला आदमी। शरीफ। —ता = भलमसाहत। सौजन्य।

सज्जादा—(पु० अ०) जानमाज। आसन। फकीरों या पीरों

थादि की गद्दी। —नशीन = मुमलमान पीर या यद्दा फकीर।

सज्जित—(वि० म०) सजा हुआ। सुशोभित। आवश्यक वस्तुओं से युक्त। तैयार।

सज्जी—(स्त्री० हि०) ण्य चार।

सज्जान—(पु० स०) ज्ञानवाला। सयाना। प्रौढ़।

सटकना—(कि० अनु०) धोरे से से खिसक जाना। चल देना। फूटना। पीटना।

सटकाना—(कि० अनु०) किसी को छद्दी, कोड़े आदि से मारना जिसमें “सट” शब्द हो। चुपके से भगा देना।

सटपटाना—(कि० अनु०) दब जाना। स्तब्ध हो जाना। सकुचाना।

सटरपटर—(वि० अनु०) छोटो मोटा। तुच्छ। बहुत साधा रण। बिलकुल मामूली।

सट्टा—(पु० देश०) इकरारनामा। व्यापारिक जुधा।

सट्टा षट्टा—(पु० हि०) मेल
 मिलाप । हेख मेल ।
 सठियाग—(वि० हि०) साठ
 धरत का होना । बुद्धा
 होना । बुद्धावस्था के कारण
 बुद्धि तथा विवेक शक्ति का
 कम हो जाना ।
 सट्टक—(स्त्री० हि०) आने-जाने
 का चौड़ा रास्ता । राजमार्ग ।
 राजपथ । रास्ता । मार्ग ।
 सडन—(स्त्री० हि०) गलना ।
 सडना—(वि० हि०) दुर्गन्धित
 होना । दुग्ध में पका रहना ।
 मद्धत पुरा हाबत में रहना ।
 सडाइद्—(स्त्री० हि०) सभी
 दुद्घ चीज की गंध ।
 सडासड—(अग्य० हि०) 'सद्'
 शब्द के साथ ।
 सडियल—(वि० हि०) सबा
 हुआ । गला हुआ । रही ।
 तुच्छ ।
 सतत—(अग्य० सं०) निरंतर ।
 हमेशा ।
 सतर्क—(वि० सं०) दजीब के
 साथ । सावधान । सचेत ।

सतसर्द—(स्त्री० हि०) वह ग्रथ
 जिसमें सात मौ पद्य हों ।
 ससराती ।
 सतह—(स्त्री० सं०) बाहर का
 ऊपर का पंजाय । तल ।
 सती—(वि० सं०) पतिव्रता
 स्त्री । पति के शपथ के साथ
 विवाह में जलनेवाला स्त्री ।
 —स्य = पतिव्रत ।
 सत्कर्म—(पु० हि०) अच्छा
 काम । पुण्य ।
 सत्कीर्ति—(स्त्री० सं०) उत्तम
 कीर्ति । यश ।
 सत्याग्रह—(पु० सं०) सत्य के
 लिये धाम्रह या हठ ।
 सत्क्रिया—(स्त्री० सं०) पुण्य ।
 धर्म का काम ।
 सत्त—(पु० हि०) किसी पदार्थ
 का मार भाग । रस । तत्र ।
 काम की वस्तु ।
 सत्ता—(स्त्री० सं०) अस्तित्व ।
 अधिकार । हुक्म । ताश या
 गजीफे का वह पत्ता जिसमें
 सात बूटियाँ हों ।
 सत्तू—(पु० हि०) भुने हुए धने

साद—(स्त्री० श्र०) प्रमाणपत्र ।

सर्किफिकेट । —यात्रता =

जिसे किसी यात्र की सनद मिली हो । किसी परीक्षा में उत्तीर्ण ।

सनम—(पु० श्र०) प्रियतम ।
प्यारा ।

सनसनाहट—(पु० हि०) हवा बहने का शब्द । हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द । खौलते हुए पानी का शब्द । सनसनी ।

सनसनो—(स्त्री० अनु०) अत्यंत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता । घबराहट । सन्नाटा । नीरवता ।

सनहकी—(स्त्री० श्र०) मिट्टी का एक वस्त्र जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं ।

सनातन—(पु० सं०) अत्यंत प्राचीन । बहुत पुराना । अगाधिकाल का जो बहुत दिनों से चला आता हो । परंपरागत । नित्य । सदा रहनेवाला । शाश्वत । —धर्म

= प्राचीन धर्म । परंपरागत धर्म । साधारण जनता के बीच प्रचलित; हिन्दू धर्म । सनातनी = सनातन धर्म का अनुयायी ।

सत्र—(पु० हि०) मञ्जाशून्य । एक दम चुप । डर से चुप ।

सन्नद्ध—(वि० सं०) तैयार । आमादा । लगा हुआ । जुटा हुआ ।

सन्नाटा—(पु० हि०) नीरवता । निस्तब्धता । निर्जनता । निराज्ञापन । चुप्पी । वायु बहने का शब्द ।

सन्निकट—(अव्य० सं०) समीप ।

सन्निधि—(स्त्री० सं०) समीपता । निकटता ।

सन्निपात—(पु० सं०) त्रिदाप । सरसाम । एक बीमारी ।

सन्निविष्ट—(वि० सं०) जमा हुआ । रखा हुआ । स्थापित लगा हुआ । प्रविष्ट ।

सन्निवेश—(पु० सं०) बैठना । रखना । लगाना । भीत आना । एकत्र होना । समूह

सन्निरहित—(वि० म०) समीपपर्य
रग्यं हुआ । तैयार ।

सन्न्यास—(पु० स०) छोड़ना ।
त्याग । पैराग्य । अगुध
आश्रम । सन्न्यासी—त्यागी ।

सपत्नी—(स्त्री० म०) सौत ।

सपना—(पु० हि०) वह दृश्य
जो निद्रा की स्थिति में दिग्गद्
पड़े । सपना ।

सपरदार—(पु० हि०) गानेवाला
तथायुक्त के साथ तबला,
सारंगी आदि बजानेवाला ।
साजिन्दा ।

सपरना—(क्रि० हि०) समाप्त
होना । हो सकना ।

सपाट—(वि० हि०) बराबर ।
समतल । धिक्का ।

सपाटा—(पु० हि०) झोंका ।
तेज़ी । दौड़ । झपट ।

सपूत—(पु० हि०) अर्द्धा पुत्र ।

सपोला—(पु० हि०) साँप का
छोटा बच्चा ।

सप्तपदी—(स्त्री० स०) भोंवर ।
विवाह की एक रस्म ।

सप्तम—(वि० म०) सातवाँ ।
सप्तमी=सातवाँ ।

सप्तर्षि—(पु० म०) उत्तर दिशा
में स्थापित सात तारों का
समूह ।

सप्तस्वर—(पु० म०) सगीत के
सात स्वर—स, श, ग, म,
प, ध, नि ।

सप्ताह—(पु० म०) हफ्ता ।

सप्ताई—(स्त्री० थ०) पट्टेघाना ।
सप्तापर=बढ़ जा किसी
को चारों पट्टेघाने का काम
करता है । सप्लीमेंट=अति-
रिक्त पत्र । प्रोडपत्र । किसी
यस्तु का अतिरिक्त अंश ।

सप्रमाण—(वि० म०) प्रमाण
सहित । सचूत के साथ ।

सफ—(स्त्री० अ०) पक्ति ।
कतार ।

सफर—(पु० थ०) यात्रा ।
प्रस्थान । —सैना=सेना के
वे भिपाही जो सुरंग लगाने
तथा खाई आदि खोदने को
आगे चलते हैं ।

सफरा—(पु० थ०) पित्त । भूसा

समन

समक्ष—(अ० स०) धार्मिकों के सामने । सामने ।

समग्र—(वि० स०) समस्त । कुल । पूरा ।

समन्वित—(वि० स०) मिला हुआ । मयुक्त ।

समर्थ—(वि० स०) जिममें कोई काम करने की सामर्थ्य हो । उपयुक्त । योग्य ।

समर्थन—(स०) ताईद करना । समर्थन = समर्थन करने-वाला । समर्थित = समर्थन किया हुआ ।

समपण—(पु० स०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना । भेंट करना ।

समस्त—(वि० स०)सब । कुल ।

समस्या—(स्त्री० स०) तरह । कठिन अथवा या प्रसंग ।
—पृति = किसी छद्म के एक टुकड़ को लेकर पूरा छद्म या श्लोक बनाना ।

समाँ—(पु० द्वि०) समय । वक्त ।

समागम—(पु० स०) मिलना । भेंट । खा के साथ सम्भोग करना । मैथुन ।

समाचार—(पु० स०) सवाद । खबर । —पत्र = खबर का कागज़ । अखबार ।

समाज—(पु० स०) समूह । दल । समा ।

समाधान—(पु० स०) सदेह दूर करना ।

समाधि—(स्त्री० सं०) किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ का शव अमीन में गाढ़ना । वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों ।

समान—(वि० स०) सम । बराबर । —ता = बराबरा । समानाथ = वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो ।

समाप्त—(वि० स०) प्रथम । पूरा । समाप्ति = अन्त ।

समारम्भ—(पु० स०) समावेश । धूमधाम ।

समारोह—(पु० स०) आगव ।

समालोचना—(स्त्री० स०) किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना ।

- शालोचना । समालोचक =
समालोचना करनेवाला ।
- समाधिष्ट—(पि० स०) समाया
हुना ।
- समावेश—(पु० स०) एक पदार्थ
का दूसरे पदार्थ के अंतगत
होना ।
- समास—(पु० स०) व्याकरण
में दो या अधिक शब्दों का
सयोग ।
- समिति—(स्त्री० स०) समा ।
- समीक्षा—(स्त्री० स०) समा
लोचना ।
- समीप—(वि० म०) पास ।
नज़दीक । —वर्ती = पास
का । नज़दीक का । —स्थ =
जो समीप में हो । पास का ।
- समीर—(पु० स०) वायु । हवा ।
- समुचित—(वि० स०) उचित ।
ठीक । जैसा चाहिए, वैसा ।
उपयुक्त ।
- समुच्चय—(पु० स०) एकत्रता ।
- समुत्थान—(पु० स०) उठना ।
आरम्भ ।
- समुदाय—(पु० स०) समूह ।
कुंड । गरोह ।
- समुद्र—(पु० म०) सागर ।
—फेन = समुद्र के पानी का
फेन या भाग ।
- समुन्नत—(वि० स०) जिसकी
यथेष्ट उन्नति हुई हो ।
- समुत्सास—(पु० म०) आनंद ।
सुशी । अथ का प्रकरण या
परिच्छेद ।
- समूह—(पु० म०) डेर । राशि ।
समुदाय । कुंड ।
- समृद्धि—(स्त्री० स०) ऐश्वर्य ।
प्रभाव ।
- समेटना—(क्रि० द्वि०) बिखरी
हुई चीजों को इकट्ठा करना ।
थटोरना ।
- समेत—(अ० स०) सहित ।
साथ ।
- सम्मत—(पु० स०) राय ।
सलाह । अनुमति । सम्मति
= सलाह । राय । आदेश ।
अभिप्राय ।
- सम्मान—(पु० स०) इज्जत ।

समत्

समत्—(अ० स०) आँखों के सामने । सामने ।

समग्र—(वि० स०) समस्त । कुल । पूरा ।

समन्वित—(वि० स०) मिला हुआ । मयुक्त ।

समर्थ—(वि० स०) जिममें कोई काम करने की सामर्थ्य हो । उपयुक्त । योग्य ।

समर्थन—(स०) ताईद करना । समर्थक = समर्थन करने वाला । समर्थित = समर्थन किया हुआ ।

समर्पण—(पु० स०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना । भेंट करना ।

समस्त—(वि० स०) सब । कुल ।

समस्या—(स्त्री० स०) तरह । कठिन अवसर या प्रसंग ।
—पृत्ति = किसी छद्म के एक टुकड़ को लेकर पूरा छद्म या श्लोक बनाना ।

समों—(पु० हि०) समय । वक्त ।

समागम—(पु० स०) मिलना । भेंट । छा के साथ समोग करना । मीथुन ।

समाचार—(पु० स०) सवाद । खबर । —पत्र = पत्रकार का कागज़ । खलबार ।

समाज—(पु० स०) समूह । दल । समा ।

समाधान—(पु० स०) सदेह दूर करना ।

समाधि—(स्त्री० सं०) किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ वा शव जमीन में गाड़ना । वा स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गयीं हों ।

समान—(वि० स०) सम । बराबर । —ता = बराबरी । समानार्थ = वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो ।

समाप्त—(वि० स०) । सप्तम । पूरा । समाप्ति = अंत ।

समारम्भ—(पु० स०) समारोह । धूमधाम ।

समारोह—(पु० स०) आइवर ।

समालोचना—(स्त्री० सं०) किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना ।

आलोचना । समालोचक =
 समालोचना करनेवाला ।
 समाधिष्ट—(त्रि० स०) ममाया
 हुआ ।
 समावेश—(पु० स०) एक पदार्थ
 का दूसरे पदार्थ के अंतगत
 होना ।
 समास—(पु० स०) व्याकरण
 में दो या अधिक शब्दों का
 संयोग ।
 समिति—(स्त्री० स०) सभा ।
 समीक्षा—(स्त्री० स०) समा
 लोचना ।
 समीप—(वि० स०) पास ।
 नजदीक । —वर्ती = पास
 का । नजदीक का । —स्थ =
 जो समीप में हो । पास का ।
 समीर—(पु० स०) वायु । हवा ।
 समुचित—(वि० स०) उचित ।
 ठीक । जैसा चाहिए, वैसा ।
 उपयुक्त ।
 समुच्चय—(पु० स०) एकत्रता ।
 समुत्थान—(पु० स०) उठना ।
 आरम्भ ।

समुदाय—(पु० स०) समूह ।
 झुंड । गरोह ।
 समुद्र—(पु० स०) सागर ।
 —फेन = समुद्र के पानी का
 फेन या भाग ।
 समुन्नत—(वि० स०) जिनकी
 यथेष्ट उन्नति हुई हो ।
 समुल्लास—(पु० स०) आनन्द ।
 खुशी । अथ का प्रकरण या
 परिच्छेद ।
 समूह—(पु० स०) ढेर । राशि ।
 समुदाय । झुंड ।
 समृद्धि—(स्त्री० स०) पेशवर्ष ।
 प्रभाव ।
 समेटना—(क्रि० हि०) बिपरी
 हुई चीजों को इकट्ठा करना ।
 बटोरना ।
 समेत—(अथ० स०) सहित ।
 साथ ।
 सम्मत—(पु० स०) राय ।
 सलाह । अनुमति । सम्मति
 = सलाह । राय । आदेश ।
 अभिप्राय ।
 सम्मान—(पु० स०) इज्जत ।

गौरव । प्रतिष्ठा । सम्मानित = प्रतिष्ठित । इज्जतदार ।
 सम्मिलन—(पु० स०) मिलाप । मेल । सम्मिलित = मिला हुआ । मिश्रित । युक्त ।
 सम्मुख—(अध्य० स०) सामने । आगे ।
 सम्मेलन—(पु० स०) सभा । समाज । जमावड़ा । जमघट । मेल । सङ्गम ।
 सम्यक्—(वि० वि०) सप्रकार से । अर्थात् तरह । भला भाँति ।
 सम्राज्ञी—(स्त्री० स०) सम्राट् की पत्नी । साम्राज्य की अधीश्वरी ।
 सम्राट्—(पु० हि०) महाराजाधिराज । शहशाह ।
 सर—(पु० फ्रा०) सिर । सिरा । चोरी । (श०) एक बड़ी उपाधि जो अँगरेज सरकार देती है ।
 सरथ्रंजाम—(पु० फ्रा०) सानान । -सामग्री । असबाब ।

सरकडा—(पु० हि०) सरपत की जाति का एक पौधा ।
 सरकना—(क्रि० हि०) टलना । काम चलना । निर्वाह होना ।
 सरकग—(वि० फ्रा०) उड़द । उदृत । शरारती । मरकशी = उड़दता । शरारत ।
 सरकार—(स्त्री० फ्रा०) प्रधान । मालिक । राज्य । शासनसत्ता । गवर्नमेंट । सरकारी = राजकीय ।
 सरपत—(पु० फ्रा०) बड़ कागज या दस्तावेज जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं ।
 सरगना—(पु० फ्रा०) सरदार । अगुवा ।
 सरगम—(पु० हि०) सगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम । स्वरधाम ।
 सरगर्म—(वि० फ्रा०) जोशीला । आवेशपूर्ण । उमर से भरपूर हुआ । उत्साह । सरगर्मी = जोश । आवेश । उमर । उत्साह ।

- सरजोर—(वि० प्रा०) ज्वर ।
 दमा । उदर । सरका ।
 सरकारी = ज्वरम्ली ।
 सरायी—(स्त्री० स०) मार्ग ।
 रास्ता । पगडटी । छपीर ।
 हर्ष ।
 सरदा—(पु० प्रा०) एक प्रकार
 का रायवृक्षा जो कागुल से
 जाता है ।
 सरदार—(पु० प्रा०) किमी
 महली का नायक । धेर
 व्यक्ति । किमी प्रदेश का
 शासक । अमार ।
 सरदारो—(स्त्री० प्रा०) सरदार
 का पद ।
 सरना—(सि० हि०) निभना ।
 सरनाम—(रि० प्रा०) प्रसिद्ध ।
 मशहूर । विख्यात ।
 सरनामा—(पु० प्रा०) शीपक ।
 पत्र का आरम्भ या समापन ।
 पत्र आदि पर लिखा जाने
 वाला पता ।
 सरपंच—(पु० प्रा०—हि०)
 पंचों में बड़ा व्यक्ति । पचायत
 का समापति ।
- सरपट—(सि० हि०) चोटे की
 बटुग तंज शीर्ष ।
 सरपत—(पु० हि०) एक घास ।
 सरपगस्त—(पु० प्रा०) अभि
 भावक । सरपक । सरपगमी
 = सरपा । अभिभावनता ।
 सरपेच—(पु० प्रा०) पादा के
 ऊपर लगाने का एक जड़ाक
 गहना ।
 सरपोदा—(पु० प्रा०) धाल या
 गरतरी एकने का पपदा ।
 सरफराज—(रि० प्रा०)
 महत्प्रसाद । धन्य । कृतार्थ ।
 सरखराह—(पु० प्रा०) इतजाम
 करोवाला । कारिदा ।
 —कार = किमी कार्य का
 प्रबंध करोवाला । कारिदा ।
 सरबराही = प्रबंध । इतजाम ।
 साल असपास की निगरानी ।
 सरल—(वि० स०) सीधा ।
 भोजा भाना । निष्कपट ।
 सहज । आसान । —ता =
 सीधापन । निष्कपटता ।
 सुगमता । आसानी । सादगी ।
 भोजापन ।

सरविस—(स्त्री० ध०) नौकरी ।
त्रिदमत्त । मया ।

सरसदृज—(वि० प्रा०) दरा
भरा ।

सर सर—(पु० घनु०) ज़मीन
पर रगने का शब्द । वायु के
चलने से उत्पन्न ध्वनि ।
सरसराहट = सौँप आदि के
रेंगने से उत्पन्न ध्वनि ।

सरसरी—(वि० फा०) जल्दा
में । काम चलाने भर की ।
मोटे तौर पर ।

सरसों—(स्त्री० हि०) एक पौधा ।
एक तेजहन ।

सरस्वती—(स्त्री० स०) विद्या
या वाणियों की देवी । भारती ।
शारदा ।

सरहद—(स्त्री० फ्रा०) सीमा ।
सरहदी = सरहद सम्बन्धी ।
सीमा सम्बन्धी ।

सरहरी—(स्त्री० हि०) भूँज या
सरपत का जाति का एक
पौधा ।

सराफ—(पु० थ०) सोने चाँदी
का व्यापारी । सराफा =

मराफी का काम । मराफों
का बाज़ार । कोठी । थक ।
मराफी = मराफका काम ।
महापनी ।

सराघोर—(वि० हि०) थिखतुल
भाग हुआ । तरबतर ।

सराय—(स्त्री० फ्रा०) यात्रियों
के ठहरने का स्थान । मुना
फिरखाना ।

सरायगी—(पु० हि०) जैत धम्म
माननेवाला । जैन । शायक ।

सरासर—(थ० फा०) एक
सिरे से दूसरे सिरे तक ।
बिखुल । पृथतया ।

सराहना—(कि० हि०) सारीफ
करना । प्रशंसा करना ।
प्रशंसा । सारीफ । सराह
नीय = प्रशंसा के योग्य ।
शुद्धा । यदिया ।

सरिश्ता—(पु० फा०) अदाजत ।
बचहरी । महकमा । दफ्तर ।
सरिश्तेदार = अदाजतों में
देशी भाषाओं में मुकदमों
की मिसलें रखनेवाला काम

- घाती। मरिचनेदारी = सरिचने-
दास का काम या पद।
- मोजस्त—(क्रि० पा०) हम
समय। समो। फिखटान।
इस समय थ लिये।
- मरधानार—(पा०) बाजार में।
जनता के सामने। गुज
काम। सब के सामने।
- सरेम—(पु० पा०) एक छिप
कने वाळा पदाय, जा खेई
के स्थाप पर जिन्य में रागता
ई चीर मिमने प्रेम के काम
के जिय रोकर बाने हैं।
- मरा—(पु० पा०) एक पद।
वनम्राऊ।
- मरोकार—(पु० पा०) धारता।
जगाय। मतलब।
- सराद—(पु० प्रा०) चीर की
तरह का एक वाजा।
- सदासामान—(पु० पा०)
सामग्री। असबाब।
- सरीता—(पु० हि०) सुपारी
काने का औजार।
- सर्सम—(पु० थ०) यह स्थाप
जहाँ जानवरों का खेल
- दिखाया जाता है। पछुमों
चीर नयों का गल दिखाने
वाली मदर्ती।
- सर्पा—(पु० थ०) घोरी।
- सर्पार—(खी० प्रा०) गालिब।
प्रधान। राज्य। शासन-सत्ता।
गवामेंट। रियामत।
- सर्क्युंनर—(पु० थ०) गरती
विद्या। मरकारी धान्य पत्र
जो मय दरतरा में घुमाया
जाता है।
- सग—(पु० स०) प्रकरण।
परिच्छेद।
- सर्जेंट—(पु० थ०) हथकेदार।
जमादार।
- सर्ज—(खी० थ०) एक प्रकार का
बदिया मोटा ऊनी कपड़ा।
- सर्जन—(पु० थ०) चीर काट
करनेवाला डाक्टर। जराह।
- सर्जरी—(थ०) चीर काट करके
विक्रिया करने की क्रिया या
विद्या।
- सर्टिफिकेट—(पु० थ०) प्रमाण-
पत्र। सनद।
- सर्ट—(वि० पा०) ठंडा। शीतल।

मुस्त । नामद ।—मिज्ञाज =
मुर्दादिल । बेमुरीवत । रसा ।
सर्प—(पु० स०) साँप ।
सर्फ—(पु० अ०) सूर्च किया
हुआ ।
सर्फा—(पु० अ०) गन्ध । व्यय ।
सर्पाफ—(पु० अ०) सोने चाँदी
या रपपू जैसे का व्यापार
करनेवाला ।
सर्व—(वि० स०) सारा । कुल ।
सवन = सब कुछ जानने
वाला । —नाम = व्याकरण
में वह शब्द जो सज्ञा के
स्थान में प्रयुक्त होता है ।
—नाश = सत्यानाश । पूरी
धरबादी । —व्यापक = सब
में रहनेवाला । इश्वर । —
श = समूचा । पूर्यरूप से ।
—श्रेष्ठ = सब में बढ़ा । —
स्व = सब कुछ । सारी सम्पत्ति ।
सवाग = सारा धदन । सपूय
शरीर । सर्वाधिकार = पूरा
इच्छितपार ।
सवतोमुख—(वि० सं०) जिसका
मुँह चारों ओर हो । जो सब

दिशाओं में प्रवृत्त हो । पूर्ण ।
व्यापक ।
सर्वत्र—(अव्य० स०) सब कहीं ।
हर जगह ।
सर्वथा—(अव्य० स०) सब
प्रकार से । बिल्कुल । सब ।
सवदा—(अव्य० स०) हमेशा ।
सदा ।
सव—(पु० अ०) भूमि की नाप
पैमाइश । वह सरकारी
विभाग जो भूमि को नापकर
उसका गन्शा घनाता है ।
सलतनत—(स्त्री० अ०) राज्य ।
शादशाहत । साम्राज्य ।
सलमा—(पु० अ०) मोने या
चाँदी का तार जो बेलबूटे
घनाने के काम में आता है ।
बादला ।
सलाइ—(स्त्री० द्वि०) धातु की
बनी हुई कोई पतली छड़ ।
दियासलाइ । सलाने की मज़
दूरी ।
सलाख—(स्त्री० पा०) शलाका ।
सलाइ ।
सलाद—(पु० अ०) गाजर, मूला,

राइ, प्याज आदि के पत्तों का
थँगेरेज़ी ढग से मिरके आदि
में ढाला हुआ अचार ।

सलाम—(पु० अ०) प्रणाम ।
वदगी । मलामी = सलाम
करना । सिपाहियाना सलाम ।
तोपों या घन्टूकों की वाद
जो किमी बड़े अधिकारी या
माननीय व्यक्ति के आने पर
दागी जाती ह ।

सलामत—(अ०) सब प्रकार की
आपत्तियों से बचा हुआ ।
रक्षित । तदुरुस्त औ जिन्ना ।
आयम । बरकरार । कुशल
पूरक । सैरियत से । सलामतो
= तदुरुस्ती । स्वस्थता ।
कुशल ।

सलाह—(स्त्री० अ०) सम्मति ।
राय । मशवरा । —कार =
राय देनेवाला ।

सलीका—(पु० अ०) ढग ।
तमीज़ । हुनर । तदज्ञीय ।
सम्बत ।

सलीता—(प० देश०) एक प्रकार

सलीपर—(पु० अ०) सलपट ।
जूती । सड़ाऊँ । यह लकड़ी का
तख़ता जो रेल की पटरियों के
नीचे बिछाया जाता है ।

सलीस—(वि० अ०) सहज ।
आसान । समतल । महाबरे
दार और चलती हुई (भाषा) ।

सलूक—(पु० अ०) बरताव ।
व्यवहार । मेल । सद्भाव ।

सलोनो—(पु० हि०) हिन्दुओं
का एक त्योहार । रथाबधन ।

सवा—(स्त्री० हि०) चौथाई
सहित ।

सवाई—(स्त्री० हि०) शरण का
एक प्रकार । जयपुर के महा
राजाओं की एक उपाधि ।
एक और चौथाई । सवा ।

सवाव—(पु० अ०) पुण्य ।

सवार—(पु० क्रा०) घोड़े पर
चढ़ा हुआ । रिसाले का
सिपाही । किसी चीज़ पर
चढ़ा या बैठा हुआ । सवारी =
चढ़ने की क्रिया । सवार होने
की वस्तु । वह व्यक्ति जो
सवार हो । जलार ।

सवाल—(पु० ध०) पछना। वह जो कुछ पूछा जाय। दरखास्त। माँग। विनती। भिक्षा की याचना। गणित का प्रश्न।
—जवाब = बहस। उत्तर प्रत्युत्तर। तत्रार। ऋगदा।
सवेग—(पु० हि०) प्रातःकाल। सुबह। निश्चित समय के पूर्व का समय।
सपैया—(पु० हि०) तौलने का एक घाट। एक छद्। एक पहाडा।
सशक्त—(वि० स०) शक्ति। भयभीत।
ससुर—(पु० हि०) पति या पत्नी का पिता। श्वसुर।
सम्ता—(वि० हि०) जो महँगा न हो। घटिया। मामूली। सस्ती = सस्तापन। वह समय जब कि सब चीजें सस्ते दाम पर मिला करती हों।
सस्त्रीक—(वि० स०) स्त्रीसहित।
सहकार—(पु० सं०) मिलकर काम करना। सहयोग। सहकारिता = सहायता। नदद।

साथ। मिलकर काम करना। सहकारी = साथ करनेवाला। साथी। सहायक। मददगार।
सहगमन—(पु० स०) सती होने की क्रिया। सहगामिनी = वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय। स्त्री। साथिन।
सहचर—(पु० स०) साथ चलने वाला। नौकर। मित्र। दोस्त। सहचरी = पत्नी। भाव्याँ। सखी। सहेली।
सहज—(वि० स०) साधारण। धासान। सुगम।
सहन—(पु० स०) धरदारत करना। क्षमा। (क्रा०) धाँगन। चौक। —शील = धरदारत करनेवाला। सतोपी। सप्र करनेवाला। सहना = धरदारत करना। झेलना। फल भोगना। शोक धरदारत करना।
सहनक—(पु० अ०) रक्षाधी।
सहपाठी—(पु० हि०) वह जो

माथ में पड़ा हो । शास-
केजो ।

सहम—(क्रा०) भय ।

सहमत—(त्रि० स०) एक मत
का ।

सहमना—(क्रि० क्रा०) भयभीत
होना । डरना ।

सहयोग—(पु० म०) साथ मिल
कर काम करना । मदद ।

सहायता । राजनीति में
सरकार के साथ मिलकर काम

करने, श्री उमके पद आदि
ग्रहण करने का सिद्धांत ।

सहयोगी—साथ काम करने
वाला । साथी । सरकार के

साथ मिलकर काम करनेवाला
प्यति ।

सहर—(पु० अ०) प्रातःकाल ।
सवेरा । जादू । टोना ।

सहृग—(पु० अ०) जगल ।
वन ।

सहरी—(स्त्री० द्वि०) सफरी ।
मछली ।

सहल—(वि० अ०) सरल ।
—

सहलाना—(क्रि० द्वि०) घीरे
घीरे किसी वस्तु पर हाथ

फेरना ।

सहवास—(पु० स०) मैथुन ।
साथ ।

सहसा—(अव्य० स०) एकाएक ।
अचानक ।

सहस्र—(पु० स०) दस सौ की
संख्या ।

सहानुभूति—(स्त्री० म०) हम-
दर्दी ।

सहायक—(वि० स०) मददगार ।
सहायता—(स्त्री० स०) मदद ।

सहारा—(पु० द्वि०) आसरा ।
भरोसा । इतमीनान ।

सहिजन—(पु० द्वि०) वृद्ध ।
सहिष्णु—(स०) सहनशील ।

—ता=सहनशीलता ।

सही—(वि० क्रा०) ठीक ।
यथार्थ । शुद्ध । हस्ताक्षर ।

दस्तखत । सही सलामत =
स्वस्थ । तन्दुरुस्त । ठीक-
ठीक ।

सहूलियत—(स्त्री० फा०)
आसानी । सुगमता ।

सहृदय—(वि० स०) दयालु ।
रसिक । सज्जन । शब्दे
स्वभावात्मा । प्रसन्नचित्त ।
सुशुद्धि । —ता = मौजन्य ।
रसिकता । दयालुता ।

सहेजना—(क्रि० हि०) भली
भाँति जाँचना । सँभालना ।
शुद्धी तरह कह सुनकर सुपुद्
धरना ।

सहेली—(स्त्री० हि०) सगिनी ।
अनुचरी । दासी ।

सहोदर—(पु० स०) एक माता
के पुत्र । सगा ।

सांगोपाग—(शब्द० स०)
सपूण । समस्त । शर्तों और
उपागों सहित ।

साँचा—(पु० हि०) ठूण ।
मोहक (छ०) छापा । जुलाहों
की वे दो लकड़ियाँ जिनके
बीच में कूँच के साँझ को
दशाहर पतते हैं ।

साँटी—(स्त्री० हि०) पतली
छाटी छड़ी । साँस की कमची ।

साँड—(पु० हि०) वह बैल या
घोड़ा जिसे लोग केवल

जोड़ा खिलाने के लिये पालते
हैं । वह बैल जिसे मृतक की
स्मृति में हिन्दू लोग दागकर
छोड़ देते हैं । मजबूत ।
शुद्धजन ।

साँडी—(स्त्री० हि०) ऊँना,
जिसकी घाँट बहुत तेज़ होती
है ।

साँडिया—(पु० हि०) तेज
चलनेवाला ऊँट । साँडनी
पर सवारी करनेवाला ।

सात्वना—(पु० सं०) आश्वासन ।
साध्य—(वि० स०) सध्या
सयधी । सध्या का ।

साँप—(पु० हि०) एक कीड़ा ।
सप । नाग । विषधर । बहुत
दुष्ट आदमी । साँपिन = साँप
की मादा ।

साप्रत—(शब्द० स०) इसी
समय । अभी । तत्काल ।

साप्रदायिक—(वि० स०) किसी
संप्रदाय से अथवा रमने
वाला । संप्रदाय का ।

साँभर—(पु० हि०) राजपूताने
की एक भाँस और उसके

पानों से बना हुआ नमक ।
 सृगों की एक जाति ।
 साँवता—(वि० हि०) श्यामवर्ण
 का । —पन = श्यामता ।
 साँवाँ—(पु० हि०) एक धन्न ।
 साँस—(स्त्री० हि०) श्वास ।
 दम । श्वकाश । गु जाइश ।
 दरार । दम फूलने का रोग ।
 दमा ।
 साँसत—(स्त्री० हि०) दम घुटने
 का सा कष्ट । कफट । बयेबा ।
 —घर = कालकोठी । बहुत
 रंग और छोटा मकान जिसमें
 हवा या रोशनी न आती हो ।
 सा—(अ० हि०) समान ।
 तुल्य । बराबर ।
 साइकोपीडिया—(स्त्री० अ०)
 विश्वकोष ।
 साइत—(स्त्री० अ०) पत्त ।
 लहमा । मुहत्त । शुभलक्ष ।
 साइन—(अ०) हस्ताक्षर ।
 साइनबोर्ड—(पु० अ०) वह
 तख्ता या टीन आदि का
 टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति,
 दूकान या व्यवसाय आदि

का नाम और पता आदि या
 कोई सूचना बड़े-बड़े अक्षरों
 में लिखी हो ।

साइस—(स्त्री० अ०) विज्ञान ।

साइर—(पु० अ०) ऊपरी थाम
 दनी ।

साई—(स्त्री० हि०) पेशगी ।
 बयाना । वह कौदा वा जान-
 वरों के घावों में पड़ जाता है ।

साइस—(पु० हि०) उड़ आदमी
 जो घोड़े की सवारदारी और
 सेवा करता है । साईसी =
 साईस का काम ।

साना—(पु० हि०) सबूत ।
 कीर्ति का स्मारक ।

साकार—(वि० स०) जिसका
 कोई आकार हो । साचाव ।
 स्थूल । मह्य का मूर्तिमान
 रूप ।

साकिा—(वि० अ०) निवासी ।
 रहनेवाला ।

साफी—(पु० अ०) शराब
 पिलायाला । माशूफ़ ।

साफेन—(पु० म०) अयोध्या
 नगरी । अयोधपुरी ।

साक्षात्—(अव्य० स०) सामने ।
सम्मुख । भेंट । मुलाकात ।
—धार = भेंट ।

साक्षी—(पु० हि०) गवाह ।
गवाही । शहादत ।

साख—(पु० हि०) धाक ।
विश्वास । बाज़ार में
व्यापारी का विश्वास ।

साग्री—(पु० हि०) साड़ी ।
गवाही । सतों के पद या
दोहे ।

सारजू—(पु० हि०) शाल वृक्ष ।

साग—(पु० हि०) शाक । भाजी ।
तरकारी । पकाई हुई भाजी ।

सागर—(पु० म०) समुद्र ।
बड़ा तालाब । झील । स-या
मियों का एक भेद ।

सागू—(पु० हि०) ताड़ की
जाति का एक पेड़ । सागू
ताना = सागू नामक वृक्ष के
तने का गूदा जो कूटकर दानों
के रूप में सुखा लिया जाता
है । साबूदाना ।

साज—(पु० क्रा०) सजावट का
काम । सजावट का सामान ।

बाजा । लड़ाई के हथियार ।
बढ़ियों का एक प्रकार का
रटा । —बाज = तैयारी ।
मेलचोल । —सामान =
सामग्री । असबाब । ठागवाट ।

साजिदा—(पु० क्रा०) साज या
बाजा बजानेवाला । सपर
दाई । समाजी ।

साजिश—(स्त्री० क्रा०) किसी
को हानि पहुँचाने में मलाह
या मदद देना । पड्य-त्र ।

साम्ना—(पु० हि०) शरावत ।
हिस्मदारी । हिस्सा । भाग ।
साम्नी = सामेदार । हिस्से
दार । सामेदार = हिस्सेदार ।
सामेदारी = शरावत ।

साटी—(स्त्री० देश०) कमची ।
साँटा ।

साठ—(वि० हि०) पचास और
दस ।

साठी—(पु० हि०) एक प्रकार
का धान ।

साडी—(स्त्री० हि०) स्त्रियों के
पहनने की धाती । सारी ।

साढसाती—(स्त्री० हि०)
 फलित ज्योतिष के अनुसार।
 शनि ग्रह की साढे मात वष,
 साढेमात मास या साढेमात
 दिन आदि को दशा, जिसका
 फल बहुत बुरा होता है।
 साढेसाती।

साढी—(स्त्री० हि०) मला ।

साढ्—(पु० हि०) साली का
 पत्ति। पत्नी की बहन का पत्ति।

सात्—(वि० हि०) छ से एक
 अधिक।

सात्विक—(वि० स०) सतो-
 गुणी।

साथ—(पु० हि०) मेल मिलाप।
 सहित। से। प्रति। साथी =
 संगी। दोस्त। मित्र।

सादा—(वि० क्रा०) बिना बना
 बट का। साधारण। बिना
 मिलावट का। प्राकृतिक।
 बिना रंग का। सफेद।
 सीधा।

सादगी—(स्त्री० क्रा०) सादा
 पन। सीधापन। —पन =
 सादगी। सरलता।

सादृश्य—(पु० म०) समानता।
 बराबरी। तुलना।

साधक—(पु० स०) साधना
 करनेवाला। योगी। तपस्वी।

साधन—(पु० स०) विधान।
 सामग्री। सामान। उपाय।
 युक्ति। सहायता। कारण।
 सबष। तपस्या।

साधना—(स्त्री० स०) सिद्धि।
 उपामना। तपस्या पूरा
 करना। निशाना लगाना।
 नापना। ठहराना। इच्छा
 करना।

साधारण—(वि० स०) मामूली।
 आम। —त = मामूली तौर
 पर। आमतौर पर। बहुधा।
 प्राय।

साधु—(पु० म०) धार्मिक
 पुरुष। महात्मा। सज्जन।
 भला आदमी। मुनि। प्रश-
 नीय। योग्य। —ता =
 साधुओं का आश्रय।
 सज्जनता। भलाइ। सीधा
 पन। —साधु = धन्य धन्य।
 धाह वाह।

साध्य—(वि० सं०) पूरा हा
सम्पन्न के योग्य । महज्ज ।
धामान । जिस साबित करवा
हो ।

साध्या—(वि० सं०) पवित्रता ।
शुद्ध धरित्रवाली स्त्री ।

सानद—(वि० सं०) धानक
पूरक ।

सात—(पु० हि०) यह पत्थर की
धक्का ज़िम पर अस्त्रादि तेज
किए जाते हैं । शाल ।

सानी—(स्त्री० हि०) यह चारा
जो पानी में सानकर पशुओं
को खिलाया जाता है ।
(अ०) बराबरी का । मुत्राश्ले
का ।

साफ—(वि० अ०) स्वच्छ ।
निर्मल । शुद्ध । प्रालिस ।
जो देखन में स्पष्ट हो ।
उज्ज्वल । तिरुपट । जो स्पष्ट
सुनाई पड़े या समझ में
आवे । सदा । बारा । व ऐव ।
हिसाब साफ होना ।
विजकुल ।

साफा—(पु० हि०) तिर पर
बाँधन का पगड़ी । मुढामा ।

साफी—(स्त्री० हि०) रमाळ ।
दस्तो । यह बरदा जो गाँजा
पानेवाले चित्रम क नाचे
लपेटते हैं । भाँग धानने का
कपड़ा । रदा ।

सायिक—(वि० अ०) पहले का ।
पूव पा ।

सायिका—(पु० अ०) जान पड़
धान । मुजाशत । सयध ।
व्यरदार ।

सावित—(वि० क्रा०) प्रमाखित ।
सिद्ध । पूरा । दुरस्त । ठीक ।

सानुन—(पु० अ०) रासायनिक
क्रिया से बनाया हुआ एक
प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर
और कपड़े साफ किये जाते
हैं । (अ०) सौप ।

सामजस्य—(पु० सं०) औचित्य ।
उपयुक्तता । अनुकूलता ।

सामत—(पु० सं०) वीर । योद्धा ।

साम—(पु० हि०) मधुर मापण ।
राजनाति के चार अंगों या
उपायों में से एक ।

सामग्री—(स्त्री० स०) सामान ।
 जूरी । चीज़ । साधन ।
 सामना—(पु० द्वि०) भेंट ।
 मुलाकात । धामे की धोर
 का हिस्सा । आगा । मुग
 बला । नमस्सता ।
 सामन—(क्रि० द्वि०) सम्मुख ।
 धामे । मौजूदगो में । [मुफा-
 बले में । विरुद्ध ।
 सामरिक—(वि० स०) युद्ध
 का ।
 सामर्थ्य—(पु० स०) बल ।
 शक्ति ।
 सामाजिक—(वि० स०) समाज
 का । सभा का । सभा से
 सम्बन्ध रखनेवाला ।
 सामान—(पु० फा०) सामग्री ।
 माल । असबाब । धौज़ार ।
 बन्दोबस्त । इन्तज़ाम ।
 सामान्य—(वि० स०) साधा
 रण । मामूली । —त =
 साधारण राति से ।
 सामुद्रिक—(वि० स०) समुद्र
 का । इस्तरेखा विज्ञान ।

स०) एक

सिद्धान्त जिसके अनुसार सब
 में समान रूप में संपत्ति का
 बँटवारा होता है ।
 साम्राज्य—(पु० स०) सार्व
 भौम राज्य । सबतन्त ।
 सायकाल—(पु० स०) संध्या ।
 शाम । सायकालीन = मध्य
 के समय का । शाम का ।
 सायटिफिक—(अ०) विज्ञान
 मयधी ।
 सायस—(स्त्री० अ०) विज्ञान ।
 सायत—(स्त्री० अ०) शुभ-
 मुहूर्त । अच्छा समय ।
 सायदान—(पु० फा०) बरा
 मदा ।
 सायर—(पु० अ०) वह भूमि
 जिसकी धाय पर कर नहीं
 लगता । फुटकर ।
 सायल—(पु० अ०) मवाज करने
 वाला । प्रार्थी ।
 साया—(पु० फा०) छाया ।
 छाँह । परछाई । प्रभाव ।
 (अ०) यूरोपियन बियों
 का घाँघरे को तरह का एक
 पहनावा ।

सारंगी—(स्त्री० हि०) एक
याजा ।

सार—(पु० स०) तत्व । निष्कल्प ।
रस । गूदा । नलीजा । बल ।
(हि०) पालन । रक्षा ।
—गर्भित = जिसमें तब भरा
हो । मार-युक्त ।

सारजट—(पु० अ०) पुर्जिस के
सिपाही का जमादार ।

सारंगी—(पु० म०) रथादि का
चलानेवाला । सूत ।

सारस—(पु० स०) एक पक्षी ।

मार्टिफिकेट—(पु० अ०)
प्रमाण पत्र । सनद ।

सार्थक—(वि० स०) अर्थ सहित ।
सफल । सिद्ध ।

सार्थजन्त्रि—(वि० स०) सब
जागों से सयध रहनेवाला ।

सार्थभोम—(पु० स०) समस्त
भूमि सबधी । सपूर्ण भूमि
का । चक्रवर्ती ।

साल श्रमोनिया—(पु० अ०)
नौसादर ।

सालन—(पु० हि०) मसालेदार
तरकारी ।

सालना—(क्रि० हि०) दुःख
देना । खटकना । फसकना ।
धुमना । गदना । राट क
पाये में छेद करके उसमें पाटी
बैठाना ।

सालसा—(पु० अ०) खून साफ
करने का एक अँगरेज़ी काढ़ा ।

साला—(पु० हि०) पत्नी का
भाई ।

सालाना—(वि० क्रा०) वार्षिक ।
स।यधान—(वि० स०) सचेत ।

होशियार ।

सावन—(पु० हि०) भावण का
महीना ।

साष्टांग—(वि० स०) आठों अंग
सहित ।

साहय—(पु० अ०) स्वामी ।
मालिक । महाशय । एक
सम्मान सूचक शब्द । गोरी
जाति का कोई व्यक्ति ।
फिरगी । —जादा = भले
आदमी का लड़का । पुत्र ।
—सजामत = बंदगी । सजाम
साहबी = साहब का । साहब
सबधी । प्रभुता । बदाई ।

साहस—(पु० म०) हिम्मत ।

साहसिक—साहस करने-

वाला । साहसी । निभय ।

साहसा—हिम्मत । दिखे ।

साहित्य—(पु० म०) विचार या

ज्ञान । सध और पय मन्त्रों

का समूह । (श०) लिटरचर ।

सादी—(स्त्री० हि०) एक अनु ।

साहू—(पु० हि०) मजदूर ।

भलामानस । महाजन ।

धनी । साहूकार—बड़ा महा

जा या व्यापारी । धनाढ्य ।

सिकोरा—(पु० श०) कुर्नै या

वेड़ ।

सिंघारदान—(पु० हि०) छोटा

सदुक जिममें शाशा, कधी

आदि श्रद्धार की सामग्री

रखी जाती है ।

सिंघाडा—(पु० हि०) पानी में

पैदा होनेवाला एक फल ।

सानारों का एक चीज़ार ।

एक प्रकार की आतिशबाज़ी ।

सिंचाइ—(स्त्री० हि०) पानी

छिड़कने का काम । सिंचने का

काम । सिंचने की मज़दूरी ।

सिंदूर—(पु० म०) हंपुर । सिंदे -

सीमापगतो सिंदू क्षिपां

अपना मार्ग मे भरतो है ।

सिंदूरिया—सिंदूर के रंग का ।

रूख जाल ।

सिंधु—(पु० त०) एक प्रसिद्ध

नदी जो पणव क परिवस

भाग में है । समुद्र ।

सिंह—(पु० म०) शेर वधर ।

बेसरी । उपोतिप में एक

राशि । —नाद—सिंह की

गरज । युद्ध में गीरों का

जनकार । सिंहाश्लेषन—

आगे बढ़ने के पहले विद्युली

यातों का संछेद में कथन ।

सिंहासन—राजा या देवता

के बैठने की चौकी ।

सिंश्वार—(पु० हि०) शृगाल ।

गीदड़ ।

सिकजधीन—(स्त्री० का०) सिरके

या नींबू के रस में पका हुआ

शरबत ।

सिकड़ी—(स्त्री० हि०) किराड़

की कुटी । सॉफल । सोने का

एक गहना । बरघनी ।

नियापा—(पु० क्रा०) मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने को रोति ।

सियार—(पु० हि०) गोटद ।

सियासत—(स्त्री० अ०) देश का शासन = प्रबन्ध तथा व्यवस्था ।

सियाहगोश—(पु० क्रा०) काले कागवाला । बनबिलाय ।

सियाहा—(पु० क्रा०) आय व्यय की बही । रोज़नामचा ।
—नदीम = सियाहा का लिखनेवाला ।

सिर—(पु० हि०) कपाज । खोपड़ी । ऊपर का छोर । सिता । चोगा ।

सिरमा—(पु० क्रा०) धूप में पकाकर खटा किया हुआ ईस, अगूर, जामुन आदि का रस । —कश = अरक खींचने का एक यंत्र ।

सिरकी—(स्त्री० हि०) सरकड़े या सरई की तीलियों की बनी हुई रटी ।

सिरखपी—(स्त्री० हि०) हैरानी ।

सिरजना—(क्रि० हि०) बनाना ।
सिरजनहार = रचनेवाला । बनानेवाला । परमेरवर ।

सिरताज—(पु० हि०) मुकुट । शिरोमणि ।

सिरतापा—(क्रा०) सिर से पाँव तक । आदि से अंत तक । सपूण ।

सिरनामा—(पु० क्रा०) लिफाफे पर लिखा जानवाला पत्र । शार्पक । हेडिंग ।

सिरपेच—(पु० क्रा०) पगड़ी । पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण ।

सिरपोश—(पु० क्रा०) टोप । कुलहा । बटूक के ऊपर का कपड़ा ।

सिरफेंटा—(पु० हि०) साक्रा । पगड़ी । मुरेठा ।

सिरवा—(पु० हि०) वह कपड़ा जिससे अनाज घोसाने के समय हवा करते हैं ।

सिरस—(पु० हि०) एक पेड़ ।

सिरहाना—(पु० हि०) चरपाई
में सिर की धोर का भाग।
पाट का सिरा।
सिरा—(पु० हि०) छोर। ऊपर
का भाग। आखिरी हिस्सा।
भोक। अनी। अगला हिस्सा।
सिराउन—(पु० हि०) पाटा।
हंगा।
सिरिस्ता—(पु० फ्रा०) विभाग।
मुद्रकमा। सिरिस्तेदार =
अदालत का वह कर्मचारी जो
मुद्रकमें के कागज़ पत्र रखता
है। सिरिस्तेदारी = सिरिस्ते
दार का काम या पद।
सिरोपाच—(पु० हि०) सिर से
पैर तक का पहनावा। प्रिल
अत।
सिल—(स्त्री० हि०) पथर की
चौकोर पटिया जिस पर
मटाका आदि पीसते हैं।
काठ की पटरी। (पु० अ०)
तपेदिक। ज्यराग।
सिलपडी—(स्त्री० हि०) एक
चिकना मुलायम पथर।
खरिया मिट्टी।

मिलपट—(वि० हि०) साफ।
धिमा हुआ। मिटा हुआ।
घोपट।
सिलवट—(स्त्री० देश०) बल।
शिकन। सिकुवन।
सिलसिला—(पु० अ०) क्रम।
परपरा। जज़ीर। श्रृंखला।
व्यवस्था। तरतीब। कुल
परपरा। शानुकम। (वि०
हि०) रपटन घाटा। चिकना।
—बदी = तरतीब। इतारबदी।
पक्ति बँधाई। सिलसिलेवार
= ममश।
सिलाह—(पु० अ०) हथियार।
शस्त्र। —गाना = अस्त्रा-
गार।
सिलाई—(स्त्री० हि०) सीने का
काम। सीने का डग। सीने
की मज़दूरी। टाँका। सीघन।
सिलाजीत—(पु० हि०) एक
दवा।
सिलाघट—(पु० हि०) सग
तराश।
सिलाह—(पु० अ०) जिरह
बहुतर। कवच। हथियार।

अस्त्र-शस्त्र । —बद =
सशस्त्र । हथियारबद ।
—भाज = हथियार बनाने
वाला ।

सिलोटा—(स्त्री० हि०) भाँग,
मसाला आदि पोसन का
छोटी सिल ।

मिरला—(पु० हि०) गत या
खलियान में गिरा हुआ अनाज
का दाना ।

सिल्ला—(स्त्री० हि०) हथियार
की धार चोखी करने का
पत्थर । सान । धारे से
चौरकर पेड़ी स निकाला हुआ
तट्टा । पत्थरी । पत्थर की
छाटी पतली पटिया ।

सिबइ—(स्त्री० हि०) आटे के
सूत जो दूध में पकाकर खाए
जाते हैं । सिबियाँ ।

मिधाय—(त्रि० वि० अ०) अति
रिक्त । अलावा । छोड़कर ।

सिचार—(स्त्री० हि०) पाना में
फैलनेवाला एक तृण ।

सिचिल—(वि० अ०) नगर
सयधी । नागरिक । माजी ।

सभ्य । मिन्ननसार । —सजन
= सरकारी बटा डाक़र ।—
सर्विस = अगरेजी सरकार की
एक विशेष परीचा । —सूट =
दीवानी मुकदमा । —कोट =
दीवानी अदालत । सिवि
लियन = सिविल सर्विस
परीचा पास किया हुआ
मनुष्य । —लॉ = दिवानी
कानून । देश के शासन और
प्रबंधविभाग का कर्मचारी ।
मिचिलिज्ञेशन = सम्यता ।
सिविलाइज़्ड = सभ्य ।
शाहस्ता ।

सिसकना—(क्रि० अनु०) बहुत
हिचकियाँ भरना ।

सो—(वि० स्त्री० हि०) समान ।
सरदी लगने पर मुँह स
निकला हुआ शब्द ।

सीक्रेट—(अ०) गुप्तमेद । रहस्य ।

सीख—(स्त्री० फा०) छाहे की
छड़ । —घा = छाहे की मोख
जिस पर मास बपत्थर
भूतते हैं ।

सीखना—(क्रि० हि०) जान

- फारी प्राप्त करना । काम करो
का दग जानना ।
- सीटी—(स्त्री० हि०) मुँह स
निकाला हुआ भारीक स्तर ।
एक प्रकार का धागा ।
पिपहरी ।
- सीठना—(पु० हि०) विवाह
की गारु ।
- सीठा—(वि० हि०) नीरस ।
पीका । बेजायश ।
- सीठी—(स्त्री० हि०) सारहीन
पदार्थ ।
- सीड—(स्त्री० हि०) तरी ।
नमी ।
- सीढ़ी—(स्त्री० हि०) ज़ीगा ।
- सीतलपाटी—(स्त्री० हि०)
बनिया चिकनी घटाई ।
एक प्रकार का धारीदार
कपड़ा ।
- सीता—(स्त्री० स०) जानकी ।
श्रीरामचन्द्र की पत्नी ।
- सीतमार—(पु० स०) सिसकारी ।
- सीधा—(वि० हि०) सरल ।
भला । अनुकूल । आसान ।
सहज । दहिना । —पन =

- भोजापन । सीधे = बिना कहीं
मुड़े या रुके । शिष्ट व्यवहार
से । नरमी स । शांति के
साथ । शिष्टता के साथ ।
- सीन—(पु० अ०) दरय । धिये
तर के रगमच का कोई परदा ।
सीनरी = प्राकृतिर दरय ।
- सीना—(क्रि० हि०) टाँकों से
मिलाना या जोड़ना । टाँका
मारना । (पु० फ्रा०) छाती ।
वयस्यज । —तोड़ = दुस्ती
का एक पेंच ।
- सीप—(पु० हि०) सुतुही ।
सीप नामक समुन्नी जलजंतु ।
- सीमा—(स्त्री० स०) हद ।
मर्यादा । सीमांत = सरहद ।
गाँव की सीमा । —बद्ध =
रेखा से घिरा हुआ । हद के
भीतर किया हुआ । सीमित =
मर्यादित । हद बँधा हुआ ।
सीमोल्लेखन = हद पार करना ।
मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना ।
- सीमाव—(पु० फ्रा०) पारा ।
- सीर—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन
जिसे भूस्वामी या ज़मादार

सिलौटी

अस्त्र शस्त्र । —बद =
सशस्त्र । हथियारबद ।
—साज = हथियार बनाने
वाला ।

सिलाटी—(स्त्री० हि०) भाँग,
मसाला आदि पोसने का
छोटी सिल ।

सिल्ला—(पु० हि०) खेत या
सल्लियान में गिरा हुआ अनाज
का दाना ।

सिल्ला—(स्त्री० हि०) हथियार
की धार चौखी करने का
पत्थर । सान । धारे से
चीरकर पेड़ी स निकाला हुआ
तड़ता । पटरी । पत्थर की
छाटी पतली पत्थिया ।

सिवइ—(स्त्री० हि०) आटे के
सूत जो दूध में पकाकर खाए
जाते हैं । सिवैयाँ ।

सिवाय—(क्रि० वि० अ०) अति
रिक्त । अलावा । छोड़कर ।

सिपार—(स्त्री० हि०) पानी में
फैलनेवाला एक नृत्य ।

सिविल—(वि० अ०) नगर
सयधी । नागरिक । माली ।

सभ्य । मिलनसार । —सर्जन
= सरकारी बच्चा डाक्टर ।—
सर्विस = अगरेजी सरकार की
एक विशेष परीक्षा ।—सू =
दीवानी मुकदमा ।—कोर्ट =
दीवानी अदालत । सिवि
लियन = सिविल सर्विस
परीक्षा पास किया हुआ
मनुष्य । —लॉ = दिवानी
ज्ञानून । देश के शासन और
प्रबंधविभाग का कर्मचारी ।
सिविलिज़ेशन = सभ्यता ।
सिविलाइज़्ड = सभ्य ।
शाइस्ता ।

सिसक्ना—(क्रि० अनु०) बहुत
हिचकियाँ भरना ।

सो—(वि० खो० हि०) समा ।
सरदी लगने पर मुँह स
निकला हुआ शब्द ।

सीक्रेट—(अ०) गुप्तभेद । रहस्य ।

सीप—(स्त्री० फा०) लोहे का
छद्म । —चा = लोहे की सीप
जिस पर मास लपटकर
मूतते हैं ।

सीखना—(क्रि० हि०) जान

- कारी प्राप्त करना । काम करने का ढग जानना ।
- सीटी—(स्त्री० हि०) मुँह से निकाला हुआ बारीक स्तर । एक प्रकार का धागा । विपहरी ।
- सीठना—(पु० हि०) विवाह की गाली ।
- सीठा—(वि० हि०) नीरस । फीका । बेजायदा ।
- सीठी—(स्त्री० हि०) सार हीन पदार्थ ।
- सीड—(स्त्री० हि०) तरी । नमी ।
- सीढ़ी—(स्त्री० हि०) ज़ीना ।
- सीतलपाटी—(स्त्री० हि०) बढ़िया चिकनी चटाई । एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ।
- सीता—(स्त्री० स०) जानकी । श्रीरामचन्द्र की पत्नी ।
- सीतकार—(पु० स०) सिक्कारी ।
- सीधा—(वि० हि०) सरल । भला । अनुकूल । आसान । सहज । दहिना । —पन =

भोजापन । सीधे = बिना कहीं मुड़ या रुके । शिष्ट पवहार से । नरमी से । शक्ति के साथ । शिष्टता के साथ ।

- सीन—(पु० अ०) दरय । थियेटर के रगमच का कोई परदा ।
- सीनरी = प्राकृतिक दरय ।
- सीना—(कि० हि०) टाँकों से मिलाना या जोड़ना । टाँका मारना । (पु० क्रा०) छाती । वक्षस्थल । —तोड़ = कुरती का एक पेंच ।
- सीप—(पु० हि०) सुतुही । सीप नामक समुन्नी जलजतु ।
- सीमा—(स्त्री० स०) हद । मर्यादा । सीमात = सरहद । गाँव की सीमा । —बद्ध = रेखा से विरा हुआ । हद के भीतर किया हुआ । सीमित = मर्यादित । हद बँधा हुआ । सीमोल्लघन = हद पार करना । मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना ।
- सीमाव—(पु० क्रा०) पारा ।
- सीर—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसे भूस्वामी या ज़मींदार

सुधर्म—(पु० स०) उत्तम धर्म ।
पुण्य कर्तव्य ।

सुधा—(स्त्री० स०) अमृत ।
—निधि = चंद्रमा ।—कर =
चंद्रमा ।

सुधार—(पु० हि०) सुधरने की
क्रिया । सशोधन ।—क =
सशोधक । दोषों या त्रुटियों
का सुधार करने वाला ।
—ना = दोष या बुराई दूर
करना । सँवारना ।

सुाना—(त्रि० हि०) श्रवण
करना । किसी के कथन पर
ध्यान देना । भली, बुरी या
उल्टी सीधी बातें श्रवण
करना ।

सुनवहरी—(स्त्री० हि०) एक
प्रकार का रोग ।

सुनवाई—(स्त्री० हि०) मुकदमे
थादि का पेश होकर सुना
जाना । किसी शिकायत या
परिवाद थादि का सुना
जाना ।

सुनसान—(वि० हि०) द्राली ।
निजन । सदाटा ।

सुनहला—(वि० हि०) सोने
के रंग का । सोने का मा ।

सुनाम—(पु० स०) पश ।
कीर्ति ।

सुनार—(पु० हि०) सोने,
चाँदी के गहने थादि बनाने
वाली जाति ।

सुन्न—(वि० हि०) निर्जीव ।
सुनमान । निर्जन । नीरव ।

सुन्नत—(स्त्री० थ०) मुसलमानों
की एक रस्म ।

सुन्नी—(पु० थ०) मुसलमानों
का एक भेद ।

सुपक—(वि० स०) अस्थी तरह
पका हुआ ।

सुपर रायल—(पु० थ०) ब्राज
की एक नाप ।

सुपरवाइजर—(पु० थ०) जाँच
करनेवाला । सुपरवीजन =
सँभाल ।

सुपरिटेण्डेंट—(पु० थ०) निगरानी
करनेवाला । प्रधान निरीक्षक ।

सुपात्र—(पु० स०) योग्य ।
उपयुक्त हो । अच्छा पात्र ।

सुपारी—(स्त्री० हि०) धाक्रिया ।
 फमैला ।
 सुपास—(पु० देश०) सुख ।
 धाराम ।
 सुपीरियर—(श०) बदकर ।
 श्रेष्ठतर ।
 सुपूत—(वि० हि०) अर्द्धा पुथ ।
 सुपुत्र ।
 सुप्रतिष्ठा—(स्त्री स०) आदर ।
 प्रसिद्धि । सुनाम । सुप्रतिष्ठित
 = उत्तम रूप से प्रतिष्ठित ।
 सुप्रभात—(पु० स०) मंगल
 सूचक प्रभात ।
 सुप्रीम कोर्ट—(पु० अ०) प्रधान
 या उच्च न्यायालय । सब से
 बड़ी कचहरी ।
 सुपडा—(पु० देश०) ताँबा
 मिर्ची हुई चाँदी ।
 सुवहान अल्ला—(अभ्य० अ०)
 अरबा का एक पद ।
 सुनुक—(वि० फा०) हल्का ।
 कम बोझ का । सुदर ।
 सुनुक रदा—(पु० फा०) लोहे
 का एक औजार ।
 सुबुद्धि—(स्त्री० स०) उत्तम बुद्धि ।

सुबोध—(वि० स०) अच्छी
 बुद्धिवाला । जो फाइ यात
 सहज में समझ सके ।
 सुभट—(पु० स०) महान् योद्धा ।
 अर्द्धा सैनिक ।
 सुभाषित—(वि०) अच्छी तरह
 कहा हुआ ।
 सुभाता—(पु० देश०) सुगमता ।
 धासानी । सुअसर । धाराम ।
 चैन ।
 सुभृषित—(वि० स०) भली
 भाँति । अलकृत ।
 सुम—(पु० फा०) टाप । सुर ।
 सुमति—(पु० स०) सुबुद्धि ।
 सुमार्ग—(पु० स०) अच्छा
 रास्ता । सन्मार्ग ।
 सुमुखी—(स्त्री० स०) सुदर
 मुखवाला स्त्री ।
 सुयश—(पु० स०) अर्द्धा यश ।
 सुकीर्ति ।
 सुयोग—(पु० स०) सयोग ।
 सुअसर । अर्द्धा मौला ।
 सुरग—(वि० स०) सुदर रंग
 का । ज़मीन के अदर का
 रास्ता । मिले या हीवार

- बड़ा व्यापारी । धनी मनुष्य ।
सत्रियों की एक जाति ।
- सेतु—(पु० स०) पुल । सीमा ।
- सेतुया—(पु० हि०) भुने हुये जौ
चने का धाटा ।
- सेना—(स्त्री० स०) फौज ।
पलटन । सेनाना = सेनापति ।
फौज का अफसर । —पति =
फौज का अफसर ।
- सेनेट—(स्त्री० अ०) वानून
बनानेवाली सभा । विश्व
विद्यालय की प्रबन्धकारिणी
सभा । सेनेटर = कानून बनाने
वाला ।
- सेव—(पु० फा०) एक फल ।
- सेम—(स्त्री० हि०) एक तरकारी ।
- सेमल—(पु० हि०) एक पेड़ ।
- सेमिटिक—(पु० अ०) मनुष्यों
का वग विभाग ।
- सेमीनेलन—(पु० अ०) एक
विराम चिह्न ।
- सेर—(पु० हि०) एक तौल ।
मन का चालीसवाँ भाग ।
(वि० फ्रा०) वृत्त ।

- सेवक—(पु० स०) सेवा करने
वाला । नौकर । भृत्य ।
- सेवती—(स्त्री० स०) सफेद
गुलाब । चैती गुलाब ।
- सेवा—(स्त्री० स०) विदमत ।
टहल । नौकरी । उपामना ।
—टहल = विदमत ।
- सेवान—(स्त्री० हि०) पानो में
फैलनेवाली एक घास । मिट्टी
की तहें जो किसी नश के
आसपास जमी हों ।
- सेविंग बक—(पु० अ०) वह
बैंक जो छोटी छोटी रकमें
व्याप पर ले ।
- सेविना—(स्त्री० स०) दासो ।
- सेवी—(वि० हि०) सेवा करने
वाला ।
- सेशन—(पु० अ०) लगातार कुछ
दिन चलनेवाली बैठक । दौरा
अदाकत । —केट = दौरा
अदाकत । —जज = दौरा
जज ।
- सेहत—(स्त्री० अ०) रोग से
छुटकारा । —खाना = पेशाब
आदि करने और नहाने घेने

- के लिये जहाज पर बनी हुई
एक छोटी सी कोठरी ।
- सेहरा—(पु० हि०) विवाह का
सुझुट । मौर ।
- सेहूश्राँ—(पु०) एक प्रकार का
चर्म रोग ।
- सतना—(क्रि० हि०) लीपना ।
- सपुल—(पु० अ०) नमूना ।
- सैकडा—(पु० हि०) सौ का
समूह ।
- सैकडे—(क्रि० वि० हि०) प्रति
सा के हिसाब से । प्रतिशत ।
- सैकडो—(वि० हि०) कई सौ ।
बहु सख्यक । गिनाता मं
बहुत ।
- सैकल—(पु० अ०) हथियारों को
साफ करने और उनपर सान
चढ़ाने का काम । —गर =
सान धरनेवाला । सिक्कीगर ।
- सैनिक—(पु० स०) सेना या
फौज का आदमी । सिपाही ।
सतरी । प्रहरी । (वि०) सेना
सवधा । सना का ।
- सेन्य—(पु० स०) सैनिक ।
- सेफ—(स्त्री० अ०) तलवार ।
- सयद—(पु० अ०) मुहम्मद
साहब के भाता हुयैन के वश
का आदमी । मुसलमानों की
एक जाति ।
- सेर—(स्त्री० फ्रा०) मन बहलाने
के लिय घूमना फिराग । —
गाह = सेर करने की जगह ।
- सैला—(पु० हि०) लकड़ी जो
वैज्ञ को गदन में जुवे को
फँसाये रखती है ।
- सैलानी—(वि० फ्रा०) मनमाना
घूमनेवाला । धानदी । मन-
मौजी ।
- सेलाब—(पु० फ्रा०) बाढ़ ।
- सेाचर नमक—(पु० हि०) एक
प्रकार का नमक ।
- सेाटा—(पु० हि०) मोटी छड़ी ।
लाठी । भग घोटने का सोदा
दृष्टा ।
- सेाठ—(स्त्री० हि०) सुग्गाया हुआ
थदरक ।
- सेाश्रा—(पु० हि०) एक साग ।
- सेाक—(पु० देश०) चारपाई के

बुनावट का वह छेद जिममें
मे रस्मी या निवार निकालकर
फसते हैं।

सोरसना—(क्रि० हि०) शोषण
करना। सुग्रा डालना।
पीना।

सोरता—(पु० क्रा०) स्याही
सोख।

सोत्र—(पु० हि०) चिन्ता। फिक्र।
पढ़तावा। —ना=विचार
करना। गौर करना। चिन्ता
करना। दुःख करना। —
विचार=ममक-धृक्। गौर।

सोजन—(पु० फा०) सूई।
काँटा।

सोजिश—(स्त्री० फा०) सूजन।
गोध।

सोडा—(पु० अ०) एक प्रकार
का चार पदार्थ। —वाटर=
सोडे से बनाया हुआ पाचक
पानी।

सोता—(पु० हि०) झरना।
धरमा।

सोताजूही—(स्त्री० हि०) पीला
जूही।

सोना—(पु० हि०) एक बहुमूल्य
धातु। स्वर्ण। शरीर के किसी
अंग का सुख होना। बहुत
मँहगी चाल। अत्यन्त सुदर
वस्तु। नौद लेना। —मरामी
=एक त्वनिज्ज पदाय।

सोप—(पु० अ०) माबुन।

सोफियाना—(वि० अ०)
सूक्रियों का सा जो देखने में
सादा पर बहुत अच्छा लगे।

सोमवार—(पु० स०) चंद्रवार।

सोरठा—(पु० हि०) एक छेद,
जो सौराष्ट्र (सोरठ) देश में
अधिक प्रचलित है।

सोलह—(पु० हि०) दस और
छ की संख्या। —विगार=
पूरा सिगार।

सोशल—(वि० अ०) समाज
संबंधी। सामाजिक। सोश
लिज्म=साम्यवाद। सोश
लिस्ट=साम्यवादी।

सोशन—(पु० प्रा०) फारस का
एक पौधा।

सोसाइटी, सोसायटी—(स्त्री०
अ०) समाज। गोष्ठी।

सोहगैला—(पु० हि०) सिंदूर
रखने की टिथिया । सिंदूरा ।

सोहाहलया—(पु० हि०) एक
मिठाई ।

साहयत—(स्त्री० अ०) सग ।
साथ । सगत । समोग ।

साहर—(पु० हि०) एक प्रकार
का गीत जिसे घर में बच्चा
पैदा होने पर खियाँ गाती हैं ।
सोहला ।

सौदर्य—(पु० स०) सुदरता ।
खूपसूरती ।

सौपना—(क्रि० स० हि०)
समपण करना । जिम्मे करना ।
सहेजना ।

सोक—(स्त्री० हि०) एक पौधा ।

सौ—(हि०) नत्रे और दस ।

सौगद, सौगध—(स्त्री० हि०)
शपथ । क्रमम ।

सौगात—(स्त्री० तु०) भेंट ।
उपहार ।

सौजन्य—(पु० स०) भलमन-
साहत ।

सौत—(स्त्री०) के

पति को दूमरी स्त्री या
प्रेमिका । सवत ।

सौतेला—(वि० हि०) सौत से
उत्पन्न ।

सौदा—(पु० अ०) वह चीज जो
सराही या बेची जाती हो ।
लेन देन । ध्यापार । पागल
पन । —ईं=पागल । —गर
=ध्यापारी । —गरी=
विजारत । रोजगार ।

सौभाग्य—(पु० स०) खुशनसीबी ।
सुहाग । ऐश्वर्य । —बती=
सधवा । सुहागिन । अच्चे
भाग्यवाली । —वान्=सुखी
थोर सपन्न । खुशहाल ।

सौभ्य—(वि० स०) शात । नम्र ।
सु दर ।

सौरभ—(पु० स०) सुगंध ।
सुराबू ।

सौर मास—(पु० स०) उतना
काल जितने तक सूर्य किसी
एक राशि में रहे ।

सौर वर्ष—(पु० स०) उतना
काल जितना सूर्य को बारह

राशियों पर घूम आगे में
लगता है ।

स्फालर—(पु० अ०) वह जो
स्कूल में पढ़ता है । छात्र ।
विद्यार्थी । उच्च कोटि का
विद्वान् ।—शिष्य=छात्रवृत्ति ।
वर्गीया ।

स्कीम—(स्त्री० अ०) योजना ।

स्कूल—(पु० अ०) मदरसा ।
विद्यालय ।—मास्टर=स्कूल
में पढ़ानेवाला । शिक्षक ।
स्कूली=स्कूल का ।

स्कू—(पु० अ०) पंच ।—डाइघर
=पंच खोजनेवाला ।

स्फलित—(वि० मं०) गिरा हुआ ।
धीरे का गिरना ।

स्टाप—(पु० अ०) एक प्रकार का
सरकारा कागज़ । डाक का
टिकट । मोहर । छाप ।

स्टाइल—(स्त्री० अ०) ढंग ।
तरिका । शैली । पद्धति ।
लेखन शैली ।

स्टाम्—(पु० अ०) बिक्री या
बेचने का भाग । सरकारी कप
की हुँडी । रसद । सामान ।

भंडार । गुदाम ।—एक्मचेंज
=(पु० अ०) वह मकान या
स्थान जहाँ स्टाक या शेयर
खरीदे और बेचे जाते हों ।
स्टाक का काम करनेवालों या
दलालों की सघटित सभा ।
—ट्रॉकर=वह दलाल जो
दूमरों के लिये स्टाक या
शेयरों की खरीद बिक्री का
काम करता हो ।

स्टिचिंग मशीन—(स्त्री० अ०)
लोहे के तारों से किताब सान
की कल ।

स्टीम—(पु० अ०) भाप ।—
एजिन=वह एजिन जो भाप
के जोर से चलता हो । स्टीमर
=भाप या स्टीम के जोर
से चलनेवाला जहाज ।

स्टूल—(पु० अ०) तिपाई ।

स्टेज—(पु० अ०) रंगमंच ।
—मैनेजर=रंगमंच का
प्रबंधक ।

स्टेट—(पु० अ०) रियासत ।
स्टेट्समैन = राजकाज में
निपुण श्राद्धमी ।

स्टर्मेट—(ध०) स्थान ।

स्टेशन—(पु० ध०) रेलगादियों के स्टेशन और उन पर मुनाफों के उत्तरन चढ़ा के जिये बना हुआ जगह ।

स्तन—(पु० स०) रक्षा । सूनी ।

स्तन—(पु० स०) स्त्रिया या मादा पशुओं का धानो जिममें दूध रहता है । —पान = स्तन का दूध पीना ।

स्तन्य—(वि० स०) निरचष्ट । सुप्त । हटो ।

स्तर—(पु० स०) तह । परत ।

स्तव—(पु० स०) स्तुति । स्तात्र । इस प्राथना ।

स्तम्भ—(पु० स०) फूलों का गुच्छा । गुलदस्ता । शब्दाय । परिच्छेद ।

स्तुति—(खो० स०) गुणकीर्तन । प्रशंसा । —पाठक = स्तुतिपाठ या प्रशंसा करनेवाला । भाट । चारण ।

स्तूप—(पु० स०) मिट्टी आदि का ढेर । मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना हुआ ऊँचा

धूर या दीना जिमके नीचे भगवान बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा को धर्मि दाँत, केश या इसी प्रकार के धर्म्य स्मृति चिह्न सुरक्षित हों ।

स्तोत्र = (पु० स०) स्तव । स्तुति ।

स्तो—(खो० स०) नारी । औरत । परना । मादा । —गमा = समोग । मैथुन । छात्र = स्त्री । छाधन = वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो । —धम = स्त्री का रजस्वला होना । रजोदशन ।

स्थगित—(वि० स०) मुलतथा ।

स्थपति—(पु० स०) बद्ध ।

स्थता—(पु० स०) जगह । जमीन ।

स्थली = स्थान ।

स्थान—(पु० स०) जगह ।

ओहदा । स्थानतरित = जो एक जगह से दूसरी जगह पर भेजा या पहुँचाया गया हो ।

स्थानिक = उम स्थान का जिमके विषय में कोई उल्लेख

- हो । स्थानीय = मुशामी ।
 (ध०) लाकल ।
 स्थापक—(वि० म०) कायम
 करनेवाला । प्रतिष्ठाता ।
 स्थापत्य—(पु० स०) भवन
 निर्माण । राजगोरी ।
 स्थापन—(पु० म०) लड़ाकरना ।
 नया काम जारी करना ।
 स्थापना = प्रतिष्ठित या स्थित
 करना । बैठना । स्थापित =
 जिसकी स्थापना की गई हो ।
 रचित । व्यवस्थित । ठहरा
 हुआ ।
 स्थायी—(वि० स०) ठहरने
 वाला । टिकाऊ । स्थित ।
 —भाव = साहित्य में तीन
 प्रकार के भावों में से एक ।
 स्थावर—(वि० स०) अचल ।
 स्थिर । स्थायी ।
 स्थित—(वि० स०) कायम ।
 अवलम्बित । वर्तमान ।
 मौजूद । स्थिति = ठहराव ।
 निवास । दशा । हालत ।
 अस्तित्व । मौजूद ।
 स्थिर—(वि० स०) निश्चल ।
 शात । दृढ़ । अचल । —ता =
 ठहराव । निश्चलता । मज
 दूती । धीरता । धैर्य ।
 स्थूल—(वि० स०) मोटा ।
 —ता = मोटापन ।
 स्नातक—(पु० स०) वह जिसने
 ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर
 स्नान करके गृहस्थ आश्रम में
 प्रवेश किया हो ।
 स्नान—(पु० स०) नहाना ।
 —शाला = नहाने का कमरा
 या कोठरी । गुसलखाना ।
 स्नायविक—(वि० स०) स्नायु
 संबंधी । स्नायु का ।
 स्नायु—(स्त्री० स०) शरीर व
 अंदर की वायुवाहिनी नसें ।
 स्निग्ध—(वि० स०) चिकना ।
 —ता = चिकनापन ।
 स्नेह—(पु० स०) प्रेम । प्यार ।
 तेज । कोमलता । —पात्र =
 प्रेमपात्र । —पान = वैद्य
 के अनुसार एक प्रकार की
 द्रव्य । स्नेही = प्रेमा । मित्र ।
 स्पज—(पु० ध०) मुरदा बादल ।
 स्पन्द—(पु० स०) फड़कना ।

स्पर्द्धा—(वी० स०) होड़ । घरा
घरो ।

स्पर्शा—(पु० स०) छूना ।
स्पर्शा = छूनेवाला ।

स्पष्ट—(वि० स०) साफ़ ।
स्पष्ट । —वचन = साफ़
साफ़ कहना । —तया =
स्पष्ट रूप से साफ़, साफ़ ।
—ता = सफाई । —वत्ता
= साफ़ साफ़ बोलनेवाला ।
—वादी = स्पष्टवक्ता । स्पष्टी
करण = स्पष्ट करने की क्रिया ।

स्फिरिट—(स्त्री० अ०) थापमा ।
रुइ । जीवन शक्ति । एक
प्रकार का मादक द्रव पदार्थ ।
शराब ।

स्पोन्ज—(स्त्री० अ०) व्याप्यान ।
लेफ़्चर । घकृता ।

स्पृहा—(स्त्री० स०) इच्छा ।
कामना ।

स्पेशल—(वि० अ०) ख़ास ।
—ट्रेन = वह रेलगाड़ी जो
किसी विशिष्ट कार्य, उद्देश्य
के लिये चले ।

स्प्रिंग—(स्त्री० अ०) कमागी ।
—दार = कमानोदार ।

स्प्रिचुअलज्म—(पु० अ०) भूत-
विद्या । धारमविद्या ।

स्प्रिट—(पु० अ०) पट्टी । पटरा ।
स्फटिक—(पु० स०) एक प्रकार
का पत्थर । बित्तौर ।

स्फुट—(वि० स०) फुटार ।
अलग अलग ।

स्फूर्ति—(स्त्री० स०) फडकना ।
उत्तेजना । फुरती । तेज़ी ।
उमग ।

स्फोट—(पु० स०) फूटना ।
स्मरण—(पु० स०) याद आना ।

—पत्र = किसी का स्मरण
दिलाने के लिये लिखा हुआ
पत्र । —शक्ति = याद रखने
की शक्ति । स्मरणीय = याद
रखने लायक । स्मारक =
यादगार ।

स्मित—(पु० स०) मद हास्य ।
धीमा हँसी ।

स्मृति—(स्त्री० स०) याद ।
हिंदुओं के धर्म शास्त्र ।

स्यदन—(पु० स०) रथ ।

स्यापा—(पु० प्रा०) मरे हुए
मनुष्य के लिये शोक मनाने
की रीति ।

स्याहा—(पु० प्रा०) रोग
गामचा । बही खाता ।

स्याहो—(स्त्री० क्रा०) रोशनाई ।
फालिख ।

स्रोत—(पु० हि०) करना ।
धारा ।

स्त्रीपर—(पु० अ०) एक प्रकार
का जूती । चट्टी । लकड़ी का
लथा डुकड़ा जो प्राय रेल
की पटरियों के नीचे बिछा
रहता है ।

स्लेज—(स्त्री० अ०) एक बिना
पहिए की गाड़ी जो बरफ पर
घूमिती हुई चढ़ती है ।

स्लेट—(स्त्री० अ०) लिखने के
लिये पत्थर की पतली पट्टी ।

स्तो—(वि० अ०) सुप्त ।

स्वगत—(पु० म०) नाटक में
पात्र का आप ही आप
बोलना ।

स्वच्छुद्र—(वि० स०) स्वाधीन ।
स्वतंत्र । मनमाँगा काम करने

वाला । —ता = स्वतंत्रता ।
आज्ञादी ।

स्वच्छुद्र—(वि० स०) निमल ।
साकू । स्पष्ट । पवित्र । निष्क
पट । —ता = सफाई ।

स्वजाति—(स्त्री० स०) अपनी
जाति ।

स्वतंत्र—(वि० स०) स्वाधीन ।
आज्ञाद् । अलग । —ता =
स्वाधीनता । आज्ञादी ।

स्वत—(अ० स०) अपना
आप । आप ही ।

स्वत्त्र—(पु० स०) अधिकार ।
हक ।

स्वदेश—(पु० स०) मातृभूमि ।
वतन । स्वदेशी = अपने देश
का । अपने देश में उत्पन्न
या बना हुआ ।

स्वधर्म—(पु० स०) अपना धर्म ।
अपना कर्तव्य । कर्म ।

स्वप्न—(पु० म०) निद्रावस्था में
कुछ घटना आदि दिखाई
देना । सपना । मन में उठने
वाली ऊँची कल्पना या
विचार । स्वप्न । —दाप =

भाय

निद्राशय्या में वीर्यपात होता ।
 भ्राज—(पु० म०) तामीर ।
 मिजाज । प्रकृति । घादत ।
 यात । —त = महज ही ।
 बन्ध—(वि० म०) नीरोग ।
 तदुत्थ ।
 र्वाग—(पु० हि०) भेस । रूप ।
 मजाक का नेत्र या तमारा ।
 धोखा देने का बनाया हुआ
 कोई रूप ।
 स्वागत—(पु० म०) अगवानी ।
 अभ्यथना । —कारिणी
 सभा = किसी सभा में जाने
 वालों के लिये प्रबन्ध करने
 वाली समिति । (अ०)
 रिसेप्शन कमिटी ।
 स्वातन्त्र्य—(पु० स०) स्वाधी
 नता । आजादी ।
 स्वाद—(पु० स०) ज्ञायका ।
 आनन्द ।
 स्वास्थ्य—(पु० स०) नीरोगता ।
 तदुत्थी ।
 स्वीकार—(पु० स०) अगीकार ।
 प्रबल । मजबूत । स्वीकृत =
 स्वीकार प्रबल

शिया हुआ । स्वीकृति =
 गहूरी । मम्मति । रजामदी ।
 स्वेच्छा—(स्त्री० म०) अपनी
 इच्छा । अपनी मर्जी ।
 स्वेच्छाधारिता = निरबुगता ।
 स्वेच्छाधारी = मनमाना काम
 करनेवाला । निरबुश ।

स्वामी—(पु० म०) मालिक ।
 प्रभु । घर का प्रधान पुरुष ।
 पति । गौहर । राजा । साधु
 सन्यासियों की उपाधि ।
 स्वामिनी = मालकिन ।
 गृहिणी ।

स्वार्थ—(पु० स०) अपनी मत
 लक्ष । —त्याग = किसी भले
 काम के लिये अपने हित या
 लाभ का विचार छोड़ना ।
 —परता = सुदमाजी ।
 —परायण = स्वार्थी । सुद
 मारज । —साधक = अपनी
 मतलब साधनेवाला । सुद
 मारज ।

स्वादु—(पु० म०) ज्ञायक्रेदार ।
 स्वाधीन—(वि० स०) आजाद ।

स्थापा—(पु० प्रा०) मरे हुए मनुष्य के लिये शोक मनाने की रीति ।

स्थाहा—(पु० प्रा०) रोज नामचा । बही लाता ।

स्थाहा—(स्त्री० प्रा०) रोशनाह । फालिय ।

स्रोत—(पु० हि०) करना । धारा ।

स्लीपर—(पु० थ०) एक प्रकार की जूती । घट्टी । लकड़ी का लथा टुकड़ा जो प्राय रेल का पटरिया क नीचे बिड़ा रहता है ।

स्लेज—(स्त्री० थ०) एक बिना पहिण की गाड़ी जो बरफ पर घसिठती हुई चलती है ।

स्लेट—(स्त्री० थ०) लिखने के लिये पथर की पतला पटरी ।

स्लो—(वि० थ०) सुस्त ।

स्वगत—(पु० म०) ताप में पात्र का आप ही आप बोलना ।

स्वच्छुद्—(वि० स०) स्वाधीन । स्वतंत्र । मनमाना काम करने

वाला । —ता = स्वतंत्रता । आजादी ।

स्वच्छुद्—(वि० स०) निर्मल । साफ़ । स्पष्ट । परिश्र । निष्कण । —ता = सफ़ाई ।

स्वजाति—(स्त्री० स०) अपनी जाति ।

स्वतंत्र—(वि० स०) स्वाधीन । आजाद । अलग । —ता = स्वाधीनता । आजादी ।

स्वत—(थ० स०) अपने आप । आप ही ।

स्वत्व—(पु० स०) अधिकार । हक ।

स्वदेश—(पु० म०) मातृभूमि । वतन । स्वदेशी = अपने देश का । अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ ।

स्वधर्म—(पु० स०) अपना धर्म । अपना कर्तव्य । कर्म ।

स्वप्न—(पु० स०) निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना । सपना । मन में उठने वाली ऊँची कल्पना या विचार । स्थाप । —दोष =

निद्रावस्था में वीर्यवात होना ।
 रमाव—(पु० म०) सामीर ।
 मिजाज । प्रवृत्ति । आदत ।
 वात । —त = सहज ही ।
 रम्य—(वि० मं०) नीरोग ।
 सुन्दर ।
 रंग—(पु० दि०) भेस । रूप ।
 मजाक या गेल या तमाशा ।
 पोसा देने का बनाया हुआ
 कोई रूप ।
 रमागत—(पु० म०) अगवानी ।
 अभ्यथा । —वारिणी
 सभा = किसी सभा में जाने
 वालों के लिये प्रबन्ध करने
 वाली समिति । (अ०)
 रिसेप्शन कमिटी ।
 रमात्रय—(पु० म०) स्वाधी
 नता । आजादी ।
 स्वाद—(पु० स०) ज्ञापन ।
 आनन्द ।
 स्वास्थ—(पु० स०) नीरोगता ।
 सुन्दर ।
 स्वोकार—(पु० स०) अमीकार ।

पिया हुआ । स्ववृत्ति =
 मजूरी । सम्मति । रजामदी ।
 स्वद्रा—(स्त्री० स०) अपना
 इच्छा । अपनी मर्जी ।
 स्वेष्याचारिता = निरकुशता ।
 स्वेष्याचारा = मनमाता काम
 करनेवाला । निरकुश ।
 स्वामी—(पु० मं०) मालिक ।
 प्रभु । घर का प्रधान पुरुष ।
 पति । शीहर । राजा । साधु
 सन्यासियों की उपाधि ।
 स्वामिनी = मालकिन ।
 गृहिणी ।
 स्वार्थ—(पु० म०) अपना मत
 लक्ष । —स्वाग = किसी भले
 काम के लिये अपने हित या
 लाभ का विचार छोड़ना ।
 —परता = सुदरारजी ।
 —परायण = स्वार्थी । सुद
 रारज । —साधक = अपना
 मतज्ञय साधनेवाला । सुद
 रारज ।
 स्वाहु—(पु० सं०) ज्ञापकदार ।

मन्त्र । मनमाना काम करनेवाला ।

—ता = आज्ञादी ।

स्वाध्याय—(पु० स०) वेदाध्ययन । अध्ययन ।

स्वाभाविक—(त्रि० म०) प्राकृतिक । कुदरती ।

स्वामित्व—(पु० म०) प्रभुता ।

स्वराज्य—(पु० स०) अपना राज्य ।

स्वराष्ट्र—(पु० स०) अपना राष्ट्र या राज्य ।

स्वरूप—(पु० स०) आकार । शकृ । (अव्य०) तौर पर । रूप में ।

स्वर्ग—(पु० म०) वैकुण्ठ ।
—गामी = मरा हुआ । मृत । स्वर्गीय । —वासी = स्वर्ग में रहनेवाला । जो मर गया हो । मृत । स्वर्गीय = स्वर्ग का । जो मर गया हो । मरहूम ।

स्वय—(अव्य० स०) खुद । आप । आप से आप । खुद

बखुद । —घर = धन्या के स्वयं घर चुन लेने का प्राचीन प्रथा । —सेवक = स्काउट ।

स्वर—(पु० स०) कठ से निकलने वाला शब्द । वेत्पाठ में होनेवाले शब्दों का उच्चारण चढ़ाव । —भग = आवाज़ का बैठना ।

स्वर्ण—(पु० स०) सोना । सुनण ।

स्वल्प—(त्रि० स०) बहुत थोड़ा । बहुत कम ।

स्वयंश—(त्रि० स०) जो अपने स्वयं में हो । जितेंद्रिय ।

स्वस्ति—(अव्य० स०) कल्याण हो । मंगल हो । (स्त्री०) कल्याण । मंगल । सुख । —क = प्राचीनकाल का एक प्रकार का यज्ञ । एक प्राचीन मंगल चिह्न । —वाचन = एक प्रकार का धार्मिक कृत्य ।

स्वेच्छासेवक—(पु० म०) स्वयं सेवक ।

स्वेद—(पु० स०) पसीना ।

ह—हिन्दी वर्णमाला का तेतीसवाँ व्यंजन ।
 हगामा—(पु० प्रा०) उपद्रव ।
 हलचल । शोरगुल ।
 हटर—(पु० अ०) लया चाबुक ।
 कौड़ा ।
 हडा—(पु० हि०) पीतल या ताँबे का बड़ा बरतन ।
 हँडिया—(स्त्री० हि०) मिट्टी का बड़ा लोटा । हॉडी ।
 हम्—(पु० स०) एक चल्नपत्ती ।
 शुद्ध आत्मा ।
 हँसना—(त्रि० अ० हि०) मिल-खिलाना । हँसाना = दूसरे को हँसाने में प्रवृत्त करना । हँसा = हास । मजाक । दिलगी ।
 विनोद । अनादर सूचक हास ।
 उपहास । बदनामी ।
 हँसमुख—(त्रि० हि०) प्रसन्न-बदन । हास्यप्रिय ।
 हँसली—(स्त्री० हि०) छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी ।

हँसिया—(पु० हि०) एक औज़ार ।
 हफ—(त्रि० अ०) वाजिब ।
 उचित । स्वात्र । अधिकार ।
 हृत्तियार—परस्त = ईश्वर भक्त । सत्य प्रेमी । —टार = स्वात्र या अधिनार रखनेवाला ।
 —नाहक = ज़बरदस्ती ।
 अर्थ । ऋजूल । —मालिकाना = किसी चीज़ या जायदाद के मालिक का हक । —मौरूसी = वह हक जो बाप दादों से चला आता हो । —शक्रा = किसी ज़मीन का प्ररीदने का औरों से अधिक हक या स्वात्र । हकीयत = अधिकार ।
 स्वयं । हक्कू—हक का बहु-वचन ।
 हकीकत—(स्त्री० अ०) सचाई ।
 असलियत । ठीक बात ।
 तथ्य । असल हाल ।
 हकीकी—(त्रि० अ०) राम अपना । सगा ।
 हकीम—(पु० अ०)

वैद्य । चिकित्सक । हकीमी =
यूनानी आयुर्वेद । हकीम का
पेशा या काम ।

हकीर—(वि० अ०) तुच्छ ।

हका बका—(वि० अनु०)

भौचक । घबराया हुआ ।

हज—(पु० अ०) मस्के का ताप
यात्रा ।

हजम—(पु० अ०) पाचन ।

हजरत—(पु० अ०) महात्मा ।

महापुरुष । महाशय । नटघट

या खाटा आदमा।—सलामत

—बादशाहों या नवाबों के

लिये सबाधन का शब्द ।

बादशाह ।

हज्जाम—(पु० अ०) हजामत

बनायेवाला । नाई । हजामत

=वाल बनाने का काम ।

वाल बनाने की मजदूरी ।

हजार—(वि० फा०) सहस्र ।

बहुत म । अनेक । दस सौ को

सट्या । हजारहा = हजारों ।

सहस्रों । बहुत से । हजार =

मूल जिसमें हजार या बहुत

अधिक पलकियाँ हों । सहस्र

दल । फौजारा । एक प्रकार

की आतिशबाज़ी । हज़ारी =

एक हजार सिपाहियों का

सरदार । हज़ारों = सहस्रों ।

बहुत से । अनेक ।

हजो—(स्त्री० अ०) निन्ना ।

बुराई ।

हटना—(कि० अ० हि०) बिसक

ना । टलना । पीछे सरफना ।

हटाना = बिसकाना । सर-

काना । दूर करना ।

हटा-कटा—(वि० हि०) हट पुट

मजबूत ।

हठ—(पु० सं०) टेक । जिद्द ।

दुराग्रह । दृढ़ प्रतिज्ञा । —

धर्मी = दुराग्रह । कट्टरपना

—योग = योग की एक प्रकार

की क्रिया जिसमें आसनों व

विधान है । हठात् = ज़बरदस्ती

से । बलात् । ज़रूर । हठी =

जिद्दी । टेकी । हठीला = हठी

जिद्दी । यात का परका ।

हड—(स्त्री० हि०) एक पेड़ या

उसका फल ।

हडताल—(स्त्री० हि०) किसी या

स अर्धनोप प्रगट करने क
 लिये दूकानदारों का दूकान
 बंद कर देना या गाम धरो
 वालों का गाम बन्द कर देना।
 प—(वि० अ०) निगला
 हुआ। गायब किया हुआ।
 उदाया हुआ। —ना=या
 जाना। गायब करना। उदा
 लेना।
 इन्द्रज—(स्त्री० हि०) इन्द्रियों
 को पाषा।
 इन्द्र—(स्त्री० अ०) जल्द
 धात्री। हृदयदाना=जल्दी
 करना। आतुर होता।
 हृदयदिया=जल्दबाज। उता
 वला। हृदयही=जल्दी।
 घषडाइट।
 इवा—(पु० हि०) भिड़। बरें।
 तर्तया।
 इव्ही—(स्त्री० हि०) अस्थि।
 इतन—(स्त्री० अ०) वेडज्जता।
 अप्रतिष्ठा। —इज्जतो=मान
 हानि। घेइज्जती।
 इताश—(वि० स०) निराश।
 नावम्मीद।

इनाहत—(वि० स०) मारे गप
 और घायत।
 इते।त्माह—(वि० स०) ना-
 उम्मीद।
 इत्या—(पु० हि०) दन्ता। मूठ।
 इत्ये—(वि० हि०) हाथ में।
 इत्या—(स्त्री० स०) बध। मृत।
 म्मकट। इत्यारा=इत्या करने
 वाला। इत्यारी=इत्या करने
 वाली। इत्या का पाप।
 इथउधार—(पु० हि०) यह कृज
 जा धोडे दिनों को बिना
 लिखा पदी के लिया जाय।
 इथकटा—(पु० हि०) हाथ की
 सफाई। हस्त कौशल।
 गुप्त चाल।
 इथम्डा—(स्त्री० हि०) डोरी से
 बँधा हुआ लाहे का कदा जो
 क्रीशे के हाथ में पड़ना दिया
 जाता है।
 इथलुट—(वि० हि०) जिसको
 मार बैठने की आदत हो।
 इथवर्षा—(पु० हि०) नाव
 चलाने के सामान।

हथिनी—(स्त्री० हि०) हाथी की मादा ।

हथियाना—(क्रि० हि०) अधि कार में करना । ले लेना । उड़ा लेना । हाथ में पकड़ना ।

हथियार—(पु० हि०) शौज़ार । अस्त्र-शस्त्र । —बद = सराख ।

हथेली—(स्त्री० हि०) हाथ की गद्दी । फरतल । चरल का मुठिया ।

हथोटी—(स्त्री० हि०) हस्त-काशल ।

हथौड़ा—(पु० हि०) मारतील । काल ठोंकने, रूँटे गाड़ने आदि का शौज़ार । हथौड़ी = छाटा हथौड़ा ।

हद—(स्त्री० अ०) सीमा । मर्यादा । —समाप्त = वह मुकरर वक्त जिसके भीतर अन्तत में दावा करना चाहिये । —सियासत = किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा ।

हदीस—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ ।

हनफी—(पु० अ०) मुसलमानों

में सुन्नियों का एक संप्रदाय । हनेज—(अल्प० क्रा०) अमी । अमी तक ।

हफ्त—(प्रा०) सात ।

हफ्ता—(पु० प्रा०) सप्ताह ।

हफ्ती—(स्त्री० प्रा०) एक प्रकार की जूता ।

हवशी—(पु० क्रा०) हबश देश का निामी ।

हवाब—(अ०) पानी का बुल बुला ।

हड्वा—(अ०) दाग । गोली । रत्ती का वजन ।

हड्वा डड्वा—(पु० हि०) बच्चों की एक धीमारी ।

हवीब—(अ०) माशूक । दोस्त । प्रेमी ।

हड्डुल् आम्—(पु० अ०) एक प्रकार की मेहँदी ।

हड्स—(पु० अ०) वेद । पारा वास । —वेजा = अनुचित रीति से बढ़ी करना ।

हम—(सर्व० हि०) “मैं” का बहुवचन । (अल्प० क्रा०) साथ । सग । समान । तुल्य ।

—जवान = एक ही भाषा के
 बोलनेवाले । —पेशा =
 सम व्यवसायी । —विन्तर =
 एक विन्तरे पर मौना ।
 —धमर = वे जिन पर एक
 ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो ।
 —जिम = एक ही धर्म या
 वाक्ति के प्राणी । —नोली =
 मायी । सगी । —दम =
 मायी । मित्र । — دور = दूर
 का मायी । — $\text{مدا$ = महा-
 सुभूति । —निवाला = एक
 साथ बैठकर भोजन करने
 वाला । — دوان = नरभृश ।
 —राइ = मग में । हमराक्ष
 = मायी । — دائن = एक ही
 प्रदेश के रहनेवाले । دند
 भाट । — مصدق = महपात्र ।
 — مرد = जोड़ का आठना ।
 — مردی = बराबरी । — مرا
 = मित्र । دाम । — ماد =
 पशुधी ।

(دو थ०) गर्म ।

(دو थ०) बड़ाइ ।

। आक्रमण । प्रहार ।

हमशीर — (دو) सग' रहव ।
 (स०) समगारा ।

हमशार — (द्वि० श्रा०) دند ।
 हमारा — (मर्ध० द्वि०) हम
 का स्वयंकारक म्पर ।

हमाल — (पु० अ०) बाम्ब ठटान
 याता । कुर्ती ।

हमें — (मर्ध० द्वि०) हमको ।
 हमल — (स्त्रा० अ०) एक
 गदना ।

हमेंशा — (अव्य० श्रा०) मग ।
 मरंदा ।

हम्माम — (पु० अ०) स्नानागार ।
 हया — (स्त्रा० अ०) खज्जा ।
 शर्म । आप । — مرد =
 शमनार । लजादीब । — مردی
 = खमाशीखता ।

हयान — (स्त्रा० अ०) हिंदगी ।
 जौयन ।

हर — (द्वि० म०) खे खेनेवाला ।
 गाभेयाला । खजानेवाला ।
 भापइ (गयिन) । प्रत्येक ।
 — مرد = हर गात्र ।

हरकत — (स्त्रा० अ०) सवि ।
 बाब । धुरी ।

हरकारा

हरकारा—(पा०) लक्ष्मण खाने
वाला ।

हरगाह—(प्रा०) जय कभी ।

हरगिज—(अ० प्रा०) कदापि ।
कभी ।

हरचन्द्र—(अ० प्रा०) कितना
हा । बहुत बार । यद्यपि ।
अगरचे ।

हरन—(पु० अ०) याथा । अड़
चन । हानि । नुकसान ।

हरजा—(पु० अ०) अड़चन ।
बाधा । नुकसान । हरजाना =
नुकसान पूरा करना । हानि
के बदले में दिया जानेवाला
धन ।

हरजाइ—(पु० प्रा०) हर जगह
धूमनेवाला । आचारा ।
(स्त्री०) यमिचारिणी स्त्री ।
कुलटा ।

हरताल—(स्त्री० हि०) एक
गनिज पदाय ।

हरफ—(पु० अ०) अक्षर । वण ।
(पु० अ०) ज्ञानान्वाना ।

*** = अन्त पुर । रनवास ।

हरमजदगी—(स्त्री० प्रा०)
शरारत । नटखटी ।

हरा—(वि० हि०) सम्भल । ताड़ा ।
कथा । घाम या पत्ती का सा
रग । हरित वण ।

हराना—(प्रि० हि०) पराम्त
करना । पराजित करना ।
थकाना ।

हराम—(नि० अ०) निषिद्ध ।
बुरा । अनुचित । वर्जित ।
बेहमानी । व्यविचार । —घोर
= पाप की कमाई खानेवाला ।
मुफ्तखोर । भालसी । —जादा
= दागला । वणसहर । बद
माश । दुष्ट । हामी = पाजी ।

हरारन—(स्त्री० अ०) गर्मी
ताप । हलका ज्वर ।

हगस्त—(पु० प्रा०) हर
आशका । शक ।

हरिण—(पु० म०) मृग । हिरन
हरिणी = मादा हिरन । हरि
= मृग । हरिण । हरिनी =
मादा । हिरन ।

हरियाली—(स्त्री० हि०) हरा
हरापन ।

हरी—(वि० हि०) सज्ज ।
 हरोद्वेन—(पु० अ०) एक प्रकार
 का लालटेन ।
 हरीफ—(पु० अ०) दुरमन ।
 शत्रु । विरोधी । प्रतिद्वन्दी ।
 हरीस—(स्त्री० हि०) हल का
 एक भाग ।
 हर्फ—(पु० अ०) अक्षर ।
 हर्ज—(पु० अ०) बाधा । अक्ष-
 य । हानि । नुक़सा ।
 हर्द—(अ०) हजनी ।
 हना—(अ०) लडाइ का
 हथियार ।
 हरा—(पु० हि०) यदी जाति की
 हड ।
 हर्सा—(पु० हि०) हल का लधा
 लडा ।
 हल्—(पु० स०) शुद्ध व्यन्त
 जिसमें स्वर १ मिला हो ।
 हल—(पु० स०) एक थौज़ार
 जिससे बर्मान जोती जाती
 है । हिसाब लगाना । किसी
 पठिन घात का णिय ।
 —वाहा=हल जोतने वाला ।
 हलकप—(पु० हि०) हलचल ।

थादोहन । हदकप । धारो
 धार पैती हुइ घयराहट ।
 हलफ—(पु० अ०) गल की
 नता । कठ ।
 हलफना—(क्रि० हि०) दिलोरें
 लेना । लहराना । दिखना ।
 हलफा—(वि० हि०) जो सील
 में भारी न हो । पतला ।
 कम । तुच्छ । निरिषत ।
 घटिया । पानी की दिखोर ।
 लहर ।
 हलका—(पु० अ०) मडल ।
 गोलाइ । वल । मुट । कई
 गाँवों या कसबों का समूह
 जो किसी काम के लिये
 नियत हो ।
 हलचल—(स्त्री० हि०) चलधली ।
 धूम । उपद्रव ।
 हलदी—(स्त्री० हि०) एक पौधा ।
 हलफ—(पु० अ०) वसम ।
 सौगध । —नामा=शपथ
 पत्र ।
 हलवा—(पु० अ०) एक प्रकार
 का मीठा भोजन । मोहनभोग ।
 गीली और मुलायम चीज़ ।

हरजारा—(फा०) खबर जान
वाला ।

हरगाह—(फ्रा०) जव कभी ।

हरगिज—(अ० य० फ्रा०) कदापि ।
कभी ।

हरजन्त—(अ० य० फ्रा०) कितना
हा । बहुत बार । यद्यपि ।
धगरचे ।

हरज—(पु० अ०) यावा । अद
घन । हानि । नुकसान ।

हरजा—(पु० अ०) अदघन ।
बाधा । नुकसान । हरजाना =
नुकसान पूरा करना । हाति
के बन्धे में दिया जानेवाला
घन ।

हरजा—(पु० फ्रा०) हर नगद
धूमनेवाला । आवारा ।
(स्त्री०) अभिचारिणी स्त्री ।
कुलटा ।

हरताल—(स्त्री० हि०) एक
खनिज पदार्थ ।

हरफ—(पु० अ०) अक्षर । वण ।

हरम—(पु० अ०) ज्ञानपाना ।
—सरा = अन्त पुर । रनवास ।

हरमजदगी—(स्त्री० फ्रा०)
शरारत । नटवटी ।

हरा—(प्रि० डि०) सवज । ताजा ।
कच्चा । घास या पत्ती का सा
रग । हरित वर्ण ।

हराना—(प्रि० डि०) पराम्त
करना । परामित करना ।
धफाना ।

हराम—(प्रि० अ०) निषिद्ध ।
दुग । अनुचित । वर्जित ।
बेहमानी । व्यभिचार । —खोर
= पाप की कमाई खानेवाला ।
मुक्तखोर । आलसी । —जादा
= दोगला । वर्णसकर । षद
माश । दुष्ट । हरामी = पाजी ।

हरारत—(स्त्री० अ०) गर्मी ।
ताप । इलका उबर ।

हरास—(पु० फ्रा०) दर ।
आशका । खन्का ।

हरिण—(पु० म०) मृग । हिरन ।
हरिणी = मादा हिरन । हरिन
= मृग । हरिण । हरिणी =
मादा । हिरन ।

हरियाली—(स्त्री० हि०) हरा ।
हरापत्त ।

हरी—(यि० हि०) सङ्ग ।
 हरोद्रेन—(पु० अ०) एक प्रकार
 की लालटेन ।
 हरीफ—(पु० अ०) दुश्मन ।
 शत्रु । विरोधी । प्रतिद्वन्द्वी ।
 हरोम—(स्त्री० हि०) हल का
 एक भाग ।
 हस्फ—(पु० अ०) अक्षर ।
 हर्ज—(पु० अ०) बाधा । अड़
 चन । हानि । नुक़्सा ।
 हर्द—(अ०) हलदी ।
 हर्ना—(अ०) लड़ाई का
 हथियार ।
 हर्ना—(पु० हि०) बड़ी जाति की
 हड ।
 हर्ना—(पु० हि०) हल का लबा
 लहा ।
 हल्—(पु० स०) शुद्ध व्यंजन
 जिसमें स्वर ७ मिला हो ।
 हल—(पु० स०) एक शौज़ार
 जिससे बमीन जोती जाती
 है । दिसाब लगाना । किमी
 कठिन बात का निर्णय ।
 —वाहा = हल जोतने वाला ।
 हलकप—(पु० हि०) हलखल ।

आशोजन । हड़कप । चारों
 घोर पैली हुई घयराहट ।
 हलक—(पु० अ०) गल की
 नला । कप ।
 हलकना—(स्त्री० हि०) हिलोरें
 लेना । लहराना । हिलना ।
 हलका—(यि० हि०) जो तौल
 में भारी न हो । पतला ।
 कम । तुच्छ । निरिचत ।
 घण्टिया । पानी की हिलोर ।
 लहर ।
 हलवा—(पु० अ०) मडल ।
 गोलाई । दल । मुट । कई
 गाँवों या कम्पों का समूह
 जो किसी काम के लिये
 नियत हो ।
 हलचल—(स्त्री० हि०) चलबली ।
 धूम । उपद्रव ।
 हलदी—(स्त्री० हि०) एक पौधा ।
 हलफ—(पु० अ०) व्रतम ।
 सौगंध । —नामा = शपथ
 पत्र ।
 हलवा—(पु० अ०) एक प्रकार
 का मीठा भोजन । मोहनभोग ।
 गीली और मुलायम चीज़ ।

हलवाह—मिठाई बनाने की वेचनवाला। हलवाहन— हलवाई की खी।	हलद्वार—(पु० अ० + क्रा०) पीप का एक प्रकार।
हलाफ—(वि० अ०) मारा हुआ। यद्य किया हुआ। नष्ट होना। हलाकत—हत्या। यद्य। मृत्यु। हलाक—हलाक करने- वाला।	हवस—(स्त्री० अ०) कामना। चाह। तृष्णा।
हलाल—(वि० अ०) जायज़। (पु०) यह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। —खोर—हलाल की कमाई खानेवाला। मेहतर। भगी। —घारी—हलालखोर की खी। पाखाना उठाने या मूत्र ककट उठानेवाली खी। हलालखोर का काम। हलाल खोर का भाव या धर्म।	हवा—(स्त्री० अ०) वायु। पवन। प्रसिद्धि। सास। —दार— जिसमें हवा आती, जाती हो। हवाल—(पु० अ०) हाल। दशा। परिणाम। समाचार। सवाद। हवाला—(पु० अ०) प्रमाण का उल्लेख। उदाहरण। मिसाल। जिम्मेदारी। सुपुदगी।
हलाहल—(पु० स०) महाविष।	हवालात—(पु० अ०) नज़र बदा। हाजत। कैद।
हलीम—(वि० अ०) साधा। शात। एक प्रकार का खाना जो मुहरम में बनता है।	हवास—(पु० अ०) 'इदियों' चेतना।
हल्ला—(पु० अनु०) शोरगुल। चिख्लाइट।	हवि—(पु० दि०) हवन की वस्तु।
हयन—(पु० स०) होम।	हवेली—(स्त्री० अ०) पक्का बड़ा मकान।
	हशमत—(स्त्री० अ०) गौरव। बदाई। वैभव। ऐश्वर्य।
	हसद—(पु० अ०) ईर्ष्या। डाह।
	हसव—(अव्य० अ०) अनुसार। मुताबिक।

एसरत—(खी० अ०) रज ।
अप्रमोम । शोभ ।

हसीन—(वि० अ०) सुंदर ।
सूदसूरत ।

हस्त—(स०) हाथ ।—कौशल =
हाथ की मर्याद । —धेप =
विधी काम में हाथ डालना ।
दगल देना । —गत = प्राप्त ।
हासिल । हाथ में आया हुआ ।
—रेखा = हथेली में पड़ी हुई
रेखायें ।—लिखित = हाथ का
लिखा हुआ । —लिपि =
हाथ की लिखावट । लेख ।
हस्ताक्षर = हस्ताक्षर । हस्ते =
हाथ में । मारकृत ।

हार्—(अव्य० हि०) स्वीकृति
सूचक शब्द । सम्मति-सूचक
शब्द ।

हार्क—(छा० हि०) किसी का
सुलाने के लिये जोर की
पुकार । ललकार ।

हाकना—(क्रि० हि०) बंद
बंदकर धोलना । जानवरों को
धकाना । गाड़ी चलाना ।

धापाया को किसी स्थान से
हटाना । पग टिकाना ।

हार्डी—(पु० हि०) मिट्टी का
मझोला बरतना । रेंदिया ।

हार्फना—(कि० अनु०) तीम
रवाम लेना ।

हार्, हा—(अव्य० हि०) रोने
का शब्द । स्वीकृति-सूचक
शब्द ।

हा—(अव्य० स०) शाक, भय,
घारघय या धाराद सूचक
शब्द ।

हाइड्रोमील—(पु० अ०) अट
वृद्धि । फोते का पड़ना ।

हाइफिन—(पु० अ०) एक चिह्न ।

हाइ—(अ०) ऊँचा । चढ़ा ।
—कोट = मयसे पड़ा न्याया
लय । —स्कूल = अमरजी की
बड़ी पाठशाला ।

हाइड्रोफोनिया—(पु० अ०)
शरीर के भातर एक प्रकार
का व्याधि । जलातक रोग ।

हाउस—(पु० अ०) घर ।
मकान । बड़ी दुकान । सभा ।
मडली । —घाफ कामन्स =

हगर्नेड का वामस सभा ।
 —थाफ लाट्स = हगर्नेड की
 जादू सभा । —थोट = पानी
 पर रहने के लिये ककड़ी का
 तैरता हुआ मकान । —टैक्स
 = मकान का वापिक कर ।
 हाकिम—(पु० अ०) हुकूमत
 करनेवाला । शासक ।
 हाकिम = हुकूमत । शासन ।
 हाँकी—(पु० अ०) एक गज ।
 हाजत—(स्त्री० अ०) जरूरत ।
 आवश्यकता ।
 हाजमा—(पु० अ०) पाचन
 क्रिया । पाचन शक्ति ।
 हाजिम—(वि० अ०) भोजन
 पचानेवाला । पाचक ।
 हाजिर—(वि० अ०) मौजूद ।
 विद्यमान । प्रस्तुत । तैयार
 —जवाय = उत्तर देने में
 निपुण । —जवाबी = चट
 पट उत्तर देने की निपुणता ।
 —बाश = सामने मौजूद रहने
 वाला । बराबर सेवा में रहने
 वाला । —बाशी = खुशामद ।

हाजी—(पु० अ०) वह जो
 हज कर आया हो ।
 हाता—(पु० अ०) घरा हुआ
 स्थान । बाड़ा । प्रात । हद ।
 हातिम—(पु० अ०) चतुर ।
 कुशल । उस्ताद । अत्यंत
 उदार मनुष्य ।
 हाथ—(पु० हि०) कर । हस्त ।
 बाहु से लेकर पजे तक का
 अंग ।
 हाथा—(पु० हि०) दरता । एक
 शीशार । —पाई = मुठभेद ।
 ऐसी लड़ाई जिसमें हाथ पैर
 चलाए जायें ।
 हाथी—(पु० हि०) एक जंतु ।
 गज । —खाना = फ्रीकखाना ।
 —पाँव = एक रोग । —बान
 = फ़ालवान । महावत ।
 हादसा—(पु० अ०) घुरी घटना ।
 दुघटना ।
 हादी—(अ०) हिदायत करने
 वाला । मार्ग दर्शक ।
 हानि—(स्त्री० स०) नाश । हानि ।
 नुश्सान । घाग । टोटा ।

रसों में एक। दिहगा।
मझाक। हास्याम्पद = उपहास
के योग्य। हास्यापादक
हँसी उत्पन्न करने वाला।
उपहास के योग्य।

हाहाकार—(पु० स०) कुहराम।

हिंडोला—(पु० हि०) पालना।
मूला।

हिंद—(पु० फ्रा०) हिंदोस्तान।
भारतवर्ष।

हिंदवाना—(पु० फ्रा०) तरबूज।

हिंदवी—(स्त्री० फ्रा०) हिंद या
हिंदोस्तान की भाषा। पुरानी
हिंदी भाषा।

हिंदी—(वि० फ्रा०) हिंदुस्तान
या। भारतीय। हिंदुस्तान की
भाषा।

हिंदुस्तान—(पु० फ्रा०) भारत
वर्ष। भारतवर्ष का उत्तरीय
मध्य भाग। युक्तप्रान्त।
हिंदुस्तानी = हिंदुस्तान का।
हिंदुस्तान सबधी। भारत
वासी। हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्थान—(पु० हि०) हिंदु-
स्तान। भारतवर्ष।

हिंदू—(पु० फ्रा०) भारतीय
धार्मिक धर्म का अनुयायी।

हिंसक—(पु० स०) हथियार।
घातक।

हिंसा—(स्त्री० स०) जीवों का
मारना या सताना। हानि
पहुँचाता। —धर्म = मारना
या सताना का काम। हिंसात्मक
= जिसमें हिंसा हो।

हिंस्र—(वि० स०) हिंसा करने
वाला। खूमार।

हिंश्राय—(पु० हि०) साहस।
हिंमत्त। दिहासा।

हिकमत—(स्त्री० फ्रा०) विद्या।
कला-कौशल। उपाय। चाल।
पालिसी। हकामी। वैद्यक।
हिकमती = उपाय साधने-
वाला। चतुर। चालाक।

हिकायत—(स्त्री० फ्रा०) कथा।
कहानी।

हिका—(स्त्री० स०) हिचकी।
शब्द वा रक-रककर धाव।

हिचकी—(स्त्री० अनु०) पेट
की वायु का कठ में धका देना

का बोलना । हासना । हिन
 दिनादृष्ट = बोले की बोली ।
 हिना—(सा० अ०) मेहदा ।
 हिपोजिट—(पु० अ०) फपी ।
 पालडी । हिपात्रिमा = छल ।
 हिफाजत—(स्त्री० अ०) रक्षा ।
 यथाव । दगरेय ।
 हिट्टा—(पु० अ०) दाना । दो
 ली का एक सौल । दान ।
 हिष्मानामा = दानपत्र ।
 हिम—(पु० म०) पाला । यक्र ।
 हिमावत—(स्त्री० अ०) वेवङ्कली ।
 भूखला ।
 हिमामदस्ता—(पु० प्रा०)
 सरल और बटी ।
 हिमायत—(स्त्री० अ०) पक्षपात ।
 ममथन । मडन । हिमायता =
 तरफदारी ।
 हिमालय—(पु० स०) भारतवर्ष
 का ससार के सब पहाड़ों से
 ऊँचा पहाड़ ।
 हिम्मत—(स्त्री० अ०) साहस ।
 बहादुरी । पराक्रम । हिम्मती
 = साहसा । दृढ़ । बहादुर ।

हियाज—(पु० हि०) माहम ।
 हिरन—(पु० हि०) हरि । शृग ।
 हिरफत—(स्त्री० अ०) पशा ।
 व्यापार । दस्तकारी । डुर ।
 बला-शौशल । —वात
 = चालयोज । धूत ।
 हिरमजी—(स्त्री० अ०) लात रग
 का एक प्रकार का मिट्टा ।
 हिराना—(क्रि० हि०) खो जाना ।
 गायब होना । अभाव होना ।
 न रह जाना । मिटना । भूल
 जाना ।
 हिरास—(स्त्री० प्रा०) भय ।
 खेद । नाउम्मेद ।
 हिरासत—(स्त्री० अ०) पहरा ।
 चौकी । ईद । नज़रबंदी ।
 हिर्सा—(वि० फा०) निराश ।
 नाउम्मेद । हिम्मत हारा हुआ ।
 हिर्—(स्त्री० अ०) लात्रय ।
 लोभ ।
 हिलनेर, हिलनेररा—(पु० हि०)
 हिलनेर । लहर । तरंग ।
 हिलना—(क्रि० हि०) डालना ।
 दरकत करना ।

हिलाना—(क्रि० हि०) चला
यमान करना ।

हिलाल—(थ०) चून्ना वा
चाँद ।

हिस—(पु० अ०) होश । चेतना ।

हिसाब—(पु० थ०) गिनती ।
गणित । लेखा । भाव । दर ।
नियम । मेत्र । —रिक्ताव =
श्रामदनी, खच आदि का
व्योरा । दग । कायदा ।
—बही = वह पुस्तक जिसमें
आय-व्यय या लेन देन का
व्योरा लिखा जाता हो ।

हिसार—(थ०) डिजा । गद्दी ।

हिम्सा—(पु० थ०) भाग ।
अश । खड । टुकड़ा । साम्रा ।
शिरकन । —दार = साम्बेदार ।
राजगार में शरीक ।

हिस्टीरिया—(पु० थ०) मूर्च्छा
रोग ।

हींग—(स्त्री० हि०) एक पौधा
और उसका जमाया हुआ
दूध या गोंद ।

हीस्ता—(क्रि० हि०) घोड़े का

बोलना । दिनदिनाना । गद्दे
का बोलना । रँकना ।

ही—(अ० थ० हि०) निश्चय,
अन्यत्ता, अपता, परिमिति
तथा स्वीकृति सूचक एक
अव्यय ।

हीक—(स्त्री० हि०) हिचकी ।
हलकी अरविबर गध ।

होन—(वि० स०) घोड़ा हुआ ।
वचित । नीचे दर्जे का ।
घटिया । छोटा । सराब ।
तुच्छ । फम ।

हीन-हयात—(पु० अ०) जीवन
भर ।

होर—(पु० हि०) सार । सत ।
शक्ति । मल ।

हीरा—(पु० हि०) एक रत्न । बहुत
ही अच्छा आदमी ।

होरा कसीस—(पु० हि०) लोहे
का वह विनार जो गधक के
रासायनिक योग से हाता है ।

हीला—(पु० थ०) बहाता ।
मिस ।

हुँकारी—(स्त्री० अनु०) स्वीकृति-
सूचक शब्द ।

- का बोलना । हँसना । दिन
हिनाइट = घोट की बोली ।
- हिना—(स्त्री० अ०) मँहदा ।
- हिपोक्रिट—(पु० अ०) फपी ।
पाखडी । दिपाक्रिमो = धूल ।
- हिफाजत—(स्त्री० अ०) रक्षा ।
बचाव । देखरेख ।
- हिट्टा—(पु० अ०) दाना । दो
जा की एक तौल । गन ।
हिट्टानामा = दानपत्र ।
- हिम—(पु० स०) पाला । बर्फ ।
- हिमाकत—(स्त्री० अ०) वेवकूत्री ।
मूलता ।
- हिमामदस्ता—(पु० क्रा०)
स्वरल और बटा ।
- हिमायत—(स्त्री० अ०) पशुपात ।
समथन । मडन । हिमायता =
तरफदारी ।
- हिमालय—(पु० स०) भारतवर्ष
का मसार के सब पन्नाहों से
ऊँचा पहाड़ ।
- हिम्मत—(स्त्री० अ०) साहस ।
बहादुरी । पराक्रम । हिम्मती
= साहसा । दृढ़ । बहादुर ।
- हियाज—(पु० हि०) साहम ।
- हिरा—(पु० हि०) हरित । मृग ।
- हिरफत—(स्त्री० अ०) पशा ।
व्यापार । दस्तकारी । हुनर ।
बला नौराल । —बाज़
= चालबाज़ । धृत्त ।
- हिरमजी—(स्त्री० अ०) बाल रंग
की एक प्रकार की मिट्टी ।
- हिगना—(क्रि० हि०) छो आना ।
गायब होना । अभाव होना ।
न रह जाना । मिटना । भूल
जाना ।
- हिरास—(स्त्री० प्रा०) भय ।
खेद । नाउम्मेदी ।
- हिरासत—(स्त्री० अ०) पहरा ।
चौकी । कैद । नज़रबन्दी ।
- हिरासों—(वि० फा०) निराश ।
नाउम्मेद । हिम्मत द्वारा हुआ
- हि रों—(स्त्री० अ०) लालच ।
लोभ ।
- हिलकार, हिलनेरा—(पु० हि०)
हिलार । लहर । तरंग ।
- हिलना—(क्रि० हि०) झोलना ।
हरकत करना ।

हिलाना

- हिलाना—(क्रि० हि०) चलाना ।
 यमान कराना ।
 हिलाना—(अ०) वृत्त का
 चाँद ।
 हिस—(पु० अ०) हाश । चेतना ।
 हिसाब—(पु० अ०) गिनती ।
 गणित । लक्षा । भाव । दर ।
 नियम । मेज़ । —खिताब =
 आमदनी, खर्च आदि का
 ख़ौरा । दग । कायदा ।
 —बहा = वह पुस्तक जिसमें
 आथर्व्य या खेन देन का
 ख़ौरा लिखा जाता हो ।
 हिम्नार—(अ०) त्रिणा । गद्दी ।
 हिम्ना—(पु० अ०) भाग ।
 अश । खड । दुक्का । साम्रा ।
 शिरकन । —दार = सामेदार ।
 राजगार में शरीक ।
 हिम्टीरिया—(पु० अ०) मूच्छा
 रोग ।
 हींग—(स्त्री० हि०) एक पौधा
 और उसका जमाया हुआ
 दूध या गोंद ।
 हीमना—(क्रि० हि०) घोड़े का

घोड़ना । दिनदिनाना । गदहे
 का योत्रा । रेंवना ।

ही—(अ० हि०) तिरच्य,
 शान्यता, अल्पता, परिमिति
 तथा स्वाहृति सूचक एक
 शब्द ।

हीक—(स्त्री० हि०) हिचकी ।
 हलही अरचिकर गध ।

हीन—(वि० स०) घोड़ा हुआ ।
 पचित । नीचे गूँ का ।
 घन्था । आधा । खराब ।
 तुच्छ । कम ।

हीन ह्यात—(पु० अ०) जीवन
 भर ।

हीर—(पु० हि०) सार । सत ।
 शक्ति । मल ।

हीरा—(पु० हि०) एक रत्न । बहुत
 ही अचड़ा आदमी ।

हीरा कसीस—(पु० हि०) लोहे
 का वह विकार जो गधक के
 रामायनिक योग से होता है ।

हीला—(पु० अ०) बहाना ।
 भिम ।

हुँकारी—(स्त्री० अनु०) स्वीकृति-
 सूचक शब्द ।

कर्मनाला । बहुत धुरा
 लगनवाला । —स्पर्शी =
 हृदय पर प्रभाव डालनवाला ।
 जिमस मन म दया हो ।
 —हारो = मम मोहनेवाला ।
 हृष्ट—(वि० म०) अत्यंत प्रमत्त ।
 आनन्दयुक्त । —पुष्ट = मोटा
 ताजा । तैयार । तगदा ।
 हैंह—(पु० अनु०) धार स हैंमने
 का शब्द । दानता-सूचक
 शब्द ।
 हेंगा—(पु० हि०) पाटा । पत्रेला ।
 हे—(अ० स०) सशोधन का
 शब्द ।
 हेकड—(वि० हि०) हृष्ट पुष्ट ।
 मज्जत । जवदन् । बली ।
 उजड़ । हेकड़ा = अकरादपन ।
 जवरदस्ती ।
 हेच—(वि० फा०) तुष्ट ।
 नाचाङ्ग । नि मार ।
 हड—(अ०) स्तिर । प्रधान ।
 —आक्रिस = प्रधान कार्या
 लय । —कादर = मदर
 मुकाम । —मास्टर = प्रधा

गाध्यापक । हडेरु = मिर
 नद । हेडिंग = शीर्षक ।
 हेतु—(पु० म०) अभिप्राय ।
 उद्देश्य । कारण । वपद ।
 हेमत—(पु० स०) जाड का
 मौसम । गीतकाल ।
 हेर फेर—(पु० हि०) धुमाय ।
 चक्कर । चाल । अदल बदल ।
 अदला बदला । हेराफेरा =
 हाथ का सफाई । चालाकी ।
 अदल बदल ।
 हेल् मेल—(पु० हि०) मिश्रता ।
 घनिष्टता । सुहृत्त । परिचय ।
 हेल्थ—(पु० अ०) स्वास्थ्य ।
 सदुरस्ती । हेल्दी = सदुरस्त ।
 हें—(अ०) एक आश्चर्य,
 निषेध या असम्मति सूचक
 शब्द । 'ह' का बहुवचन ।
 हेंगिंग लप—(पु० अ०) धत में
 लटकाने का लप ।
 हैंड—(अ०) हाथ । —बैग =
 चमड का एक छोटा बरस
 जिय मकर में हाथ में रखते
 हैं । हैंडी = हलका, जो हाथ में
 आसानो से उठाया जा सक ।

- बिल = विशापन । —राइ-
गिग = इरताणन । इदिल =
मुग्घिा । दस्ता ।
- हैना—(पु० अ०) विशुचिका ।
- हैन—(अध्य० अ०) अन्नमास ।
दाय । हा ।
- हैरत—(खा० अ०) भय ।
प्रास । ददशत । —नाक =
मयाक । दरादना ।
- हैरत—(खा० अ०) आरनय ।
अघरज ।
- हैरान—(वि० अ०) अकित ।
दग । परेशान । व्यग्र ।
- हैरान—(पु० अ०) पशु ।
जानवर । गैवार या येत्रूर
आदमी । उजडु आदमी ।
- हैरानी—(वि० अ०) पशु फा ।
पशु के करने योग्य ।
- हैसियन—(खा० अ०) योग्यता ।
सामर्थ्य । आर्थिक दशा ।
श्रेणा । प्रतिष्ठा । धन ।
जायदाद ।
- है है—(अ० अ०) हाय । अन्नसास ।
- हाठ—(पु० हि०) ओष्ठ ।
- हा—(क्रि०) सत्कार्यक क्रिया ।

हाटल—(पु० अ०) घट स्थान
घटी मूय गफर लार्गी क
भ जन और ठहरन का प्रयथ
रहता है । गियान ।

हाण्ड—(मा० हि०) शान । बागी ।

हाणगर—(त्रि० हि०) जा होन
गला न । भारी । अस्तु
लक्षणों वाला ।

होना—(वि० अ०) अस्तित्व
रगना । उपस्थित या मौजूद
रहना । मूरत या हालत
बदलना । बिया जाता ।
बना । पीतना । होनी =
हो सकनवाली बात ।

होम—(पु० स०) पशु । (अ०)
घर । —डिपाटमेंट = स्वराष्ट्र
विभाग । —मिनिस्टर =
स्वराष्ट्र मंत्री । —मेम्बर =
स्वराष्ट्र सचिव । —सक्रैटरी =
स्वराष्ट्र सचिव ।

होमियोपैथी—(खो० अ०) रोग
निवारण की एक पद्धति ।
होमियोपैथिक = होमियोपैथी
नामक चिकित्सा पद्धति के
अनुसार ।

परिशिष्ट १

देहान्त के कुछ शब्द, जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दी या हिन्दु
 स्तानी में प्रचलित नहीं हैं, पर हिन्दी भाषा में जिनकी
 आवश्यकता है, इस कोष में पहले आचुके
 हैं। कुछ यहाँ दिये जाते हैं।

अँगडौर

आँखि

अँगटोर = कफ़ी।

अँगरा, अँगरी = गेहूँ के रोत में
 होनवाली एक घाम।

अँगरार = खेत में का। हुआ मय
 डरल के उतना अनाज जो
 एक बार दोनों बाहुओं के
 बीच उठाया जा सक।

अँगुसी = हुक।

अँगुआ = अरुर।

अँगैऊँ = दबला को चदान के लिये
 का धन या अन्न अलग निकाल
 कर रख दिया जाता है,
 वह अँगैऊँ कहलाता है।

अँगैरी = ऊल का ऊपरी हिस्सा।

अँगियारो = जानवरों की आँख
 पर बाँधने का पट्टी।

अंगयड = पेशगी।

अंगवार = मकान के आगे का
 हिस्सा। खेत काटनेवाले
 मजूरों का एक इक।

अंगवारी = हल के फाल में लगा
 हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अंगटी = घाट के गले की रस्ती।

अंगिया = चारल के रोत में उगने
 वाली एक घास।

अढिया = कठोता।

अरदाया = चना और जौ मिला
 कर दबा हुआ जो घोड़ा को
 दिया जाता है।

अरकना = तरसना।

अहारना = लकड़ी चीरना।

आँपा = अरुर।

आँगि = गाने में वह स्थान जहाँ
 स रकुर फूटता है।

श्रांठा = ठोस जमे हुए दही का टुकड़ा।

इंदारा = पक्का कुँआ।

इनरी = नई 'ब्याइ' हुई गाय या भैंस का उबाला हुआ दूध, जो जम जाता है।

उच्चारना = लह सहित उखाड़ लेना।

उचास = वह जमान जो आम पास की सतह से उँची हो।

उसना = चावल, जिसकी भूसी पात्र में उबालकर निकाली गई हो।

पक्का, इन्की = दो पहियों की गाड़ी जिस एक घोड़ा या एक बैल खींचता है।

पेवन = हलदी, दही आदि पदार्थों का मिश्रण, धार्मिक संस्कारों में जिससे तिलक किया जाता है।

श्रोटना = रईसे बिनौते निकालना।

श्रोटा = चबूतरा।

श्रोतन्न = चारपाई कढ़ी करने की रस्सी।

श्रोतदावन = चारपाई कढ़ी करने की रस्सी।

श्रोलती = श्रोरी।

श्रासोनी = डठल से अन्न थलग करते समय श्रासाने की मजूरी।

कइन = धाँस की पतली टहनी।

कन्नेजा = बेगनी।

कडाह = जिसमें ईख का रस पकाते हैं।

कच्चारना, कच्चारना = पटक पटक कर धोना। पैर से कपड़ा धोना।

कछ्छाँड = बियाँ पुरवों की तरह धोती चढ़ा लेती हैं, उसे कछ्छाँड कहते हैं।

कजरौटा = काजल रखने का लोहे का पात्र।

कटनी = खेत काटने की फसल।

कठरा = लौहरी या सोनार की दुकान की धूत धोने का कठीता।

कठोलो = फाँट की थाली।

कत्ता = धाँस काटने का औज़ार।

कनकुत्ती = धन्दाज्ञ।

परिशिष्ट १

देहात के कुछ शब्द, जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दी या हिन्दुस्तानी में प्रचलित नहीं हैं, पर हिन्दी भाषा में जिनकी आवश्यकता है, इस वे।प में पहले आबुके हैं। कुछ यहाँ दिये जाते हैं।

अँकडार

आँसि

अँकटोर = ककड़ी।

अँकरा अँफरी = गेहूँ के खेत में होनवावी एक घास।

अँकवार = खेत में का। हुआ मय टटल के उतना अनाज जो एक बार दोनों भादुओं के बीच उठाया जा सक।

अँकुसी = हुक।

अँपुआ = अकूर।

अँगैऊँ = नवता को चढ़ाने के लिये का धन या अन्न अलग निकाल कर रख दिया जाता है, वह अँगैऊँ कहलाता है।

अँगेरी = ऊख का ऊपरी हिस्सा।

अँधियारा = जानवरों की आँस पर धाँधने की पट्टी।

अंगवड = पेशगा।

अंगवार = मकान के आगे का हिस्सा। खेत काटनेवाले मजूरों का एक इक।

अंगवारी = हल के फाल में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अंगाटी = घाडे के गले की रस्ती।

अंगिया = चावल के खेत में उगने वाला एक घास।

अढिया = कठौता।

अरदावा = चना और जौ मिला कर दबा हुआ जो घोड़ों के दिया जाता है।

अरहना = तरसना।

अहारना = लकड़ी चोरना।

आखा = अकूर।

आँखि = गान में वह स्थान जहाँ स अकूर पड़ता है।

श्रीठा = ठोस जमे ऋष दही का
दुकड़ा ।

ईंदारा = पक्का कुँआ ।

इनरी = नद् 'इयाइ हुइ गाय पा
भैंस का उवाला हुआ दूध,
जो जम जाता है ।

उचारना = जड़ सहित उखाड़
वेना ।

उचास = वह ज़मीन जो ग्राम
पास की सतह से ऊँची हो ।

उसना = चावल, जिसकी भूमी
पाना में उबालकर निकाली
गई है ।

पक्का, इनकी = दो पहियों की
गाड़ी जिसे एक घोड़ा या एक
बैल खींचता है ।

पेपन = हलदी, दही आदि पदार्थों
का मिश्रण, धार्मिक सस्वारों
में जिसस तिलक किया जाता
है ।

श्रीटना = रुई से बिनाले निका
लना ।

श्रीटा = चवूतरा ।

श्रीनवन = चारपाई कड़ी करने
की रस्सी ।

श्रीरदावन = चारपाई कड़ी परा
की रस्सी ।

श्रीलती = चारी ।

श्रीमो गी = डठल से अन्न अलग
करते समय श्रीसाने की
मजूरी ।

कइन = चाँस की पतली टहन्यी ।

कम्प्रेजा = बँगनी ।

कडाह = जिसमें ईख का रस
पकाते हैं ।

कन्नारना, कन्नारना = पटक-
पटक कर धोना । पैर से
फपड़ा धोना ।

कठुईड = खियाँ पुष्पों की तरह
धोती चढ़ा लेती हैं, उसे
कछुईड कहते हैं ।

कजरौटा = काजल रखने का
लाहे का पात्र ।

कटनी = खेत काटने की प्रसन्न ।

कठरा = जौहरी या सानार की
दूकान का धूत धाने का
कडीता ।

कठाली = काठ की थाली ।

कत्ता = बाँस काटने का औज़ार ।

कनकुत्ती = अन्दाज़ ।

कनियों = गोद । कथा ।
 कन्हेला, कन्हेली = वह गठरी,
 जो कंधे से बाँधकर पीठ पर
 लटका जा जाती है ।
 कम्पा = वह चीज़ जिस पर जासा
 लगाकर बहलिये चिड़ियाँ
 पँयात है ।
 कम्बालना = कृदना ।
 कम्बुत = बन्जाई में से दाल
 निकालन का बड़ा घमघ ।
 कम्सी = उपल का चूरा ।
 कम्हिया = वह प्राण्य जिसका
 बनावट हुई पूरी बहुत से
 प्राण्य खाते हैं ।
 कम्रा = रवा ।
 कम्रे = मङ्गवृत्त ।
 कम्रात = थारा ।
 कम्रोश = सुराणा ।
 कम्गी = दूध गरम करने पर
 घतन की पेंदा से जा दूध का
 जला हुआ भाग चिपका
 रहता है उसे कम्गी कहते हैं ।
 कम्ज = बटन का घर ।
 कम्मो = सुनार का एक औज़ार

जिसमें सेना चाँदी गलाकर
 ढाला जाता है ।
 कम्गी = मशीन का दाँत ।
 कुँडमुन्दन = योधाई रतम हो
 जाने पर की एक रस्म ।
 कुचरा कुँचा = भाड़ू ।
 कुड़ा = टल का वह हिस्सा जो
 दलवाड़े के साथ में रहता है ।
 कुदार = मिट्टी रोदने का एक
 औज़ार ।
 कुमहौंटी = वह मिट्टी जिसे कुम्हार
 काम में जाता है ।
 कुँची = भाड़ू ।
 कुत = श दाज्ञ ।
 कुतना = फीमत लगाना ।
 कुरा, कुरी = राशि । (Hera)
 कुला = शारा ।
 कुनारा = मन्ना ।
 कुचना = चोंकना । (Prick)
 कुठिला, कुठिली = मिट्टी का
 घर जिसमें घनाज रखते हैं ।
 कुठी = बखार ।
 कुँड़ा = कुञ्जी । हुक ।
 कुँड़ी = फल का चतिया ।
 कुँडू = थाँचब । गोद ।

कोरई = घाँस के टुकड़े, जो छप्पर में लगते हैं।
 कोल्हुआर = वह घर जहाँ ईंट पेंरी और गुड़ पकाया जाता है।
 कौत्राना = सोते समय बड़बटाना।
 खडवीहड = चुरदरा। ऊँचा नीचा।
 खपरी = घड़ा या हॉडी का पेंदा जिसमें घना चनेना भुनते हैं।
 खपटा = दूध हुआ खपड़ा।
 खपीच = बॉस का छोटा चिरा हुआ टुकड़ा।
 खर = सरपत, जिससे छप्पर छाया जाता है।
 खरिका = लॉत साफ करने का तिनका।
 खरिहक, खरिहग = फूसल के अन्त में हलवाइँ को जो नान लिया जाता है।
 खलंगा = बैन्का।
 खौची, खौचिया = अरहर के टठल का बना हुआ जालीदार टोकरा, जिसमें घास और भूसा ढोते हैं।
 खौचना = कपड़े धोना।

खुरपी = घास छीलने का हथियार।
 खुरपियाना = खुरपी से खेत में से घास निकालना।
 खूथ = कटे हुए पेड़ के तने का हिस्सा, जो जड़ से लगा हो।
 खूनना = कूटना। कुचलना।
 खेडा = गाँव के पास की जमीन।
 खेरा = नाव से नदी को पार करना।
 खैनी = तम्बाकू।
 खोइया = रस निकाल लेने पर ईँख का बचा हुआ डठल।
 खौच = कितना नोकदार चीज की छोट।
 खौचा = लंबा पतला बॉस, जिसकी नोक पर कोई जसदार चीज़ लगाकर बहेलिये चिहियाँ फँसाते हैं।
 खौप = कोना। पिछवाड़ा।
 खोभार = वह घर जिसमें सूअर रहते हैं।
 खौरा = कुत्ते, भेंड आदि का रोग, जिसमें बाल गड जात हैं।
 गँठिया = बोरा।

गँडुरी

गँडुरी=घास की गोख रस्ती,
जिसपर घटा रक्खा जाता है।

गँडास=गँडासा। पशुओं के
झिये घारा काटन पा
थौज़ार।

गजवाँक=थकुर।

गहर=घाघा पत्र।

गरू=भारी (गुर)

गहँड=भेडा का मुण्ड जिसमें
सी से अधिक भेडें हों।

गाटा=जमीन का टुकड़ा।

गाड=गड्ढा, जिसमें किसान
लोग थनाज रखते हैं।

गाडा=खाद आदि ढोने की छोटी
गाड़ी।

गाढ़=सफ़ट।

गाढ़ा=ठोस। मोटा।

गामा=थकुर।

गाँजा=सानना।

गुहियाँ=सपी। सहेली।

गुडम्था=उपाले हुए आम और
गुड के योग से बना हुआ।
शीरा, जो ग्वाया जाता है।

गुँघना=पिराना।

गुनरी, गुँदरी=चगाई।

गुनियाँ=कोना ठोक करने का
थौज़ार।

गुरगी=छोटी लडकी।

गुराँच=तलियान।

गुहरी=उपली।

गँडा=धीम के झिये फटा हुआ
गन्ने का टुकड़ा।

गँडो=ईश्व का लगभग १ इंच
जम्हा टुकड़ा।

गँडुआ, गँडुली=घास-भूम की
बनी हुई गोख थँगूठा जिसे
झियाँ सिर पर पानो से भरे
हुए घडे के नीचे रखता है।

गोइठा=कपड़ा।

गोजी=लाठी।

गोनरी=घाम की चगाई।

गोरसो=दूध रखने का बरतन।

गोला=घर, जिसमें गश्ती जमा
रहता है।

गोलोर=गुड पकाने का घर।

घँघोरना=द्रव पदार्थ को हाथ
से मिचकाकर साराष कर देना।

घडिया, घरिया=जिसमें मुनार
सेना चाँदी गलाया है।

घटिहा = टग। घोसा देनेवाला।

घरनई, घन्नई = पशु का नाम।

घुघुगे, घुंगना = उबाला हुआ
नाज।

घैला = छोटा घडा।

घोधी = कबल या दूसरे घोड़ने
का एक मिरा एक खास
क्रिम से मोड़कर सिर पर
ढाल लिया जाता है जिमसे
बरमात शर धूप से बचाव
होता है, उस घोधी कहते हैं।

चररा = जिम पर गरम गुड़
फँलाया जाता है।

चकघड = बरसात का एक पीदा,
जिसकी पत्तियाँ देखकर देहात
के लोग सूर्यास्त और सूर्यो
दय का पता लगाते हैं।

चगड = धूत।

चटक = तेज रग।

चटकना = गरजना। पतली दरारें
पड़ जाना। धप्पड़।

चफइल = फैला हुआ।

चमकी = छोटा चाबुक।

चमोटी = मोटे चमड़े का टुकड़ा।

जिम पर नाईं घुरे की धार
ठीक करता है।

चरवी = कुर्से से पानी निवाजने
का पत्र।

चरन, चरनो = बैला के खाने की
जगह।

चरफर = फुल। तेजा।

चरुआ, चरुइ = मिट्टी का छोटा
घडा।

चहबधा = छाटा पक्का कुड।

चहँटना = खदना।

चहला = कीचड़।

चहँटा = कीचड़।

चाड = उठाइगीर।

चाइ चूइ = सिर का एक रोग
जो प्राय जड़का को होता है।

चातर = वह जाल जो चिड़ियाँ
फँमाने के लिये रात में
लगाया जाता है।

चापर = बरबाद। गट। चौपट।

चिन्वा = इमली का बीज।

चिरनिया = छैला।

चिकवा = भेंड़ बकरी का मांस
बँधनेवाला।

चिचियाना = चिरलाना ।
 चिचोरना = दाँत से पाइ फाड़
 फर खयाना ।
 चिनगा = जला हुआ गुड़ ।
 चिनगी = चिनगारो ।
 चिपरी = उपली ।
 चीपुर = गिलहरि ।
 चुमोता = अत ।
 चुकड़, चुजर = कुकड़ ।
 चुफा = कुहड़ ।
 चु-धला = धुँधली दृष्टिवाला ।
 चुग्ना = पकना । यह शब्द दाल,
 भात, तरकारो के लिये ही
 प्रयुक्त होता है ।
 चुमकी = दुषकी ।
 चुना = शिखा ।
 चेपुर = मकई की चड़ ।
 चेरुइ = छोटी गगरी ।
 चोश्रा = चौपाया ।
 चौमस = वह खेत जो जाड़े की
 फसल के लिये चार महीने
 बरसान में चोतगर तैयार
 किया जाता है ।
 छुग्ग्दा = धकेला (छड़ी लिये
 हुए) ।

छोटना = हाथ या पैर, पर पटक-
 पटककर कपड़ा धोना ।
 छालिया = सुपारी ।
 छिटुश्रा = वह बीज जो खेत में
 बखेर दिया जाता है ।
 छितना, छितनी = टूटे हुए टोकरे ।
 छेंरो = बन्ना ।
 छौंड़ = कूँड़ से बड़ा बड़ा ।
 छोत = गाय या भैंस जितना एक
 धार में हगतो है, उतना एक
 छोत कहलाता है ।
 जन्गो = मुनार का चौज़ार जिससे
 वह तार खींचता है ।
 जमूरा = दाँत उखाड़ने का
 चौज़ार ।
 जाँगर = बल । जोर ।
 जाउरि = खीर ।
 जियुगर = मज़बूत ।
 जुश्राठ = जुधा जो बैल की गदन
 में पड़ा रहता है ।
 जेंगर = मटर या आलू का डठल ।
 जेंवर = रस्सी ।
 जोता, जोती = रस्सा ।
 जोंधरो = मका ।

जोड़ी = दो बैल या गे घोड़े से खींची जानेवाली गाड़ी ।
 झंझरो = जालीदार सिडकी ।
 झररा = बेल, जिसके फान पर बड़े बड़े घाल हों ।
 झलास, झलामी = झाड़ू झखाड़ू ।
 झाँकड़, झाखर = सूखी झाड़ी ।
 झाँपा = बड़ा पिटाग ।
 झाँस = दुष्ट । घन्टिया ।
 झारी = लोटा । कसकूट का बना लोटा ।
 झीरु = मुठी भर अन्न, जो जाँत में डाला जाता है ।
 झूल = बैल या हाथी का झोड़ना ।
 झोरा = पैला ।
 झोली = अरहर के तने का बना हुआ टोकता या टोकरी ।
 झंगाड़ी = लकड़ी काटने का औजार ।
 टकोरी = छोटी तराजू ।
 टहना = गलना । (यह शब्द धी और तेल के लिये ही प्रयुक्त होता है) ।
 टांगी, टांगरी = कुल्हारा ।

टिक्ठी = मुर्द का ले जाने की धर्या ।
 टिकरी = छोटी रोगी ।
 टिकोर, टीकुर = साफ जगह जहाँ घाम पस या गहू न हों ।
 ठाँठ होना = गाय जब दूध देना बन्द कर देता है ।
 ठाढ़ा = जवरदस्त ।
 ठिलिया = मिट्टी का छोटा घड़ा ।
 ठिहा = लकड़ी, जिस पर लोहार धीर बड़ई काम करते हैं ।
 ठेंग, ठेंगा = जाग ।
 ठोखा = महुय की रोटी ।
 ठोपारी = गाने का रम जो टुयारा छानने के बाद बघता है ।
 ठगगिन = चमारिन, जो नाक काटता है ।
 ठररा = छाग गढ़ा । धामपोस ।
 ठमझारना = पाना को उबल पुरख करके भरना ।
 ठानना = उल्लयन करना ।
 ठाँग = छाग ढडा ।
 ठाँठ = जा, गेहूँ का ढडक ।
 ठामो का फमल का ढडक ।
 ठाँडी = तराजू की लकड़ी

हों

का

सहारे तराजू के ढानों पकड़े
कटवते हैं ।

डामी = अन्न का थर ।

डासना = बिछाना ।

डीह = उजड़ हुये गाँव की पुरानी
जगह ।

डेहरी = नाज रमने का काठिला ।

डोकनी = काठ का धागी थाली ।

डोकी = छोटी डलिया ।

डोभना = सीना । तागे डालना ।

ढकुआ = जाठ के सिरे पर लगी
हुई काठ की टोपी ।

ढफोलना = जल्दी-जल्दी पानी
पीना ।

ढयइल = गँदला ।

ढरका = राँस की घोंगी, जिससे
पशुओं को दवा पिलाई
जाती है ।

ढरनी = शटल ।

ढाँसी = जानवरों की खाँसी ।

ढाटा = मिर के चारों ओर कान
के ऊपर से रुमाई बाँधना ।

ढाठा = लकड़ी का टुकड़ा, जो
बैल के मुँह से लगा दिया

जाता है, जिससे वह खा नहीं
सकता ।

ढाठा = पगड़ी का वह मिरा जो
एक कान की तरफ से थार
दाढ़ी को ढकता हुआ दूसरे
कान की तरफ खाँस बिया
जाता है ।

ढील = जूँ ।

ढूह, ढूहा = धोग टीका ।

ढेंडी = कली ।

ढेंपी = फल का मुँह, जो टहनी में
जुदा रहता है ।

ढोंका = छोटा टुकड़ा ।

तक = तराजू ।

तनिर = जरा सा ।

तस्सुर = एक अगुल की चौड़ाई ।

तागना = डोरा डालना । सीना ।

तिडी तिडी = तितर बितर ।

तिलक = विवाह के पहल होने
वाली एक रसम ।

तिल्ली = सरसों और तिल का
ढल ।

तेहा = तेज । मिजाज ।

तोडा = कमा । अभाव ।

वैपरी = माँदन के लिये 'पैर' पर
 घूमनेवाले धैलों का समूह ।
 वहेँडी = दही जमाने की हौंफ़ी ।
 दाब = लकड़ा काटने का औज़ार ।
 दीश्रट = दिया रखने का स्टैंड ।
 नीउली = छाटा दिया ।
 दीना = डठल में स अन्न अलग
 करने की कपल ।
 दोग, दीरो = धाँप की बना
 टोफ़री ।
 दौरी = डंठल से अन्न अलग करने
 के लिये उमे ज़मीन पर फैला
 कर उस पर बैल घुमाना ।
 धनकटी = धान फटने का मौसम ।
 धनखर, धनहर = वह खेत जिसमें
 धान बोया जाता है ।
 धागा = तागा ।
 धामा = बड़ा धीरा ।
 नदवा = जिसमें उथाला हुआ रस
 रखा जाता है ।
 नरिया = नोल खपड़ा ।
 नहरनी = नाखून काटने का
 औज़ार ।
 नाटा = छोटे कद का बैल ।

नाडा = इज़ारपत्र ।
 निहग = तगा । असावधान ।
 नितारगा = मँब छुटा देना ।
 नितारिया = राल में से सोना-
 चाँदी अलग करनेवालों की
 जाति ।
 निसुहा = काठ, जिम पर अनाज
 का डठल रखकर गँदासे से
 काटते हैं ।
 निहाइ = जिम पर रखकर जोहार
 छोड़े की पीठता है ।
 निहोरा = कुरा ।
 नेग = हक ।
 नेरना = नाएल से किमी कल या
 रोरोदार पाँधे का छिलना
 निकालना ।
 नोनियाँ, लोनियाँ = मिट्टी से
 नमक निकालनेवालों की एक
 जाति ।
 पगडंडी = फेवल पैदल चलने का
 रास्ता ।
 पङ्गत = भाजन के लिये बैठनेवालों
 की पक्ति ।
 पगहा = पशुओं के बाँधन का
 रस्ती ।

पगिया = पगड़ा ।
 पठाग्ना = सूप न फटकना ।
 पट्टरा = लकड़ी का तरता ।
 पडछता = मिट्टा का दीवार पर
 का छप्पर ।
 पटपर = बरसात के बाद बूँप से
 सूखी हुई मुलायम ज़मान ।
 पतकी = बहुत छोटा हँडिया ।
 पताला = दाढ़ पकान का मिट्टा
 का एक छोटा बरतन ।
 पनौटी = पनदब्बा ।
 परइ = मिट्टी का बड़ा सिकारा जो
 ढकने के काम आता है ।
 पच्छना = दूधदा-दुग्धहिन के सिर
 पर मूसल, बट्टा तथा धारती
 धुमाना ।
 परेता = जिसमें तागा तपेता जाता
 है ।
 पलान = फाटी ।
 पलानना = घोड़ा या बैल
 लादना ।
 पलिहर = वह खत जा जाड़े की
 फसल के लिए चार महीने
 बरसात में जातकर तैयार
 किया जाता है ।

पलेथन, परथन = सूखा आटा,
 जो रोटी बनाते वक्त काम
 आता है ।
 पन्ला = फ्रासला । दूर । किनारा ।
 एक किवाड़ा या धोती ।
 पहटा = म्वेत फाटने की नाप ।
 पहसुल = तरकारी फाटने का
 औज़ार ।
 पाचड = हरिस को हल में बसन
 वाली लकड़ी ।
 पाटा = तख्ता ।
 पाटो = राट की लम्बाई की तरफ
 की लकड़ी या बाँस । ' मँग
 की दोनों तरफ का भाग ।
 पारी = बारी ।
 पिथरी = पीली धोती ।
 पिहाना = डेहरी का ढक्कन ।
 पुरखिन = गृहहरी चजाने में
 होशियार स्त्री ।
 पुरवट = चमड़े के बड़े रैले में
 बैलों के द्वारा कुएँ से पानी
 निकालना ।
 पेटपॉछुआ = अतिम सतान ।
 पेटारी = मूँज का बना हुआ
 सड़क ।

- पेहाना = गाय जप दूध देने को । तैयार होती है ।
- पैक = हरफारा ।
- पैडो = मोड़ी ।
- पैना = चायुक ।
- पैर = डटल से घन्न अलग पारो के लिये जमीन पर फैलाइ हुई ठतनो फसल जिनका अरथ एक धार में डटल से अलग किया जाय ।
- पैरा = धान का डटल । पयाल ।
- पैना = लोहे का जालीदार बड़ा चम्मच जिनसे गन्ने के रस का मैल छुटते या बदाई में से पुरियाँ निकालते हैं ।
- फरियाना = निथरना । अलग करना ।
- फरी = डाल ।
- फच = मारु ।
- फाँड = कमरबन्द ।
- फाँका = मूठी भर ।
- फाँटा = जाल ।
- फार = हल का पख ।
- फाँचना = कपड़े धोना ।
- फुनगी = टहनो का सिरा, जहाँ
- गये और कामल पते होते हैं ।
- फिरिहिरी = पत्तों का पना हुआ एक सिलौना ।
- फँटा = पगड़ो ।
- फँच = घाँस का मारीक टुफटा ।
- फँसवार = घाँसों की बाडी ।
- घपरा = पानी ।
- घवार = गण्डा रखने का घर ।
- घभना = फँसना ।
- घटखरा = बाट ।
- घटियारी = वह जाल जो चिडियाँ फँसाने के लिये दिन में लगाया जाता है ।
- घटुवा = धैली ।
- घतिया = छोटा फल ।
- घतोरी = रसेली ।
- घधना = मुमलमानी लोटा ।
- घया = बाजार में तौलने का पेशा करनेवाला व्यक्ति ।
- घयाई = घया की उजरत ।
- घरच्छा = विवाह के लिये घर रोकना ।
- घरारी = रस्मी ।
- घराय = परहेज ।

पेन्हाना = गाय जध वृध देने को तैयार होती है ।	नये और कोमल पत्ते होते हैं ।
पैर = हरकारा ।	फिरिहिरी = पत्तों का बना हुआ एक तिलौगा ।
पैडो = सीड़ी ।	फटा = पगड़ी ।
पैना = चाबुक ।	फेंच = बाँस या बारीक टुकड़ा ।
पैर = डठल में अन्न अलग करने के लिये ज़मीन पर फैलाई हुई उतनी फसल जिसका अन्न एक धार में डठल से अलग किया जाय ।	वँसवार = धाँनों की बाड़ी ।
पैरा = धान का डठल । पयाल ।	वखरा = पाठी ।
पीना = छोटे का जालीदार बड़ा चम्मच जिससे गन्ने के रस का मैल छुँटते या कड़ाह में से पुरियाँ निकालते हैं ।	वख्यार = गल्ला रखने का घर ।
फरियाना = निथरना । अलग करना ।	वभूना = फँसना ।
फरी = डाल ।	धटररा = बाट ।
फर्य = साक्र ।	धटियारी = यह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये दिन में लगाया जाता है ।
फाँड = कमरबन्द ।	घटुना = धैली ।
फाँका = मूठी भर ।	वतिया = छोटा फल ।
फाँडा = जाल ।	उतौरी = रसोली ।
फार = इल का फल ।	वधना = मुमलमाते लोटा ।
फाँचना = कपडे धोना ।	वया = चाज़ार में तौलने का पेशा करनेवाला व्यक्ति ।
फुनगी = टहनी का सिरा, जहाँ	वयाई = बया की उजरत ।
	वरच्छा = विवाह के लिये वर रोकना ।
	वरारी = रस्मी ।
	वराव = परहेज ।

वरैठा = भीड़, जिन पर पान लगाया जाता है ।

वल्लम = भाला ।

वलुअट = बालू मिला हुई मिट्टी ।

वहेलिया = चिड़ियों का शिकार करनेवाला का एक जाति ।

वाँक = गँडास की तरह का लोहे का एक हथियार ।

वांगर = ऊँची ज़मीन ।

वहिंगा, उहिंगी = बाँस का एक टुकड़ा जिसके दोनों सिरों पर रस्मी लटकाये रहते हैं, जिसमें भारा चीज़ें बाँधकर ढाते हैं ।

विदाह = एक फुट ऊँचा हो जाने पर धान के खेत में हँगा चलाना ।

विनोरना = मुँह बनाना ।

विलहरा = पान रखने के लिये चगाई का बना हुआ ढाँचा ।

विसराग = भूल जाना ।

विस्तार = बीज ।

विसुक्ना = दूध देना बन्द करना ।

विहड = ऊबट-भ्याबड ज़मीन ।

वौड, विडिया = गाड़ी का तीसरा धैल जा सबसे आगे रहता है ।

वीता = बालिरत ।

वीहन = धान के पौध, जो खेत में लगाने के लिये पहले हाँकना लिये जाते हैं ।

वूक्ना = मिला पर पीसना ।

वेआना = पेशगी रूपया ।

वेभरा = मिले हुए दो अन्न ।

वेँट = इस्था । हैडिल ।

वेठन = कोई चीज़ लपटने का कपड़ा ।

वेढना = पशुओं का किसी घेरे में कैद करना ।

वेढ़नो = रोटा, जिसके भीतर पिसी हुई मटर भरी रहती है ।

वेरा = जौ और मटर मिला हुआ ।

वेलहरा = पनडन्गा ।

वेलाना = चकले पर बेजान स रोटी बनाना ।

वेवहर = उधार ।

वेवहरिया = व्याज पर रूपया देनेवाला ।

वे = सूत का अधिक बल देना ।

बाँधनी = बोन की फमल ।
 बाँग = भारी वजानी छद्द ।
 भङ्गुत्रा = मुर्म् ।
 भरभाँड = षष्ठ कटिदार पीधा ।
 भरदा = मिट्टी का परतन, जो पानी पाने के काम आता है ।
 भाधी = बमड़े का धैला, जिसमें लाशर भट्टी में हवा देता है ।
 भाट = टोला ।
 भुजिया = टयाले हुए धान का भावल ।
 भुनील = भूमा रखने का घर ।
 भृश्रा = बाह के ऊपर सफेद रंग का रह ।
 भडई = झोपड़ा, जिसमें बचतरा न हो ।
 भडार = पुराना कुर्छा, जो लागव हो गया हो ।
 भँगनी = विवाह के बिय किसी लड़क की याचना ।
 भचिया = खाट की तरह की बुनी हुई एक बहुत छोटी चोकीनुमा पटिया जो सिफ बैठने के काम आती है ।

भरनवान = मिट्टी या घड़ा, काख का पालिश किया हुआ ।
 भाभा = पतंग की टोर में लगाया जानेवाला मसाला ।
 भाट = बड़ा घड़ा ।
 भागताल = छोटा लया हथौड़ा ।
 भाँजना = हाथ से मगलना ।
 भुँगरा, भुँगरा = जिसल धावी कपड़े पीटता है । लकड़ी या टुकड़ा जो डटल में थल चलग करने तथा जमान को चारस करने में काम आता है ।
 भुँगरी = मिट्टी पीटने की लकड़ी ।
 भुरहा = नि शील ।
 भुरेठा = पगडी ।
 भुखरा = कुँ में पाना देनेगला मोटा सोता ।
 भूका = धूँसा ।
 भूठ, भुठिया = हल का ऊपरी सिरा जो हलवादे की मुट्टी में रहता है ।
 भूठ पूजा = बोझाई खतम हो जाने पर भी एक रस्म ।
 भेखारी = नालबंद का झोला ।

- मंड = येन का इश ।
 मेटा, मेट्टी = घो, तेज या अचार
 रखने के लिय मिट्टा का
 बरतन ।
 मोया = ताक या दीवार में एक
 छटा छेद जिससे हवा और
 रोगनी बमरे में आती है ।
 मोचना = चिमरी ।
 मोटरा = बोझ । बटल ।
 मोट = चमड़े का थैला, जिसमें
 गुँठ का पानी ऊपर निका
 लने है ।
 मोड़ा = बाँस की तालियाँ या
 सरकड़े का बना स्टूल ।
 मोहरी = जानवर का मुँह बाँधने
 की रस्सी, जिसमें बंध रहे
 चर न सके ।
 मोहार = डार ।
 मौनी = मूँज की बनी हुई छोटी
 बलिवा ।
 रखेली = वह स्त्री, जो बिना विवाह
 क किसी पुरुष के साथ
 रहती है ।
 रखौनी = गेह रखाने की मजूरी ।
 रगी = बपा के बाद जब धूप
- निकल आती है, उसे रगी
 कहते हैं ।
 रनवन = धरण्य । वन ।
 रन्दा = लकड़ी साज करने का
 औजार ।
 रमभन्ता = भगना ।
 रग्गा = लकड़ी में छेद करने का
 औजार ।
 रहमना = प्रमत्त होना ।
 रहाइम = रहना ।
 र्हेठा = धरहर का टुकल ।
 राउत = सरदार । महता ।
 राडी = णव घास ।
 राँधना = पकाना ।
 राव = गुड का शीरा जिससे
 चीना बनती है ।
 राम = डेरी ।
 रिगिर = हट ।
 रोकडिया = खजागी ।
 रोगदानी = गेह में बेदमानी ।
 रोरहा = जिस मिट्टी में रोह
 बहुत हों ।
 लकठा = मकड़ का टुकल ।
 लगा लगाना = शुरू करना ।

लड़ा = गाड़ी ।
 लड़िया = गाड़ी ।
 लारो = पुरानी शूना ।
 लतर, लथेर = टेंटल ।
 लपाड़िया = मुगानदी ।
 लहना = उधार ।
 लाडा = प्रतीक नापने का यंत्र ।
 लिट्टी = राटा, जो बिना लोके के
 सकी जाय ।
 लीपट = छोड़ ।
 लुगरी = एक दुद पुरानी धाती ।
 लुजा = हाथ या पैर से खँगडा ।
 लुगा = कपडा ।
 लोकरा = तराल पैदा हुआ
 कपडा ।
 लोड = भेड़ा का वह कुछ जिसमें
 बीस या उससे अधिक
 भेड़े हों ।
 लहना, लोहनी = कटे हुए धनाम
 का एक ग्यास वजन ।
 लाहनिहार = रई चुनोयाना ।
 लोचर = दो घप की उमर की भैंस ।
 लोथ = काश ।
 लोहधदा = लाठी, जिसके निचले
 किनारे पर लोहा लगा हो ।

लीगी = गत वाटने की प्रयत्न ।
 लवेन - लैफ़ा ।
 लकार = बट लवरे ।
 लखिराना = पूरा पकना ।
 लटका = जानपर हाँके की छड़ी ।
 लनयासा = जो साथ साथ में
 पैदा हो ।
 लनकागना = हुराग करना ।
 लन्ता = ददने में ।
 लैपरा = नाप पकड़नेवाला ।
 लैपेला = नाप का बच्चा ।
 लरहज = साल की खी ।
 लवाचना = सावधान करना ।
 लितना = परीक्षा करना ।
 लनाटना = एक साथ करना ।
 लनाटा = थड़ला-बन्ना ।
 लनाटा = पतली छुदा जिससे
 जानपर हाँके जाते हैं ।
 लानना = मिलाना ।
 लाम = मुसल के मुँह पर लगी
 हुई लोहे की खँगड़ी ।
 लालु = लाल रंग का कपडा ।
 लिकन्दरी गज = छुम्बीम इचका
 गज ।
 लिकहर = छत से लटकाया जाने-

वाला एक जाल, जिसमें दूध, दही, घी आदि रक्ते जाते हैं।

सिक्कहली = मूँज की बनी हुई देवरी।

स्वित्तिल = ठीक। पम्द-योग्य।

सिन्दुरदान = विवाह के समय को एक रस्म।

स्विगवन = हँगा। पटेला।

सिराना = काम पूरा होना।

सिरों = पागल। सिन्धी।

सित्तली = पत्थर, जिस पर नाइ छुा तेज करता है।

सिहरना = ठटक मे काँपना।

सुश्रासिन = विवाहिता बन्धा जो पिता के घर रहे।

सुट्टना = पतली छड़ी या चायुक से मारना।

सुँदरो = रेंड के पत्ते खानेवाला एक कीड़ा।

सुरती = सम्भाव।

सूत्रा = सोता। शुक्र।

सैत = मुफ्त।

सैका = हँस का रस कड़ाह में डालने का पात्र। काठ का

बड़ा चमच, जिससे गुड़ चलाते हैं।

सतना = रसोईघर लीपना।

सैल = हल के जुए को एक लकड़ी।

सैला = लकड़ी, जो जुए को बैल की गदन में फँसाये रखती है।

सोक = पाट धुनते वक्त किनारों पर छोड़ी हुई खाली जगह।

सोटा = छोटा बड़ा।

साजा = शिकार।

साजना = मिलाना। सामना।

सौर = ज़रचापाना।

हथौना = ताड़ी रखने का बड़ा घड़ा।

हँकारना = पुकारना। बुलाना।

हरकना = रोकना।

हराइ = जोतने की एक नाप।

हरिम = लंबी लकड़ी या बॉस जिससे हल खींचा जाता है।

हर्सि = हल में लगी हुई बड़ी लकड़ी, जिसमें बैल जुतते ह।

हलरुना = छलकना।

हलकोरना = हाथ से पानी डिलाना।

हलफेरा = लहर ।
 हलोना = हफटा करना । अर्था
 अर्था सुना ।
 हंसिया = खेत काटने का एक
 औजार ।
 हंसुआ = खेत काटने का औजार ।
 हाड = खैर । दुरमनी ।
 हाथा = पानी उलीचने का पाठ
 का एक औजार ।
 हामो भरा = स्वीकार करना ।
 हडुव = घोड़ियों का एक बाना ।
 हुँडार = भेड़िया ।
 हुमना = जोर करके आगे
 को उठाना ।

हुमना = जोर लगाकर किसी
 भारी चीज को उठाना ।
 हुँड = पदका ।
 हुरा = सिरा ।
 हुलना = चोंकना । धँसाना ।
 हुँगा = पटेला । मिराउन ।
 ऐठ = नीचा ।
 हेठी = अपमान ।
 होरसा = गोल पत्थर, जिस पर
 चन्दन घिसा जाता है ।
 होरहा = हरा चना, जो भाग में
 भूनकर खाया जाता है ।
 होद, होदी = नाद, जिसमें बेल
 साना गाने हैं ।
 हैली = शराब पी दूकान ।

परिशिष्ट २

अंगरेजी के शब्द जो इस नोप में आने से छूट गये हैं
एवं जो पढ़े लिखे लोगों में प्रचलित हैं।

आयल क्ताथ

क्रिटिक

आयल क्ताथ = भोमी कपडा ।
 आइगली = अर्दली ।
 इन्सल्ट = धपमान करना ।
 इमीटेशन = नकल ।
 इम्पायर = साम्राज्य ।
 इम्पीरियल = साम्राज्य सयधी ।
 इम्पीरियलिज्म = साम्राज्यवाद ।
 इयर्गिंग = कान में पहनने का
 एक प्रकार का सोने का
 गहना ।
 एक्सप्रेस = प्रकट करना । — ट्रेन
 = तेज रेलगाडी ।
 एक्सप्लेन = व्याख्या करना ।
 एक्सप्लेनेशन = व्याख्या ।
 कटपीस = कपडे कं थान से बचे
 हुए टुकड ।
 कनेक्शन = सयध ।
 कन्टी = मुक्क । देहात । — मेट =
 स्वदेशी ।

कन्डीशन = हालत । दशा । शर्त ।
 कन्वरसेशन = बातचीत ।
 कन्सल्ट = मशविरा । राय लेना ।
 कन्सेशन = रिश्थायत ।
 कन्सिडरेशन = विचार । निश्चय ।
 कम्प्रेसरी = अनिवार्य ।
 कम्पाउड = धरा ।
 कम्पाउण्डर = दवा बनानेवाला ।
 कम्प्लेन = शिकायत ।
 कम्प्लीट = पूरा करना ।
 कम्पिटीशन = प्रतियोगिता ।
 कार्टेज = कोपडी ।
 कार्डफट = चालचलन ।
 कामा = विराम चिह्न ।
 कारोनेशन = राज्यतिलक । राज्या
 भिपेक ।
 कार्निवाल = खेलों का समूह ।
 क्रिटिक = समालोचक । जाँचने
 वाला ।

क्रिटिकल = गुण दाप पतासा म
यथा । गक । नाहुक ।

क्रिटिसाइज = छात्रावना ।

क्रिटिसिज्म = विद्याप्रेषण । समा
लोचना ।

क्रिचियन = इमाड ।

क्रिचियानिटी = इमाइयत ।

क्रिममल = इमाइयों का एक
स्योहार ।

क्रियरेंस = अदा करना । पटा
देना ।

क्रेक = एक अंगरेजी मिगई ।

क्रेनिस्टर = पनम्तर ।

क्रेन्टर आयल = रेंडी का तेल ।

क्रेलतार = तारकाल । अलक
तरा ।

क्रेनघोट = अग्निघोट ।

क्रेटर् = पेटी ।

क्रेट = फाटक । —कीपर = द्वार
पाल ।

क्रेजमेन्ट = राय । प्रैसला ।

क्रेम्पर = छियों के पहनने का
अंग्रेजी ढग का बुरता ।

क्रेमनास्टिक = एक अंग्रेजी फस
रत ।

क्रेन्डिलमेंट = शरीर आदमी ।

क्रेन = अंगरेजी साल का एक
मईना ।

क्रेन = शरीर । नम्बर ।

क्रेन = नियम ।

क्रेफिन = सामरे पहर का भाजन ।
—क्रेरियर = बग्तन, जिसमें
ग्याता भरकर दूसरी जगह ल
जाया जाता है ।

क्रेवल = एक प्रकार का कपडा ।

क्रेम्पर = मिजाज । क्रेपरामन्ट
मिजाज का ।

क्रेम = टोला ।

क्रेयैको = तम्बाकू ।

क्रेवल मार्च = तेज चल ।

क्रेम्येल = मुगदर ।

क्रेइव = हाँकना । चलाना ।

क्रेजीज = रोग ।

क्रेफीट = हार ।

क्रेफेक्ट = पेय । दोप ।

क्रेस्कवरी = खोज । अन्वेषण ।

क्रेस्टर्व = घबड़ाना । अस्तव्यस्त ।

क्रेन्ट्रोव्यूशन = वितरण । बाँटना ।

क्रेसीशन = प्रैसला ।

डिस्पैच = भेजना । —र = डाक भेजनेवाला ।	प्लेज = रेहन । यथक । जमानत ।
डिस्टेंस = फामला । दूरी ।	मेजर = धाराम ।
डुप्लीकेट = दोहरा ।	प्राइज = पुरस्कार ।
डेथ = मृत्यु ।	प्राइस = मूल्य ।
डैमरेज = हानि ।	प्रापर्टी = जायदाद ।
थर्ड = तामरा । —ड्राम = रद्दी ।	प्रीप्रियस = पहले का ।
—डिवीजन = तामरी श्रेणी ।	फारचून = त्रिस्मत । भाग्य ।
नॉलेज = ज्ञान । अनुभूति ।	फिनायल = टुग-ध मिगनेवाली एक दवा ।
नेगलिस = हार ।	फैमिली = कुटुम्ब । परिवार ।
नोट = लिखना । कागज़ी रुपया ।	फैशन = रवाज । शौक ।
— बुक = याददास्त की पुस्तक ।	फैशनेबल = शौकीन ।
नोटिस = सूचना ।	फोर्स = ज़ोर । बल । सेना ।
पन्चर = छेद ।	दबाना । निवश करना ।
परमिशन = धाना ।	बेगार ।
परेड = सिपाहियों के इयायद करने की जगह ।	बनलस = बकसुधा ।
पावर = शक्ति । बल ।	विदाउट = बिना ।
पेन्ट = रँगना । तस्वीर उतारना ।	विथरर = वाइक ।
पेलेस = महल ।	ग्रीचेज = ममझौता तोड़ना ।
पोजीशन = जगह । हालत ।	गुक = किताब । —कीपिंग =
ईसियत । दजा ।	बही खाता लिखने का रिषा ।
प्लाट = मैदान । जमीन का टुकड़ा ।	—वाइडर = निवदसाज ।
प्ले = खेलना । —यर = खिजाडी ।	—स्टाल = किताबों की दुकान ।
	—लेट = पुस्तिका ।
	बैंच = लग्ना स्टूल ।

वैरिस्टर = वानून का छाता ।
 ट्रेक = रोकना । तोड़ना ।
 व्यूटी = सुन्दरता । — फुल =
 सुन्दर । खूबसूरत ।
 टल् टलेक = नीली स्याही ।
 मटन = भेड़ का भुना हुआ गोरोत ।
 मनीपैग = रुपये जैसे रखने की
 चमड़े की थैली ।
 मफजर = गलेबन्द ।
 मशीनगन = मशीन में चलने
 वाली बंदूक ।
 मरचेंट = व्यापारी ।
 मानोटर = भुग्निया ।
 मिस्त्रर = मिश्रण ।
 मिनट = घंटे का आठवाँ भाग ।
 मिस = कुमारी । छूट जाना ।
 मिसेज = श्रीमती ।
 मिस्टर = महाशय ।
 मिस्ट्रेस = अध्यापिका ।
 मीटिंग = सभा ।
 मेन्टल = दिमागी ।
 मेम्बर = सदस्य ।
 मेस = समूह ।
 रिटायर्ड = अलग हो जाना ।
 एकान्त सेवी ।

रिफार्म = सुधारना । दुरस्ती ।
 रिफ्यूज = इन्कार करना ।
 रीफ्लेक्ट = अक्स टालना । दोप
 लगाना ।
 रीफ्लेक्शन = परछाई ।
 रेफरी = निश्चयकर्ता ।
 लेटर-पेपर = चिट्ठी लिखने का
 कागज ।
 लगरेज = भाषा ।
 वर्थ डे = जन्म दिवस । सालगिरह ।
 विजिनेस = व्यापार । धंधा ।
 वेट = बाट जोहना ।
 सत्रमिट = पश करना ।
 सस्पेन्ड = मुअत्तल ।
 सिगनेचर = हस्ताक्षर ।
 सिचुयेशन = दशा । अवस्था ।
 परिस्थिति ।
 सिस्टम = शायदा । नियम ।
 सीजन = मौसम ।
 सीनियर = बड़ा ।
 स्ट्राइक = हड़ताल ।
 हनीमून = नववधू के साथ बिहार
 करना ।
 हारमनी = एक ताल । एक लय ।
 मेल ।

हार्न = मोटर का भौपू ।

हार्म = नुक्सान । घाटा ।

हार्स = घाटा ।

हिस्ट्री = इतिहास ।

हेडिंग = शीपक । विषय ।

हैट = अँगरेजी टोप ।

